श्री जैनकथारत्नकोष.

भाग त्रीजो.

प्रस्तावना.

आ श्रीजैनकथा रत्नकोष नामना पुस्तकनो त्रीजो भाग छापीने प्रसिद्धतामां मूकेलो छे, जेमां प्रथम अत्युत्तम मोहविवेकनो रास छापेलो छे, जेनी अंदर उपमितिभवप्रपंच नामना ग्रंथनी माफक विविध प्रकारें मोह राजा तथा कर्म परिणाम राजा अने तेमनां कुटुंबादिकनुं तथा धर्म परिणामराजा अने सम्यग्दर्शन नामें प्रधान तेमज विवेकादिक वगेरेनुं वर्णन करेलुं छे, ते वांचवाथी वांचनारने यथार्थ संसारस्वरूप स्वतः जाणवामां आवशे.

ते पछी बीजो ग्रंथ महोपाध्याय श्रीविनयविजयजी विरचित श्रीधर्मनाथजीनुं स्तवन १२८ गाथानुं दाखल करेलुं छे. ते ग्रंथ पण उपलाज ग्रंथने घणुं करी मळता विषयवालोज छे. ते पछी त्रीजो ग्रंथ दर्शनसित्तरी नामे छे. ते ग्रंथमां समकेतनी चार सद्दहणा आदिक सडसठ बोलनुं सविस्तर वर्णन करेलुं छे, अने ते वली प्रत्येक बोलनी उपर घणीज रसिक अने हावेहूब तेज विषयने दर्शावनारी तादृश उपदेशनी सूचक एवी महोटा महोटा प्राभाविक पुरुषोनी कथाउ आवेलीउ छे, तेथी ते वांचवाथी वांचनारने अपूर्व बोध थयाविना रहेशेज नहिं. एवा महा आनंदकारी पूर्वोक्त ए ग्रंथो एतत्पुस्तक गत मुद्रित करेला छे.

दर्शनसित्तरी ग्रंथनी एकज प्रत महारी पासें घणीज अशुद्ध लखेली होवाथी तेने शुद्ध करी छापवाने अर्थे बीजी प्रत मेळववा माटे घणोज प्र

यत्न कर्यो परंतु क्यांहिंथी प्रत मळी शकी नहीं माटे एकज प्रत उपरथी म्हारी यथाशक्ति शोधन करीने ए ग्रंथ छाप्यो छे तथा वळी ए ग्रंथमां साक्षी दाखल अनेक स्थले जूदा जूदा शास्त्रोनी गाथाउ अने श्लोको मागधी भाषा तथा संस्कृत भाषामां आवेला छे, तेने शुद्ध करवा माटे कोइ पण सान्हामी प्रत नही मळवाथी तेमां अशुद्धताना दोष साधारण वाचनार साहेबोने पण दीठामां आवशे तो चतुरजनोने दीठामां आवे तेमां तो कहेवुंज शुं ? माटे महान्पुरुषो म्हारामां ग्रंथ शोधन करवानी ज्ञानशक्ति जाणता छतां पण म्हारी उपर अप्रियता न आणतां पोतें सुधारी वांचशे अने हुं म्हाराथी थयेली भूलोने माटे समस्त वांचनारा साहेबोनी समक्ष म्हारा शुद्ध अंतःकरणथी मिछादुक्कड देउं छुं.

दर्शननिनर्गा ग्रंथने कथाउ सहित बराबर धारणामां राखवाथी समकेतना सडसठ बोल मांहेला कया कया बोल कया कया सम्यक्दृष्टि जनोमां पामीयें? एवुं अनुमान करवानी शक्ति आदिक बीजा पण मोक्षमार्गना साधनने प्राप्त करावनारा एवा अनेक उत्तम गुणोनो लाभ थवाथी दूर रहेवाने लीधे यशकीर्त्तिनी वृद्धि होवाथी आ भवमां पण सर्व सज्जनोमां अग्रेसरनी पदवीने पामशे. ए ग्रंथमां केटली कथाउ छे अने ते कया कया उत्तम जनोनी छे? इत्यादि बाबतो जो सामान्यथी जाणवी होय तो ते पाछेना पानामां अनुक्रमणिका जोवाथी जाणवामां आवशे.

मोहविवेकनो रास घणुकरी मारवाडदेशमां रचेलो होवाथी तेमां आवेली भाषा पण घणी खरी मारवाडदेशनेज मळती होवाथी ते भाषामां हुं विशेषे करी अजाण होवाने लीधे तेम वळी ए ग्रंथनी मात्र एकज प्रत म्हारा हस्तगत होवाथी वधारे शुद्ध करवानुं म्हाराथी बनी शक्युं नथी.

आ ग्रंथो केवा रसिक छे, ते विषेनी तारीफ म्हारा मोढाथी नहिं करता रहेतां हुं एम धारुं छुं के सुज्ञ वांचनाराउ पोतेज ते ग्रंथो वांचवाथी तेनी तारीफ कर्या वगर रहेशे नहि. किंबहुविस्तरेण सुज्ञेषु.

अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका.

प्रथम मोहविवेकना रासनी अनुक्रमणिका.

त्रीजो ग्रंथ सम्यक्त्व सप्ततिका बालावबोध तथा कथासहित छे, तेनी अनुक्र०

॥ अथ ॥

॥ पंमित श्रीधर्ममंदिर विरचित श्रीमोहविवेकनो रास प्रारंनः ॥

तत्र प्रथम खंमः

॥ दोहा ॥

॥ चिदानंद चित चाहशुं, प्रणमुं प्रथमोल्लास ॥ तेज तमस जीत्यां जिणे, लोकालोक प्रकाश ॥ १ ॥ गुण अनंत गुरुजन तणा, दयाकुशल नंमार ॥ ज्ञान दान दीये जिके, ते प्रणमुं सुखकार ॥ २ ॥ ज्ञान वडुं संसारमां, ज्ञान ज्योति जगमांय ॥ ज्ञान देव दिलमां धरुं, ज्ञान कल्पतरु गाय ॥ ३ ॥ अनंत सिद्धमां ज्योति ए, साधारण महाधाम ॥ मुनि मनपंकजमां धरे, सारे वंछित काम ॥४॥ ज्ञानी पण वचनें करी, कही न शके जसु पार ॥ आतम अनुनवशुं लहे, चिदानंद विस्तार ॥ ५ ॥ कर्म जाति बहु वर्गणा, फिर रहे ने जसु पास ॥ पण तेहने लागे नहिं, ज्युं रविवादल रास ॥ ६ ॥ पुण्यपापथी ए नहिं, अनुपम ज्योति अनंग ॥ जन्म कह्यो जोगीसरें, उदासीनता संग ॥ ७ ॥ चन्द्रदीप मणि नानुनी, ज्योति देशथी होय ॥ जडता दाहकता तिहां, इहां कलंक न कोय ॥ ८ ॥ नोग मांहि वसतां थकां, पहोंचाड्या इण पार ॥ क्रोड वर्ष कष्टें करी, न तखा बहु संसार ॥ ए ॥ काम क्रोध न रहे तिहां, जिहां जागी ए ज्योत ॥ वालबुद्धि जाणे नहिं, नवजल तारण पोत ॥ १० ॥ नाद वाद तप मौन धर, आसन आश निरोध ॥ इणशुं नर लाने नहिं, स्वानाविक ए बोध ॥ ११॥ नमो नमो सरस्वति नणी, कर्म असुखता दूर ॥ नानिपुत्र ब्रह्माय की, उपनी अनुपम नूर ॥ १२ ॥ निर्मल मानससर वसे, अवर मूकी परिवार ॥ हंस केलि त्यां नित करे, सरस्वति वाहन सार ॥ १३ ॥ ते सरस्वति आतम निकट, वहे रहे निश दीस ॥ अवर कोइ जाणे नहिं, इक जाणे योगीश ॥१४॥ नीच गमन पापाण बहु, जडता जाल प्रकार ॥ अवर नदी दूपण घणां, ए निर्मल निर्धार ॥१५॥ जिन वाणी सरस्वति कही, बीजी सरस्वति नांही ॥ नव्य लोकहितकारिणी, जयवंती जगमांही ॥१६॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ नमणी खमणी नें मनगमणी ॥ ए देशी ॥ श्रीजयशेखर आखे सुरि न्दा, सुणजो रोचक नविजन वृंदा ॥ अध्यातमनो ए अधिकार, मीठो मानुं अमृतधार ॥ १ ॥ मूरख मोहदशामां राचे, लौकिक चतुर कथा करि माचे ॥ कही परने ज्ञान दिखावे, आप प्रबोधमां कबहुं नावे ॥ २ ॥ पढि गुण ग्रंथ वडाई पाइ, शान्ति दशा मनमें कछु नांइ ॥ ज्युं नङ्क गज मोती धारे, पण तेहना गुण फल न विचारे ॥ ३ ॥ शृंगारमां बहु ठे नर रसिया, शान्तितणे घर विरला वसिया ॥ शीत तापमां बहु दिन होई,गुन जाणे मेरे दिन कोइ ॥ ४ ॥ अग्नि पडे जे पत्थरसेंती, बहुला लाचे धरती सेंती ॥ चन्द्रकान्ते जे अमृत वरसे, तेहवो समरस विरलो फरसे ॥ ५ ॥ अणवाव्यां पण वननां धान, उपजे निपजे को नहिं मान ॥ शालिनां जतन घणां वलि कीजें, उत्तम लोकां आदर दीजें ॥ ६ ॥ सम रस शालि सरीखो जाणो, बीजा रस तुछ मनमां आणो ॥ समरस अनुनवतां सुखदाइ, बीजा रस डुःख राचे नाइ ॥ ७ ॥ उत्तम नर उत्तम कुल जायो, तिण ए नाग्यसंयोगें पायो ॥ मूढ लोक बीजा रस सेवे, अंतरदृष्टि ते कबहुं न देवे ॥ ८ ॥ साचो रस समरस रस राजा, शिवसुख अमृत आपे ताजा ॥ कठिन कषाय विकार विदारे,जे सेवे तसु पार उतारे ॥ ९ ॥ वन ताडीना मूकी तमासा, पुजल परणन परणी वासा ॥ जूठी रामत जूठा पासा, होय रह्या कांय परना दासा ॥ १० ॥ अन्तरवास सुवासमां लीणा, ते नर जगमां जाण प्रवीणा ॥ मनगज समता अंकुश दीजें, अध्यातम अमृत रस पीजें ॥ ११ ॥ विवेक वीरनो वास वसीजें,समता रसनो स्वाद लहीजें ॥ बीजा रस कूचा जाणीजें, नरनव केरो लाहो लीजें ॥ १२ ॥ शान्ति शिरोमणि नवरसमांहि, गावो तसु गुण मन उत्साहि ॥ ए सेवंतां शिवसुख थावे, मोह महिपतिनो नय जावे ॥ १३ ॥ काम अग्नि बीजा रस वाले, समता रस साहामो न निहाले ॥ वीर विवेक परस्पर प्यारो, मोह रायने ए रस खारो ॥ १४ ॥ अध्यातम शैलीनो साचो,राजनीतिमां नहिं जे काचो ॥ कोविद कविता गुणनो धारी, ते इण ग्रंथतणो अधिकारी ॥ १५ ॥ पहेली ढालें शान्तरस गायो, उदासीन में मंदिर पायो ॥ नूर नविक जन मनमां नायो, धर्ममंदिर कहे सुख सवायो ॥ १६ ॥

॥ दोहो ॥

॥ आचारिज कहे सांजलो, शान्तिरसक जे होय ॥ तेहतणां लक्षण कहुं, परखेजो सहु कोय ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आनंद समकित उच्चरे रे लाल ॥ ए देशी ॥ शान्ति सदा रस सेवियें रे लाल, कीजें एहशुं प्रीत सुखकारी रे ॥ ब्रह्म मुहूर्त प्रातनो रे लाल, तिहां कीजें एह रीत सुखकारी रे ॥ शांति सदा रस सेवियें रे लाल ॥१॥ आलस निद्रा बे तजे रे लाल,आत्मचिन्तक होय सु० ॥ स्थिर मन तन वचने करी रे लाल,ज्ञान नयनशुं जोय सु० ॥शां०॥२॥ कामीने वादी हुवे रे लाल, दंनी लोजी लोल सु० ॥ वहिर्मुखी कुमती सदा रे लाल,गीत गायन रंग रोल सु०॥शां०॥३॥ मुंजाणो इन्द्रिय विषे रे लाल,मानी क्रोधनो गेह सु०॥ विश्वासघाती वक्रता रे लाल, तुरत दिखावे छेह सु० ॥ शां० ॥ ४ ॥ एवा दोष जिहां नहिं रे लाल, तेहिज पुरुष प्रधान सु० ॥ रोष धरे नहिं दूहव्या रे लाल, मान दीयां नहि मान सु० ॥ शां० ॥ ५ ॥ हुं कुण क्यांथी आवियो रे लाल, कुण छे माहरुं रूप सु० ॥ मित्र शत्रु कुण माहरा रे लाल, मोह माया ए कूप सु० ॥ शां० ॥ ६ ॥ संबल साथें शुं हशे रे लाल, कइ ज्योतिमां जाय सु० ॥ वैराग्यें मन वालियुं रे लाल, इम आतमशुं धाय सु० ॥ शां० ॥ ७ ॥ द्रव्य नयातम आतमा रे लाल, एक निश्चें नहिं नेद सु० ॥ व्यवहारे बहु नेद छे रे लाल,तिणमांहे नव खेद सु० ॥ शां० ॥८॥ अंतरंग बहिरंगना रे लाल, धर्म पटंतर जोय सु० ॥ परमाणु मेरु शैलनो रे लाल, एवडो अंतर होय सु० ॥ शां० ॥ ९ ॥ काने पाप सुणे नहिं रे लाल, परदोष देखे न कोय सु० ॥ पंमित पण मौनता नजे रे लाल, सम रस साधे सोय सु० ॥ शां० ॥ १० ॥ साध्य दशा साधक नजे रे लाल, अन्यासे नर जेह सु० ॥इन्द्रियनी वृत्ति वश हुवे रे लाल,देखे सरूपने तेह सु० ॥ शां० ॥ ११ ॥ वहिरातमता मूकीने रे लाल, अंतर आतम लीन सु० ॥ रूपातीत ध्यान धावता रे लाल, मूक प्रथम ध्यान तीन सु० ॥ शां० ॥ १२ ॥ ते परमातमता नजे रे लाल, सम रस साधक जेह सु० ॥ दोष सकल दूरें हूवे रे लाल, आवे ज्ञान अछेद सु० ॥ शां० ॥ १३ ॥ बिहुं नेदें सहु जीव छे रे लाल, नव्य अनव्य प्रकार सु० ॥ नव्य ते सिद्ध

होशे सही रे लाल, अनव्य फिरे संसार सु० ॥ शां० ॥ १४ ॥ सिद्ध ते तीन प्रकार डे रे लाल, दूर आसन ने मद्ध सु० ॥ पुजल अर्द्ध लीजो रे लाल, अंतरे कहियें सिद्ध सु० ॥ शां० ॥१५॥ अंतर मुहूर्त्त लीजो रे लाल, ते आसन कहाय सु० ॥ ए वेहु विच जे हुवे रे लाल, मध्यम सिद्ध सुहाय सु० ॥ शां० ॥ १६ ॥ इहां मध्यम सिद्धनो कहुं रे लाल, आतमनो अधिकार सु० ॥ मोह विवेक हंस चेतना रे लाल, वलि एनो परिवार सु० ॥ शां० ॥ १७ ॥ नविक नणी प्रतिबोधवा रे लाल, कल्पना कीधी एम सु० ॥ यांन बोल्या पल्लव नणी रे लाल, ए पण दृष्टांत तेम सु० ॥ शां० ॥ १८ ॥ परमारथ साधन नणी रे लाल, कीजें एह उपाय सु० ॥ जन्म जरा डुःख मेटीयें रे लाल, ज्ञान लब्धि सिद्ध थाय सु० ॥ शां० ॥ १९ ॥ आतमनो अनुनव हुवे रे लाल, पाप तिमिर डुःख दूर सु० ॥ धर्ममंदिर ज्ञान सेवतां रे लाल, सासतां सुख नरपूर सु० ॥ शां० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निश्चय नय निजगुण करी, सदा विराजे एह ॥ आतम अविकारी अचल, व्यवहारियें धरि देह ॥ १ ॥ माया नारी वश कियो, चेतन राजा जेम ॥ मोह विवेक विरनंत सव, नवि जन सुणजो तेम ॥ २ ॥ वृद्ध वचन अनुसारथी, ए अधिकार करेइ ॥ बालक अटवी ऊतरे, गुरुजन हाथ धरेइ ॥ ३ ॥ पद्मनान नगवंतनो, शिष्य नावि अणगार ॥ धर्मरुचि नामें नलो, कहेशे सकलविचार ॥ ४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ इमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥ जंबुद्वीप ए जाणियें रे, गोलत णी परें होय ॥ मध्य मेरु नानि समो रे, दीसते अरका जोय ॥ नविकजन, सुणजो ए अधिकार ॥१॥ ज्युं लाने अनुनव सार, ज्युं पामे नवनो पार ॥न०॥सु०॥ ए आंकणी ॥ मेरुथी दक्षिण दिश नलो रे, नरत क्षेत्र कहेवाय ॥ रत्न लान लोजें करी रे, समुद्र निकट रहेवाय ॥ न० ॥ सु० ॥ २ ॥ ए अवसर्पिणीमां हुवा रे, तीन आरा वहु मान ॥ चोथा आरा डेहडे रे, हुवा श्री वर्द्धमान ॥ न० ॥ सु० ॥ ३ ॥ सात हाथ सुप्रमाण डे रे, सोवन वरण शरीर ॥ सिंह लंबन शोने नलो रे, जिनवर श्री महावीर ॥ न० ॥ सु० ॥ ४ ॥ तस पद पंकज नमर ज्युं रे, सेवे श्रेणिक राय ॥ गिरुउं श्रावक गु

एं नखो रे, मगधेसर कहेवाय ॥ न० ॥ सु०॥५॥ राजगृही नगरीतणा रे, सघला सुखिया लोक ॥ सौम्यदृष्टि स्वामीतणी रे, वाधे सघला थोक ॥ ॥ न० ॥ सु० ॥ ६ ॥ अरिनो नाव रथ चक्रमें रे, लाजे तेहने राज ॥ तेम प्रताप वाधे घणा रे, सारे सहुनां काज ॥ न० ॥ सु० ॥ ७ ॥ धर्म अर्थ काम तीन ए रे, साचवे समय सावधान ॥ देव परीक्षा पहोंचियो रे, दीपायो धर्मवान ॥ न० ॥ सु० ॥ ८ ॥ मीनग्राही ऋषि देखीने रे, चूको नहि सन्नाव ॥ समकित साचो राखियो रे, नवजलतारण नाव ॥ ॥ न० ॥ सु० ॥ए॥ दार कुमार नाइ पुत्रनो रे, वात संबंध विचार ॥ अवर आगमथी जाणजो रे, इहां न कह्यो विस्तार ॥ न० ॥ सु० ॥ १० ॥ अरिहंत नक्ति आदें करी रे, वीश स्थानकमां केवी ॥ तीर्थंकर गोत्र बांधियुं रे, शुद्ध आतम सुविसेवी ॥ न० ॥ सु० ॥ ११ ॥ समकितधारी जे हुवे रे, अपतित धारा पाय ॥ वैमानिक वरजी करी रे, अवरगतें नवि जाय ॥ न० ॥ सु० ॥ १२ ॥ श्रेणिक समकित लानथी रे, पेहलुं बांध्युं आय ॥ ए कारण जाणो इहां रे, पहेली नरकें जाय ॥ न० ॥ सु० ॥ १३ ॥ रुंधीजें दरियावने रे, अर्जुन बाण रोकाय ॥ रुंधीजें वन्हि वीजली रे, कर्म उदय न रहाय ॥ न० ॥ सु० ॥ १४ ॥ स्वरुतनावना नावतो रे, निर्जर तो निज कर्म ॥ अति वेदना होशे नहिं रे, स्थिर रहेशे निज धर्म ॥ न० ॥ सु० ॥ १५ ॥ सहस्र चोराशी वर्षनो रे, पाली आयु निदान ॥ गज जिम गरता संवशे रे, वारु वधशे वान ॥ न० ॥ सु० ॥ १६ ॥ मति श्रुत अवधि ज्ञानें करी रे, शोनतो होशे तेह ॥ अवतरशे ए नरतमां रे, अघपावकमां मेह ॥ न० ॥ सु० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूछे शिष्य किणे समे, कुण नामें जिनराय ॥ कोण गामे कोण पुर वसे, हवे गुरु कहे पसाय ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ नल राजारे देश, होजी पिंगलदूती पन्नाविया ॥ ए देशी ॥ ए अवसर्पिणी एम, होजी सवली उतरी जिण समे ॥ बीजी उत्सर्पिणी तेम, होजी वधतो समे उलखने समे ॥ १ ॥ पेहलो आरो अति उष्ट, होजी उतरयो बीजो लागती ॥ ए कांइक ने शुद्ध, होजी मेघ घणा त्यां वरसती

आज गज आव्यो अने, रिपु गण वटिका वाज ॥ २ ॥ नवि जाणुं आयो कशा, किण प्रेख्यो किण हेत ॥ इन्द्र कीधुं तुज नेटणो, मूक्यो ए गज सेत ॥ ३ ॥ हाथी घणा तुम राजमां, ए सम को नहिं एक ॥ हस्तीशालायें आणियो, आपथी धरि सुविवेक ॥ ४ ॥ राजा आव्यो त्यां किणे, सेवकनां सुणी वयण ॥ हस्ती रयण दीठो खरो, आनंद पायो नयण ॥ ५ ॥ उपयोगें करी निरखियो, जगवंत ज्ञान विशेष ॥ वेताढ्य वनवासी करी, नाठो दवने देख ॥ ६ ॥ बहु शुज लक्षण देखीने, पटहस्ती राय कीध ॥ तसु येंगी फिरशे धरा, विमलवाहन नाम दीध ॥ ७ ॥ पद्मनाज देवसेन वली, विमलवाहन त्रण नाम ॥ अर्थ युक्त इणि परें होशे, जोगवशे सुख काम ॥ ८ ॥ जोग कर्म खपवा जणी, केवल करशे राज ॥ पुण्य पाप विण जोगव्यां, न लहे धर्म कहाज ॥ ए ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ रसियाना गीतनी देशी ॥ लली लली लोकांतिक सुर वीनवे, सुण स्वामी अरदास ॥ सुज्ञानी ॥ गज धरा मूको हवे मूलथी, धर्म तीर्थ परगास ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ १ ॥ तुं ज्ञानी तुं ध्यानी ध्याइयें, त्यागी सागी रे होय ॥ सुज्ञानी ॥ संगी रंगी तुं कयही नहिं, शिवरूपी शिव जोय ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ २ ॥ तुं दानी तुं मानी दीपतो, वाणी सुणी हवे तेह ॥ सुज्ञानी ॥ दान धर्म दीपायो इश्ने, सोवन धारा रे मेह ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ ३ ॥ वरसी दान ते मेह समान ने, निवृत्ति हुइ जय तास ॥ सुज्ञानी ॥ प्रगटी सुरवि शरद मनमां जली, निर्मल जीवन राश ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ ४ ॥ पातक पंक पलाया तिण समे, हरख्यां हंसनां वृंद ॥ सुज्ञानी ॥ सरस हुआं फल सघलां बीजडां, विकस्यां जवि अरविंद ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ ५ ॥ मुगता मारग हुआ मनहरु, साधु जणी सुखदाय ॥ सुज्ञानी ॥ संयम लेवा उद्यम तव करे, पितृ पग्लोकें रे जाय ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ ६ ॥ त्रीश वर्ष पण होशे तिण समे, पुत्रने देशे रे राज ॥ सुज्ञानी ॥ दीक्षा उत्सव करशे देवता, मलता मली सुरराज ॥ सुज्ञानी ॥ ल० ॥ ७ ॥ शिबिका बेसी सुरनर वृंदशुं, नव नव नाटक साज ॥ वैरागी ॥ जय जय धन धन शब्द सहु जणे, सारो आतम काज ॥ वैरागी ॥ ल० ॥ ८ ॥ उपवन आवी शिबिकाथी ऊतरी, आजरण सकल उतार ॥ वैरागी ॥ नमो नमो श्री

सिद्ध नणी कहे, सावद्य सघलां निवार ॥ वैरागी ॥ ज० ॥ ए ॥ निश्चें मन आतमशुं नावता, शत्रु मित्र समता रे तास ॥ वैरागी ॥ घर्म पवन शीत सवलां जालशे, गिरि ज्युं धीरमवास॥ वैरागी ॥ ज०॥ १० ॥ घनघाती माती वृक्षावली, दूर करे बल फोर ॥ वैरागी ॥ नावत ध्यान कुगर करें ग्रही, एकाकी आप जोर ॥ वैरागी ॥ ज० ॥ ११ ॥ देवता नर तीर्यंचें जे किया, सवल परिसह जेह ॥ वैरागी ॥ सहिया वहिया कर्म उदय करी, अनुलोम प्रतिलोम तेह ॥ वैरागी ॥ ज०॥१२॥ बार वरस पक्ष तेर उपर थकां, लेशे केवल ज्ञान ॥ वैरागी ॥ समवसरण करशे सुरपति तदा, जोयणनो तसु मान ॥ वैरागी ॥ ॥ ज० ॥ १३ ॥ कनक सिंहासन आदि देइ करी, प्रतिहारज अड सार ॥ वैरागी ॥ देशना देशे मधुर ध्वनियें करी, नविजनने उपकार ॥ वैरागी ॥ ज०॥१४॥ समकित केइ देशविरत केइ, केइ ले संयम नार ॥ वैरागी ॥ संघ चतुर्विध स्थापना होयशे, धर्म उदय सुखकार ॥ वैरागी ॥ ज० ॥ १५ ॥ एकादश गणधरनी स्थापना, त्रिपदी देइरे कीध ॥ वैरागी ॥ शिष्य घणा होशे तसु सेहथें, प्रगटी आतम ऋद्धि ॥ वैरागी ॥ ज०॥१६॥ नगवंत देश विदेशें विचरशे, तारण तरण जहाज ॥ वैरागी ॥ धर्ममंदिर कहे धन वासर तिको, वांदीजें जिनराज ॥वैरागी ॥ ज०॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ पद्मनान्न जिनवर तणो, साधु गुणे शिरदार ॥ काम क्रोध जीत्या जिणें, धर्मरुचि अणगार ॥ १ ॥ किण प्रस्तावें पूछशे, कहो स्वामी मुऊ एह ॥ केवल होशे के नहिं, मुऊ मन ठे संदेह ॥२ ॥ नगवन् नांखे सुण ऋषि, सुग्राम नामें ग्राम ॥ तस उपवनमांहे तुजे, केवल पद अनिराम ॥३॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ नरत नृप नावशुं ए ॥ ए देशी ॥ धर्मरुचि एम सांनली ए, ले जिनवर आदेश, महामुनि सेवियें ए ॥ ए टेक ॥ चाली ते तिहां जायशे ए, तसु वनने परदेश ॥ महा० ॥ १ ॥ एकादशमी प्रतिमा धरी ए, ध्यान घणां लयलीन ॥ म० ॥ क्षपकश्रेणी क्षणमां करि ए, आवशे गुणठाणें क्षीण ॥ म० ॥ २ ॥ तेरमे केवल पामशे ए, लोकालोक प्रकाश ॥ म० ॥ केवल महिमा सुर करे ए, आणी अधिक उल्लास ॥ म० ॥ ३ ॥ देवनां दुंडुनि वाजशे ए, जय जय शब्द सुहाय ॥ म० ॥ शामना लोक सहु आ

वशे ए, वंदन कारण थाय ॥ म० ॥ ४ ॥ गामनो चोधरी आवशे ए, म हिमा देखण काज ॥ म० ॥ चमत्कार चित पामशे ए, धन्य धन्य ऋषि राज ॥ म० ॥ ५ ॥ जाप होम कीजें घणा ए, एको न आवे देव ॥ म० ॥ अणतेड्या आवी करी ए, लाख झानें करे सेव ॥ म० ॥ ६ ॥ देवे नहिं लेवे नहिं ए, आदर न करे कोय ॥ म० ॥ दर्शन सप्नें दोहिलुं ए, ते सुर सेवक होय ॥ म० ॥ ७ ॥ प्रज्ञता जवलानें करी ए, मानव मान करेइ ॥ म० ॥ अनुपम प्रज्ञता एहनी ए, समता दमता धरेइ ॥ म० ॥ ८ ॥ रूडो रूप सोहामणो ए, यौवन लावण्य जोर ॥ म० ॥ तप जप तेज दिवाकरु ए, कष्ट क्रिया पण घोर ॥ म० ॥ ए ॥ एम उल्लसित परिणामशुं ए, जाव जगति मन काम ॥ म० ॥ चरण कमल वांदी करी ए, बेसी यथायोग्य गम ॥ म० ॥ १० ॥ देशना देइ रह्या पठी ए, एकांत वेला पाय ॥ म० ॥ ग्रामणी कर जोडी करी ए, पूठशे चित्त लगाय ॥ म० ॥ ११ ॥ तुम दर्शन थी पामिया ए, विस्मय वारंवार ॥ म० ॥ तमें कोण क्यांथी आविया ए, ए ऋद्धि केहे प्रकार ॥ म० ॥ १२ ॥ ते विरतंत कहीजियें ए, ज्युं मन आ नंद थाय ॥ म० ॥ वचन सुधारस पीजियें ए, नवनी प्यास बुऊाय ॥ म० ॥ १३ ॥ देवानुप्रिय सांजलो ए, महोटुं चरित्र ठे एह ॥ म० ॥ स्थिर मन करि शुज जावशुं ए, धर्म उपर धरि नेह ॥ म० ॥ १४ ॥ प्रथम खंम पूरो थयो ए, साते ढालें सार ॥ म० ॥ दयाकुशल पाठकवरु ए, तसु सान्निध्य सुखकार ॥ म० ॥ १५ ॥ धर्ममंदिर गणीयें कह्यो ए, पद्मनाज अधिकार ॥ म० ॥ सुणतां जणतां शिवकरु ए, श्रीसंघने जयकार ॥ म० ॥ १६ ॥

इतिश्री प्रबोधचिन्तामणौ ढालजापाप्रबन्धे पद्मनाजजिनचरित्र धर्मरुचि मुनिमोक्षाधिकार नामा प्रथमखंमः संपूर्णः ॥१॥

॥ अथ द्वितीयखंम प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे बीजे खंम बोलशुं, आतमनो अधिकार ॥ आलस अंघ तजी क री, सुणजो जवि चित्त धार ॥ १ ॥ ग्रामणी पूठयो तेहनो, उत्तर आखें एम ॥ ऋद्धि सिद्धि जिनवर लही, धर्मरुचि कहे तेम ॥ २ ॥ स्थिर वस तां संसार पुर, नामें नगर कहाय ॥ अनंत जीव लोकें जख्यो, घृतघट केरें

न्याय ॥ ३ ॥ दूश्रा होशे जे अछे, ग्राम नगर नग राशि ॥ ए सहु ते पु रने अछे, एके खूणे वास ॥ ४ ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ए, पाटक तीन प्रका र ॥ उत्तम मध्यम जघन्य जीव, वसवानो व्यवहार ॥ ५ ॥ क्रमी कीटक आदें करी, इन्इ अनें सहु जीव ॥ आप आपणा गाममां, मग्न रहे निशि दीव ॥ ६ ॥ क्युं कामण इण पुर कियां, वास न ठोड्यो जाय ॥ ड्डुःख दू पण देखे घणां, तोही आवे दाय ॥ ७ ॥ अवर नयर प्रायें हुवे, वासक दे उदवास ॥ अधिकायी ए नगरनी, कही न होवे नाश ॥ ८ ॥ आपाढा सम उदधि सहु, क्रीडा गिरिसम मेर ॥ गति आगति नाटक तिहां, होय रह्यां बहु वेर ॥ ए ॥ तिण नगरें राजा अछे, हंसराज अनिराम ॥ आत्म दृष्टी उजलवे, तास कहुं गुण ग्राम ॥ १० ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ नायकानी देशी ॥ अथवा ॥ तनु परणी मृगावती रे ॥ ए देशी ॥ संसार नगरीनो धणी रे,अनुपम रूप निधान रे सोजागी ॥ गुण तेहना को ण दाखवे रे लाल, जो करे सहस विधान रे सोजागी ॥ हंस राजा गुण सांजलो रे लाल, पावन करो निज कान रे सो० ॥ हं० ॥ १ ॥ प्रत्यक्ष के ई एहना रे, गुण मणिरयण प्रकाश रे सो० ॥ केइ अगम अपार ठे रे ला ल, उज्ज्वल गुण हिमराश रे सो० ॥ हं० ॥ २ ॥ कोटि ज्ञानें ग्रंथें जणे रे, केइ तप तपे लाख रे सो० ॥ ते पण सकल सरूपने रे लाल, कही न शके मुख जाख रे सो० ॥ हं० ॥ ३ ॥ अंगुलि मेरु उपाडियें रे, बांहे समुइ तरेय रे सो० ॥ एवा शूरा सांजल्या रे लाल, नृप गुण सहु न धरेय रे सो० ॥ हं० ॥ ४ ॥ एक समयमां संचरे रे, लोकने अंतें वेग रे सो० ॥ एक समय अवर न को अठे रे लाल, जागती जेनी तेग रे सो० ॥ हं० ॥५॥ ज्ञानसागर पण ए सही रे, समकित मोती जेप रे सो० ॥ मंच अर्थे लहेरां घणी रे लाल. पवन विजाव ठे नेप रे सो० ॥ हं० ॥ ६ ॥ स्वाजा विक गुण जेहनो रे, केवल ज्ञान विलास रे सो० ॥ सूर्य ज्योति ज्युं जाग ती रे लाल, दीपावे आकाश रे सो० ॥ हं० ॥ ७ ॥ वर्णाश्रमण पण नही रे, रंग विरंग न थाय रे सो० ॥ संघयण संठाण ए नहिं रे लाल, अकल स रूप सुहाय रे सो० ॥ हं० ॥ ८ ॥ आदि अनादि ए नहिं रे, बाल न वृद्धो एह रे सो० ॥ जंगम स्थावर ए नहिं रे लाल, स्थूल न नहानी देह रे

सो० ॥ हं० ॥ ए ॥ रूपी रसियो ए नहिं रे, गंध न लेवे कोय रे सो० ॥ फरसे नहिं ए फरसने रे लाल, ज्योति स्वरूपी सोय रे सो० ॥ हं०॥ १० ॥ निर्मल स्फटिकतणी परें रे, निश्चय नय करी जोय रे सो० ॥ कर्म उपाधि मल्यां थयां रे लाल, बहुविधरूपी होय रे सो० ॥ हं० ॥ ११ ॥ परगुण ने वश आवीयो रे, निज गुणने वीसार रे सो० ॥ चर स्थिर सवले संचरे रे लाल, अशुद्ध योग प्रकार रे सो० ॥ हं० ॥ १२ ॥ काष्टमां पावक पाइ यें रे, तिलमां तेल ज्युं होय रे सो० ॥ गोरसमां घी नालियें रे लाल, माटीमां हेम होय रे सो० ॥ हं० ॥ १३ ॥ क्षीर नीर न्यायें करी रे, होय रह्यो एक मेक रे सो० ॥ देहमांहे रह्यो उलखे रे लाल, जसु हैडे सुविवेक रे सो० ॥ हं० ॥ १४ ॥ पंचभूत भेलां करे रे, नाम कर्म वश पाइ रे सो० ॥ सेनानी सूत्रधार ज्युं रे लाल, सेना रथंग मिलाय रे सो० ॥ हं० ॥ १५॥ सकल पदारथ लोकमां रे, दिखलावे छे एम रें सो० ॥ दीपक तम निशि मंदिरें रे लाल, प्रगट प्रकाशे तेम रे सो० ॥ हं० ॥ १६ ॥ कर्ता भोक्ता ए सही रे, गमनागमन विचार रे सो० ॥ जब लग कर्मे विंटियो रे लाल, तब लग ए व्यवहार रे सो० ॥ हं० ॥ १७ ॥ एह विना जग शून्य छे रे, चंड विना जेम रात रे सो० ॥ वदन कमल नयणा विना रे लाल, शोभे नहिं तिल मात रे सो० ॥ हं०॥ १८ ॥ आतमना गुण आखिया रे, धर्म रुचि अणगार रे सो० ॥ धर्ममंदिर कहे सांजलो रे लाल, हवे पटराणी विचार रे सो० ॥ हं० ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चेतना राणी रायनी, चमकी चतुरा नार ॥ प्रीतमशुं राती रहे, घरनी जाणे सार ॥ १ ॥ संवित १ प्रज्ञा २ चेतना, ३ आतपज्योति ४ उदार ॥ इत्यादिक जसु नाम छे, विविधरूप विस्तार ॥ २ ॥ मूल रूप केवल दशा, अनुपम महिमा निधान ॥ ज्युं कर्त्रिम तिनमें नहिं, परमारथंवं प्रधान ॥ ३ ॥ तेह रूप आतम निकट, रहे न देखे एह ॥ ज्ञानावर्णादिक घणी, लाग रही छे खेह ॥ ४ ॥ बीजुं रूप राणीतणुं, बुद्धि इस्यो विख्यात ॥ अनंत गुणें हीणो अछे, मूल रूपथी गात ॥ ५ ॥ पांचांसुं मलती रहे, श्रवण मनन परचार ॥ नृपति करणी जे करे, बुद्धितणे अनुसार ॥ ६ ॥ बुद्धितणां बे रूप हुवे, कुबुद्धि सुबुद्धि विशेष ॥ ज्युं धरती एकरूप छे, खा

री मीठी देख ॥ ७ ॥ सुबुद्धि कुबुद्धि बेउ घरणी, व्यवहार वर्त्तण काज ॥ सूर्य ढवी निशि सुख श्रबे, इणिपरें विचरे साज ॥ ८ ॥ सुबुद्धितणे वारे करे, नृपति उत्तम काम ॥ कुबुद्धितणे वारे करे, पापतणो जे धाम ॥ ए ॥ सुबुद्धि शीख सुख दाखवे, राजा नावे दाय ॥ पथ्य श्रने हित शीखवे, प्रायें मधुर न थाय ॥ १० ॥ कुबुद्धि नारीशुं नरपति, श्रहोनिश राखे रंग ॥ नदीपूर धननो धणी, ढले नीचसुं संग ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ वींदलीनी देशी ॥ सीता तो रूपें रूडी, जाणे श्रांबा मालें सूडी हो ॥ सीता श्रति शोहे ॥ ए देशी ॥ तिण नगरीयें एक नारी, वसे माया कामणगारी हो माया मन मोहे ॥ कर्म प्रकृति नाम बीजो, श्रात्मदामनिका त्रीजो हो ॥ मा० ॥ १ ॥ काम कुतूहल जाणे, तिण सघला घरमें श्राणे हो ॥ ॥ मा० ॥ चंचल विजली जेती, चमकंती चाले तेती हो ॥ मा० ॥ २ ॥ जामिनी जोग नजेरी, तिम मलपे शेरी शेरी हो ॥ मा० ॥ हाव जाव बहु जाणे, तिम नरनां मन वश श्राणे हो ॥ मा० ॥ ३ ॥ कूड कपटनी गेह, जसु देहानो नहिं छेह हो ॥ मा० ॥ सोले कषाय शृंगारा, सजी चाली राज डुवारा हो ॥ मा० ॥ ४ ॥ दीठो राय तिण नारी, चंचल चतुरा श्रति सारी हो ॥ मा० ॥ श्रांखतणे फुरकारे, राय कीधो श्रापणे सारे हो ॥ ॥ मा० ॥ ५ ॥ विहुं राणीशुं मेल, करवा वांछे छे नेल हो ॥ मा० ॥ सुबुद्धिशुं मांही श्रंगीठी, करे मुखनी वात ते मीठी हो ॥ मा० ॥ ६ ॥ कुबुद्धिशुं महा प्रेम धारी, करे मांहोमांहे यारी हो ॥ मा० ॥ नव नव राग विलासा, देखावी राय कियो दासा हो ॥ मा० ॥ ७ ॥ हंस राजा वश कीधो, माया मनवंछित सीधो हो ॥ मा० ॥ श्रनंत दलिक पुण्य पाप, बंधन बांध्यां बहु व्याप हो ॥ मा० ॥ ८ ॥ राजा मन नवि कोपे, नव नवली प्रीति श्रारोपे हो ॥ मा० ॥ बांध्यो पण वडवेगी, जाये सिद्ध शीला लग तेगी हो ॥ मा० ॥ ए ॥ जरता ने जंजेरे, सद्बुद्धिशुं मनसा फेरे हो ॥ मा० ॥ माया कुबुद्धितणो एकारो, श्रवे सुबुद्धितणो वसे वारो हो ॥ मा० ॥ १० ॥ मायानुं कह्युं माने, सद्बुद्धिने कीधां काने हो ॥ मा० ॥ डुर्बुद्धिशुं घणी प्रीत, वली मायाशुं घर रीत हो ॥ मा० ॥ ११ ॥ राजा श्रागल माया, डुर्बुद्धि गुण वदे सवाया हो ॥ मा० ॥ डुर्बुद्धि माया मलियां, श्रहनिश माणो

रंग रलियां हो ॥ मा० ॥ १२ ॥ सुबुद्धिने वारें वासे, पिनु नावे तेहनी पासें हो ॥ मा० ॥ सुबुद्धिने को नहिं मान, मायानो वाध्यो वान हो ॥ ॥ मा० ॥ १३ ॥ सुबुद्धि राणी इम ध्यावे, हवे प्रीतम हाय न आवे हो ॥ मा० ॥ साची वात ए जोइ, लोक परघरनंजा होइ हो ॥ मा० ॥ १४॥ वेहेनड शोक्य ए मेरी, मायायें ते पण फेरी हो ॥ मा० ॥ घरनो नेद ए नारी, तिण कांइ न फेरे सारी हो ॥ मा० ॥ १५ ॥ वे नारी वे पासी, इणयी हुं जाउं नासी हो ॥ मा० ॥ कामण करी पिनु बांध्यो, तनु बगड्यो अन्न ज्युं रांध्यो हो ॥ मा० ॥ १६ ॥ नारी चरित्र ठे नारी, मो विण कुण जाणणहारी हो ॥ मा० ॥ नृपने सकल बतावुं, जो अवसर सखरुं पावुं हो ॥ मा० ॥ १७ ॥ अवसर ओपध लीजें, नवले तप क्युंही न दीजें हो ॥ मा० ॥ अवसर नदियां तरियें, नव पूर न नरवा करियें हो ॥ मा० ॥ १८ ॥ अवसर वेढ निवारे, बुध तेहिज वेला विचारे हो ॥ मा० ॥ सुबुद्धि इस्युं मन आणी, कोइने न कही हित वाणी हो ॥ मा० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मायाथी सुख सेवतां, पुत्र थयो परधान ॥ मोह नाम जग परगडो, वाध्यो सघले वान ॥ १ ॥ मोहथकी माया हवे, मायाथी मोह जाण ॥ अशुद्ध निश्चय नय जोवतां, कर्मतणी ए खाण ॥ २ ॥ बीजथकी सहकार ठे, सहकारें बीज जोय ॥ पर्वथकी इक्षु नीपजे, इक्षुयकी पर्व होय ॥ ३ ॥ बगलांथी ईंमां हुवे, ईंमांथी बग देख ॥ ए अनादि संबंध ठे, व्यवहारें बहु नेख ॥ ४ ॥ डुर्बुद्धिने वल्लन घणुं, खेलावे धरि कोड ॥ मोह कुंवर मनोहर थयो, बीजो नावे जोड ॥ ५ ॥ माया डुर्बुद्धि एणी परें, मोह वधारे दोय ॥ नवि जाणे को पुत्र ए, बीहुंमें कहेनो होय ॥ ६ ॥ सहजे मेलो मोह ए, जनकजणी करे डोह ॥ हेतविना सहु लोकशुं, वैर वधारे मोह ॥ ७ ॥ पामातुर नरने सदा, मीठी खाज सुहाय ॥ पण ते डुःखदायक घणुं, मोह इसी पेरें थाय ॥ ८ ॥ डुर्बुद्धि माया मोह मली, केद कियो हंसराय ॥ तेह दशा हवे वर्णवे, सहु सुणजो मन लाय ॥ ९ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ चरणाली चामुंम रण चढे ॥ ए देशी ॥ नायक लायक ठे घणुं, पडियो परवश जायो रे ॥ जुआरी पर हारियो, कुबुद्धितणो व्यवसायो रे ॥ नायक०

॥ १ ॥ दिन उगे ज्युं चन्द्रमा, हिम पड्यां ज्युं वृक्षो रे ॥ कान्तिकला ज्युं हीन एं, हूतो अति हि दक्षो रे ॥ नायक० ॥ २ ॥ निर्लक्षण नारी मल्यां, एक फजेती जोयो रे ॥ रंक नयो रजवट गयो, घेहलानी परें होयो रे ॥ ॥ नायक० ॥ ३ ॥ मूढ नयो मद आलसु, मूक नयो वली अंधो रे ॥ वो बडो बोखो लघु नयो, मायाने प्रतिबंधो रे ॥ नायक० ॥ ४ ॥ मोह मा हा मद प्रेरियो, सूक्ष्म निगोदें जायो रे ॥ वली बादर निगोदमां, अनंत काल रहिवायो रे ॥ नायक० ॥ ५ ॥ पृथ्वी पाणीमां ते उपजे, वाय वन स्पति तेमो रे ॥ सूक्ष्म बादर बे नम्यो, असंख्याता नव एमो रे नाय ॥ क०॥ ६ ॥ क्रमी कीटक कुंथु नयो, कीटिका भ्रमर पतंगो रे ॥ विकलेन्द्रि यमां बहु नम्यो, माया मानिनी संगो रे ॥ नायक० ॥ ७ ॥ उरपरि भुज परि खेचरा, जलचर जीव विशेखो रे ॥ पंचेन्द्रिय तिर्यंचना, नवनो के हो लेखो रे ॥ नायक० ॥ ८ ॥ साथ हुइ माया नारी, साते नरक देखा य रे ॥ वायुवशें ज्युं पानडुं, जल थल सघले जाय रे ॥ नायक० ॥ ९ ॥ हंस विचारे एकदा, किमही माया जायो रे ॥ जागी बांहतणी परें, लाग रही गल धायो रे ॥ नायक० ॥ १० ॥ अनंत काल नव पंथ छे, पंथीसम नृप जायो रे ॥ फरतां थाको एकदा, नरवपुपुरमां आयो रे ॥ नायक०॥ ११॥

॥ दोहा ॥

॥ पुर पेखंतां इक मल्यो, मनरूप बालक कोय ॥ आलिंगन आवी दी यो, शकुन नलुं ए होय ॥ १ ॥ अति सूक्ष्म तनु जेहनुं, सुंदर चंचलरूप ॥ आलस नहिं वयमधरु, इम चिन्ते मन नृप ॥ २ ॥ पांचे इन्द्रियनी क्रिया, मालम करशे मोही ॥ परपंची परधान ए, होशे राजनी सोही ॥३॥ इम जाणी आदर दियो, माथे फेरी हाथ ॥ मधुर वचन बतलाइने, तुर त लियो ते साथ ॥ ४ ॥ औदारिक पुद्गल मही, तनु पुर वास वसाय ॥ प्राण उदान अपान वली, इत्यादिक पंच वाय ॥ ५ ॥ व्यापारी महोटा जिहां, पांचे इन्द्रिय सार ॥ आणी तेह वसाड्या, नगर हुवुं शिरदार ॥६॥ ईंमा पिंगला नारी तिहां, राय मार्ग सुखदाय ॥ नव द्वारें करी शोननो, भुजअर्गल कहेवाय ॥ ७ ॥ सातुं धात कपाट बली, निपजाया बहु मान ॥ जब मन परजापति थयो, तव कीनो परधान ॥८॥ माया महिला मायनी, क्षण इक न तजे साथ ॥ इण कारण अधिकार सब, मान प्रधानने हाथ ॥ ९ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ धणरा ढोला एना गीतनी देशी ॥ इण अवसर हवे एकदा रे, रूठी माया नारी॥मनना मान्या॥ प्रीतमशुं कलहो करे रे, मानवती निर्धार ॥ मनना मान्या ॥ कहुं कीजें हो सुजाण कहुं कीजें, नीच मायाशुं मोहिनी उतार ॥ मनना मान्या ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सुबुद्धि कहे कर जोडिने रे, सांजल तुं नरतार ॥ म० ॥ एह दशा तुमची नहीं रे, आपो आप विचार ॥ म० ॥ कहुं० ॥ २ ॥ पंमित तुं जग परगडो रे, नीचशुं संग निवार ॥ म० ॥ हुं नारी तुमने कहुं रे, तेह नहिं व्यवहार ॥ म० ॥ ॥ कहुं० ॥ ३ ॥ व्यसन वगोवे वाहला रे, उत्तमने पण एह ॥ म० ॥ सुख मीठा धीठा जिके रे, अंत दिखावे छेह ॥ म० ॥ क० ॥ ४ ॥ जोला तो नूले सदा रे, एह अनादिनी रीत ॥ म० ॥ पंमितही जो पांतरे रे, क्युं रहेशे शुन नीत ॥ म० ॥ कहुं० ॥ ५ ॥ तुं उत्तम शिरसेहरो रे, नेहडो इणशुं निवार ॥ म० ॥ नीच कीचमां इहां रहे रे, निज पदने संजार ॥ म० ॥ कहुं० ॥ ६ ॥ घरणी परणी जे तजे रे, कृत ऊपर ए खार ॥ म० ॥ प्रीतम पल्लव फालीने रे, वीनवुं वारंवार ॥ म० ॥ कहुं० ॥ ७ ॥ चातुर पण आतुर सदा रे, कर्म उदय वश होय ॥ म० ॥ पण कबही पाठी लिये रे, आप विचारी जोय ॥ म० ॥ कहुं० ॥ ८ ॥ तें शिर चाढी एहने रे, घरधणियाणी कीध ॥ म०॥ चारवाकमती हशे रे, घरनो नेद इण दीध ॥ म० ॥ कहुं० ॥ ए ॥ पोपी पण द्वेपी नइ रे, शोपी नहिं ए लगार ॥ म० ॥ दूध जुजंगी पाइयें रे, वाध्यो विषनो जार ॥ म० ॥ कहुं० ॥ १० ॥ मधुबिन्दु सम सुख देइने रे, दे डुःख मेरुसमान ॥म०॥ हठ करे शठ नावें चढी रे, वाध्युं अति अनिमान ॥ म० ॥ कहुं० ॥ ११ ॥ विषवेली व्याली कीधुं रे, फाली पावक जाल ॥ म० ॥ ए पातकथी नवि टले रे, पाप सरोवर पाल ॥ म० ॥ कहुं० ॥ १२ ॥ पाणीथी पावक कीधो रे, अमृतथी विष थाय ॥ म० ॥ अंगारा वरसे चन्द्रथी रे, रविथी तम प्रगटाय ॥ म० ॥ कहुं० ॥ १३ ॥ धूल उडे सागरथकी रे, पथ्यथकी थाय रोग ॥ म० ॥ वर स्वरूपी तो नणी रे, एह कर्मनो योग ॥ म० ॥ कहुं० ॥ १४ ॥ पाप क्रिया जे ए करे रे, तसु नोक्ता तुं थाय ॥ म० ॥ रागवशें जाणे नहिं रे, ए कामण कहेवाय ॥ म० ॥ कहुं० ॥ १५ ॥ एहनो शील शठ एहवो रे,ज्युं

कायरनी बांह ॥म०॥ कमल नाल पुण ते धरो रे, वली वादलनी छांह ॥ म० ॥ कहुं० ॥ १६ ॥ वेलुघर रायजुज जिमे रे, खल वाणी वारि तेह ॥ म० ॥ मुख मीठी ए हती खरी रे, निपट नहिं जसु नेह ॥ म० ॥ कहुं० ॥ १७ ॥ तीन भुवनत्रायक हतुं रे, वल तहारुं ते केथ ॥ म० ॥ प्रभुता ते ताहरी किहां रे, रंक थयो रह्यो एथ ॥ म० ॥ कहुं० ॥ १८ ॥ प्रायः स्त्री जगमां अछे रे, रांढुं विण पगपाश ॥ म० ॥ रात विना अंधकार ए रे, पुरुष नणी करे दास ॥ म० ॥ कहुं० ॥ १९ ॥ पाणी विना ए पुरुष छे रे, धूल विना रज लेप ॥ म० ॥ मदिरा विण मदमत्तता रे, क्युं रज नीरें छे प ॥ म० ॥ कहुं० ॥ २० ॥ सुबुद्धि शीख इणि परें कही रे, प्रीतमने पर धान ॥ म० ॥ धर्ममंदिर गणि इम कहे रे, अजहुं माया मान ॥ म० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलि राणी इम वीनवे, सुण आतम माहाराय ॥ हुं पण एहयकी मरुं, नावुं तुमचे पाय ॥ १ ॥ माया पुत्र कुपुत्र जे, मोह इस्यो जस मान ॥ तुम छोही किण गुण करी, जीवन प्राण समान ॥ २ ॥ माया दुर्बुद्धि कामिनी, बेहू एकज साय ॥ बेहू तजवा योग्य छे, सुण साहिब मुऊ ना थ ॥ ३ ॥ निर्माल्य फूलतणी परें, अब जो छोडे एह ॥ राहुमुक्त ज्युं चंद्र मा, सपत्नी शोन धरेह ॥ ४ ॥ हितवत्सल प्रियसुं कह्यो, सपत्नी वात विचार ॥ राजा मुणि बोल्यो नहिं, चिंतवे सुबुद्धि विचार ॥ ५ ॥ प्रायः पुरुष कठोर दृढ, मन वच कायामांहिं ॥ नमती खमती प्रेमें करी, क्युंही रीजे नांहि ॥ ६ ॥ नारी सारीनी परें, तुरत फरे लही दाव ॥ कोमल कमलत णी परें, मृडु मन मुग्ध स्वनाव ॥ ७ ॥ नदीयां मीठां जल मही, सिंधु स मीपें जाय ॥ खारो जीवन खार मुख, करि तसु सहामो थाय ॥ ८ ॥ प्रीत रीत धर्म नीतिने, मूके सगुणा स्वाम ॥ तो नावी न मटे सही, सहजें होसे काम ॥ ९ ॥ सुबुद्धि इस्युं मन चिंतवी, जाय रही निज गाम ॥ सं क्लेश स्थानक तजे, संत सदा सुखधाम ॥ १० ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ चूनडीनी देशी ॥ अथवा ॥ कनकमाला इम चिंतवे, प्रेखी प्रद्युम्न स्वरूप रे, मन मोह्युं अमारुं नंदना ॥ ए देशी ॥ क्षण अंतर मायामानिनी, मन मान तजीने आइ रे ॥ स्वर्प वृत्ति अलगी गयां. जेम यामिनी आवे धाई रे

॥ १ ॥ मन मोह्यो माया कामिनी, नीको मटको एह रे ॥ ठमके चमके पगलां नरे, चपला चमके देह रे ॥ म० ॥ २ ॥ शोक्य तणी शंका नहिं, रंग राती माती लाल रे ॥ खीर नीर ज्युं मिल गइ, फूलवासना एक निहाल रे ॥ म० ॥ ३ ॥ हालचाल मायातणो, राजानो को नहिं चार रे ॥ मन मंत्री पण हवे चिंतवे, काम करुं ए अनुसार रे ॥ म० ॥ ४ ॥ माया राणीशुं करे, नीत मुजरो मन परधान रे ॥ अवसरने ते उंलखे, जे होवे बुद्धिनिधान रे ॥ म० ॥ ५ ॥ काम काज मायातणुं, मन मंत्री समारे सार रे ॥ खिजमत ठोडी रायनी, माया सेवे करी इक तार रे ॥ म० ॥ ६ ॥ माया पण जाणे खरो, ए सेवक में सिरदार रे ॥ कृपण नाव वजीरशुं, नवि कीजें ए व्यवहार रे ॥ म० ॥ ७ ॥ माया मान्यो मंत्रवी, अति वाध्यो साध्यो राज रे ॥ जोध जुवान हुउ जिसे, करे परणवानो साज रे ॥ म० ॥ ॥ ८ ॥ व्याकरणी कहे पंम ए, ते शब्दतणे अनुसार रे ॥ पण परमारथ जोवतां, पुरुषोतम दीठ उदार रे ॥ म० ॥ ए ॥ हवे डुर्बुद्धिने ठे पुत्रिका, नामें प्रवृत्ति प्रसिद्ध रे ॥ मायाने कहे मंत्रीयें, त्रण पुत्री लेइ दीध रे ॥ म० ॥ १० ॥ सगपण नवि हूउं हवे, प्रवृत्ति मोह बहु प्रीति रे ॥ कुटुंब सहु नेलुं रहे, करे रंग रली निज रीत रे ॥ म० ॥ ११ ॥ सुबुद्धि सुणी ए वारता, मनमांहे कियो योग रे ॥ नइ नरणी ने योगिणी, त्रण मली हूउं कुयोग रे ॥ म० ॥ १२ ॥ नाग्यवशें नृपति घरे, नेली थइ त्रण नार रे ॥ प्रवृत्ति कुबुद्धि माया वधू, ते राजाने शिर नार रे ॥ म० ॥ १३ ॥ राजा तो जाणे नहिं, वश पडियो वानर जेम रे ॥ मायाकामिनी नाचवे, नृप राचे नाचे तेम रे ॥ म० ॥ १४ ॥ परणावीने वश कियो, मन मंत्री जे परधान रे ॥ इण चंमा पग आरोपिया, मायानो वाध्यो वान रे ॥ म० ॥ १५ ॥ १३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुबुद्धि राणी मन चिंतवे, कीजें कोइ उपाय ॥ घरनां सूत रहे जिणे, ए मुज आवे दाय ॥ १ ॥ आलोचीजें केहशुं, केहशुं कीजें वात ॥ घरमांहे ए सायशुं, न निले मारी धात ॥ २ ॥ आपो आप विचारिशुं, बेसीने एकांत ॥ राजा सम आज मंत्री ठे, जिम तिम ए हिततंत्र ॥ ३ ॥ तो हवे हुं पण एहने, निज पुत्री परणाव ॥ सगपण साधुं एहशुं, दीसे ने ए दाव ॥ ४ ॥ पुत्री ठे शुन लक्षणी, रत्नकूखी कहेवाय ॥ जो कोइ क

ए पेदास हूय, तिणथी ए छुःख जाय ॥५॥ नानाने पण सुख करे,वेसाडे निज राज ॥ माया मोह कुबुद्धिने, काढि समारे काज ॥६॥ इम आलोची मंत्रीने, बोलावी कहे एम ॥ स्वामी धर्मधर तुं सही,धरजे हुं कहुं तेम॥७॥

॥ ढाल ठ्ठी ॥

॥ मेरी वहेनी कहे कांइ अचरिज वात ॥ ए देशी ॥ मुज हर्ष हूउं ठे ए सही, सुण मंत्री कहुं तेह ॥ पुत्री निवृत्ति ठे माहरी, परणीजें सस्नेह ॥ मंत्री मानजे ए माहरो उपदेश, अनुपम सुख लहेश, हर्षित होशे नरेश ॥मंत्री०॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ रत्नकूखी मुज पुत्रिका, निवृत्ति एहवे नाम ॥ परणावुं तुं तोलणी, होशे वंठित काम ॥मं०॥ २ ॥ मंत्री मनमांहि चिंतवे, ठेलियें केम करी लाठ ॥ आदर देइ घर आणियें, नवि कीजें पूठ गाठ ॥ मं० ॥ ३ ॥ इम जाणीने मन मंत्रवी, परणियो निवृत्ति उल्लास ॥ बिहु जामिनी सुखथुं रमे, नव नव रंग विलास ॥ मं० ॥ ४ ॥ इम जाणीनें मन मंत्रवी, पडवो वारो वास ॥ इक शंखिणी इक पद्मिनी, डुर्गंध इक फुलवास ॥ मं० ॥ ५ ॥ जूजूइ प्रकृति मिले नहिं, पश्चिम प्राची जोय ॥ अस्त उदय संगतिथका, सूर्य सम पिय होय ॥ मं० ॥ ६ ॥ वारो हुवे जब प्रवृत्तिनो, तब करे पाप अघोर ॥ निवृत्तिने वारे थये, पाप खरे अति जोर ॥ मं० ॥ ॥ ७ ॥ कुबुद्धि माया बे मली, गुण वर्णवे सुख एम ॥ तुं वडनागी मंत्रवी, बे स्त्री परण्यो प्रेम ॥ मं० ॥८॥ वल्लना होवे डुर्जना, गुण करी आप समान ॥ सरिखा सरिखो जो मले, तो करे सहु गुणग्राम ॥ मं० ॥ ए ॥ तम गुण सरखी प्रवृत्ति ठे, अति चपल चतुरा नार ॥ सकल क्रियामां पंमिता, कामकहू सिरदार ॥मं०॥ १० ॥ ए सुबुद्धिनी जे ठोकरी, आलसु जडाकार ॥ कर्महीण दीसे अठे,क्रियागुण न लगार ॥मं०॥ ११ ॥ तुज गुणथकी विपरीत ठे, तो किस्युं आदर मान ॥ अजगर ज्युं उंघी रहे, न करे लौकिक काण ॥मं०॥१२॥ शांत दांत सरिखी दीसती, क्युं नहिं लाव ने साव॥ कामकहू माणस नहिं, तेहथुं केहो नाव ॥ मं० ॥ १३ ॥ राज बीज वली मोह ठे, माया तणो अंगजात ॥ एहथुं प्रीत घणी करो, होशे जगतमें ख्यात ॥मं०॥ १४ ॥ को पर्व अवसर जाणीने, निवृत्तिने बोलाय ॥ क्षण एक तेहथुं सुख लहो, तुरत करो विदाय ॥मं०॥१५॥ बेउ नारीशुं एम मंत्रवी, सुख नोगवे संसार ॥ धर्ममंदिर कहे ते सुणो,विवेकतणो विस्तार ॥मं०॥१६॥

॥ दोहा ॥

॥ शीप स्वाति जल कण लही, मोती धारे जेम ॥ निवृत्ति नारी जन मियो, शुन्न लक्षण सुत एम ॥ १ ॥ नानी सुबुद्धि नणी हूउं, मनमां हर्ष अपार ॥ नाम विवेक दीयो न्नलो, सत्र जनमां सुखकार ॥२॥ विमल कमल कोमल तनु, नीलवट टीको नूर ॥ मोह इस्यो तम जीपवा, अनिनव ऊग्यो सूर ॥३॥ राजा रलियायत थयो, रंग ढंग तसु देख ॥ संग न्नलो एनो लही, रत्न विवेक विशेष ॥ ४ ॥ परम प्रतीत पवित्र तनु, अनुपम कुंवर विवेक ॥ परम ऋद्धि प्रापतिकरु, ए सम अवर न एक ॥ ५ ॥ खेलावे खंतें करी, राजा अवसर पाय ॥ सुबुद्धि मने सुख ऊपजे, आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ माया डुर्बुद्धि प्रवृत्तिने, मनमां थयो विषाद ॥ निवृत्तिने बेटो हूउं, वधशे वाद विवाद ॥ ७ ॥ विष वैरी पावक ऋणो, अल्पेशुं नित हाल ॥ बांधी जें कांइ हवे, पाणी पहेली पाल ॥ ८ ॥ रखे राजा मंत्री नणी, मलशे वारं वार ॥ तो बाजी हाथाथकी, जाशे पहेले पार ॥ ए॥ मोह विवेक बेहू रमे, देखे राजा हंस ॥ बेहु प्रवृत्ति मले नहिं, ज्युं वायस ने हंस ॥ १० ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ केश्क वर लाधो ॥ ए देशी ॥ माया डुर्बुद्धि बे मली, मन चिंते एह विचार रे ॥ वश करजे वारु ॥ प्रवृत्ति नणी इणिपरें कहे, शीख सांनल पुत्री सार रे ॥व०॥१॥ तुं चतुरा चपला ठे घणुं, नवि जाणे उंमा नेद रे ॥व०॥ शांत दांत तुऊ शोक्य ठे, तसु पुत्र हुवो गयो खेद रे ॥ व० ॥ २ ॥ पुत्र वती प्रिया मानीयें, घर सघलुं तेने हाथ रे ॥व०॥ पुत्रपखें शी पद्मिणी, स ही पुत्र अठे घर आथ रे ॥व०॥३॥ पुत्र विवेक हुआ पठी, नृप मंत्री बे हु एह रे ॥व०॥ निवृत्ति नणी आदर करे, ठानो न ठिपे कदी नेह रे ॥व० ॥४॥ आज पठी तुं पियुप्रत्यें, तन मन वचनें एकांत रे ॥व०॥ नाव नक्ति एम साचवे, जेम वश हुवे तुऊ कांत रे ॥व० ॥ ५ ॥ निवृत्तियकी मन उत रे, कांइ करजे एवी वात रे ॥व०॥ कर्म क्रिया केलवे नली, मुऊ वाघे अं गनी धात रे ॥ व० ॥ ६ ॥ निवृत्तिपणे वारे अठे, तुऊ जेम करे ते लाज रे ॥व०॥ शोक्यतणी शंका किसी, ए शीख धरे मन आज रे ॥व०॥७॥ शो क्य शूनी वली सापणी, वलगी न नली तुं जाण रे ॥व०॥ शोक्य कही शू ली जिसी, शुं कहिजें तेह वखाण रे ॥व०॥८॥ शीख इसी परें सांनली,

रहे प्रवृत्ति पिउ पास रे ॥व०॥ क्षण अंतर अलगी रही, जेम तनु गया इ क वास रे ॥ व० ॥ ए ॥ रात दिवस ऊनी रहे, खिजमतगारी मनखंत रे ॥व०॥ सकल काम संतारनां, साधे नव नवी नंत रे ॥व०॥१०॥ प्रवृत्ति नारी मन मंत्रवी, वश कीधो आपणो नाथ रे ॥व०॥ निवृत्ति नणी आ वा न दे, सहु सरखो मिलियो साथ रे ॥व०॥ ११ ॥ ऊवट चाल्यो मंत्रवी, जीव घात करे निश्शंक रे ॥व०॥ मृषा बोले धन हरे, परदारा सेवे वंक रे ॥व०॥१२॥ नव नव परिग्रह मेलिया, मद मांस नखे दिन रात रे ॥व०॥ परद्रोही मोही हुउं, आरंनी दंनी जात रे ॥ व० ॥ १३ ॥ आर्तध्यानी आ करो, वली द्रोह तणा परिणाम रे ॥व०॥ तंडुलमत्स्य तणी परें, दूर ध्या नी आतु जाम रे ॥ व० ॥ १४ ॥ तेली चेलतणी परें, खरवृत्ति नमाडे नूर रे ॥ व० ॥ ज्युं तरुवरने उखेडिने, वाहे बहु जलनुं पूर रे ॥ व० ॥ १५ ॥ माया मन हरखी घणुं, हवे मंत्री अमारे सार रे ॥ व० ॥ सोहागिणी गात्री तिका, जेणें वश कीधो नरतार रे ॥ व० ॥१६॥ सर्वगाथा ॥१०३॥

॥ दोहा ॥

॥ मायासंगी मन मल्यो, हवे केहने ए पाड ॥ उछलियो जलनिधि जिस्यो, हवे केही तसु आड ॥ १ ॥ पवने प्रेर्यो अग्नि ज्युं, मयगल मातो जेम ॥ प्रेर्यो नूख्यो वाजि ज्युं, धावे इत उत तेम ॥ २ ॥ पंख हूइ पन्नग त णे, क्युं कुपथ्यानो रोग ॥ विख लेप्यो ज्युं तीर ए, तिम मन माया योग ॥ ३ ॥ थाको थलमें हुवे नहिं, नवि बूडे जलपूर ॥ सांसीणो न हुवे क दा, पर्वत चढे सनूर ॥ ४ ॥ अग्निमांहि नमतो थको, न बले सबलो वेग ॥ अलख अगोचर संचरे, नवि पामे उद्वेग ॥ ५ ॥ रज्जु पास जंजीरशुं, न विहुं बांध्यो जाय ॥ मंत्र यंत्र औषध करी, वश क्युंही नवि थाय ॥ ६ ॥ धाम काम रामा रमा, नेली कीधी नूर ॥ नृपति न पामे सिंधि ज्युं, लख आवे जलपूर ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ घर आंगण सुर तरु फल्यो जी ॥ ए देशी ॥ मेमत्त मंत्री चिंतवे जी, हवे मुज हाथे राज ॥ राजा परजा मो वश्यु जी, आनंद अधिको आज ॥ कर्मगति कठिन कही जिनराज ॥ १ ॥ ते निज श्रवणे सांनली जी, नवि जन नावमें आय ॥ क० ॥ ए आंकणी ॥ राय वधार्यो हाथशुं जी, नाना

थी वड कीध ॥ घर अधिकारी स्थापियो जी, निज मुद्रा जसु दीध ॥क०॥२॥ तेहवे मंत्री रायने जी, डोह करे अति जोर ॥ बांध्योथो पहेली सही जी, निवड बंधन करे उर ॥ क० ॥ ३ ॥ आप वधाख्यो आपने जी, पीडाकारी जोय ॥ काष्ठ वधारे वन्हिने जी, काष्ठही बाले सोय ॥क०॥ ४ ॥ अल्पशक्ति राजा थयो जी,मूल नहिं ते नूर ॥ धूलपमल धूवे करी जी,ढांकी राख्यो सूर ॥ क० ॥ ५ ॥ मन मान्युं मंत्री करे जी, न्यायें न्याय विचार ॥ बांधे ठोडे आपथी जी, हेतु अवर न लगार ॥क०॥ ६ ॥ मोजो माएो मन घणी जी, ज्युं लहरी दरियाव ॥ लूंटे खूटे लोकने जी,लाधो आपणो दाव ॥क०॥७॥ लाख क्रोड वरसां लगें जी, तप करे धर्मनी खंत ॥ ते पण मनना प्रेरिया जी, सातमी नरकें जंत ॥क० ॥७॥ जोग जला सुख जोगवे जी, तेने आपे मोख ॥ सघली करणी एहनी जी, दोष अने गुणपोष ॥ क० ॥ ए ॥ तप जप दान दया सही जी, मन विण सघलो ठार ॥ मनमेलु महोटो कह्यो जी, ऊतारे जवपार ॥ क० ॥ १० ॥ किण अवसर मन मंत्रवी जी, दीठो विवेक कुमार ॥ सौम्यवदन सरिखी कला जी, बोलाव्यो सुखकार ॥ क० ॥ ११ ॥ चित्त चितारी निवृत्तिनें जी, आय खडी ते एम ॥ सद्बुद्धिने संजारिने जी, विसरी विद्या जेम ॥ क० ॥१२॥ समरी देवीनी परें जी, उजी आवी पास ॥ नयणांनो मेलो हुउ जी, उलस्यो अंग उल्लास ॥क०॥१३॥ माता पण आवी अठे जी, निजपुत्रीनी लार ॥ बांध्यो राजा उलखी जी, दूरथकी निज नार ॥क० ॥ १४ ॥ शक्ति नहिं मलवातणी जी, परवशने परकाश ॥ दासतणी परें हुइ रह्यो जी, प्रमदा नावे पास ॥ क० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा हवे निज निंदतो, संजारे सोवार ॥ माया साधारण वधू, से व्यां एह विकार ॥ १ ॥ सुबुद्धि प्रिया में ताहरी,शीख धरी नहिं कांय ॥ ते ए चोरतणी परें, बंधन एवडां थाय ॥ २ ॥ प्रौढी पावन तुं प्रिया, निर्मल गंगानीर ॥ ते तो तुं गुण आगली, हीर क्षीर दंमीर ॥ ३ ॥ तुं चिन्तामणि सारिखी, में ठोडी मति मूढ ॥ मायाकाच करें ग्रही, जग सघलोइ ढूंढ ॥४॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनती ॥ए देशी॥ पिउ आखे प्रिया सांजलो, तुऊ महोटी हो जगमांहे माम ॥ परउपकारी परगडी, आवीने हो कीजें निज

काम ॥पि०॥१॥ घरनी सोह घरणी हाथे, ए वाणी हो में साची दीठ॥ कथन न मान्युं ताहरुं, परसंगें हो हुवो हुं धीठ ॥ पि० ॥ २ ॥ तुज प्रसादथी पामियें, निज पदवी हो जे त्रिभुवन राज ॥ तुझ विण दासपणुं न ल्यो, परघरनां हो कीजें ठे काज ॥ पि० ॥ ३ ॥ क्यां बांध्यो क्यां रूंधियो, क्यां पीड्यो हो क्यां वींटयो जोय ॥ क्यां मसल्यो क्यां हत हुउं, क्यां किंकर हो क्यां सेवक होय ॥पि० ॥ ४ ॥ हाल हुकम हुयो किहां, निर्धनिया हो कीधी बहु जात ॥ नव नव रंग क्रिया तिहां, में सघली हो न कहाये वात ॥ पि० ॥ ५ ॥ तुज विरहो वारु नहिं, में जाण्युं हो हवे पामी शीख ॥ माया मनमंत्री मली, मुज कीधो हो इण आप सरीख ॥ पि० ॥ ६ ॥ में मंत्री महोटो कियो, इण कीधो हो मुज एह प्रकार ॥ स्वारथियां सघलां मल्यां, हवे सुंदरि हो तुंहीज आधार ॥ पि० ॥ ७ ॥ वांछे रविने शीतमे, जल वाह्यो हो नावाने धाय ॥ दृग वंछे अंधक नरु, तममांहे हो दीपक आवे दाय ॥ पि० ॥ ८ ॥ इण परि हुं हवे तो नली, चित्त चाहुं हो मूकुं परसंग ॥ दीनदयाल दया करी, हवे राखो हो मुजसेंती रंग ॥ पि० ॥ ए ॥ शीलवती साची तिका, जे न तजे हो पति आपदमांय ॥ सयण तिके साचा सही, डुःखमांहे हो काढे ग्रहि बांय ॥ पि० ॥ १० ॥ में अवहीला जे करी, ते खमजो हो तुं सुगुणी नार ॥ रोष रखे मनमें धरो, इम बोल्यो हो नृप वारं वार ॥ पि० ॥ ११ ॥ इण अवसर कुबुद्धि राणी, अणचिन्ती हो आवी तिण ताम ॥ तानु नयें करि त्रासवी, मा बेटी हो जाये निज धाम ॥ पि० ॥ १२ ॥ बहु दिवसें मलिया हुता, मनमंत्री हो निहुनि विवेक ॥ सुबुद्धि राणी सापें हुती, नृप पामें हो आया पा ठेक॥ पि० ॥ १३ ॥ देखी शके नहिं डुर्जना, संत मेला हो तेहने न सुहाय ॥ धर्ममंदिर धन ते नरु, जे न करे हो बेट राड उपाय ॥ पि० ॥ १४ ॥

॥ दोहो ॥

॥ माया नारी प्रवृत्ति बे, ए पण आवी तेय ॥ राजा मंत्री कुबुद्धि वली, मलि रलि बेठा जेय ॥ १ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ देशी हांजरनी ॥ अथवा ॥ काल अनंतानंत, नयमांही भमतां हो जे वेदन सही ॥ ए देशी॥ आइ नारी अचान, तीनुं मिलकर हो नरपति

नी कने ॥ उत्तंगो दिये एम, ए क्युं आइ हो जे कीधी मनें ॥ १ ॥ अ
मशुं एवी प्रीत, फिर श्रम शोकडी हो मुख क्युं लगाइयें ॥ अहोनिश की
जें सेव, जीजी करिने हो तुजने गाइयें ॥ २ ॥ उत्तंगा वली एम, मंत्री
ने पण हो माया उच्चरे ॥ प्रकृति बुरी क्युं नारी, राज पयाखा हो निवृ
त्तिनें घरे ॥ ३ ॥ दूति तत्त्वहग मूकी, तें बोलाइ हो सुबुद्धि जणी इहां ॥
निंबु रसनी नाय, दीसतो हेज हो निजता जिहां तिहां ॥४॥ जोलो तुं मन
मंत्री, ए मुज वातां हो साची ते सही ॥ सुबुद्धि मली जो एथ, तो मुज
प्रनुता हो स्थिरता नां रही ॥ ५ ॥ इम समजाव्यो मंत्री, माया नारी हो
वचन कही घणां ॥ प्रकृति जणी कहे एम, करजे पुत्री हो आलोच मन
तणा ॥ ६ ॥ वेगगटानी वाट, निवृत्ति नारी हो जिण परें ए लहे ॥ की
जें तेह उपाय, तो ए प्रनुता हो निज हाथे रहे ॥ ७ ॥ विषमति पिशुनी
एवली, आलस मूकी हो काम करीजियें ॥ तुज सखिया पचवीश, किरि
या सारी हो साथें लीजियें ॥ ८ ॥ कायिक्यादि प्रसिद्ध, धारां धीरां हो
नव नव नायका ॥ ए पंचवीशमां इक टाली, इरियावहिया हो तुज नेह
लायका ॥ ९ ॥ निवृत्ति नारी जेह, इणशुं नामे हो वनी ना रहे ॥ मारो
ते विश्वास, चोवीशमेंनी हो तुज आज्ञा वहे ॥ १० ॥ ए सखियां अति
रान, जिण जग सघलो हो जेर कियो जलो ॥ सघलो सजियो साज, नि
वृत्तिमेंनी हो हवे कर माफलो ॥ ११ ॥ चोवीशे लेइ साथ, पिशुनुं खेले
हो नव नव रंगशुं ॥ सखीयांनां सुख देख, पिशुडी मोही हो प्रमदा रंग
शुं ॥ १२ ॥ विभ्रम विविध विलास, मुखनां मटकां हो लटकां अति म
लां ॥ गातां वातां गीत, प्रीतम सूतो हो सुख पासा ढल्या ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे प्रीतम सुण तुं प्रिया, मनमांहि लीजें दंग ॥ नवि बूके जो आ
जयें, तो तुज गजाना संग ॥ १ ॥ प्रकृति कहे सुण साहिबा, निवृत्ति
तारी नार ॥ ते मुज केडामां सही, वेज करे ज्युं सार ॥ २ ॥ गोमुख घर
णी ए अने, पाटी नीली सार ॥ धर्मलणी पर पोढने, एनी वात अपार
॥ ३ ॥ नलदी रंग दुरे नहिं, नाने करण विकार ॥ गरज मकेली गेहिनी,
एलो हलडो चार ॥ ४ ॥ माता दम ने पढनी, मूरखनी सिरदार ॥ वेगम
ण जी नारकी, न धरे जोडनार ॥ ५ ॥ दोखवती जाणी करी, राजा रीसी

ठोड ॥ निज पुत्री पण तेहवी, सरखा सरखी जोड ॥ ६ ॥ गीत गान गावे नहिं, हास्य विलास न कोय ॥ स्नान पान वली मान नहिं, व्यसन रसन नवि होय ॥७॥ जो श्रमनें दीधो अछे, उंजगरो अधिवास ॥ देशवटो निवृत्तिने, दीजें ए अरदास ॥ ८ ॥ नागण तो मुख विष कही, वींछण पुछ विष होय ॥ शोक्य नीच कां सापिणी,आदि अंत विष होय ॥ ९ ॥ सालतणी परें काढवे, सुतसंती ए नार ॥ तो अमने सुख ऊपजे, जीवन प्राणाधार ॥ १० ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ कुंवर इस्यो मन चिंतवे ॥ अथवा ॥ मेरी वहेनी कहे कांइ अचरिज वात ॥ ए देशी ॥ ए अरज मानी मंत्रवी, निवृत्ति कीधी विदाय ॥ आपद तेह सती तणी, कविजनथें हो क्युं वरणी जाय ॥ १ ॥ माया मन उत्सव घणो रे ॥ ए टेक ॥ हवे सीध्यां हो सघलांई काज ॥ उद्यम सफल ए हूउं रे, हवे होसी हो मोहकुंवरने राज ॥ माया० ॥ २ ॥ परवश पड्यां जे मानवी, वली कामणी रे हाथ ॥ तसु बुद्धि यामिनीमां सही, नही उगे हो न्यान वासरनाथ ॥ मा० ॥ ३ ॥ माता पिता पग लागिनें, निज पुत्र साथें लेह ॥ नीसरी निवृत्ति तिहांथकी, पंथ चाली हो पंथी परे तेह ॥मा०॥ ४ ॥ निष्कंटक राज हवे हुउं, नीसरी निवृत्ति नारी ॥ प्रचंडपवनें प्रेरियो, जेम चाले हो ध्वज अंचल चार ॥ मा० ॥ ५ ॥ इम मन मंत्री दह दिशें, नमी रह्यो अहोनिश तेह ॥ क्षण एक पाछो नवि वले, वधि तृष्णा हो नावे तसु छेह ॥मा०॥ ६ ॥ कुबुद्धि माया प्रवृत्तिशुं, जीनो रहे निशि दीस ॥ वली वीनव्यो सघले मली, हवे पूरो हो इतनी जे जगीश ॥मा०॥ ७ ॥ मोहने राजा कीजियें, ए अधिक मन उत्साह ॥ तुमशुं सघलो होयशे, ए अवसर हो जानीजें कांह ॥मा०॥ ८ ॥ सुत सहित निवृत्ति पण नहिं. सद्बुद्धि राजा दूर ॥ आपणो अधिपति ए किहां, सुख होशे हो सघलां नरपूर ॥मा०॥९॥ जोरावर ए जोध छे,निजगुणें करि विख्यात॥ आज उदय एनो अछे, ढील न करो हो हवे एहिज वात ॥ मा० ॥ १० ॥ मनमंत्री मानी वारता, मोहने राजा कीध ॥ अति घणां वाजां वाजियां, मनमांहे हो सघलां थइ सिद्ध ॥मा०॥ ११ ॥ होकार करता नरपति, सुरपति सघला जेह ॥ भूजाव्या मोह राजा थये, अति अनमी हो तीन भु

वनमें जेह ॥मा०॥१२॥ मोह राय पण हवे मंत्रवी, मानियो अतिही उदार ॥ कुण एक अलगो नहिं करे,मुख आगें हो सघलो कामदार ॥मा०॥१३॥ अति सबल राज वध्युं हवे, जेम वधे वड जल पाय ॥ सुख नोगवे मोह नूपति, नीत नवला हो आनंद मन थाय ॥मा०॥ १४ ॥ गुणवंत गुरु पा ठकवरु, श्रीदयाकुशल उल्लास ॥ तसु शिष्य धर्ममंदिर कहे, ए बीजो हो खंम मोहविलास ॥मा०॥ १५ ॥ इति श्रीप्रबोधचिंतामणौ नाषा ढाल प्रबंधे पंमितधर्ममंदिरगणिविरचिते मोहविवेकोत्पत्तिमनःप्रधानोत्पत्तिमोहराज्य स्थापननामा द्वितीयः खंमः संपूर्णः ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ २६२ ॥

॥ अथ तृतीयखंम प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पार्श्वनाथ प्रसादथें, प्रगटे नवे निधान ॥ अलिय विघ्न दूरें हरे, ज पतां जेहनुं नाम ॥१॥ मोहराय हवे चिंतवे, नगरी अविद्या नाम ॥ पुरी पुराणी ठे सही, ते सखरी सुज गाम ॥ २ ॥ लाज करी रहियें तिहां, नय केहनो नवि थाय ॥ राजानी ए नीति ठे,न रहे एकण गाय ॥३॥ धननीरी धरणी बहु, विविधें करे विचार ॥ गुणवंत ते गाफल नहिं, स्वारथ साधे सार ॥ ४ ॥ इम चिंतवी पुर सज करी, सघलां लोक वसाय ॥ संसारी प्राणी नणी, दीगं आवे दाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ पांचमी तपविधि सांनलो ॥ ए देशी ॥ नगरी निरखो मोहनी, नाम अविद्या जासो रे ॥ शोना सखरी तेहनी, नीको निविड निवासो रे ॥ न गरी० ॥ १ ॥ त्रण अज्ञान त्रिकोट ठे, ते नगरीनी पासें रे ॥ कोसीसां सो हे जिहां, कर्म प्रकृति प्रकाशे रे ॥ न० ॥ २ ॥ देव नरक पशु मानवी, ए गति चार प्रतोली रे ॥ तीखी तृष्णा खातिका, अति ऊंमी तसु दोली रे ॥ न० ॥ ३ ॥ रमणी नोग ते वाडियां, मुखकमलें करी सोहे रे ॥ समर कुंवर रमतो रहे, यौवनरूप मन मोहे रे ॥ न० ॥ ४ ॥ पाप अढार तटाक ते, ते अति ऊंमां दीसे रे ॥ शठ हठवाद ते खाल ठे, उन्माद जल तिहां हीसे रे ॥ न० ॥ ५ ॥ क्रीडा वापी कामिनी, शृंगार रस करि गाढी रे ॥ करपदकमलें शोनती, सरली सुंदर टाढी रे ॥ न० ॥ ६ ॥ कामासन आ

सन जिहां चोरासी बाजारो रे ॥ परिणाम क्षण क्षण जीवडा, तेहिज घर विस्तारो रे ॥ न० ॥ ७ ॥ नगरीविच जे लोक छे, ते तो मदरा माता रे ॥ नगरीने छेहडे वसे, ते कहु सरल कहाता रे ॥ न० ॥ ८ ॥ थोडे लाजे लोक जे, मनमां हर्षित थाय रे ॥ थोडे अलाजें जे नरा, दीन थइने जाय रे ॥ न० ॥ ९ ॥ ममत्वोपद्रव देवता, नगरीनी रखवाली रे ॥ सान्निध्य खबर जली करे, ज्युं वाडीमां माली रे ॥ न० ॥ १० ॥ नाचे कूदे केइ नरा, केइ वाद विचारे रे ॥ नंदे वंदे केइ स्तवे, केई याचक वारे रे ॥न०॥ ११ ॥ कोपे रोपे गर्वने, जोपें करण न जीपे रे ॥ आक्रंद रोवन केइ करे, मिथ्या मति अति दीपे रे ॥ न० ॥ १२ ॥ धसमस धंधामां फिरे, शिकथा विकथा कारी रे ॥ गावे वावे केइ नरा, फेरे कपटनी सारी रे ॥ न० ॥ १३ ॥ निविचार सहु लोकने, राजाना अति रागी रे ॥ नगरी वर्णी एहवी, मोह राजा वडजागी रे ॥ न० ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ १९ ॥

॥ दोहो ॥

॥ हवे राजा वर्णन सुणो, वली एहनो परिवार ॥
कवि कल्पना उपमा करी, कहे सघलो विस्तार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी कुंमखडानी ॥ अथवा ॥ रंगी ले सारथी ॥ ए देशी ॥ मूढ संगति परखद जली रे, महेल कुवासना तेथ ॥ महीपति मोहना ॥ सिंहासन मति भ्रंश छे रे, छत्र असंजम जेय ॥ म० ॥ १ ॥ खड्ग निभ्रंछन कर ग्रहे रे, तेर क्रिया अंगी सार ॥म०॥ पांचे इन्द्रिय परवडी रे, पांचेई हथीयार ॥म०॥ ॥ २ ॥ अरति अने रति वे खडी रे, चामर ढालणहार ॥ म० ॥ पासंमी बहु पोलिया रे, स्वामी धर्म सिरदार ॥ म० ॥ ३ ॥ बहुविध संज्ञा नट तिहां रे, नाटक करे उदार ॥ म० ॥ कामिक श्रुत तिहां गाइयें रे, राजाने सुखकार ॥ म० ॥४॥ जुजबली जीमतणी परें रे, शृंगार सखर करेइ ॥म०॥ चार्वाक मित्र मानतो रे, अधिको मान धरेइ ॥ म० ॥ ५ ॥ पटराणी जडता कही रे, गुण गण रूप रसाल ॥ म० ॥ तस कुखि कंदर केशरी रे, मदन पुत्र वड जाल ॥ म० ॥ ६ ॥ राग द्वेष आरंज वली रे, ए पण पुत्र छे तास ॥म०॥ जोरावर सघला अछे रे, जींप शके कुण जास ॥ म० ॥ ७ ॥ चिन्ता प्रमुख पुत्री घणी रे, रण करवाने शूर ॥ म० ॥ जाइनी परें नढ अ

छे रे, दिन दिन अधिके नूर ॥ म० ॥ ८ ॥ कर्म किया जाणे धणी रे, मंत्री मिथ्यादृष्टि ॥ म० ॥ ढाप धरी जेहनी नरा रे, दींमे सघली सृष्टि ॥ म० ॥ ए ॥ दुष्ट योग मनना जिके रे, तेहिज सामंत सार ॥ म० ॥ सात व्यसन सेवे सदा रे, राज्यतणा आधार ॥ म० ॥ १० ॥ मंमलिक राजाने अछे रे, क्रोध मान लोनादि ॥ म० ॥ दंन जोरावर जोध छे रे, पग पग जींपे वाद ॥ म० ॥ ११ ॥ सेनानी परमाद छे रे, कुद्ध करणने जोय ॥म० ॥ शान्ति माहा सुनटां नणी रे, जींत्या जेणें रोध ॥म०॥ १२ ॥ चंमनाव कोटवाल छे रे, तस्कर जालणहार ॥ म० ॥ शोच जिहां व्याक्षेप छे रे, महाजनने सुखकार ॥ म० ॥ १३ ॥ पाप परिग्रह अति घणो रे, तेहिज अधिक नंमार ॥ म० ॥ संग कुसंग दाणी तिहां रे, पुरोहित पाप प्रचार ॥ म० ॥ १४ ॥ आलस शय्यापाल छे रे, शठ द्रव ढाहलदार ॥ म० ॥ निंदककांतुंगा घणा रे, कुकवि बहु सूत्र्यार ॥ म० ॥ १५ ॥ तंबोली प्रेम राग ते रे, मुखशोना परकार ॥म०॥ हर्ष शोक बे मल्ल छे रे, क्रीडा कौतुक सार ॥ म० ॥ १६ ॥ विषय विकार चाकर घणा रे, एवो राज्य पमूर ॥ म० ॥ धर्ममंदिर धन ते नरा रे, मोहथकी वसे दूर ॥ म० ॥ १७ ॥ ३७॥

॥ दोहो ॥

॥ हवे निवृत्तिनी वारता, सुणजो नविजन तेह ॥
शील सत्य मनमां धरे, साधवी लक्षण एह ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ कर्म परीक्षा करण कुंवर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥ धर्म सहाय करी कामनी चली रे, निवृत्ति नीके नूर ॥ आपद संपदमां जे स्थिर रहे रे, नरनारी ते शूर ॥ धर्म० ॥ १ ॥ मोह महिपतिने नय नासती रे, पवनतणी परें तेह ॥ सुत सखरो पण सार्थे शुं करे रे, नावी न चले जेह ॥ धर्म० ॥ २ ॥ मारग लांघ्यो अति धणो कामिनी रे, थाकी राणी थाय ॥ विसामो मन जाणे लीजियें रे, सखरें गाम सुहाय ॥ ध० ॥ ३ ॥ ब्रह्मपुरी इक नाली नामिनी रे, इहां रहेवानो लाग ॥ मंत्र पवित्र पाणी करी छांटियें रे, पूजीजें वली आग ॥ ध० ॥ ४ ॥ यज्ञस्थंन मांम्यो छे यागें करी रे, सकल स जाइ सार ॥ वेदपाठी ब्राह्मण मुख उच्चरे रे, वेदकंठे उच्चार ॥ ध० ॥ ५ ॥ माष अने जव तिल सहु नेलीने रे, होम करे बहु नाति ॥ खीजड पीपल

लाकड मेलिंयां रे, धर्म तणी मन खांति ॥ ध० ॥ ६ ॥ गगना कानमां मंत्र जणी करी रे, वह्नि करे ब्राह्मण तेह ॥ देवने तृप्ति होशे एहथी रे, सरग होशे सदेह ॥ ध० ॥ ७ ॥ निवृत्ति एवी हिंसा देखीने रे, मनमां चिन्ते एम ॥ ब्राह्मण ते सम दम क्षमता धरे रे, ज्ञानी निर्मम हेम ॥ध०॥८॥ मन शुचिकारक संतोषी सदा रे, त्यागी करुणावंत ॥ सत्यवादी सुधा ब्रह्म पारखु रे, आरज अनुपम संत ॥ ध० ॥ ए ॥ भ्रमचूला ए ब्राह्मण नामथी रे, गमरी प्रवाहें लोक ॥ वेदमंत्रें करि गगने स्वर्ग ले रे, मन वंछित लहे थोक ॥ ध० ॥ १० ॥ गगतणी परें वहालाने करो रे, सखरी गति उपचार ॥ दुर्गतियें कां मूको वापडा रे, वेद उपर एक तार ॥ ध० ॥ ११ ॥ वेदमंत्रें करी कन्या व्याहियें रे, ते पण विधवा थाय ॥ मंत्रतणी जो शक्ति तिहां गई रे, त्यो परतो मन लाय ॥ ध० ॥ १२ ॥ वेदपाठी ब्राह्मणने ताडतां रे, पीडा न हुवे लगार ॥ तो ते गगने पीडा नहिं हुवे रे, मंत्रशक्ति श्रीकार ॥ ध० ॥ १३ ॥ सिंह सर्पनो याग कह्यो नहिं रे, वापडां व फरां अनाथ ॥ दुर्बलघाती देव अछे सही रे, नबलाने कोण साथ ॥ ध० ॥ १४ ॥ परमेश्वर ए खावां सरजियां रे, एहवुं बोले एह ॥ खादकथी पण पापी आगलो रे, हिंसा दीपावे तेह ॥ ध० ॥ १५ ॥ यागहिंसाने हिंसा नवि कहे रे, चार्वाक मतना धार ॥ प्राण हरे जो पंचेन्द्रिय तणां रे, लघु जीव केही सार ॥ ध० ॥ १६ ॥ शिव ते स्वर्ग तीर्थे जलने कहे रे, पूजे गो पशु मंद ॥ सूत्रधारीने गुरु करी सर्दहे रे, देव अग्नि सुखकंद ॥ ध० ॥ १७ ॥ ए सघला मुज शोक्य प्रवृत्तिना रे, पक्षपाती परधान ॥ एम जाणीने निवृत्ति नीसरी रे, धरे तेम धर्मध्वनि ध्यान ॥ ध० ॥ १८ ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विसामो लेवा जणी, वली जोवुं कोइ गाम ॥ फरतां एक दीतुं तिहां, ब्रह्ममतीनुं गाम ॥ १ ॥ वैरागी वेश घणा, कोपिन वसन धरेइ ॥ हाथ कमंमल दंमधर, जप अक्षमाल धरेइ ॥ २ ॥ स्थानक चारु देखिने, सुतशुं बेठी ताम ॥ एक ब्रह्म जगमां अछे, नद सुण्यो ए नाम ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ जंबुद्वीप मजार, नरत क्षेत्रमांहे ॥ ए देशी ॥ सुत बोल्यो सुण मात, वचन हुवे नीके, जे कोइ तत्त्व सम जाणियें ए ॥ ब्रह्म विना सब जूठ,

एकांत मतधरु, इहां रहेवा मन नाणियें ए ॥ १ ॥ साधक व्यवहार भेद, निरत कारण भलुं, करहो अवलंब ए सहि ए ॥ निश्चयने ग्रहे एह, कीरिया दूषवे, खोटाशुंवणशे नहिं ए ॥ २ ॥ ग्रंथथकी करे बोध, तप जप खप करे, उद्यम पण सवि आचरे ए ॥ मुखथी बोले एम, ए सहु जूठ छे, नय प्रमाण नवि उच्चरे ए ॥ ३ ॥ स्याद्वाद नहिं एय, जे साचो सही, स कल रसायण साधकृ ए ॥ कपटी कूडा एह, स्वपर रूपनुं, परमारथना बा धक ए ॥ ४ ॥ वली कहे जगमां एक, आतम व्यापियो, ब्रह्म स्वरूपी ए हुउं ए ॥ ज्युं आकाशें चन्द्र, एकज छे सही, जल प्रतिबिंब जूउं जूउं ए ॥ ५ ॥ उपजे विणसे नूर, जलकल्लोल ज्युं, नाना महोटा दीसता ए ॥ पण ते एक स्वरूप, अवर न को अन्ने, एह अर्थ कहे हीसता ए ॥ ६ ॥ के उत्तम के नीच, के सुर नारकी, आरज म्लेछ के आखियें ए ॥ के ना री के षंढ, के नर तिर्यंच, मोरपिछ सम साखीयें ए ॥ ७ ॥ के पंमित के मूढ, के रंक राजवी, इत्यादिक नेद अनुसरे ए ॥ कर्म न माने हेत, सह ज स्वनाव ए, बदरी कंटकनी परें ए ॥ ८ ॥ आतमगुण पर्याय, अनंत माने नहिं, बोले बालकनी परें ए ॥ परिणामी बे इव्य, आतम पुज्जल, एक विवेचन ना करे ए ॥ ए ॥ सत्ता शाश्वतरूप, निज निज इव्यनी, मर्यादा मूके नहिं ए ॥ इव्य अने पर्याय, नेदानेद जे, स्याद्वादी समजे सही ए ॥ १० ॥ इहां नव संकि माज,विवेक सुतें कह्यो, माता वचन प्र माणियो ए ॥ तवि नली पंथमांही, पुत्र प्रेरी थकी, भेद नलो मन आ णीयो ए ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुचि सुता हवे चालतां, तापस आश्रम दीठ ॥ विसामो इहां ली जियें, सखरी वाया मीठ ॥ १ ॥ बूढा तापस अति घणा, जटा जूट बहु भार ॥ हाथ बद्धमाला अने, नाम नारायण सार ॥ २ ॥ शिष्य घणा बिहु दिश जड, मूल कंद फल भेद ॥ वनवीहीं आणे घणा, भोजन अर्थे तेह ॥ ३ ॥ शुक सारी पंखी नणी, राम नाम शीखाय ॥ पादप सींचे बा णिशुं, धर्म न धर्म कहाय ॥ ४ ॥ निवृत्ति नारी चिंतवे, ए पण मोहें लीन ॥ शम दम करुणा को नहिं, ज्ञान गुणें करि हीन ॥ ५ ॥ मुक्ता भामिनी दे तजी, नली न ध्यान दृष्टि ॥ कोड किया अफली हुवे, ज्युं ऊखरमें वृष्टि

॥ ६ ॥ आरंभ मिथ्यामति घणा, निरवद्य नहिं ए गाय ॥ भ्रांत थयां प
ण छंडियें, नदीकूलनी छाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ मेरे आरहनां ॥ ए देशी ॥ सुबुद्धि सुता वली त्यांथकी रे हां, धरि धी
रज मनमांहि ॥ धर्म धुरंधरा ॥ चाली चतुरा चोंपशुं रे हां, झाली पुत्रनी
बांहि ॥ ध० ॥ १ ॥ तुं सुत सुरतरु छांही, तो सम अवर को नांही ॥ ध० ॥
ए आंकणी ॥ इक पुर वेठी कामिनी रे हां, कोलधर्म सुणी कान ॥ ध० ॥
विसामो इहां लीजियें रे हां, जो रहे आपणो मान ॥ ध० ॥ २ ॥ ए धर्म
सेवे घणुं रे हां, तरुणपणे नर नारि ॥ ध० ॥ आकर्षे लोको भणी रे हां, ध
र्म शब्द सुखकारि ॥ ध० ॥ ३ ॥ संत साधु मुख उच्चरे रे हां, आयाने बहु
मान ॥ ध० ॥ मंगल मांहे मन रली रे हां, गावे गीत ने ज्ञान ॥ ध० ॥ ४ ॥
रंभा चंभा दीक्षिता रे हां, धर्म दारा छे एह ॥ ध० ॥ सेव्यां शक्ति होशे
सुखी रे हां, मन मत धरो रे संदेह ॥ ध० ॥ ५ ॥ मद्य मांस खातांथकां
रे हां, इण गामे दोष नांहिं ॥ ध० ॥ इम सुणी निवृत्ति चिंतवे रे हां, धिक्
धिक् एहनी छांहिं ॥ ध० ॥ ६ ॥ मोह मंत्रीना दास ए रे हां, संग भलो न
हिं एह ॥ ध० ॥ निवृत्ति तिहां दूती चली रे हां, शीलवती गुणगेह ॥ ध०
॥ ७ ॥ अवर नगर दीठुं भलुं रे हां, बौधमतीनुं गाम ॥ ध० ॥ आतमनी
चर्चा करे रे हां, ए होशे अभिराम ॥ ध० ॥ ८ ॥ तसु मुख एहवुं सांभल्युं रे
हां, आतम क्षण क्षण नांहि ॥ ध० ॥ पुण्य पाप केहने नही रे हां, शून्यप
णो जगमांही ॥ ध० ॥ ए ॥ माता पूछे सुत भणी रे हां, एहशुं आखे एम
॥ ध० ॥ विवेक पुत्र तव बोलियो रे हां, सुण माता कहुं तेम ॥ ध० ॥ १० ॥
बोधने कहियें पुत्र तुं रे हां, पिता भणो छो नांहि ॥ ध० ॥ व्याह भोगवेला
जूउं रे हां, एक पिता क्युं सांही ॥ ध० ॥ ११ ॥ अपराध को बीजो करे रे हां,
अवर दंडीजें कोइ ॥ ध० ॥ राजनीति पण उंलवी रे हां, धर्मभणी किहां
होइ ॥ ध० ॥ १२ ॥ शय्या सखरी सूइयें रे हां, पीजें खीर प्रभात ॥ ध० ॥
भोजन मीठुं कीजियें रे हां, सांख्यमतीनी वात ॥ ध० ॥ १३ ॥ सौगत
मत ए सांभली रे हां, निवृत्ति नारी न सुहाय ॥ ध० ॥ तत्त्व कपूरने कर
ग्रह्यां रे हां, दूषण न आवे दाय ॥ ध० ॥ १४ ॥ मुग्ध मानव मृगपाश ए
रे हां, भव अटवीमां भूर ॥ ध० ॥ निरखी निरखी पग मंडियें रे हां, इणशुं

रहियें दूर ॥ ध० ॥ १५ ॥ आगें चाली उतावली रे हां, न रही एक पल मात ॥ ध० ॥ कपिल योगी पण मल्यां रे हां, तिणशुं न करी वात ॥ध०॥१६॥ सेवक सघला मोहना रे हां, निवृत्ति नारी मन जाण ॥ ध० ॥ वेरीनी परें परहस्या रे हां, चूके नांहि सुजाण ॥ ध० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ ए४ ॥

॥ दोहो ॥

॥ इण परि सघली चूमिका, नमती नमती चूर ॥
विसामो लाधो नहिं, खेद करे जे पूर ॥ १ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ रहो रहो रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥ प्रवचन पुर गइ पाधरी, पुण्य तणे अंकूर लाल रे ॥ निकट नावी निरखे सहि, पापीयडा छे दूर लाल रे ॥प्र० ॥ १ ॥ चारित्र प्रासादने ऊपरें, धर्मध्वज लहकाय लाल रे ॥ दूरथकी पण देखतां, आनंद अंग न माय लाल रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ पुण्य पवित्र परिणामथी, उपदेश नगरमां जोय लाल रे ॥ पाप कर्म चंमालनुं, पग पेसार न कोय लाल रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ साधु शिरोमणि संत जे, नगर मध्यें रहे तेह लाल रे ॥ देशव्रति ने समकिती, बाहिर वसिया अछेह लाल रे ॥प्र०॥४॥ प्रवचन पुर वासी घणा, सघला सुखियां लोक लाल रे ॥ तत्त्वतणे सुख आगलें, तृण सम सुख सुरलोक लाल रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ त्यांथकी मुक्ति पुरी भणी, साथ चले दिन रात लाल रे ॥ चोर चरड लागे नहिं, नीति तणी नहिं वात लाल रे ॥प्र०॥ ६ ॥ तसु पुरवामें वन अछे, इंद्रियदमन छे नाम लाल रे ॥ निवृत्ति नारी देखियो, अनुपम ए अभिराम लाल रे ॥प्र० ॥ ७ ॥ साधुवदन ते कुंभ छे, जिन वचनामृत नीर लाल रे ॥ नृप नविक पंथी जली, जाये जवनी पीर लाल रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ धर्मवचन फल फूटरां, योगी मधुकर सार लाल रे ॥ निवृत्ति विसामो तिहां लियो, खेद गमावणहार लाल रे ॥ प्र० ॥ ए ॥ योग त्रिनूमि आवास छे, तिहां इक नरने दीठ लाल रे ॥ दिननर दर्शन तेहनुं, अमृतथकी पण मीठ लाल रे ॥प्र०॥१०॥ विधानो भंमार छे, जाणे सघली वात लाल रे ॥ वंदना कीधी नारियें, जंगम तीरथ जात लाल रे ॥ प्र० ॥ ११ ॥ हाथ जोडीने पूछे सती, कोण तुं मानी आल लाल रे ॥ इण वनमांहि क्युं रहे, सायुं सघलुं दाख लाल रे ॥ प्र० ॥ १२ ॥ पुरुष कहे सुण सुंदरी, मारी रायजी वात लाल रे ॥ वि

मलबोध नामें अछुं, सिद्धपुरुष विख्यात लाल रे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ इण पुर मांहे राजवी, अरिहंत नाम ठे जास लाल रे ॥ तसु आदेश लही करी, इण वाडीमें वास लाल रे ॥ प्र० ॥ १४ ॥ आवास पहेली जूमिका, वेसीने आ राम लाल रे ॥ राखुं सुखभरपूरणुं,तृप्ति हुवे अभिराम लाल रे ॥प्र०॥१५॥ राजाना परसादथी, मुजने एहवुं ज्ञान लाल रे ॥ आगम नीगम वारता,सच जांने समाधान लाल रे ॥ प्र० ॥ १६ ॥ कर जोडीने कामिनी, आखे पु रुपने एम लाल रे ॥ उपकारी शिर सेहरो, सुणजे हुं कहुं तेम लाल रे ॥प्र० ॥ १७ ॥ अवला नारी एकली, नहानो पुत्र ए साथ लाल रे ॥ भ्रमणतणुं दुःख शुं कहुं, इक जाणे जगनाथ लाल रे ॥ प्र० ॥ १८ ॥ मया करीने जो इयें,ए बालकनो हाथ लाल रे ॥ कहियें होशे एहने,प्रभुता संपद साथ ला ल रे ॥प्र०॥ १९ ॥ हुं नजरें जे देखशुं, वारु एहनी वार लाल रे ॥ ए स घलुं मुजने कहो, आणी मन उपकार लाल रे ॥ प्र० ॥ २० ॥ ११५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिद्ध पुरुष बोल्यो हवे,सुण भामिनी दुःख तुज ॥ दूर गयां हवे जा णजे, ए वाचा ठे मुज ॥ १ ॥ ए बालक जे ताहरो, उत्तम लक्षणवंत ॥ सफल वातनो हुं कहुं, ए माने एकंत ॥ २ ॥ तत्त्वरुचि नामा पुत्रिका, म्हारी छे मनुहार ॥ शुभाचार दारा कुखें, उपनी ते निर्धार ॥३॥ तेमेंती तुज पुत्रने, परणावो बहु प्रेम ॥ अविचल जोडी एहनी, होशे कुशल क्षेम ॥ ४ ॥ वर कन्या वेहू जला, लेहशे जोग संयोग ॥ चंद्र अने पूनम तणो, पूरण मलियो जोग ॥ ५ ॥ एह वचन सुंदर सुणी, देखी कन्या सार ॥ लावण्य लक्षण देखिने, पामी हर्ष अपार ॥ ६ ॥ जाग्य जलुं मुज पुत्रनुं, ए घर घरणी थाय ॥ घरमें लक्ष्मी आवती, क्युं ठेलीजें पाय ॥७॥ निद्रालु शय्या लहे, तरश्यो अमृत पान ॥ जूख्यो पायस नां लजे, लाधो रंक निधान ॥ ८ ॥ निश्चनि नारी मानियुं, सिद्धवचन शिरदार ॥ लग्न तेह दिन साधियुं, न करो कोइ विचार ॥ ९ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ ठुनक ठुनक किसन हो. ठुनकिली राधिका जी ॥ ए देशी ॥ कुंव र कुंवर विवेक हो, लाधी तत्त्वरुचि जी, परणे परम उलास ॥ विलंब वि लंब न कीधो हो, वहाले वागमें जी, विस्तरीयो जसवास ॥ कुं० ॥ १ ॥ न

नमें मनमें हो, महोत्सव मांड्यो अति घणो जी, ते जाणे जगदीश ॥ जुगति जुगति जोडी हो, मिली हेमज्युं जी, वाणी विशवा वीश ॥ कुं० ॥ ॥ २ ॥ माणिक माणिक जोडी हो, हेमनी मुड्डी जी, वेउनो उत्तय संयोग ॥ संपद संपद मिलतां हो, होवे सोहिली जी, किहां माणस संयोग ॥ कुं० ॥ ३ ॥ विमल विमलबोध कहे, सुण सगी जी, आपद डुःख मन नाण ॥ वाधे ठे वाधे ठे पण, बीजें चन्द्रमा जी, आतले पंमित वाण ॥ कुं० ॥ ४ ॥ सुखी सुखी हो, आयां आपद नवि रहे जी, राहु मुखें जेम चंद ॥ धीरज धीरज खमजे हो, आपद उपनां जी, वायें न चले गिरिंद ॥ कुं० ॥ ५ ॥ आजथी आजथी होशे हो, एनी शुन दशा जी,आपद अलगी थाय ॥ प्रगट प्रगट होशे हो, पुण्य पाधरां जी, सब जनने सुखदाय ॥ कुं० ॥ ६ ॥ उद्यम उद्यम वतावुं हो, नाल तुऊ फले जी, अनुपम ठे उपाय ॥ निष्फल निष्फल न होवे हो, निश्चय जाणजो जी, परतो पूरण थाय ॥ कुं० ॥ ७ ॥ सर्वगाथा ॥ १३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रवचन पुरनो ठे धणी, राजा अरिहंत नाम ॥ नाव शत्रु जित्या जिणें, अतुली बल अनिराम ॥ १ ॥ नुक्ति मुक्ति दाता सकल, अचिंत चिन्तामणि जोय ॥ कामकुंन सुरतरु घणा, ए सम अवर न कोय ॥ २ ॥

॥ ढाल आवमी ॥

॥ हां हां चन्द्रावती क्यां गइ ॥ ए देशी ॥ शोना साहेबनी घणी, मोपें कहीय न जायो रे ॥ स्थूलदृष्टि करि वर्णवुं, निश्चें अनुनव पायो रे ॥ शो० ॥ १ ॥ तीन ठत्र शिर शोनतां, तीन नुवन ठकुराई रे ॥ तीन गढें करी राजतो, रत्न त्रय सुखदाई रे ॥ शो० ॥ २ ॥ सिंहासन उज्ज्वल नलुं, अशोक वृक्ष वलि होय रे ॥ नविजन ताप बुऊायवा, अद्भुत जलधर जोय रें ॥ शो० ॥ ३ ॥ मिथ्या तिमिर नसायवा, सूरज सम ठे तेजो रे ॥ धर्मचक्र जसु आगलें, देव धरे धरि हेजो रे ॥ शो० ॥ ४ ॥ ईति नीति जाये सवे, जंबुक ज्युं सिंह सादें रे ॥ फूल पगर वरसा हुवे, वलि सुर डुंडुनिनादें रे ॥ शो० ॥ ५ ॥ जाति वैर मूकी करी, सुरनर ने तिर्यंचो रे ॥ पर्षदमें आवी मले, एवो ठे जिहां संचो रे ॥ शो० ॥ ६ ॥ अचरिज मूल जे इन्द्र ठे, कोसुरने नवि देखे रे ॥ ते सघला किंकर इहां, निरुपम एह

योगें रे ॥ शो० ॥ ८ ॥ अविनय एहना अविनया, कहेतां नावे पारो रे ॥ केवलज्ञान दिवाकरू, अनंत गम्यो विस्तारो रे ॥ शो० ॥ ८ ॥ त्यागना जो एहने, मेंरे नियम करि दिनो रे ॥ सबरे गणुं आणिवुं,अनंत कुगो गुरु किनो रे ॥ शो० ॥ ९ ॥ एम सुणी निवृत्ति नारी, हरखी अतिहि उल्हासो रे ॥ मन संदेह विलय गयो, परम प्रतीत प्रकाशो रे ॥ शो० ॥ १० ॥ प्र ऽ आदेश सही करी, प्रवचनपूनी संगें रे ॥ प्रवचनपुर वेरण नारी, निवृत्ति पती मन रंगें रे ॥ शो० ॥ ११ ॥ चित्राने नागें पामीने, अधिक किरण ज्ञानु थाय वे ॥ विवेक निरिपवें देखियो, प्रवरा परणी आय रे ॥ शो० ॥ १२ ॥ नगर नजीक आव्या जिसें, पारवंडी मलिया धारो रे ॥ तब वि वेक देखी करी, सुंदर रूप अपारो रे ॥ शो० ॥ १३ ॥ कपट निपट मुख वेलवे, धगजानी पर वेठो रे ॥ योलावे आदर करी, मन करया परि बेठो रे ॥ शो० ॥ १४ ॥ मित्र सुणो इस पारता, देखी शीतल छाया रे ॥ नग री लोक शुमान ने, अम पर आवो सुखाया रे ॥ शो० ॥ १५ ॥ संकीर्ण पुण्में श्रवे, श्रा हसनाइ जायगा रे ॥ खिजमत करसां में घणी, रेंहे प रि मन रागा रे ॥ शो० ॥ १६ ॥ पुन्यपरखुं पण पाइये, इयडां बेठो का जो रे ॥ धनारो नृपनो नजो, आलंग न करो ताजो रे ॥ शो० ॥ १७ ॥ वली ए राजा एहवो, टाढो सीजो लोय रे ॥ काम न काढे केहनो, मुनि वर सां सुख जोय रे ॥ शो० ॥ १८ ॥ माया गोडावे मनथकी, प्रीत रीत नवि जाणे रे ॥ शत्रु मित्र सरखा गणे, आप सखो एक ताणे रे ॥ शो० ॥ १९ ॥ स्वार्थमें पण एहनी, उदासीनता लाजे रे ॥ तुं आणी जोजो अ छे, थाय नरे कां आजें रे ॥ शो० ॥ २० ॥ लोकाचार न लेखवे, लोप री र न जगावे रे ॥ पुरुष वेदन कां नहिं,वेदन कोइ न पावे रे ॥शो०॥२१॥ निंदा स्तुति येक मती, इम पाखंडी कीधी रे ॥ धर्ममंदिर कहे सांजलो, विवेकतणी मति सीधी रे ॥ शो० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ १५५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली पाखंडी बोलिया, वीर विवेकने एम ॥ अम ठाकुरने सेवजे, म नवंछित लहे जेम ॥ १ ॥ पाले ताडे फिर करे, हरि हर ब्रह्मा देव ॥ जग सघलोही जुगतिशुं, अहनिश सारे सेव ॥ २ ॥ नीर करे जगतांतणी, अ रि नाखे उखेड ॥ सेवक सखरा एहना, को न करे तसु छेड ॥ ३ ॥ तूठयां

प्रनुता दे सही,रूव्यां ले उल्लाल ॥ परतो अम देवातणो,आवी नजर नि लाल ॥४॥ मोक्षनणी जो चाह ठे,अलवे देज़ो एह ॥ शिव दे ठे जिन पण सही, कष्ट त्यागशुं तेह ॥५॥ खातां पितां विलसतां, जो लाजीजें मोक्ष ॥ निज मारग लाधां थकां, कोण से विषमो दोष ॥६॥ जंगम स्थावर एहना, सेवक सघला लोक ॥ कोई विरलो होइसी, जिन रवि दर्शन कोक ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ श्रीचंद्र प्रनु प्राहूणा रे ॥ ए देशी ॥ वीर विवेक वदे इस्युं रे, उत्तर आणुं सार रे ॥ सिंह तणी परें गाजियो रे, पर मत मान उतार रे ॥वी० ॥ १ ॥ मुजने तुमें केम नोलवो रे, सरस्वतीने श्यो पाठ रे ॥ वचन तमा गं वापलां रे, चंदन नहिं वंश काठ रे ॥ वी० ॥ २ ॥ में मिथ्यामति तुम तणी रे, जाणी ठे निर्धार रे ॥ धूवाडे करी जाणियें रे, पाप करो उपचार रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ देवनणी थें उलख्यो रे, अग्नित देव प्रकाश रे ॥ मोहतणा थें मित्र ठो रे, तुमशुं केहो वास रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ देवानो जे देव ठे रे, श्री वीतराग विशेष रे ॥ पाच ठते कोण काचने रे, हाथ ग्रहे कुण देख रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ कंचन पीतल अंतरो रे, खजुउ सूरज जेम रे ॥ तृण तरुवर नो अंतरो रे, देव कुदेवनो तेम रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ निष्कलंकी जिन देव ठे रे, उज्ज्वल अनुपम एह रे ॥ दोष वर्जे करि दूषवो रे, पण ए गुणनो गे ह रे ॥ वी० ॥ ७ ॥ दृष्टिराग ले दोहिलो रे, मूक्यो क्युंहि न जाय रे ॥ मो हें घेलां माणसां रे, सूधो नावे दाय रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ मूको मिथ्यावादनें रे, गुण उपर करो राग रे ॥ शम दम संतरसी खरो रे ॥ कां ठोडो ते माग रे ॥ वी० ॥ ९ ॥ मदन नहिं मद लोनता रे, तृष्णा नहिंय तरंग रे ॥ विषय विकार इन्द्रियतणा रे, नहिं रामानो संग रे ॥ वी० ॥ १० ॥ मम ता रमता गेपता रे, हास्य विलास न तास रे ॥ आशापाश न वासना रे, एहवा गुण प्रकाश रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ देव नलो दिलमां धरो रे, नूलो नूं मे नर्म रे ॥ श्रीवीतराग विना नहिं रे, दाता शिव सुर शर्म रे ॥वी०॥१२॥ संसारी सुख कारणें रे, लीजें वस्तु जिकाय रे ॥ तास परीक्षा सहु करे रे, एहनी क्युं नवि थाय रे ॥वी०॥१३॥ तत्त्वपरीक्षा जोग ठे रे, मानुष मोटी जान रे ॥ ते लही परमादें करी रे, न धरे ज्ञानि उनांत रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ ते पशु नर रूपें करी रे, शृंग नहिं पुछ कोय रे ॥ नूला नवअटवीविषे रे,

नूला मृगसम जोय रे ॥ वी० ॥ १५ ॥ देव तमारा देखिया रे, रागी सा
गी एह रे ॥ वामा कामी मोहिया रे, निपट विटंब अछेह रे ॥वी०॥१६॥
मुक्ति हुवा कां अवतरे रे, दैत्य निपाया कांय रे ॥ खेले कां संत होइने
रे, मायाशुं मनलाय रे ॥ वी० ॥ १७ ॥ शस्त्र धरे माला धरे रे, नार धरे
अंगमांही रे ॥ वाहन वेसी चालतां रे, ए देव शोना नाहीं रे॥वी०॥१८॥
जगन उपायो तिण समे रे, व्याधि जरा दुःख रोग रे॥नीपाया कां जाणि
ने रे, नगवंतानें क्रम जोग रे ॥ वी० ॥ १९ ॥ आतम दिश व्योम काज जे
रे, वस्तु अखंमित एह रे ॥ कुण उपजावे एहने रे, आदि न लाने छेह रे
॥ वी० ॥ २० ॥ मुख्य आतम द्रव्य आखियां रे, ज्ञान ते सकल सरूप
रे ॥ एह विना थें जाणजो रे, सघलो छे अंधकूप रे ॥ वी० ॥२१ ॥ सक
ल पदारथ शाश्वता रे, द्रव्य गुणें करि होय रे ॥ परजाय फिरता रहे रे,
एह स्वनाव तुं जोय रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ राजस तामस सत्त्व जे रे, एह
उपाधि संसार रे॥ज्ञानादिक गुणें शोनतो रे, देव तिको निर्धार रे ॥ वी०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ वली पाखंमी बोलिया, सुण विवेक वर वीर ॥ कर्मनोगमें पण कहां,
ते शिव हाथें हीर ॥ १ ॥ जिण जेवो क्रम आचर्यो, तेहवुं फल दे ईश ॥
एह वचन सुणि तिण समे, विवेक थई मन हींस ॥२॥ कर्मानुसारी तुमत
णो, देव हुई निर्धार ॥ तो क्युं थें कर्मा नणी, नवि मानो सविचार ॥ ३ ॥
कर्मवशें जगजीवडा, सुख दुःख लाने जोय ॥ पण परमेश्वर केहने, नलो
बुरो नहिं होय ॥ ४ ॥ थें आखो जिन देव ए,रूसे तूसे नाहिं ॥ एह वात
साची सही, पण अचरिज इणमांहि ॥५॥ नक्त तिके सहजें लहे, अनुपम
लील विलास ॥ नक्त नहिं जे जिन तणा, ते लहे बंधन पास ॥ ६ ॥ ऋतु
वसंत ठाया लहे, तरुवर नवलां पान ॥ वली वारद वूठे थके, सघले वाधें
वान ॥ ७ ॥ इणे दृष्टांतें सुख लहे, जिनवर सेवे जेह ॥ सहेजें समियो ला
निने; शिव पण पामे तेह ॥ ८ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥ विवेक कहे वली सांनलो, तु
मचा देव ने एह रे ॥ पाले ताडे लोकनें, शूरा सखरा एह रे ॥ वि०॥१॥
ए गुण देखी रंजिया, तो जग जींत्या राय रे॥ देव कहे सघला सही, तु

कि मुक्तिना दाय रे ॥ वि० ॥ २ ॥ गोपी वहाली जेहने, तेनें कीधो देव रे ॥ मूढमनें एम वर्णवो, मुक्ति दासी करे सेव रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ कोप शाप देवे घणा, अर्धंग राखे नार रे ॥ नाटक हास्य विलासियो, क्युं ते देव विचार रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ पूजा शोजा देखिने, हर्ष धरे मनमांहि रे ॥ खावे पीवे सुख करे, देवपणुं ते नांहीं रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ लोक घणे सेवक जये, तो ने देव न थाय रे ॥ मोहतणा सेवक घणा, देव करो मन लाय रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ संसारी करणी करे, मग्न रहे मनमांहि रे ॥ देव म जाणो ते हने, मृगतृष्णाजल नाहीं रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ देव निरंजन ध्याइयें, ध्यान धरी शुद्ध लोय रे ॥ अंतर आंख उघाडीने, जात जली परें जोय रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ गाजुं रूप जाण्या विना, जूले ले संसार रें ॥ पण परमार्थेप्रीछजो, हीर ए क्युं गार रे ॥ वि० ॥ ९ ॥ साचो देव लही करी, जूठो नावे दाय रे ॥ क्षीरसमुद्र लही करी, खारे जल कोण नहाय रे ॥ वि० ॥ १० ॥ महारं नाम विवेक ले, समजावुं सब लोय रे ॥ जवेरी जाणे आंतरो, काच मणिमें होय रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ २०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम वचनें परमंसीने, जीपि नगरमें आय ॥ माता मुनिशाला रही, सुत पुर देखे जाय ॥ १ ॥ तिण अवसर हवे निवृत्तिनो, मनमंत्री विपु सार ॥ बहु विरहो न खमी शक्यो, आयो मिलण विचार ॥ २ ॥ विपु बोल्यो सुख हे प्रिया, तुं शुन नारी होय ॥ मुज वचनें तुं नीसरी, रोष न आणो कोय ॥ ३ ॥ तुं सत्यवती सावरी, सुधी सखरी नार ॥ तव में प्र हुति वर्गे करी, दीधी चित्त उतार ॥ ४ ॥ इक दिन तुज गुण सांजल्या, ति णे मिलवाने आय ॥ तुज सुत वीसरतो न ले, गुणवंत आवे दाय ॥५॥ तुज सुत परख्यो निर्गे मले, हुं पण वालो तेय ॥ गुनरागे आव्यो हतो, निलगोप ले जेय ॥ ६ ॥ वाल वीर विवेक ए, परणी तत्वरुचि नार ॥ करशे काम जिको हवे, तिहां आवीश संसार ॥ ७ ॥ रोष न आण्यो पा वलो, विपुवुं हितचित्त होय ॥ सोवन सागरी मिले, पवर न मिले कोय ॥ ८ ॥ एह वचन श्रवणें सुणी, कुलरंनीने कोल ॥ पगगुं पाठा वेलियें, लेहो न आवे रोल ॥ ९ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ हरिया मन लागो ॥ ए देशी ॥ इक दिन माता सुत नणी, शीख कहे मन लाय रे॥ सुत सुण सोनागी ॥ तुं माह्यो शाणो अछे,मात नणी सुखदाय रे ॥ सु० ॥ १ ॥ हित वाणी पाणी नणी, राखण तुं छे जोग रे॥ सु० ॥ पकघडो काचो नहिं, साचो सखर संयोग रे॥ सु० ॥ २ ॥ हितवाणी कामधेनु छे, सतपुत्रकाने आय रे ॥ सु० ॥ दुष्ट कुसुत मातं गने, घरमां कह्यो क्युं जाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ सघलांने रुचती नथी, गुरु जन वाणी एह रे ॥ सु० ॥ अमृतथी अधिकी अछे,जाणे स्वादी जेह रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ शुन उपदेश विना फिरे, नर नारी जगमांहि रे॥ सु०॥ लाव एय लक्षण वाहिरा, ज्ञान हैये जसु नांहीं रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ मात वाणी जाणे सही, अमृत धारा मेह रे ॥ सु० ॥ उखर क्षेत्रतणी परें, मत देखा डे छेह रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ प्रवृत्ति शोक्य शमवा नणी, कीजें कोइ उपाय रे ॥ सु० ॥ एह अवस्था तिणे करी, जमवारो क्युं जाय रे॥ सु० ॥ ७ ॥ पिउ वियोग स्थान चूंशता, सुबुद्धि तणो नहिं योग रे॥ सु०॥ ए दुःख सघलां नवि गणुं, शुनपुत्रने संयोग रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ धन नरिया नंमार जे, खातां खूटी जाय रे ॥ सु० ॥ अक्षयनिधि पुत्र संपदा, संसारीने था य रे ॥ सु० ॥ ए ॥ माता सदाइ पुत्रनी, आशा राखे नूर रे ॥ सु० ॥ ते तुऊ पुत्र रतनथी, क्युं मन न रहे सनूर रे ॥ सु० ॥ १० ॥ सुकरी रास नीने घणा, पुत्र हुवा शी सिद्ध रे ॥ सु० ॥ सिंहिणी एको सुत जणे, स घलोई सुख दीध रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ कुलमंदिर दीपक सही, कुलजामि नी चंद रे ॥ सु० ॥ कुलगाडी धुर धवल छे, सुपुत सदा सुखकंद रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ तमरूप वैरी वश करे, मील कमल उल्लास रे ॥ सु० ॥ सुपुत्र सूरज उगे थके, शोनावे घरवास रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ हवे तुं ए नगरीनो ध णी, सेव निरंजन देव रे ॥ सु० ॥ जास प्रसाद लह्यां थकां,सकल करे तुऊ सेव रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ मोह महीपति जीपतां, कपर करसी एह रे ॥ सु० ॥ सेवक पण एहना अछे, मोह दावानल मेह रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ उंलग करजे एहनी, आठ पहोर अप्रमत्त रे ॥ सु० ॥ साचो कतरजे सही, सा च नजो जग मित्त रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ न रुचे कूड ए स्वामीने, कांई ति ल तुष मात रे ॥ सु० ॥ सेवा प्रमादने वेर छे, गाय अने वाघ जात रे॥

॥ सु० ॥ १७ ॥ लक्षण ए ते स्वामीनां, सेवक चूका जाण रे ॥ सु० ॥ प्रमादने वश हुइ रह्या, मोहें लीधा ताण रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ तेजणी प्रमाद ठोडीने, खीजमत करजे खास रे ॥ सु० ॥ प्रस्तावें सवली करे, आपणी जे अरदास रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ शीख इसी माता तणी, शीश चढाई तेण रे ॥ सु० ॥ धर्ममंदिर कहेहवे सुणो, विवेक वदे हरखेण रे ॥ सु० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पय प्रणमीने बोलियो, मीग वचन विचार ॥ नर पशु पंखीमें सही, मात हुवे सुखकार ॥ १ ॥ पण साची माता तिका, आखे शीख सुझान ॥ हेमकोडि हितकारिणी, नहिं ते शीख समान ॥ २ ॥ मानी ने शीख ते सही, मातु जे जे दीध ॥ सुधाकुंन्नमां नाइयें, कामगवी पय पीध ॥ ॥ ३ ॥ नंदन वन निरख्यो कियो, बावन चंदन लेप ॥ इणि परें सुख मुजने थयुं, सुणि तुम वचन अपेख ॥ ४ ॥ माता वचन उथापशे, सो सत पुत्र न होय ॥ सुख नापे माता नणी, व्याधि रूप ते जोय ॥ ५ ॥ इम माता हर्षित करी, कव्यो कुंवर तिवार ॥ माता हाथ माथे धरी, जाये राजडुवार ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ रामचंदके बाग, चांपो मोरि रह्यो री ॥ ए देशी ॥ परखदा आतम नाव, मांहि विराज रह्यो री ॥ श्रीजगनाथ नरेंद, निरखी हर्ष गह्यो री ॥ १ ॥ ठत्र ढले सिरदार, सिंहासन पर राजे ॥ धर्म धनुप धरि हाथ, करणी खड्ग ते गाजे ॥ २ ॥ तवना बे कर जोड, पय प्रणमी ने करे री ॥ तीन भुवननो नाथ, अनुपम शोन्न धरे री ॥ ३ ॥ अष्टांग योगना धार, योग जोग नजे री ॥ हृदय कमल तुज धार, ध्येयशुं जाय मिले री ॥ ४ ॥ ॥ श्लोक ॥ अष्टांगयोगाः ॥ संयमो नियमश्चैव, करणं च तृतीयकम् ॥ प्राणायामः प्रत्याहारः, समाधिर्धारणा तथा ॥ १ ॥ ध्यानं चैतस्य योगस्य, ज्ञेयमष्टांगकं बुधैः ॥ पूर्णांगक्रियमाणस्तु, शुक्रमे स्यादशोचता ॥ २ ॥ सुर नर नमरा नूर, सेवे पाय सदा री ॥ तुज पयपंकज सार, मनमें अधिक मुदा री ॥ ५ ॥ ज्योतिरूप जगनाथ, केवलरूप नयो री ॥ स्याद्वादी सुखरूप, नूप अनूप नयो री ॥ ६ ॥ नाव कर्म मल ठोडी, आपें रूप विराजे ॥ तो सम अवर न कोय, दिन दिन अधिक दिवाजे ॥ ७ ॥ नव नव नमतां आज, दर्शन तुमचो दीठो ॥ आज अधिकआनंद, लोचन अमिय प

इछो ॥ ७ ॥ सुरतरु सम तुं राय, बीजा नूप करीरा ॥ तुं जातिनो हेम, अवर ते धातु कथीरा ॥ए॥ शम दम सघला नाव, आनंद अधिक घणा री॥ तम सेव्यां लहे लोक, नहिं कांइ रिद्धि मणा री ॥ १०॥ रविथी नासे घूक, मोरथी नासे जुजंगा ॥ तेम तुज आणथी दोष, न करे को परसंगा ॥११॥ जंगम स्थावर जीव, तुं सघलां सुखदाइ ॥ मित्र अमित्र समान, ए तुममें अधिकाइ ॥ १२ ॥ तुम गुण केरो पार, कहेतां क्युंहि नावे ॥ पण आपणी मति सार, सेवक नाव जणावे ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम स्तवना जिन राजनी, कीनी बे कर जोड ॥ वली पंचांगें पय नमे, मन मद मछर गोड ॥१॥ कृपा कटाक्षें जोइने, इम बोल्या जिनराज॥ परखद वारां सांजलो, धरि चित्तमांहि समाज ॥२॥ वीर विवेक कहीजियें, ते बे एह कुमार ॥ नांतो नांत नली परें, तत्त्व बुद्धि नंमार ॥ ३ ॥ नायक विना सेना किसी, ज्ञान विना ज्युं वाणि ॥ जल विण सरवर को नहिं, गुण विण लाल कवाण ॥४॥ धर्म कर्म तिम ए विना, सखरो नावे धात ॥ नली बूरी सब नावनी, तुरत लखे ए वात ॥ ५ ॥ विकलेन्द्रियमां ए नहीं, पशु नरकमें नांहि॥ प्रायः नरमां ए वसे, वली आरज कुलमांहि॥६॥ त्यां पण को विरला कने, पूरण लाने एह ॥ बीप घणी सघली नहिं, मोती धारे जेह ॥७॥ अहंकार इणमें नहिं, कृपणनाव नहिं कोय ॥ मीठा बोले मुख हसे, धर्मवंत वलि होय ॥ ७ ॥ लाजवंत मतिवंत ए, पर दोष ढंकणहार॥ सुखमांहे मूंके नहिं, दीन हीन डुःख चार ॥ए॥ विण उपकारें उपकरे, निर्मल गंग तरंग ॥ मुकने ते होय वालहो, जे करे एहनो संग ॥१०॥ मुऊ पें आयो ए सही, अधिकार लेवा काज॥ ते नणी एहने में कियो, इण पुरनो शेवराज ॥ ११ ॥ एह वचन नृपनुं सुणी, सघले कीध प्रमाण ॥ नगरमांहि वासो दियो, कुंवर लहे बहु मान ॥ १२ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥ इक दिन अरदासा रे, करे कुंवर प्रकाशा रे, मोह जीपण आशा वासा, आणीयें रे ॥ साहिब जिन राजा रे, अति सबल दिवाजा रे, फिर वेरी हुवा बे ताजा, जाणीयें रे ॥ १ ॥ मन मछराजो रे, डुःख खेतनो मालो रे, अति पापनो लालो आलो, मोह बे रे

॥ न्हविया गड कीधो रे, निज वंछित सीधो रे, जाणे जल ज्युं पीधो, गड ए मोह ने रे ॥ २ ॥ हाथी जला घोडा रे, वली मानव जोडा रे, बहु रा ख्या ने छोडा, छोडी तुज तणी रे ॥ सघलो जग जीत्यो रे, छूट ने वदीतो रे, केरी ज्ञानीनो जीतो, सहु जाणी रे ॥ ३ ॥ मोहराजा जोरें रे, आज स मरो तोरें रे, कहे हरि आगे कोरें, एहने रे ॥ तपसी तप चूके रे, मोह नामें ढूके रे, धर्म मारगथी ते चूके, चोरे तेहने रे ॥ ४ ॥ कुलवंत कहीजें रे, आचारे लीजें रे, मोहें करी भीजे, भीके रागमां रे ॥ देव दानव नागा रे, इन्द्र आगे नाग्या रे, पुठा वली नाचे राग्या, मारगमें रे ॥ ५ ॥ नेह मंत्रना [illegible] रे, तो पण जागे नाठा रे, इण मोहना काठा नाठा, कुण सहे रे ॥ [illegible] जीत्या रे, जग माहे वदीता रे, बहु काल व्यतीता, अंत न को [illegible] रे ॥ ६ ॥ मुग [illegible] जोग्या रे, तो पण मोहे राख्या रे, कोइ जोर न [illegible], को नहि रे ॥ अतुली बल दीसे रे, पाप विशवा वीशे रे, [illegible] मन हींसे, ते राशी रे ॥ ७ ॥ तमचो मुख जोइ रे, हरखे राय होइ रे, पर पुत्रें न होइ, क्षमणां ने जिह्या रे ॥ मोह गय अलोग्ये रे, जग [illegible] देखे रे, जाणो विशेषें, क्षमणां ए दशा रे ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली विवेक बोले घणा, मोहतणा अवदात ॥ जगगुरु तुं राय जाण छे, तो पण सुणजो वात ॥ १ ॥ जीव हणावे लोकमां, कुड बोलावे [illegible] ॥ वाट पडावे धन हरे, परदारा अति घोर ॥ २ ॥ [illegible] गाले अति [illegible], छोडे धननी राश ॥ लोलुप लोभी लंपटी, व्यसन न मूके पा म ॥ ३ ॥ [illegible] मारता नणा, पापतणी बहु वात ॥ संतति [illegible] दर्मी, [illegible] करो धान ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोदमी ॥

॥ देशवली निशां [illegible] ॥ ए देशी ॥ मोहतणां महिमा सुणी, नहि [illegible] नासे रे ॥ [illegible] अधिक आवे तने, पावे मोहनो दासो रे ॥ मो० ॥ १ ॥ पूजावे [illegible], देवगरे [illegible] रे ॥ [illegible] पाखंने पो [illegible] ए मोह विकारे रे ॥ मो० ॥ २ ॥ [illegible] फल मेहनो, कहि [illegible] रे ॥ [illegible] एए मोह [illegible] रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ पूजावे निर्दैवने, [illegible] रे ॥ [illegible] हिंसा करे, एए मोह

विकारो रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ शत्रु वडो संसारमां, पावक पाप नियानो रे ॥ पूजीजें पुण्य कारणें,ए ए मोह विधानो रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ आरंभ अधिका जेहथी, वाधे भवजल पूरो रे ॥ कन्यादान कहीजियो, ए ए मोह अंकूरो रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ बाहिर शुचि जलथी हुवे, तिहां माने धर्मभावो रे ॥ तीर्थंकरजी न आदरे, ए ए मोह सभावो रे ॥मो०॥७॥ माखी मधु दानें दिये, होमे धान्य अपारो रे ॥ धर्म बुद्धि तिणशुं धरे, एए मोह प्रकारो रे ॥मो० ॥ ८ ॥ पति मूकी पर पुरुषने,सेवे साहमी शुद्धि रे ॥ एकाकार करी भली, एए मोह कुबुद्धि रे ॥ मो० ॥ ९ ॥ सुरभि मुख पुंठें कहे,बहु देवोनो वा सो रे ॥ शुद्ध कहे मल मूत्रने, ए ए मोह विलासो रे ॥मो० ॥ १० ॥ संसारी देवां कने, मागे मोक्ष गमारो रे ॥ गेहीने गुरु करि गणे,ए ए मोह विकारो रे ॥ मो० ॥ ११ ॥ गेही धर्म महोटो सही, जसु आश्रय सब को यो रे ॥ इम बोले जगमां घणा, मोहें मोह्या लोयो रे ॥ मो० ॥ १२ ॥ सोनानी सुरभि करी, मंत्र भणी विप्र जेह रे ॥ भाग करी वहेंची लिये, ए पण मोहना गेह रे ॥ मो० ॥ १३ ॥ कर्पणी कहे श्रम उपरा, धर्मी केहा होय रे ॥ पशु पंखी नर कण ग्रहे, अमघें मोह ए जोय रे ॥ मो० ॥ १४ ॥ वेद पुराणें पालियो, वली मार्कंम पुराणो रे ॥ निशिभोजन क रवुं नहिं, समजो चतुर सुजाणो रे ॥ मो० ॥ १५ ॥ सूरज किरणें फरसि यो, गंगारो पण पाणी रे ॥ पीवा योग्य पावन अछे, निशि नवि पीवे धी रो रे ॥ मो० ॥ १६ ॥ एह वचन निज ग्रंथरो, माने नहिय लगारो रे ॥ रसना लोभी हुइ रह्या, एए मोहविकारो रे ॥ मो० ॥ १७ ॥ अवर घरे बेगे पिता, पिंम लहे नहिं भोरा रे ॥ मूढमति मूंफी रह्या, ए ए मोहना दोरा रे ॥ मो० ॥१८॥ तो परभव पहोतो पिता, निज घर बेगे पुत्रो रे ॥ पिंम दियो पहोंचे नहिं, परतिख देख पवित्रो रे ॥ मो० ॥ १९ ॥ परणावे वृद्ध भणी, चेतननी परें जाणी रे ॥ ग्रंथ रचे व्यभिचारना, ए ए मोह नी खाणी रे ॥ मो० ॥ २० ॥ चेतनने माने नहिं,शून्य गिणे संसारो रे॥ क्षणिकवाद केई धरे, मोहतणा विस्तारो रे ॥ मो० ॥ २१ ॥ काननमां मृ गलां रहे, सूकां तृण आहारो रे ॥ ते मृग मारे मानवी, एए मोह प्रका रो रे ॥ मो० ॥ २२ ॥ मोह सोह बाधा घणी, राज्य वध्यो अति जोरो रे ॥ तमची आणा माने नहिं, वल बलि कोइ फोरो रे ॥ मो० ॥ २३ ॥ ती

न लोक नायक तमें, मोह ईश पणएमो रे ॥ एक मियानमांहे कदा, ख
ड्ग रहे बे केमो रे ॥ मो० ॥ २४ ॥ तम सेवकपें लीजीयें, जेट जन्नी सो
वारो रे ॥ जोरो तोरो जावतो, जाग जितरो विस्तारो रे ॥ मो० ॥ २५ ॥
वेराजो ए हुइ रह्यो, साहिब गरिबनिवाजो रे ॥ धर्ममंदिक कहे ते सुणो,
जे बोल्या जिनराजो रे ॥ मो० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वत्स स्वछ मति तादृशी, तुं विवेक वड वीर ॥ उपकारें ए वीनति,
नविकतणी करे नीर ॥ १ ॥ हुं ज्ञानें देखूं अछुं, सवलीही ए वात ॥ कर्म
उदय अधिको अछे, तिण नहिं वणती धात ॥ २ ॥ धीर वीर पुरुषें घणो,
वध कीधो बहु वार ॥ पण ए फिर फिर पालवे, अनंतकाय अनुहार ॥३॥
महोटो खल ए मोह छे, महोटो रिपु ए जाण ॥ विषम व्याधि वारु नहिं,
विष नरियुं ए वाहाण ॥ ४ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ क्षण लाखेणो रे जाय ॥ फूलडानी देशी ॥ मोहवशें वली मानवी रे,
माताशुं करे प्रेम ॥ मदमाती ने कामिनी रे,उलटी चाले एम ॥ विवेकी,धि
क् धिक् मोह विकार ॥ संसारी प्राणी नणी रे, नव जल एह अवतार ॥
वि० ॥ १ ॥ पति परदेशें पूठलें रे, पर नरशुं रमे रंग ॥ गर्न तजे मलनी
परें रे, न करे करुणा संग ॥ वि० ॥ २ ॥ जनकतणो वली जोयजो रे, सु
तशुं प्रेम उदार ॥ धन प्रजुता लुब्धोयको रे, घात करे अविचार ॥ वि०
॥ ३ ॥ मात पिता मूके सही रे, नाइ बेहेन सगीन ॥ प्राण तजे प्रेमें करी
रे, वनिता वचन आधीन ॥ वि० ॥४॥ देश फरे गिरि शिर चढे रे, लंबें न
दीय नवाण ॥ जे कामणने कारणें रे, ते पण न करे काण ॥ वि० ॥५॥
प्रेम घणो सुतशुं धरे रे, माता चलिय विशेष ॥ धोवे मल मूत्र धूरयकी रे,
विरचे नव नव वेष ॥ वि० ॥ ६ ॥ परणावे प्रेमें करी रे, सुंदरि सुंदर देख॥
योवन मदमातोयको रे, न धरे वचननी रेख ॥ वि० ॥ ७ ॥ धरती धन
लोनीयकां रे, धंध करे मिलि नाय ॥ कथन कोइ माने नहिं रे, चाले आ
पणी दाय ॥ वि० ॥ ८ ॥ काया कंचन सारिखी रे, उपरथी देखाय ॥ शा
रद संध्यावान ज्युं रे, क्षणमें खेरू थाय ॥ वि० ॥ ए ॥ माया ठाया
सारिखी रे, घन धन मेले रे जेह ॥ स्थिरता ते रहेशे नहिं रे, तडकें

लागे त्रेह ॥ वि० ॥ १० ॥ आश्रव अधिका मेलिया रे, नव नव बंधन थाय ॥ काम क्रोध लहरी वधे रे, ज्युं जल पवन पसाय ॥ वि० ॥ ११ ॥ मात पितादिक एहवा रे, सघला सलापी न होय ॥ पण संसारी प्राणि या रे, प्रायें एहवा जोय ॥ वि० ॥ १२ ॥ ज्युं वीजी विलमें अछे रे, सा पां केरो वास ॥ पण आशंका आणियें रे, इम समदिठि उदास ॥ वि० ॥ १३ ॥ सागर तरतां सोहिलो रे, दव उलायो रे जाय ॥ सुर सान्निध्य गिरिने खणे रे, पण वश मोह न थाय ॥ वि० ॥ १४ ॥ चूल्यो राक्षस राखियो रे, तीखे शत्रु सहाय ॥ मीण दांत लोह चावियो रे, पण ए विप म कहाय ॥ वि० ॥ १५ ॥ सेवक पण जे मोहना रे, स्वामी सरिखा रे ते ह ॥ कण कण कीधा फिर मले रे, पारद नारकी जेम ॥ वि० ॥ १६ ॥ अनादि अनंत पण ए सही रे, अनादि सांत पण एह ॥ सादि सान्त पण जे अछे रे, तुमची संगति जेह ॥ वि० ॥ १७ ॥ मोह एह बहु रूपियो रे, सेवक पण बहु रूप ॥ एकाकी प्राणी जणी रे, लागी रह्या बहे जूप ॥ वि० ॥ १८ ॥ तुझ वेलीथी एहना रे, वेली अनंत अपार ॥ क्युं जीपाये वेगशुं रे, तुंहिज आप विचार ॥ वि० ॥ १९ ॥ चूंप करी ह्मणां ते जणी रे, अ वसर समयो देख ॥ शिव साधे समवायशुं रे, ए स्याद्वाद विशेष ॥ वि० ॥ २० ॥ मोहवशें होवे जिणे रे, तेह अछे प्रतिकार ॥ ते पण कहिशुं तो जणी री, सुण एक अपर विचार ॥ वि० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लोक तणे अंते अछे, ऊंची अनुपम सार ॥ सिद्धपुरी नामें जली,स घलामां सिरदार ॥ १ ॥ जव्यजणी जे योग्य छे, पण करे विरलो वास ॥ हेम संग लाचे नहिं, सघली माणिक राश ॥२॥ जन्म जरानुं डुःख नहीं, आपद गर्ज न वास ॥ धन मन बंधन को नहीं, आतम सहज विलास ॥ ३ ॥ आधि व्याधि बाधा नहिं, शीत रीत नहिं कांय ॥ चूप धूप रूप रंग शा, विरस फरस नहिं थाय ॥ ४ ॥ केवल केवल ज्ञानमां, परनो नहिं प्र संग ॥ ज्ञान सुधा करि थापिया, परम उल्लास उतंग ॥ ५ ॥ ते पुरनी इछा करी, यत्न करे बहु लोय ॥ पण फिर मोहतणी पुरी, पामे प्रापत सोय ॥ ६ ॥ शिवपुर मग जाणे नहिं, जूगे मारग जाल ॥ मुग्ध मीन ज्युं मानवी, फसी रहे जग जाल ॥ ७ ॥ ज्ञान क्रिया वैराग्य तिम, मारग सू

धो जेह ॥ सर्दहणा साची नहिं, न्रामक नावे तेह ॥ ८ ॥ निकट मुक्ति ठे जेहने, ते पण मोह ठलाय ॥ सागर कंठें पण रह्यो, पोत चलावे वाय ॥ ए ॥ मोह्यकी वीये घणुं, शिवपुर जावणहार ॥ वोलावीने तेहने, करजे दर्प अपार ॥ १० ॥ तुं सार्थे दूख्यां थकां, नय नहिं तेहने कोय ॥ गरुड पंखीयी नासही, जुजंग जाति जे होय ॥ ११ ॥ पहेलां पण शिव पुर तणो, मारग वह्यो एम ॥ इणिपरें राजा आखियो, तहत्ति कियो सच तेम॥ १२॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ वधावानी देशी ॥ वधावो हे वीर विवेकने, जगनाथें हे आपणो जाणी दास के ॥ पुण्यरंग पाटण आवियो, राज्य दीधुं हे मानुं नानु उल्लास के ॥ व० ॥ १ ॥ सेवक सखरा आपिया, साथ पूरो हे शूरो सुगुण सनूर के ॥ साहिब हुकम कियो वली, तुज ससरो हे विमलबोध पडूर के ॥ व० ॥ २ ॥ तेहने निजपुरनी धरे, कोटवाली हे दीजें सुखकार के ॥ वनपाल कत्ता मूकशे, मुज वचनें हे न्यायें सुविचार के ॥ व० ॥ ३ ॥ आदेश लेई तिहांयकी, वीर आयो हे निजपुरने गाम के ॥ धर्म ध्यान ध्वज आगलें, मुख आगें हे आगें करि अजिराम के ॥ व० ॥ ४ ॥ माता मन आनंदशुं, वलि वनिता हे वनिता लीधी साथ के ॥ प्रेमनिधान प्रतीतनी, घरमांहे हे मांहे प्रथम ए आय के ॥ व० ॥ ५ ॥ जय जय शब्द हुवे घणा, गुण गावे हे नावें गुणि जन सार के ॥ पुण्यरंग पाटणराजियो, सिद्ध विद्या हे विद्याधर ज्युं तार के ॥ व० ॥ ६ ॥ वाजित्र गुरु उपदेशनां, अति वाज्यां हे गाज्यां गुहिर गंनीर के ॥ आमंबर अधिको करी, पुर पेठो हे सार्थे वडवीर के ॥ व० ॥ ७ ॥ महोटा महाजन आविया, राज मुजरो हे कीधो उदार के ॥ आनंद अधिक हुआ घणा, पुरमांहे हे वरत्यो जय जयकार के ॥ व० ॥ ८ ॥ कोटवाल ससरो कियो, प्रजुवाणी हे जाणी कीध प्रमाण के ॥ ढंढेरो करुणा तणो, पुर फेखो हे फेखो वीरनी आण के ॥ व० ॥ ए ॥ दूर कीया पापी नरा, पुण्य धारी हे सारी नगरनो वास के ॥ डुष्ट डुर्दांत जन काढिया, राख्यो नहिं हे तिहां ठलनो पास के ॥ व० ॥ १० ॥ राज्य नलो हवे नोगवे, शिव मारग हे मार्गनुं मुख तेह के ॥ नोलावे नवि सायने, नववारें हे सारे सुख गुणगेह के ॥ व० ॥ ११ ॥ माताने सुखणी करी, जसु सीखें हे हुआ नवेय निधान के ॥ मन मंत्री पण वेगशुं, आवे जावे हे प्रम

दा प्रेम निधान के ॥ व० ॥ १२ ॥ अचरिज धरतो मंत्रवी, सुत देखी हे पेखी हर्ष अपार के ॥ लाज रहे सुत पुत्रथी, नवि निंदा हे नानोही नरनार के ॥ व० ॥ १३ ॥ वीर विवेक वाध्यो घणुं, सुख पायो हे श्रीजिनचंद पसाय के ॥ त्रीजो खंम पूरो थयो, ए सुणतां हे नविजन आवे दाय के ॥ व० ॥ १४ ॥ दयाकुशल पाठकवरु, तसु शिष्य हे धर्ममंदिर गणि सार के ॥ ए संबंध कियो नलो, सुखदायी हे श्री संघने जयकार के ॥ व० ॥ १५ ॥ इति श्री प्रबोधचिन्तामणौ ढाल नाषा प्रबंधे पंमित धर्ममंदिरगणिविरचिते मोहराजविवेकपाणिग्रहणप्राज्य राज्यप्राप्तिवर्णननामा तृतीयःखंमः संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ खंम प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीगुरु चरण प्रसादथी, लहियें लील विलास ॥ मंगल माला संपजे, दिन दिन अधिक उल्लास ॥ १ ॥ तिण प्रस्तावें मोह हवे, नगरी अविद्यामांही ॥ चार्वाक मित्र नणी कहे, इक दिन वात उठाही ॥ २ ॥ आजसमे मो उपरें, द्वेष धरे नहिं कोय ॥ एक विवेक विना सहु, परम मित्र जग होय ॥ ३ ॥ पहेले पण ठल बल करी, मुजने जीत्यो एण ॥ ते वेला मुक संचरे, नीति रहे ने तेण ॥ ४ ॥ चार्वाक तव बोलियो, मोहराय सुण सिंह ॥ शाल कंगाल विवेक ने, तिणनुं केहो बीह ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ वेगें पधारो हो महेलथी ॥ ए देशी ॥ मठरालो मोह बोलियो,चारवाक सुण मित्र ॥ नेद न जाणे तुं एहनो, ठानी वुरी ए शत्र ॥ म० ॥ १ ॥ मनमंत्री मूरख थयो, जीवतो मूक्यो एह ॥ में पण न कयुं मंत्रीने, केद करी धरो एह ॥ म० ॥ २ ॥ इण द्वेषी जीवता ठतां, क्युं सुख पामे जीव ॥ एंको रोगज अंगमां, उन्माद रहे जस जीव ॥ म० ॥ ३ ॥ विरुउ वैरी जागतां, निश्चिंत सुए जे राय ॥ बंध हुउ ते जाणजो, नीतिवचन कहेवाय ॥ म० ॥ ४ ॥ नानो वैरी न जाणियें, विश्वास न धरो तास ॥ मनमें चलगी कीटिका, हाथीनो करे नाश ॥ म० ॥ ५ ॥ अवगुणियें नहिं रिपु गुणी, नानो सो पण जेह ॥ वृद्ध अंकूर उग्यो थको, प्रासाद पाडे तेह ॥ म० ॥ ६ ॥

दुःख पाम्यो नानो थयो, पर दुःख दूर्ड जोय ॥ हलाहल विष तिल समुं, दुःखदायी क्युं न होय ॥ म० ॥ ७ ॥ कदाइक फिरतां जायसी, प्रवचन पुरमां वास ॥ तो हाथे आवे नहिं, जिम सिंह गिरिमां निवास ॥ म० ॥ ८॥ राजनीति मांहे कह्युं, वेरी निज वश राख ॥ परवाणी कानें सुणी, देत्य स भोवड नाख ॥ म० ॥ ९ ॥ खरी खबर लीधा विना, साल समान ए था य ॥ खबर नणी चर मूकियें, ए मुज आवे दाय ॥ म० ॥ १० ॥ मित्र कहे वारु अठे, साहिब एह विचार ॥ तुरत तेडाव्या तिणे क्षणे, आखे स कल प्रकार ॥ म० ॥ ११ ॥ पाखंमादिक दंन वली, सखरा सेवक जेह ॥ शीख कहे नृप तेहने, काम करो ससनेह ॥ म० ॥१२ ॥ पुत्र सहित निवृत्ति वधू, किहां नाठी किण गाम ॥ जग सघलो ढूंढी करी, खबर करो अ निराम ॥ म० ॥ १३ ॥ स्वामी वचन शीशें धरी, सेवक चाल्या ताम ॥ शूरवीर साहसिकधरु, स्वामीतणुं करे काम ॥ म० ॥ १४ ॥ गाम गाम पुर ते फरे, वन वन तरु तरु तेह ॥ वानरनी परें जोवतां, स्वामी धर्म सस्नेह ॥ म० ॥ १५ ॥ यत्न करी जूवे घणुं, पण को न कहे वात ॥ पग पग पूछया अति घणा, न पडी शुद्ध तिल मात ॥ म० ॥ १६ ॥ फरतां दूर देशांतरें, पुण्यरंगपाटण जाय ॥ वात सकल तिहांकिण लही, पण पुरमां न ज वाय ॥ म० ॥ १७ ॥ गाना बाहार तूपी रह्या, को तरुनो लेइ संग ॥ कोटवाल तिहां नीसखो, चोकी करतो चंग ॥ म० ॥ १८ ॥ नाग्य जोग आवी जुडी, दूपणा ऊपर चोट ॥ सिद्धि हुवे क्युं तेहने, जसु दिलमांहे खोट ॥ म० ॥ १९ ॥ कोटवाल सम जाणिया, काठा बांध्या तेह ॥ समकित नटने वश कखा, ताडन तरजन देह ॥ म० ॥ २० ॥ मिथ्यामती पाखंम वली, दंन प्रमाद विशेष ॥ समकित शूरें कूटिया, मोहतणा दास देख ॥ म० ॥ २१ ॥ विवेकतणी तिण शुद्धि लइ, ताडन पण लही तेय ॥ हर्षे विषाद वेहु लह्या, पुण्यरंगपाटण जेय ॥ म० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गाना नाग तिहांथकी, रही न शक्या तिहां तेह ॥ जिम दावानल देखीने, मृग नासे लेइ देह ॥ १ ॥ मोह नणी आवी मल्या, प्रणम्या स्वामी पाय ॥ विलखाणा ते देखीने, मोह वदे चित्त लाय ॥२॥ तुमचो मुख श्या मेप छे, नागा आव्या आज ॥ में आगेंही जाणियो, तुमथी नहुवे काज ॥३॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी पारधियानी ॥ अथवा वांगरियानी ॥ अथवा ॥ डुर्गपाल दलेलशुं रे, उत्तर पाछो देह रे॥ पुरोहितजी ॥ ए देशी ॥ वली राजा इम बोलियो रे, मुज नट दंन कहाय रे॥ दंन दरिया ॥ ते नवि दीसे स्थानकें रे,जीवन सम मुज थाय रे ॥ दं० ॥ मेरे कामित काम करीया, मेरे राज धुरांकों धरीया, हुं चाहुं दर्शन तुज रे ॥ दं० ॥१॥ ए आंकणी ॥ ते हाथें मुज राज्य छे रे, जमणी बांह सहाय रे ॥ दं० ॥ विरुइ वेला एहनी रे, न सुणावे माहाराय रे ॥ दं० ॥२॥ डुष्ट स्वप्न नवि देखियुं रे, अंग न फरक्युं कोय रे ॥ दं० ॥ शकुन विरोधी न ग्रह्यां रे, ए चिंता क्युं होय रे ॥ दं० ॥ ३ ॥ इम सुणि सेवक आपणी रे, मांमी कहे सब वात रे ॥ दं० ॥ दंनें अमने मूकियां रे, इहां रह्यां न बने धात रे ॥ दं० ॥ ४ ॥ साहिबने जाइ कहो रे, ए सघलो परकार रे ॥ दं० ॥ हुं छानो वेषांतरें रे, लेशुं सकल विचार रे ॥ दं० ॥ ५ ॥ काचे कामें आवतां रे, न रहे सेवकधर्म रे ॥ दं० ॥ आव्यो मुजने देखजो रे, वैरीनो लही मर्म रे ॥ दं० ॥ ६ ॥ इम सांजली मोह नृपति रे, आनंद अधिक उत्साह रे ॥ दं० ॥ सनामांहे वेगो थको रे, दंन तणा गुण गाय रे ॥ दं० ॥ ७ ॥ छल बल बुद्धि निधाननो रे, माली घरनो स्थंन रे ॥ दं० ॥ जीवन तुं चिरंजीवजे रे, थारां चरित्र अचंन रे ॥ दं० ॥ ८ ॥ सेवक ए जंबुक थया रे, तुं पंचायण सिंह रे ॥दं०॥ विरुवा वैरी विहुं दिशें रे, तिहां पण नाणी बीह रे ॥ दं० ॥९॥ सेवक प्राण नणी गणे रे, तृणसम स्वामी काज रे ॥ दं० ॥ ए सेवक धर्म सांजल्यो रे, तें राख्यो ते आज रे ॥ दं० ॥ १० ॥ नृपति जीपत ते करी रे, वैरीनां वहुवृंद रे ॥ दं० ॥ संसारी रीत जामिनी रे, त्यां तुं पूरणचंद रे ॥ दं० ॥ ११ ॥ साटे मांहे तुं सही रे, घाटे हाटें दीव रे ॥ दं० ॥ राजें काजें धनें वनें रे, सघलेही तुं मीव रे ॥ दं० ॥ १२ ॥ तुम विण फीका फूल छे रे, लावण्य तुफ विण नांहि रे ॥ दं० ॥ कारज सघलां अन्य छे रे, तूं मीठो ते मांही रे ॥ दं० ॥ १३ ॥ वीरसना ए माहरी रे, मोतीमाला जेम रे ॥ दं० ॥ मध्यनायक मणि तूं अवे रे, हजीय न आयो केम रे ॥ दं० ॥ १४ ॥ एह वचन क्रोधादिकें रे, सुनटें सुणियुं आम रे ॥ दं० ॥ रीष राजानी जाणीने रे, उठी चाल्या फिर ताम रे ॥ दं० ॥ १५ ॥ पुण्यरंगपाटण उपवनें रे, छाना रहिया जाय रे

॥ दं० ॥ पूर दरियावतणी परें रे, मांहे पग न देवाय रे ॥ दं० ॥ १६ ॥ कूरगडु साधु क्रोधें ग्रह्यो रे, बाहुबलि मानें तेम रे ॥ दं० ॥ लोनें केसरी रुषि ग्रह्यो रे, कामें श्रीरहनेम रे ॥ दं० ॥ १७ ॥ खाली फिरी पाछा गया रे, राजा करशे रीप रे ॥ दं० ॥ एम जाणी ताके घणुं रे, चोर परें निश दीस रे ॥ दं० ॥ १८ ॥ ए सेवक विवेकना रे, बंदी कीधा जाण रे ॥ दं० ॥ जोरो करीने ले चल्या रे, मोह नगरी दिश ताण रे ॥ दं० ॥ १९ ॥ बाहु बली रहनेमजी रे,युद्ध करे तिण साथ रे ॥ दं० ॥ आत्म घरे आया वही रे, साचा देखाया हाथ रे ॥ दं० ॥२०॥ कूरगडादिक रुषिने ग्रही रे, मोह पुरें लेइ जाय रे ॥दं० ॥ राजासुं मुजरो कस्यो रे,खाट करीने आय रे ॥ दं० ॥ २१ ॥ दुर्गति कारागारमें रे, लेई घाल्या तेह रे ॥ दं० ॥ वैरीने वश ते थया रे, पामे दुःख अछेद रे ॥दं०॥२२॥ वली राजा पूछे कह्यो रे, दंनतणी कोइ वात रे ॥दं०॥ दर्शन दीठे तेहने रे, मुजने हुवे सुखशात रे ॥दं०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण अवसर दंन आवियो, अणचिंत्यो तिण वाम ॥ राजा जविक नो थयो, दंन देखी अनिराम ॥ १ ॥ करि प्रणाम बेसे जिसें, आलिंगन दे राय ॥ रोम रोम उलस्या घणुं, आनंद अंग न माय ॥ २ ॥ कुशल क्षेम पूछे प्रथम, जलें आयो वड वीर ॥ बोल्यो सामी पसायतें, तरि आयो रिपु नीर ॥ ३ ॥ सुण साहिब सघलो कहुं, वाततणो विस्तार ॥ राय विवेकनो जावदो, दीठो अधिक अपार ॥ ४ ॥ कोटवाल करडो तिहां, नगरतणो रखवाल ॥ धर्मरीत राखे खरी, ज्युं पाणी ने पाल ॥ ५ ॥ नगरमांहि पेसण न दे,तव कीधी में युद्ध॥ साहिब काम सुधारवा, में वंच्या बहु सुद्ध ॥६॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वहालेसर मुज विनति॥गोडीचा राय ॥ ए देशी ॥ पुण्यरंग पाटण पेसवा ॥रंगीला॥ में कीधा जाति नेद रे ॥ रंगीला राय ॥ कपट क्रिया करणी करी ॥ रं० ॥ अवसर एवो देख रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १ ॥ नूर नविक आवी मल्या ॥ रं० ॥ पण न जणाव्यो नेद रे ॥ रं० ॥ वचन जिके हूं उच्चरुं ॥ रं० ॥ तहत्ति करे धुवेद रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ २ ॥ नोजन सरसां में लह्यां ॥ रं० ॥ ते जति नेख प्रसाद रे ॥ रं० ॥ सुरमुख पण आदरी ॥ रं० ॥ कीधा बहु ला वाद रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ३ ॥ कीरति कारण आचखां ॥ रं० ॥ आवश्य

क उच्चार रे ॥ रं० ॥ पण अंतर नेद्यो नहीं ॥ रं० ॥ आतम प्रत्यें प्रतिका
र रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ४ ॥ दीधी वहुली देशना ॥ रं० ॥ पररंजनने काज रे
॥ रं० ॥ मिथ्यानाव मूक्यो नहिं ॥ रं० ॥ महेर करी मोहराज रे ॥ रं० ॥
पु० ॥ ५ ॥ श्रावकनो नेख आदर्यो ॥ रं० ॥ उच्चरतो नवकार रे ॥ रं० ॥
निशि कुवि शाला सूइने ॥रं०॥ उपधि लई कीध विहार रे ॥ रं०॥पु०॥६॥
परनातें पूजा रची ॥ रं० ॥ मुखो मुखवर्युं लाय रे॥रं०॥ धातु रत्न प्रतिमा
ग्रही ॥ रं० ॥ नाठो स्वामी पसाय रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ७ ॥ याचना मिष
करी पेखियो ॥ रं० ॥ घर घर दीठ आचार रे ॥ रं० ॥ कूड कपट वहु के
लव्यां ॥ रं० ॥ साहिव सान्निध्यकार रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ८ ॥ नर नारी वहु
ठेतर्यां ॥ रं० ॥ नव नवा कीधा नेख रे ॥ रं० ॥ हवे पुर वर्णन सांजलो
॥ रं० ॥ दीठो नेद विशेष रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ए ॥ नगरीने चिहुं दिशि अछे
॥ रं० ॥ नीयतिको प्राकार रे ॥ रं० ॥ खातिका धर्मनी वासना ॥ रं० ॥
प्रासाद परिणाम सार रे ॥ रं० ॥ पु० ॥१०॥ लेश्या धवली ठोहयुं ॥रं०॥
उज्ज्वल कीधी तेह रे ॥ रं० ॥ उंची नूमि निवास छे ॥ रं० ॥ साधु जन
धर्म नेह रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ ११ ॥ चार नेद धर्म ध्यानना ॥ रं० ॥ तेहज
पोलो चार रे ॥ रं० ॥ अनुप्रेक्षा चारे अछे ॥ रं० ॥ दृढ किमाड उदार
रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १२ ॥ इन्द्र प्रशंसे जेहने ॥ रं० ॥ श्रीसंघ महाजन तेथ
रे ॥ रं० ॥ योगासन वाजार छे ॥ रं० ॥ पुण्य करियाणुं जेथ रे ॥ रं० ॥
पु० ॥ १३ ॥ समता शेरी मोकली ॥ रं० ॥ वाधा न लहे कोय रे ॥ रं० ॥
ब्रह्मपुरी सोहे नली ॥ रं० ॥ सुखियां सघलां लोय रे ॥ रं० ॥ पु० ॥१४॥
ज्ञान सरोवर शोनतूं ॥ रं० ॥ गुप्ति नली छे पाल रे ॥ रं० ॥ हंस घणा
क्रीडा करे ॥ रं० ॥ शान्ति सरस रस शाल रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १५ ॥ जीव
दया देवी नली ॥ रं० ॥ नगरतणी रखवाल रे ॥ रं० ॥ सखरी चरचा कू
पिका ॥ रं० ॥ घर घर नयन निहार रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १६ ॥ आत्मनाव
ना नावतां ॥ रं० ॥ पट् ऋतुहीका चात रे ॥ रं० ॥ केहा गुण तसु दा
खवुं ॥ रं० ॥ दीठां आवे धात रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १७ ॥ ते आगल पुर ता
हरुं ॥ रं० ॥ दीन हीन दुःख जाल रे ॥रं०॥ कांइ शोना धरे नहिं ॥रं०॥
रतन आगल देखाल रे ॥ रं० ॥ पु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दंन कहे सुणजो वली, नगरी लोक विचार ॥ अंतर ए में देखियुं, सरशव मेरु प्रकार ॥ १ ॥ थीणद्धी निद्रा घणी,तुऊ लोकामें दीठ ॥ जाग रुक ते लोक ने, चेतन चातुर मीठ ॥ २ ॥ अल्प हेत जारत करे, प्रायें नाहरां लोक ॥ वेद नाम ते नवि लिये, तिलजर नांही शोक ॥ ३ ॥ बंधन बहुलां इहां लहे, ताडन तर्जन जोर ॥ तिहां कोई जाणे नहीं, बंध कि स्या परियोर ॥ ४ ॥ दीन हीनता ए लहे, क्षण क्षण वारोवार ॥ नव नव मंगल ते लहे, सार समाधि विचार ॥ ५ ॥ इहां राजा दंमे घणुं, लोक न आवे त्राण ॥ राज प्रजा ते एक छे, हितवत्सल ते खाण ॥ ६ ॥ अहे लोक अति क्लेशसूं, धन पामे ने कोय ॥ सहजें धन पामे घणा, ए अच रिज तिहां जोय ॥ ७ ॥ इहां धन धरती गाडियें, अधोगमनने हेत ॥ ति हां देवल दानें करी, वावीजें शुन खेत ॥ ८ ॥ लाजतणो सांसो इहां, उ द्यम अधिको घोर ॥ निश्चें लाज तिहां सही, अल्प उद्यमें जोर ॥ ९ ॥ इहां वमणे लाजें करी, दर्पे धरे सहु कोय ॥ लाज अनंतें पण तिहां, था न धरे नहिं जोय ॥१०॥ हीन वस्तुमां पण सही, लाज अनंतो थाय ॥ उड्द दान दीनां थकां, कंचन कोडी थाय ॥ ११ ॥ नरपति सुरपति ता हरा, सेवक सघला जेह ॥ ते तसु नगरी दास सम, एवडो अंतर एह ॥ १२॥ इहां लोकांने शुन अछे, ते पण वैरी थाय ॥ लोक विदेशी फिरी ति हां, हितवत्सल जघुनाय ॥१३॥ एहवां लोक हूं निरखतो, इक दिन सना मजार ॥ राजऋद्धि देखण नली, उनो जाय तिवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ राजा जो मिले ॥ ए देशी ॥ साधुनी परखदा ज्योति स्वरूप, तिहां नृप वीर विवेक अनूप ॥ राजा सांजलो, मेरी अरजयकी रिपुने कलो ॥ सत्त्व सिंहासन मांमयुं सार, गुरु आदेश ने छत्राकार ॥ रा० ॥१॥ ए आंक णी ॥ श्री ह्रीं वेल पासें नार आचार,राजाने चामर ढालणहार ॥ रा० ॥ कर्म विवर कलो ने खवास, निण महाजन आणीजें पास ॥ रा० ॥ २ ॥ ब्रह्मनाद जे जाणणहार, गायन गीत करे विस्तार ॥ रा० ॥ शुन लेश्या ने नटवी नारी, थेइ थेइ नाटक नाचे उदार ॥ रा० ॥ ३ ॥ स्याद्वाद मुख तीरो नाम, मीठो ब्रह्मनयौ आगमान ॥ रा० ॥ विगत तृष्या ते सघला

जोय, नीकी नटवी नाचती जोय ॥ रा० ॥ ४ ॥ निश्चें व्यवहार लोचन दोय, तिण करी जोतां आनंद होय ॥ रा० ॥ एह रसायण इणहीज गाम, नहिं को दीसे बीजे गाम ॥ रा० ॥ ५ ॥ सुणवा इछा सुणियें जेह, ग्रहण धारण उह कहीयें तेह ॥ रा० ॥ इणिपरें आठे ही गुणसार, पहिर्या मोतिना तिणे हार ॥ रा० ॥ ६ ॥ आ गाथा माहेला आठगुणनां नाम कहे छे १ गर्व न होय, २ निंदा न होय, ३ कटुकजापी न होय, ४ अप्रिय न होय, ५ बोलवामां क्रोध न होय, ६ काव्य शरीर लक्षण चेष्टाविषये मोनी होय, ७ पूर्व अवगुण न कहे, ८ स्वात्मा न प्रशंसे ॥ इति ॥ ढाल पूर्वली ॥ सूरितणा गुण छत्रीश होय, आयुध धारे सबला जोय ॥ रा० ॥ सुविचार बालपणानो मित्र, तिणसुं पहिलो राखे चित्त ॥ रा० ॥ ७ ॥ आगाथामां कहेली सूरिना छत्रीश गुणनां नाम कहे छे १ स्वरूपाधिक, २ तेजस्वी, ३ जुगप्रधान, ४ आगम जाण, ५ मधुरवाक्य, ६ गंजीर, ७ बुद्धिवंत, ८ उपदेश देवाने तत्पर, ९ परगुणजापी, १० अवगुण न कहे, ११ सौम्य, १२ शिष्यसंग्रह, १३ अवग्रहवंत विकथात्यागी, १४ चंचलता, रहित उपशांत हृदय, १५ क्षमा सहित, अहंकार रहित, १६ कपट रहित, १७ निर्लोजी, १८ तपस्या करे, १९ संयम पाले, २० सत्य बोले, २१ अदत्तत्यागी, २२ शुद्ध परिणामी, २३ परिग्रह रहित, २४ ब्रह्मचर्य पाले, अने बार जावना जावे, ए छत्रीश गुण पूर्व ढाल ॥ तत्वरूची पटराणी सार, मानुं लक्ष्मीनो अवतार ॥ रा० ॥ जव वैराग्य वडो छे पूत,न्यायें राजनो राखे सूत ॥ रा० ॥ ८ ॥ संवेग निर्वेद पुत्र सुजाण, तेज प्रताप घणो ज्युं जाण ॥ रा० ॥ डुश्मन दूर करे पायमाल, जोरावर जोधा वड जाल ॥ रा० ॥ ॥ ९ ॥ पुत्री चारे चतुरां दीठ, करुणा मैत्री मुदता मीठ ॥ रा० ॥ चोथी उपेक्षा नामा सार,सूरि गुणें करी छे सिरदार ॥ रा० ॥ १० ॥ समकित मंत्री छे जसु पास, राजानो पूरण विश्वास ॥ रा० ॥ आर्जव मार्दव ने संतोष, शम रस सामंत नहिं को दोष ॥ रा० ॥ ११ ॥ सात तत्त्व ते साते अंग, राज्यतणा राजे अति चंग ॥ रा० ॥ दानादिक चारे धर्म जेद, चतुरंगसेना नहिं को खेद ॥ रा० ॥ १२ ॥ विमल बोध कोटवाल प्रधान, परमागम जंमार निधान ॥ रा० ॥ क्षायोपशम समकित जाव विलास, दाणी दाण लिये उल्लास

॥ रा० ॥ १३ ॥ न्याय संवाद नामा ते शेठ, सघला लोक ते जेहने हेठ ॥ रा० ॥ पांचे व्यवहार चोधरी पांच, ऊगडामांहे न करे खांच ॥ रा० ॥ १४ ॥ सामायिक आवश्यक सार, पुरोहित पदवीनो अधि कार ॥ रा० ॥ प्रायश्चित्त ते नीरनी धार, निर्मल करवानो आचार ॥ रा० ॥ १५ ॥ सुख समाय ते शय्यापाल, तंबोली धर्मराग विशाल ॥ रा० ॥ शुद्धाशुद्धप्रणाम पमूर, कोडि ज्ञानें सेवक शूर ॥ रा० ॥ १६ ॥ ए सघला निज सामी आण, नवि लंघे कांइ मुखनी वाण ॥ रा० ॥ धर्म मंदिर कहे अने वली दंत, आगल वात कहे छे अचंत ॥ रा० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण अवसर तिण परलदा, मांहें कीध पुकार ॥ मोह निच्च सेवक करी, पाँगी देश मकार ॥१॥ पुरजन जाली लेई गया, आपणी लांबी का र ॥ सांभली नृप विवेक तव, कीधो कोप अपार ॥ २ ॥ मुख बोले वली एहवुं, मेलो मोह नरेश ॥ तीन भुवन राजा थयो, न थइ तृप्ति अशेष ॥ ३ ॥ में प्रभुता निज गुण लही, देखी शके नहिं एह ॥ लोजी लोज वशें करी, लेहशे लंगर तेह ॥ ४ ॥ राज तेज तेहज खरो, ज्यां रहि रिपु उपचा र ॥ दिनकर कर दीठां थकां, केम रहे अंधकार ॥ ५ ॥ इण वैरी कनां थकां, प्रभुता न लगे मीठ ॥ माटी कुंज मुखें रह्यो, मोघर चालो न दीठ ॥ ६ ॥ इम आलोची मंत्रीने, बोलावो भूपाल ॥ मतिनिधान तुं मंत्रवी, प्र भुना वन रखवाल ॥ ७ ॥ बल बल कांइ केलवी, जिपीजें रिपु एह ॥ रा ज काज थिरता रहे, बुद्धि बनावो तेह ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ मोरा साहिब हो, श्री शीतलनाथ के ॥ ए देशी ॥ मंत्रीसर हो मनो टो मतिवंत के, कर जोडीने वीनवे ॥ सुण साहिब हो मुज गुरु ते जाणके, आगम नीगम अनुभवे ॥ १ ॥ ते गुरुने हो में राख्यो पुत्र के, गज्य यथे के पुं रहे ॥ अब बोलो हो तमचो रिपु मोह के, जोरावर अति गहगहे

आ चौदमी गाथामां मंत्रीना पांच व्यवहारनां नाम कहे छे. १ [illegible], २ मार्दव शु द्ध. ३ दोष [illegible]. ४ द्रव्य निरीह. ५ [illegible]. अथवा [illegible] पांच व्य वहार [illegible] छे ॥ [illegible] मदार [illegible], [illegible] ॥ [illegible] [illegible] अर्थ:-१ [illegible], २ [illegible], ३ निर्वासित, ४ पूरोहन, ५ [illegible].

॥ २ ॥ गुरुरुवाच ॥ मोह जीत्या हो तुमची वृद्धि होय के, ते तो इण परि जीपियें ॥ पुरवचनें हो जगमांहि विख्यात के, सर्वज्ञ राजा दीपियें ॥ ३ ॥ तसु राणी हो केवलसिरी जाण के, निर्मलरूप निधान छे ॥ तसु लीणो हो रहे निशिदिन राय के, दिन दिन चढतो वान छे ॥ ४ ॥ तसु संवर हो महोटो उमराव के, सामंतमां सिरदार छे ॥ तसु घरणी हो मुमुक्षा नाम के, जोगीसर हैये हार छे ॥ ५ ॥ तसु पुत्री हो संयमसिरी नाम के, सकल जीवां हितकारिणी ॥ तसु कन्या हो परणो विवेक के, तेह होशे जयकारिणी ॥६॥ कन्यानी हो सखियां सुखकार के, पांच अने त्रण आखीयें ॥ एकेकी हो जीपे छे मोह के, एह वचन गुरु चाखियें ॥ ७ ॥ इरजामुख हो धर्म रुचि अणगार के, करकंडू नापा आदरी ॥ वेयर सामी हो कीधी आहार शुद्धि के, देवनी भिक्षा नही नली ॥८॥ पडिलेहण हो वल्कलचीरी कीध के, समिति चोथी तिणे अनुसरी ॥ ऋषि ढंढण हो परठवतां सार के, पांचमी समिति विधें करी ॥ ९ ॥ प्रसन्नचन्द्रें हो करी मननी गुप्ति के, धोयां डुष्कृत ध्यानशुं ॥ मेतारज हो धरि नापा गुप्ति के,क्रौंच उपर दयावानशुं ॥ १० ॥ तनु निश्चल हो अनुजव तिणे पाय के, चिलातीपुत्र ते परगडो ॥ इणे राखी हो तनुनी शुद्धि गुप्ति के, परमातम ध्यानी वडो ॥ ११ ॥ ए आठे हो सखियां अभिराम के, संयमश्री साथें रसी ॥ ए परण्यां हो पीछें विवेक के, मोह नणी करशे वसी ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय विवेक ए सांजली, मनमां करे विचार ॥ एक म्यानमां क्युं रहे, बे सारी तरवार ॥ १ ॥ सुतवंती शीलधारिणी, घरमां बेठी नार ॥ ते ऊपर क्युं आणियें, साल समान विचार ॥ २ ॥ गाडागारीनी परें, कलहो करशे दोय ॥ घरट समोवड दो घरणी, प्रीत करण सम जोय ॥ ३ ॥ बीजी परणे सुख नणी, मूढ जिको नर होय ॥ इक दिशि कूयो सुर पवन,बीजी पडतो जोय ॥ ४ ॥ इम चिंतातुर देखीनें, आइ तत्त्वरुचि नार ॥ मुख हसिनें एम उच्चरे, सुण साहिब नरतार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ बे कर जोडी वीनवुं जी ॥ ए देशी ॥ कर जोडी कामिनी कहे जी, तुं नर नाथ कहाय ॥ चिंता बहु नारी तणी जी, नवला नम्ने थाय ॥ रा

जेसर प्रमदा परणो तेह ॥ जिण परण्या प्रौढी हुवे जी, आतम ऋद्धि अने ह ॥ रा० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कुलवंती कामणी तीका जी, बहु मिलिया जस लेह ॥ अवधि आया नां तजे जी,फटक न दाखे छेह ॥ रा० ॥ २ ॥ जगति जुगति मूके नहिं जी, जलांनी जली नार ॥ सागर नदियां सो फिरे जी, गंगा महिमा अपार ॥ रा० ॥ ३ ॥ पुरुष रीति बीजी अने जी, नारी रीत न कांय ॥ वेली वृक्ष समान छे जी, पण क्युं सरिखा थाय ॥रा० ॥ ४ ॥ वृक्षें हस्ती बांधीयें जी, वेली न धरे जाण ॥ इणि परें पुरुष प्रधान छे जी, न करो कांही काण ॥ रा० ॥५ ॥ बहु नारी परण्यायकां जी, पुरुष जणी नहिं दोष ॥ संयमश्री आयांयकां जी, हुं न धरुं मन दोष ॥रा०॥६॥ निकला विकल धणी हुवे जी,नारी न तज्यो जाय ॥ डुःख सुख सरसुं भावजी जी, सारस सम नवि थाय ॥ रा० ॥ ७ ॥ जिण आयां निज जप हुवे जी, हुं सेवुं तसु पाय ॥ एह वचन सुणि नारीनुं जी, हरखी थोस्यो राय ॥ रा० ॥ ए ॥ शोक्यें एहवुं सहु पजें जी, तो डुःख जपत अपार ॥ विलंब न कीजें तो हुवे जी, सुण मंत्री शिरदार ॥ रा० ॥ ॥ ए ॥ अनि उज्ज्वल परिणाम छे जी, तेहिज सेवक थाय ॥ परथानें ए मूकियो जी, उजगओ जिण राय ॥ रा० ॥ १० ॥ महिर जली मो अरे जी, राखे श्रीजिनराज ॥ कन्या तेह देवायशे जी, बांह ग्रह्यानी लाज ॥ रा० ॥ ११ ॥ मंत्री सज्ज करी नरा जी, मूक्या जिनवर पास ॥ ए विरतंत सहु लही जी, लई आयो चारुलास ॥ रा० ॥ १२ ॥ मत विश्वास करो हवे जी, वेरी वाध्यो वान ॥ आज राज्य अनुली बली जी, कोइ प्रगट्यो निधान ॥ रा० ॥१३॥ तसु पुर नर नारी धरे जी, तुमशुं जाति वेर॥ ॥ मंत्री जापनो उपरा जी, साधे सगलो नयर ॥ रा० ॥ १४ ॥ वस्त्र तजे तप आदरे जी, जिम्वन पवन ध्यान लीन ॥ कामण ट्रुमण आचरे जी, तुजने करवा हीन ॥ रा० ॥ १५ ॥ तुज नगरी लोकां जणी जी, लोलावे मुख मीठ ॥ आप सरिखा आचरे जी, एवुं अचरिज दीठ ॥ रा० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोह महीपति एहवो, दंत मुखें सुणि वाद ॥ फालभ्रष्ट वानर जिम्यो, पामे चित विषाद ॥ १ ॥ वेरी वधतो देखीने, मनमां करे विचार ॥ तिण अवसर हवे मोहनृप, अरज करे अवधार ॥ २ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ देशी कडखानी ॥ तार किरतार,संसार, सागरथकी॥ ए देशी ॥ वात हवे तातजी, सांजलो मयणनी, एवडी चिंत मन, कांइ आणो ॥ मुज स रिखा सुत, सेवक ताहरे,कुण अने तुज सम,राय राणो ॥वा०॥ १ ॥ बंध नरवृंद, करशुं घणा देख तुं, इन्द्र ने चन्द्र सव, पाय आणुं ॥ सकज सुत घर वते, जनक चिन्ता करे, मूढता केहनी, चित्त जाणुं ॥वा० ॥२ ॥ पुत्र हुं आपनो, तो नवि वीहीजीयें, रवि तणो पुत्र, शनि लोक आखे ॥ वीप सुत मोतीडां, मातनो घात करी, सकल सुत एहने, कोण दाखे॥वा० ॥ ३ ॥ तातने शात सुख, संपजे जिणथकी, कमलथी जेम सर, सोह पा वे ॥ पुत्रना पदकज, पालणे प्रीछियें, लोक वैरी तिके,जासु गावे ॥वा० ॥ ४ ॥ नाम अनिराम, अंगज किस्युं कीजियें, अंगनो मेल, अंगज कहीजें॥ तेह नाखी दिये, वनतणां फूलने, वास गुणराशि,शिर पर वहीजें ॥ वा० ॥ ५ ॥ धीरता वीरता, मन धरी जे रहे, सांकडे आणीने, शत्रु पाडे ॥ जगतिमें नीर, पावक जणी उंटवे,तेहने वाडवा, ग्री नसाडे ॥ वा० ॥ ६ ॥ एहवां आकरां, वचन सुणि पुत्रनां, मोहने मन हुउं, सुख सवायो ॥ सा धु सावाश, सावाश तुं सुत जणी, आज तें पुरुषता, वल जणायो ॥ वा० ॥ ७ ॥ एहवे तेजें करी, वंश दीपाइयो, सन्य संदोह, अंदोह टाल्यो ॥ राज्यनो जार, सुविचार सुत कंध हवे,शत्रु जल गाहवा,पोत जाल्यो ॥वा० ॥ ८ ॥ काष्ठथी घणुं हुउं, धूंम पावकथकी, तनुथकी व्याधि, बुध चन्द्र देखो ॥ वृक्षथी लाख छे, नीरथी पंक छे, एहवा पुत्र,कुपुत्र लेखो ॥वा०॥ ए ॥ धूमथी मेह छे, विंब पाषाणथी, पंकथी कमल मणि, सर्प माथे ॥ कलश माटीथकी,एहवा पुत्र हुवे, वंश विजूषणा, शोज साथें ॥वा०॥१०॥ ताहरी श्रंग, कलावणी एहवी, शत्रु दल धान, ने घरट जारी ॥ लोक आ नंद करी, तो जणी वर्णवे, जूठ ते दीठ निज, दृग पसारी॥ वा० ॥ ११ ॥ हस्ति ज्युं मस्त वली, ताहरे मित्र छे, जगतने जीपतो, मधु कहीजें ॥ फू टरां फूल जे, बाण छे ताहरे, रिपु जणी जीपतां, साथ लीजें॥वा०॥ १२॥ मनतणा अतिघणा, घोर परिणाम छे, तेहज ताहरा, दास ताजा ॥ सार शृंगार तें, सैन्य साथें जिया, मेघ घनघोर धुनि,तेहज वाजां ॥वा० ॥१३॥ माहरो मंत्री, मिथ्यात्व नामा जलो, तेह पण ताहरे,ताथ सारु ॥ रंजती

प्रीति वली, रति नली नारजा,शुद्धनी सिद्ध,अत्र जात वारु ॥वा०॥ १४ ॥ नारिनी गोठ, ते जोगणी ताहरे, मंत्रनी तंत्रनी,घात जाणे ॥ कुपथ कथा ग्रहे, लोकने जोलवे, रिपुतणा सैन्यनी, वात आणे ॥वा०॥१५॥ गीतनी रीति ने, नाटक नाचतां,हाव ने नाव, प्रमदा विलासा ॥ चारु मणिहार, हथियार साथें धरे, मुखतणा मागिया, होय पासा ॥ वा० ॥१६॥ हास्य ने जूवटो, बे जणा ताहरा, अंगना चंग, रखवाल राखे ॥ रामत अति घणी,नेह दासी नली, काम ने काज, सव तासु आखे ॥वा०॥१७ ॥ सुख अनिमान, सन्नाह तुं पहेरजे, नेत्रने पान, रूपाटोप धरजे ॥ विषय इंडियतणा, चंचल रूप घणा, मत्त उन्माद, मातंग वरजे ॥ वा० ॥ १८ ॥ रथ घणा सावता,जेह मनोरथा, पायक लायक, प्रेम पूरा ॥ नायका साथका, वरसती फोजमां, शोजशे जीपशे, शत्रु शूरा ॥ वा० ॥ १९॥

॥ दोहा ॥

॥ मोहराय इणपरें कह्यो, मदनतणो परिवार ॥ राय विवेकने जीपवा, सीख दिये सुविचार ॥ १ ॥ पुत्र सुपूत तुं माहरे, राजनीतिनो जाण ॥ मति वेशामे केहने, ए माहारी ने वाण ॥ २ ॥ थोडुं बोले बहु करे, अति उत्सुक मन होय ॥ धीर वीर होवे खरो, ठल बल करजे जोय ॥ ३ ॥ जोगी जंगम जटिलने, नर नारी तिर्यंच ॥ तरुण वृद्धने पीडवे, कां न करे खल खंच ॥ ४ ॥ क्षत्री क्षमा न आदरे, याचक लाज न कांइ ॥ वेश्या प्रेम धरे नहिं, काम अर्थे किम थाय ॥ ५ ॥ अवसर विण गुण दोष ने, दोष हुवे गुणपोष ॥ स्नान समे वस्त्र मूकियें, वांको डुम लहे तोष ॥ ६ ॥ जग सघलो जुगतें करी, साधे सघलां गाम ॥ प्रवचनपुर मत पेसजे, अरिहंत राजा गाम ॥७॥ शूरवीर तेहज खरो, जोवे गाम विशेष ॥ पाछे मघण ल चींतने, गिरि पाछे नहिं देख ॥ ८ ॥ एक गाम जीतो नहिं, कां नहिं पशनी हाण ॥ वन घन गाया नहिं नमे, इक तरु छेदे जाण ॥ ९ ॥ पिता सीख इणि परें कही,शिर धर धारी मयण ॥ चारवाक पंडित जणी,योजावी वदे वयण ॥ १० ॥ कुंवर जली वढवानणो, मुहूरत जोवो सार ॥ चार्वाक हवे बोलियो, सुण साहिब सुविचार ॥ ११ ॥ नांग क्षीर निण क्षीर करि, शुद्ध नारी विकार ॥ वृष्टि वोलजनें अपशकुन, एना गमन निवार ॥१२॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ चतुर सनेही मोहनां ॥ ए देशी ॥ मोह महीपति सांभलो, बीज
भली तिथि जोय रे ॥ चन्द्र उदय हूआं थका, गोधूलिक शुभ होय रे ॥
मो० ॥ १ ॥ माततणे पाये नमी, तिलक करायो हरखी रे ॥ लीधी मा
ता बहेननी, आशिष अधिकी निरखी रे ॥ मो० ॥ २ ॥ आदेश ताततणो
ग्रह्यो, नाइयुं वाडु भलिया रे ॥ प्रेमें मित्र कलत्रयुं,लोचन हुवे गलगलियां
रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ पापश्रुत भट ए भलां, बिरुद भणीजें सारो रे ॥ कुमित्र
प्रसंग मातंग छे, तसु पर बेसी कुमारो रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ चतुरंगी सेना ग्रही,
वड वडा योद्धा सायें रे ॥ शूरा पूरा शोभता, जयलक्ष्मी धरे हाथे रे ॥
मो० ॥ ५ ॥ काम तणी कटकी चढी, तिहां नारीसुख शूरा रे ॥ हास्य
विलास हेतें करी, अधिका सोहे सनूरा रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ बाण ते कामक
टाक्ष छे, झूहांको धन लीधो रे ॥ ढाल ते घुंघट पट धरी, बाण चलावे
सीधो रे ॥ मो० ॥ ७ ॥ रोदन मोदन मदनना, नव नव रंग तरंगो रे ॥
मोहे सुर नर मोहिया, चूक्या इणने संगो रे ॥ मो० ॥ ८ ॥ पशु पंखी प
ण जीवियां, एकेन्द्रिय पण जीत्या रे ॥ किंकर काम तणा घणां, पसर्या
सबल अनीता रे ॥ मो० ॥ ९ ॥ इन्द्राणी रूपें करी, इन्द्रने जीत्यो का
मो रे ॥ स्त्रीरयणें जीपवा, चक्रवर्ती अभिरामो रे ॥ मो० ॥ १० ॥ अ
नमी आण धरे नहिं, वांकी टेढी पागें रे ॥ जोधा राव घणा अछे, पण
किंकर स्त्रीआगें रे ॥ मो० ॥ ११ ॥ त्रिवली त्रिपथ कहीजियें, नारी उ
दरें होवे रे ॥ काम पिशाच तिहां छे, मूढा नर जे जोवे रे ॥मो०॥१२॥
पाथोटे पंडितभणी, शुचिने रुचिकर हसतो रे ॥ अरथ करे धीरज भणी,
जिहां तिहां ए धसमसतो रे ॥ मो० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कामतणी फोजां फरी, चिहुं दिशि सारे जग ॥ कोई शर सांधे
नही, योषित जोधें भग ॥ १ ॥ ब्रह्मापुर कानें सुण्यो, राय प्रजापति हो
य ॥ ब्रह्म तेज सब जगतनो, जनक कहीजें सोय ॥ २ ॥ एहनो थें टालो
करो, आखे आगें बाण ॥ कोइ कालनो मोकरो, ठोडो ब्रह्मा जाण ॥३॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ राग धमाल ॥ अथवा ॥ पर घर गमन निवारियें ॥ ए देशी ॥इलि

परें बहुपरें वारियो, पण न टव्यो काम कुमार हो ॥ ब्रह्मापुर जाइ ढूकियो, निज तेग जगावणहार हो ॥ इ० ॥१॥ फोज विदा करी नारिनी, चिहुं दिशि पासें लीधो घेर हो ॥ ब्रह्मा पण ध्यान कोटमां, लीणो छे न हुवे जेर हो ॥ इ० ॥ २ ॥ रागदूत विचमें फिरे, आखे मत करजो खेड हो ॥ कोट उंट लीधी अछे, पण मयण न छोडे केड हो ॥ इ० ॥ ३ ॥ तीन जगत ए साधतो, आव्यो छे तुमपें धाय हो ॥ तनक तनक तुज कोटने, करशे तुज आण मनाय हो ॥ इ० ॥ ४ ॥ सावंत्री जोध मूकियो, इणसेंती राखो रंग हो ॥ ब्रह्मा पण मन चिन्तव्युं, इण साथें न हुवे जंग हो ॥ इ० ॥ ५ ॥ सावंत्रीसेंती मिल्या, उचीने अंगो अंग हो ॥ चतुर हतो पण चूकियो, जेर दीधो जोर अनंग हो ॥ इ० ॥ ६ ॥ ब्राह्मण सवला बांधिया, वनिता जोध पलमांही हो ॥ अनमी कोइ न पेखियो, धर्म धीरज किणमां नांहिं हो ॥ इ० ॥ ७ ॥ ब्रह्मापुर जीपी चल्यो, आगें ते मयणकुमार हो ॥ जमुनाकांठें आवियो, करतो जग चरित्र अपार हो ॥इ०॥८॥ श्याम वर्ण इक सांभलो, पुरुषोत्तम नाम धराय हो ॥ वैकुंठनाथ वखाणियें, अवतार लिया मन दाय हो ॥ इ० ॥९॥ मत्स्य कूर्म नरसिंहना, वामन बलिराजा बंध हो ॥ नागेव पण एहिज थयो, नवि राख्यो क्षत्रीगंध हो ॥ इ० ॥ १० ॥ दशरथ सुत पण ए हुवो, रावणने माखो एण हो ॥ जादव कुलमें अवतखो, विरची माया हरखेण हो ॥ इ० ॥ ११ ॥ कंस हण्यो नाग नाथियो, नवला जसु अवदात हो ॥ दानव मानव जीपिया, कुण आखी शके तसु वात हो ॥ इ० ॥ १२ ॥ सागर मथियो भुजबलें, गिरिवर उपाड्यो जोर हो ॥ पंचजन्य परगट कियो, जस शब्द अछे अति घोर हो ॥ इ० ॥ १३ ॥ चक्र गदा शारंग धरे, इन्द्रसेंती जसु प्रीत हो ॥ आज न को एहवो अछे, इणशुं मांमे अनीत हो ॥ इ० ॥ १४ ॥ ज्ञानी मानी पण सही, मधुसूदन ए गोपाल हो ॥ मयण वयण इम सांभली, अति कोप्यो क्रूर कराल हो ॥ इ० ॥ १५ ॥ गोपी जोधा मूकिया, जीपवाने किसन मुरार हो ॥ नयण बाण तीखे करी, भेद्यो लक्ष्मी भरतार हो ॥ इ० ॥ १६ ॥ हास्य राशि रति केलिशुं, वश कीधो केशवराय हो ॥ बल कोइ न केलव्यो, रंगरातो मातो थाय हो ॥ इ०॥१७॥ वृंदावनमें खेलतो, गोपियोनी पूरे आश हो ॥ कुसमां करी शिर सेहरो,

विरचे ज्युं कोइ दास हो ॥ इ० ॥ १८ ॥ थाकी गोपीने धरे, निज हाथे सारिका जेम हो ॥ वस्त्र उपाड्यां तेहनां, प्रगटे तिणशुं बहु प्रेम हो ॥ इ० ॥ १९ ॥ वृक्ष उपर चढीने रहे, गोपियोनां अंबर लेह हो ॥ नव नवि काम विडंबना, करतां नहिं आवे छेह हो ॥ इ० ॥ २० ॥ जोरावर हूतो घणुं, पण हाखो एकण सार हो ॥ धर्ममंदिर कहे धन तिके, जे जीपे काम विकार हो ॥ इ० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जयंतहशा दूर करी,चाल्यो तिहांथी मयण ॥ कोइ अनमी छे वली, इन बोले मुख वयण ॥१॥ किणहिकें आवीने कह्युं, सुण स्वामी मुज वात ॥ अचल एक कैलास छे, तिणपर शंभु कहात ॥ २ ॥ लोक कहे छे तेहने, महोटो श्रीमाहादेव ॥ जटामांहि गंगा वहे, चंद रहे नितमेव ॥ ३ ॥ पास त्रिशूल हथियार धर, वाहन वृषभ विख्यात ॥ जग संहारण जोध छे, अष्टमूर्त्ति कहेवात ॥ ४ ॥ तीन नेत्र छे जेहने, जूषण नस्म जुजंग ॥ जेह कहे में मदननें, जीत्यो कीध अनंग ॥ ५ ॥ एह वचन सुणी कोपियो, मोह कुंवर मठराज ॥ कछयो मानुं केशरी, देवा रिपुशिर फाल ॥ ६ ॥ मंत्री कहे मूको तमें, जटिल योगनो धार ॥ कहो किम काढीजें कहे, तृण उपर तरवार ॥ ७ ॥ काम कहे मूकुं नहिं, मदनशत्रु कहेवाय ॥ सहस्र किरण उग्यांपछी, तिमिर जाव न रहाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ सुमति सदा दिलमां धरो ॥ ए देशी ॥ मदन मोह शर सांधियुं, वेध्यो कीध गिरीश ॥ सलूणो ॥ कुसुम चाप करी चाढियो, शंकर ज्युं करी रीश ॥ स० ॥ म० ॥ १ ॥ धूणीधूप तूं कां सहे, छोड दिगंबर वेश ॥ स० ॥ हरिणाक्षी परणावस्यां, कर सखरो घरवेश ॥ स० ॥ म० ॥ २ ॥ महादेव बोल्या तिसे, तुं मन्मथ विख्यात ॥स०॥ पीत्तें बुद्धि ए दीजियें,पहेली सुण मुज वात ॥ स० ॥म०॥३॥ प्रेत वनें शंभु वसे, जोजन निक्षा हाथ ॥स०॥ जाजन मनुजकपाल छे, तिल रति नहिं का आथ ॥स०॥म॥४॥ एह अवस्था छे सही, कहो किण परघर पाय ॥ स०॥ नारी नदीनुं पूर छे, सागरमांहि समाय ॥स०॥म०॥५ ॥ रुंड मुंड माला गले, आंख विरूप कहाय ॥ स० ॥ मुजथी नासे कामिनी, हंसी धज न सुहाय ॥ स० ॥ म०॥६॥

शाली दाल घृत घोल ते, नारी चाहे नित्त ॥ स० ॥ इहां भिक्षायें जीमवं
देख घणो इहां मित्त ॥ स० ॥ म० ॥ ७ ॥ मंमन चंदन मागशो, वस्त्र
णां पटकूल ॥ स० ॥ चर्म बिछावण ए अछे, नारी नणी प्रतिकूल ॥स०
म० ॥ ८ ॥ हास्य वयण मुख धारती, त्रिवली रंग तरंग ॥ स० ॥ नारं
नहिं ज्युं जाणियें, बूडे जे करे संग ॥ स० ॥ म० ॥ ए ॥ लोचन सहस्
तणो धणी, खबर न लाने कांय ॥ स० ॥ नारी निशा अंधकारमां, अ
रने केम कहाय ॥ स० ॥ म० ॥ १० ॥ मन परिणाम ते वानरी, काम
किरात करूर ॥ स० ॥ अजगर हास्य विलास छे, नारी अटवी नूर ॥स
॥ म० ॥ ११ ॥ नारीथकी हुं बीहतो, पर्वत वेगे आय ॥ स० ॥ तपस
जोगी जाणीने, मूक तुं मननी दाय ॥ स० ॥ म० ॥ १२ ॥ मदन कहे नं
लकंठने, केड न मूकुं कोय ॥ स० ॥ परण तुं पारवती नणी, शीलवंत
ए होय ॥ स० ॥ म० ॥ १३ ॥ मदनवशें माहादेवजी, गोपी परण्या ना
॥ स० ॥ भिक्षा तो नावे नहिं, सांनलजे नरतार ॥ स० ॥ म० ॥ १४
भिक्षा सखरी भिकुने, गेहीने न सुहाय ॥ स० ॥ धान्य घणुं घरमां हुवे
ते कहुं तुज उपाय ॥ स० ॥ म० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गौरी कहे माहादेवजी, जाउ कृष्णनी पास ॥ क्षेत्रनूमि ते आपशे,
बीज धनद परकाश ॥ १ ॥ हल तो हलधर आपशे, यमघर महिष सुचं
ग ॥ वृषन एक तुजने अछे, खेती कर मन रंग ॥ २ ॥ नातुं हुं लावीश
नलुं, इम चलशे घरवास ॥ पण भिक्षा नहिं जीमशुं, इम कीधो उपहा
स ॥ ३ ॥ काम विटंबन बहु करी, नव नव कर्म विकार ॥ कहेतां अंत
न पामियें, इम जाणे किरतार ॥ ४ ॥ पाराशर जमदग्नि वली, चूकाया
इणे काम ॥ तीन भुवन जींत्या इणे, फिरि फिरि सघले गाम ॥ ५ ॥ पुण्य
रंगपाटणनी दिशें, चाल्यो मदन कुमार ॥ तिण वेला ते नगरमां, प्रगट्यो
ए आचार ॥ ६ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ कोयलो पर्वत धूंधलो रे लोल ॥ ए देशी ॥ कर जोडी करे विनति रे
लोल, मंत्री विवेकने एम रे ॥ राजेसर ॥ पुण्यरंगपाटणमां हुवे रे लोल,
उत्पात सघला केम रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १ ॥ गढ मढ मंदिर धूजियां रे

लोल, नूकंप तारापात रे ॥ रा० ॥ शोणित बिन्दु आकाशथी रे लोल, चू
वा न वारु वात रे ॥ रा० ॥ क० ॥ २ ॥ तिण अवसर किण आखीयो रे
लोल, आयो मोह कुमार रे ॥ रा० ॥ राजा प्रजा सहु शंकिया रे लोल,
नूंमा अलुर अपार रे ॥ रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ मंत्रीशुं नृप चिंतवे रे लोल, की
जें इणशुं जुऊ रे ॥ रा० ॥ जीतहगा जो हुजीयें रे लोल, तो कीजें ए गु
ऊ रे ॥ रा० ॥ क० ॥ ४ ॥ मंत्री कहे सुण साहिबा रे लोल, गुरुनुं वच
न ठे श्राम रे ॥ रा० ॥ संयम स्त्री परएया विना रे लोल, कोइ न होवे का
म रे ॥ रा० ॥ क० ॥ ५ ॥ मोहतणो हजी जोर ठे रे लोल, तिण ए मदन
दीपाय रे ॥ रा० ॥ ब्रह्मादिक जित्या इणें रे लोल, कीधा कोडि उपाय रे
॥ रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ अवसरसेंती सिद्ध ठे रे लोल, सघली वातामांही रे
॥ रा० ॥ आतम बल विण फोरव्यां रे लोल, कष्ट किया फल नाहिं रे ॥
रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ आपें पण एहनी परें रे लोल, पाम्या पराजय ठाम रे
॥ रा० ॥ तो हमणां ए श्रेय ठे रे लोल, जाइ प्रवचन गाम रे ॥ रा० ॥
क० ॥ ८ ॥ वरशे संयम कन्यका रे लोल, तो ए ठार समान रे ॥ रा० ॥
अरिहंतशुं साचा हुआं रे लोल, वधशे आतम वान रे ॥ रा० ॥ क० ॥ ए ॥
आपणने कोइ आखशे रे लोल, कायर मूको माण रे ॥ रा० ॥ अवसर
जाणिने आखशे रे लोल, बहुविध लोकनी वाण रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १० ॥
नलराजा पत्नी तजी रे लोल, रूनें मूकी नूमि रे ॥ रा० ॥ आतमहित
इण आचर्यो रे लोल, नाठो अपयश धूम रे ॥ रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ राय
विवेक वदे इस्युं रे लोल, ढील न कीजें आज रे ॥ रा० ॥ नाजन नोज
न सिद्ध ठे रे लोल, केही कीजें लाज रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ तुं पूंठे ते
आवजे रे लोल, सघला लोक लेइ साथ रे ॥ रा० ॥ हुं आगेंथी जाइने
रे लोल, उल्लगशुं जगनाथ रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १३ ॥ इण अवसर नर
आविया रे लोल, पहेला मूक्या जेह रे ॥ रा० ॥ नमन करीने वीनवे रे
लोल, सुण साहिब ससनेह रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ महेर घणी तुम उ
परें रे लोल, ते साहिबनी आज रे ॥ रा० ॥ कुशल प्रश्न बहु पूठिया रे
लोल, हर्ष घणो जिनराज रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ मिलण नणी आवे
सही रे लोल, अम चरणे एक वार रे ॥ रा० ॥ इम कहीने अम मूकीया
रे लोल, वात नली निर्धार रे ॥ रा० ॥ क० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सेवक वाणी सांजली, हरख्यो राय विवेक ॥ मनवंछित मुज होय छे, शकुन हुआं अतिरेक ॥ १ ॥ आउ वचन साहमो हुवे, उत्तम शकुन ते जाण ॥ बोलाव्या पुरुषोत्तमें, केही कीजें काण ॥ २ ॥ विवेकराय हवे चालिने, प्रवचनपुरमें आय ॥ मंत्री पण पूठेंथकी, प्रजा लोक लइ जाय ॥ ३ ॥ सकल लोक राजा मली, अरिहंतनी छत्र छाय ॥ सुख समाधें जई रह्या, मर नय कोय न थाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ इक दिन नमि राजानो हाथी तूठ्यो, अति मदमत्तथको ॥ ए देशी ॥ मयण तणां दल पूरां शूरां, पुण्यरंगपाटण आय रहे ॥ हां आय रहे ॥ शून्युं नगर ते दीठुं सघलुं, मयण जणी ते जाय कहे ॥ हां० ॥ १ ॥ मयण कुंवर मन चिन्तवे एवुं, राय विवेक ते नासी गयो ॥ हां० ॥ नाम सुणीने न रह्यो कलो, जंबुक कायरकाय थयो ॥ हां० ॥ २ ॥ कुलाचार पण न कर्यो कोइ, क्षत्रीतणो धर्म नाख दियो ॥ हां० ॥ मंत्रीतणो सुत आखर एहज, राजा एहने कोण कियो ॥ हां० ॥ ३ ॥ जाति उपर गयो न हुउ असली, भींत विना केम चित्र धरे ॥ हां० ॥ नासण विद्या धुरथी शीखी, ते नहिं विसरी चित्त खरे ॥ हां० ॥ ४ ॥ रणनी होंश रही मनमां हे, इण अवसर शठ ए नाठो ॥ हां० ॥ लोक लाज पण न गणी जोले, काम कियो अतिही माठो ॥ हां० ॥ ५ ॥ जिनवरनो पण जगतो जुगतो, निर्मद निर्मम न्याय वियो ॥ हां० ॥ जे जेहवो नर सेवे तेहवो, फल पण हाथोहाथ दीयो ॥ हां० ॥ ६ ॥ जिनवर संगतियी सिंहादिक, ते पण वैर विरोध तजे ॥ हां० ॥ कां जुरकी ए घाले माये, शीतल सार समाधि जजे ॥ हां० ॥ ७ ॥ अरिहंत चरण शरण इणें लीधो, कालूं हमणां पुछ ग्रही ॥ हां० ॥ उंदर क्युं बिलमांहे तूटे, जो जब जावे साप वही ॥ हां० ॥ ८ ॥ पण मुज ताततणी ए वाचा, प्रवचन पुर मत जाय कदा ॥ हां० ॥ माहरी कीरति सघले हुइ, जयतपताका पाइ मुदा ॥ हां० ॥ ९ ॥ जयततणां निशान घुरायां, हथियार हवे सव म्यान करे ॥ हां० ॥ नवनवां भेटणां लेतो मन्मथ, निजपुर दिशिने पाउ धरे ॥ हां० ॥ १० ॥ नव रसमां इक सार शृंगारा, काम अयाणे मुख कीयो ॥ हां० ॥ शान्त जणी ते ठेहडे थाप्यो,

मन्मथ उलस्यो एम हियो ॥ हां० ॥ ११ ॥ अनुक्रमें आयो अविद्या नगरी, तिहां किणे मेरो आवी दीयो ॥ हां० ॥ मोहरायने दीध वधाइ, सुत आयो यशपुंज लियो ॥ हां० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोहराय मन हरखियो, आयो पुत्र प्रधान ॥ गुरु लघु रीत न का करी, साह्मो जाय सुजाण ॥ १ ॥ मन्मथ तातजणी तिहां, तुरत कीयो परणाम ॥ सुत सखरा ते सलहियें, विनयवंत अभिराम ॥ २ ॥ मन वच काया प्रेम धरी, मलिया मनने रंग ॥ शीतल चंदन चंद ज्युं, सुख दायी सुत संग ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ देशी कातवानी ॥ अथवा ॥ वाग्यां जांगी ढोल, हे सखी वागा जांगी ढोल ॥ ए देशी ॥ वाग्यां गुहिर निशान, हे सखी वाग्यां गुहिर निशान, आयो लायक नंदन मोहरो ॥ हरख्यो सब परिवार ॥ हे सखी० ॥ ह० ॥ निजकुल शेखर दीपे सेहरो ॥ १ ॥ वंचाणा वचननिनाद ॥ हे० ॥ वं० ॥ तिणे करी अंबर अधिको गाजीयो ॥ पुरजन करे उछरंग ॥ हे० ॥ पु० ॥ धन धन मोह महिपति राजियो ॥ २ ॥ नव नव पाप विकार ॥ हे० ॥ न० ॥ नटुआ नाचे राचे जन मना ॥ हाव भाव सुखकार ॥ हे० ॥ हा० ॥ मंगल गावे तिहां बहुला जना ॥ ३ ॥ पूर्ण कलश परधान ॥ हे० ॥ पू० ॥ शृंगार पाणि करीने अति भलो ॥ मलपति सोहव नार ॥ हे० ॥ म० ॥ साह्मी आवी मंगल जय करो ॥ ४ ॥ आश्रव गोख विशाल ॥ हे० ॥ आ० ॥ तसुपर बेठां नर नारी घणां ॥ नृपसुत नयण निहाल ॥ हे० ॥ नृ० ॥ बोले ए सुत ते हने शी मणा ॥ ५ ॥ पुर पेसारो कीध ॥ हे० ॥ पु० ॥ मोहोलें आयो मन्मथ मानशुं ॥ मायादिक परिवार ॥ हे० ॥ मा० ॥ हरख्यो निरखी सुत मुख वानशुं ॥ ६ ॥ युगवर श्रीजिनचंद ॥ हे० ॥ यु० ॥ तास प्रसाद लही करी में कीधो ॥ चोथो खंड रसाल ॥ हे० ॥ चो० ॥ जणतां गणतां दीसे सुख दीधो ॥ ७ ॥ पावक प्रवर प्रसिद्ध ॥ हे० ॥ पा० ॥ दयाकुशल गणी गुरु प्रसादथी ॥ धर्ममंदिर कहे एम ॥ हे० ॥ ध० ॥ अर्थ लह्यो ए में आगमथी ॥ ८ ॥ कर्म विचित्र कहाय ॥ हे० ॥ क० ॥ तेह तणो ए विवरो भाखियो ॥ भविजनने सुखकार ॥ हे० ॥ भ० ॥ जिनवर वचन सुधारस

दाखियो ॥ए॥ इतिश्री प्रबोधचिंतामणो ढालनाषाबंधे मोहचरत्रेपण कंदर्प दर्पदिग्विजयवर्णननामा चतुर्थः खंमः संपूर्णः ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम खंमस्य प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीशंखेश्वर सुखकरु, प्रणमूं पारस नाथ ॥ नाम लियंतां जेहनुं, आवे अविचल आथ ॥ १ ॥ इण अवसर मन्मथतणी, कीरति नाट करेइ ॥ नव नव बंद सबंधथें, वाणी रचना धरेइ ॥ २ ॥ जय जय जगने वल्लहो, जीव जीव चिरंजीव ॥ मोहराय नंदन निपुण, नव सुख माण सदीव ॥ ३ ॥ तुं शूरा शिरसेहरो, तुं वीरें विख्यात ॥ कुसुम शरें जीत्यो जगत, कोण कहीजें वात ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा, इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र ॥ नूर सूर गुरु गरुड पंखि, जोगि जति नरवृन्द ॥५॥ तें जगमें जीत्या घणा, आण मनाई जोर ॥ काम पदारथ शिखव्यो, धर्म अर्थ शिवगोर ॥ ६ ॥ विषयतणां सुख तुं लहे, मात तात सुखकार ॥ इम आशीष सुणी करी, दीधुं दान अपार ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥ मात पिता नगिनी ने ना पूछे मयणने एम जी ॥ जग जीपणनी वात कहीजें, बल बुद्धि कीधी जे जी ॥ मा० ॥ १ ॥ मन्मथ मांमि कहीजे आगें, जीपणनी सहु वात ॥ नागो वीर विवेक विख्यातो, सांनलिया अवदात जी ॥ मा० ॥ २ माता मन हरख्युं अति गाढुं, वखाणे वारंवार जी ॥ तुं चिरंजीवे वंश नूषण, धन धन तुऊ अवतार जी ॥ मा०॥३॥ बेटा बहुला होशे जगम पण तुऊ जोड न कोय जी ॥ तारा बहु आकाशें दीसे, चन्द्र समान होय जी ॥ मा० ॥ ४ ॥ नयन अमारां चपल चकोरा, तुऊ मुख चन समान जी ॥ किण दिन सुत आवीने मलशे, हूतो ए मुऊ ध्यान जी मा० ॥ ५ ॥ आज मनोरथ सघला फूख्या, सुरतरु फलियो आज जी चातक मोर तणीपरें हरख्यो, तुऊ दर्शन घनगाज जी ॥ मा० ॥ ६ रति रंगीली तारी नारी, वसंत तारो मित्त जी ॥ स्नेह धरीने दिन दि जोतां, मारग तारो नित्त जी ॥ मा० ॥ ७॥ रंगरलीशुं सघला मलिया,

उं अति उछरंग जी ॥ नव नव नाटक गीत विनोदा,कर्म उदय परसंग जी ॥ मा० ॥ ८ ॥ घर घर मयणतणा गुण गरजे, कामकथा विस्तार जी ॥ ली नो जग सघलो कामरागें, काम विकार अपार जी ॥ मा० ॥ ९ ॥ उत्सव काम तणा अति कीधा,कहेतां नावे पार जी ॥ नरथी आठ गुणो नारीने, वचन काम कुमार जी ॥ मा० ॥ १० ॥ बहुलां सुख संसारनां विलसे, धरतो मन उछरंग जी ॥ धर्ममंदिर कहे धन धन ते नर, कामनो न करे सं ग जी ॥ मा० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोह महीपति चिन्तवे, इक दिन एम विचार ॥ वीर विवेक नासी ग यो, जीवतो दुःख दातार ॥ १ ॥ मंदमति मुज सुत अछे,बालक बुद्धि वि चार ॥ भावी वात न चिन्तवे, ते छलियो संसार ॥ २ ॥ पंमित परखे प लकमें, बाधक साधक वात ॥ छल बल कल जाणे घणा, वीर विवेक कहा त ॥ ३ ॥ पंमित तेहने वर्णवे, जे परिणामें मीठ ॥ काथ कटुक मुखरोग ने, दूर करंतो दीठ ॥ ४ ॥ कारज तेहिज कीजियें, अंतें सुख दातार ॥ स्वाद मुखें किंपाक फल, आपे अधिक विकार ॥ ५ ॥ शत्रुथकां जे राज्य सुख, ते सुख स्वप्न समान ॥ अरिहंत नृपपासें रह्यो, करशे कोइ विज्ञान ॥ ६ ॥ इम मन चिन्तातुर थको, बेठो मोह नरिंद ॥ सघली मलि बेठी स भा, बेठां नरनां वृंद ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ इक दिन माहाजन आवी ए ॥ ए देशी ॥ तिणसमे सेवक वीनवे, सु ण साहिब सनेहा जी ॥ कालो रूप कुरूप छे, उंचो छे तसु देहो जी ॥ त्रूटक ॥ तसु देह उंचो, पुरुष कोइ, आवी उभो, तियां कणे ॥ कलिकाल नामें, नाम धरतो, नृप जणावे, मुख भणे ॥ दीदार तुमचो, देखवा ए,आ यो छे तुम,गुण स्तवे ॥ राजरो हूकम, एथ आवे, तिण समय सेवक, वीन वे ॥ १ ॥ राजा तेहने तेडावियो, दीठो रूप तिवारो जी ॥ भानी वायत णी परें, लूखो भूखो अपारो जी ॥ त्रू० ॥ अणपार भूख्यो, लोह जडियो, रूप कुरूपी, अति घणुं ॥ ते रूप देखी,सभाजननां, कंपियां मन, अति घ णुं ॥ तिण आय राजा,पाय प्रणम्या, राजा पण, आदर दियो ॥ कर जो डि ऊभो, वदन आगें, राजा तेहने, तेडावियो ॥ २ ॥ तव राजा सुख पू

ठियुं, क्षेम कुशल तुम होयो जी ॥ किण कारण चिर कालथी, तुऊ दर्शन ए जोयो जी ॥ त्रू० ॥ ए जोय दर्शन, हर्ष पाम्यां, आया थें, कारण कि से ॥ तव बोलियो ते, पुरुष प्रणमी, हेतु मुऊ मन, ए वसे ॥ इक मयण देखुं, जगत जीपी, जेण इवडो, यश लियो ॥ ए मयण देखो, नयन आगें, तव राजा, मुख पूठियो ॥३॥ बीजुं कारण ए अठे, तुऊ वेरी ठे एको जी ॥ हाथ नाथो तुऊ पुत्रने, जीवतो नाठो विवेको जी ॥ त्रू०॥ सुविवेक नाठो, तेह चिन्ता, राजन थें, मनमां धरो ॥ तेह चिंता नांजुं, रिपु विनासुं, जो मुऊे, सेवक करो ॥ माहरो पण, तेह वेरी, वयर लेशुं, ते पठें ॥ एवो कलि युग. पुरुष बोल्यो, बीजुं कारण, ए अठे ॥ ४ ॥ कलि बोल्यो सुण नूप ति, प्रवचन पुर तुऊ दूरो जी ॥ माहरे मन सुगमो अठे, लेउं तुऊ हजूरो जी ॥त्रू०॥ हजूर लेउं, देख तूं हवे, ज्ञान रक्षक, बांधशुं ॥ संवेग सामंत, जेह जोधा, तेह सघला, साधशुं ॥ वड वडा वीर, विवेक सघला, सबल हूता, शुनमति ॥ हवे खबर पडशे, अणी माथे, कलि बोल्यो सुण, नृपति ॥ ५॥ देखे हाथ तुं माहारा, प्रवचन पुर उयेडो जी ॥ जोर न नाजे ज्यां लगे, नवि मूकुं तां केडो जी ॥त्रू०॥ केडो न मूकुं, ज्यां लगें, अवक्षीण न हुवे, ए खरो ॥ मुक्तिनो मारग, नांजी नाखुं, मदत जो, माहरी करो ॥ अरिहंत राजा, फे डि नाखूं, धुजावुं, धर्मनी धुरा ॥ कलिकाल महारुं, नाम साचुं, देख हाथ तुं, माहरा ॥ ६ ॥ हरख्यो मोह नरेश ते, सांनली वचन करालो जी ॥ काम कह्यु नर ए खरो, अरिदलनो ए कालो जी ॥ त्रू० ॥ ए काल अरिदल, तणे माथे, उह्त नर ए, आकरो ॥ चिर काल एहनी, स्थिति न होती, तोही ज ठे मुऊ, काजरो ॥ इम जाणिने निज, पास राख्यो, सार सेवक, सुखकरु ॥ बहु मान दीधो, वडो कीधो, हरख्यो मोह, नरेशरु ॥ ७ ॥

॥ दोहा॥

॥ राज काज लायक घणुं, कलियुग राख्यो राय ॥ रत्नत्रयकी सेवक न ला, जिणथी अरि जीपाय ॥ १ ॥ समय स्वनावथकी हवे, अरिहंत मोक्ष सिधाय ॥ दिनकर आथमियें थके, तमनो जोरो थाय ॥ २ ॥ कलियुग फोज मुखी हुइ, सेना लेइ अशेष ॥ चिहुं दिशि पसरे पवन ज्युं, प्रवच नमांही विशेष ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ मेघ मन कांइ मम मोले ॥ ए देशी ॥ राग द्वेष वली अति घणा जी, वांध्या वड विस्तार ॥ विषयतणी तृला वधी जी, विषनी वेल अपार ॥ न विक जन, सुणजो कलियुग वात ॥ मूको वीजी तांत ॥ न० ॥ १ ॥ मन प र्याय ते केवल ज्ञानी, क्षपकश्रेणि सुप्रधान ॥ ठेहला संयम तीन जे सख रा, उपशम श्रेणि विधान ॥ न०॥ २ ॥ पुल्काक लब्धि ने श्रीजिनकल्पी, चौद पूरव अति मान ॥ आदिम संघयण ने शुक्लध्याना, परम समाधि नि धान ॥ न० ॥ ३ ॥ कलियुग आवते एटलां वानां, दूर कखां तिण वार ॥ अनुक्रमें दश पूर्वादिक मेल्यां, पूर्वानुयोग विचार ॥ न० ॥ ४ ॥ अंतर मुहू र्तमां पूर्व गुणतां, ते रही लब्धि विशेष ॥ संघयण सघला ते पण वांध्यां, ठेवलो रह्यो देख ॥न०॥५॥ माहाप्राणायाम ध्यान जे धरता, महोटा श्री रु षिराय ॥ ते पण दूर कियो कलिकालें, अशुभ ध्यान दीपाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इणिपरें जाये दिन दिन हीणा, कलियुग कीधूं जोर ॥ काम क्रोध ने वैर वि रोधा, रोद्र आर्त अति घोर ॥ न० ॥ ७ ॥ संप्रति राजा अनुक्रमें हूर्व, क लिसुं कीध संग्राम ॥ गाम गाम जिनचैत्य कराया, नाव नक्ति अनिराम ॥ न० ॥ ८ ॥ देश अनारजमें पण जिनवर, धर्म दीपावो सार ॥ कलियुग ने तिण काळे कूब्यो, धर्मराग मन धार ॥ न० ॥ ९ ॥ ते राजा देवलोक गया पछी, व्याप्यो काल कराल ॥ वडवडा नृपतिनां मन फेखां, कीधी मि थ्याजाल ॥ न० ॥ १० ॥ नव नव प्रगट किया पाखंमी, हिंसा धर्म अपा र ॥ डुर्निक्ष पण कलियुगना सेवक, दोध्या वारोवार ॥ न० ॥ ११ ॥ जिन वर धर्म कियो तिण खंमित, सामाचारी नेद ॥ महेलां मन मुनिवरनां की धां, सूधो संयम ठेद ॥ न० ॥ १२ ॥ चार अने अनुयोग जे महोटा, अ ल्प किया ते काल ॥ लेश देशथी मति श्रुत हूया, वांध्यो जडता जाल ॥ न० ॥ १३ ॥ जिनशासननी रक्षा काजें, नावे देवी देव ॥ तप जप ध्यान तणो नहिं महिमा, धर्मतणी नहिं सेव ॥ न० ॥ १४ ॥ गणगछ नेद कि या इण मूंने, इणिमें घाली राड ॥ आत्मअर्थगमां थोडा चूके, वेश नणि ध रे वाड ॥ न० ॥ १५ ॥ सूत्र सरल माने नहिं जी, अर्थतणा करे नेद ॥ सर्दहणा जिन वचनें नांहिं, मिथ्या राखे खेद ॥ न० ॥ १६ ॥ नरसुर नो लाया एणें, लोनतणे वश कीध ॥ निर्ग्रंथने पण सग्रंथ कीधा, मूर्छा मनि

इणे दीध ॥ ज० ॥ १७ ॥ निज गुणनो खप न करे कांइ, परगुण लेवा जाय ॥ सावद्य शास्त्र जणे घणां जी, कर्मबंध जिणे थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ लाल पाल रूपिजी करे जी, अवर जेह नर नार ॥ गजवृत्तिनें मूकी करी जी, लेवे खर आचार ॥ ज० ॥ १९ ॥ विकथा वाद बहु करे जी, आगम न जाणे सार ॥ जाव नेद समजे नहिं जी, बाहिज दृष्टि अपार ॥ज०॥२०॥ समवाये पांचे करी जी, स्याद्वाद सुखकार ॥ ते नवि बूझे धुरथकी जी, जिनमति मूल विचार ॥ ज० ॥ २१ ॥ नय प्रमाण निरखे नहिं जी, निश्चय नय न व्यवहार ॥ द्रव्य अने पर्याय न बूझे, कलियुगने परिवार ॥ ज० ॥ २२ ॥ श्रावक पण वली एहवा हूआ, ए जुगने परसंग ॥ देव न माने गुरु नवि मानें, धर्म उपर नहिं रंग ॥ ज० ॥ २३ ॥ गोगा मोगा ने महमायी, क्षेत्रपाल जली रीत ॥ तेहने सेवे मनशुं सूधा, अरिहंत न धरे चित्त ॥ ज० ॥ २४ ॥ नाटक गीत सुहावे जावे, जिनवाणी न सुहाय ॥ गुरु उपदेश सुणे नहिं कबहूं, घरधंधामां धाय ॥ ज० ॥ २५ ॥ त्याग धर्म करीने युं आखे, फल नव दीवूं कोय ॥ पूरी प्रतीति नाहिं धर्म ऊपर, सिद्ध किहांथी होय ॥ ज० ॥ २६ ॥ दान देइ बहु वंग इहां राखे, त्याग न राखे जाव ॥ निर्वंठक धर्म मन आचरतां, थाये जवजल नाव ॥ ज० ॥ २७ ॥ माहा मंत्र नवकार तजीने, समरे बीजा मंत्र ॥ पुण्यानुसारी धनने अर्थे, धारे बहुला यंत्र ॥ ज० ॥ २८ ॥ धातुरवादी जूवटे खेले, वांछे धननी राशि ॥ पनरे कर्मादानने सेवे, श्रावक नाम उल्लास ॥ ज० ॥ २९ ॥ वादें कुपात्र मुखें धन खरचे,पात्र न पोप्यो जाय ॥ राजा धन दंमीनें लेवे, कोडी दान न थाय ॥ ज० ॥ ३० ॥ आतम रूप न उलखे जी, ज्ञान न आणे चित्त ॥ काम क्रोध जीनो रहे जी, आरंज अधिको नित्त ॥ ज० ॥ ३१ ॥ कलियुग समय स्वजावथी जी, श्रावक एहवा थाय ॥ धर्ममंदिर कहे विण जोगवियां, कर्म न मूक्यां जाय ॥ ज० ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अवर लोक पण कलियुगें, व्यापी पापी कीध ॥ कूड कपट उल बल घणा, कुमति कदाग्रह गृद्ध ॥ १ ॥ सेवक स्वामी उल करे, पिता पुत्र वली देख ॥ पति पत्नीशुं उल करे, जायें कुलनी रेख ॥२॥ न बने सासू ने वहू, घरमां कलहो होय ॥ वीडू चटकानी परें, सासूवाणी जोय ॥ ३ ॥

वृद्ध तात दूर्उ जिसे, कथन न माने कोय ॥ अशन वसन आपे नहिं, पुत्र वधू वश होय ॥ ४ ॥ अल्प नरमने कारणे, खेल करे अति घोर ॥ मन संतोष धरे नहिं, तृष्णा वाधी जोर ॥५॥ नगिनी भ्रात तणे घरे, जन्म लगे रीताय ॥ भाइ मांहोमांहि वली, परणी जूआ थाय ॥ ६ ॥ सगपण संपन को धरे, सहु स्वारथने थाय ॥ परमारथ प्रीछे नहिं, कलियुग व्याप्यो आय ॥७॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ धर्म हैये धरो ॥ ए देशी ॥ रस कसमां कलि व्यापियो रे, दिन दिन एहवो थाय ॥ मेह घणा वरसे नहिं रे, वाजे अधिका वायो रे ॥ कलि कौतुक करे ॥ समयतणो वली जोरो रे, अल्प धर्म हूउ ॥ व्याप्यो पाप अघोरो रे ॥ कलि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पत्नीशुं प्रीत नहिं धरे रे, परनारी लो जाय ॥ शीख भली घरनी दीये रे, ते मन नावे दायो रे ॥क०॥२॥ कपट करावे मित्रशुं रे, जननी जनकशुं जूऊ ॥ कुबुद्धि शिखावे पापनी रे, आववा न दिये बूजो रे ॥क०॥३॥ स्वारथ लगें मैत्री करे रे, नियम संकट लगि जोय ॥ कष्ट पड्यां समकित तजे रे, एहवा धीरज होयो रे ॥ क० ॥ ४ ॥ थोडी शुन संपत्ति हुवे रे, कइयें विणसी जाय ॥ जो जीवे तो निर्धन हुवे रे, योवन धर्मी न थावो रे ॥ क० ॥ ५ ॥ दंन विना धर्म नवि करे रे, क्रोध सहित तप तुछ ॥ मान धरी श्रुतने नणी रे, धन मेले नहिं सुछो रे ॥क०॥ ६ ॥ व्यापारी चोरी करे रे, कुलवंत विट सम थाय ॥ कुल नारी गणिका परें रे, हसन वसन मन दायो रे ॥ क० ॥ ७ ॥ मुख मीठी वातां करे रे, कपट हैयामें राख ॥ कर्षणी अति आरंन करे रे, सामी नावे शाखो रे ॥ क० ॥ ८ ॥ उत्तम फल थोडां हुवे रे, खारां कडुआं लाख ॥ अल्प क्षीर गायां हुवे रे, थोडी संतत शाखो रे ॥ क० ॥ ९ ॥ इम कलिपावक बहु करे रे, सुकृति दूधनो शोष ॥ कुमारपाल नृप अवतर्यो रे, करवा दूधने तोषो रे ॥ क० ॥ १० ॥ उपदेशें हेमसूरिने रे, दीपायो जिनधर्म ॥ उत्तम आचरणा करी रे, दूर कियां पाप कर्मो रे ॥ क० ॥ ११ ॥ अष्टादश देशा विषे रे, मार इती मुख वाण ॥ कोइ न नांखे नर कदें रे, एवी जेहनी आणो रे ॥ क० ॥ १२ ॥ नरण पोषण नवलां करे रे, दीन हीन उद्धार ॥ जाय नक्ति धर्म रागियो रे, कीधां चैत्य अपारो रे ॥ क०॥ १३ ॥ कलियुगनुं मुख फालियुं रे, चौलुक रीझ नरेश ॥ सात व्यसन नट कलितणां रे,

हणियां काली केशो रे ॥ क० ॥ १४ ॥ अमार शब्द उद्घोषणा रे, तेह ज तीखां बाण ॥ कलिने लाग्यां अति घणां रे, पण न तज्यां कलिप्राणो रे ॥क० ॥ १५ ॥ निरुपक्रम ए आउखे रे, वज्ररूपज कयुं देह ॥ कइ कोइ पारद सेवियो रे, कलियुग नावे छेहो रे ॥ क० ॥ १६ ॥ गलिया ढोरतणी पेरें,रे होय रह्यो तिणिवार ॥ जीवतो मूक्यो नरपति रे,करुणा चित्त मकारो रे ॥ क० ॥ १७ ॥ चार वर्ण धर्म जिनतणो रे, सेवे नृप आदेश ॥ जीवदया पाले खरी रे, सघला देश विदेशो रे ॥ क० ॥ १८ ॥ अध्यातम गुरु दाखवे रे, जाणी जीव अजीव ॥ निज परगुण परगट कीया रे, धरी स्याद्वाद शुज दीवो रे ॥ क० ॥ १९ ॥ केटलां वरस गया पछी रे, ते पण देवलोक जाय ॥ फिर जाग्यो कलियुग तदा रे,वलतो वश नवि थायो रे ॥ क० ॥२०॥ काम क्रोध जाग्या घणा रे, धर्मधन लूटवुं जोर ॥ डुर्गति जाये प्राणिया रे, करि करि पाप अघोरो रे ॥ क० ॥ २१॥ बहुत युगतांइ इम हुउ रे, कलिकेरो अधिकार ॥ ते पण समयो पामिने रे, क्षीण थयो जिणवारो रे ॥ क० ॥ २२ ॥ जिनवर प्रगट हुआ तदा रे, कलियुग पाम्यां नाश ॥ मोह सुणी मन कूप्यिो रे, सखर थयो मुज दासो रे ॥ क० ॥ २३ ॥ अति मखरी मति रूपनो रे, चिरंजीव नवि कोय ॥ में आगेंथी जाणियो रे, स्थिरता वास न होयो रे ॥ क० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नविजन लोक मली करी, जाये अरिहंत पास ॥ कर जोडी वजा कहे, सुण साहिब अरदास ॥ १ ॥ अमल चलाव्यो कलियुगें, करडो संघले गाम ॥ जीव घणा काली करी, मूक्या मोहने गाम ॥२॥ करुणाकर करुणा करो,मोहनणो मद फेड ॥ जिणविध ए लोकांतणी,वेरी मूके केड ॥३॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जी हो मिथिला नगरीनो ए धणी ॥ ए देशी ॥ जी हो जिनपति जगगुरु बोलिया, जी हो करुणानिधि कृपाल ॥ जी हो नविक जणी आश्वासना, जी हो दे जिनवचन रसाल ॥ चतुर नर चेतो चित्त मकार ॥ जी हो शिव अनिलाषा थाय ने, जी हो फलशे वंछित सार ॥च०॥१॥ ए आंकणी ॥ जी हो कलियुग शिव पुर जावतां,जी हो रोधक थियो असमान ॥ जी हो पापी पचीयो पापशुं, जीहो हवेवधिशुं धर्म ध्यान ॥ च० ॥

॥ २ ॥ जी हो मोह विटंबन जे करे, जी हो जाणुं हुं हुं तेह ॥ जी हो अवसर विण उदासीनता, जी हो धर रहिया निज गेह ॥ च० ॥ ३ ॥ जी हो वीर विवेक वारु अबे, जी हो तुम डुःख फेडणहार ॥ जी हो संयमस्त्रीने परणिने, जी हो जीपशे मोह अपार ॥ च० ॥ ४ ॥ जी हो आवे स्वामी विवेकने, जी हो विलंब न कीजें सार ॥ जी हो निज भुजबल देखाडिने, जी हो थाउ संयम नरतार ॥ च० ॥ ५ ॥ जी हो वीरकुलें ए कन्यका, जी हो वीरव्रता गुण धीर ॥ जी हो शूरजणी परणे सही, जी हो कायरशुं नहीं शीर ॥ च० ॥ ६ ॥ जी हो कन्याना गुण सांजलो, जी हो अनुपम रूप निधान ॥ जी हो बीजी नारी तेणि पेरें, जी हो नहिं छे एह विधान ॥ च० ॥ ७ ॥ जी हो बीजी नारी सेवतां, जीहो देवता नासी जाय ॥ जी हो ए कन्या परण्यायकी, जी हो सेवक सुरपति थाय ॥ च० ॥ ८ ॥ जी हो बीजी नारी चालतां, जी हो पग पग बंधन थाय ॥ जी हो ए बंधनने छोडवे, जी हो परमानंद सहाय ॥ च० ॥ ९ ॥ जी हो बीजी नारी जुवानने, जी हो वांछे मननी खांत ॥ जी हो ए गरढा नरने खुशी, जी हो एहनी नवली नांत ॥ च० ॥ १० ॥ जी हो लोकनां दूषण जे अछे, जी हो नूषण एहने थाय ॥ जी हो नूख्यो दूबलो एहने, जी हो मनमां आवे दाय ॥ च० ॥ ११ ॥ जी हो अशन वसन वांछे नहीं, जी हो कष्पण न वांछे शीत ॥ जी हो केश न गूंथे एकगा, जी हो नूतल शय्या रीत ॥ च० ॥ १२ ॥ जी हो स्नान विना ए शुद्ध छे,जी हो नूषण विण ए रम्य ॥ जी हो विण जम्यां बलि धारती, जी हो गुण गण रयण अगम्य ॥ च० ॥ १३ ॥ जी हो वस्त्र विना गुपती रहे, जी हो सुरत विना सुखदाय ॥ जी हो प्रेम विना प्रीत धारती, जी हो परम समाधि उपाय ॥ च० ॥ १४ ॥ जी हो नरपति सुरपति ना गमे, जी हो हलधर पण न सुहाय ॥ जी हो एक विवेकी शुद्धशुं, जी हो प्रीति करे मन लाय ॥ च० ॥ १५ ॥ जी हो नियम कर्यो छे एणियें, जी हो राधावेध सधाय ॥ जी हो परणुं पिघु प्रीछी सही, जी हो ए आव्युं छे दाय ॥ च० ॥ १६ ॥ जी हो ए कन्या हाजर अछे, जी हो वर तुं वीर विवेक ॥ जी हो परणावे संवर पिता, जीहो ढील न करियें छेक ॥ च० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एह वचन सुणी हरखियो, अरज करे मन लाय ॥ हुं तुमने शुं वी नवूं, तुं सर्वज्ञ कहाय ॥ १ ॥ सूंहालो सेवक अढूं, टाढो शीलो जोर ॥ क ठिन सुणीजें कन्यका, वज्रतणी परें घोर ॥ २ ॥ पण तुज चरण प्रसादथी, अतुली बल मुफ जोय ॥ मलयाचल संयोगथी, चंदन तरुवर होय ॥ ॥ ३ ॥ हूकम लह्यो संवर सुता, परणावे सुखकार ॥ साधे राधावेधने, ते सुणजो सुविचार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ यत्तनीनी देशी ॥ सयंवरा मंमप मंमावे, तिहां वड वडा नृप थो लावे ॥ दीये निहचें थंत रोपे, अति उंचो सबल आटोपे ॥ १ ॥ आठे आ रा आठ कर्म, अति काठा ते नहिं नर्म ॥ वेगें करी फिरता दीसे, मन वी र विवेकनुं हीसे ॥ २ ॥ वाणी गति विषमाकार, फरे चक्रतणे अनुसार ॥ तिणमांहे तत्त्व ते राधा, रूप पुतली कीध अबाधा ॥ ३ ॥ जीवना जे आठ प्रदेशा, निश्चल मध्य रहे सुदेशा ॥ बीजा असंख्याता जेह, ताता तेल तणी परें तेह ॥ ४ ॥ ते स्थंन तणे अति पासें, क्षमा कपर लेइ वा से ॥ धर्म नीरें करीने जरियुं, परमागम कुंभ कर धरियुं ॥ ५ ॥ निज चे तन कीध कबाण, तिहां धूंनो धीरज बाण ॥ इत राताइ बहुला प्राणी, आइ कला कबाणने ताणी ॥ ६ ॥ थंनने पण हाथ लगाया, पण तत्त्व कला नवि पाया ॥ नाखीने तार कबाण, घणा नाठा मूढ अजाण ॥७॥ लोकें बहु हासा कीधा, फिर पाठा चाल्या सीधा ॥ हवे वीर विवेकनी वारी, आवि कलो करि हुनियारी ॥ ८ ॥ पहिला जगनायने वंदे, वलतो गु रुचरण आनंदे ॥ वर तत्त्व कला जे राधा, सीखाइ जेण अगाधा ॥ ९ ॥ आव्यो निण कुंभनी पासें, जाले बाण कबाण उलासें ॥ सीधो कुंभो ह वे थापे, धर्म चक्रतणे रूप व्यापे ॥ १० ॥ कर्मचक्र सरूपने देखे, कुंभ दर्पणमांहि विशेखें ॥ लेइ बाण कबाण चढायो, टंकार शब्द सुणायो ॥११॥ उंची दिशि बाणने बांधे, नीची दृग् करुणा साधे ॥ जावित करुणा करि गाटी, शुद्ध शील कछोटी माटी ॥ १२ ॥ क्रम चक्र फिरंतो धारी, तिहां अं तर ज्ञान विचारी ॥ राधावेधना जेरने नेदें, शुद्ध आतम अनुनव वेदे ॥ १३ ॥ तव जय जय शब्द जलीजें, वली धवल मंगल पण दीजें ॥ वरसा

वे फलने देवा, करे वीर विवेकनी सेवा ॥ १४ ॥ वर माला कन्यायें घाली, पासें जनी आवे आली ॥ सखियां ए प्रवचन माता, तसु उपनी अधिकी शाता ॥ १५ ॥ हर्षित हूआ अति प्राणी, तरष्यां ज्युं लाधे पाणी ॥ तिहां परम प्रमोद प्रकाशे, शुन नावना नाव निवासे ॥ १६ ॥ परसंगतणो हुउं त्यागी, सूधो मुनि मुख्य वैरागी ॥ संयमस्त्री परणी नारी, अरि जीपणने हुशीयारी ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोरी चढवानी हती, होंश घणी मनमांहि ॥ पूगी तेह विवेकनी, धरि जिनवरनी गंहि ॥ १ ॥ तीन भुवनमें यश थयो, सारो हे संसार ॥ नाग अधिक ए वीरनो, लाधी संयम नार ॥ २ ॥ प्रेम घणो प्रमदा धरे, प्रीतमशुं रसरंग ॥ विलसे वीर विवेकशुं, अनुपम सुख अनंग ॥ ३ ॥ वासुदेव बली चक्रवर्ती, सुरपति नरपति वृंद ॥ एहना सुखथी पण अधिक, सुख शोजा आनंद ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ श्रीजिनप्रतिमा हो, जिन सरखी कही ॥ ए देशी ॥ वैरागी सौजागी हो, वीर विवेक ठे, निरुपम गुण मणि राशि ॥ उत्तम आतम हो, निज बल फोरियो, अंतर वास सुवास ॥ वै० ॥ १ ॥ ज्ञानावरणी हो, कर्म उदय करी, दोय परिसह धार ॥ दर्शन मोहथी हो, एक परिसहो, वेदनी थाय अग्यार ॥ वै० ॥ २ ॥ एकज होवे हो, अंतराय कर्मथी, चारित्र मोहथी सात ॥ एहवा परिसह हो, बाविश ऊपजे, सहे खमे दृढगात ॥ वै० ॥३॥ पंच महाव्रत हो, मेरु उपाडिया, तृण जिम न गणे नार ॥ बलवंत म होटो हो, रिपुदल जीपवा, चरण करण हथियार ॥ वै० ॥ ४ ॥ दिन दिन अधिको हो, संयम नारीशुं, अधिक अधिक सस्नेह ॥ तप जप तेजें हो, दीपे अति घणुं, कोप दावानल मेह ॥ वै० ॥ ५ ॥ करवतनी परें हो, फत्रिवट दोहिली, शरणे राखणहार ॥ जंगम स्थावर हो, समनावें करी, राखे चित्त मकार ॥ वै० ॥ ६ ॥ इक दिन आवी हो, जिनपति वीनव्या, हुकम करो महाराज ॥ अरिदल नांजी हो, नव नव जपहरुं, वालुं शिवपुर राज ॥ वै० ॥ ७ ॥ समयें देखी हो, जगवंत जाखियो, न करो ढील लगार ॥ मोह महीपति हो, हवे तूं जीपसी, नहिं ने विघ्न विकार ॥ वै० ॥ ८ ॥ अ

थिक करारां हो, श्राश्रम मोह छे, हजीय न मूके केड ॥ तो हवे निज ब ल हो, भुज बल फोरवी, श्ररि नाखुं उखेड ॥ वे० ॥ ए ॥ इणि परें चिन्ती हो, जयनंदा नजी, वजडावे शुन वार ॥ कटक सहायी हो, सवलूं सज क रे, श्ररि जीपण श्रधिकार ॥ वे० ॥ १० ॥ सामंत सखरा हो, साथे वड वडा, पुत्र कलत्र परिवार ॥ हय गय पायक हो, रथ चतुरंगशुं, ते सुणजो विस्तार ॥ वे० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जय जय शब्द सहु नणे, मांगलिक मुख चार ॥ श्ररिहंत सिद्ध ने साधु धर्म, ए चारे सुखकार ॥ १ ॥ शीख दिये हवे जगगुरु, सुण विवे क वड वीर ॥ समय मात्र पण मत धरे, प्रमादसंती शीर ॥ २ ॥ माता नीतिं पालजे, ये नारी श्रनुकूल ॥ निश्रें सन्नाह तुं पहेरजे, श्ररि होशे श्रकळूल ॥ ३ ॥

॥ ढाल श्राठमी ॥

॥ नविक कमल प्रतिबोधवा, साधु तणे परिवार ॥ ए देशी ॥ विनय विवेक विचारशुं, करजे तुं महेराण ॥ वेशास न करे केहनो, ए छे माहरी श्राणो रे ॥ सुण सुण शुनमति, तुं छे चतुर सुजाणो रे तो पण श्राखियें, रिपु जिपणरो टाणो रे ॥ सु० ॥ १ ॥ ए श्रांकणी ॥ जन्म थकी तुं जाण छे रे, पूरो पात्र सुपात्र ॥ तो पण उपदेश जाणीने रे, थापीजें तुज गात्रो रे ॥ सु० ॥ २ ॥ तुज वेरी तीलो श्रछे रे, तुं शीलो छे वीर ॥ वेहुमां बल छे घणूं रे, उ पावक तुं नीरो रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ शांत रसीलो तुं श्रछे रे, ते छे तामस धीर ॥ तुं सुरतरु गया श्रछे रे, उ श्रातपनो जारो रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ निज गुण ने मन मूकजे रे, रहेजे माता पास ॥ श्रमिय कचोलां एहनां रे, लोचन छे गुण रासो रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ जय वैराग्य ए ताहरा रे, सुत महोटा सिरदार ॥ मुख श्रागें राखे सही रे, जीपशे रिपु परिवारो रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ संवेग निर्वेद लघु सुता रे, जय करशे तुज जोर ॥ रण र सिया रिपु जीतशे रे, श्रातमनो बल फोरो रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ समकित दृष्टि जे मंत्रवी रे, धरजे फोजां मुख्य ॥ उयम सफलो ए हुशे रे, जाशे सघलां दुःखो रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ शम दम नप जप उमरा रे, वड वडा वीर विख्या त ॥ श्रादरजे तुं एहने रे, इणमनने करि घातो रे ॥ सु० ॥ ए ॥ दान त

लार ए ताहरो रे, बुद्धितणो नंमार ॥ स्वसमय परसमय जाण छे रे, रिपु दल भार उतारो रे ॥ सु० ॥ १० ॥ सामायिक आदें करी रे, आवश्यक नि धीर ॥ ते तुज पुरोहित आखियो रे, तेहने मत वीसारो रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ दशविध यति धर्म हाथिया रे, फोजोना शणगार ॥ शीलंग रथ ते रथ भला रे, सख्या सहस अढारो रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ नव नव तप भेद तुरंग छे रे, तीखा तेजी वेग ॥ ते ऊपर बेसी करी रे, दीपावे निज तेजो रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ शुभ परिणाम ते सावता रे, पायक प्रौढा पमूर ॥ तुझ मुख आगें रण नि डे रे, राखे आप हजूरो रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ प्रायश्चित्त ते केम छे रे, तेहने लेजे साथ ॥ घायलने ए सज करे रे, सिद्धि सखरी जसु हाथो रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ राणी बेहु साथ ले रे, जे छे बुद्धिनिधान ॥ नारी जाण न परिहरे रे, कुण शूरो ए समानो रे ॥ सु० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम सुणी वीर विवेक हवे, आवे नारी पास ॥ आखे सुंदरी सांभलो, धरि मनमां उल्लास ॥ १ ॥ जिनवर वचन हुई अछे, नारी लेजो साथ ॥ तुमचो श्यो आलोच छे, स्त्री बोली सुण नाथ ॥ २ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ वाडी फूली अति भली ॥ मन भमरा रे ॥ ए देशी ॥ कर जोडी कामिनी कहे ॥ मुज भमरा रे ॥ सुण साहिब भरतार ॥ लाल मुझ भमरा रे ॥ कटक यात्रा भणी थें चल्या ॥ मु० ॥ में पण थाहरें लार ॥ ला० ॥ १ ॥ तनु छाया ज्युं में अछां ॥ मु० ॥ केड न मूकुं आज ॥ ला० ॥ चंद्रकला चंद्र साथ छे ॥ मु० ॥ बादल साथें गाज ॥ ला० ॥ २ ॥ साहिब बाग समान छे ॥ मु० ॥ में बेली विस्तार ॥ ला० ॥ थें सरोवर नीरें भर्या ॥ मु० ॥ में कमलिनी सुखकार ॥ ला० ॥ ३ ॥ तुं जीवन तुं आतमा ॥ मु० ॥ तुं अम प्राणाधार ॥ ला० ॥ तुम विरहो न खमी शकुं ॥ मु० ॥ देखी रह्यो किरतार ॥ ला० ॥ ४ ॥ शक्ति अमारी देखजो ॥ मु० ॥ रिपुदल भेलो जेय ॥ ला० ॥ शूरा पूरा देखशे ॥ मु० ॥ कसवटी अमची तेय ॥ ला० ॥ ५ ॥ अवर नारी सम हुं नहिं ॥ मु० ॥ राजसुता रजपूत ॥ ला० ॥ रिपुदल तृणसम लेखवां ॥ मु० ॥ निज घर राख्यां सूत ॥ ला० ॥ ६ ॥ वीर विवेक खुशी थयो ॥ मु० ॥ प्रमदानी सुणि वात ॥ ला० ॥ सामंत सघला तेडिया ॥ मु० ॥ एह वि

चार कहात ॥ ला० ॥ ७ ॥ आप आपणी नारीने ॥ मु० ॥ लेजो सघ
ली साथ ॥ ला० ॥ जीत हुशे ए शक्तियी ॥ मु० ॥ कहियो ठे जगनाथ
॥ ला० ॥ ८ ॥ प्रशम सामंतें तव ग्रही ॥ मु० ॥ क्षमा नारी जसु नाम
॥ ला० ॥ मार्दव वरी प्रिय नम्रता ॥ मु० ॥ साथ हुई अनिराम ॥ ला०
॥ ए ॥ आर्जव सामंतें ग्रही ॥ मु० ॥ प्रसन्नता नामे नार ॥ ला० ॥ सं
तोष सामंतें ग्रही ॥ मु० ॥ धृति ललना सुखकार ॥ ला० ॥ १० ॥ विम
लबोध शुज मार्गणा ॥ मु० ॥ लीधी सुंदर सार ॥ ला० ॥ पुरोहित आस्ति
क्यबुद्धि ने ॥ मु० ॥ लीधी पत्नी तिवार ॥ला०॥११॥ शेठे सत्यवाणी वधू
॥ मु० ॥ वेदकता मंत्री नारि ॥ ला० ॥ नवमंदा पुत्र ते ग्रही ॥ मु० ॥
नारी प्रेम उदार ॥ ला० ॥ १२ ॥ इणि परें सवले साथीयें ॥ मु० ॥ सा
थें लीधी नार ॥ ला० ॥ हुकम हुवो साहिबतणो ॥ मु० ॥ वेगें हूइ अस
वार ॥ ला० ॥ १३ ॥ पांचेइ हथीयार बांधिया ॥ मु० ॥ जगमग ज्योति
अपार ॥ ला० ॥ उज्ज्वल शुक्ल ध्यान ठे ॥ मु० ॥ हथियारमां शिरदार
॥ ला० ॥ १४ ॥ जहर जोसण गुरुशीख ते ॥ मु० ॥ पहेरी रक्षा काज
॥ ला० ॥ सकल सजाइ लेइ करी ॥ मु० ॥ गमन करे माहाराज ॥ला०॥१५॥

॥ दोहा ॥

॥ साधु संयम गजराज हृढ, वरदायी वड वीर ॥ प्रवचन पुरथी चालिया,
साथ वड वडा धीर ॥१॥ मोह महीपति जीपवा, शूरा पूरा साथ ॥ वीर
वलें धरता थका, जय लक्ष्मीना नाथ ॥ २ ॥ नव नव गुणगण भूमिका,
आक्रमता तिणि वार ॥ पसरी कीर्त्ति दहदिशें, हरख्यां लोक अपार ॥ ३ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ पाम जिणंद जुहारियें ॥ ए देशी ॥ वरदायी वीर गाइयें, जग सघलेइ
यशवासो रे ॥ हिंसक चोर नाठी गया, तम नाठे सूर प्रकाशो रे ॥ व०
॥ १ ॥ मिथ्यात्रम दूरें गया, हवे कपट क्रिया रही दूरो रे ॥ अपूर्व करण
करतो हवे, प्रतप्यो निज तेज पंमूरो रे ॥ व० ॥ २ ॥ शूर नविक नट क
टकनां, आवीने नेला थायां रे ॥ वाहलें जिम नदियां वदे, रिपु जीवण
सयल उपायो रे ॥ व० ॥ ३ ॥ गाम नगरनां नेटणां, नव नवला सम रस
लेरे रे ॥ नमना ममता तनु देखीने, उपदेश ते सिरपाव देवे रे ॥ व० ॥
४ ॥ मंत्री सरजाने कहे, सुन्य आगे धरो वीर आणो रे ॥ मोहतणां जय

मिट गयो, हवे धरजो मन शुन ध्यानो रे ॥ व० ॥ ५ ॥ दुःख दोहग दूरें गयां, गया आधि व्याधि विकारो रे ॥ रोध विरोध विलय गया, समतायें श्रीसुखकारो रे ॥ व० ॥ ६ ॥ परम प्रतीति प्रगट जइ, घन वूगो ज्युं हरि कायो रे ॥ पाप ताप दूरें गया, जवि लोकांने मन जायो रे ॥ व० ॥ ७ ॥ श्रीजिनचंद सूरीश्वरु, जसु नामें सुख अपारो रे ॥ दयाकुशल पाठकवरु, गुरु गिरुआ गुण जंमारो रे ॥ व० ॥ ८ ॥ तासु प्रसादें ए रच्यो, खंम पांचमो जवि उपकारो रे ॥ धर्ममंदिर कहे सांजल्यां, लाजीजें सुख श्रीकारो रे ॥ व० ॥ ९ ॥ इतिश्री प्रबोधचिन्तामणौ ढालजाषाप्रबंधे कंदर्पोत्तवकलिकालआगमविगमविवेकपरिणयन प्रस्थानवर्णन नामा पंचमः खंमः ॥५॥

॥ अथ षष्ठ खंम प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिनवास सुवास नित, महोटो महिमा निधान ॥ चरण कमल श्रीपासनां, प्रणमुं परम प्रधान ॥ १ ॥ इण अवसर हवे मोह नृप, चर मुख सांजली वात ॥ साधे सघला देशने, वीर विवेक विख्यात ॥ २ ॥ मानी मलराजो घणुं, पर उन्नत न सुहाय ॥ निज मंत्रीने तेडीने, आखे चित्त लगाय ॥ ३ ॥ आयो वेरी बल करी, सिंहतणी परें एह ॥ पाठा पगलां देइने, फिर मांमयो मति गेह ॥ ४ ॥ में पहिलांही जाणियुं, अवसर मा ध्यो एण ॥ पें मनमां हारव्या घणुं, जागो कायर एण ॥ ५ ॥ मलतणो बल मल विण, जाणे नहिं हे कोय ॥ मुग्धमने पें मृग अठो, उल बल हवे क्यों होय ॥ ६ ॥ नयण प्रमुख बोल्या हवे, सुण सामी मोहराय ॥ न करो चिन्ता एवडी, करशुं दाय उपाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ आज निहेजो रे दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥ मोह महीपतिने इम वीनवे, कर जोडीने काम ॥ तुज मुख आगें वड वडा वीर हे, धरधीरज अभिराम ॥ मो० ॥१॥ ए कूकर ज्युं फिरे अब नातलो, देखाडुं हुं शूर ॥ खजूत त्यां लगी ज्योति करे फिरो, ज्यां नवि उग्यो सूर ॥ मो० ॥ २ ॥ अवसरधकी जे तेज लही करी, नीच हुई दुःख जाय ॥ सूरज ज्योनि न दाहक तेहवी, जेहवी वेजू धाय ॥ मो० ॥ ३ ॥ टीटोडी पंखीनी परें

हुवे, पाव धरे ठे एह ॥ मिंमकनी परें सोर करे रह्यो, अल्प लहीने मेह ॥ मो० ॥ ४ ॥ वरसालाना ज्युं वहे वायरा, ओछाना ज्युं नेह ॥ एहनी पण ठे परहत्त संपदा, फटक दिखाडे ठेह ॥ मो० ॥ ५ ॥ आज न कोइ तुज जोडें अने, सुरपति नरपति जोय ॥ संसारी प्रचुता पूरी लही, तुज सम तुंहीज होय ॥ मो० ॥ ६ ॥ हेला खेलामां जग जीपीयो, तुं गिरुओ गंजीर ॥ नहानाशुं थें युद्ध करो नहिं, सरिखा सरिखी जीर ॥मो०॥७॥ जनकें काढयो परथी एहने, फरियो देश विदेश ॥ अरिहंत नृप सेवाथी इणे लह्यो, रुद्धितणो लवलेश ॥ मो०॥ ८ ॥ एहनी चिन्ता मनमां मत धरो, मत ल्यो एहनुं नाम ॥ चणक उछलियो नावि न जांजशे, लोक कहाणो आम ॥ मो० ॥ ए ॥ इम सुणी मोह महिपति बोलियो, मलकीने मन मांही ॥ हाथ न देख्या जे तें एहना, तो इवडो मद कांही ॥ मो० ॥१०॥ अवगणना एहवी नवि कीजियें, ए कंमा असराल ॥ वैरी व्याधि न नहाना जाणियें, दुःख सरोवरनी पाल ॥ मो० ॥ ११ ॥ मोह नहीं के एह नहिं हुवे, बेहुमांहे एक वात ॥ अवसर आव्यां टालो किम हुवे, ताप मुखें गले घात ॥मो०॥१२॥ युद्ध कथा पण क्षत्री धर्म नवि रहे, न धरुं ममता एह ॥ धर्ममंदिर कहे मोह महा बली, हुकम कीयो सुणो तेह ॥मो०॥१३॥

॥ दोहा ॥

॥ पासेंनी सेवक जणी, कहेवे जे वड वीर ॥ मिथ्यावाणी जेरी ए, वजडावो धरि धीर ॥ १ ॥ जेरी शब्द सुणी करी, सज्ज हुआ जट वृंद ॥ जय लक्ष्मी वरवा जणी, मन आणे आनंद ॥ २॥ मन्मथ सुत आदें करी, वड वड वीर नरिंद ॥ सज्जाइ सवली करे, जांजण अरिदल फन्द ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग मारु अथवा रुयन देव मोरा हो ॥ए देशी॥ अनिमानी हो राजा अनिमानी हो ॥ मोह महिपति कोपियो, मनमां रुइ ध्यानी हो ॥ राजा अनिमानी ॥हो०॥१॥ जडता नारी तिणे समे, शृंगार बणावे हो ॥ मांगलिक मुख उच्चरे, अय तिलक करावे हो ॥ रा० ॥ २ ॥ हिंसा हरिणाक्षी मली, जय मंगल गावे हो ॥ बाल गोपाल सहु जणे, मोह चढने दावे हो॥ रा० ॥ ३ ॥ पाप नाम्ने जट योलियो, विरुदावली नीकी हो ॥ विवेक वीरनी शोन जो, सेना सव फीकी हो ॥ रा० ॥४॥ अनरथ दंड कबाण लेइ,

वांकी अति तीखी हो ॥ मति अज्ञान नाथडा नखा,वाणावलि शीखी हो ॥ रा० ॥ ५ ॥ ताप स्वनाव ते टोप ठे, तर्जन अति लीधी हो ॥ मद सन्नाह ते पहेरियुं, जिनशाली कीधी हो ॥ रा० ॥ ६ ॥ मिथ्यावाद वाजित्र घणां, वाजे तिण वेला हो ॥ वज्र थइ शूरा सहु,तव हूआ नेला हो ॥ रा० ॥ ७ ॥ नारी कर्मतणो उदे, मुंहूर्त तिहां साध्यो हो ॥ नीच संग गज पर चढी, जाणे जय वाध्यो हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ पाप विकार प्यादा घणा,मुख आगें कीधा हो ॥ आर्त्त ध्यान वंधूक लेई, हवे वंछित सीधां हो ॥ रा० ॥ ९ ॥ पाप मनोरथ रथ नला, सजिया रण सारु हो ॥ काम विकार तुरंगमां, वायु वेग ज्युं वारु हो ॥ रा० ॥१०॥ अति अनिमान ते हाथिया, पर्वत सम दीसे हो ॥ मेघतणी परें गाजता, मोह देखी हीसे हो॥ रा० ॥ ११ ॥ प्रमाद सेनानी कियो, आप मोहें मान्यो हो ॥ चतुरंग सेनायें परवस्यो, अब नायक जाण्यो हो ॥ रा० ॥ १२ ॥ नरपति तेडीने कहे, होजे हवे शूरो हो ॥ तें श्रुतज्ञानी पाडिया, परतो तुज पूरो हो ॥ रा० ॥१३॥ मेरुथकी दक्षिण दिशें, प्रायें परमादो हो ॥ वांध्यो मोहप्रसादथी, अधिको उन्मादो हो ॥ रा० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणपरें जोरो मोहनो, सुणियो वीर विवेक ॥ सज्ज हुवे इक तानशुं, जूजणनी धरि टेक ॥ १ ॥ दृग्गोचर दल मोहनां, इक दिन मलियां आय ॥ पर दल दरियावेल ज्युं, कायरने मन थाय ॥ २ ॥ आनंद अधिको शूर मन, जाणे आज विवाह ॥ आरण जेलणरो करे, मनमांहे उत्साह ॥ ३ ॥ जवके दामिनीनी परें, कूदावे हथियार ॥ उन्नमिया आषाढ ज्युं, घोरघटा जलधार ॥ ४ ॥ समरावे रणजूमिका, विषम विदारे दूर ॥ वीर विवेकतणो नलो, राजनीति अंकूर ॥ ५ ॥ हवे मनमंत्री पण तिहां, आवे सुतने प्रेम ॥ क्षण विवेक क्षण मोहशुं, जाय मले ठे एम ॥ ६ ॥ तिहां जाये तव तेहनो, जय वंछे मन एह ॥ इण अवसर विच आविया, संधिपाल सुसनेह ॥७॥ इहां ठे अध्यवसाय ते, संधिपाल सुखदाय ॥ पहेली वीर विवेकने, अरज करे मन लाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ उठ कलालणी नर घडो हे, नयणे नींद निवार ॥ ए देशी ॥ सुण

साहिब अम वीनति हो, मन देइने आज ॥ सेवक में नहिं केहनो हो, साधुं अवसर काज ॥ रायजादा वीरा हो, थें राजन गे रढीयाल ॥ रा० ॥१॥ ए आंकणी ॥ हित वाणी ठे अमतणी हो, हृदय कमल सुविचार ॥ तुं प्रजु आज हुउ सही हो, नाग्यतणे अनुसार ॥ रा० ॥ २ ॥ पण ए मोह नृप आवियो हो, जूनो राजा तेह ॥ अवगणियें क्युं एहने हो, अनंत गुणारो जेह ॥ रा० ॥ ३ ॥ कटक विकट सबलो घणो हो, वली पूरो परिवार ॥ वड शाखा ज्युं विप नखो हो, व्यापि रह्यो संसार ॥ रा० ॥ ४ ॥ कोट खजीनो कां नही हो, ज्युं मानस अंनोज ॥ सकल क्रियामें सुंदरु हो, कुण ले इणरो खोज ॥ रा० ॥ ५ ॥ इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र जे हो, माने एहनी आण ॥ अवर न को एहवो अठे हो, इणशुं साधे वाण ॥ रा० ॥ ६ ॥ जो थें मोह न मानियो हो, एने दोप न कोय ॥ हंस नणी वहालो नहिं हो, मेह क्युं चूंमो होय ॥ रा० ॥ ७ ॥ बहु जनने जे वालहो हो, तिणशुं क्युं रीसाय ॥ अन्न अधिक प्यारो सहु हो, अंत समे न सुहाय ॥ रा० ॥ ८ ॥ पग पग देखूं एहनो हो, लश्कर लांगर जोर ॥ मोह सेना सागर जिसी हो, तुऊ दल एको कोर ॥ रा० ॥ ए ॥ तीन जुवन मां ए अठे हो, तुं इक नरमें होय ॥ ते पण आरजमां वसे हो, तिहां पण नविजीव कोय ॥ रा० ॥ १० ॥ तिहां पण शुन्न मतिमां वसे हो, वली रुचि शुद्ध प्रतीत ॥ ते लोकोनो राजियो हो, तुं ठे लोकातीत ॥ रा० ॥ ११ ॥ ताहरी सेना पण सहु हो, तेहने मिलशे जाय ॥ ते सुख विरलो योनशे हो, अर्क तूल करे न्याय ॥ रा० १२ ॥ कुण न सेवे तेहने हो, नव्य अजव्य अपार ॥ कोइक विरलो योनशे हो, तुऊ वेला निरधार ॥ रा० ॥ १३ ॥ तुं हमणां वाध्यो अठे हो, घटतां नहिं ठे वार ॥ उ अनादि वाध्यो रहे हो, अमर कीधो अवतार ॥ रा० ॥ १४ ॥ तुं सेवकने सुख दिये हो, अखय अगोचर जेह ॥ उ इन्द्रियने सुख दिये हो, सुख मीग ठे तेह ॥ रा० ॥ १५ ॥ तुं सेवकने दाखवे हो, गिरि कंदर वन वास ॥ उ आपे सेवक नणी हो, मंदिर नारी विलास ॥ रा० ॥ १६ ॥ तुं परिवारने गेडवे हो, एकाकी वहराय ॥ उ मेले पुत्र मित्रने हो, लोकोने मन नाव ॥ रा० ॥ १७ ॥ बूढा सेवक ताहरा हो, जूना जर्जर तेह ॥ अरण तरुण तीखा घणं हो, तसु सेवक सुसनेह ॥ रा० ॥ १८ ॥ तेह

नणी ते संती कीती हो, खल खूटणनी वात ॥ फिरजावो निज घर नणी हो, श्रम मन एह सुहात ॥ रा० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम कहीने चूप करि रह्या, संघिपाल तिणवार ॥ हसी करी वीर व दे तिहां, वाह वाह मतिसार ॥ १ ॥ मोहतणो महिमा कही, जाण्यां व चन विशाल ॥ क्युं कर ठानो होयशे, मा आगें मोशाल ॥ २ ॥ में जा ण्यो प्रीठयो अछे, ठल बल एहनुं दीठ ॥ व्याघ्रमुखें ए शियाल छे, तुमने लागे मीठ ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ वीर विवेक वलतो क हे जी,सांजलो थें संधिपाल ॥ वीच करो नल माणसां जी,गुण कह्या आ लपंपाल ॥ वी० ॥ १ ॥ मेह वहालो सहुने हुवे जी, हंसने न्याय सुहा य॥ पंख करे दिन तम करे जी, श्याम काय उज्ज्वल थाय ॥ वी० ॥ २ ॥ मानसवाही हंस छे जी, उज्ज्वल मोति आहार ॥ पंख वेहु धवली करे जी, दूध पाणी करे सार ॥ वी० ॥ ३ ॥ कटक घणुं तसु आखियुं जी, चुं गर तृस सम तेह ॥ त्यां लगी धूली उमे घणी जी, ज्यां लगी वूठो न मेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ लोह सम ते जगमें घणा जी, हेम ते अल्प तुं जोय ॥ चं दन वन वन नवि हुवे जी, गज गज मोती न कोय ॥ वी० ॥ ५ ॥ तिमि रतणी परें ते घणा जी,सूरज एकज थाय ॥ अंकुश केवडो गज जिहां जी, शंकुनी वात उहराय ॥ वी० ॥ ६ ॥ रंकनां वृंद श्यां कामनां जी, एकज श्रीमंत सार ॥ सिंह एको बहु त्रासवे जी, शियालनी कांइ नहिं कार ॥ वी० ॥ ७ ॥ अमर थें एहने आखियो जी, देखश्यां ते हवे आज ॥ कस वटी आपथी आवशे जी, जुठी ए शरदनी गाज ॥ वी० ॥ ८ ॥ बाह्य सु ख देखिने राचिया जी, एहना मेचक नूर ॥ अन्तर सुख नवि अनुनव्यां जी, आतम अनुनव नूर ॥ वी० ॥ ९ ॥ नोग संयोग जे ए दिये जी,तिहां पण महारुं सुख ॥ एहथी निःकेवल नरक छे जी, घोर अनि जोर दे डुःख ॥ वी० ॥ १० ॥ नव जल तारण एकला जी, कुटुंबनुं त्यां नहिं काम ॥ राग करी मोहिया मोहशुं जी, जाणियुं नहिं निज धाम ॥ वी० ॥ ११ ॥ था हरो वांक इहां को नहिं जी,वड वडा जोलव्या धीर ॥ रूपन कलेवर नेह

नम्यो जी,वलनड् मोह करी वीर ॥वी०॥१२॥ क्रोधथी कंस चूक्यो सही जी, मान डुर्योधन देख ॥ दंज उदायन नृप मारियो जी, लोन संजूम विशेष ॥ वी० ॥ १३ ॥ कंमरिक प्रमादें पाडियो जी, चंमप्रद्योतन काम ॥ राग थी ब्रह्मदत्त डुःख लह्यां जी, द्वेषथी कोणिक श्याम ॥ वी० ॥ १४ ॥ व्यस नथी कीचक चूकियो जी, कपिल मिथ्यात्वथी जेम ॥ पासंम संग कुसंग थी जी, बहु नर चूकिया एम ॥ वी० ॥ १५ ॥ जगत जन पीडिया बहु परें जी, मोह निःकारण शत्रु ॥ तेह अन्याय हुं केम सहुं जी, थें सुणो महा रा मित्र ॥ वी० ॥ १६ ॥ माहरे सेवकें को करें जी, आचखो होय अन्या य ॥ तेहनुं नाम लेइ दाखवो जी,शीख देउं सुखदाय ॥ वी० ॥ १७ ॥ ध र्मथी जय हुवे जगतमें जी, पापथी क्षय कहेवाय ॥ एह बेहु वातां अछे जी, आदरो मन तणी दाय ॥ वी० ॥ १८ ॥ जिम जिम खुंद खमे एहना जी, वली कीयां वचन प्रमाण ॥ तेम तेम ए शिर चढि गयो जी, शीख देउं अनिराम ॥ वी० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एह वचन सुणि वीरनां, संधिपाल गया धाम ॥ हवे श्री वीरविवेक नृप, योधाने कहे आम ॥ १ ॥ शूरा पूरा सांजलो, आयो ठे रण एह ॥ हाथ तमारा देखस्यां, अरि दलकादिम एह ॥ २ ॥ साथी हाथी ठो तमें, अरिदल एह करीर ॥ जयलक्ष्मी वरस्यां हवे, जो करशो थें नीर ॥ ३ ॥ हार मुकुट केयूरें करी, शोजा शूरा नांहि ॥ रिपु सन्मुख घायें करी, यश पसरे जगमांहि ॥ ४ ॥ असि धारा तीरथ अछे, देवतणी गति देय ॥ निज जुज बल संजारिनें,साम धर्म धरि धेय ॥५॥ अंगज अंग ने अंगना,राज का ज जीव प्राण ॥ त्यां लगी सबला वह्नहा, ज्यां न मिले अरि बाण ॥६॥ वाहन कवचें शस्त्र नरि,वहे आमंबर एम ॥ अंतरंग साहस विना, जय प द प्राप्ति केम ॥ ७ ॥ बोलो कुण क्यां योजशो, निज निज लेइ परिवार ॥ कोण कोण केहने जीपशे तव बोल्यो सुत सार ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ राग सोरठ ॥ सेवा बाहिरो कहियें को सेवक ॥ए देशी ॥ नंदन नव वैराग वदे तव, विनयवंत वरदाय ॥ साहिब आगें निज गुण वर्णन, कहो किण कीधो जाई ॥ नं० ॥१॥ पण साहिब जे पूठी वाणी, तसु उत्त

र हुं आखुं ॥ अरि मुख जाखुं पहेली अणियें, टेक जली परें राखुं ॥ नं० ॥ २ ॥ चक्रतणी परें जव जव फेरे, चूर जविकने जेह ॥ विपरित जाव अ जाव वडो अरि, हुं वश करशुं तेह ॥ नं० ॥ ३ ॥ शमरस रस आदि क रीने महारा, अंतर सेवक ताजा ॥ करकंडू आदिक देईने, बाहिज सेवक साजा ॥ नं० ॥ ४ ॥ पंचम गुण ठाणकनी धरती, देश विरति जयदाई ॥ देशें ऊणी पूरव कोडी, मान्य कहुं मन लाइ ॥ नं० ॥ ५ ॥ धर्म ध्यान म ध्यम त्यां जाणो, प्रतिमा श्रावक केरी ॥ खट आवश्यक किरिया कीजें,व्रत लघु शुद्ध विहारी ॥ नं० ॥ ६ ॥ सडशठ प्रकृतितणो तिहां बांधी, मोहत णो मद गालूं ॥ अप्रत्याख्यानतणो क्षय कीधो, वैरकदमी वालुं ॥ नं० ॥ ७ ॥ आनंद ने कामदेव कहीजें, ते मुज सेवक सारो ॥ खट आवश्यक पु रोहित केरो, ए रणखेत विचारो ॥ नं० ॥ ८ ॥ हवे संवेग ने निर्वेद बेउ, लघु सुत जोला शूरा ॥ मोह महिपतिनुं दल मोडुं, जुजबली जीम स नूरा ॥ नं० ॥ ए ॥ ठठो सत्तम गुणठाण धरती,ते रण खेत बुहाखो ॥ अन्तर मुहूर्त्त स्थिति मति वेहु,चढी उतार निहाखो ॥ नं० ॥१०॥ त्रेसठ प्रकृति प्रमत्त बांधे, सत्तर अठावन्ना ॥ मोहतणुं बल पल पल ठीजे, सहु वदे धनधन्ना ॥नं०॥११॥ निरालंब धर्म ध्यान विशुद्धा,तेहिज अंतर वेली ॥ पां चे पांमव बाहिज सेवक, काढे मोहने ठेली ॥ नं० ॥ १२ ॥ अप्रमत्त गुण ठाणथी करसुं, अपूर्वध्यान विचारी ॥ गुणश्रेणीयें गुण निज संक्रम,क्रिया दूर निवारी ॥ नं० ॥ १३ ॥ सत्तम अंतें शुक्ल ध्याना, सामो आवे शूरो॥ मोह महीपतिनुं बल तूटे, अनुजव होय सनूरो ॥ नं० ॥ १४ ॥ इणि परें पुत्रें फोजां जाख्या, हवे समकित मंत्री बोले ॥ जवजल तारण पोत प्रवी णो, कुण आवे मुज तोलें ॥ नं० ॥ १५ ॥ ए संसार आदि अपारा, मि थ्यानूपण जारी ॥ त्यां जविजनने हाथ ग्रहीने, हुं कताडुं पारी ॥ नं० ॥ १६ ॥ देव गुरु धर्म तत्त्व देखाडं, जांजुं कर्म विकारा ॥ श्रद्धा करुणा आ स्तक माहरा, अंतर सेवक सारा ॥ नं० ॥ १७ ॥ बाहिज सेवक श्रेणिक केशव, इत्यादिक बहु लहिजें ॥ क्षायिक जाव खजीनो पामी, विरति क्रिया न वहीजें ॥ नं० ॥ १८ ॥ तेत्रीश सागर किंचित्अधिको, मान कहीजें एही॥ चोथे गुणठाणे बहु जाजे, धर्मरागी गुण गेही ॥ नं० ॥ १९ ॥ प्रकृति सत्योत्तेर चोथे बांधें, चूंमी प्रकृति निवारे ॥ धर्म ध्यान मंदो सहु दीसे,

आरत रोड् विचारे ॥ नं० ॥ २० ॥ मोहतणो मंत्री मिथ्यादृग्, ते हुं जीपन जोरें ॥ मोहतणुं दल मुडशे तवही, देखाडे निज तोरें ॥नं०॥२१॥ इणिपरें समकित मंत्रीयें आख्यो, शुक्ल वल कीध प्रकाशा ॥ धर्ममंदिर कहे अधिको कीयो, वीर विवेक उल्लासा ॥ नं० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उपशम शूरो वोलियो, सुण स्वामी मुज वाण ॥ श्रेणिसुथिर रण आवमो, गुणगणे गुण खाण ॥१॥ आलस निद्रा नय सकल, दूर निवारुं संग ॥ क्रोध जोधने जीपशुं, नव गुणगणे रंग ॥ २ ॥ क्रोध दावानल क्रूर ठे, संताप्यो संसार ॥ हुं सवलाने सुखकरुं, निज गुण अमृत धार ॥ ३ ॥ शत्रु मित्र सम जावने, अन्तर मुज परिवार ॥ सागरचंद्र नाग दत्त वहु, वाहिज सेवक सार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ठ्ठी ॥

॥ वेडले जार घणो ठे राज, वातां केम करो ठो ॥ ए देशी ॥ नवमे गुणगणे वली कजा, शूरा पूरा सारा ॥ मोहतणो हवे मद उतारुं, शुक्ल ध्यान हथियारा ॥ महोटो मार्दव शूर सुजाण, अरज करे कर जोडी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ गाढो अनमी मान जे वेरी, जीपीश हुं रिपु तेहो ॥ प्राणायाम तें अंतर सेवक, अति वल मन वच देहो ॥ म० ॥ २ ॥ वा हुवली गणधर इन्द्रजूता, ए मुक वाहिर शूरा ॥ अहंकार ठोडीने दीधो, अनुजव लीध सनूरा ॥ म० ॥ ३ ॥ आर्जव सामंत तिहां किणे वोल्यो, माया जीपणहारो ॥ शरणस्वरूपी शान्ति शिरोमणि, अंतरंग परिवारो ॥ म० ॥ ४ ॥ राजा पूठयो तेणे प्रकाश्यो, माया वचन अवोला ॥ कुल क कुंवर प्रमुख मुज वाहिज, सेवक राख अमोला ॥ म० ॥ ५ ॥ मोहत णो जे महोटो सेवक, दंज कहीजें दरियो ॥ ते पण हुं नवमे गुणगणे, जीपण वीडो धरियो ॥ म० ॥ ६ ॥ संतोष महोटो सामंत कहीजें, ते हवे वोले एमो ॥ तृष्णा तरल तरंगिणी तरशुं, धरशुं धृति रति प्रेमो ॥ म० ॥ ७ ॥ परम समाधि तणो अंकूरो, ते मुज वहालो जोधो ॥ कपि लादिक मुज सेवक सारा, त्यागी अंतर सोधो ॥ म० ॥ ८ ॥ दशम गुणगा ण गाम लहीने, सूक्ष्म लोजने जीती ॥ संपरायकी कीरिया सवली, तव पें होय वितीति ॥ म० ॥ ९ ॥ उत्साह सेनानी तिहांकणे वोल्यो, सुण

सामी मुज वातां ॥ सबली फोजामें हुं फिरशुं, में लायी तुम धातां ॥ म० ॥ १० ॥ सबला शूराने उपकारुं, बड बड बिरुद संभारुं ॥ वेद विकार निवारण अंतर, सेवक सखरा धारुं ॥ म० ॥ ११ ॥ इन्द्रानुज ने महागिरि मुनिवर,बाहिज सेवक शूरा ॥ सबला शुभ गुणठाणामांहे, बलडा पूं जयतूरा ॥ म० ॥ १२ ॥ विमलबोध कोटवाल कहे इम, सुण सामी मुज वाणी ॥ मोहमहिपतिना चर जाणुं, निर्णय तुरत पिछाणी ॥ म० ॥ १३ ॥ वचन अर्चन अंतर सेवक, दृढमति दृढ धर्म धारा ॥ बाहिज सेवक धर्म रुचि प्रमुखा, बहुविध भक्ति विचारा ॥ म० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें बीजो पण तिहां, निज निज बल परकाश ॥ मोहरायने जीवबा, आणे अधिक उलास ॥ १ ॥ वनिता पण सुभटां तणी, हरखी बोले एम॥ जिण विध प्रीतम जूजशो, में पण जूजुं तेम ॥ २ ॥ निज प्रीतम पासें रहि, करश्यां शस्त्र प्रहार ॥ अबला सबला काम में, करश्यां स्वामी तिवार ॥ ३ ॥ इण परें सबला सापरो, साहस सबलो जोप ॥ राजा वीरविवेक तब, अधिको सर्पित होय ॥ ४ ॥ अधिकाधिक परिणामशुं, पर्यालोचन सार ॥ तेहिज बाजां बाजियां, शिवपद मंगलतार ॥ ५ ॥ इणि अवसर हवे मोह नृप, सज्ज हुई सुविचार ॥ सबला जोधाने कहे,सुणजो ए निर्धार ॥ ६ ॥ चढशे वीर विवेक हवे, रण करवाने काज ॥ ढील न कीजें तो भलो, मुजरो थो मुज आज ॥ ७ ॥ कुण केही फोजें रहो, माली होशे तेह ॥ नाम लेइने दाखवो, अरि मुज भाले जेह ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ देशी विंछीयानी ॥ मयण वयण तब उच्चरे, सुण तातजी माहिब आज रे लाल ॥ आप मुखें करी आपणी, कीर्त्ति करतां हुवे लाज रे लाल ॥ म० ॥ १ ॥ तृणसम हरिहर जाणजो, दावानल सम मुज जोर रे लाल ॥ नासोकड हवे न्हासशे, मुज आगल ए ठे चोर रे लाल ॥ म० ॥ २ ॥ लघु भाइ श्रीनेमनो, वली आणंद रुषि नंदिषेण रे लाल ॥ आर्द्रकुमर पुलवाखुड. में जीत्या मन एकवेण रे लाल ॥ म० ॥ ३ ॥ दश बरा मूना एहना, जीत्या कहुं केनां नाम रे लाल ॥ बल धल करीने जेतला, मुज साथी छे जनिताम रे लाल ॥ म० ॥ ४ ॥ ललित पंच नयोतना, म

धु कुमर अने गर्दनिल्ल राय रे लाल ॥ नाम लेइ केता गणुं, सेवक बाह्जि कहेवाय रे लाल ॥ म० ॥ ५ ॥ फूल वसंत अंबुद घटा, कोकशास्त्र शृंगार संजोग रे लाल ॥ स्नान अने मद पान ते, मुऊ अंतर सेवक जोग रे लाल ॥ म० ॥ ६ ॥ राग वदे हवे सांजलो, हुं जतन करुं रागंध रे लाल ॥ मयण तणो पण मित्र छुं, जोडुं हुं सबली संध रे लाल ॥ म० ॥७॥ किहां किहां आंख ठे, किहां चंड अठे किहां मुख मुग्ध रे लाल ॥ परवाला किहां अधर ठे, ए उपमा राग निरुद्ध रे लाल ॥ म० ॥८॥ किहां हीरा किहां दशन ठे, किहां कनककलश मांसग्रंथ रे लाल ॥ किहां वापी किहां नाजि ठे, पण रागवशें ए संध रे लाल ॥ म० ॥ ए॥ सडण पडण विध्वंस ठे, अंग अशुन्नतणो जंमार रे लाल ॥ ते देखाडी जोलवुं, जोरावर राग अपार रे लाल ॥ म० ॥ १० ॥ मीठा मन्मथ बोलडा, मिलवो निलवो बहु प्रेम रे लाल ॥ अंतर सेवक ठे बहु, माहरे जोरावर एम रे लाल ॥ म० ॥ ११ ॥ इन्दुपेण बिन्दुपेण जे, चिलाती चोर इलापुत्र रे लाल ॥ बाह्जि सेवक माहरा, पहेलाथी महारा मित्र रे लाल ॥ म० ॥ १२ ॥ द्वेष वदे हवे सांजलो, हुं करडो शूरो तुऊ रे लाल ॥ कुण अठे जगमें तिको, जे करशे मुऊशुं ऊुऊ रे लाल ॥ म० ॥ १३ ॥ चंम रुड़ बिन्नत्समां, दर्शन अति जयनो हेत रे लाल ॥ सन्मुख कुण जोई शके, रिपु जिपुं उन्ने खेत रे लाल ॥ म० ॥ १४ ॥ मत्सर निंदा पिशुनता, संग्राम शराप ने मर्म रे लाल ॥ आक्रोशन अति चंमता, अंतरसेवक धर्म रे लाल ॥ म० ॥ १५ ॥ कौरव ने चंमकोशियो, पालक ने संगदेव रे लाल ॥ कमगादिक बहु प्राणिया, साचवे ठे माह्री सेव रे लाल ॥ म० ॥ १६ ॥ हवे मिथ्यामंत्री बोलियो, सुण मारी शक्ति अनंत रे लाल ॥ तीन जुवनमां प्राणिया, मुऊ सान्निध्यथी जामंत रे लाल ॥ म० ॥ १७ ॥ जाति योनि कुल कोडी ए, नहिं कोइ ठे ते ठाम रे लाल ॥ सेवक वीर विवेकना, बहु जाली पीड्या श्राम रे लाल ॥ म० ॥ १८ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मने, वश पड्यां प्राणी जेम रे लाल ॥ अंतरंग मुऊ कामना, किंकर सघलाये तेह रे लाल ॥ म० ॥१७॥ मति विपरीत तणा धणी, पालक कपिलादिक तेम रे लाल ॥ बाह्जि सेवक बहु अठे, पार नावे गणतां एम रे लाल ॥ म० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्याम शरीरी दूबलो, मींयो जोर अनंत ॥ लाल रंग लोचनधरु, त्रासे तेहथी संत ॥ १ ॥ क्रोध जोध ठे एहवो, ते बोल्यो सुण स्वामि ॥ कुण मुज होड करे इहां, ते दाखे तसु नाम ॥ २ ॥ नयण वयण करी हो ठ वहु, धूजावुं हुं जोर ॥ नरक भुजंगें वहु वसुं, थोडो बीजी ठोर ॥ ३ ॥ चंमनाव डुर्वचनता, तामस वेर सराप ॥ ए मुज सेवक शाश्वता, कुण सहे एहनो ताप ॥ ४ ॥ संन्यासी शिशुपाल नृप, कुरुड दीपायन जोय ॥ ब्रह्मदत्त आदें करी, वहु सेवक मुज होय ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ राजीमती राणी इणिपरें बोले ॥ ए देशी ॥ सुणजो स्वामी अंतरजामी, हवे अहंकार कहे शिर नामी ॥ सु० ॥ तीन भुवनमां वासो मेरो, मानवमांहे देखो घणेरो ॥ सु० ॥१॥ विद्या ज्ञान तणो फल हारे, जे नर होवे माहरे सारे ॥ सु० ॥ गुरुजननो पण माहरे लेखो, मयमत्त हाथीनी परें देखो ॥सु०॥२॥ चक्रवर्त्ति आप तप चाख्यो, मेरो स्वरूप इणीपरें नांख्यो ॥सु० ॥ दूर विनीत मुज नाव सदाइ, सेवक सेवे चित्त लगाइ ॥ सु० ॥ ३ ॥ चमर दानव ने प्रतिवासुदेवा, लावे ज्ञानें करे मुज सेवा ॥सु०॥ दंन कहे मुज वातां महोटी, अवसर नावे एह हयोटी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पीणा सर्पतणी मुज करणी, अंतरमां कातर अनुसरणी ॥सु०॥ मीतुं बोलुं पाशमां पाडुं, सूक्ष्म बादर निगोद देखाडुं ॥ सु० ॥ ५ ॥ जूतुं बोलुं ठल बल साधूं, वेश्या संयाती डोह आराधुं ॥ सु० ॥ अंगारमर्दक आषाढनूता, कपट करा मुनि नारे जूता ॥ सु० ॥ ६ ॥ महाबल वनिता गोत्र जे धरियो, पीठ महापीठ तेहिज वरियो ॥ सु० ॥ सेवक सखरा तिर्यंच मांहे, संसार फेरुं जाली बांहे ॥ सु० ॥ ७ ॥ लोन बोल्यो हुं महोटो वीरो, हुं संसारें जाचो हीरो ॥ सु० ॥ आदर मान दीये मुज देवा, नरवर पन्नग सारे सेवा ॥ सु० ॥८॥ जल थल गिरिवर नूमि पराइ, ते अवगाहुं क्षणमें जाइ ॥ सु० ॥ नूख तृषा तप शीत न जाणुं, लालच ने सुख सव लोनाणुं ॥ सु० ॥ ए ॥ ममता आरंन मूर्छा महोटी, कृपण साहस ए सेवक कोटी ॥ सु० ॥ सुनूम चक्री अने नृपनंदा, लोनदय केशरी मुनिचंदा ॥ सु० ॥ १० ॥ अंतर वाहिज सेवक जाजा, कोइ न जाने अमची माजा ॥ सु० ॥ हवे प्रमाद ते शूर

सवाइ, राजा आगें वोल्यो धाई ॥ सु० ॥ ११ ॥ ऊंची पदवी कोइक चढियो, माहरी शक्ति तुरत ते पडियो ॥ सु० ॥ चउदे पूर्वधरे केइ मुनीशा, उपशान्तमोही जेह जोगीशा ॥ सु० ॥ १२ ॥ तेह निगोदें जाये सीधा, प्रमादना संग जेणें लीधा ॥ सु० ॥ स्नान मज्जन जलकेलि शिखाउं, नाटक चेटक वार देखाउं ॥ सु० ॥ १३ ॥ पासें खेलुं विकथा नाखुं, परनी निंदा ते पण दाखुं ॥ सु० ॥ वैर विरोधना वंश वधारुं, आलस ऊंघ घणेरी धारुं ॥ सु० ॥ १४ ॥ तेरे काठिया व्यसन जे साते, तिणशुं मेरे मिलती धाते ॥ सु० ॥ नट विट संगति विषया अंशा, अंतर सेवक मुज अवतंसा ॥ सु० ॥ १५ ॥ मंगू शेलक मरीच वदीतो, कुंमरीक सौदास में जीत्यो ॥ सु० ॥ बाह्य सेवक इम केता दाखुं, मुज गुण निज मुख केता नांखुं ॥ सु० ॥ १६ ॥ धर्ममंदिर कहे प्रमाद घोरा, वीर विवेकशुं न चले जोरा ॥ सु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणिपरें सामंत वोलिया, शूरा पूरा साथ ॥ मोह शील हवे पाखरो, नावे केहने हाथ ॥ १ ॥ जूठी ने सत्यामृषा, डुंद दमामा दीध ॥ हलकारे रण जीपवा, अमलकराए कीध ॥ २ ॥ शुनध्यान अपध्यान वे, आमा साहामा होय ॥ शुद्धाशुद्ध उपयोग अति, महिष वृपज्ञ युद्ध जोय ॥ ३ ॥ अपध्यान नर वोलियो, करि पहिलो हथियार ॥ जोरावर मुज शस्त्र छे, इणसुं जीत अपार ॥ ४ ॥ रहनेमी नल राय वहु, चूकायां नर नार ॥ मुज आगें तूं नां टके, नाश मूक हथियार ॥ ५ ॥ शुद्धध्यान वोल्यो हवे, तुं महेलो मनमांहि ॥ शीख इसी शूरा कहे, तुं कायरनी बांहि ॥ ६ ॥ दृढप्रहारी चिलातीयसुत, हत्याकारक जेह ॥ में ताख्या एक पलकमें, वांह ग्रहीने तेह ॥ ७ ॥ वहुकालें तुं आवियो, सांकडे माहारे साथ ॥ हवे जीपीने मूकशुं, जो करशे जगनाथ ॥ ८ ॥ इणिपरें वेहु कटकमां, सज्ज थई तिण वार ॥ निज निज वल परकाशता, वदे ते वारो वार ॥ ९ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ तुंगिया गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥ ब्रूजनो हवे जूज सुणजो, न जन मन लाय रे ॥ अवर जूजे नरक जइयें, एहथी शिव थाय रे ॥ जू० ॥ १ ॥ मिथ्यात्व तेहिज राति वहुली, ज्ञान नानु प्रकाश रे ॥ तिण समे मांहो मांहि अडिया, जोडिया धम्पि उल्लास रे ॥ ॥ जू० ॥ २ ॥ जोध

शूरो क्रोधसंती, जूझे वीर प्रसिद्ध रे ॥ आवश्यक पुरोहित जूझे, जय प्रतिज्ञा कीध रे ॥ बू० ॥ ३ ॥ जइ जाव ते तुरंग वेसी, जूझे मार्दव रुढ रे ॥ सरल अति हथियार लेइ, धायो मानने पूठ रे ॥ बू० ॥ ४ ॥ आर्जव ने संतोष वेहु, विवेकना बह वीर रे ॥ माया लोजशुं सबल जूझे, कां न करे तकसीर रे ॥ बू० ॥ ५ ॥ अतिघोर पहिला रूप जाणो, अनंतानुबंधिया चार रे ॥ छेदवा अपूर्व करणें, हुउ क्षेमाचार रे ॥ बू० ॥ ६ ॥ स्याद्वाद सिंधुर वेसि आवे, मंत्री सम्यक् दृष्टि रे ॥ आस्तिक्य आयुध हाथ लेइ, बोलावे रिपुदृष्टि रे ॥ बू० ॥ ७ ॥ मिथ्यात्व मोहनो मंत्री आयो, पंच रूप विकार रे ॥ एक घायें हण्या पांचे, समकित जोर अपार रे ॥ बू० ॥ ८ ॥ उपशमादिक वीर संग लइ,अप्रत्याख्यानी शत्रु रे ॥ गुणठाण चढतां नूमि चांपी, अरण्या हरख्या मित्र रे ॥ बू० ॥ ए ॥ हवे तिहां जय वैराग्य वीरें, वही आयो ज्यां मयण रे ॥ सज्ज हूई मदन बोल्यो, सांजल मोरां वयण रे ॥ बू० ॥१०॥ विषमशर हुं जगतजीता, तें सुण्यो नहिं कान रे॥ माहरां बाण ते उरग सरिखां, उतारुं तुऊ मान रे ॥ बू० ॥ ११ ॥ नासवानी कला ताहारी, तातनीशरे चित्त रे ॥ तुं नाश हवणां कहुं तुऊने, पस्ताइश तुं चित्त रे ॥ बू० ॥ १२ ॥ पुरुष नारी पंढ वेदें, रूप कीधां मयण रे ॥ वचन ए वैराग सुणिने, कोपियो कहे वयण रे ॥बू० ॥ १३ ॥ तीन रूपें हुं न बीहुं, सांजलजे तुं काम रे ॥ प्रबल पायक ताम दीसे, जलद नावे जाम रे ॥ बू०॥१४॥ इम कहीने पेहेला, तिणे ते पंढनारी वेद रे॥ शूर थइ वैराग्य वीरें, अरतिणो कियो छेद रे ॥ बू० ॥ १५ ॥ उदासीनता गज राज चढिया, वरछी अनित्यता जाव रे ॥ संवेग ने निर्वेद जाइ, आया तिण प्रस्ताव रे ॥ बू० ॥ १६ ॥ हास्य ने रति अरति शोकां, छेदिया तिण वार रे ॥ पछे तिणें पुंवेद छेद्यो, नाठा विषय विकार रे ॥बू०॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे वलि सम संतोष जट, रणखेत खुंदे जोर ॥ संजलना क्रोधादि सव, छेदे निज वल फोर ॥ १ ॥ विकट कटक नासी गयो, मोहतणुं बल क्षीण ॥ जीपे धीर विवेकना, सबल शूर परवीण ॥२॥ कुंजर संजलना जणी, खंम खंम बहु कीध ॥ दशमे गुणठाणे क्षपक, संतोषें यश लीध ॥३॥ आतम उद्यम जागियो, ज्ञान ध्यान जरपूर ॥ हरख्या वीर विवेक जट, मो

द सुनट चकचूर ॥ ४ ॥ मोहकटकनी योषिता,निजपति पडिया देख ॥ जल सूकां ज्युं कमलिनी, जीवन विण तनु शेष ॥ ५ ॥ मोहराय मन चिन्तवे, मुऊ नट पडिया नूर ॥ जोय नारी हवे नासतां, सन्मुख हो तुं शूर ॥ ॥ ६ ॥ शूर नणी दोय गति कही, जय अथवा ठे नाश ॥ रूपक श्रेणी रण नूमिमां, आवे अधिक उल्लास ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ देशी सूंबना गीतनी ॥ अथवा ॥ लागो सबल संग्राम, लागो सबल संग्राम, वे दल जूऊे नगरी बाहिरें हो ॥ ए देशी ॥ मोह महीपति आप, मोह महीपति आप ॥ आवे हो आवे हो, गज पर बेसी जूऊमें हो ॥ सबला करतो नाद ॥ स० ॥ नासो हो नासो हो, अध्यातम मूकी बूऊने हो ॥ १ ॥ देव दानव कुण होड ॥ दे० ॥ आगें हो आगें हो, नाग नय खमियो नहिं हो ॥ धीवरावे अति घोर ॥ धीव० ॥ वड वड हो वड वड उपशम शूरा नणी सही हो ॥२॥ धूज्या कायर प्राणी ॥धूज्या०॥ आयो हो आयो हो,मोह महीपति आकरो हो ॥ पीपल पान समान ॥पी०॥ धीरज हो धीरज, न रहे कोइ वातरो हो ॥ ३ ॥ अंधारुं आकाश ॥ अं० ॥ गई हो गई हो, रजें करी सघली दशे दिशा हो ॥ हाक अधिक हूंकार ॥ ॥ हाक०॥ सुनटां हो सुनटां हो, उपर शूर पडे धसी हो ॥४॥ लागे सबल संग्राम ॥लागे०॥ वे दल हो वे दल हो,जूऊे बूऊे कोविदा हो ॥ घोडा घोडे घेर ॥घो०॥ हाथी हो हाथी हो,हाथीशुं जूऊे तदा हो ॥ ५ ॥ पायक पायक लाग ॥पाय०॥ माजी हो माजी हो, माजीशुं नीडीया नला हो ॥ आवे राय विवेक ॥ आवे० ॥ हाथी हो हाथी हो, वेसी चढती कला हो ॥ ६ ॥ वरठी शुकलध्यान ॥ व० ॥ ऊगमग हो ऊगमग हो, सोहे हाथे जेहने हो ॥ नव वधूनो परिवार ॥ नव० ॥ साथें हो साथें हो, वधुकारे सहु तेहने हो ॥ ७ ॥ मोह वदे तव आप ॥ मोह० ॥ वीरा हो वीरा हो, धीरा हवे होशो नहिं हो ॥ नाश तुं चतुर सुजाण ॥ नाश० ॥ थारी हो थारी हो, मूलगी वातां ए सही हो ॥ ८ ॥ धर्म धार तुं माग ॥ धर्म०॥ मूको हो मूको हो, जीवतो तुऊने जाणते हो ॥ सुनट पड्या मन जाण ॥सु०॥ वेग हो वेग हो, करशुं अमृत आणने हो ॥ए॥ मो हुंते सब कोय ॥ मो हुं० ॥ जीवे हो जीवे हो, जोधा सबला मादरा हो ॥ सुदर व

हनी न्याय ॥धु०॥ शाखा हो शाखा हो, जेयां फिर पल्लवधरा हो ॥१०॥ जीत्या हो त्रणे लोक ॥जीत्या०॥ एहवो हो एहवो हो,मन्मथ ते सुणियो हशे हो ॥ तेहनो गुरु हुं तात ॥ ते०॥ जाणे हो जाणे हो, जूगे कयुं श्रा तम कसे हो ॥ ११ ॥ वज्र गदा हथियार ॥ वज्र० ॥ मुजने हो मुजने हो लागे नहिं ए सदा हो ॥ मंत्र तंत्र विष व्याल ॥ मंत्र० ॥ नावे हो नावे हो, मुज नेडा कोविदा हो ॥ १२ ॥ में बहुलां रण कीध ॥ में० ॥ कागं हो कागं हो, तरकस हाथ छे माहरा हो ॥ तुं शीखो सुखकार ॥ तुं०॥ कोमल हो कोमल हो, पुजल तन छे ताहरां हो॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोह राय गर्वे चढयो, वली बोले सुण वीर ॥ बहु वेला तुज हाथ मां, पहिराया जंजीर ॥ १ ॥ श्रादिम चक्री सुत जलो, नाम मरीच विख्यात ॥ सागर कोडाकोडिमें, फेरयो एम कहात ॥ २ ॥ रसनेन्द्रिय मुज सेवकें, कंम्डरीक तुज वीर ॥ झणमांहे बांधी करी, सातमी मूक्यो मीर ॥ ३ ॥ सत्यकी श्रेणिक श्रादि दे, तुज सेवक श्रति सार ॥ श्रविरति माहरी नारियें, बांधी लिया तेवार ॥ ४ ॥ जीत्या केता श्राखियें, तुं पण नाठो तेथ ॥ लाज तजी श्रायो वली, श्युं खाटिश तुं एथ ॥ ५ ॥ इम सुणी वीर विवेक हवे, उत्तर श्राखे एम॥ निज मुख ईड प्रशंसतो, लघुता न लहे केम ॥६॥

॥ ढाल श्रग्यारमी ॥

॥ प्रभु नरक पडंतो राखी, वाणी जाणी ॥ ए देशी ॥ राजा एसा वचन न बोलिश, गर्वतणुं तुं गेह हो ॥ शारद जलदनी गाज सरिखी, वाणी जाणी एह हो ॥ रा० ॥ १ ॥ मादल महोटा नाद करे बहु, श्रंतर पोला जाण हो ॥ श्रंतें साचा ते नहीं काचा, एह वडानी वाण हो ॥रा०॥२॥ पूर्ण कलश नां छलके जरियो, खाला वींकर जोइ हो ॥ छलके तोय श्रल्प पामीने, ए उत्तम तुज होइ हो ॥ रा० ॥ ३ ॥ पाकां पीपल पानतणी परें, खड खड करे तुं श्राज हो ॥ ते खडखड हुं श्राज उतारुं,जो करशे जिनराज हो ॥ रा० ॥ ४ ॥ मत मुजने तुं शीखो जाणे,धूरथकी हूं क्रूर हो॥ श्रग्नि जाल उपरथी बाले, मूल हणे जलपूर हो ॥ रा० ॥ ५ ॥ हुं हिमनी परें गाढो गाढो,तुज दल वृक्ष श्रपार हो ॥ कांखर कीधा पल नरमांहे, हवे तहारी छे वार हो ॥ रा०॥ ६ ॥ हय गय सेवक सघला नाठा, खोइश

सजानो तुज हो ॥ धिक् धिक् तुजने धीठ दूइने, करवा आव्यो जूऊ हो ॥ रा० ॥ ७ ॥ नाश तुं हमणां जीवतो मूकुं, खोटी कां धरे धीर हो ॥ पाल त्रूटी तो किण परें रहेशे, सरवरकेरो नीर हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ चेतन हंसे ऊरे संते, जीपी मूक्यो तेह हो ॥ निर्लज्ञनी परें आवे दोडी, एहवी ताहरी सोह हो ॥ रा० ॥ए॥ माहरा सेवक मुजशुं रुशी, कोइक तुजपें आय हो ॥ पण ते अंतर सेवक महारो, स्वामी धर्म सुखदाय हो ॥ रा०॥१०॥ जोलवियो तें नरतनणी बहु, पण नूलो नहिं तेह हो ॥ अनुनव रसियो सेवक मेरो, परम अध्यातम गेह हो ॥ रा० ॥ ११ ॥ पांचे पांमवें वे नाड हलिया, ते सहु कर्त्तव्य तुज हो ॥ उत्तम जाणी में उद्धरिया, होड करिने ज्युं मुज हो ॥ रा० ॥ १२ ॥ हत्याकारक अर्जुनमाली, दढप्रहारी वलि तेह हो ॥ तें अधिकारी नरकना कीधा, में सुख दीधां अछेह हो ॥ रा० ॥ १३ ॥ तें कन्यानो शिर छेदायो, मनमें न करी लाज हो ॥ तेह चिलातीने में दीधो, स्वर्गतणो सुखसाज हो ॥ रा० ॥ १४ ॥ जूनो जर्जर देह देखीने, करुणा आवे मुज हो ॥ निज्ञा वृक्षने अग्नि प्रजाले, तोरथे नीरस मुज हो ॥ रा० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें वीर विवेकनी, वाणि सुणी नृप मोह ॥ रूह हूउ पण तरुण हुउ, कोप्यो अधिकें दोह ॥ १ ॥ निज हथियारें वरसतो, हणवा वीर विवेक ॥ वहि आयो तिहां वाय ज्युं, बे जूज्या अतिरेक ॥ २ ॥ मल्लतणी परें बे जणा, जूऊे मांहोमांहि ॥ अंजनगिरि हिमगिरि मल्या, सुर साखी रह्या तांहि ॥ ३ ॥ वीरविवेकें मोहने, उपाडियो ग्रहि पाय ॥ नाख्यो धरणी ऊपरें, क्षीण हूउ स सकाय ॥ ४ ॥ इंद्ही तुं सब जगतनो, पापी पाप निवास ॥ चिरकाल बिच वेरी हती, ते जणी कीजें नास ॥ ५ ॥ देव राम र तुं आरणो, ते मारे तुज काज ॥ नवि रूटे तुं काजियो, पख्खतणो यज आज ॥ ६ ॥ सुन सहोदर कोई अवर, कपट चालणहार ॥ नरपति तसु मारे नहिं, ए नृपनीति विचार ॥ ७ ॥ जननी जनक न को इहां, मारि सके नहिं तोहि ॥ पापतणां फल आवियां, दोष नहिं ते मोहि ॥ ८ ॥ साहीरव हुं हुं मही, किंचित कारण होय ॥ पाप फल अब तृष्णना, ते मारे ने तोय ॥ ए ॥ इम कही वीर विवेक तव, ब्रह्मरुप्सगुं मोह ॥ हणियो

सुर नर देखतां, आतम अनुबल सोह ॥ १० ॥ ज्ञानावरणादिक प्रकृति, सेवक नाग शेष ॥ जय जय शब्द कराइया, जीत्यो वीर विशेष ॥ ११ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ नयन निहालो रे नाहला ॥ ए देशी ॥ जडता झूरे रे योषिता, झूरे माया रे मात ॥ ए अवस्था रे क्युं थइ, तुं जग अमर कहात ॥ज०॥१॥ तुं जगजीवन वालहो,तुं अम प्राणाधार ॥ जे वृक्ष वलगी रे वेलडी, ते वृक्ष पाम्यो संहार ॥ ज० ॥२॥ आश घणी मनमां हती, ते रही दीसे रे आज ॥ वल्लभ तुं डरलंभ छे, मन मान्यो महाराज ॥ ज० ॥ ३ ॥ तुं सम अवर न कोय छे, पूरण मननी आश ॥ तुज गुण केता रे दाखवूं, तों वि एश्यो घरवास ॥ ज० ॥ ४ ॥ ए तनु दीपकवाट छे, तुं वहालो तेल पूर ॥ तुं सरवर में माछली, में कमलिनी तुं सूर ॥ज० ॥ ५ ॥ तुं वादल में दामिनी, तुं तरुवर में पान ॥ तुं मानसर में हंसली, तुं उत्तमंग में कान ॥ ज० ॥ ६ ॥ दाझुर चातक मोर हे, तुं गिरुउं घन मेह ॥ दर्शन प्यासे बुझइयें, इम किम दीजें रे छेह ॥ज० ॥ ७ ॥ कोमल कुमुदिनी मे अगं, तुं छे चन्द्र समान ॥ तुं तरुवरमें पंखिया, कुण हवे देशे रे मान ॥ ज० ॥ ८॥ इण परें माया रे योषिता, झुरती धरती ढली ताम ॥ मोहतणो परिवार जे, बीजो पण गयो आम ॥ ज० ॥ ए ॥ मोहतणुं मृत्यु देखीने, हरख्या सुर नर राय ॥ फूलतणी वृष्टि वीरने, शिरपर कीधी रे आय ॥ ज० ॥ १० ॥ जय जय शब्द सहू कहे, थारी शक्ति अपार ॥ हिमगिरि हीर तणी परें, तुज गुण निर्मलहार ॥ ज० ॥ ११ ॥ ऐरवत भरत विदेहमें, तुं हिज सखरो हेत ॥ सकलशरीरी रे जीवने, तुं सुख बीजनो खेत ॥ ज० ॥ १२ ॥ तुं हितवछल मात ज्युं, विघ्न विदारण वीर ॥ कलियुग पावक जीपवा, अधिकुं निर्मल नीर ॥ ज० ॥ १३ ॥ तुं साहिब गिर मेहरो, भूर भविक सुखकार ॥ भवभय हरण हरावबा, तुं पंचायण सार ॥ ज० ॥ १४॥ कज्जल यमुनाजल कोकिला,एहो कालो रे पाप ॥ ते गयो दूरें आजथी, दूर गयो डुःख व्याप ॥ ज० ॥ १५॥ उदयाचल जिनशासनें, तुं उगो अब सूर ॥ तिमिरपाखंम दूरें गयां, दिन दिन अधिक पंडूर ॥ ज० ॥ १६ ॥ रवि तो उगे आथमे, चन्द्र कलंकी रे होय ॥ मणि तो पथर आसियें, सुरतरुने वृक्ष जोय ॥ ज० ॥ १७ ॥ ताहरी उपम जे हुवे, ते जग

खजानो तुज हो ॥ धिक् धिक् तुजने धीठ हूइने, करवा आव्यो जूझ हो ॥ रा० ॥ ७ ॥ नाग तुं हमणां जीवतो मूकुं, खोटी कां धरे धीर हो ॥ पाल तूटी तो किण परें रहेशे, सरवरकेरो नीर हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ चेतन द्रंदें शूरे संते, जीपी मूक्यो तेह हो ॥ निर्लज्जनी परें आवे दोडी, एहवी ताहरी सोह हो ॥ रा० ॥९॥ माहरा सेवक मुजशुं रुशी, कोइक तुजपें आय हो ॥ पण ते अंतर सेवक महारो, स्वामी धर्म सुखदाय हो ॥ रा०॥१०॥ जोजवियो तें जरतनणी बहु, पण जूजो नहिं तेह हो ॥ अनुजव रसियो सेवक मेरो, परम अध्यातम गेह हो ॥ रा० ॥ ११ ॥ पांचे पांमवें वे नाइ हणिया, ते सहु कर्त्तव्य तुज हो ॥ उत्तम जाणी में उद्धरिया, होड करिने त्युं मुज हो ॥ रा० ॥ १२ ॥ हत्याकारक अर्जुनमाली, दृढप्रहारी नहि देख हो ॥ तें अधिकारी नरकना कीधा, में सुख दीधां अलेख हो ॥ रा० ॥ १३ ॥ तें कन्यानो शिर छेदायो, मनमें न करी लाज हो ॥ तेह चिलातीने में दीधो, सर्गतणो सुखसाज हो ॥ रा० ॥ १४ ॥ जूनो जर्जर देह देखीने, करुणा आवे मुज हो ॥ निज्जा वृक्षने अग्नि प्रजाले, तोरपे नीरस गुज हो ॥ रा० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें वीर विवेकनी, वाणि सुणी नृप मोह ॥ वृद्ध हूउं पण तरुण हुइ, कोप्यो अधिकें छोह ॥ १ ॥ निज हथियारें वरसतो, हणवा वीर विवेक ॥ वहि आयो तिहां वाय ज्युं, बे जूज्या अतिरेक ॥ २ ॥ मल्लतणी परें बे जणा, जूजे मांहोमांहि ॥ अंजनगिरि हिमगिरि मल्या, सुर साखी रह्या तांहि ॥ ३ ॥ वीरविवेकें मोहने, उपाडियो ग्रहि पाय ॥ नाख्यो धरणी करें, क्षीण हूउं स सकाय ॥ ४ ॥ छोडी तुं सब जगतनो, पापी पाप निवास ॥ विरइ विर वेली हती, ते जणी कीजें नास ॥ ५ ॥ देव समर तुं आपणो, जे मारे तुज काज ॥ नवि छूटे तुं फाजियो, पन्नतणो अज आज ॥ ६ ॥ मुन महोदर कोई अवर, कवट चालणहार ॥ नरपति तसु गमे नहि, ए नृपनीति विचार ॥ ७ ॥ जननी जनक न को इहां, राखि सके नहि तांहि ॥ पापतणां फल आवियां, दोर नहिं जे मोहि ॥ ८ ॥ साहीय हुं हुं सही, किंचित कारण होय ॥ पाप फल अब वृक्षना, ते मारे जे तोय ॥ ९ ॥ इम कही वीर विवेक तव, अल्लगस्युं मोह ॥ हणियो

खजानो तुऊ हो ॥ धिक् धिक् तुऊने धीठ हूइने, करवा आव्यो जूऊ हो ॥ रा० ॥ ७ ॥ नाश तुं हमणां जीवतो मूकुं, खोटी कां धरे धीर हो ॥ पाल तूटी तो किण परें रहेशे, सरवरकेरो नीर हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ चेतन दूंहें शूरे संत, जीपी मूक्यो तेह हो ॥ निर्लज्जनी परें आवे दोडी, एहवी ताहरी सोह हो ॥ रा० ॥९॥ माहरा सेवक मुऊशुं रुशी, कोइक तुऊपें आय हो ॥ पण ते अंतर सेवक महारो, सामी धर्म सुखदाय हो ॥ रा०॥१०॥ जोजवियो तें जरततणी बहु, पण जूलो नहिं तेह हो ॥ अनुजव रसियो सेवक मेरो, परम अध्यातम गेह हो ॥ रा० ॥ ११ ॥ पांचे पांमवें वे नाइ हणिया, ते सहु कर्तव्य तुऊ हो ॥ उत्तम जाणी में उद्धरिया, होड करिश क्युं मुऊ हो ॥ रा० ॥ १२ ॥ हत्याकारक अर्जुनमाली, दढप्रहारी नहि केर हो ॥ तें अधिकारी नरकना कीधा, में सुख दीधां अछेह हो ॥ रा० ॥ १३ ॥ तें कन्यानो शिर छेदायो, मनमें न करी लाज हो ॥ तेह चिलातीने में दीधो, स्वर्गतणो सुखसाज हो ॥ रा० ॥ १४ ॥ जूनो जर्जर देह देखीने, करुणा आवे मुऊ हो ॥ निला वृक्षने अग्नि प्रजाले, तोशुं ये नीरस सुऊ हो ॥ रा० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें वीर विवेकनी, वाणि सुणी नृप मोह ॥ वृद्ध हूर्ड पण तरुण हुइ, कोप्यो अधिकें रोह ॥ १ ॥ निज हथियारें वरसतो, हणवा वीर विवेक ॥ वहि आवो निहां वाय ज्युं, वे जूऊ्या अतिरेक ॥ २ ॥ मल्लतणी परें वे जणा, जूऊे मांहोमांहि ॥ अंजनगिरि हिमगिरि मल्या, सुर साखी रह्या तांहि ॥ ३ ॥ वीरविवेकें मोहने, उपाडियो ग्रहि पाय ॥ नाख्यो धरणी ऊपरें, क्षीण हूर्ड सब काय ॥ ४ ॥ द्रोही तुं सब जगतनो, पापी पाप निधान ॥ विरुइ विर वेर्णी हती, ते नणी कीजे नाश ॥ ५ ॥ देव समर तुं आपणो, जे मारे तुऊ काज ॥ नवि छूटे तुं कालियो, पढ्नतणो अज आज ॥ ६ ॥ सुन सहोदर कोइ अवर, कपट चालणहार ॥ नरपति तसु गनें नहिं, ए नृपनीति विचार ॥ ७ ॥ जननी जनक न को इहां, गलि गळे नहि तोहि ॥ पापनणां फल आवयां, दोष नहिं जे मोहि ॥ ८ ॥ सांकीरर नुं हुं नहीं, किंचित कारण होय ॥ पाप फल अब तृष्णा, ते मारे जे तोय ॥ ९ ॥ इम कही वीर विवेक तब, अप्रलम्बशुं मोह ॥ हणियो

सुर नर देखतां, आतम अनुबल सोह ॥ १० ॥ ज्ञानावरणादिक प्रकृति, सेवक नाठा शेष ॥ जय जय शब्द कराइया, जीत्यो वीर विशेष ॥ ११ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ नयन निहालो रे नाहला ॥ ए देशी ॥ जडता फूरे रे योषिता, फूरे माया रे मात ॥ ए अवस्था रे क्युं थइ, तुं जग अमर कहात ॥ज०॥१॥ तुं जगजीवन वालहो,तुं अम प्राणाधार ॥ जे वृक्ष वलगी रे वेलडी, ते वृक्ष पाम्यो संहार ॥ ज० ॥२॥ आश घणी मनमां हती, ते रही दीसे रे आज ॥ वल्लन तुं डुरलंन ठे, मन मान्यो महाराज ॥ ज० ॥ ३ ॥ तुं सम अवर न कोय ठे, पूरण मननी आश ॥ तुऊ गुण केता रे दाखवूं, तों वि णश्यो घरवास ॥ ज० ॥ ४ ॥ ए तनु दीपकचाट ठे, तुं वहालो तेल पूर ॥ तुं सरवर में माठली, में कमलिनी तुं सूर ॥ज० ॥ ५ ॥ तुं वादल में दामिनी, तुं तरुवर में पान ॥ तुं मानसर में हंसली, तुं उत्तमंग में कान ॥ ज० ॥ ६ ॥ दाडुर चातक मोर हे, तुं गिरुउं घन मेह ॥ दर्शन प्यास बुऊायें, इम किम दीजें रे ठेह ॥ज० ॥ ७ ॥ कोमल कुमुदिनी मे अठां, तुं ठे चन्द्र समान ॥ तुं तरुवरमें पंखिया, कुण हवे देशे रे मान ॥ ज० ॥ ८॥ इण परें माया रे योषिता, फुरती धरती ढली ताम ॥ मोहतणो परिवार जे, बीजो पण गयो आम ॥ ज० ॥ ए ॥ मोहतणुं मृत्यु देखीने, हरख्या सुर नर राय ॥ फूलतणी वृष्टि वीरने, शिरपर कीधी रे आय ॥ ज० ॥ १० ॥ जय जय शब्द सहू कहे, थारी शक्ति अपार ॥ हिमगिरि हीर तणी परें, तुऊ गुण निर्मलहार ॥ ज० ॥ ११ ॥ ऐरवत नरत विदेहमें, तुं हित सखरो हेत ॥ सकलशरीरी रे जीवने, तुं सुख बीजनो खेत ॥ ज० ॥ १२ ॥ तुं हितवछल मात ज्युं, विघ्न विदारण वीर ॥ कलियुग पावक जीपवा, अधिकुं निर्मल नीर ॥ ज० ॥ १३ ॥ तुं साहिब शिर सेहरो, नूर नविक सुखकार ॥ नवनय हरण हरायवा, तुं पंचायण सार ॥ ज० ॥ १४॥ कज्जल यमुनाजल कोकिला,एहो कालो रे पाप ॥ ते गयो दूरें आजथी, दूर गयो डुःख व्याप ॥ ज० ॥ १५॥ उदयाचल जिनशासनें, तुं उगो अब सूर ॥ तिमिरपाखंम दूरें गयां, दिन दिन अधिक पंडूर ॥ ज० ॥ १६ ॥ रवि तो उगे आथमे, चन्द्र कलंकी रे होय ॥ मणि तो पथर आखियें, सुरतरुने वृक्ष जोय ॥ ज० ॥ १७ ॥ ताहरी उपम जे हुवे, ते जग

खजानो तुज हो ॥ धिक् धिक् तुजने धीठ हूइने, करवा आव्यो जूज हो ॥ रा० ॥ ७ ॥ नाश तुं हमणां जीवतो मूकुं, खोटी कां धरे धीर हो ॥ पाल तूटी तो किण परें रहेशे, सरवरकेरो नीर हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ चेतन वृंदें शूरे संते, जीपी मूक्यो तेह हो ॥ निर्लज्जनी परें आवे दोडी, एहवी ता हरी सोह हो ॥ रा० ॥९॥ माहरा सेवक मुजशुं रुशी, कोइक तुजपें थाय हो ॥ पण ते अंतर सेवक म्हारो, स्वामी धर्म सुखदाय हो ॥ रा०॥१०॥ नोलवियो तें नरतनणी बहु, पण नूलो नहिं तेह हो ॥ अनुनव रसियो सेवक मेरो, परम अध्यातम गेह हो ॥ रा० ॥ ११ ॥ पांचे पांमवें वे ना इ हणिया, ते सहु कर्त्तव्य तुज हो ॥ उत्तम जाणी में उद्धरिया, होड करिश क्युं मुज हो ॥ रा० ॥ १२ ॥ हत्याकारक अर्जुनमाली, दृढप्र हारी वलि देख हो ॥ तें अधिकारी नरकना कीधा, में सुख दीधां अलेख हो ॥ रा० ॥ १३ ॥ तें कन्यानो शिर छेदायो, मनमें न करी लाज हो ॥ तेह चिलातीने में दीधो, स्वर्गतणो सुखसाज हो ॥ रा० ॥ १४ ॥ जूनो जर्जर देह देखीने, करुणा आवे मुज हो ॥ निला वृक्षने अग्नि प्रजाले, तोश्ये नीरस गुज हो ॥ रा० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें वीर विवेकनी, वाणि सुणी नृप मोह ॥ वृद्ध हूउ पण तरुण हुइ, कोप्यो अधिकें ठोह ॥ १ ॥ निज हथियारें वरसतो, हणवा वीर विवेक ॥ वहि आयो तिहां वाघ ज्युं, वे जूज्या अतिरेक ॥ २ ॥ मल्लतणी परें वे जणा, जूजे मांहोमांहि ॥ अंजनगिरि हिमगिरि मल्या, सुर साखी रह्या तांहि ॥ ३ ॥ वीरविवेकें मोहने, उपाडियो ग्रहि पाय ॥ नाख्यो धरणी ऊपरें, क्षीण हूउ स सकाय ॥ ४ ॥ द्रोही तुं सब जगतनो, पापी पाप निवास ॥ विरुइ विष वेली हती, ते नणी कीजें नाश ॥ ५ ॥ देव समर तुं आपणो, जे सारे तुज काज ॥ नवि छूटें तुं कालियो, यज्ञतणो अज आज ॥ ६ ॥ सुत सहोदर कोई अवर, कवट चालणहार ॥ नरपति तसु राखे नहिं, ए नृपनीति विचार ॥ ७ ॥ जननी जनक न को इहां, राखि शकें नहिं तोहि ॥ पापतणां फल आइयां, दोष नहिं छे मोहि ॥ ८ ॥ सा क्षीधर हुं हुं सही, किंचित कारण होय ॥ पाप फल अघ वृक्षना, ते मारे छे तोय ॥ ९ ॥ इम कही वीर विवेक तव, ब्रह्मशस्त्रशुं मोह ॥ हणियो

सुर नर देखतां, आतम अनुबल सोह ॥ १० ॥ ज्ञानावरणादिक प्रकृति; सेवक नाठा शेष ॥ जय जय शब्द कराव्या, जीत्यो वीर विशेष ॥ ११ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ नयन निहालो रे नाहला ॥ ए देशी ॥ जडता फूरे रे योषिता, फूरे माया रे मात ॥ ए अवस्था रे क्युं थइ, तुं जग अमर कहात ॥ज०॥१॥ तुं जगजीवन वालहो,तुं अम प्राणाधार ॥ जे वृक्ष वलगी रे वेलडी, ते वृक्ष पाम्यो संहार ॥ ज० ॥२॥ आश घणी मनमां हती, ते रही दीसे रे आज ॥ वल्लभ तुं डुरलंभ छे, मन मान्यो महाराज ॥ ज० ॥ ३ ॥ तुं सम अवर न कोय छे, पूरण मननी आश ॥ तुज गुण केता रे दाखवूं, तों वि णश्यो घरवास ॥ ज० ॥ ४ ॥ ए तनु दीपकवाट छे, तुं वहालो तेल पूर॥ तुं सरवर में माछली, में कमलिनी तुं सूर ॥ज० ॥ ५ ॥ तुं बादल में दा मिनी, तुं तरुवर में पान ॥ तुं मानसर में हंसली, तुं उत्तमंग में कान ॥ ज० ॥ ६ ॥ दाडुर चातक मोर हे, तुं गिरुउ घन मेह ॥ दर्शन प्यास बु जाइयें, इम किम दीजें रे छेह ॥ज० ॥ ७ ॥ कोमल कुमुदिनी मे अमां, तुं छे चन्द्र समान ॥ तुं तरुवरमें पंखिया, कुण हुवे देशे रे मान ॥ ज० ॥ ८॥ इण परें माया रे योषिता, फुरती धरती ढली ताम ॥ मोहतणो परि वार जे, बीजो पण गयो आम ॥ ज० ॥ ए ॥ मोहतणुं मृत्यु देखीने, हर ख्या सुर नर राय ॥ फूलतणी वृष्टि वीरने, शिरपर कीधी रे आय ॥ज० ॥ १० ॥ जय जय शब्द सहू कहे, धारी शक्ति अपार ॥ हिमगिरि हीर त णी परें, तुज गुण निर्मलहार ॥ ज० ॥ ११ ॥ ऐरवत भरत विदेहमें, तुं हिज सखरो हेत ॥ सकलशरीरी रे जीवने, तुं सुख बीजनो खेत ॥ ज० ॥ १२ ॥ तुं हितवछल मात ज्युं, विघ्न विदारण वीर ॥ कलियुग पावक जीपवा, अधिकुं निर्मल नीर ॥ ज० ॥ १३ ॥ तुं साहिब शिर सेहरो, भूर भविक सुखकार ॥ भवभय हरण हरायवा, तुं पंचायण सार ॥ ज० ॥ १४॥ कज्जल यमुनाजल कोकिला,एहो कालो रे पाप ॥ ते गयो दूरें आ जथी, दूर गयो डुःख व्याप ॥ ज० ॥ १५॥ उदयाचल जिनशासनें, तुं उ गो अब सूर ॥ तिमिरपाखंम दूरें गयां, दिन दिन अधिक पंडूर ॥ ज० ॥ १६ ॥ रवि तो उगे आथमे, चन्द्र कलंकी रे होय ॥ मणि तो पथर आ खियें, सुरतरुने वृक्ष जोय ॥ ज० ॥ १७ ॥ ताहरी उपम जे हुवे, ते जग

खजानो तुफ हो ॥ धिक् धिक् तुफने धीव हूइने, करवा आव्यो जूफ हो ॥ रा० ॥ ७ ॥ नाश तुं इमणां जीवतो मूकुं, खोटी कां धरे धीर हो ॥ पाल तूटी तो किण परें रहेशे, सरवरकेरो नीर हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ चेतन शूरें शूरे संते, जीती मूक्यो तेह हो ॥ निर्लज्जनी परें आवे दोडी, एहवी ताहरी सांह हो ॥ रा० ॥ए॥ माहरा सेवक मुफशुं रुशी, कोइक तुफपें आय हो ॥ पण ते अंतर सेवक महारो, स्वामी धर्म सुखदाय हो ॥ रा०॥१०॥ नोळविया तें नरतनणी बहु, पण भूलो नहिं तेह हो ॥ अनुभव रसियो सेवक मेरो, परम अध्यातम गेह हो ॥ रा० ॥ ११ ॥ पांचे पांमवें वेना इ हणिया, ते सहु कर्त्तव्य तुफ हो ॥ उत्तम जाणी में उद्धरिया, होड करिन शुं मुफ हो ॥ रा० ॥ १२ ॥ हत्याकारक अर्जुनमाली, दृढप्रहारी नहि रेख हो ॥ तें अधिकारी नरकना कीधा, में सुख दीधां अलेख हो ॥ रा० ॥ १३ ॥ तें कन्यानो शिर छेदायो, मनमें न करी लाज हो ॥ भेद चिलातीने में दीधो, सर्गतणो सुखसाज हो ॥ रा० ॥ १४ ॥ जूनो जर्जर देह देखीने, करुणा आवे मुफ हो ॥ निज्ञा वृक्षने अग्नि प्रजाळे, तोरये नीरस गुफ हो ॥ रा० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें वीर विवेकनी, वाणि सुणी नृप मोह ॥ वृद्ध हूउं पण तरुण हुइ, कोप्यो अधिकें रोह ॥ १ ॥ निज हथियारें वरसतो, हणवा वीर विवेक ॥ वहि आवो तिहां वाय ज्युं, वे जूफ्या अतिरेक ॥ २ ॥ मल्लतणी परें वे जणा, जूफे मांहोमांहि ॥ अंजनगिरि हिमगिरि मल्या, सुर साखी रह्या तांहि ॥ ३ ॥ वीरविवेकें मोहने, उपाडियो ग्रहि पाय ॥ नाख्यो धरणी ऊपरें, क्षीण हूउ स सकाय ॥ ४ ॥ द्रोही तुं सव जगतनो, पापी पाप निवास ॥ विरुइ विष वेली हती, ते नणी कीजें नाश ॥ ५ ॥ देव समर तुं आपणो, जे मारे तुफ काज ॥ नवि छूटें तुं काळियो, पञ्चतणो अत्र आज ॥ ६ ॥ मुन सहोदर कोइ अवर, कपट चालणहार ॥ नरपति तमु राखे नहिं, ए नृपनीति विचार ॥ ७ ॥ जननी जनक न को इहां, राखि शके नहिं तांहि ॥ पापतणां फल आइयां, दोष नहिं जे मांहि ॥ ८ ॥ साहेबर शुं हुं सही, किंचित कारण होय ॥ पाप फल अथ वृक्षना, ते मारे जे तोय ॥ ९ ॥ इम कही वीर विवेक तव, अकलस्वरुं मोह ॥ हणियो

सुर नर देखतां, आतम अनुबल सोह ॥ १० ॥ ज्ञानावरणादिक प्रकृति, सेवक नाठा शेष ॥ जय जय शब्द कराइया, जीत्यो वीर विशेष ॥ ११ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ नयन निहालो रे नाहला ॥ ए देशी ॥ जडता फूरे रे योषिता, फूरे माया रे मात ॥ ए अवस्था रे क्युं थइ, तुं जग अमर कहात ॥ज०॥१॥ तुं जगजीवन वालहो,तुं अम प्राणाधार ॥ जे वृक्ष वलगी रे वेलडी, ते वृक्ष पाम्यो संहार ॥ ज० ॥२॥ आश घणी मनमां हती, ते रही दीसे रे आज ॥ वल्लभ तुं डुरलभ छे, मन मान्यो महाराज ॥ ज० ॥ ३ ॥ तुं सम अवर न कोय छे, पूरण मननी आश ॥ तुज गुण केता रे दाखवूं, तों वि णश्यो घरवास ॥ ज० ॥ ४ ॥ ए तनु दीपकवाट छे, तुं वहालो तेल पूर ॥ तुं सरवर में माछली, में कमलिनी तुं सूर ॥ज० ॥ ५ ॥ तुं बादल में दा मिनी, तुं तरुवर में पान ॥ तुं मानसर में हंसली, तुं उत्तमंग में कान ॥ ज० ॥ ६ ॥ दादुर चातक मोर हे, तुं गिरुउ घन मेह ॥ दर्शन प्यास बु जाइयें, इम किम दीजें रे छेह ॥ज० ॥ ७ ॥ कोमल कुमुदिनी मे अछां, तुं छे चन्द्र समान ॥ तुं तरुवरमें पंखिया, कुण हवे देशे रे मान ॥ ज० ॥ ८॥ इण परें माया रे योषिता, फुरती धरती ढली ताम ॥ मोहतणो परि वार जे, बीजो पण गयो श्याम ॥ ज० ॥ ए ॥ मोहतणुं मृत्यु देखीने, हर ख्या सुर नर राय ॥ फूलतणी वृष्टि वीरने, शिरपर कीधी रे आय ॥ज० ॥ १० ॥ जय जय शब्द सहू कहे, थारी शक्ति अपार ॥ हिमगिरि हीर त णी परें, तुज गुण निर्मलहार ॥ ज० ॥ ११ ॥ ऐरवत भरत विदेहमें, तुं हिज सखरो हेत ॥ सकलशरीरी रे जीवनें, तुं सुख बीजनो खेत ॥ ज० ॥ १२ ॥ तुं हितवछल मात ज्युं, विघ्न विदारण वीर ॥ कलियुग पावक जीपवा, अधिकुं निर्मल नीर ॥ ज० ॥ १३ ॥ तुं साहिब शिर सेहरो, नूर नविक सुखकार ॥ भवजय हरण हरायवा, तुं पंचायण सार ॥ ज० ॥ १४॥ कज्जल यमुनाजल कोकिला,एहो कालो रे पाप ॥ ते गयो दूरें आ जथी, दूर गयो डुःख व्याप ॥ ज० ॥ १५॥ उदयाचल जिनशासनें, तुं उ गो अब सूर ॥ तिमिरपाखंम दूरें गयां, दिन दिन अधिक पंडूर ॥ ज० ॥ १६ ॥ रवि तो उगे आथमे, चन्द्र कलंकी रे होय ॥ मणि तो पत्थर आ खियें, सुरतरुनें वृक्ष जोय ॥ ज० ॥ १७ ॥ ताहरी उपम जे हुवे, ते जग

सजाना गुरु हो ॥ जिहां जिहां गुरुने पीड हुइने, करता आव्यो चूक हो ॥ रा० ॥ ७ ॥ नाग तुं हमणां जीवतो मूकुं, लोटी कां भरे नीर हो ॥ पा ण बूटी तो किण परें रहेशो, साजनकेरो नीर हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ चेतन ढुं गुरे सेवें, जीणी मूक्यो तेम हो ॥ निर्जीवनी परें आगे दोडी, गुरुनी ता हरी मोड हो ॥ रा० ॥९॥ मातंग सेवक गुरुतुं हरखी, कोइक गुरुनें आप हो ॥ पण ते श्रेतर सेवक मझारो, सामी भणी गुलराग हो ॥ रा०॥१०॥ नोतरियो तें भरतनणी पहु, पण हूतो नहिं तेम हो ॥ अनुभव रसियो सेवक मेरो, परम अध्यातम गेह हो ॥ रा० ॥ ११ ॥ पांने पांखों ने ना इ गणिया, ते सहु कर्णीभ गुरु हो ॥ जनम जाणी में गहहिया, ओर कहिस कर्यु गुरु हो ॥ रा० ॥ १२ ॥ हत्याकारक अर्जुनमाली, हत्य आवी यति हेर हो ॥ तें अधिकारी नरकना कीधा, में सुख दीधो सवेर हो ॥ रा० ॥ १३ ॥ तें कन्यानो शिर छेदाव्यो, मनमें न करी लाज हो ॥ तेह चिलातीने में दीधो, स्वर्गतणो सुखराज हो ॥ रा० ॥ १४ ॥ तुं तो अंतर वेर वेरीने, करुणा आणे गुरु हो ॥ निज हुकमे अति मजाळे, तोरणे तोरण गुरु हो ॥ रा० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें वीर विवेकनी, वाणि सुणी नृप मोह ॥ कुद कूदे पण तह ण कुश, कोप्यो अधिकें बोह ॥ १ ॥ निज गणियाई वरसतो, कुणना वीर विवेक ॥ नहिं आणे निज ताप ज्युं, ते कृतघ्नअतिरेक ॥ २ ॥ मलतणी परें ते जणा, कुमि मांहोमांहिं ॥ अंजनगिरि हिमगिरि समा, सुर सा खी रहा तांहिं ॥ ३ ॥ वीर विवेके मोहने, पछाड्यो महि पाय ॥ नाठ्यो पश्चिम कंदरें, लीन हुइ स तकाय ॥ ४ ॥ छोडी तुं रण जागतो, पापी पा प निवास ॥ जिह दिन जेतो हुतो, ते नासी कीधें नाश ॥ ५ ॥ तेह सम र तुं आपणो, ते माटे गुरु काज ॥ नहिं छूटे तुं कादिये, पहुतणो महा राज ॥ ६ ॥ गुरु सहोदर कोई अवर, करइ पराणकार ॥ नरपति जाइ घरे नहिं, ए गुरुनीति विचार ॥ ७ ॥ जननी जनक न को हुओ, सहि तहे नहिं नोहि ॥ पातकणो फल आइयो, रोग नहिं ते मांहि ॥ ८ ॥ सा हीबर हुं हुं सही, किणिण कारण शोग ॥ पाप फल आप कृतघ्ना, ते माटे ते लोग ॥ ९ ॥ इम कही वीर विवेक तब, प्रणमत्यो मोह ॥ गुणियो

वहु व्याप कला गुरु ए ठतो ॥ ५ ॥ जीव हणाय वणाय वहे जूठो सदा, पर धन हरण परदार सेवे ठे ए मुदा ॥ मित्रशुं झोह विझोह करी धन मे लवे, निशिदिन मदिरा पान खान गाक्यो लवे ॥ ६ ॥ जीव जणी ए नरक निगोद लइ फेरवे,जूख तृपा तप शीत रीत पण जेरवे ॥ आधि व्याधि वहु साथ अगाध समुइ ठे,ज्ञान ध्यान बुध पान जणी मुनि क्षुइ ठे ॥७॥ करडो एह कपूत कुकर्मतणो धणी, एहना वहु अपराध सह्या में अवगणी ॥ धिक् धिक् तुऊने प्रेम जे मोह वधारियो,शान्ति प्रकृति मुज जाण तिहांथी वारियो ॥ ८ ॥ निवृत्ति ताहरी नारी सारी पुत्र हूं ठतो, हवे मुफ घरमें आवणरो कर तुं मतो ॥ लोक कथीरतणी जूषा तुऊ तनु हती,हेमतणी हित सोह तोहि दूखही रती ॥९॥ देवनिरंजन ध्यायो आयो मुफ गेहमें, आल पंपाल विचार विकारे कारमे ॥ लोक कहेशे वाह वाह मंत्री तो जणी, जक्तिजाव जरपूर करश्यां तुम तणी ॥ १० ॥ एह वचन सुणी मंत्री विचारे मन करी, वीर विवेक विचार कहे ठे हित धरी ॥ पण माहरी सुख वात धात मोहशुं मिले, विरशुं नवली प्रीत रीत कहो किम जिले ॥ ११ ॥ एहनी माता शाता मुऊथी नवि लही, ते दुःख हियामांही नाहिं कहो किम सही ॥ पुत्रवधूने हाथ साथ जीमण हूशे, आंगुलियानीशान तान मन ने कशे ॥ १२ ॥ जववैराग्य प्रमुख ए कहेशे मो जणी, तात तणो नहीं वाप साप ए घरधणी ॥ पुत्रतणे वहु मान न कोइ विचरशे, तो पण नयणां शान वान उतारशे ॥ १३ ॥ रत्नराय मन जंग मिले कहो किणि परें, शीलजणी कोपाय वास जेजो वसे ॥ साप डंशीशें धार कहो कुण नर रहे, ए ऊपम अवधार विचार मंत्री कहे ॥ १४ ॥ मोह दशा विपरीत जीत नवि अनुसरी, तो क्युं रहियें नेह गेह किणशुं धरी ॥ मनमेलुं परिवार सार विण रस नहिं, तोशुं ए घर वास दास परनारही ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम आलोची मंत्रवी, दीरघदर्शी एह ॥ वीर विवेक जणी कहे, सुण सुपूत सस्नेह ॥ १ ॥ तुऊ वाणी हितकारिणी, मीठी अमृत धार ॥ पण परचित्त चिर कालनां, मोह हूतो मनोहार ॥ २ ॥ एह गये थइ ना रहे, मन मंत्री निर्धार ॥ इणशुं वाचा में करी, हुं यारी तुं जार ॥ ३ ॥ बोलकोल किम पलटियें, उत्तम ए आचार ॥ ते संबल सखरो दियो, हितशि

हा सुविचार ॥ ४ ॥ तुं आज्ञा दे मंत्रीने, ज्युं करे अग्नि प्रवेश ॥ अति आग्रह कीधां थकां, दीधो आदेश ॥ ५ ॥ चढी गुणगणे बारमे, नाव तीये जल स्नान ॥ स्नातक क्षायिक कुंममां, शुद्ध हुवो बहु मान ॥ ६ ॥ अंतराय प्रबला प्रमुख, इंधण कर्म विशेष ॥ शुक्ल ध्यान पावक प्रबल,मन मंत्री शुद्ध शेष ॥ ७ ॥ साखी वीर विवेक हुय,वली बीजो परिवार ॥ गत वीर जग तीर्वद हुय, नस्म थयो तिणवार ॥ ८ ॥ मूल ज्योति परगट नइ, प्रगट्यो चेतन राय ॥ इण अवसर हवे मूलगी, चेतन राणी आय ॥ ए ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ थारां केशरियां कसनीनो ॥ ए देशी ॥ अब चेतना श्री वीनवे राणी ॥ सुणजो साहिब जी ॥ आज अवसर पायो मनहर प्राणी ॥ सु० ॥ हुं एटला दिन जे तुमपं नाइ ॥ सु० ॥ ते सव गुनहो बकस्यो मन लाइ ॥ सु० ॥ १ ॥ हुं अविहड नेहो मनमां धरती ॥ सु० ॥ हवे आप मिल्या ज्युं मेहने परती ॥ सु० ॥ हवे जूया न हूया कबही वहाला ॥सु०॥ कब मारो माया रांधी काहला ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे हुं तुम चरणनी हुइ दासी ॥ सु० ॥ ज्युं मानसरोवर हंसी वासी ॥ सु० ॥ ए मोह अने मन मंत्री धारे ॥ सु० ॥ तब तांइ रसणा हूतो मारे ॥ सु० ॥ ३ ॥ इतरा दिन माया जाले बांध्यां ॥ सु० ॥ हवे परमानंद पद पूरण लाध्यां ॥ सु० ॥ इतरा दिन वयरी वश पडियां ॥ सु० ॥ तिहां बंधन संधन सबलां अडियां ॥ सु० ॥ ४ ॥ हवे ज्ञान गुलाब करी अंग नीनो ॥ सु० ॥ थारो मूलगा रूपरो मुजरो कीनो ॥ सु० ॥ मानुं वादल मूक्यां सूरज सोहे ॥ सु० ॥ मानुं राहे मूक्यो शशिधर मोहे ॥ सु० ॥ ५ ॥ मानुं निर्धूम पावक प्रबल सुहायो ॥ सु० ॥ मानुं माटीथी ए कंचन आयो ॥ सु० ॥ जाणे साण सणंता नायक पायो ॥ सु० ॥ तुं अनुपम दीपक नेत्र सवायो ॥सु०॥६॥ ए हेम तणो सिंहासन हेवा ॥ सु० ॥ रनियां ने बेसां करशुं सेवा ॥ सु० ॥ तब केशरियो हवे मनने रंगे ॥ सु० ॥ नवि लोक तणो सुख तुमने संगे ॥ सु० ॥ ७ ॥ इन वचन सुणी पटराणी केरां ॥ सु० ॥ हंस राजाने मन हर्ष घणेरा ॥ सु० ॥ हुं प्यारी हंगं रिज्ञो नांही ॥ सु० ॥ निजरूप विराज्यो निज गुणमांही ॥ सु० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जय जय शब्द सहु नणे, धन धन तुं माहाराय ॥ न्यायधर्म दीपा वियो,तेरम गुणठाणां पाय ॥१॥ निज पद प्रजुता पद लह्यो, नाधो मूलगो राग ॥ बंधन अरि दूरें गया, परमहंस नृप राज ॥ २ ॥ सुरपति नरपति नावशुं,मन मद मछर बोडि ॥ नव नय बंधन मूकवा,सेवे बे कर जोड ॥३॥ वाणी इणि परें नांखशे, नविजनने उपकार ॥ निज गुण परगुण कर्म रिपु, विवरो धरजो सार ॥ ४ ॥ मोहराय जीत्या विना, शिवपद लहियें केम ॥ जीपणनी विधि में कही, सघली मांमी एम ॥ ५ ॥ विनय विवेक विचारणा, आतमनो गुण एह ॥ वस्तुथकी जोतां थकां, उपावन धरी नेह ॥६॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ ग्रामणी आगें ए कह्यो रे, सघलो ए विरतंत ॥ परम हंस हुं इणी परें रे, हुउं निरख तुं संत रे प्राणी ॥ कर श्री आतमधर्म, जीपीजें ज्युं कर्म रे प्राणी ॥ क० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ हंस नाम ते माहरुं रे, मूल गुणें निर्धार ॥ रूढ नाम ते धर्मरुचि जी, एह अरथ अवधार रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ माया मोह ए में किया जी, नाना रूप प्रकार ॥ सुमति विवेक विना सहू जी, नम्या पाप नंमार रे प्राणी ॥ क० ॥ ३ ॥ आपद संपद नवि लहे जी, ज्ञानतणो क्रियो मान ॥ चूलो भ्रामक नावशुं जी, न धर्यो निरंजन ध्यान रे प्राणी ॥ क० ॥ ४ ॥ बहुविध जीवायोनिमें जी, बहुविध धरियां नाम ॥ नानाविध त्यां दुःख सह्यां जी, सघली फरसी ठाम रे प्राणी ॥ क० ॥ ५ ॥ समयतणो बल साधीनें जी, श्रीपरमेष्ठि पसाय ॥ मलिया विवेक वैराग्यशुं जी, में जी त्यो मोहराय रे प्राणी ॥ क० ॥ ६ ॥ मोह जीप्यो माया गई जी, नाठ वि षय विकार ॥ निज गुण मणि करि शोजतो जी, परतिख देख तुं सार रे प्रा णी ॥ क० ॥ ७ ॥ चेतना पटराणी मली जी, नीके निर्मल नूर ॥ सतीय शिरोमणि शोजती जी, दीठो आनंदपूर रे प्राणी ॥ क० ॥ ८ ॥ राणी गुण केता कहुं जी, गणतां नावे पार ॥ अविचल पद लहे एहथी जी, ग्रामणी तुं अवधार रे प्राणी ॥ क० ॥ ९ ॥ कर्म नरम दूरें गया जी, आयो आप सनाथ ॥ ज्ञान सूरज ऊग्यो सही जी, नाठो विकल विनाथ रे प्राणी ॥ ॥ क० ॥ १० ॥ इम सुणी ग्रामणी आखशे जी, सांनी सघली वात ॥ ए

जव मुफने तें दीयो जी, चेतराणी मुफ धात रे प्राणी ॥ क० ॥ ११ ॥ मोह माया करी नवि लख्यों जी, एह सरूप विचार ॥ मिथ्या तिमिर दूरें गयां जी, स्वामी मुफने तार रे प्राणी ॥ क० ॥ १२ ॥ नूर नरम नाशी गया जी, सूरज साचो दीठ ॥ ए विरतंत में अनुनव्यो जी, अमृतथी बहु मीठ रे प्राणी ॥ क० ॥ १३ ॥ आप समोवड मुफ करो जी, अवधारो अरदास ॥ चरण न ठांडुं ताहरां जी, ठोडि विजवनो पास रे प्राणी ॥ क० ॥ १४ ॥ संवेग निर्वेद देखिने जी, धर्मरुचि अणगार ॥ देशे दीक्षा तेहने जी, आणी मन उपकार रे प्राणी ॥ क० ॥ १५ ॥ ग्रामणी दीक्षा लेइने जी, रहेशे गुरुनी साथ ॥ तप जप संयम खप करे जी, होशे सहुनो नाथ रे प्राणी ॥ क० ॥ १६ ॥ ग्रामणी कर्म खपाइने जी, लेहशे केवल ज्ञान ॥ लोकालोक विलोकशे जी, अनुपम रूप निधान रे प्राणी ॥ क० ॥ १७ ॥ मुक्तें जाशे मुनिवरु जी, ए जिनधर्म पसाय ॥ धर्ममंदिर गणि तेहनां जी, चरण नमे चित्त लाय रे प्राणी ॥ क० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चेतना राणी एकदा, अवसर समयो देख ॥ हंसरायने वीनवे, वारू वात विशेष ॥ १ ॥ ज्ञान अंतर दर्शन वली, अनंत वीर्य सुखकार ॥ अविचल पद पुर परगडो, तिहां जश्युं अवधार ॥ २ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ अथिर आ संपदा रे ॥ ए देशी ॥ काया नगरी कारमी रे, अशुचि तणो नंमार ॥ सात धात नव बारणां रे, मांस रुधिर विस्तार ॥ वालेसर वीनवों रे आतम तुं अवधार ॥ वा० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ चर्म मांस आंता शिरा हाडें करी रे, बंधाणो जस बंध ॥ लाल सिंहासन मल मूत्रथुं रे, वास रह्यो डुर्गंध ॥ वा० ॥ २ ॥ दमक चमक कंचन जिसी रे, परि पुजल परसंग ॥ सुरति मुरति सोहिणी रे, क्षणमें पामे जंग ॥ वा० ॥ ३ ॥ मणिमुक्ताफल ए नहिं रे, कंचन रंग न होय ॥ मांही जन मोही रह्या रे, वार वार मुख जोय ॥ वा० ॥ ४ ॥ अन्न पान घृत गोल ने रे, सरस फल फूल पान ॥ चूया चंदन अरगजा रे, तनु संगें मलि जाण ॥ वा० ॥ ५ ॥ नक चक मच्छ कन्नपा रे, नकुल उंदर सिंह साप ॥ नूत प्रेत मंत्र शाकिनी रे, गुल्म ग्रंथि वात ताप ॥ वा० ॥ ६ ॥ चक्र धनुष बाण खड्ग ने रे, बरछी तुंब बंदूक प्रहार ॥ इत्यादिकथी

नय धरे रे, पग पग विघ्न विकार रे प्राणी ॥ वा० ॥ ७ ॥ रोग शोक रिपु रोषथी रे, सबलो तनु सूकाय ॥ दुष्ट दृष्टि नृप कोपथी रे,नस्म समोवड थाय रे प्राणी ॥वा०॥८॥ स्नेह राग शोप नयथकी रे,कोमल तनु कुमलाय ॥ अति आहार शीत तापथी रे,धात पात वश थाय रे प्राणी ॥वा०॥ए॥ अंग संग पंक नीरमें रे, वसीयो कमल समान॥ सर्पशिरें ज्युं मणि रहे रे, आप अलेप सुजाण रें प्राणी ॥ वा० ॥ १० ॥ पांच नूत जड एक मिल्या रे, नाम कर्म संयोग॥ तुं पवन प्रकार लही करी रे, ज्युं वादलनूं जोर रे प्राणी ॥ वा० ॥ ११ ॥ चिदानंद तुं ज्योति छे रे, अविनाशी अविकार॥ इहां रहेवुं तुजने नहिं रे, आपो आप विचार रे प्राणी ॥ वा०॥ १२ ॥ अनंत वार लेइ मूकियां रे,एहवा देहसरूप ॥ हवे कांहीं धरवूं नहिं रे, स्वयंरूप चिद्रूप रे प्राणी ॥ वा०॥ १३ ॥ एह वचन निज नारीनूं रे, मान्यूं आतम राय ॥ परम ब्रह्म पद पामवा रे, कीधो एह उपाय रे प्राणी ॥ वा० ॥१४॥ जोग निरुंधन साचवे रे, तन मन वचन प्रकार ॥ प्रकृति पच्चासी छोडवे रे, लागीथी ज्युं छार रे प्राणी ॥ वा० ॥ १५ ॥ गुणठाण चौदमे स्थिर रहे रे, लघु अक्षर पंच सार ॥ चेतना राणी परवस्यो रे, जाये मुक्ति मझार रे प्राणी ॥ वा० ॥ १६ ॥ वाण छुटो जिम धनुषथी रे, निर्लेप तुंबी देख ॥ दीप शिखा उंची धसे रे, मुगतें कीध विशेष रे प्राणी ॥ वा० ॥ १७ ॥ अतुली बल ए आतमा रे,एक समयमां जाय ॥ रिजुगति समश्रेणें करी रे, परमानंद पद थाय रे प्राणी ॥ वा० ॥ १८ ॥ परम ध्यान पद पामियो रे, परम मंगल परकाश ॥ धर्ममंदिर कहे ए सुण्यां रे, थाये अधिक उल्लास रे प्राणी ॥ वा० ॥ १९ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ प्रणमी पास जिनेसर केरा ॥ ए देशी ॥ हवे शिवपद गुण स्थानकगुण थुणियें,आगम अर्थथकी ज्युं सुणियें ॥ अचल अक्षय पद एहज कहियें, चौदे राज शिरोपर वहियें ॥ १ ॥ नर लोक जेती लांबी पहोली, छत्राकारें अतिही धवली ॥ सिद्ध शिला उपर आकाशें, निज निज अवगाहन करी नासें॥२॥ज्ञानावरण गयाथी पायो,केवल ज्ञान अनंत समायो ॥ दर्शनावरण गयाथी आयो, दर्शन अनंततणो सुख नायो ॥ ३ ॥ चारित्र क्षायिक

समकित लीधो,वेदु मोहतणो क्षय कीधो ॥ वेदनी जातां अनंत सुख सारा, अनंत वीर्य हुआ विघ्न निवारा ॥ ४ ॥ अक्षय स्थिति हुइ आयु खपाया, क्षायिक पारिणामिक तसु नाया ॥ नाम कर्म गया ते अशरीरी,गोत्र गया अवगाहन धीरी ॥ ५ ॥ गर्भ प्रसवनी वेद न ठांही, वेदनी कर्मतणो बल नांहि ॥ विषय कषायतणा भय नावे, योग वियोगनो दुःख न पावे ॥ ६॥ लेवा देवा न करे सेवा, धन वन मनरी ममता न धरेवा ॥ जल थल जावं आवूं जोरा, तिहांकिणे केहनो न चले तोरा ॥ ७ ॥ डंस मसक कुइ जीवनी पीडा, माखी जमरी कीडी तीडा ॥ वींछु शाप विरोधी जीवा, नांहीं अंधारो नांही दीवा ॥ ८ ॥ साते जयनी का नहिं जीति, रितुपाळटणरी का नहीं रीति ॥ मंत्र यंत्र को जाणां जोशी, नहीं को गायां जेसां घोसी ॥९॥ राजा रंक न कोइ लोका, आधि व्याधि नहिं कोइ शोका ॥ डाकिनी शाकीनी व्यंतर दोषा,आशा पाशा नहीं को शोषा ॥१०॥ अशन वसन नहीं रमणी रंगा, हास विलास तणी नहीं संगा ॥ खाट पाट नहीं पोढी सेजा, रुसे तुसे नहीं को हेजा ॥११॥ जूख तृषा तप शीत न बाधा,कोइ न बोला घाट न वाधा ॥ मंदिर महिल न कोइ विमाना, कोई न करे आदर माना ॥ १२ ॥ तप जप किरिया शील न पाले, दान दया वली कोइ न निहाले ॥ ध्यान नहिं को धर्मनी चर्चा, देवतणी नहिं सेवा अर्चा ॥ १३ ॥ पाप ने पुण्यतणा नहिं बंधा, आश्रव संवरनो नहिं संधा ॥ गुणगणा नहिं चटण उतारा, ए साधकता नहिंय लगारा ॥ १४ ॥ छेदन नेदन नहिं को खेदा, शोरण तोरण वर्णन वेदा ॥ शब्द रूप रस फरस न गंधा, स्थिति गति सुख दुःख नही प्रतिबंधा ॥ १५ ॥ उपम दीजें एहनी जोकाइ, ते जगमांहे वस्तु न कांइ ॥ ज्योति रूप तणे अनुसारें, पंमित नर मनमें अवधारे ॥ १६ ॥ सुरपति नरपतिनां सुख जेतां, सघलां नेलां कीजें तेतां ॥ तेहथकी अनंत कहीजें, संपूरण सुख ते नवि नीजे ॥ १७ ॥ केवल ज्ञानी शिव सुख देखे, कही न शके ते सुख सुविशेषे ॥ इन्द्रियनां सुख ते दुःख लेखे, संसारी जीवां करि देखे ॥ १८ ॥ स्थिर पद स्थानक इणि परें पायो, नविजन नुणतां सुख सवायो ॥ धर्ममंदिर कहे धन धन तेहा, ए पद पामे पूरण नेहा ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परम हंस राजा तिहां, राज करे नितमेव ॥ ग्रह ऊठीने प्रणमतां, मन वंछित ततखेव ॥ १ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ देशी हंसलानी ॥ निर्मे गुण हंस रायना, ते सुणजो हो नविजन मन लाय के ॥ हंस जी नजो नजो ॥ हंस राजा हो अति धवल सुहाय के ॥ हं० ॥ लोकालोक विलोकिने, सुख माने हो निजपद सुपसाय के ॥ हं० ॥ १ ॥ बंधन सवि दूरें गयां, ज्योति प्रगटी हो अतिही उदार के ॥ हं० ॥ अलख अरूपी आतमा, अविनाशी हो परब्रह्म प्रकार के ॥ हं० ॥ २ ॥ अकथ अकर्ता ए सही, चिद्रूपी हो चिदानंद विलास के ॥ हं० ॥ विषयातीत अजीत ए, चिन्मूरति हो चिन्मय सुप्रकाश के ॥ हं० ॥ ३ ॥ अगुरु लघु गुण शोजतो, खेम रूपी हो माहाधाम निधान के ॥हं०॥ परम प्रबोध प्रकाश ए, संघाती हो शिवरूप प्रधान के ॥ हं० ॥ ४ ॥ ज्ञानादिक गुण शोजता, ज्ञानदृष्टि हो निज सकल स्वरूप के ॥ हं० ॥ निष्कलंकी निर्लेप ए, निःसंगी हो निर्जोगी चूप के ॥ हं० ॥ ५ ॥ इव्य गुणें करी एक वे, ज्ञान दर्शन हो चारित्र अनंत के ॥ हं० ॥ संसारी सुख जे धरे, तो तेहने हो डुःख माने संत के ॥ हं० ॥ ६ ॥ अविकारी अविकारनुं, सुख माणे हो निज गुण निर्माय के ॥ हं० ॥ वचन अगोचर एहनां, गुण वर्णन हो केवली न कहाय के ॥ हं० ॥ ७ ॥ संसारी सुख एकठो, सहु कीजें हो मन बुद्धि विज्ञान के ॥ हं० ॥ एहथकी अधिको सही, जवें सत हो सुर सुख निधान के ॥हं०॥८॥ हंस राजा सुख आगलें,अनंत नागें हो हीणो सुरव तेह के ॥ हं० ॥ सदा विराजित एहवा, गुण प्रगट्या हो नावे तसु वेह के ॥ हं० ॥ ९ ॥ किण इक नृप ज्युं आणियो, जिल्ल वननो हो उपकारी जाण के ॥ हं० ॥ सपजां सुख तेहने दियां, नव नवलां हो दियां खान ने पान के ॥ हं० ॥ १० ॥ फिरी ते अटवीनां गयो, आवी मीलियो हो सयलो परिवार के ॥हं०॥ पूठी वातां सुरसतणी, कही न शके हो सपजो विस्तार के ॥ हं० ॥ ११ ॥ तरखां करीने दाखवे, ते वननां हो नहिं कांइ वात के ॥ हं० ॥ इणी परें सुख हंस राजनां,कही न शकुं हो सपजां विख्यात के ॥ हं० ॥ १२ ॥ कारमुं सुख संसारनुं, रोग सो

के हो नरियुं नरपूर के ॥ हं० ॥ परम पवित्र प्रधान ए, अघनंजन हो रं जन वहु नूर के ॥ हं० ॥ १३ ॥ महिमा ब्रह्म विलासनी, कही न शके हो सुरगुरु पण एह के ॥ हं० ॥ धर्ममंदिर कहे वंदणा, कर जोडी हो धरि धर्म सनेह के ॥ हं० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मंगल कारण ए सही, मांगलीक सुखरूप ॥ ज्ञेय ध्येय करी धवल पद, आतम आप स्वरूप ॥ १ ॥ परम देव पण ए सही, तारण तरण सु एह ॥ परम समाधि स्वरूप ए, ज्ञानरतन गुणगेह ॥२॥ ब्रह्मरसायण संग थी, हेम कुधातु विकार ॥ तिम ए अंतर आतमा, परमातमता सार ॥ ३ ॥ त्यां लगि मीठ अवर रस, ज्यां लग ए नव दीठ ॥ ज्यां अमृत चा ख्युं नहिं, त्यां जल स्वादो मीठ ॥ ४ ॥ खट् दर्शन नदीयां समां, निज निज नय विस्तार ॥ सघला नय समवायधर, जिन मत सागर सार ॥ ५ ॥ स्याद्वाद मति अनुसरे, ते पामे ब्रह्मरूप ॥ एह विना सघलां गणो, नव संसार स्वरूप ॥ ६ ॥ उद्यम संसारी सकल, सफल निष्फल पण हो य ॥ ए अमोघ फल ल्यो सदा, इहां संदेह न कोय ॥ ७ ॥ ज्ञानी ज्ञानें रा चशे,अज्ञानी अज्ञान ॥ ज्ञानतणा गुण सेवतां,ज्ञान ध्यान वहु वान ॥८॥

॥ ढाल ३गणीशमी ॥

॥ इणिपरें नाव नक्ति मन आणी ॥ ए देशी ॥ धन धन धर्मरुचि श्रीऋषिराया, आत्म धर्म वताया जी ॥ ग्रामिणी प्रमुख नविक जन ता खा, आतम काम समाखा जी ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ आतम सुर तरु कामित दाता, काम धेनु विख्याता जी ॥ रत्न चिंतामणि कामित कुंना, आतम महिमा अचंना जी ॥ ध० ॥ २ ॥ परमातम सेवो नवि प्राणी, ए शिवपद सहि नाणी जी ॥ रसना पामी सफली गणियें, जो जिनधर्म गुण थुणीयें जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ पुण्य पाप वेहुए जवासी, इणथी होय उदासी जी ॥ आतम केरुं रूप निहालो, विषयथकी मन वालो जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ निजगुण परगुण वेहू जूके, अंतर गति तसु सूके जी ॥ वाहिज तप जप वहुलां साधे, विरला ज्ञान आराधे जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ देश विराधक ज्ञानी होवे, जो प्रमादने सेवे जी ॥ अज्ञानी किरिया गुण नरियो, देशें आराधक वरियो जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ आराधक ज्ञानी आगममें, साचो शुद्ध शम दम

में जी ॥ अज्ञानी आराधक नांहिं, जो तप जप खपमांही जी ॥ ध० ॥ ७॥ मांगलीक महोटो धर्म जाणो, मंत्र महा मन आणो जी ॥ नावना सूधी आतम नावो, परमानंद सुख पावो जी ॥ ध० ॥ ८ ॥ ध्येय न गेय न हेय न कोइ, अंतर ज्ञानें जोई जी ॥ प्रह उठीने कीजें प्रणामा, फले मनोरथ कामा जी ॥ ध० ॥ ९ ॥ प्रबोधचिंतामणि ग्रंथ प्रसिद्धो, श्रीजयशेखर कीधो जी ॥ मोह विवेकतणा अधिकारा, गिर्वाण वाणी सारा जी ॥ध०॥१०॥ मंदमति जे मनमें आणे, आलस पण अंग आणे जी ॥ तिणे ए ढाला ना पा प्रबंधे, नविजनने सुख संधे जी ॥ ध० ॥ ११ ॥ श्रीजिनधर्म सूरीश्वर राजे, दिन दिन अधिक दिवाजे जी ॥ आदेश तास लही चोमासा, कीधी धर्म उल्लासा जी ॥ ध० ॥ १२ ॥ श्री मुलतान नगरमें सोहे, पार्श्वनाथ मन मोहे जी ॥ तासु पसायें चोपाइ कीधी, मंगलमाल प्रसिधी जी ॥ ध० ॥ १३ ॥ अध्यातम शैली मन लाइ, सुखानंद सुखदायी जी ॥ धर्म धुरंधर श्रावक संगें, वाधे ज्ञान सुरंगें जी ॥ ध० ॥ १४ ॥ उद्यम आदर एहनो जाणो, ए रचना मन आणी जी ॥ लान्न थयो मुऊने धर्म ध्याना, नविजनने वध्यो ज्ञाना जी ॥ ध०॥ १५ ॥ सतरेशें इकताले वर्षे, उज्ज्वल पक्ष शुन्न दिवसें जी ॥ मागशिर दशमी स्थिर शुनयोगा, चौपाइ थइ सुप्रयोगा जी ॥ ध० ॥ १६ ॥ वडवखती खडतरगण इंदा, युगवर श्रीजिनचंदा जी ॥ नुवनमेरु गणि सुमति सुरंगा, पूज्यतणा शिष्य चंगा जी ॥ ध० ॥ १७ ॥ पुण्य रत्न वाचक परधाना, तासु शिष्य बहु माना जी ॥ दयाकुशल पाठक पद धारी, सुविहित साधु विहारी जी ॥ ध० ॥ १८ ॥ तसु शिष्य धर्ममंदिर गुण गावे, चढती दोलत पावे जी ॥ रूपरत्न सुख संपति वाधे, जो जिनधर्म आराधे जी ॥ ध० ॥ १९ ॥ सुणतां नणतां पाप पलावे, ज्ञान कलादिक पावे जी ॥ जे नर होशे जाण प्रवीणा, ते इण अधिकारें लीणा जी ॥ ध० ॥ २० ॥ मोहतणा जे मेलू होइ, ते इण साहमो न जोइ जी ॥ कहेशे कल्पना कूडी आखी, किण दीठी कुण साखी जी॥ ध० ॥ २१ ॥ वीर विवेकतणा जे नाई, करशे प्रीति सवाइ जी ॥ आतम ज्ञानतणा जे रसिया, तसु मन वचन ए वसिया जी ॥ ध० ॥ २२ ॥ परमादी प्रायें संसारी, शुद्ध उपयोग विसारी जी ॥ आगमथी उपरांठो जे हो, मिछामि डुक्कड तेहो जी ॥ ध० ॥ २३ ॥ ज्ञानतणी ए मंजरी महके,

नव नव ढाले लहके जी ॥ चतुराने ए कंठें गाजे, आतमगुण धरी राजे जी ॥ ध० ॥ २४ ॥ ठ खंमें करी चोपाइ दीपे, मिथ्याजावने जीपे जी ॥ आतमदर्शी अर्थ करेशी, आनंद अंग महेसी जी ॥ ध० ॥ २५ ॥ जाव जक्ति करी नविजन नणशे, जे कोइ आवी सुणशे जी ॥ धर्ममंदिर कहे ए परधाना, आपे नवेइ निधाना जी ॥ ध० ॥ २६ ॥ इतिश्रीप्रबोधचिंतामणौ ढालनाषाप्रबंधे पंमितश्रीधर्ममंदिरगणिविरचिते मोहविवेकसंग्राम हंसराजपरमपदप्राप्ति ब्रह्मस्वरूपवर्णननामा षष्ठः खंमः समाप्तोयम् ॥६॥ अस्मिन्ग्रंथे खंम ६, तन्मध्ये प्रथम खंमे ढाल ७, द्वितीय खंमे ढाल ११, तृतीय खंमे ढाल १६, चतुर्थ खंमे ढाल १३, पंचम खंमे ढाल १०, षष्ठखंमे ढाल १९, सर्व संख्या ढाल ७६. अस्मिन् ग्रंथे सर्व गाथा संख्या १७१२, श्लोक संख्या २३२५ ॥ इति श्रीपंमितधर्ममंदिरविरचित मोहविवेकरासः समाप्तः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीउपमिति नवप्रपंच आश्रयी धर्मनाथजीनी विनति रूप स्तवन प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चिदानंद चित्तवूं, चिंततीर्थंकर चोवीश ॥ जगउपगारी जगतगुरु, ज्योतिरूप जगदीश ॥ १ ॥ आपे आपविचारतां, लहियें आपसरूप ॥ प्रगटे ममतातृण छिपे, समता अमृतकूप ॥ २ ॥ जव लग जग जूलो जमे, तव लग शिवपुर दूर ॥ जव लग हृदय न ऊगमे, आतम अनुनव सूर ॥ ३ ॥ मनबंधव विनति करूं, छोडी चपल सनाव ॥ सज्ज थइ संजालियें, आवियें आतम नाव ॥ ४ ॥ केवल चिन्मय चतुर तुं, तूं हांसी तूं हंस ॥ अलख अरूपी अकल गति, अविनाशी अवतंस ॥ ५ ॥ लब्धि सिद्धि लहरी जलधि, महिमानिधि महाराज ॥ मोहादिक वयरी विकट, तिणे लोपी तुज लाज ॥६॥ राजऋद्धि तुज सवि हरी, दारूयां डुःख अनेक ॥ अब आतम आलस तजी, चेत चेत धरि टेक ॥७॥ नाम गाम तस दाखवे, उपगारी अरिहंत ॥ आपबलें अरि जीतियें, साहज दे नगवंत ॥ ८ ॥ आराधो आदर करी, अडवडियां आधार ॥ विनय करीने वीनवो, शरणागत साधार ॥९॥

॥ चोपाइ ॥ पाटणएक अनोपम वसे, भवचक्र नामें उल्लसे ॥ नयरतणो महोटो विस्तार, आदि नहीं जस अंत न पार ॥ १० ॥ चोविश मारग पोढी पोल, लाख चोरासी चौटां उल ॥ चौटे चौटे हाट अनेक, वाणिक व्यवहारी नहिं छेक ॥ ११ ॥ व्होरे वणजे वस्तु अनंत, वसे घणा त्यां संत असंत ॥ बहु धनपति निर्धन पण घणा, नाटक कौतुक नी नहिं मणा ॥ १२ ॥ कोइ उपराजे कोइ निर्गमे, भला चतुर त्यां भूला भमे ॥ शेरी शेरी नव नव साथ, विछड्यां साजन नावे हाथ ॥ १३ ॥ थोक थोक जन जोई नाट, जोइ जोइ जापे जुइ जुइ वाट ॥ उपजे विणसे वस्तु असंख्य, तेहतणी कुण जाणे संख्य ॥ १४ ॥ चार नयर ते मांहे रहे, पार एक एकनो कुण लहे ॥ पापी पिंजर पशु संस्थान, मानव वास ने बुद्धिनिधान ॥ १५ ॥ रायाराय करम परिणाम, राज करे त्यां अति उद्दाम ॥ जगमां जस परताप प्रचंम, सबल निबल शिर पाडे दंम ॥ १६ ॥ सेव करे जस राणो राण, त्रिभुवन कोइ न लोपे आण ॥ सूरज शशी करे जस चाकरी, आश आशंक जेनी आकरी ॥ १७ ॥ जे कीडीने कुंजर करे, कीडी कुंजर यइने फरे ॥ करे रांक राजाने धसी, राज दीये निर्धनने हसी ॥ १८ ॥ जन परमेश्वर एहने कहे, कल विधाता करि सद्दहे ॥ नाम्य देव खुदा ए होय, अवर न करता हरता कोय ॥ १९ ॥ आठ बंधवे छे नूपाल, तेमां चार महाविकराल ॥ नाण दंसण आवरण अनंत, विघ्नमोहनी अति बलवंत ॥ २० ॥ ए चारे घनघाती कह्या, आतमरूप रोकीने रह्या ॥ वादल विंट्यो दिनकर जिस्यो, राहें जिम पूनिम शशि ग्रस्यो ॥ २१ ॥ जलमांहे कादव जिम मल्यो, लोहमांहे विम्वानल नल्यो ॥ मणिवैडूर्यज मेलो थयो, गइ ज्योती दर्पण काटयो ॥ २२ ॥ इणिपरें रोकी आतम रूप, उपाडी नाख्यो भवकूप ॥ नाण दंसणावरणे आवर्यो, आतम अज्ञानी थइ फर्यो ॥ २३ ॥ जे अनंतबल ते बल हीन, विघनराय कियो जीव आधीन ॥ मोहनीय तो छे दुरदंत, ते आगल कहिशुं विरतंत ॥२४॥ नाम गोत्र आयुर वेदनी, एह वात समजे जेदनी ॥ पुन्य पाप सुख दुःख थइ मले, पिंजरमां प्रभुने सांकले ॥ २५ ॥ त्रस थावर अति सूक्ष्म थूल, पृथ्वी पाणी वन तरु मूल ॥ अग्निवाय कीडी कंथुउ, नामकर्मेंं चेतन हुउ ॥ २६ ॥ माखी मधुकर काठव मीन, गोह भुजंगम उंदर दीन ॥ नाग तुरंग

म उंट गयंद, हरिण रोझ शीयाल मयंद ॥ २७ ॥ चातक चकवा चा चकोर, नाम नरेसर अतिहि कगेर ॥ पशुसंस्थान नयर मांहि नख्या,ए प्राणी बहु रूपें कख्या ॥२८॥ निखररूप कीधा नारकी, नामकरम आइ मारकी ॥ विबुध निधान नयर जनघणा, कीधा सुंदर सोहामणा ॥ २९ मानववास वसे मानवी,तेहनी पेर किधी नवनवी ॥ कोइ सुंदर कोइ कुत्सि त अंग, कोइ गोरा कोइ काजल रंग ॥३०॥ कोइ उंचा कोइ अतिवामण कोइ सुखिया कोइ डुखी दूमणा ॥ कोइ सुसर कोइ दूसर हुआ, सक लोक गुण इम जूजुआ ॥ ३१ ॥ गोत्रकर्मनो जुउविशेक, निर्मलवंश किय नर एक ॥ एक कीया माणस कुलहीन,निर्बल निर्धन निर्गुण दीन ॥३२ आयुरायनो ए अधिकार, हडिबंधन बांध्यो संसार॥ तेहना हुकम पखाविर सरे,कोइ नवांतर नवि संचरे ॥३३॥ रायवेदनी रंगे रमे,सुख असुख थइ परिणमे ॥ ए चारे नवना थिर थोन, जिम मंदिरना मंमन मोन ॥ ३४ । हवे कहिशुं मोहनीय नरेश,जिणे जीत्या सवि देशविदेश ॥ जिणे जीत्या स वि सुर नर राय, मुनि केताइ लगाव्या पाय ॥३५॥ एहतणो पोढो परिव र, नाना महोटा सवि कुंभार ॥ एहनुं मन अटवीमां वास, इंद्रादिक सेवे जिम दास ॥ ३६ ॥ नदी प्रमत्तता डुमेति नीर, चित्तविक्षेप मंमप तस ती ॥ वेसे चतुर तृष्णा चोतरे, विपर्यास आसन ऊपरें ॥ ३७ ॥ बल साते व धवनुं एह,पुष्ट करे आणी मन नेह ॥ एहथी राय कर्म परिणाम, राज्य क रे अविचल अनिराम ॥३८॥ मोह तणी पटराणी सार,माहा मूढता नामे नार ॥ कंत कामिनी सबल सनेह,एक जीव दीसे दोइ देह ॥३९॥ मिथ्या द र्शन महेतो तास, सदा रहे नरपतिने पास ॥ स्वामिनक्त सबलो बुधिवंत, राजकाज सवि चलवे तंत ॥ ४० ॥ त्रण जग वरते जेहनी आण, वश की धा सवि जाण अजाण ॥ मोहरायना सवि आरंन, थोनावण जाणे थिर थंन ॥ ४१ ॥ जे अर्धांगें राखे नार, करे जपमाला कर हथियार ॥ हसे रुवे तुसे दे श्राप, तेवा देव मनाव्या आप ॥ ४२ ॥ जे आरंनी जे परिग्र ही, जस बहु तृष्णा तृप्ति नहीं ॥ घरवारी जे गुरु पूजाय, ए सवि महेता त णो उपाय ॥ ४३ ॥ होम हवन हिंसा ज्यां घणी, दया दान मूक्या अव गणी ॥ जिम जग एवे धर्मे धसे, तिम मिथ्यामति महेतो हसे ॥ ४४ ॥ वीतराग जे निर्मलदेव, तेहनी न करे नावे सेव ॥ ब्रह्मचारी विरति गुणवं

त, ते ज्ञानी गुरु नावे चित ॥ ४५ ॥ दयामूल जिन जाषित धर्म,तेहने जा
णे ए सवि जर्म ॥ मिथ्यादर्शन महंता तणा, ए करतूत अबे अतिघणा
॥ ४६ ॥ कुदृष्टिनामें तरुणी तास, सदा रहे जे पियुनी पास ॥ सकल च
लावे घरनो जार, रमे निचिंतो तस जरथार ॥ ४७ ॥ केतेश्क जिनशास
न लही, महंतानी आज्ञा शिर वही ॥ सूत्र तजी उत्सूत्रें पड्या, मत वाह्या
ते मोहें नड्या ॥ ४८ ॥ कोई जटाला कोइ शिरमुंम, कोइ रक्तांबर कोइ क
रदंम ॥ गर लगावे मागे जीख,ए सवि महंता केरी शीख ॥४९॥ मोहराय
नो कूंवर वडो, राग केशरी अति वांकडो ॥ सबल प्रतापी शक्ति अनंत,
राणी मूढतानो जे कंत ॥ ५० ॥ त्रण रूप ए नरपति तणां, एक ए
कथी बीहामणां ॥ काम स्नेह राग ए दोय, त्रीजो रागदृष्टि तिम जोय
॥ ५१ ॥ विषयतणा रस जे विप जिस्या, ते पहेले रूपें मन वस्या ॥ बीजे
रूपें धन परिवार, ते ऊपर प्रतिबंध अपार ॥ ५२ ॥ त्रीजे रूपें आपआप
णा, महंत सहुमां सोहामणा ॥ ए त्रण रूपें राजकुमार, जेर करी मूक्यो
संसार ॥५३॥ मोहरायनो बीजो पुत, द्वेष गयंद ठे नांगडजूत ॥ वांकूमुख
लोचन विकराल, फलहलती जाणे दव जाल ॥ ५४ ॥ निर्विवेकता एनी
नार, धरे अंगगुण पियु अनुसार ॥ इणे रुंध्यो जब हृदय डुवार, तब न
वि आवे विनय विचार ॥ ५५ ॥ रागकेशरीनो विस्तार, चारसुता वलि नंद
न चार ॥ अनंतानुबंधी अपच्चखाण, पच्चखाण संजल परमाण ॥ ५६ ॥
पहेली दृढ घनवंशी जिसी, मींढसींग सम बीजी कशी ॥ त्रीजि गोमूत्रिका
सम होय, चोथी गई सरखी जोय ॥ ५७ ॥ ए चारे वहे नर बलवंत, जा
लें बांध्या जीव अनंत ॥ कूडकपट बहु परें केलवे, नरय तिरयगतिशुं मेल
वे ॥ ५८ ॥ माया चारे ए दीकरी, जिस्यो कुंजन तिसी ठीकरी ॥ पुत्र लोज
ना एनां नाम, पिता सरीखा सुत परिणाम ॥ ५९ ॥ पहेलोपुत्र रंग करम
जी, बीजो कादव समगत जजी ॥ त्रीजो दीप मली सम कह्यो, चोथो
हलद रंग सम लह्यो ॥ ६० ॥ द्वेपगजेंद तणा सुत आव, जेवो तरुअर
तेवो काव ॥ क्रोध मान ए दो चार चार, अनंतानुबंधादिक धार ॥ ६१ ॥
अनंतानुबंधी जे क्रोध, मोहरायनो सबलो जोध ॥ जाव जीव साधे संग्राम,
गिरिरेखा जिम नावे ठाम ॥६२॥ बीजो वरस लगें नवि मले, शररेखा व
रसालें जले ॥ त्रीजो रजरेखा सम होय, चोथो जलरेखा सम जोय ॥

॥ ६३ ॥ शैलयंत्र सम पेहेलो माण, अस्थियंत्र सम बीजो जाण ॥ त्रीजो काठ सरिखो धीठ, चोथो नेत्रलता जिम ईठ ॥ ६४ ॥ मोहरायना ए पोतरा, सांत्रे नीच जिस्या कूतरा ॥ समकित देशविरति चारित्र, वीतराग पद नीना सत्र ॥ ६५ ॥ फोजदार मोहरायनो, कोइ न कले जेनो मायनो ॥ मदनराय महोटो मूगल, जिणे जीत्या सुर नर नूपाल ॥ ६६ ॥ रासे पंच कुसुमनां बाण, कंपावे तिहुअणनां प्राण ॥ योध जुवान वडो जग जेठ, दानव देव करावे वेठ ॥ ६७ ॥ रति प्रिती घरणी दोइ तास, जे ता नें अविहड घरवास ॥ खटऋतु सेवे जेना पाय, विधु वसंत सुरिजन सुख दाय ॥ ६८ ॥ ब्रह्मा निज पुत्रीशुं रम्यो, इंड अहल्या चरणे नम्यो ॥ कृष्ण पपा गोपीना दास, ए सवि मन्मथ तणा विलास ॥ ६९ ॥ त्रिनुवन नृप धरे त्रण रूप, पुरुष नपुंसक नारि अनूप ॥ त्रिहूं रूपें त्रण जगने दमे, ए र स लोक पणां फरा लमे ॥७०॥ अरति हास्य नय शोक डुगंठ, रति त्रण सुनट मरोडे मुठ ॥ इणिपरें कामतणो परिवार, करे रणांगण रिपुसंहार ॥ ॥७१॥ राग कुंवरनी सबल जगीश, विषयानिलाष वडो मंत्रीश ॥ पांचे इंडि य जास आधीन, सवि जग जीव कस्या जिणे दीन ॥ ७२ ॥ कृष्ण नील कापोती लेश, त्रण साहेली नवनव वेश ॥ संख्या रहित अशुन परिणाम, सबल सिपाइ करे संग्राम ॥ ७३ ॥ हास्यतणी नारी तुछता, नय नायां बी ए सत्वता ॥ नव आस्या त्रे घरणी शोक, ए त्रिहुं निलज कीधां लोक ॥ ७४ ॥ द्रल विवाद वडा जूकार, मोहरायना चामरधार ॥ वलि धनगर्व धरे शिर छत्र, मुलरनाथ द बीडीपत्र ॥ ७५ ॥ विकथा वात सुणा वे घणी, चारे चतुरा चिहुंदिशि तणी ॥ अविरति रांधण रांधे अन्न, निड पोतरा करे जतन ॥ ७६ ॥ परनिंदा चंमालिणी नार, सदा बुहारे नव घर वार ॥ लालां साते व्यसन सवास, मोहरायने सोहे पास ॥ ७७ ॥ प्रौढा आरतध्यान उदार, अटल दमराव वडा जूकार ॥ इणिपरें सुनट तणी बहु कोड, सेवे मोहनृपति कर जोड ॥ ७८ ॥ इणिपरें अधर कह्यो अधिकार, मोहनरेश्वरनो विस्तार ॥ हवे वर्णवुं धर्मनरिंद, राज करे जग सुरतरु कंद ॥ ७९ ॥ सात्विक मानस नामें नगर, अति सुवास जिम महके अगर ॥ ज्यां दानादिक गुणनो वास, ज्यां सद्गुं गुननति अन्यास ॥ ८० ॥ निविवेक मोहे नम दास, अति उनंग त्रिम्यो कैलास ॥ ज्यां चढतां नहियें निर

धार, जगत त्रण केरो विस्तार ॥ ८१ ॥ गिरिविवेक ऊपर अति सखर, अ
प्रमत्तता नामें शिखर, नगर जैनपुर त्यां उल्हसे, सदा सुखी त्यां नविज
न वसे ॥ ८२ ॥ तेह नयरमांहे इक चित्त, समाधान मंमप सुपवित्त ॥ ते
ह तले रहेतां संताप, सवि जाये प्रगटे सुख व्याप ॥ ८३ ॥ निःस्पृहता
नामें वेदिका, तिहां विराजे डुख नेदिका ॥ ज्यां वेगा विषयादिक नोग, व
स न करे न होये डुःख सोग ॥ ८४ ॥ जीव वीर्य त्यां आसन चंग, ज्यां
उपजे समरंग अनंग ॥ जस अनुनावें चेतन कला, प्रगटे चिहुदिशि अ
ति निर्मला ॥ ८५ ॥ चारित्रधर्म तिहां माहाराज,राज्य करे अति सुंदर सा
ज ॥ वदन अनोपम जेनां चार, दान शील तप नाव उदार ॥ ८६ ॥ इण
रूपें ए जग उद्धरे, सकल जीवने आनंद करे ॥ ऊतारे नवसायर पार,पो
होंचाडे शिवनयर मफार ॥८७॥ विरतिनाम जस नारि अनूप, पियुसरखुं
जस सकल स्वरूप ॥ मुक्तिपंथ देखाडे हसी,तेहने धन जस हैडे वसी ॥८८॥
वडो कुंवर तेनो यतिधर्म, जे सेहजें आपे शिवशर्म ॥ लघुनंदन श्रावक आ
चार, अंग तुंग सोहे जस वार ॥ ८९ ॥ सामायिक छेदवहाव, परीहार सु
विसुद्ध सहाव ॥ सुहुम संपराय अहखाय, पंचरूप वड कुंवर राय ॥९०॥
अवर रूप वलि दश एहनां, नाम सुणो कहियें तेहनां ॥ खंती अज्जव म
द्दव मुत्ति, सत्य शौच तप संयम जुत्ति ॥ ९१ ॥ ब्रह्मचर्यने अकिंचन्य, ए
ह रूप सेवे ते धन्य ॥ रूप एकमांहे प्रतिरूप, तेह अनेक धरे वररूप ॥
॥ ९२ ॥ रूप बार सुणियें तपतणां, सतर संयमनां सोहामणां ॥ इणिपरें
कहेतां नावे पार ॥ चारित्रधर्म तणो विस्तार ॥९३॥ तिम सन्नाव सरलता
नार ॥ यतिधर्म घरणी मनुहार ॥ एक एक विना नवि रहे, स्त्रीनरतार स
वल सुख लहे ॥ ९४ ॥ श्रावकधर्म तणी पतिव्रता, छे नारी सद्गुण रक्तता ॥
सम्यग्दर्शन महेंतो धीर ॥ धर्मरायनो वडो वजीर ॥९५॥ सप्ततत्त्व मंदिर
मां रमे, शमसंवेग दया परिणमे ॥ शुन आस्था वलि नवनिर्वेद, इष्ट मित्र
जसु टाले खेद ॥ ९६ ॥ मैत्री मुदिता करुणा सार, मध्यस्थता सहियर प
रिवार ॥ सुदृष्टिनाम गुणरयणें नरी, महेंताने घर अंतेउरी ॥ ९७ ॥
सारे सवि नविजननां काज, सदा संनाले नरपति राज ॥ देखाडे शिवमा
रग जोग, तेहथी रहियें शुन संयोग ॥ ९८ ॥ विमलबोध मंत्रीसर वीर, च
तुर विचक्षण साहस धीर ॥ जाणे सकल लोकनी वात, पार नही

जस मति अवदात ॥ ९९ ॥ अतीत अनागत ने वर्तमान, मंत्री जाणे सवि विज्ञान ॥ काल सनाव सवि जाणे सोय, इस्यो चतुर नहिं बीजो कोय ॥१००॥ पांच रूप धरे ते वली, श्रुत मति अवधि मनस केवली॥ पांचे रूपें प्रगट प्रताप, धर्म कर्म सवि दाखे आप ॥ १०१ ॥ अधिगति नामें त स कामिनी, शुन परिणाम तणी सामिनी ॥ निज पियु तणी वधारे लाज, सारे धरमरायनां काज ॥ १०२ ॥ सेनापति साचो संतोष, जेह निवा रे सवला दोष ॥ इणिपरें धर्म रायनी फोज, करे नविक मनमांहे सोज ॥ १०३ ॥ कबहिक जोर करे मोहराय, धर्मरायनो टाले गाय ॥ धर्मराय जब करे संग्राम, मोहतणो तव टाले गाम ॥ १०४ ॥ इणिपरे दोय कट क करे जूऊ, नविकलोक मन अहनिशि गूज ॥ कोइहारे कोइ जीते कदा, ए रीतें वर्ते बे सदा ॥ १०५ ॥ उत्कट कर्मी केरे चित्त, मोहराय व्यापी र ह्यो नित्त ॥ धर्मराय त्यांथी रह्यो दूर, जिम रजनी मुख नागो सूर ॥१०६॥ हुए अनुकूल करम परिणाम, नवस्थिति केरो हुए विराम ॥ नियति काल जब मिले सनाव, उद्यम उपजावे सनाव ॥ १०७ ॥ ए पांचे जन टोले मली, आतम शक्ति करे निर्मली ॥ तव चेतन मन चिंता थई, हेहे ए ग ति मुऊनी नई ॥ १०८ ॥ हुं पुरुषोत्तम परम सरूप, नाथ निरंजन त्रिभुव न नूप ॥ कीधो करमें हूं सांकडो, मोह महा डुशमन वांकडो ॥ १०९ ॥ राख्यो काल अनंत निगोद, कुगति नमाडी कीधो खोद ॥ रांक तणीपरें जग रोलव्यो ॥ नले धुतारे हूं नोलव्यो ॥ ११० ॥ समजी आव्यो सद गुरु पाय, पूछयो शिवपुर तणो उपाय ॥ तब सदगुरु शिव मारग कह्यो, ज्ञान दर्शन चारित्र सद्दह्यो ॥ १११ ॥ देखाड्या मोहादिक दोष, कर्ता क र्म नरमना पोष ॥ नेह तणी देखाडी रीत, लहे राज महोटा रिपु जीत ॥ ११२ ॥ चारित्र धर्म कियो अनुकूल ॥ मोहतणुं उखेडयुं मूल, धर्म न रेसरनो परिवार ॥ रमे रंग नर हृदय मकार ॥११३॥ दोहा ॥ जब डुशमन दूरें गया, विरला विषयकषाय ॥ राज लहे तब आपणुं, उत्तम आतम रा य ॥११४॥ संतोषी सुखियो रहे, सदा सुधारस लीन ॥ इंद्रादिक तसु या गलें, दीसे डुखिया दीन ॥ ११५ ॥ ते सुख नहिं सुररायने, ते नहिं रायां राय ॥ जे आतम सुख अनुनवे, सम संतोष पसाय ॥ ११६ ॥ परवशता पाली वली, गइ दीनता दूर ॥ आश पराइ जब तजी, जीव कीले सुख

पूर ॥ ११७ ॥ फूरीने फंखर थया, मुख मूके निःश्वास ॥ कामी कामिनी पग पडे, आश करे इम दास ॥ ११८ ॥ अग्नि आपथी ऊपजे,तृणा आप जलाय ॥ आपें आप विचारतां, आपहि आप बुफाय ॥ ११९ ॥ आशा बंधन बांधियो, जग सघलो मूंफाय ॥ रहे उदास जे आश तजि, जीव न्मुक्त कहाय ॥ १२० ॥ आश करो अरिहंतनी,जग थई रहो उदास ॥ विनय अनोपम एह सुख, अनुनव लीलविलास ॥ १२१ ॥ आशी पारागो टको, तापें फाटी जाय ॥ तिम आशा मन मानवी, न लहे मुक्ति उपाय ॥१२२॥ जेह निराशी गोटको, ते होय सहज अनंग ॥ तरुआनो मल अप हरी, रूपूं करे सुरंग ॥ १२३ ॥ तेम निराशी मन हरे, सवि आतम सं ताप ॥ आतम परमातम हुए, विनयविचारो आप ॥ १२४ ॥ विनय विचारी आदरो, समता शिवपुर वाट ॥ अरति नावे आशनी, उपजे नहीं उच्चाट ॥ १२५ ॥ विरुई आशा विषयनी, कलेडो विष वेल्ल ॥ रोपो सम ता सुरलता, विनय रमो रस खेल्ल ॥ १२६ ॥ काट न लागे कनकनें,जि म रहेतां रज पास ॥ तिम कर्में नवि नेदियें,आतम राम उदास ॥१२७॥ इम उदास रस चाखतां ॥ शिथिल होय नव बंध ॥ शुकल ध्यान तव ऊपजे, पावन परम सुगंध ॥ १२८ ॥ शुकलध्यान जव थिर करी, चंचल मन कल्लोल ॥ केवल ज्ञान तरंगमां, आतम करे फकोल ॥ १२९ ॥ कर्म घनघाति छूप गयां, तव प्रगटी निज ज्योत ॥ तिम बादल विघटी गया, उदयो रवि उद्योत ॥१३०॥ माखणथी जब जल वस्यूं, तब प्रगटयूं घृत रूप ॥ तिम घनघाती मल वले,प्रगटे ज्ञान अनूप॥१३१ ॥ मन वच काया थिर करी,परम शुकल धरि ध्यान ॥ चारे कर्म दही लहे,परमानंद निधान॥१३२॥ सिद्ध सदा सुख अनुनवे, अनुपम काल अनंत ॥ अजरामर अविचल रहे, प्रणमूं ते नगवंत॥१३३॥ परमनाथ आराधतां,ए सवि सीजे काज ॥ अंत रंग रिपु जीतियें, लहियें अविचल राज ॥१३४॥ धर्मनाथ अवधारियें,सेव कनी अरदास ॥ दया करीने दीजीयें,मुक्ति महोदयवास ॥१३५॥ वात न थो जो मुक्तिनो,तो थो सहज उदास॥ तेह जही अमें साधशूं,तहेने शिव अन्यास ॥१३६॥ सत्तरशें तोत्रोतरे,सुरत रही चोमास ॥ स्तवन रच्यूं में अ ल्पमति, आतम ज्ञान प्रकाश ॥१३७॥ श्रीविजयदेव सूरि पटें, श्रीविजय प्रन सूरि॥ श्रीकीर्त्तिविय वाचक तणो, विनय विनय रसपूरि ॥ १३८ ॥ इति ॥

॥ श्री चरमजिनेश्वराय नमः ॥

अथ

॥ बालावबोधसहिता श्रीसम्यक्त्वसित्तरी प्रारंनः ॥

तत्र प्रथम

॥ बालावबोध कर्त्तानुं मंगलाचरण ॥

॥ अनुष्टुब्वृत्तम् ॥

॥ नत्वा श्रीपार्श्वमर्हंतं, स्मृत्वा च श्रुतदेवताम् ॥ श्रीमत्सम्यक्त्वसप्तत्याः, कुर्वे बालावबोधनम् ॥ १ ॥ अर्थः—त्रेवीशमा तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथ अरिहंतने नमस्कार करीने तथा श्रुतदेवतानुं स्मरण करीने श्रीमत्सम्यक्त्व सप्ततिका ग्रंथना बालावबोधने हुं करुं छुं ॥ १ ॥ मूल गाथा ॥ दंसण सुद्धि पयासं, तित्थयरमपच्छिमं नमंसित्ता ॥ दंसणसुद्धि सरूवं, कित्तेमि सुयाणुसारेण ॥ १ ॥ अर्थः—दर्शन जे सम्यक्त्व, तेनी शुद्धि जे निर्मलपणुं, तेथी जेने केवलज्ञानरूप प्रकाश एटले अजवालुं थयुं छे, एवा अपश्चिम एटले छेल्ला चोवीशमा तीर्थंकर जे श्रीमहावीरस्वामी तेमने नमस्कार करीने दर्शनशुद्धि जे सम्यक्त्वशुद्धि तेनुं स्वरूप जे लक्षण तेने श्रुतानुसारें एटले आगमने अनुसारें हुं कहुं छुं. अर्थात् हुं मारी मतिथीज कहेतो नथी, किंतु आगमनो नाव लइने हुं कहुं छुं. ए अनिप्रायथी ग्रंथकर्त्तायें पोताने ग्रंथकर्त्तापणानुं अनिमान नथी. एवुं सूचन कर्युं छे ॥ १ ॥

हवे सम्यक्त्वनुं स्वरूप कहे छेः—

॥ दंसणमिह सम्मत्तं, तं पुण तत्तत्थसद्दहणरूवं ॥ खइयं खउवसमियं, तहोवसमियं च नायव्वं ॥ १ ॥ अर्थः—इह एटले आ शास्त्रने विषे अथवा जिनशासनने विषे दर्शन जे छे, तेने सम्यक्त्व कहियें. तं पुण एटले ते वली तत्तत्थसद्दहणरूवं एटले ते तत्त्वार्थश्रद्धानरूप छे. एटले आ पदें करी अन्य तीर्थीना दर्शनने सम्यक्त्व न कहियें. एम ग्रंथकारें जणाव्युं, केम के तें अन्य तीर्थमां तत्त्वार्थश्रद्धान नथी.

हवे ते सम्यक्त्वना घणा प्रकार छे, तेमां पण मुख्य त्रण प्रकार छे, ते कहे छेः— एक क्षायिक,बीजुं क्षायोपशमिक, तथा त्रीजुं औपशमिक, एम (नायव्वं के०) जाणवुं ॥ २ ॥

आ गाथामां पहेलुं क्षायिकसम्यक्त्व कह्युं छे. परंतु पहेलुं जीव, ओपशमिक सम्यक्त्व पामे छे. ए औपशमिकसम्यक्त्वना बे प्रकार छेः-तेमां एक नैसर्गिक तथा बीजुं आधिगमिक. तिहां जे गुरुना उपदेश प्रमुखनी अपेक्षाविना जातिस्मरण ज्ञानने वलें पूर्वभवना स्मरणादिकें करी प्राप्त थाय छे, तेने नैःसर्गिक औपशमिकसम्यक्त्व कहियें; अने जे गुरुना उपदेशें करी प्राप्त थाय तेने आगमिक औपशमिकसम्यक्त्व कहियें.

ए औपशमिकसम्यक्त्वनी उत्पत्ति आवी रीतें थाय छेः-कोई जीव चारे गतिमांनी कोई पण गतिमां फरतो छतो अकामनिर्जरायें करी यथाप्रवृत्तिकरणें करी ज्ञानावरणादि सात कर्मनी एक कोडाकोडी सागरोपमनी मांहे स्थिति करे;जेम नदीनी पासेंना अथवा नदीमां आवेला पर्वतना पाषाण एक बीजा सार्थे घसातां घसातां सहजेज गोलाकार बनी जाय छे, तेम ते पण जाणवुं. ते समय ग्रंथिभेदी अंतरकरण करतोज औपशमिकसम्यक्त्वनुं उपार्जन करे, तेवारें अर्द्धपुजलपरावर्त्तनीमांहे शेष संसार करे ॥ यदुक्तं ॥ "अंतो मुहुत्तमित्तं, पिफासिअं जेहिं हुज्ज सम्मत्तं ॥ तेसिं अवड्ढपुग्गल, परिअट्टो चेव संसारो " एम ए औपशमिकसम्यक्त्वनो काल अंतर्मुहूर्त्तनो होय छे॥

हवे क्षायोपशमिकसम्यक्त्वनुं स्वरूप कहे छेः-के जे जीव, अंतरकरण करे नहिं, ते यथाप्रवृत्तिकरण, अपूर्वकरण तथा अनिवृत्तिकरण, ए त्रण करणें करी मिणाला कोद्रवना दृष्टांतें मिथ्यात्वदलिकना त्रण पुंज करे. तेमां एक शुद्ध पुंज, बीजो मिश्रपुंज अने त्रीजो अशुद्धपुंज; तिहां जेम मीणाला कोद्रवाने धोइ करी उपरथी मीण उतारी चोखा करीने एक ढगलो करियें, तेम जे मिथ्यात्वना पुजलने चोखा करी ढगलो करे, ते शुद्ध पुंज कहियें; तथा वली कांइक धोया कांइक अणधोया रहे, तेवा पुजलने मिश्र पुंज कहियें, अने जे सर्वथा अणधोयाज होय, तेने अशुद्ध पुंज कहियें. ए कोद्रवाना दृष्टांतें मिथ्यात्वना दलिक पण जाणी लेवां. ते त्रण पुंज मांहे ला शुद्ध पुंजनो वेदनार जीव, क्षायिकोपशमिकसम्यक्त्व पामे.

॥ हवे क्षायिकसम्यक्त्वनुं स्वरूप कहीयें छेयेंः-जे जीव, अनंतानुबंधीया क्रोध, मान, माया, लोभ तथा मिथ्यामोहनीय, मिश्रमोहनीय अने दर्शन मोहनीय, ए सात प्रकृतिनो क्षय करे, ते जीवने क्षायिकसम्यक्त्व प्राप्त थाय छे. क्षायिकसम्यक्त्व पाम्या पछी तेज भवमां, अथवा बीजा भवमां अ

थवा त्रीजा नवमां अथवा चोथा नवमां ते जीव, मोक्षे जाय छे. पांचमो नव सर्वथा थायज नहीं ॥ यडुक्तं पंचसंग्रहे ॥ " तइय चउत्थे तंमिउ, नवंमि सिझंति दंसणे खीणे ॥ जे देव निरयसंखा, उ चरमदेहेसुते हुंति" ए क्षायिकसम्यक्त्व अपौद्गलिक होय छे अने औपशमिकसम्यक्त्व तथा क्षायोपशमिकसम्यक्त्व ए पौद्गलिक होय छे. केम के, ए बन्ने सम्यक्त मिथ्यात्व पुद्गल चोखा कस्वाथी उत्पन्न थाय छे, माटें पौद्गलिक कह्या छे. वली क्षायिकसम्यक्त्व मुक्तिनेविषे सिद्धना जीवोमां पण पामीयें. ए संक्षेपथी बीजी गाथानो अर्थ कह्यो ॥ २ ॥

॥ हवे एसम्यक्त्वनेविषे अन्यतर सम्यक्त्व कहेवा गुण संयुक्त नव्यप्राणी पामे, ते कहे छेः–अवउज्झियं मिछत्तो, जिणचेइय साहुपूयणुज्जुत्तो ॥ आयारमठ मेयं, जो पालइ तस्स सम्मत्तं ॥ ३ ॥ अर्थः–जेणे मिथ्यात्व गंमयुं छे, एवो नव्य जीव सम्यक्त्वने पामे, ते मिथ्यात्वना पांच प्रकार छेः– एक आनिग्रहिक, बीजो अननिग्रहिक, त्रीजो आनिनिवेशिक, चोथो सांशयिक, अने पांचमो अनानोगिक. ए पांच प्रकारना मिथ्यात्वनो सर्वथा त्याग करे. तेवारें जीवने शुद्ध देव, शुद्ध गुरु तथा शुद्ध धर्मनी सद्दहणारूप सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय.

तेमां शुद्ध देव, ते जिन वीतराग जे अढार दोष रहित छे. अने चैत्य ते देव, गृहप्रतिमा स्थापना जिन जाणवा. तथा शुद्ध गुरु ते सुसाधु सुविहित शुद्ध प्ररूपक, दशविध यतिधर्म संयुक्त होय ते साधु जाणवा. तेउनी पूजाने विषे जे उद्युक्त उजमाल तत्पर होय तथा निःशंकितादिक आठ प्रकारना आचारने पाले, तेने सम्यक्त्व होय ॥ ३ ॥

हवे ते सम्यक्त्व शुद्धिनेविषे दृष्टांतगत आरामनंदननी कथा कहे छेः– आ जंबुद्दीपने विषे अर्द्धचंद्राकार नरत क्षेत्र छे. तेमां लक्ष्मीपुर नामनुं नगर छे, ते एवुं तो सुशोनित छे के, जाणे लक्ष्मीनुं रमण करवानुंज स्थान होय नहिं ! तेमां विक्रम एवे नामें राजा राज्य करतो हतो. एना चार नाइयो हता. तेउनां नामः–विमलबुद्धि, बुद्धिसागर, सुबुद्धि, तथा विशालबुद्धि. ए चारे, पोताना नाम जेवाज परिणाम वाला हता. तेउमांना विशालबुद्धिने पद्मश्री नामनी स्त्री हती. तेमां पण पोताना नामना जेवाज परिणाम हता. कोइ कालें तेना जेठांनी स्त्रीना उदरथी पुत्र पुत्रीयोनो

जन्म थयो. तेना निशाल गरणां, तथा पाणिग्रहण प्रमुख महोत्सव जो इने मनमां अत्यंत दुःखने पामी. अने घरनी वाडीमां जइने रोती थकी कहेवा लागी के हा देव ! ! ! मारी जेठाणीयोने पुत्र तथा पुत्रीयो छे तेना पाणिग्रहण वगेरेना महोत्सव थाय छे. अने हुं अधन्य तथा अनागिणी छुं के जेथी मनें एक पुत्र के पुत्री कांइ पण नथी,एवा खेदने पामवा लागी. एम तेने रोती जोइने एक वांदरी पासें आवीने कहेवा लागी के, हे सखि! तुने एवडुं शुं दुःख थयुं छे के जेथी तुं रडे छे ? ते मने कहे. हुं तारुं दुःख मटाडुं ॥ यतः ॥ डुक्कं तासु कहिज्जइ, जो होइ डुक्क फेडण सम ज्ञो ॥ जो नवि डुहिए डुहिउं, तासी किस कहिज्जए डुक्कं॥ त्यारें पद्मश्री बोली के मारी बधी जेठाणीउने बेटा बेटी छे. तेउना जन्मादिकना महोत्सवो थाय छे. अने मारे पुत्री पुत्रादिक कांइ नथी तेथी हुं रडुं छुं. ए दुःख जो ताराथी टली शके तो टाल. एवुं सांजली ते वानरी तरत वनमां जइने एक औषधि लावी. ते तेने आपीने कहेवा लागी के हे सखि ! ऋतुस्नानने दिवसें ए औषधिने पाणीमां घसीने पीजे. तो तेज रात्रें तने पुत्र गर्न थशे. एवां तेनां वचन सांजलीने ते संतोष पामी अने वानरीने कहेवा लागी के जो मने गर्न थशे. तो तने आ लाख टकानो हार आपीश! पण तुं वांदरी छतां माणसनी जाषा केम बोले छे? तेवारें वांदरी बोली के, मारी पासें विद्या छे, तेने योगें मनुष्य जाषा पण जाणुं छुं अने वांदरी जाषा पण जाणुं छुं. एम कहीने ते वांदरी जती रही.

पछी पद्मश्रीयें ऋतु स्नान करी ते औषधि निर्मल पाणीथी घसीने तेनुं पाणी पीधुं. तेज रात्रिनेविषे तेने पुत्र गर्न रह्यो. अनुक्रमें गर्ननी वृद्धि थतां दिन पूर्ण थएथी वानरनी आकृतिवाला पुत्रनो जन्म थयो. एवुं एक परिचारिकाना मुखथी सांजलीने ते घणुं दुःखने पामी. ने विचारवा लागी के अरे!!! वानर पुत्र थएलो शे अर्थे आवशे ! एवी तो उलटी लोकोमां हांसी थशे. एवो विचार करीने पोतानी दासीना हाथे घरनी पासेना आराममां तेने मूकावी दीधो. तेने पेली वानरी आवीने लइ गई अने पोताना स्थानमां जइ पोताना पतिने कहेवा लागी के हुं गूढगर्ना हती तेथी मारो गर्न कोइने जणायो नही. हाल मास पूरा थयेथी में पुत्र प्रसव्यो छे. एम पोताना पति यूथाधिप वानरने समजाव्यो. पछी ते वांदर कु

मार स्तनपानविना डुःखी थवा लाग्यो. तेने जोइने वांदरी पोतानी एक सखीने केहेवा लागी. के मारा स्तनोमां दूध आवतुं नथी. माटें तुं आ बालकने धवराव. एवुं तेनुं बोलवुं मानीने ते बीजी वांदरीयें धवराववा मांड्यो, तेथी ते पुष्ट थयो. पढी कोइक समयनेविषे फरी ते पद्मश्री पूर्वोक्त बागमां जइने करुणस्वरें रोवा लागी.

अहो नवि जीवो,ए दाखला उपरथी संसारना जीवोने केहेवां डुःख ढे,ते तमारा ध्यानमां आव्यां हशे! संसारी जीव डुःखीज होय ढे. अने जे संसारसंबंधी सुख दीगमां आवे ढे ते पण डुःखने सुख मानेलुं ढे. जुवो के,गर्न धारण करवो, ते प्रत्यक्ष स्त्रीने डुःख दायक ढे केम के, गर्नवती स्त्रीने सुखें ऊंघ आवती नथी, पेट नरी खवातुं नथी. पोतानी इछाप्रमाणे चाली शकातुं नथी, अने वधारे मनने चेन पडतुं नथी वगेरे डुःख थाय ढे. तेने सुख मानीने ते स्त्री मनमां फुलाय ढे, अने ज्यारें गर्न धारण करेलो नथी होतो, त्यारें ऊंघ सारी रीतें आवे ढे, पेट नरी खवाय ढे, पोतानी इछा प्रमाणे गमे त्यां जवाइ अवाइ शकाय ढे तथा मनमां चेन रहे ढे, एवुं सुख ढतां तेने डुःख मानीने चिंता कर्यां करे ढे के मने गर्न रहे तो सारुं! एवा रीतें डुःखने सुख मानी लेवुं ए संसारनुं स्वरूप ढे. एनो विचार चतुर नरोयें सारी रीतें करी लेवो जोइयें. हवे ते वांदरीयें पद्मश्रीने रोती सांनली तेथी तेनी पासें आवीने कहेवा लागी के बाइ! मारी वात सांनल. हुं वांऊणी हती, अने संतान नहीं होवाना डुःखथी महा पीडा पामती हती. तेथी गमे तेम करीने मने संताननी प्राप्ति थाय तो वांजी पणुं मेटुं टले, एवो विचार करतां अचानक ते दिवस में तने एज काम करतां रोती जोइ ते संधियें मारुं कार्य साधी लेवानी इछाथी तने में एवी औषधि आपी के जेथी वानर पुत्रनोज जन्म थाय. तेम थवाथी मारी इछा में पूरी करी लीधी ढे. हवे बीजी औषधि हुं तने आपुं ते पूर्वनी पेठे स्नानें पान करजे, तेथी तुने मनुष्य पुत्र थशे. एमां संशय आणवो नहीं. ए वांदरीना उपर पद्मश्रीयें विश्वास करीने ऋतुस्नानने दिवसें तेम कर्युं. तेथी गर्न रह्यो ते नव मास पूरा थयेथी तेने शुन दिवस शुन वार तथा शुन मुहूर्तना समयें एक पुत्रनो जन्म थयो. त्यारें विशालबुद्धियें महोटो महोत्सव कर्यो. पुत्र जन्मथी आख्या कुटुंबने आनंद थयो. ते पुत्रनुं नाम

आरामनंदन एवुं राख्युं. तेना पालन पोषणने अर्थे सारी सारी धाव राखी, तेथी जेम नंदनवनमां कल्पवृक्ष वृद्धिने पामे, तेम तेपुत्र ऊछरवा लाग्यो. एम अनुक्रमें आठ वर्षनो थयो, त्यारें नीशाले जणवानेमाटे मोकल्यो. केम के, पुत्रनी लालना पांच वर्ष सुधीज करवी, त्यार पछी ते ताडना करवा लायक थाय छे, माटे लालना करवी नहीं. तेम कयाथी ते वगडी जाय छे. अने खराब टेववालो थाय छे, तेथी ताडनाज करवी जोइयें छे यें. तेम शोल वर्ष सुधी करियें. पछी पुत्रने मित्र जेवो गणियें. कह्युं छे के, " लालयेत् पंचवर्षाणि, दशवर्षाणि ताडयेत् ॥ प्राप्ते तु षोडशे वर्षे, पुत्रं मित्रवस्समाचरेत् " ॥

पछी आरामनंदन, निशालमां जणीने बहोंतेर कलानो पारंगामी थयो. एम करतां ते यौवन अवस्थाने पाम्यो. त्यारें मातापितायें महोटा उत्सवथी एक पद्मावती नामनी राजकन्यानी सायें तेनुं लग्न कर्युं. पछी जेम धरणेंइ अने पद्मावती आनंदथी रमण करे, तेम ते बेहु सुखविलासमां रमवा लाग्या तेथी काल व्यतीत थवानी पण तेनें खबर पडती नथी. केम के, सुखना दिवस गयेला जणाता नथी. यडुक्तं-" तहिं देवा वंतरिया, वरतरुणी गी य वाइय रवेणं ॥ निच्च सुहिया पमुइया, गयंपि कालं न जाणंति. " कोइ ए क समयने विषे ग्रीष्म ऋतु आवी, त्यारें एवो तो ताप पडवा लाग्यो के, तेथी लोकने महा संताप उत्पन्न थयो. तेथी आरामनंदन अने पद्मावती ए बन्ने सायें नर्मदानदीमां जलक्रीडा करवा गयां. त्यां क्रीडा करतां पद्मा वतीयें नदीमां तरती एक फूलनी कंचुक दीठी. त्यारें आरामनंदनने क हेवा लागी के हे प्राणप्रिय! पेली, फूलनी कंचुकी तरती जाय छे, ते मने आणी आपो. ए पहेरवानी मनें होंश थई छे? ते पूरी करो. आरामनंद न बोल्यो के, अगाध जलमां हुं केम जई शकुं? अने ते कंचुक तने केम लावी आपुं? एवो हठ तुने करवो जोइतो नथी माटे ए वातने तुं मूकी दे, तेवारें पद्मावती बोली के, जो ए कंचुक मने मले तोज हुं जीवुं, अ न्यथा हुं मरण शरण थाइश! कह्युं छे के " बालानामबलानां च, नृपा णां च विशेषतः ॥ तथा च पापसक्तानां, डुर्निवार्यः कदाग्रहः " एटले बा लक, अबला, राजा अने पापासक्त मनुष्यनो कदाग्रह डुःखें करी पण निवारण थाय नहीं. जुवो के, सीताना कदाग्रहथी राम सुवर्णना मृग

पाछळ दोड्यो, तेम पद्मावतीना कदाग्रहथी आरामनंदन पद्मावतीने त्यांज मूकीने एक नावडीना हाथे प्रवहण सज्ज करावी तेने सायें लई तेणें अगाध जळमां प्रवेश कखो. कंचुक आगळ तरतुं जाय अने तेनी पाछळ नाविका चाली जाय. एम करतां रात्रि पडवा मांडी पण पेलुं कंचुक हाथमां आव्युं नहीं. एटलामां जेम कोई माणस पाणीमां तरतां थाकी गयाथी विशामो लेवाने एक ठेकाणे स्थिर थई रहे, तेम ते कंचुक थंत्री रह्युं, त्यारें आराम नंदने ते चचकी लेवाने हाथ घाल्यो एटले ते कंचुक जेना माथामां छे, एवी एक दिव्य स्वरूप हार कुंमलादि आचूषणें मंमित एवी एक स्त्री पेदा थई. तेने जोईने ते कुमार विस्मय पाम्यो. अने पेला ना विकने तथा नावडीने एक कोरें मूकी दईने कौतुक जोवाने अर्थें पेली स्त्रीनी पाछळ लाग्यो. कह्युं छे के,:- " विद्यार्थी च धनार्थीच, स्त्रीयार्थी चैव विशेषतः ॥ अलसा न जायंते, तथैव कौतुकप्रियाः " जावार्थः-विद्यार्थी, धनार्थी, तथा स्त्रीयार्थी ए त्रणे ने आळस थतुं नथी, केम के, तेउने ते उद्योगकौतुकनी जेवो लागे छे.

पछी ते स्त्री ते नदीमांथी निकळीने, ते नदीने किनारें एक कालिका देवीनुं देहेरुं हतुं तेमां जइ, श्रीकालिकानी प्रतिमा हती तेने पेलुं पुष्पनुं कंचुक पहेरावीने कहेवा लागी के हे स्वामिनि ! तुं घणा कल्याणनी करना री थजे. एवी प्रार्थना करी, बाहेर नीकळीने अदृष्ट थइ गई. आरामनंदन ते देवीने निर्माल्य थयेलुं कंचुक लइ हर्षने पामीने नदीने किनारें आव्यो. त्यां जुए छे तो नाविक तथा नावडी ए बेमांनुं एके देखायुं नहीं. त्यां तेनुं नाम लइ महोटे सारें हाको मारतो थको त्यां जटकवा लाग्यो. ना विक गुम थइ गयो जाणीनें जयने पामवा लाग्यो. तेथी एक पाणीनी प रब हती, तेमां जइने सूतो. कह्युं छे के " अतिनुक्तवतां पुंसां, चिंतार हितचेतसां ॥ अति प्रवासश्रांतानां, निद्राहि सुलना मता " जावार्थः- जेणें अति नोजन कर्युं होय, जेनुं चिंतारहित चित्त होय, अने जे अति थाकेलो होय तेने सहज निद्रा आवी जाय छे. पछी ते परबनी ऊपर क रता करता केटलाएक चोरो आवी चड्या. त्यां पेला पुष्पना कंचुकनो सु गंध फेली रह्यो हतो तेथी ते चोरोयें विचायुं. के आहीं कोइ जोगी पुरु ष होतो जोइयें, एवुं अनुमान करीने ते परबमां पेठा. त्यां आरामनंदनने सूतो देखाना निमित्तें तेनो जाडो जोयो, पण पेला पुष्पना कंचुक विना

बीजुं कांई तेनी पासेंथी मळ्युं नही. तेथी तेज कंचुक लइने पेला चोरो बा हेर नीकळी चालता थया. कुमर अति थाकेलो होवाथी सुतो तेवोज घोर निद्राने वश थई जवाने लीधे रातनी चोरोनी हकीगतविषे तेने कांइ पण खबर पडी नही. सवारनो कठी जुवे ने तो ते कंचुक देखाणुं नहीं, तेथी ते अति खेदने पाम्यो. ने विचारवा लाग्यो के हुं कंचुकविना पद्मावतीने मुख केम देखाडी शकीश ! एवी चिंतवना करतो शून्य चित्तें नमवा लाग्यो. नम तां नमतां एक लक्ष्मीना निवास जेवा पाटण नामना नगरनी पासें आ वी पहोतो. तेनी मांहिलीकोरें चाल्यो, नगरना चहूटामां आवी जुवे छे तो एक शिखरबंध प्रासाद दीठामां आव्युं. तेमां जिनप्रतिमा जाणी, शुद्धसम्यक्त्वधारी छे माटे हर्षने पाम्यो. अने आकस्मिक महान लाभ थयो. एम जाणीने देव जुहारवाने प्रवेश कर्यो. मांहे जइने चैत्यवंदन कीधुं. ते समयें एक सागर नामना श्रेष्ठीयें तेने दीठो. अने परदेशी जाणीने तेने पोतानी पासें बोलाव्यो. तेनां वचन तथा सौभाग्य जोइने अति खुशी थयो. तेथी आग्रह करीने घेर तेडी गयो. अने स्नान वगेरे करावी सारी सामग्री सहित भोजन कराव्युं. पछी सागर श्रेष्ठीना आग्रहथी जेम पिताने घेर पुत्र रहे,तेम त्यां ते रह्यो. केटला एक दहाडा रह्या पछी वर्षाकाल आ व्यो. सारी पठें वर्षा थइ. समस्त पृथ्वीरूपिणी स्त्रीयें नीलां तृणोरूपी नीलां कंचुक पहेर्यां. सर्व नदी नवाण प्रमुख पाणीथी भरायां.

हवे कोइएक समयनेविषे लक्ष्मीधर राजानो मुख्य हस्ती पाणी पी ने पाछो वळ्यो, त्यारें एक स्थलनेविषे कादवमां खूंची गयो. तेने को ई कहाडी शके नही. कहाडवाना घणा उपायो कर्या, पण ते बधा निष्फ ल थया. ते जोइने राजा कहेवा लाग्यो के, आ हाथीने जे कोइ पुरुष कादवमांथी कहाडे, तेने वांछित दान आपुं. एवो शहेरमां पटह पीटा व्यो. ते पटहनो शब्द सांभळी ते वातनो आरामनंदनें अंगीकार कर्यो. त्यारें तेनें राजाना नफरो राजानी पासें तेडी गया. अने तेनुं रूप देखीने राजा खुशी थयो. पछी ते कुमार राजाने कहेवा लाग्यो के, तमारा मंत्री प्रमुखजो मने साहाय्य आपे, तो हुं कादवमांथी हाथीने कहाडुं. ते सां भळीने राजायें मंत्रीयोने साथें मोकल्या. तेमनी साथें ते हाथीनी समीप गयो. अने मंत्रीयोने कह्युं के सो हाथसुधी आ भूमिकाने इष्टिका (ईंट)

थी बंधावो. मंत्रीयें तत्काल इष्टिकाउ मंगावी अने ते भूमिका बंधावी. त्यारें कुमारें हाथीने खावाने शेरडी मंगावीने हाथीनी पासें नाखतांज तेणे ते यथेष्ट खाधी. तेथी हाथीना अंगमां बल आव्युं. पछी ते तलावमांथी नीकल करावीने जे ठेकाणें हाथी खूची गयो हतो ते ठेकाणुं पाणीथी जरावी नाख्युं. अने एक हाथणीने त्यां मंगावीने हाथीनी पासें ऊनी करी. तेने जोई हाथी पोताना शुंडादंम वडे तेनी योनिनो स्पर्श करतो थतो महाकामातुर थयो. त्यारें आरामनंदने मावतने कह्युं के, आ हाथणीने हवे हलवें हलवे दूर खसेडो. त्यारें मावतें पेली हाथणीने त्यां खसेडी कांइक दूर करी. तेनी पाछल हाथी पण बल करीने ते कादवमांथी नीकलवा लाग्यो. एम क्रमें करी ते हाथी आखो नीकलीने हाथणीनी पाछल दोडवा लाग्यो. दोडतो दोडतो गजशालामां ज्यां हाथणी आवी छे तेनी पूठें ते हाथी पण आव्यो. तेने हाथीना सेवकें आलानस्तंजने विषे बांध्यो. आखा नगरमां जय जयकार थयो. राजा कुमारनी बुद्धि देखीने खुशी थयो. पछी तेने पोतानी पासें तेडीने स्वादिष्ट नोजन कराव्युं, अने कह्युं के वर माग. ते सांनलीने कृतज्ञोनेविषे शिरोमणि जे आरामनंदन ते कहेवा लाग्यो के, महारी तरफथी सागर श्रेष्ठीने तेडावीने नगर शेठनी पदवीयें थापी महत्त्वपणुं आपो. राजायें सागर श्रेष्ठीने तेडावीने तेने श्रेष्ठिपद आप्युं. आखा नगरमां मुख्य कीधो तेथी सागर श्रेष्ठी आनंदने पाम्यो. खुशी थयो थको पोतानी पुत्री कुमरने देवा लाग्यो कुमरें कह्युं के, मारे एक स्त्री पद्मावती छे. तेम छतां बीजीने हुं शुं करुं! तेमां वली में तमने पिता करी मान्या छे, तेथी तमारी पुत्री ते मारी बहेन थइ, तेनी सार्थे हुं पाणिग्रहण केम करुं?

एवी रीतें आरामनंदन सागर श्रेष्ठीने घेर रहेतां थकां केटलोएक काल वीती गया पछी एक दिवसें ते सागरश्रेष्ठीने कहेवा लाग्यो के, मारे अन्य देशमां व्यापारने अर्थे जवानी मरजी थाय छे, माटें द्रव्य आपो तो मात्र लइ वहाणोमां नरीने मारी इच्छा हुं पूर्ण करुं! व्यापारमां जे लान थशे, ते हुं तमने आपीश. मारे तेमांथी कांइ पण खपतुं नथी. हुं तो मात्र देशाटन करीने कौतुक जोइश. एवुं तेनुं बोलवुं सांनली अने तेने नाग्यशाली जाणीने ते वात कबूल करी. पछी कुमारें वहाणोमां घांसा नर्या,

श्राव दूजणी जेंपो चढावी. साकर, सोपारी तथा नागरवेल प्रमुख केट लाएक जोग्य पदार्थो जथा. मुशल, कखल, घरंट, प्रमुख उपयोगी पदा र्थो सायें लीधा. रांधवासारु गामडां, सारां सारां वस्त्रो तथा शस्त्रो पण सायें लीधां. एक अर्धवृद्धा स्त्री सायें रसोई करवाने लीधी. एवी वधी सामग्री एकज वहाणमां जरी ते वहाण एटलुं तो महोटुं हतुं के तेनी ऊप सात तो सढ चडता हता, ते वहाणना मालेकने मन मानतुं नाणुं आपीने नाडे वांधी लीधुं. पढी शुज दिवस, शुज वार तथा शुज लग्न प्रमुख जो इने ते कुमार प्रवहणनी ऊपर चढयो. कह्युं ढे के, " न निमित्तं द्विषां क्षे मो, नायुर्वैद्यकविद्विषाम् ॥ गुरुद्विषां नहि ज्ञानं, न मुक्तिर्देवविद्विषां" जावा र्थः–ज्योतिषना द्वेष करनाराने क्षेम न होय, वैद्यकना द्वेष करनारने आ यु न होय, गुरुना द्वेष करनारने ज्ञान न होय, अने देवनो द्वेष करनार ने मुक्ति न होय. पढी शुज मुहूर्त्ते वहाण दरियामां हंकारी दीधुं. दैवयो गें पवन सारो लाग्यो तेथी सारी रीतें पंथनुं उल्लंघन थवा मांम्युं. वहाण मां सर्व जोग्यपदार्थो होवाथी घरनी पठें निशान, शरणाई प्रमुख वा द्य वागी रह्यां ढे, गणिका नाची रही ढे, तेनी सायें मधुर गायन थइ रह्युं ढे, अने नाना प्रकारें समुद्रना मोजानी गर्जना थई रही ढे, तेथी अति आनंद थइ रह्यो ढे. एम करतां कोइक कालें ते वहाण एक द्वीपमां जई प होतुं. रस्तामां मीठा पाणीनी कांइक ताण थइ जवाथी त्यां जमीन ऊपर ऊतरीने लोको पाणी जरवा लाग्यां. पण आरामनंदने तेम न करतां पो तानुं वहाण त्यांज राखवानो निश्चय कर्यो. त्यारें बीजा सार्थनां वहाणो वाला तेने कहेवा लाग्या के, आगल कोण जाणे क्यां पाणी मलशे माटे आंही पाणी जरी लइने अमारा वहाणोनी सायें वहाणने हकारो, तो सारुं. अहीं अमस्तो काल गमाववो ते सारुं नथी. ते सांजलीने ते कुमा र कहेवा लाग्यो के, मारे तो आहींज रहेवुं ढे, तमारे जवुं होय तो सुखें थी जाउ. त्यारें तेउ बोल्या के, शुं तमारे अहीं समाधि करवी ढे ? कुमारें कह्युं के मारा शरीरनी प्रकृति सारी नथी तेथी हुं थोडोएक काल आहींज कहाडीश. पढी ज्यारें तबीयत सुधरशे, त्यारें आवीश; अथवा तमें ज्यारें पाढा फरशो, त्यारें हुं तमारी सायें चालीश. एवी रीतें सघलाने समजावी ने विदाय कर्या. तेउ वहाणो हकारीने चालता थया.

कुमारें पोतानुं वहाण त्यांज राख्युं. पठी पोताना माणसो पासेंथी चावल प्रमुख जे वस्तुउ साथें लीधेली हती, ते नीचें किनाराऊपर उत रावी. चोखा सारी रीतें साफ कराव्या. जेंपो दोवरावीने दूध कढाव्युं. अने तेने जमावीने दही कीधुं. तेना करंबा कीधा. ते ज्यारें समुड्नी रेल आववानो समय थाय, त्यारें पोताना दासोनी मारफतें केटलीएक गणा नी करेली गरम राख त्यां दिये, तेनी वासथी त्यांना मत्स्य त्यां आवे, अने पोताना देहनी खरज टाळवाने अर्थें आलोटवा लागे, ते समयें ते कर्पूरवासित करंब नाखी दिये, तेने खावानेमाटे रसनाना स्वादी जलना जीवो संख्यावऊ त्यां आवे. एम करतां केटलाएक दिवसो वीती गया. दररोजना सहवासथी ते जलचरो निर्नय थइ गया. अने जेम कमलना गंध ऊपर भ्रमरो आवी मले, तेम ते जलजंतुउ विश्वास राखीने आवी एकवा थाय, अने ते करंबा खावा लाग्या. ते जंतुउ आस्ते आस्ते मनुष्योनो एवो विश्वास करवा लाग्या के, कोइनो नय न राखतां नियम समयें आवीने पोतपोताने ठेकाणे खाया मंमी जाय. एक दिवसें सर्वथी आगल एक जलजंतु आवीने पोतानो आहार खाइ ते ठेकाणें एक रत्न नाखीने चालतो थयो. कुमारें ते रत्न लइ लीधुं, ने मनमां घणो हर्ष पा म्यो. ते दिवस बीजा सर्व जलजंतुउयें पोतपोताना करंबा खाईने ते स्थल मां रत्न नाखी जवानो चाल कस्यो. एम दररोज जेटलां रत्नो एकवां थाय तेटलां रत्नो जेंपोनां गणनां गणां थापी तेमां नाखी दिये. तेनी चाकरोने पण खबर पडे नहीं. कह्युं ठे के, " अपरीक्ष्य न कुर्वीत,मर्मज्ञः सानुजीवि तम् ॥ मर्मज्ञोऽर्जनोलोकः, संतापयति सज्जनं " नावार्थः–पोताना चाकर नी परीक्षा लीधा विना तेने पोतानो मर्म कहेवो नहीं; केम के, कोई ऽ र्जन मनुष्य होय तो सज्जनने पीडा करी दिये ठे. पेलां रत्न घालीने ग णां करेलां जूदां राखतो जाय, अने रत्न विनानां जे गणां करे, ते जुदां राखे. एवी रीतें बुद्धियें करी घणां रत्नो एकवां करीने गुप्त राख्यां.

हवे पूर्वे कंचुको लेवा माटे स्त्रीनी केडे लाग्यो हतो तेवारें पोतानी नाव नावडायाने चलावी हती तिहां ते नावडीयो नाव बांधीने निश्चिंत सूतो तेने निद्रा आवी गइ एवामां समुड्नी वेलना जोरथी नावना बंधन त्रूटां पाणीना कल्लोलनी प्रेरणायें नाव समुड्मां पड्युं पठी ते कल्लोलें हणा

तुं हणातुं फरतुं फरतुं कुमरना प्रारब्धना योगें पाछुं तेज द्वीपने विषे आव्युं तेने कुमार जोइने खुशी थयो. नाविक कतरी आवीने पोताना ध णीने पगे लागो. अने सर्व हकीगत कही संजलावी. नावी पदार्थ को इनाथी टलतो नथी. एम तेनुं समाधान करीनें मत्स्यो मारें तैयार करे ला करवा जमवाने आप्या. नाविक घणा दिवसोनो नूख्यो हतो तेथी सारी रीतें खाइ धरायो. कुमारें पण पोताने थएली रत्नप्राप्ति विना बाकी नी सघली हकीगत तेने कही संजलावी.

पेलां साथेनां वहाणो जे देशांतरें गयां हतां, तेउना मालेको पोतानो माल वेचीने प्रारब्धानुसार लाभ मेलवी पाछा ए द्वीपने विषे आव्या. प्रथ मनी पेठें वली पण पाणी जरवाने नीचें ऊतखा. पोताना साथीने आवी मल्या. पछी कहेवा लाग्या के, हवे तो तमें अमारी सार्थे चालशो के नहीं? कुमर बोल्यो के, हा हवे हुं तमारी सार्थे आववानें तैय्यार छुं. पछी पोता नी सर्व तैय्यारी करवा लाग्यो. बे जातिनां छाणां कखांहतां, ते पोताना वहाणमां जखां ते जोईने पेला व्यापार करी आवेला वाणीयाउ मश्करी करवा लाग्या, ने कहेवा लाग्या के,आ छाणां वहाणमां शा सारु जरो छो? तेना करतां अमारो माल जरो, तो अमें तमने जाडुं आपीयें. एटली तो पेदाश करी चालो. कुमर बोल्यो के, जाई अमारे एटलुंज घणुं जे पोताने गमे, ते सारुं कहेवाय. कह्युं छे के, "कोईने कांई गमे,कोइने कांई सुहाय॥ गाडूं जखुं सोपारियें,शेठ वहेडां खाय." पछी संकेत प्रमाणें बधां वहाणो सार्थे हकाखां. चालतां चालतां ज्यारें मध्य पंथें आव्यां, एटले डुर्वात व हावा लाग्यो. वहाणो माहादरियामां डुर्वातें पड्यां. तेथी घणा दिवसो नीक ली गया. त्यारें इंधणां खूट्यां. एटले बधानी नजर पेला छाणां ऊपर गई. अने कुंवरने पूछवा लाग्या के,जाई छाणां अमने आपशो के? कुमर बोल्यो के, जाई एम ते कांई थतुं हशे! पोतानो माल बीजाने कोइ रीतें अपाय नहीं. त्यारें ते बिचारा निराश थया, अने काचुं धान्य खावा लाग्या. ते थी पेटमां डुःखवा मांमयुं. अने रोग उत्पन्न थवानो संजव थयो. त्यारें फ री पूछवा लाग्या के, जाई! थोडाक छाणां वेचातां आपशो? जे कीम्मत मागो, ते अमें आपीयें. कुमर बोल्यो के, एक सरतथी हुं छाणां आपुं. जे वां छाणां हुं तमने आपुं, तेवां पाछां हुं लेजं! ते तेमणें कबूल कर्युं,अने

ते प्रमाणें खत लखी आप्युं. तेमां सार्येना बीजा माणसोनी साक्षीयो न खावी. पठी जे न्हाना नावमां रत्नरहित गणां हतां ते गणी आप्यां. तेथी वाणीया खुशी थया. अने कहेवा लाग्या के, जो गणां हतां तो अमें जीवता रह्या, नहिं तो मरी जात. माटें तमो अमारा उपगारी थया गे. कुमारें कह्युं के, भाई उपकार शानो! जेवां दीधां तेवां लेशुं. पठी दैवयागें सारो पवन नीकल्यो, तेथी वहाणो रस्ते चहड्यां. केटलाएक दिवसें क्षेमकुशलें पोताना नगरमां आवी पहोता. वहाणोथी उतरी वधामणीयें वधामणी दीधी. व्य वहारीया सामे आव्या. तेमने सारी रीतें मल्या. सागरश्रेष्ठीने वधामणी दी धी. ने कह्युं के, तमारां वहाणें अमारा जीवो बचाव्या ठे. जो तमारा वहा णमां गणां नरेलां न होत तो अमें वधा मरीजात. रस्तामांज आडवंदरें वहाण नांगरी, त्यांज उतरी गणां थापीने नरी लाव्यानुं अमारा प्रार थेंज आरामनंदनने सूचव्युं होय नहिं? एम नासे ठे. बीजुं कांई कमायो नहीं तो शुं थयुं! क्यां तमारा घरमां कांई कोइ वस्तुनी कमती ठे! एवां मर्मनां तथा चानकनां तेउनां वचनो सांनलीने सागरश्रेष्ठी मनमां कांईक खिन्न थयो. तेथी ते कुमरनी सामे आव्यो नहीं.

पठी वधा सफर करी आवेला वाणीयाउ पोतपोताना सामर्थ्य प्रमा णें नेट लईने प्रथम लक्ष्मीधर राजाने मलवा गया. तेउनी सार्थे आराम नंदन आव्यो नहीं, पाठल रही गयो. वधा नेट मूकीने राजाने मल्या तें थी राजा अति हर्षित थयो. अने तेउना मालनुं दाण उंनुं कह्युं. एटलामां पेलो कुमार पण एक अति उत्तम रूमालमां गणां नाखीने राजाने नेट देवा आव्यो. तेवारें बाहेर पोलीयाने कह्युं के, राजाने खबर करो के, आ रामनंदन आपने मलवानी चाहना करे ठे? ते वात पोलीयायें राजाने जइ कही. राजायें तुरत तेडावी लीधो. त्यारें तुरत आवीने प्रथम पहेलां गणांनी चंगेरी राजानी पासें नेट दाखल राखी. राजायें पासें लेई जोई तो मांही गणां दीगमां आव्यां. ते जोइने लोक सर्व हसवा लाग्यां अने राजायें विचार कस्यो के ए पोतें माहाबुद्धिमान् ठे. माटें नेट दाखल गणां मू कवानुं कांइ प्रयोजन होवुं जोइयें. कह्युं ठे के, "निरर्थं न प्रवर्त्तंत, जनो बुद्धि मतांवरः ॥ प्रदोहको नृपस्याग्रे, मृडपायनमातनोत् " नावार्थः—श्रेष्ठ बु द्धिमान् पुरुप जे ठे, तेउनी प्रवृत्ति प्रयोजन विना होती नथी. एवो विचार

करीने राजायें पेली रूमालनी गांसडीमांथी एक ढाणुं काढाडयुं, अने ते कुमारनेज आप्युं, कुमारें राजी थइ लइने ते ढाणुं नांग्युं. तेमांथी एक रत्न नीकल्युं. ते अमूल्य रत्न जोइने राजा चमत्कार पाम्यो कुमरने घणुं सन्मान दीधुं अने कह्युं के हे कुमरजी म्हारी पुत्री तमें परणो. कुमरें कह्युं हवे परणीश. एम कही पछी अनुक्रमें सर्व ढाणां नांगी देखाड्यां. ते प्रत्येकमां एक एकथी अधिक किम्मतनां रत्नो नीकल्यां. ते बधां राजाने अर्पण करीने कुमर बोल्यो के, महाराजा म्हारी उपर कृपा करीने मारो माल जोवाने मारी साथें दरियाना कांठा उपर पधारो. ए बोलवुं मान्य करीने राजा समुद्रना किनारापर गयो. त्यां ढाणानी राशिमांथी घणांक ढाणां नांगी देखाड्यां,तेउंमां एक एकथी अधिक किम्मतवालां एवां रत्नो नीकलवा लाग्यां. एम बधां ढाणां रत्नोवालां देखीने राजा अति अजायब थयो. अने तेनी साथें पेला वाणीयाउ पण चक्र बनी गया. तेउंनां मुख कालां थइ गयां. मनमां चिंता करवा लाग्या के, आवां ढाणां ते आपणे क्यांथी आपद्युं ! आपणें जे आनी मश्करी करता हता,ते एक कोरें रही अने उलटी आपणी मश्करी थइ. माह्या माणसें कह्युं छे के कोइनी उपर हसवुं नहीं, ते शीखामण आपणे प्रत्यक्ष पाम्या छैयें, हवे आपणी शुं वले थशे?

पछी पेला कुमरें राजानी आज्ञा मागीने ते बधां ढाणामांथी रत्नो काढीने सागरश्रेष्ठीने घेर मोकलावी दीधां. ते जोइ सागरश्रेष्ठी अति आनंदित थयो. कह्युं छे के, 'जरथी जबर पण जीताय' तेम राजा तथा सागरश्रेष्ठी ए बन्ने वश थइ गया. गाममां म्होटो अधिकारी सागरश्रेष्ठी जाणी वाणीयाउंनां पोतीयां नीकली जवा लाग्यां,अने घेलाना जेवा बनी गया. छेवट ना इलाज थइ सर्व मलीने सागरश्रेष्ठीने घेर आव्या. अने अति करगरीने कहेवा लाग्या के, अमें आरामनंदन पासेंथी ढाणां लइने तेथी रसोइ करीने राखी नाख्यां अने जे राख थइ ते समुद्रमां नाखी दीधी. तेमां कांइ रत्नो अमने दीठामां आव्यां नहिं. तेम छतां अमें लखी आप्युं छे के,तमारां बीजां ढाणांनां जेवांज ढाणां पाछां आपवां, ते पालवुं जोइयें. पण एटली अमारी शक्ति नथी. बीजो अमारो कोइ इलाज चालनार नथी,मात्र अमारुं जे कांइ माल मता वगेरे छे, ते जोइयें तो तमें लइ लियो. अमें राजी खुशीथी आपवाने तैयार छैयें. पण तेवां ढाणां अमें क्यांथी

आपीयें? तेम छतां जेम आपनी मरजी होय तेम करवाने अमें हाजर छैयें. एवां अति दीनतानां वचन सांजलीने कुमर बोल्यो के,जाइयो हुं तमने म हारुं लेणुं माफ करुं छुं.हवे सुखें जइने तमे तमारो माल उतारो,अने तेनां विक्रय वगेरे करीने पोताना कृत्यमां लागो. हुं मारुं लेणुं कोइ दहाडे तमा री पासें मागनार नथी. तमें जीवता रह्या,तेथी जे पुण्य कर्म बंधायुं,तेज मारा लेणामां मने मव्युं. एम हुं मानी लइश. एम कहीने पेलुं लखत फाडी नाख्युं. पान सोपारी मंगावी वधाने आपीने विदाय कस्या. तेथी व धा दर्षित थइ कुमारनी कीर्त्ति गाइने पोत पोताने घेर गया.

आगमनंदन विचार करवा लाग्यो के, आजे घणुं इव्य मने मव्युं छे, तेनुं मारे शुं करवुं! कह्युं ले के, "दानं जोगोनाश,स्तिस्रोगतयो जवंति वित्त स्य॥ यो न ददाति न जुंके, तस्य तृतीया गतिर्जवति." जावार्थः-वित्त एटले धन तेनी त्रण गति थइ शके छे. दान, जोग अथवा नाश. तेमां पे हेला बे प्रकार नहीं कस्याथी त्रीजो नाश नामनो प्रकार थाय छे. माटे शुनकार्यने अर्थे इव्य खरचवुं, तेज योग्य छे. पछी चैत्योपाश्रय, सार्धर्मि वात्सल्य, साधुजन पोषण, बंदीजनमोचन, दीनोद्धार, तथा याचक जन संतोष, इत्यादिकने विषे लक्ष्मीनो उपयोग करवा लाग्यो. जले दिवसें घणो महोत्सव करी राजकन्या परण्यो, तेनीसाथें सात जूमिना आवास मांहे क्रीडा करतो रहे छे अमुलिक रत्न वटावी खरचीने यश लीये छे.

एम करतां कोइ एक समयें अर्धरात्रिने विषे निद्रामां सूतो हतो तेमां तेने एक स्वप्न लाधुं, तेमां तेणें एवुं जोयुं के,लक्ष्मीपुर नामना नगरमां न र्मदा नदीना तटनी उपर पद्मावतीयें अग्निनी चिता करावी अने तेमां पेस वानी तैय्यारी करी छे. एटलामां जागी उठ्यो.तेवारें मोहा दुःखने पामी ने चिंतवना करवा लाग्यो के,मुफने पुष्पनुं कंचुक मव्युं नहीं, ते तो रह्युं, पण उलटो पद्मावतीनो वियोग थयो. ते विरहथी दुःखी थइथकी तेणें अ ग्निमां प्रवेश तो नहिं कस्यो होय? जो एमज थयुं होय तो मारुं जीवि तव्य शा कामनुं छे? आटला दिवस सुधी ते खचित जीवती रही नहिंज होय! तेणें अग्निनी चितामां पडीनेज प्राण खोयां हशे,एमां संशय नथी! मनें स्वप्न लाधुं ते सघलुं होवुं जोइयें. जो एम थयुं होय तो हुंज स्त्रीघ ती थयो छुं. तेनुं मने पाप लागुं! हवे मने पण शरीर राखीने शुं

करवुं ठे? तेथी कोइ पर्वतने विषे अनशन व्रत लइने प्राणनो त्याग करवो. एवुं चिंतवी राजा अने पोतानी स्त्री तथा सर्व परिवार पासेंथी शीख मागी, राजायें कह्युं इहां सुख मूकीने केम जाउ ठे? तमें कह्यो ते अमें आपीयें! कुमरें कह्युं के हाल महारे घेर जवानी उत्कंठा ठे माटे रजा आपो हुं फरीने तरत इहां आवीश. पठी सागरश्रेष्ठीनी पासें घेर जवानी रजा लइ विदाय थइने एक पर्वत ऊपर गयो. त्यां एक योगी मंत्र साधना करतो बेठेलो दीठो. तेम योगी पण कुमरने जोइने विनय प्रतिपत्ति करीने कहेवा लाग्यो के,मारा जाग्यने लीधेज तुं आहीं आव्यो ठो, में पूर्वे मंत्रसाधना करी पण उत्तरसाधकविना सर्वे निःफलथई हवे जो उत्तर साधना तुं करे, तो महारो मंत्र, साध्य थाय.

एवुं ते योगीनुं बोलवुं सांजलीने कुमारें विचार कर्यो के, मरवाने अर्थे तो हुं अहीं आव्योज ठुं, तेम करतां परोपकार कांइ थाय तो सारुं ठे. परोपकार करवो ए मनुष्य मात्रनो धर्म ठे. पठी योगीना कहेवा प्रमाणें उत्तरसाधकपणुं कबूल कर्युं. त्यारें योगी एक अग्निकुंममां होम करवा लाग्यो अने कुमारने कह्युं के जो जूत, प्रेत, पिशाच तथा वेतालादिक कोई विघ्न करवा आहीं आवे, तो तेनुं तुं निवारण करजे. कुमार हाथमां खड्ग लईने चोकी करतो रह्यो. एटलामां एक वेताल त्यां आव्यो, तेनी सामें कुमार खड्ग लईने दोड्यो. बन्ने बाथोबाथ आव्या. कुमारें वेतालनें नीचें नाखी दीधो. अने साहसिक थइ वेतालनी ऊपर चढी बेठो वेताल वश थई रह्यो. अने कहेवा लाग्यो के, हुं ताहारुं पराक्रम जोईने राजी थयो ठुं. माटें कांई वर माग, कुमर बोल्यो के ज्यारें हुं तने संजारुं, त्यारें आवजे ते वात कबूल करीने वेताल जतो रह्यो. पठी कुमर योगीनी पासें जई ऊजो रह्यो. ते समयमां योगीनी पासें मंत्राधिष्ठायक देव आवी कहेवा लाग्यो के, जे तुं कहे, ते करुं! योगी बोल्यो के,जे पुरुष आ अग्निना कुंममां प्रवेश करे, तेने सोनानो करो. ते तेणें कबूल कर्युं. त्यारें रातां कणेरनां फूलोनी माला ते कुमरना गलामां घाली तथा रतांजलिना रसना ठांटा नाख्या. अने कहेवा लाग्यो के, आ कुंमने तुं प्रदक्षिणा कर. त्यारें शुद्धसम्यक्तवान् जे पेलो आराममनंदन, ते नवकार मंत्रनुं स्मरण करतो थको प्रदक्षिणा देवा लाग्यो. तेनी पाठल योगी पण प्रदक्षिणा देतो चाल्यो.

लाग फाव्याथी योगीयें कुमरने उपाडीने पेला कुंममां नाखी दीधो. तेवोज पोताना साहसपणाथी ते फाल देतो वाहिर आवी पड्यो. अने ते यो गीने जालीने अग्निना कुंममां नाखी दीधो. के तत्काल ते योगी सोनानो पुरुप वनी गयो. कुमारें सम्यक्त्व अने नवकार, जापनुं महात्म्य देखीने धर्म उपर अति आस्ता करी. कह्युं ले के, "वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये, म हार्णवे पर्वतमस्तके वा ॥ सुप्तं प्रमत्तं विपमस्थितं वा, रक्षंति पुण्यानि पुरा कृतानि" नावार्थः–वनमां, युद्धमां, शत्रुउंमां, जलमां, अग्निमां, महार्णव मां, पर्वतना मस्तकने विपे, निड़ामां,प्रमत्त अवस्थाने विपे महासंकटनी अ वस्थामां,पूर्वे करेलां कर्मो रक्षा करे ले. पठी ते कुमार सुवर्णना पुरुपने त्यांज दाटीने त्यां निशानी करीने दक्षिण दिशा तरफ चालतो थयो. रस्तामां जतां एक ठेकाणें एक योगीनी चेली, पोतानी वीजी चेलीयोने कहे ले के, तमने आटली वधी वार क्यां लागी ? ते चेलीयो वोली के सामिनि ! अमें रस्तामां एक कौतुक दीठुं, त्यां अमने वार लागी. वली ए वात पण आपने सांनलवा जेवी ले. कह्युं ले के, " वार्त्ता च कौतुकवती विपदा च विद्या, लोकोत्तरः परिमलश्च कुरंगनानेः ॥ तैलस्य विंडुरिव वारिणि डुर्निवा र,एतत्त्रयं प्रसरतीति किमत्र चित्रम्" पठी पेली गुराणी योगिणी तथा एक कोरें कन्नो रहेलो कुमर ए वन्ने सांजले ले, अने पेली चेलीयोमांनी एक चेली वोले ले:–के आ जंबुद्वीपमांना नरतक्षेत्रमां वैताढ्य नामनो पर्वत ले. तेनी दक्षिण श्रेणीयें एक मंगलावती नगरी ले तेनो विद्युन्माली नामनो विद्याधर राजा अष्टापद पर्वत तरफ जतो हतो. चालतां चालतां श्रीपुर नामना नगरमां जइ पहोतो. त्यां एक उद्यानने विपे महेंद्रराजानी स्त्री रतिसुंदरी पोतानी सखीयोनी सायें जलक्रीडा करती हती, तेने जोवा सारु विद्युन्माली विद्याधर एक महोटा वृक्ष उपर चढीने वेगे. अने तेउंनी सर्व रमत जोया करे ले, एटलामां रतिसुंदरी पोतानी क्षेमकरी सखी प्रत्यें पूठवा लागी के, मारा धणीने फूलनुं कंचुक मल्युं के नहीं? क्षेमकरी वोली के तारा पुण्यना योगें मल्युं. रतिसुंदरी वोली के,केम प्राप्त थयुं? क्षेमकरी वोली के, चोरोयें नगरमां चोरी करी, ते वधा पकडाया. तेउंने वांधीने कोटवाल रा जानी पासें लइ गयो. राजायें न्याय करीने तेउंनां घर लूटी लेवानुं ठराव्युं. अ ने कह्युं के, जे माल नीकले ते माल धणीयोने आपो, तेउंयें पोतपोतानो

माल उनखीने लइ लेवो. एवी राजानी आज्ञाथी ते चोरोनां घर लूंटतां तेमां पुष्पनुं कंचुक नीकल्युं. ते सेवकें राजाने आणी आप्युं. राजा जोइने राजी थयो. ते कंचुक राजायें तारा सारु राख्युं छे. बीजी कोइ स्त्रीने आप्युं नथी. एवी वात सांभळीने रतिसुंदरी कहेवा लागी के, क्षेमंकरी सखी तुं जईने राजानी पासेंथी ते कंचुक लइ आव. जेथी ते कंचुक पहेरीने हुं राजानी पासें जाउं, अने तेना अग्निसने जइ वेसुं. ए वात मानी, ते क्षेमंकरी राजानी पासें गइ अने जइने तेनी पासेंथी पेलुं कंचुक मागी लई राजी थती पाछी आवे छे. एटलामां विद्युन्माली विद्याधरें ते कंचुकने अधर हाथमांथी कचकी लीधुं. अने पोताना घेर लइ जइ पोतानी मानीती स्त्रीने देवा लाग्यो. ते जोइने बीजी स्त्री बोली के, ए कंचुक जो एने आपशो,तो हुं अग्निमां बळीनें मरीश. पछी ते बन्ने शोक्यो कंचुक सारु वढवा लागी. त्यारें पेला विद्याधरें विचार्युं के हमणां ए बन्नेमांनी एकेने कंचुक मळवुं जोइतुं नथी. एम करवाथी कजीयो मटशे. एवो संकेत करी ते कंचुक लइ कोइ ठाने ठेकाणे राखीने पोतें अष्टापद पर्वत तरफ तीर्थयात्रा करवा गयो. ए आश्चर्य जोवाने अमें कनी रहीयो हती. तेथी वार लागी. ए अमारो अपराध थयो ते क्षमा करो. एटली वात पेली चेली यें कही ते आरामनंदन कुमरें सांभळी लीधी. अने कंचुकनी खबर मळी तेथी खुशी थयो. पण मनमां तर्क थयो के मारी स्त्रीयें अग्निमां प्रवेश कर्यो होय तो कंचुकनी शोध मळेली शे कामें आवे!! पछी मनमां निश्चय कर्यो के जो एम थयुं हशे तो मारे पण योगीना कुंडमां बळी मरवुं. हवे शोध केम मळे के, पद्मश्री बळी मुई के जीवती छे! एनी शोध करवा नगरमां तो जवुं न जोइयें. केम के, त्यां गयाथी जो जीवती होय, तो तो ठीक, पण जो मरण पामी गइ होय तो पाछा फरवुं मुश्केल थाय. अने त्यां प्राण त्याग पण थाय नहीं. ने आखो जन्म दुःखमां कहाडवो पडे, ते आर्तध्यानथी धर्मनी साधना पण थाय नहीं, ने पछी व्रतांभ्रष्ट ने लतो भ्रष्ट थया जेवुं बने. माटे मने जे स्वप्न लाधुं, ते खरुं होवुं जोइयें. नहिं तो एवुं स्वप्न केम लाधे. मारी स्त्रीनी साथें मारी तीव्र प्रीति हती, तेम तेनी पण माराविषे तीव्र प्रीति हती, तेथीज तेनी प्रीतिना पुद्गल मारा अंतःकरणमां प्रवेश करीने स्वप्न रूपें थया. एवुं खचीत मानवुं जोइयें नेथे.

एवो निश्चय करीने अग्निना कुंमनी पासें ते कुमर आव्यो, अने नवका र मंत्र जपवा लाग्यो. एटलामां एक पासेंना वृक्षमांथी एक लेख ते कुम रनी पासें आवी पड्यो. ते लइने वांचवा लाग्यो. स्वस्तिश्री लक्ष्मीपुरथकी श्रीविक्रमराजा यथास्थाने आरामनंदनप्रति आलिंगन होजो. तारी स्त्री प द्मावती तारा वियोगथी अग्निमां प्रवेश करतां ठतां में आठ वर्षनो अव धि करीने जीवती राखी ठे. त्यारथी तारी शोध करवाने ठेकाणे ठेकाणे शुक तथा वानरादिकोने मोकल्या ठे. माटें जो आठ वर्षमां तुं आवी पो होंचीश नहीं, तो तारी स्त्री अग्निमां प्रवेश करशे. तेनो दोष अमारे माथे नथी. तेथी जेम बने तेम जलदी घेर आव" ए प्रमाणें वांचीने कुमर म नमां विचार करवा लाग्यो के, स्वप्ननो अर्थ अने आ पत्रनो अर्थ मलतो आव्यो खरो, पण आकाशमांथी लेख केम पड्यो! एवी आशंकाथी ऊप र जोवा लाग्यो, एटले एक वानर दीठामां आव्यो. त्यारें ते नीचें आवी ने पगे लाग्यो. अने सघलो समाचार मुखथी कही संजलाव्यो. त्यारें तेनी पाकी खात्री थइ, पण कंचुक विना ठाले हाथे जवुं ते सारुं नहीं. जो कं चुक साथें लइ जाउं, तोज खरी खूबी कहेवाय! एवो निर्धार करी एक वृ क्षनुं पत्र लइने तेनी ऊपर एक वल्लीना रसवडे लख्युं के, "मने तमारुं पत्र पहोच्युं. ते वांचीने घणो संतोष थयो ठे. हवे हुं शीघ्रज आवी पहो चीश. पद्मावतीने स्वस्थ करी राखजो. अने म्हारा प्रेमें करी जुहार अंगी कार करजो" एवुं लखी ते पत्र पेला वानरने आपीने विदाय कर्यो, अ ने पोतें कंचुक लेवाना हेतुथी त्यांथी चालतो थयो.

मार्गमां जतां एक ठेकाणे केटलाएक व्यंतरो वानराउनां रूप धारण करीने रमता हता, ते तेणें दीठा. तेउमां कोइ राजा थयो ठे, कोइ मंत्री ब न्यो ठे, कोइ आमात्य थयो ठे, कोइ सचिव थयो ठे, कोइ सेनाधिपति थ यो ठे, कोइ स्वार थया ठे, कोइ पदाति थया ठे, तथा कोइ जासूद प्रमुख राज्य चर्या करी रह्या ठे. एवा समयमां एक अनुचरने राजायें आज्ञा क री के सूतारनी पासें जइने काष्ठना मयूरो घडावी लाव. ते काम ते त्वरा थी जइ करी आव्यो, अने राजाने जणाव्युं के माहराज! आपनी आज्ञा प्रमाणे मयूरो सर्व तैय्यार ठे. राजायें तरत सर्व मयूरो पोताना मंत्री प्रमुख ने वेहेंची आप्या अने एक सारो मोर जोइने पोतें राख्यो. पठी ते मोर ऊ

पर बेसीने पोताना सैन्य सहित वैरीने जीतवाने चाल्यो. तेउनी साथें आ रामनंदन पण कौतुक जोवाने नीकल्यो. चालतां चालतां नीलमुख वान रना वननी पासें आवी पहोच्या. त्यारें मोरनी सारीयें जे कालमुख वानर चडी आव्यो हतो, ते पोताना सैन्यसहित वाहनथी नीचें ऊतरी पाय दलरूप तैय्यार थयो अने पेला कापना मोरो एक कोरें राखी मूक्या. ए लश्करने जोईने नीलमुख वानर सामे चडी आव्यो. अने पोतानी साथेंना सैन्यने व्यूहरचनायें करी सज्ज करि राख्युं. पछी परस्पर युद्ध थवा मांमयुं. वानराउ चीचीरीयो करी करी तथा दांत घसी घसीने एकबीजाने मारवा लाग्या. तेउने सेनाधिपतियो हिम्मत देवा लाग्या. एम घणा कालसुधी यु द्ध थयुं, त्यारें बन्ने सैन्योना वानराउ अति थाकी गया. तेथी केटलाएक नासवा लाग्या, अने केटलाएक शिथिल थई गया. एवुं जोईने कालमुख त था नीलमुख ए बन्ने शत्रुउ सामसामे आवी गया, अने आपसमां लडवा लाग्या. तेमां कालमुख वानर जे प्रथम घणुंज अभिमान करीने सामे चा ली आव्यो हतो, तेने नीलमुख वानरें युद्धमां पराजय कर्यो. त्यारें जेम वायुयें करी तृणो विखराइ जाय, तेम कालमुखनुं लश्कर वीखराई गयुं. व धा वानराउ ज्यां त्यां नासवा लाग्या. एवा टांकणामां कुमर, पेला मोरो मांथी एक मोर लईने तेनी उपर बेशी आकाशमार्गे करी वैताढ्य पर्वतनी ऊपर मंगलावती नगरी प्रत्यें गयो. त्यां अवसर जोईने विद्युन्माली विद्या धरना मालीयामां चोथीभूमिना गवाक्षें सुवर्णमय पर्यंक ऊपर पडेलुं कंचुक दीठुं, ते उपाडी चालती वखतें महोटे सादें पोकार करी कहेवा लाग्यो के, हुं आरामनंदन आ महेलमांथी पुष्पनुं कंचुक लई जाउं छुं. जे वीर सुजट होय ते मारी पाछल वेशक आवे. एम कही मयूर वाहन उपर चडीने पोताना नगर तरफ जवा नीकल्यो. एटलामां विद्युन्माली विद्याध रनी स्त्रीयोयें बुंब करी के, घरमांथी कोई चोर पुष्पनुं कंचुक चोरी लेई जाय छे. तेने पकडीने तेनी पासेंथी ते कंचुक लई लियो. ते सांजलीने कट क एकठुं थयुं, तेने साथें लईने ते बन्ने स्त्रीयो कुमरनी पाछल लागीयो. कुं वरने आवी घेर्यो, त्यारें कुमरें विचार कर्यो के हवे शुं करवुं! पोतानां क र्यां पोताने नड्यां. जो में जाण कर्युं न होत तो आवुं बन्युं न होत. पण ते सारुं कहेवाय नहीं, ने चोरमां खपीयें. माटे जे थयुं ते ठीकज छे. सारुं

नरसुं थवुं कर्मना हाथमां छे! एटलामां पेला वेतालनी वात याद आवी. तेथी तेनुं स्मरण कर्युं के, ते आवी पासें उनो रह्यो, अने पूछवा लाग्यो के शुं आज्ञा छे? ते फरमावो. त्यारें आरामनंदने पोतानी बधी हकीगत संज लावीने कह्युं के, जो आ कंचुक हवे जलदी मारी स्त्रीने जइ नहीं आपुं, तो ते चितामां पडीने पोताना प्राणनो त्याग करशे. माटें हुं आ आपी आवुं तिहांसुधी आ लश्करने अटकावी राख. एवुं सांजलीने वेतालें कह्युं के, में पण आवतां मार्गमां एक नगरनी बाहेर चिता खडकेली जोइ ते ए कारण सरज हशे माटें तमें जलदी जाउ. हुं लश्करने अटकावी राखुं छुं.

एवुं वेतालनुं बोलवुं सांजलीने कुमारने वधारे चिंता उत्पन्न थई, केम के, आठ वर्षनो अवधि पूरो थवा आव्यो हतो. पछी कुमर उतावलो चालतो थयो, हवे त्यां पद्मावती पणराजाने कहे छे के आठ वर्ष पूरां थयां तो पण मारो पति आव्यो नहीं, हवे चितामां हुं प्रवेश करीश. एम कही सर्व जनोने यथायोग्य रीतें मलीने तथा पंचपरमेष्ठिनुं स्मरण करीने ते चितामां आवी पडी. एटलामां आकाश मार्गें मयूरना वाहन उपर बेठेलो कुमर आवी पहोतो, अने ते मयूर तथा कंचुकने एक कोरें मूकी नमस्कार मंत्र नणी कहेवा लाग्यो के, मारी स्त्री पद्मावती जो शुशील होय अने जो शीलनो महिमा होय तो अमे बन्नेने कल्याणनी प्राप्ति थजो. एम कही तेणे चितामां प्रवेश कर्यो. ते समयें देव सहायथी ते प्रज्वलित अग्नि शीतल पाणीना जेवो थई गयो. त्यारें जेम पाणीमांथी माणस बाहिर नीकले, तेम ते बन्ने स्त्रीपुरुष, बाहेर नीकल्यां. एवुं कौतुक जोइने राजा प्रमुख सर्व नगरनां लोको अति हर्षने पाम्यां; अने आनंदना निशाण वाग्यां. हवे एज समयमां पेलुं कटक वेतालनी सार्थे युद्ध करतुं करतुं, ए नगर पासें आव्युं. तेने जोतां कुमरें अग्निमां प्रवेश कर्यो तेथी तेउयें जाण्युं के अ माराथी मरीने आम कर्युं जणाय छे. तेथी त्यां पडेलुं ते कंचुक ते विद्याधरनी स्त्रीउयें उपाडी लीधुं पण एटलामां तो अग्नि शीतल थई गयो ने ते बाहेर जेमना तेम नीकल्यां, ते जोईने तेउ विस्मय थया. एवो शीलनो महिमा जोई बधा विद्याधरो तथा मनुष्यो आश्चर्यने पाम्या. कुमरें राजाने आवी नमस्कार कर्यो. माता पिताने आवी पगे लागो. पद्मावती पण सासु ससराने

पगे लागी. तेउयें कह्युं के "हेवधू ! पुत्रवती नव" एवो आशीर्वाद दीधो. सर्व लोकोने अति हर्ष थयो, जिनधर्मनो महिमा प्रगट थयो.

पछी ते विद्याधरीयोयें कुमरने सर्व वृत्तांत पूछयाथी तेणें आयथी ते इति सुधी सर्व वृत्तांत कही संजळाव्युं, तेथी ते कंचुकविषे कदाग्रह मू की दइने पोताने हाथे पद्मावतीने ते कंचुक पहेराव्युं. पछी राजा, राणी, कुमर तथा पद्मावती प्रमुख सर्व नगरमां गयां. याचक लोकोने घणां दान दीधां, परिजन प्रमुख सर्व जनोने यथायोग्य पहेरामणी प्रमुख आप्यां. वन्ने विद्याधरीउयें पद्मावतीने वेन करी मानी. ते विद्याधरीयोने तेउना लश्कर सहित केटलाएक दिवस सुधी राखी, सारी रीतें मिजमानी प्रमुख करीने जेम वेनने सासरे मोकलीयें, तेम विदाय करी. पछी आरामनंदनें वेतालने हाथे पेलुं सोनानुं पुतलुं मंगाव्युं. ते शुनमुहूर्त्ते गृहनेविषे लावीने राख्युं, ने पेला वेतालने रजा आपी. हवे ते सोनाना पुतलानो उपयोग एवो कर्यो के, जिनजुवन, जिनबिंब, बिंबप्रतिष्ठा, जीर्णोद्धार, साधु, साध्वी, श्रावक तथा श्राविका लक्षण चतुर्विध संघनुं पोषण, साधर्मिक वात्सल्य, प्रमुख श्रेष्ठ कार्यमां इव्यनो खर्च कर्यो.

हवे कोइ एक समयने विषे ते नगरनी वाहिर उद्यानमां ज्ञानजानु ना मना आचार्य आवी समवसर्या. तेनी उद्यान पालकें आवी वधामणी दीधी. तेने राजायें पोताना राज्य चिन्ह राखीने बाकीनां जे अंग उपर आनूषण पहेर्यां हतां,ते सर्व वधामणी देवा बदल आपी दीधां. पछी राजा, राणी, कुमर, तथा पद्मावती प्रमुख सर्व जन महा आमंबरथी वांदवा ग यां. पंचाजिगम साचव्या, गुरुने वांदी करीने यथा स्थानकें बेठां. आचा र्यें धर्मदेशना देवा मांमी. ते सांजळीने राजा अने राणी प्रतिबोधने पाम्यां अने महोटे आमंबरें दीक्षा लीधी. आरामनंदनने राज्य दीधुं पछी कुमार, पेला सोनाना पुतलाना योगथी जिनशासननी उन्नति करवा लाग्यो.

एकदा समयें पद्मावतीयें स्वप्नमां पूर्ण कलश दीठो. ते वृत्तांत आरामनंद नने तेणें कह्युं. त्यारें तेणे कह्युं के हे चतुरा ! तुने पुण्यवान पुत्र थशे. अ नुक्रमें दिन पूरा थयाथी पुत्रनो जन्म थयो. ते समयें जन्ममहोत्सव कर्यो. अने तेनुं नाम पूर्णकलश राख्युं. वली कोइएक समयें आरामनंदनना सम्यक्त्वनी परीक्षा जोवाने अर्थे कोइएक देवांगनायें पूर्णकलशना अंगनां

ज्वर उत्पन्न कर्यो. तेथी ते माहापीडाने पामीने व्याकुल थयो. तेने जोइ ने कुमर तथा पद्मावती अति दुःख करवा लाग्यां. ज्वरनिवृत्तिना घणा उपाय कर्या, पण कोइ उपाय लागे नहीं. एवामां एक मंत्री आव्यो, तेणें एक मंमल मांमयुं. अने एक कन्याने बेसाडी पूछवा लाग्यो. ते कन्याना मुखद्वारा ते देवता कहेवा लाग्यो जो आरामनंदन निष्कपट नावें यक्षनी पूजा करे, तो आ बालकने समाधानी थाय. नहीं तो कुमरनुं मरण थशे. त्यारे आरामनंदन बोल्यो के, गमे तेम थाय, पण हुं तो सर्वथा श्री वीतरागदेवनी प्रतिमा विना कोइ बीजी प्रतिमानी पूजा करुं नहिं. देव अरिहंत अने गुरु सुसाधु जे अर्हतनी आज्ञा पाले ठे ते,तथा धर्म अर्हंतनो नांखेलो. ए त्रण तत्त्वनी हुं सर्दहणा करुं. जो सारुं थवानुं हशे,तो एथी ज थशे. नहीं तो देव करे ते खरुं! एवुं तेनुं बोलवुं सांजली सर्व लोक कहेवा लाग्यां के, एवो हठ करवो जोइतो नथी. अने यक्षनी पूजा करवी जोइयें के जेथी पुत्र जीवतो रहे. आरामनंदन बोल्यो के सम्यक्त्वना प्रतापें तथा पद्मावतीना शीलना प्रनावथी सर्व सारुंज थशे. एवुं तमारे निश्चें करी जाणवुं. एवी तेनी सम्यक्त्व उपर दृढता जोइने ते देवांगना राजी थइने कहेवा लागी के, हे आरामनंदन! तुं धन्य ठे. के जेणें सम्यक्त्वनेविषे आवी दृढता करी ठे. आटली बधी खटपट तारा सम्यक्त्वनी परीक्षा जोवा सारु मेंज करी ठे. बीजो कोइ नाव मनमां आणवो नहिं. एवुं कही ते देवता अदृश्य थइ गयो. ते जाणे पोतानी साथें ते ज्वरने पण लइ गयो होय नहिं? एटले पूर्ण कलशने तरत समाधि थइ. पठी ते पुत्र क्रमें करी महोटो थयो, घणी राजकन्याउने परण्यो, तेउनी साथें नाना प्रकारना सुखनोग नोगववा लाग्यो. त्यारें आरामनंदन तथा पद्मावती ए बेहु साथें त्रिकरण शुद्धें सम्यक्त्व सहित श्रावकनो धर्म पालीने स्वर्गे गयां. एवी रीतें सम्यक्त्व उपर आरामनंदननी कथा युक्त सम्यक्त्वनुं सरूप कहीने त्रीजी गाथानो अर्थ पूरो कर्यो ॥ ३ ॥

हवे सम्यक्त्वनी शुद्धि केम थाय? ते कहे ठे.

॥ तस्स विसुद्धनिमित्तं,नाऊणं सत्तसट्ठि गणाइं॥ पालिज्ज परिहरिज्जव, जहारिहं इअ गाहाउ॥४॥ अर्थः—ते सम्यक्त्वनी विशुद्धिने निमित्तें तेना (सत्तसट्ठिगणाइं के०) सडसठ स्थानक नाऊणं एटले जाणीने तेमां जे पा

लवा योग्य होय ते पालवां, अने जे त्याग करवा योग्य होय ते त्यागवां. जगतमां जीवादिक सर्व पदार्थ मध्यें केटलाएक ज्ञेय एटले जाणवा योग्य छे. तथा केटलाएक उपादेय एटले ग्रहण करवा योग्य छे, अने केटलाएक हेय एटले त्याग करवा योग्य छे. एम इहां ए गाथामां यथायोग्यें छे.

हवे ते सडसठ बोल बे गाथायें करी कहे छेः—

॥ चउ सद्दहण तिलिंगं, दस विणय तिसुद्धि पंचगय दोसं ॥ अठपनावण भूसण, लक्खण पंचविह संजुत्तं ॥ ५ ॥ छव्विह जयणागारं, छभ्भावण भाविय च सम्मत्तं ॥ छठाणा इय सतस, ठि दंसण भेयं विसुद्धं च ॥६॥ अर्थः—चार वस्तुनेविषे सद्दहणा राखवी,तथा सम्यक्त्वना त्रण लिंग जाणवां, दश प्रकारें विनय जाणवो,सम्यक्त्वनी त्रण प्रकारनी शुद्धि एटले निर्मलता जाणवी तथा (पंचगयदोसं के०) पांच दूषण जेने विषे निवृत्त थएलां छे, एवुं सम्यक्त्व जाणवुं, आठ प्रकारनी सम्यक्त्वनी प्रभावना जाणवी,एटले आठ प्रकारे सम्यक्त्वनुं भावन दीपन एटले आठ प्रकारें सम्यक्त्व दीपावीयें. तथा सम्यक्त्वना पांच भूषण एटले आभरण जाणवां; जेम घरेणायें करी पुरुष तथा स्त्री प्रमुख शोभे छे, तेम ए पांच आभरणे करी सम्यक्त्व शोभे छे. तथा सम्यक्त्वनां पांच लक्षणोयें करी युक्त थवुं ॥५॥

॥ सम्यक्त्वनी छ प्रकारनी जयणा छे,सम्यक्त्वनेविषे छ आगार छे; ते अपवादस्थानक जाणवां. सम्यक्त्व छ भावनायें करी भावित छे; जेम फूलें करी तिल वासित होय छे तेम भावनायें करी सम्यक्त्व वासित करीयें. तथा सम्यक्त्वनां छ स्थानक छे. ए सडसड लक्षणयुक्त भेदें करीने सम्यक्त्वनी विशुद्धि एटले निर्मलता थाय छे. एवा सम्यक्त्ववान् ते शुद्ध सम्यक्त्वी कहेवाय छे. ते जेम श्रेष्ठ पुरुषने विषे बहोंत्तेर कलाउ,तथा रुडी स्त्रीनेविषे चोशठ कलाउ दीठामां आवे छे, तेम शुद्ध सम्यक्त्वीमां यथायोग्य रीतें हेयोपादेयपणे ए सडसठ प्रकार दीठामां आवे छे ॥ ६ ॥

हवे प्रकरण कर्त्ता, निष्कपट वृत्तिथी कहे छेः—

॥ पुव्वमुणीण कयाणं, गाहाणमिमाण किंपि भावठं ॥ थोवरकरेहिं पयडं, वुच्छं संखेवरुइ पठं ॥ ७ ॥ अर्थः—पूर्वे मुनियें एटले पूर्वाचार्योयें करेली ए बे गाथाउनो किंपि एटले कांइक संक्षेपें करी भावार्थ एटले रहस्य, जेमां थोडा अक्षरो अने अर्थ घणो ए प्रकारें जेम प्रगट थाय एटले

ज्वर उत्पन्न कर्यो. तेथी ते माहापीडाने पामीने व्याकुल थयो. तेने जोइ ने कुमर तथा पद्मावती अति दुःख करवा लाग्यां. ज्वरनिवृत्तिना घणा उपाय कर्या, पण कोइ उपाय लागे नहीं. एवामां एक मंत्री आव्यो, तेणें एक मंडल मांड्युं. अने एक कन्याने बेसाडी पूछवा लाग्यो. ते कन्याना मुखद्वारा ते देवता कहेवा लाग्यो जो आरामनंदन निष्कपट भावें यक्षनी पूजा करे, तो आ बालकने समाधानी थाय. नहीं तो कुमरनुं मरण थशे. त्यारें आरामनंदन बोल्यो के, गमे तेम थाय, पण हुं तो सर्वथा श्री वीतरागदेवनी प्रतिमा विना कोइ बीजी प्रतिमानी पूजा करुं नहिं. देव अर्हंत अने गुरु सुसाधु जे अर्हंतनी आज्ञा पाले ने ते,तथा धर्म अर्हंतनो भाखेलो. ए त्रण तत्त्वनी हुं सद्दहणा करुं. जो सारुं थवानुं हशे,तो एथी ज थशे. नहीं तो देव करे ते खरुं ! एवुं तेनुं बोलवुं सांभली सर्व लोक कहेवा लाग्या के, एनो हठ करवो जोइतो नथी. अने यक्षनी पूजा करवी जोइयें के जेथी पुत्र जीवतो रहे. आरामनंदन बोल्यो के सम्यक्त्वना प्रसादें तथा पद्मावतीना शीलना प्रनावथी सर्व सारुंज थशे. एवुं तमारे निश्चें करी जाणवुं. एवी तेनी सम्यक्त्व उपर दृढता जोइने ते देवांगना राजी थइने कहेवा लागी के, हे आरामनंदन ! तुं धन्य ने. के जेणें सम्यक्त्व नेविषे आवी दृढता करी ने. आटली वधी खटपट तारा सम्यक्त्वनी परीक्षा जोवा सारु मेंज करी ने. बीजो कोइ भाव मनमां आणवो नहिं. एवुं कही ते देवता अदृश्य थइ गयो. ते जाणे पोतानी साथें ते ज्वरने पण लइ गयो होय नहिं ? एटले पुत्र कलशने तरत समाधि थइ. पछी ते पुत्र कर्मे करी महोटो थयो, घणी राजकन्याउने परण्यो, तेउनी साथें नाना प्रकारना सुखभोग भोगववा लाग्यो. त्यारें आरामनंदन तथा पद्मावती ए बेहु साथें त्रिकरण शुद्धें सम्यक्त्व सहित श्रावकनो धर्म पालीने स्वर्गें गयां. एवी रीतें सम्यक्त्व उपर आरामनंदननी कथा कुरु सम्यक्त्वनुं स्वरूप कहीने त्रीजी गाथानो अर्थ पूरो कर्यो ॥ ३ ॥

हवे सम्यक्त्वनी शुद्धि केम थाय ? ते कहे ने.

॥ तम्म विसुद्धिनिमित्तं,नाऊणं सत्तसठि ठाणाइं ॥ पालिज्ज परिहरिज्जय, जहाजोग्गं इत्थ नादाई ॥ ४ ॥ अर्थः—ते सम्यक्त्वनी विशुद्धिने निमित्तें तेना (सत्तसठिठाणाइं के०) सडसठ स्थानक नाऊणं एटले जाणीने तेमां ने पा

लवा योग्य होय ते पालवां, अने जे त्याग करवा योग्य होय ते त्यागवां. जगतमां जीवादिक सर्व पदार्थ मध्यें केटलाएक ज्ञेय एटले जाणवा योग्य छे. तथा केटलाएक उपादेय एटले ग्रहण करवा योग्य छे, अने केटलाएक हेय एटले त्याग करवा योग्य छे. एम इहां ए गाथामां यथायोग्यं छे.

हवे ते सडसठ बोल बे गाथायें करी कहे छेः—

॥ चउ सद्दहण तिलिंगं, दस विणय तिसुद्धि पंचगय दोसं ॥ अठ्पनावण नूसण, लरकण पंचविह संजुत्तं ॥ ५ ॥ छव्विह जयणागारं, छन्नावण नाविर्यं च सम्मत्तं ॥ छठाणा इय सतस, ठि दंसण नेयं विसुद्धं च ॥६॥

अर्थः—चार वस्तुनेविषे सद्दहणा राखवी,तथा सम्यक्त्वना त्रण लिंग जाणवां, दश प्रकारें विनय जाणवो,सम्यक्त्वनी त्रण प्रकारनी शुद्धि एटले निर्मलता जाणवी तथा (पंचगयदोसं के०) पांच दूषण जेने विषे निवृत्त थएलां छे, एवुं सम्यक्त्व जाणवुं, आठ प्रकारनी सम्यक्त्वनी प्रनावना जाणवी,एटले आठ प्रकारे सम्यक्त्वनुं नावन दीपन एटले आठ प्रकारें सम्यक्त्व दीपाववीयें. तथा सम्यक्त्वना पांच नूषण एटले आनरण जाणवां; जेम घरेणायें करी पुरुष तथा स्त्री प्रमुख शोने छे, तेम ए पांच आनरणे करी सम्यक्त्व शोने छे. तथा सम्यक्त्वनां पांच लक्षणोयें करी युक्त थवुं ॥५॥

॥ सम्यक्त्वनी छ प्रकारनी जयणा छे,सम्यक्त्वनेविषे छ आगार छे; ते अपवादस्थानक जाणवां. सम्यक्त्व छ नावनायें करी नावित छे; जेम फूलें करी तिल वासित होय छे तेम नावनायें करी सम्यक्त्व वासित करीयें. तथा सम्यक्त्वनां छ स्थानक छे. ए सडसठ लक्षणयुक्त नेदें करीने सम्यक्त्वनी विशुद्धि एटले निर्मलता थाय छे. एवा सम्यक्त्ववान् ते शुद्ध सम्यक्त्वी कहेवाय छे. ते जेम श्रेष्ठ पुरुषने विषे बहोंतेर कलाउ,तथा रुडी स्त्रीनेविषे चोशठ कलाउ दीठामां आवे छे, तेम शुद्ध सम्यक्त्वीमां यथायोग्य रीतें हेयोपादेयपणे ए सडसठ प्रकार दीठामां आवे छे ॥ ६ ॥

हवे प्रकरण कर्त्ता, निष्कपट वृत्तिथी कहे छेः—

॥ पुव्वमुणीण कयाणं, गाहाणमिमाण किंपि नावत्थं ॥ थोवरकरेहिं पयडं, वुछं संखेवरुइ पछं ॥ ७ ॥ अर्थः—पूर्वे मुनियें एटले पूर्वाचार्योयें करेली ए बे गाथाउनो किंपि एटले कांइक संक्षेपें करी नावार्थ एटले रहस्य, जेमां थोडा अक्षरो अने अर्थ घणो ए प्रकारें जेम प्रगट थाय एटले

थागलो सांजलनारो वांचनारो नव्य प्राणी जेम समजे. तेवी रीतें कहुं बुं. एनो हेतु ए ठे के, सांप्रतकालना मनुष्योनी घणा विस्तृत अर्थ ऊपर रु चि होती नथी; किंतु संक्षेप अर्थना रुचिवाला घणा ठे. तेउने जेवी रीतें पथ्यनी पठें हितकारी थाय, तेवी रीतें नावार्थ हुं कहुं बुं ॥ ७ ॥

हवे ए सडसठ नेदमांथी चार सद्दहणाने विवरी देखाडे ठेः—

॥ परमठ संथवो खलु, सुमुणिय परमठ जइ जण निसेवा ॥ वावन्न कुदिठीण य, वज्जण मिह चउह सद्दहणं ॥ ८ ॥ अर्थः—प्रथम परमार्थसंस्तव, ते रहस्यार्थनो तत्त्वनूत जे अर्थ तेनुं ग्रहण करवुं संस्तव परिचय करवो. प्रतिदिन तत्त्वज्ञाननो अन्यास करवो; तेना ऊपर प्रीति राखवी; तथा विरस अर्थनो त्याग करवो; अतत्त्वनो परिचय करवो नहीं. अने तेनी ऊपर रुचि पण राखवी नहीं एटले हंसना जेवी बुद्धि राखवी. जेम क्षीर अने नीर एकठा थई गयेलां होय तेमांथी नीर नाखी दइने हंस क्षीरनुं ग्रहण करे ठे; तेम असारने मूकीने सारनुं ग्रहण करवुं. माटे हंसना जेवुं थवुं पण नूंड तथा कागडाना जेवुं न थवुं, केम के नूंड तथा कागडानो एवो स्वनाव होय ठे के, सार वस्तुनो त्याग करीने असार वस्तुनुं ग्रहण करे ठे. तेम जे प्राणी श्रीवीतरागदेवने मूकीने सरागी देवनी पूजा प्रमुख करे, तथा सुगुरु मूकीने कुगुरुनी सेवा करे, विनयमूल तथा दयामूल धर्म मूकीने अविनयमूल तथा हिंसामूल धर्मनो आदर करे, ते पुरुष नूंड तथा कागडाना जेवा जाणवा. माटे तेवा न थतां हंसना जेवुं थवुं.

हवे ते परमार्थ संस्तव केवी रीतें प्राप्त थाय? ते कहे ठेः—

(सुमुणिय के०) नला जाण्या ठे (परमठ के०) परमार्थ जेणें एवा जे (जइजणनिसेवा के०) यतिजन तेनी निरंतर सेवा करवी यडुक्तं, " तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स नगवउ महावीरस्स अंतेवासी बहवे थेरा नगवंतो जाइ संपन्ना कुलसंपन्ना बलसंपन्ना रूवसंपन्ना चरित्तसंपन्ना लज्जासंपन्ना लाघवसंपन्ना उयंसी तेयंसी वच्चंसी जिअकोहा जिअमाणा जिअमाया जिअलोहा जिअनिद्दा जिइंदिया जिअपरीसहा जीवियास मरण नय विमुक्का जाव कुत्तियावणनूया विहरंति तहारूवाणं नंते समणाणं माहणाणं पज्जुवासनाए किंफला पज्जुवासणा पन्नत्ता, गोयमा, सवणफला सेवं नंते सवणे किंफले नाण फले. नाणे किंफले विन्नाणे फले. विन्नाणे किंफले प

क्खाए फले पच्चक्खाणे किंफले संजम फले संजमे किंफले अणेहाय फले अणेहाय किं फले, तव फले, तवे किं फले वोदाण फले, वोदाणे किं फले अकिरियाफले, अकिरिया किं फला सिद्धि पज्जवसाण फला." माटें एवा यति जननी सेवा करवी.

हवे एवा यति जननी सेवा करवानी नावना केम उत्पन्न थाय? तेनो हेतु कहे वे (वावसुवज्जणं के०) विणठानुं तथाकुदृष्टिनुं वर्जन एटले त्याग कखाथी एवो नाव उत्पन्न थाय ठे. एटले सम्यक्त्व तथा चारित्रथी ब्रष्ट थयेला एवा जे कुमत्यादिक ठे तेने विणठा कहीयें, तेउनो त्याग करवो. यतः "नठो देवायवो, वत्तही आसन्न असइ पुत्तोय ॥ गुरुदेवाणय ज्जुठो, निद्धम्मा पंच पणुत्ता." नावार्थः—एमनो संग करवाथी सम्यक्त्व मलिन थाय वे, माटें एउनुं वर्जन करवुं जोइयें, जेम काजलना संगथी सारुं उज्ज्वल वस्त्र पण कालुं थाय, ते पाढुं टले नहीं तेम कुमत्यादिकनी सायें व्यापार, सेठ वाणोत्तरी, विवाह, उजाणी, प्रमुख परिचय करवो नहीं, एकठा सायें बेसवुं नहीं, सायें जवुं आववुं नही, तेनी सायें लेण देण करवी नहिं इत्यादिक बीजो पण कोइ प्रकारनो व्यवहार तेनी सायें करवो नहिं. यडुक्तं "त्यज डुर्जन संसर्ग, नज साधु समागमम्॥ कुरु पुण्य महोरात्रं, स्मर नित्य मनित्यताम् ॥ नावार्थः—डुर्जनना संसर्गनो त्याग कर, साधुनो समागम कर, रात्रि दिवस पुण्य कर, अने सारासारनो विवेक कर. एटलाज कारणमाटें शास्त्रमां कह्युं वे कें, जे कुमत्यादिकनी धर्मकरणीनी प्रशंसा कखाथी तेउनी वृद्धि कखा जेवुं थाय ठे, अने तेउनी सायें परिचय कखाथी तेउनी धर्म करणीनुं अनुमोदन कखा जेवुं थाय वे; माटे कोई प्रकारें तेउनो परिचयज न करवो. कह्युं वे के, "अंबस्सय निंबस्सय डुएहंवि समागयाइ मुलाइं ॥ संसग्गीय विणठो, अंबो लिंबत्तणं पत्तो" जेम लींबडाना फाडना संसर्गथी आंबानो विनाश थाय ठे, तेम नरसी संगतिथी बुद्धिभ्रंश थाय ठे. जेम कांजीथी दूध फाटीने विणसी जाय ठे, पण कांजीमां कांई वणसतुं नथी. केम के, ते तो प्रथमथी ज वणसेली ठे. तेम नरशी संगतिथी साराने माघ लागे ठे, पण नरसाने कांई थतुं नथी. केम के,ते तो प्रथमथीज नरसो होय ठे. माटें चतुर लोको विचारी जो जो.

चोथी सदहणा, ते (कुदिठ्ठिणय के०) कुदृष्टि जे मिथ्यादृष्टि जीवो तेनी संगतिनो त्याग करवो. जेम कुमत्यादिकना संगतिनां दूपण कह्यां, तेमज मिथ्यादृष्टिनी संगतिनां पण दूपणो जाणी लेवां. अहीं कोई आशंका करशे के बन्ने सरखी रीतें त्याग करवा योग्य ठे, अने बन्नेनां दूपणो पण सरखां ठे त्यारें पासत्था अने मिथ्यादृष्टिने जुदा जुदा कहेवानुं कारण शुं? तेनो उत्तर आवी रीतें ठेः—के अभिनिवेश मिथ्यात्वनो धणी कुमति होय ते कुमतिनो उपदेश देतो थको अनंत संसारनी वृद्धि करे. तथा श्रीतीर्थंकर देव अने सुविहित आचार्य, उपाध्याय, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका प्रमुखनी आशातना करे ठे, वली वखाण करतां रौद्रअध्यवसायी थाय ठे. केम के, ते व्याख्यान करतां प्रसंगें जेथी पोताना मतनुं स्थापन थतुं होय, तेनी अधिक प्रशंसा करे तेथी अनादि कालनो परंपरायें चाल्यो आवेलो जे सुमतिमार्ग, तेनी उत्थापना थाय, इत्यादि अध्यवसायवालो अनंत संसार वधारे ठे. एमां कांई आश्चर्य नथी. अने मिथ्यादृष्टिने तो श्रीतीर्थंकर, आचार्य, उपाध्याय, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका प्रमुखनी आशातना करवानो प्रसंग आवतो नथी. तेम ठतां जो मिथ्यादृष्टियें करीने आशातना करे, तो पण कुमतिमांज खपे. अने तेनीज पंक्तिमां गणाय. तेमज मिथ्यादृष्टिने उत्सूत्र भाषानो पण प्रसंग आवतो नथी, केम के, ते सूत्रोने जाणतो होय तो तेने विषे उत्सूत्र भाषणनो संभव थाय; पण ते श्रीजिनशासनमांहे प्रवीण नथी माटे प्रतिमादिकनी उत्थापना करवायी ते रौद्र अध्यवसायवाला थता नथी. माटे वावस्तु एटले मिथ्यात्वमां व्यापन्न अने कुदृष्टि ए वे जुदा कह्या. ए चार बोलनेविषे सद्दहणा राखे, एटले जे करवा योग्य होय ते करे अने जे ठांमवा योग्य अर्थात् न करवा योग्य होय तेनो त्याग करे ॥ ८ ॥

हवे फरी एहिज परमत्थसंथवो एटले परमार्थ संस्तवनुं वर्णन करे ठेः—

॥ जीवाइ पयत्थाणं, संतपयाईहिं सत्तहिं पएहिं ॥ वुहाणवि पुणरुत्तवणं, चिंतणं संथवो होइ ॥ ए ॥ अर्थः—(जीवाइ पयत्थाणं संत पयाईहिं पएहिं के०) संतपदआदि दई सात पदें करी जीवादिक ठ पदार्थनुं स्वरूप जाणवा माटे (पुणरुत्तवणं के०) पुनः पुनः तेनुं श्रवण करवुं, (वुहाणवि के०) बुद्धने पंमितो होयते पण नवा नवा गीतार्थना मुखथी सांभला

करे ते श्रवण करीने तेनुं (चिंतणं के०) चिंतववुं चिंतन अथवा मनन करवुं, अने पछी तेने दृढ धारी राखवुं. एटले फरी ते वीसरी जाय नहीं एवो पाको निदध्यास करवो. बुद्धिमां सारी रीतें ठसावी राखवुं, तेम न करवा थी ते निष्फल थाय छे,जेम पर्वत ऊपर वर्षा थयाथी ते पाणी तरत सूका इ जाय छे, तेथी कांइ फलनी उत्पत्ति थती नथी,अने मालवानी स्निग्ध चीकणी भूमिनेविषे वर्षाद थइ छतां त्यां पाणी तरत सूकाइ जतुं नथी, तेथी गोधूम, चणक, तथा शेलडी प्रमुख नाना प्रकारनी नली नली वस्तु उ नीपजे, माटें श्रोतायें डुंगरनी जमीन जेवुं न थवुं, किंतु मालवानी ज मिन जेवुं थवुं. के जेथी श्रोताजनने सम्यक्त्वनी उत्पत्ति थाय. पछी ते स म्यक्त्वनी वृद्धि थयाथी देशविरति, सर्व विरति, उपशमश्रेणी, क्षपक श्रेणी तथा केवलज्ञानादिकनी निष्पत्ति थाय. एवी रीतें (संथवो होइ के०) संस्तव थाय छे. हवे मूलमां कह्युं छे के, संत पदादिकें करी जीवादिक ठ पदार्थो जाणवा. ते कहे छेः– " संतपय परूवणया, दवपमाणं च खित्त फुसणा य ॥ कालो य अंतरं चेव, नावे अप्पाबहुं तहा. " एनो अर्थ क हीयें बैयें. प्रथम सत्यपदनी एटले छतापदनी प्ररूपणा करवी; त्यां जीव इव्य छतुं छे केम के ए शुद्ध पद छे माटे सत्य छे. जे शुद्ध पद होय छे, ते सत्य होय छे. जेम घट पद शुद्ध छे एक पदपणामाटे ते सत्य छे. जे एक पद होय ते सत्य होय छे, एटले जेनी सायें बीजुं पद मलीने समा सांत थयेलुं न होय ते एकाकी पद कहेवाय छे, ते सत्य होय छे. जेम 'घट' ए पद एकाकी छे एटले समास वगरनुं छे, माटे सत्य छे. केम के, ए पद सत्य पदार्थने विषय करे छे, अने जे संयोगी पद होय ते सत्य प ण होय छे ने असत्य पण होय छे. जेम के, 'आकाशकुसुमं' ए पद आ काश अने कुसुम ए बे पदोना संयोगथी थयुं छे, माटे असत्य छे, तेमज गर्दनशृंग प्रमुख असत्य पदार्थोने विषय करनारां जे पद होय ते सर्व अ सत्य एटले अछतांज जाणवां, अने राजपुत्र प्रमुख सत्य वस्तुने विषय करवावालुं संयोगी पद पण सत्यज होय छे. परंतु वस्तुने विषय करनारुं ए क पद तो नियमथी सत्यज होय छे. ए युक्तियी जीवपद एकाकी होवाथी सत्य छे,एवी रीतें अस्तित्व पदनी जे प्ररूपणा करवी ते प्रथम पद जाणवुं.

बीजुं दव्वपमाणं एटले इव्यनुं प्रमाण करवुं त्यां जीवइव्य अनंत छे,

ते प्रत्येक जीवद्रव्यना लोकाकाश प्रदेशना प्रमाणनी परें असंख्यात प्रदेश ठे, एटले जीवद्रव्य अनंत मली अनंत प्रदेशमय ठे, एवी रीतें जीव द्रव्यनुं जे प्रमाण करवुं, ते बीजुं द्रव्य प्रमाण पद जाणवुं.

त्रीजो खित्तफुसणाय एटले क्षेत्रस्पर्शना चौद ते रज्ज्वात्मक जीव लोकनी ठे.एटले जीवद्रव्य मात्र चौद रज्ज्वात्मक लोकमां ठे,पण अलोकमां जीवद्रव्य नथी. अथवा ज्यारें केवली भगवान् केवल समुद्घात करे ठे, त्यारें आत्मप्रदेशें करी चौद रज्ज्वात्मक जीवलोकनेज स्पर्शे ठे, पण अलोकनेविषे स्पर्शना करे नहिं. केम के,आत्माना प्रदेश लोकाकाशना प्रदेशो जेटलाज ठे,माटें तेटलीज स्पर्शना थइ शके ठे,ए रीतें त्रीजुं क्षेत्रस्पर्शन जाणवुं.

चोथो कालोय एटले कालथी जीवनी आदि नथी, तेम अंत पण नथी, माटे अनादि अनंत ठे. ए रीतें चोथुं कालपद जाणवुं.

पांचमो अंतरद्वार ते सर्व जीवद्रव्य असंख्यात प्रदेशवाला ठे, माटें तुल्य ठे. अने तेउना ज्ञानादिक पर्यायो प्रत्येक जीवना जुदा जुदा ठे एम द्रव्यनी अपेक्षायें सर्व जीवद्रव्य अंतर रहित ठे, अने पर्यायोनी अपेक्षायें अंतर सहित ठे. तथा बीजे प्रकारें अंतर विचारीयें तो पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, तथा त्रसकाय. ए चारे कायना जीवो असंख्याता उत्पन्न थाय ठे, अने चवे तो पण असंख्याता चवे ठे,तेमज वनस्पतिकायमां एक समयमां अनंत जीव ऊपजे ने चवे ठे. तथा त्रसकायमां एक समयमां असंख्याता जीव उपजे तथा असंख्याता चवे, पण जीव कोइ एक समयमां उपजे चवे नहीं एवो आंतरो नथी एटले विरह काल नथी॥ यतः ॥ "अत्थी अनंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइ परिणामो ॥ उववज्जंति चयंति य, पुणोवि तत्थेव तत्थेव" ए पांचमुं अंतरद्वार जाणवुं.

हवे ठहुं भावद्वार कहे ठे. ते भाव ठ प्रकारनो ठेः– औदयिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक, पारिणामिक तथा सान्निपातिक, एवं ठ. तेमां जीवने जीवत्व ठे ते पारिणामिक भावे ठे.केम के,भव्यजीवो जे ठे ते भव्यज ठे अने अभव्य ते अभव्यज ठे. परंतु भव्य ते अभव्य थाय नहीं,अने अभव्य ते भव्य थाय नहिं. माटें पारिणामिक भावें कहेवाय ठे, ए ठहुं भावपद जाणवुं.

तथा सातमुं अल्पबहुत्वद्वार ते पृथ्वीकायथी अप्काय जीवो अधिक,

अप्कायथी तेउकाय जीवो अधिक, तेउकायथी वाउकाय जीवो अधिक, तथा वाउकायथी वनस्पतिकाय जीवो अधिक छे. एम जीवनुं अल्प तथा बहुत्व जाणवुं. एवी रीतें जीवादिक पदार्थो वधा पदो सार्थे विचारवा अने तेउनो पुनः पुनः जे विचार करवो, तेने परमार्थ संस्तव कहियें ॥७॥

हवे ए उपर जिनदास श्रावकनुं उदाहरण कहे छेः–

॥ आ जंबुद्वीपमांना जरत क्षेत्रमां एक मथुरा नामनी नगरी छे. तेमां जिनदास नामनो एक श्रावक हतो. ते शेठ श्रावकना एकवीश गुणोयें करी संयुक्त हतो. आठम प्रमुख पार्वीने दिवसें पौषध करवामां तत्पर रहेतो. ए शिवाय सर्व प्रकारें धर्मनो एवो तो रागी हतो के, जेवा श्री जगवती सूत्रनेविषे तुंगीया नगरीना श्रावको वखाण्या छे तेना जेवी योग्यता वालो हतो, तेउनी तुल्यना करनारो हतो. तेनी साधुदासी नामनी स्त्री हती, तेमां पण नामना जेवाज गुणो हता. अने तेवाज परिणामो पण हता. ते स्त्रीपुरुष बन्नेयें गुरुना मुखें बार व्रत उच्चारतां धरे चतुःपद बांध्याथी घणो आरंज थाय छे. तेथी तेनां पच्चरकाण लीधां हतां. एवी रीतें शुद्ध सम्यक्त्वनुं मूल जे बार व्रत तेने पालतां छतां सुखें कालक्रमण करे छे.

हवे तेने घेर प्रतिदिवस एक आहिरणी, दहीं, दूध तथा घृत, देवाने आवती हती, तेनी सार्थे लेवड देवडनो संबंध थयो. कोइएक समयें ते आहिरीणीनी छोकरीना विवाहनो अवसर आव्यो, त्यारें तेने घेर जिनदासें पापड, वडी, फाफडा,सेव, तथा खारां सालणां प्रमुख वस्तु मोकली दीधी. ए वस्तुउ तेने विवाहमां घणी उपयोगमां आवी तेथी विवाह दीत थयो अने ते आजीरी पण मनमां घणी संतोषने पामी. विवाह वीती गया पछी पोतानी उपर थएलो उपकार फेडवाने अर्थे कजला दूध जेवा त्रण त्रण वर्षना वे वाछडां लईने जिनदासने न कलवा देतां आंगणामां आवी बांधी गइ. पछी ते अत्यंत उज्ज्वल अने गंगाजल जेवा निर्मल वाछडां जिनदासना जोवामां आव्यां अने मनमां जाण्युं के, पेली आहिरिणी प्रत्युपकार करवाने आ बांधी गई छे. हवे एनुं करवुं शुं ! जो ए पशुउने पालुं, तो व्रत जंग थाय,अने जो मूकी देउं तो ए वेहु जीव हलादिकमां जोडाइने दुःखी थाय, तेनुं पाप मने लागे " इतो व्याघ्र इतस्तटी " ए न्यायप्रमाणें मने थयुं छे. त्यारें तेना स्त्रीयें कह्युं के,आपणो नियम जंग तो थाय के जो पो

ताना स्वार्थें एउने वहेल गाडा प्रमुखमां जोतरीयें ? परंतु अनुकंपा बुद्धियें पालतां नियम चंग थतो नथी. माटें मूकी देवा करतां दयाबुद्धियें पाल्याथी कांइ दोष नथी. एम तेणे गुरु लाघव विचार करीने वेहु वाउडां राखी ली धां. तेउने पोषवा सारु खावा पीवाने फासु पाणी तथा फासु चारो आपे. एम करतां अनुक्रमें ते अत्यंत श्रेष्ठ बलद थया. जिनदास श्रावक आठम पाखीना चोविहार पोसह प्रमुख करे, धर्मशास्त्र वांचे, तेनी संगतिथी ते बलदो पण श्रावक थया. पोताना धणीनी साथें आठम पाखी प्रमु खना चोविहार उपवास करवा लाग्या. कह्युं ठे के, संगत ठे ते, महोटी वस्तु ठे, यतः ॥ अंजणचक्खु संगेण, मालासंगेण सुत्त हियएणं॥ तह्य सज्जणसंगेणं, सव्ववत्थुण गोरवं " जेम चक्षुनी संगतिथी अंजन नेत्रमां वास करी शके ठे, मालानी संगतथी सूत्र हृदय ऊपर रही शके ठे, तेम सज्जननी संगतिथी सर्व वस्तुने गौरव आवे ठे. पठी ते बलदोनुं एवुं स्व रूप जाणीने जिनदास शेठ तेउनुं पुत्रनी पठें वधारे पालण पोषण करवा लाग्यो. कोइएक समयें भिंमीरमण नामना यक्षनी यात्रा आवी, त्यां लो को पोतपोतानी वहेलोमां बेशीने जवा लाग्या. ते अवसरें जिनदासनो एक मित्र हतो, ते तेने पूठयाविना वाउडां ठोडी गयो. अने तेउने पो तानी वहेलमां जोडीने चोगानमांहे घणा दोडाव्यां. लाकडीथी घणो मार मार्यो, परोणाना प्रहार दीधा, एम निर्दयपणे तेउने घणो संताप कर्यो. तेथी त्रूटी पड्या, पठी तेणें पाठा आवी आंगणे गमाणमां बांधी मूक्या, अने पोतें चालतो थयो. जिनदास शेठ आवी जूवे ठे तो बलदोना अंग ऊपर रुधिर वही रह्युं ठे; अने अति वेदना पामी रह्या ठे. तेथी ते घणुं डुःख पाम्यो. ते बलदोनी आगल चारो पाणी मूक्युं, पण तेउनाथी कांइ खवायुं पीवायुं नहीं. त्यारें दूध तथा साकर प्रमुखनुं पाणी पीवरावबा ला ग्या, पण तेने तेउ, सामे पण जुए शेना! त्यारें शेठें जाण्युं के ए हवे जीव वाना नथी पठी तेमनी अनशननी मनसा जाणीने अनशन व्रत कराव्युं, नमस्कारमंत्र दीधा, ते तेउयें सद्दह्या. एम मननी समाधिसहित काल क रीने ते नागकुमारनी जातिमां देवो थया. पठी जेम पुत्रना मरणथी डुःख थाय तेनी पेठें ते शेठ अने शेठाणी बन्नेने अति माठुं लाग्युं. ते बन्ने ब लद कंबल अने शंबल एवां नामे नागकुमार देवो थया. कोइ एक समयें

श्रीमहावीर नगवान नावमां बेठेला हतां कोइ सुदास नामना मिथ्यात्व दृष्टि देवें तेमने मरणांत उपसर्ग करवा मांमयो. ते वखतें कंबल आवी ने ते मिथ्यादृष्टि देवनी सार्थे लडवा लाग्यो, अने संबलें ते नाव सुखें थी पेहेले पार पहोंचाडयुं. सुदाढदेव हारीने नाशी गयो. अने नगवंतनो मरणांत उपसर्ग तेणें टाल्यो. पछी श्री नगवंतने वंदना करीने कंबल अ ने शंबल पोताने ठेकाणें गया. पणे जिणदासश्रेष्ठी तथा तेनी स्त्री साधु दासी श्राविका बेहु जण वृषजना विरहें करी अति दुःखित थयां थकां वैराग्यने पाम्यां. अने विशेषथी श्राद्धधर्म आराधी आगमार्थनो परिचय करतां मरण पामीने स्वर्गनेविषे गयां. त्यार पछी अनुक्रमें मोक्ष पामशे. ए चार सद्दहणामांहेली पहेली सद्दहणानुं स्वरूप कह्युं ॥

हवे सद्दहणानो बीजो नेद कहे ठेः–

॥ गीयछियं चरित्तय, सेवा वहुमाण विणय परिसुद्धी ॥ तत्तावबोह जो गा, सम्मत्तं निम्मलं कुणइ ॥ १० ॥ अर्थः–गीतार्थ तिहां गीत एटले सूत्र अने अर्थ एटले तेनी वृत्ति, नाष्य, निर्युक्ति तथा चूर्णि प्रमुख पंचांगीरूप अर्थना जाणनारा जे होय तेने गीतार्थ कहीयें ॥ यतः ॥ गीयं नन्नइ सु त्तं, अत्थो तस्सेव होइ वक्खाणं ॥ उनएणय संजुत्तो,सो गीयत्थो मुणेयव्वो ॥

तथा (चरित्तय के०) सर्व विरतिरूप चारित्र जाणवुं. ए बन्ने ए टले गीतार्थ ठतां चारित्रवंत जे होय, तेने सुविहित शुद्ध प्ररूपक कहियें. मात्र जे ज्ञानवान होय ते सुविहित कहेवाय नहिं, तेम मात्र क्रियावान् पण शुद्ध प्ररूपक न होय; माटें ज्ञान अने क्रिया ए बन्ने सा थें मले, तोज सुविहित शुद्ध प्ररूपक कहेवाय. कह्युं ठे के, " हेयं नाण *कियाहीणं, हेया अन्नाणउ किया* ॥ पासंतो पंगुलो दड्ढो, धावमाणो य अं धउ ॥ १ ॥ संजोगसिद्धीइं फलं वयंति, न एगचक्केण रहो पयाइ॥ अंधोय पंगूयवणेसमिच्चा, ते संपउत्ता नयरं पविठा ॥ २ ॥ क्रियाहीन ज्ञानी त्याग करवा योग्य ठे, अने ज्ञान विना मात्र क्रियावंत पण त्याग करवा योग्य ठे, केम के ज्ञान पांगला जेवुं ठे, अने क्रिया आंधला जेवी ठे. ज्ञानवा नने वधुं जाणवामां आवे, पण क्रिया विना कार्य सिद्ध करी शके नहीं; अने क्रियावान् कार्य सिद्ध करवाने समर्थ ठे. पण अज्ञानी होवाथी तेने मार्गने मार्गनी खबर नथी. जेम आंधलो चालवा समर्थ ठे अने पांगलो

मार्ग देखाडवा समर्थ बे. एम बेहु मल्यां वांछित नगरें पहोंचे. तेम जे ज्ञान अने क्रिया बन्नेयें करी युक्त होय, तेज सुविहित गीतार्थ कहेवाय. तेनी सेवा करवी एटले परिचर्या करवी; ते सेवा बहु मानें करी अंतर्गत बहु प्रीतियें करी करवी. विनय एटले मन, वचन, तथा कायायें करी. आनंदें करी स्तुति तथा अभ्युत्थान प्रमुख करवुं. ए बन्ने प्रकारें निर्मल सेवा थाय बे. ते आगमना रहस्य जाणनाराने योग्य बे. एथी सम्यक्त्वनी निर्मलता थाय बे, माटें सुविहित गीतार्थ होय तेनांज सेवा तथा विनय प्रमुख करवां; एना योगथकीज निर्मल सम्यक्त्व थाय बे ॥ १० ॥

॥ एनी उपर पुष्पचूला साध्वीनुं उदाहरण कहे बेः— आ लाख योजन प्रमाणवाला पूर्णचंद्राकार जंबुद्वीपमां तेना एकशो ने नेवुंमा भाग जेटलुं आ भरत क्षेत्र बे. तेमां एक पुष्पभद्रिका नामनी नगरी बे. ते गंगाना तट उपर बे. तेमां पुष्पकेतु नामनो राजा राज्य करतो हतो. तेनी पुष्पवती नामनी राणी विनयवंत तथा शीलवान् होती हवी; तेनी साथें विषय सुख भोगवतां एक पुत्र अने एक पुत्रीनो जन्म थयो. तेउनां नाम पुष्पचूल तथा पुष्पचूला राख्यां. ए भाई बेन बन्ने रूपें सरखां, शरीरें सरखां, तथा गुणें करी सरखां हतां. ते कालांतरें तरुण अवस्थाने पाम्यां. एटले तेउनां लग्न करवानो विचार चाल्यो. राणी प्रमुख सर्व स्वजनोयें संसारनी रीति प्रमाणें पोतपोताना अभिप्रायो जणाव्या. ते योग्य बतां राजा पापबुद्धिने वश थई सर्वने लोपीने भाइ बेनने परणावी दीधां. कह्युं बे के "न गुणंति कुलं न गुणं,ति पावयं पुणमवि न गुणंति ॥ इस्सरिएणहि मत्ता,तहेव परलोयमिह लोयं" जे स्त्रीनेविषे मत्त थएला पुरुषो बे ते,कुल,पाप,तथा पुण्य, कांइ गणता नथी. तेमज तेने आ लोक अने परलोक सरखाज बे. हवे पुष्पचूल अने पुष्पचूला बेहु धणी धणीयाणी विषय भोगवतां जोइ पुष्पवती राणीयें राजाने अन्याय करतो वार्यो,पण राजायें कांहिं मान्युं नहिं. त्यारें तेणें वैराग्य पामी दीक्षा लीधी. पढी अनुक्रमें सारी रीतें दीक्षा पाली स्त्रीवेद बेदीने देवनी गतिने प्राप्त थइ. त्यां अवधिज्ञान प्रयुंज्युं. ते समयें ते भाइ तथा बेननो संभोग देखीने तेउने प्रतिबोध करवाना हेतुथी पुष्पचूलाने स्वप्नमां नरकनुं दुःख देखाडवा लागी. एटले ते साते नरकपृथ्वीनां दुःख देखीने महा भयने पामवा लागी. जाग्या पढी पण जेनुं शरीर कंपवा ला

ग्युं. ते सर्व दुःख पोताना पति पुष्पचूलनी पासें कहेवा लागी. एवुं प्रति दिने थवा लाग्युं. त्यारें पुष्पचूलें सर्व अन्य दर्शनीयोने तेडावीने ते स्वप्न नो खुलासो पूछ्यो, त्यारें ते सर्व पोतपोताना मत प्रमाणें नरकनां दुःख कहेवा लाग्यां. पण तेमांनुं एके स्वप्नना अनुसारें मले नहीं, तेथी पुष्प चूलानुं मन माने नहीं. पछी राजायें अन्निका पुत्र नामना जैन आचार्यने तेडावीने पूछ्युं, के तमारा दर्शनमां नरकनां दुःख केहेवां कह्यां छे? त्या रें आचार्यें निःशंकपणे जैनमतमां जेवां साते नरकनां दुःख कह्यां छे. ते विस्तारें कही देखाड्यां, ते सांजलीने राणी कहेवा लागी के मारी पर्वे तमें पण स्वप्नमां दुःख देखो छो, एवुं जणाय छे! आचार्यें कह्युं के, अमें स्वप्न मां नरकनां दुःख देखता नथी, पण अमारा जैनशास्त्रना अनुसारें जाणी यें छैयें. राणीयें कह्युं,के ते शास्त्र कयां छे? ते कहो. तेवारें आचार्यें निरया वलिका नामना उपांगना आलावा कही संजलाव्या. त्यारें राणीयें पूछ्युं के, एवां नरकनां दुःख कोण पामे? आचार्य बोल्या,सांजलोः— "कहणं नं ते जीवा नेरइयाउ अत्ताए कम्मं पकरंति,गोयमा महारंजयाए महापरिग्ग हयाए कुणिमाहारेणं पंचिंदिय वहेणं इच्चेएहिं ठाणेहिं जीवा नेरइयाउ अ त्ताए कम्मं पकरंति" एवुं सांजलीने राणी कहेवा लागी के, तमें मारो सं शय निवृत्त कर्यो. तमारी वार्त्ता मारा स्वप्नने मलती आवी. पछी राणीयें पण आदर करीने ते गुरुनी वंदना करी, अने तेमने उपाश्रये पहोंचता कीधा. त्यार पछी वली कोइएक समयें पेलो पुष्पावतीनो जीव थएलो देव, ते पुष्पचूलाने स्वप्नमां चार देव लोकनां सुख देखाडवा लाग्यो. ते वा त पण ते पोताना पतिने कहेवा लागी. तेथी फरी तेणें अन्यदर्शनीयोने तेडाव्या, ने तेऊने स्वर्गनां सुख केहवां छे? एम पूछ्युं. त्यारें तेउयें कह्युं के रूडुं खावुं,सारुं पीवुं, स्त्रीविलास प्रमुख सुख जोगवियें, आनंदमां रहि यें, एज स्वर्गनां सुख छे. एवी वातो पुष्पचूलाना मनमां बेसे नहीं. त्यारें राजायें अन्निकापुत्र आचार्यने तेडीने पूछ्युं. के तमारा शास्त्रमां स्व र्गनां सुखविषे केवी रीतें कह्युं छे? त्यारें तेमणें शास्त्रने अनुसारें चार देव लोकनो विचार, नव ग्रैवयेक पांच अनुत्तर विमाननो विचार कहेवानो आरंज कर्यो. ते पेली राणी लक्ष दइने सांजलवा लागी. तो पोताना स्व प्ननी साथें बधी वातो मलती आवे छे. एम जाणीने ते अति राजी थइ.

ने ते आचार्यने पूछ्युं के एवा सुखनी प्राप्ति केम थाय ? आचार्ये कह्युं के सांभळोः– कहणं भंते जीवा सुहं कम्मं बंधंति, गोयमा सम्मदंसणसुद्धीए पसथ्थ मण वयण काय जोगेणं इंदिय निग्गहेणं कोह विजएणं धम्म सुक्कझाणेण आयरिय उवझायाणं साहु साहम्मियाण भत्तीए दाण सील तव भावण प्पभावणाए वेरग्गेणं निस्संगयाए संविभागेणं इच्चेएहिं दसहिं ठाणेहिं जीवा सुहं कम्मं बंधंति " ए शुभ कर्म बंधथकी जीव सर्गनां आयु बांधे, काळ करी सर्गे जाय. तथा " एगदिवसंपि जीवो, पवज्जमुवागर्ड अणुसुमणो ॥ जइवि न पावइ मुक्खं, अवस्स वेमाणिर्ड होइ. " एवी रीतें जीव सर्गनां सुख पामे छे. एवुं सांभळीने पुष्पचूला कहेवा लागी के, सामी ! आप उपाश्रयनविषे पधारो. हुं मारा धणीने समजावीने त्यां आवी दीक्षा लईश मारा धर्माचार्य आप छो, माटें मारे आपनी पासेंज दीक्षा लेवी छे. कह्युं छे के, " सम्मत्तदायगाणं, डुप्पडियारं भवेसु बहुएसु ॥ सवगुण मेलियाहिवि, उवयार सहस्स कोडीहिं. " एवुं कही गुरुने वांदीने उपाश्रयें विदाय कस्या. पछी पुष्पचूल राजाने सारी रीतें समजावीने पुष्पचूला राणीयें तेज आचार्यनी कने महामहोत्सव सहित दीक्षा लीधी. अने राजाना आग्रहथी त्यांज गुरु रह्या. अन्यदा प्रस्तावें आगळ बार वर्षनो डुष्काळ पडशे, एवुं ज्ञानवडे जाणीने ते आचार्य सर्व साधुउने सुभिक्ष देशनेविषे विहार करावता लाग्या, त्यारें पुष्पचूला साध्वीयें कह्युं के, सुखें करी समस्त यतिने देशांतरने विषे विहार करावो. हुं आपनुं वेयावच्च करीश. ते सांभळी तथा लाभ जाणीने पडिवज्ज्युं. पछी पुष्पचूला घणी भक्तियें करी सेवा प्रमुख करवा लागी. प्रतिदिन मनोज्ञ आहार पाणी लावी आपे; अने गुरुने सारी रीतें साचवे. यतः " पुम्मेहि चोश्या पुलकंठेहिं, सिरि भायणं भविय सत्ता ॥ गुरुनागमेत्तिभदा, देवयमिव पज्जुवासंति. " एम करतां सदैव गुरुभक्तिना अध्यवसायें करी ते पुष्पचूला साध्वी, शुभ भावनायें करी क्षपक श्रेणि पामी; अनुक्रमें केवळ ज्ञान ऊपन्युं. तो पण तेविषे गुरुने कांई न जणावतां प्रथमनी पठेंज गुरुभक्तिमां तत्पर रही. यतः " जो जस्स य आरित्तपं, पुंत्रं भत्तिं कुणंतिर्ड होइ ॥ सो तस्स तारित्तिपं, कुणेइ जानज्झइ न नाणी. " ते साध्वी गुरुना मननो अभिप्राय जाणीने जे वस्तुनी ते

मने इच्छा होय, ते लावी आपे. ते जोईने गुरुने आश्चर्य थाय. तेथी पूछे के, मारी इच्छाप्रमाणेंज तुने क्रिया करवानुं केम सूझे छे? त्यारें ते साध्वी कहे के जे जेनी सदैव सेवा करे, ते तेनी प्रकृति स्वनाव जाणी लिये छे. एक समयनेविषे मेघ, वृष्टि करतां छतां ते साध्वीयें गुरुनी इच्छाने अनुकूल आहार आणी आप्यो. गुरुयें पूछ्युं के, वर्षा छतां केम आहार आण्यो? साध्वीयें कह्युं के, स्वामी! अचित्त अप्कायना मार्गें हींमतां आहार मल्यो, ते आण्यो छे. ए निर्दोष छे. गुरुयें पूछ्युं के, अचित्त अप्कायनो मार्ग तें केम जाण्यो? साध्वीयें कह्युं के, आपना प्रसादें करी जाण्यो. गुरुयें कह्युं कांई ज्ञान? साध्वीयें कह्युं, आपना प्रसादें. गुरुयें पूछ्युं, प्रतिपाति के अप्रतिपाति? साध्वीयें कह्युं, अप्रतिपाति. गुरुयें पूछ्युं, केवलज्ञान? साध्वीयें कह्युं, आपना प्रसादें. त्यारें ते आचार्यें कह्युं के, में केवलीनी आशातना करी. केम के केवली पासेंथी विनयवेयावच्च प्रमुख कराव्यां. एवी रीतें पोताने निंदवा लाग्या. घणी चिंता करवा लाग्या. जे मने हजी केवलज्ञान उत्पन्न थयुं नथी. अने ए साध्वी धन्य छे, के एने थोडा कालमां केवलज्ञान ऊपनुं! एवो ते आचार्यना मननो आशय साध्वी केवलज्ञानथी जाणीने कहेवा लागी के, हे गुरुजी! आप खेद नहिं करो, आपने गंगानदी ऊतरतां केवलज्ञान ऊपजशे. हवे आचार्य गंगानदीना तीर ऊपर जई पेले पार ऊतरवामाटे एक नावमां बेठा, तेमां बीजा पण केटलाएक लोक बेठा हता, जे बाजु आचार्य बेठेला हता, ते बाजुयें एक मिथ्यादृष्टि देवांगना आवी नावने मूबाडवा लागी अने नावमां पाणी नरावा लाग्युं, त्यारें लोकोयें ते आचार्यने त्यांथी ऊठाडीने बीजे ठेकाणें बेसाड्या. त्यारें ते ठेकाणें पाणी नरावा लाग्युं;अने ते ठेकाणेथी नाव बूडवा लाग्युं. एवी रीतें लोको जुदे जुदे ठेकाणें ते आचार्यने बेसाडे, ते ठेकाणें नाव बूडवा लागे,एम थवा लाग्युं. तेथी लोकोयें आचार्यने ऊपाडीने पाणीमां नाखी दीधा. त्यारें पेली देवागनायें नीचे त्रिशूल धर्युं. ते शरीरमां नोकायाथी त्रिशूल जोडीयें नराई गयुं, तेथी अप्कायनी विराधना थवा लागी. ते पापनी ते गुरुनिंदा करवा लाग्या. एटले मारा रुधिरथी अप्कायनी विराधना थाय छे! तेथी हुं हिंसक छउं छुं. एवी रीतें जीवदयाना शुन अध्यवसायने लीधे क्षपकश्रेणि आरोहीने अंतगड केवली थया. ते स

मयें देवोयें केवल ज्ञाननो महोत्सव कस्यो. त्यां प्रयाग एवे नामें तीर्थ थयुं. ते लोकने कामित दानथकी ते तीर्थनो महिमा वध्यो. हवे पुष्पचूला साध्वी पण अनुक्रमें वेदनीय, नाम, गोत्र अने आयु, ए चार कर्म क्षय करीने मोक्षे पहोंती. एवी रीतें " सुमुणिय परमठ जइ जणनिसेवा ए सद्दहणानो बीजो भेद उक्त दृष्टांत सहित जाणवो. "

हवे वावन्न वज्जणं, ए सद्दहणानो त्रीजो भेद कहे छेः–

॥ वावन्न दंसणाणं, निण्हव हाछंद कुग्गह हयाणं ॥ उम्मग्गु वएसेहिं, वज्जावि मइजिह्न ए सम्मं ॥ ११ ॥ अर्थः–मिथ्यात्वें करी व्यापन्न एटले नष्ट, दर्शन अर्थात् मिथ्यात्वें करी व्याप्त छे सम्यक्त्व जेनुं तेने वावन्न दंसण एटले व्यापन्नदर्शन कहियें. तेना धरनारा एवा निन्हव एटले जगवंत श्रीवीतराग देवनां वचनोना उछापनार. यथाछंद एटले पोतानी इछायें वरते, गुरुनी इछाप्रमाणें चाले नहीं ते. एविषे श्रीप्रवचनसारोद्धार ग्रंथमां कह्युं छे के, " पासछो उसन्नो, होइ कुसीलो तहेव संसत्तो ॥ अहछंदोवि य एयं, अवंदणिज्जा जिणमयंमि " तेमां पासछाना बे प्रकार छेः– एक देशपासछो, बीजो सर्वपासछो, तेमां जे शय्यातर पिंड सामो आवेलो पिंड, नित्यपिंड तथा अग्रपिंड कारण विना लिये, ते देशथी पासछो कहेवाय. अने केवल लिंगधारी होय ते सर्वथी पासछो जाणवो.

उसन्नना पण बे प्रकार छेः– एक देशोसन्न बीजो सर्वोसन्न. तेमां " आवस्सय सप्नाए, पडिलेहण जाण निरक अनत्तठे ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे निसीयण तुयट्टे " नावार्थः–आवश्यक सद्यायादिक करे नहीं, अने जो करे तो अधिका ओछा करे. तेने देशथकी उसन्नो कहियें. अने ऋतुबद्ध कालनेविषे पाट फलग निःकारण वावरे, तथा स्थापनापिंड जोग वे, संथारो पाथस्यो राखे, तेने सर्वथकी उसन्नो कहियें.

कुशीलीयाना त्रण प्रकार छेः– ज्ञानकुशील, दर्शनकुशील, तथा चारित्रकुशील. तेमां जे " काले विणये बहुमाणे " इत्यादिक आठ प्रकारें ज्ञानाचार विराधे, तेने ज्ञानकुशील कहियें, " निस्संकिय निक्कंखिय " इत्यादिक आठ प्रकारें दर्शनाचार जे विराधे, तेने दर्शन कुशील कहियें, अने " पणिहाण जोगजुत्तो " इत्यादिक आठ चारित्राचार विराधे, तथा

कारण विना मंत्र, यंत्र अने तंत्र प्रमुख कोइने करी आपे, निमित्त कहे, तथा औपधादिक उपचार करे, तेने चारित्र कुशील कहियें.

अने संसक्त एटले जेम बलदनी आगल तेना खाणनो सूंडलो राख्यो होय, ते खाण ते बलदें खाधुं होय, तेथी ते सुंडलो कांइक उच्छिष्ट खाण थी खरडायेलो होय, ने कांइ अनुच्छिष्टथी खरड्यो होय. तेम जे कांइक मूलगुण तथा उत्तरगुणनो विराधक होय ने कांइक अविराधक होय, तेने संसक्तो जाणवो. तेना बे नेद ठेः— एक संक्लिष्ट अने बीजो असंक्लिष्ट. तेमां जे पांच आश्रवनेविषे प्रसक्त होय, त्रण गारवें करी प्रतिबद्ध होय, कोइ गृहस्थ तथा गृहस्थिणीना ठोकरा ठोकरीनी चिंता करे, अने तेउना दुःखें दुःखी अने तेउना सुखें सुखी थाय. तेने संक्लिष्ट संसक्त कहियें, तथा कोइ पासत्थो मले तो पोतें पण तेनी साथें पासत्थो बनी जाय, संवेगी मले तो संवेगी जेवो थइ जाय, एवी रीतें जे जेवो मले तेनी साथें स्फटिक मणि नी परें अथवा तेलनी परें तेवो थइ जाय. तेने असंक्लिष्ट संसक्त कहियें.

अहाछंदविषे कहे ठेः— " उस्सुत्त मायरंतो, उस्सुत्तं चेव पणवेमाणं ॥ एसोहु अहाछंदो, इछाछंदोत्ति एगठा " जावार्थः— जे पोतानी इछायें चाले, तेने इछा छंद कहियें.हवे ' कुग्गह हयाणं ' खोटे हठे करी हणायेला, जे कदाग्रहनी शास्त्र साख दिये नहिं,तथा सुविहित शुद्ध प्ररूपक आचा र्य पण साख दिये नहीं एवो हठ पकडीने बेसी रहे,पोतानो हठ मूके नहीं, तेने कुग्रह हत कहियें. एवाना ' उम्मग्गुवएसेहिं ' एटले उन्मार्गना उपदेशें करी (बलावि के०) बलात्कारपणे प्रथमथीज (ए सम्मं के०) ए स म्यक्त्व (मइलिज्ञ के०) मलिन थाय ठे, माटे तेवानी देशना प्रमुख पण सांजलवी नहीं. केम के, नरसी वात सांजलवाथी पण पाप लागे ठे. जेम मशिनो घणो संग करनारना कपडां कालां थाय ठे. तथा लशण खाधाथी मुख गंधाय ठे, तेम एवानी संगत करवाथी सम्यक्त्व मलीन थाय ठे ॥ ११ ॥

॥ एनी उपर जमालीनुं दृष्टांत कहे ठेः—"आजीवगगणनेया, रज्जसिरिं पयहिऊणय जमाली ॥ हियमप्पणो करित्तो, नयवयणिज्जे इह पडंत्तो " इ ति उपदेशमालायां. ब्राह्मणकुंम गामनी पश्चिम दिशानेविषे एक क्षत्रियकुंम नामें गाम ठे. त्यां जमाली नामनो क्षत्रिय अति ऋद्धिमान् होतो ह वो. ते जगवंत श्रीमहावीरस्वामीनी पुत्रीने परण्यो. तेनी साथें पांचे इं

ड्पिोनां विषयसुख जोगववा लाग्यो, हवे कोइ एक समयें त्यां श्रीम हावीरस्वामी पधाखा. तेमने नंदीवर्द्धन राजा प्रमुख वांदवा आव्या; त्या रें जमाली क्षत्रिय पण वांदवा आव्यो, ने धर्मदेशना सांजलीने प्रतिबोध पाम्यो. पही घेर जइ पोताना माता पिताने समजावी पोतानी स्त्री सहि त महोटा महोत्सवें करी दीक्षा लीधी. तेनी सायें बीजा पांचशें क्षत्रिकु मरें दीक्षा लीधी. अनुक्रमें अग्यार अंग जण्यो. एक दहाडे श्रीजगवंत प्र त्यें पूछ्युं के स्वामी! आपनी आज्ञा होय, तो हुं आ पांचशें यतिनी सा यें देशमां विहार करुं? ते सांजलीने जगवान् मौन धारण करी रही गया. कांइ जवाब वाल्यो नहिं. फरी बीजी वार पूछ्युं, तेनो पण उत्तर वाल्यो नहिं; तेमज त्रीजी वार पूछ्युं तो पण तेमज मौनपणे रह्या. केम के, के वली जे वातमां लाज जाणे, तेनीज आज्ञा आपे. अने जेने आज्ञा मा नतो जाणे, तेनेज निवारे. जगवंतें जाण्युं के मारो वाखो रहेशे नहिं. ए वि हार करवाने अति उत्सुक थयो ने तेने हुं शा सारु वारुं? माटें जगवंतें मौन धारण कखुं. त्यारें आज्ञा लीधा विनाज जमालीयें जगवंतथी जुदो विहार कस्तो. ते फरतो फरतो सावत्थी नगरीमां आवी पहोंतो. त्यां कोष्ट क चैत्यमां पांचशें यतियोनी सायें आवी उतखो. अने जगवान् श्रीमहा वीर, चंपानगरीमां पधाख्या. जमालीने अरसाहार, विरसाहार, अंताहा र, पंताहार तथा लुखाहारें करी शरीरनेविषे तीव्र दाहज्वर उत्पन्न थयो. तेनी वेदना खमाय नहिं.त्यारें एक वेयावच्चकरनार यतिने कह्युं के हुं बेशी शकतो नथी, माटे एक संथारुं पाथरो. ते सांजली यति संथारुं पाथरवा गयो. त्यां कांइक वार लागी. तिहां सुधी जमालीथी वेदनाने लीधे बेसा युं नहिं. तेथी वारंवार पूछवा लाग्यो के,अरे संथारुं पाथखुं के नहिं? यति यें कह्युं के, हा पाथखुं. त्यारें ते त्यांथी कठीने ज्यां पेलो यति संथारुं पा थरतो हतो, त्यां गयो. जुवे ने तो हजी संथारुं पथराय ने. तेथी पेला यतिने कह्युं के, तें केम कह्युं जे में संथारुं पाथखुं? यतियें कह्युं के, पाथरवा मांड्युं, ते पाथखुं कहेवाय. ते समयें जमालीना मनमां एवो संकल्प क पनो के, श्रीजगवान् महावीरस्वामीयें जे करवा मांड्युं ते कीधुं, एवुं जे वचन कहेलुं ने, ते खोटुं ने. जे कीधुं तेज कीधुं कहेवाय. माटे चलमा णेचलिए, उदीरिङमाणे उदीरिए, वेदिङमाणे वेदिए, पडिङमाणे पडि

णे, विज्ञमाण विज्ञे, निज्ञमाणे निज्ञे, दज्ञमाणे दज्ञे, मेयमाणे मेए, तथा निज्जरिज्जमाणे निज्जरणे. ए नवे पद असत्य ले. केम के, जे चाल्युं तेज चाल्युं कहेवाय; एमज नवे पद जाणी लेवां.

पछी ते पोतानुं मत यतियोने समजाववा लाग्यो. तेमां केटलाएक जे मुग्ध यतियो हता, तेउयें तो तेनुं मत मानी लीधुं. अने केटलाएक जेउ समजु हता तेउयें मान्युं नहिं. तेउ मनमां विचार करवा लाग्या के, जगवान् श्रीमहावीर केवलज्ञानभास्कर तेमनां वचन खोटां केम थाय ? एम जाणी पोतानी सद्दहणाथी चल्या नहिं. केटलाएक दिवस पछी जमालीने समाधि थइ. त्यारें फरी विहार करवा लाग्यो. तेनी साथें जे तेना मतने मलता यति हता, तेउ रह्या अने जेउ अणमलता हता, तेउ त्यांथी नीकली जइने चंपानगरीमां ज्यां जगवंत हता, त्यां आवी प्रजुने वांदीने रह्या. केटला एक दिवस पछी जमाली पण चंपानगरीमां श्रीवीरजगवंतनी पासें आव्यो. अने अति दूर पण नहिं तेम अति पासें पण नहिं एवा मेलमां रहीने पूछवा लाग्यो के, जेम तमारा बीजा यतियो छद्मस्थपणे विहार करीने छद्मस्थपणेज रह्या छे. तेवो हुं नथी. हुं तो छद्मस्थपणे विहार करीने केवलीपणे विचरुं छुं, जेम तमें केवली छो, तेम हुं पण केवली छुं. एवी रीतें बराबरी करवा लाग्यो, ते वात गौतमस्वामी सांखी शक्या नहिं. ने मनमां विचारवा लाग्या के, महोटुं आश्चर्य छे. उंस, जे सूर्यनी बराबरी करे? गरुड, शेषनागनी बराबरी करे? तेम ए जगवाननी बराबरी करे छे. एम जाणी गौतम तेने पूछवा लाग्या. अरे जमाली! जोतुं केवली छो तो मारा प्रश्ननो उत्तर आप. लोक शाश्वत छे के अशाश्वत छे? अने जीव शाश्वत छे के, अशाश्वत छे? एवुं सांजलीने जेम मंत्रथी वश थएलो साप हाली शके नहीं. जेम खीलो अग्नि आपो चाली न शके, तेम ते गौतमना प्रताप नामकर्मने लीधे तेनी आगल जमाली मूकनी पठें थनी गयो. कांहि जबाप देवायो नहीं. बोल्या विना एमने एम रही गयो. कांइ प्रत्युत्तर देवानुं सूजे नहीं एम जाणीने तेने जगवंत कहेवा लाग्या के, ए प्रश्ननो उत्तर तो मारा छद्मस्थ शिष्यो पण दइ शके. तो तुं केवली छतां केम ताराथी उत्तर देवातो नथी? एवुं सांजलीने जमालीने पणुं मातुं लाग्युं, तेथी जगवाननी आज्ञा उलंघी त्यांथी नीकलीने निन्हवपणे विचरवा लाग्यो. अने केट

ड्रियोनां विषयसुख नोगववा लाग्यो, हवे कोइ एक समयें त्यां श्री
हावीरस्वामी पधास्या. तेमने नंदीवर्द्धन राजा प्रमुख वांदवा आव्या; त्य
रें जमाली क्षत्रिय पण वांदवा आव्यो, ने धर्मदेशना सांजलीने प्रतिबो
पाम्यो. पठी घेर जइ पोताना माता पिताने समजावी पोतानी स्त्री सहि
त महोटा महोत्सवें करी दीक्षा लीधी. तेनी सायें बीजा पांचशें क्षत्रि
मरें दीक्षा लीधी. अनुक्रमें अग्यार अंग नण्यो. एक दहाडे श्रीनगवंत
त्यें पूठ्युं के स्वामी! आपनी आज्ञा होय, तो हुं आ पांचशें यतिनी स
यें देशमां विहार करुं? ते सांजलीने नगवान् मौन धारण करी रही गया
कांइ जवाब वाल्यो नहिं. फरी बीजी वार पूठ्युं, तेनो पण उत्तर वाल्य
नहिं; तेमज त्रीजी वार पूठ्युं तो पण तेमज मौनपणे रह्या. केम के, वे
वली जे वातमां लाज जाणे, तेनीज आज्ञा आपे. अने जेने आज्ञा म
नतो जाणे, तेनेज निवारे. नगवंतें जाण्युं के मारो वाल्यो रहेशे नहिं. ए वि
हार करवाने अति उत्सुक थयो ठे तेने हुं शा सारु वारुं? माटें नगवंते
मौन धारण कर्युं. त्यारें आज्ञा लीधा विनाज जमालीयें नगवंतथी जुद
विहार कर्यो. ते फरतो फरतो सावत्थी नगरीमां आवी पहोतो. त्यां कोइ
क चैत्यमां पांचशें यतियोनी सायें आवी ऊतर्यो. अने नगवान् श्रीमहा
वीर, चंपानगरीमां पधास्या. जमालीने अरसाहार, विरसाहार, अंताहा
र, पंताहार तथा तुह्राहारें करी शरीरनेविषे तीव्र दाहज्वर उत्पन्न थयो.
तेनी वेदना खमाय नहिं.त्यारें एक वेयावच्चकरनार यतिने कह्युं के हुं वेशी
शकतो नथी, माटे एक संथारुं पाथरो. ते सांजली यति संथारुं पाथरवा
गयो. त्यां कांइक वार लागी. तिहां सुधी जमालीथी वेदनाने लीधे वेसा
युं नहिं. तेथी वारंवार पूठवा लाग्यो के,अरे संथारुं पाथर्युं के नहिं? यति
यें कह्युं के, हा पाथर्युं. त्यारें ते त्यांथी ऊठीने ज्यां पेलो यति संथारुं पा
थरतो हतो, त्यां गयो. जुवे ठे तो हजी संथारुं पथराय ठे. तेथी पेला
यतिने कह्युं के, तें केम कह्युं जे में संथारुं पाथर्युं? यतियें कह्युं के, पाथरवा
मांम्युं, ते पाथर्युं कहेवाय. ते समयें जमालीना मनमां एवो संकल्प क
पनो के, श्रीनगवान् महावीरस्वामीयें जे करवा मांम्युं ते कीधुं, एवुं जे
वचन कहेलुं ठे, ते खोटुं ठे. जे कीधुं तेज कीधुं कहेवाय. माटे चलमा
णेचलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहि

त्मानो हित्तवंठक थयो होत, तो जगवानना "कयमाणेकडे" इत्यादिक वचन उछापत नहीं, तो इहलोकें लोकनिंदाने विषे पडत नहीं अने निन्हव कहीने लोक वगोएं करत नहिं. पण जगवंतनां वचन उछापीने निन्हव थयो,लोकोमां निंदा पाम्यो,वगोवाणो अने जगवानें कुशिष्य करी बोलाव्यो, वली संसारमां अनंता जव करशे. ए उपदेशमालानी हेयोपादेय वृत्तिमां तथा उपदेशमालानी सिद्धर्षिकृत वृत्तिमां कह्युं ठे.

ते जमालीनो जीव तिर्यंच तथा मनुष्य तथा देवताने विषे केटलाएक जवभ्रमण करीने उुरंत घणाकालें श्रीमाहाविदेहने विषे मनुष्य जन्म पामी मोक्षनगरें जाशे. ए उपदेशमालानी कर्णिकामां कह्युं ठे.

हमणां लांतकदेवलोकथी चवीने पठी तिर्यंच तथा मनुष्यने विषे पांचवार जमीने ठेहडे सम्यक्त्व पामी मोक्षप्रत्यें पामशे. इति वीरचरित्रे ॥

तथा वीरजगवाननी पुत्री महासती साधवी हती, तेणें जइने जमालीने प्रतिबोध्यो पण बुज्यो नहीं, निन्हव थयो घणीज तपस्या करी तो पण अनंतसंसार उपार्ज्यो, ए वात श्रीसोमसुंदर सूरिकृत उपदेशमालाना बालावबोधमां तथा श्रीहीरविजयसूरिप्रसादें करेला प्रश्नोत्तरसमुच्चय ग्रंथमांहे कही ठे. तथा श्रीजगवतीसूत्रानुसारें पन्नरजव संसारमां करवा कह्या ठे. इत्यादिक घणा ग्रंथोनी जूदी जूदी साख जोइने जमालीना जव आश्रयी कोइ हठ करशो मां. ज्यां जेहवो पाठ देखो,त्यां तेहवुं व्याख्यान करजो. तत्त्व तो केवलीगम्य ठे. ठेवट केवलीयें दीतुं होय अने जे केवलीयें कह्युं होय, तेज प्रमाण ठे, एम कहेजो. जेथी तूटकवारो थाय पण पोताना हृदयथी नवा अर्थ करशो नहीं, जे ए वातनेविषे हठें करीने स्वमत कदाग्रह पोषशे, ते जमालीनी पेरें दीर्घसंसार परिभ्रमण करशे. अने ते जमालीनीज पंक्तिमां वेगे गणाशे. ए त्रीजी सदहणानुं स्वरूप कह्युं.

हवे कुदृष्टि वर्जन रूप सद्दहणानो चोथो जेद बताणे ठेः–

॥ मोहिज्जइ मंदमई, कुदिठि पवणेहिं गुविल ढंढेहिं॥ दूरेण वज्जियवा, तेण इमे सुद्ध बुद्धीहिं ॥ १२ ॥ अर्थः–(मोहिज्जइ के०) मोह पमाडीयें अज्ञान मांहे पाडीयें (मंदमई के०) मंदमति एटले तुछ बुद्धिवाला जीवो प्रत्यें जे कारणमाटे जे उत्तम बुद्धिवाला जीवो ठे तेमने तो मिथ्यात्वीनी संगति लागेज नहीं जेम सर्पना मणिने सर्पनी दाढा संबंधी

लाएक मुग्ध पुरुषोने पोताना कुमतमां आणवा लाग्यो. एम घणा वर्ष सुधी निन्ह्वपणुं जोगवीने अंतसमय जाणी अणसण कर्युं. पंदर दिवसनुं अणसण पालीने पापने अणआलोए अपडिक्कमे थके काल करीने ठठा लांतक देवलोकनेविषे तेर सागरोपमने आउखे समस्त देवोमांहे ढेडनी बराबर किल्बिषी देवोमां जइ देवपणे उपनो.

गौतमस्वामीयें जमालीनुं मरण सांजली श्रीजगवान् प्रत्यें पूठ्युं के, हे जगवन्! जमाली काल करीने क्यां गयो? जगवाने कह्युं, महारो कुशिष्य जमाली लांतक देवलोकें किल्बीषी देव थयो ठे. उक्तंच ॥ जमालिणाम कुसिस्से आयरिय पडणिए, उवद्यायपडणिए, कुलपडणिए, गणपडणिए, संघपडणिए, आयरिय उवद्यायाणं अजसकारए, अवसुकारए, अप्पाणं च परंच तडुनयं च वुग्धाएमाणे, वुप्पायमाणे, बहुइं बासाइं समणं परियायं पाउणंति, पाउणित्ता, अद्धमासिआए संलेहणाए, तेसिं जत्ताइं, अणसणाए ठेदित्ता, तस्स गणस्स अणालोइय, अप्पडिकंते, कालमासे, काले किच्चा लंतए कप्पे उववसुं, जमालिणं जंते ताउ देवलोगाउ आउक्कएणं जवक्कएणं विइक्कएणं कहिंउववज्जिहंति गोयमा चत्तारि पंच तरिक्ख जोणिय मणुस्स देवजवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता तउ पञ्चा सिज्झहंति जाव अंतकरिंति ॥ इति जगवतीसूत्रे ॥

हवे जमालीना जव आश्चर्य ग्रंथांतरथी लखीयें ठेयें. "आयरियपरंपरए,ण आयगजोउ आणुपुव्वीए ॥ कोवेइ ठेयवाइ,जमालिमांसं स नासिहिं ॥ १ ॥ व्याख्याः— आचार्यनी परंपरायें अनुक्रमें आव्यो जे अर्थ ते प्रत्यें (कोवेइ के०) कूप्यति दूपयति एटले कोपतो दूषवतो कहेवो थको? तोके (ठेयवाइ के०) ठेकवादी एटले हुं माह्यो ठुं, एवुं अनिमान धरतो थको एवो जमाली नामा निन्ह्व ते नासनी पेरें कथमाणेकडे इत्यादि जगवंतना वचन उठापन करतो थको ते नाठो एटले संसारचक्रवालमांहे परिभ्रमण करवे करी अदृश्य थयो. एना दृष्टांते जे प्राणी समत कदाग्रहें करी एके वचननुं उत्सूत्र जाषण करशे (सनासिहिं के०) ते नासशे. एटले संसारचक्रवालमांहे जमशे अदृश्य थशे. इति सूयगडांगनिर्युक्तौ ॥

इव्यलिंगें करी निन्ह्वना गणनो स्वामी पोतानी राज्यश्री प्रत्यें ठांमीने माहामहोत्सव सहित दीक्षा लीधी. एवो जे जमाली ते जो आपणा आ

त्मानो हितवंछक थयो होत, तो जगवानना "कयमाणेकडे" इत्यादिक वचन उन्नापत नहीं, तो इहलोकें लोकनिंदाने विषे पडत नहीं अने निन्हव कहीने लोक वगोएं करत नहिं. पण जगवंतनां वचन उन्नापीने निन्हव थयो,लोकोमां निंदा पाम्यो,वगोवाणो अने जगवानें कुशिष्य करी बोलाव्यो, वली संसारमां अनंता जव करशे. ए उपदेशमालानी हेयोपादेय वृत्तिमां तथा उपदेशमालानी सिद्धर्षिकृत वृत्तिमां कह्युं छे.

ते जमालीनो जीव तिर्यंच तथा मनुष्य तथा देवताने विषे केटलाएक जवच्रमण करीने घुरंत घणाकालें श्रीमहाविदेहने विषे मनुष्य जन्म पामी मोक्षनगरें जाशे. ए उपदेशमालानी कर्णिकामां कह्युं छे.

हमणां लांतकदेवलोकथी चवीने पछी तिर्यंच तथा मनुष्यने विषे पांचवार जमीने छेहडे सम्यक्त्व पामी मोक्षप्रत्यें पामशे. इति वीरचरित्रे ॥

तथा वीरजगवाननी पुत्री महासती साधवी हती, तेणें जइने जमालीने प्रतिबोध्यो पण बूज्यो नहीं, निन्हव थयो घणीज तपस्या करी तो पण अनंतसंसार उपार्ज्यो, ए वात श्रीसोमसुंदर सूरिकृत उपदेशमालाना बालावबोधमां तथा श्रीहीरविजयसूरिप्रसादें करेला प्रश्नोत्तरसमुच्चय ग्रंथमांहे कही छे. तथा श्रीजगवतीसूत्रानुसारें पन्नरजव संसारमां करवा कह्या छे. इत्यादिक घणा ग्रंथोनी जूदी जूदी साख जोइने जमालीना जव आश्रयी कोइ हठ करशो मां. ज्यां जेहवो पाठ देखो,त्यां तेहवुं व्याख्यान करजो. तत्त्व तो केवलीगम्य छे. छेवट केवलीयें दीठुं होय अने जे केवलीयें कह्युं होय, तेज प्रमाण छे, एम कहेजो. जेथी तूटकवारो थाय पण पोताना हठथी नवा अर्थ करशो नहीं, जे ए वातनेविषे हठें करीने स्वमत कदाग्रह पोषशे, ते जमालीनी पेठें दीर्घसंसार परिच्रमण करशे. अने ते जमालीनीज पंक्तिमां बेठो गणाशे. ए त्रीजी सद्दहणानुं स्वरूप कह्युं.

हवे कुदृष्टि वर्जन रूप सद्दहणानो चोथो जेद वखाणे छेः—

॥ मोहिऊइ मंदमई, कुदिछि पयएहिं गुविल छंडेहिं॥ दूरेण वज्जियवा, तेण इमे सुद्ध बुद्धीहिं ॥ १२ ॥ अर्थः—(मोहिऊइ के०) मोह पमाडीयें अज्ञान मांहे पाडीयें (मंदमई के०) मंदमति एटले तुच्छ बुद्धिवाला जीवो प्रत्यें जे कारणमाटे जे उत्तम बुद्धिवाला जीवो छे तेमने तो मिथ्यात्वीनी संगति लागेज नहीं जेम सर्पना मणिने सर्पनी दाढा संबंधी

लाएक मुग्ध पुरुषोने पोताना कुमतमां आणवा लाग्यो. एम घणा वर्ष सुधी निन्हवपणुं नोगवीने अंतसमय जाणी अणसण कर्युं. पंदर दिवसनुं अणसण पालीने पापने अणआलोए अपडिक्कमे थके काल करीने छठ्ठा लांतक देवलोकनेविषे तेर सागरोपमने आउखे समस्त देवोमांहे हेठली बराबर किल्बिषी देवोमां जइ देवपणे उपनो.

गौतमस्वामीयें जमालीनुं मरण सांजली श्रीनगवान् प्रत्यें पूछयुं के, हे नगवन्! जमाली काल करीने क्यां गयो? नगवाने कह्युं, म्हारो कुशिष्य जमाली लांतक देवलोकें किल्बीषी देव थयो ले. उक्तंच ॥ जमालिणाम कु सिस्से आयरिय पडणिए, उवयायपडणिए, कुलपडणिए, गणपडणिए, संघपडणिए, आयरिय उवयायाणं अजसकारए, अवणकारए, अप्पाणं च परंच तदुनयं च वुग्गाएमाणे, वुप्पायमाणे, बहुइं वासाइं समणं परियागं पाउणंति, पाउणित्ता, अद्धमासियाए संलेहणाए, तेसिं नत्ताइं, अणसणाए छेदित्ता,तस्स ठाणस्स अणालोइय, अप्पडिकंते, कालमासे, काले किच्चा लंतए कप्पे उववणे, जमालिणं नंते ताउ देवलोगाउ आउक्कएणं नवक्कएणं ठिइक्कएणं कहिंउववज्जिहंति गोयमा चत्तारि पंच तरिक्ख जोणिय मणुस्स देवनवग्गहणाइं संसारं अणुपरियद्दित्ता तउ पच्चा सिज्झहंति जाव अंतकरिंति ॥ इति नगवतीसूत्रे ॥

हवे जमालीना नव आश्रयी ग्रंथांतरथी लखीयें लैयें. " आयरियपरंपरए,ण आयगनोउ आणुपुव्वीए ॥ कोवेइ छेयवाइ,जमालिनामंस नासिहि ॥ १ ॥ व्याख्याः– आचार्यनी परंपरायें अनुक्रमें आव्यो जे अर्थ ते प्रत्यें (कोवेइ के०) कूप्यति दूषयति एटले कोपतो दूषयतो करेतो थको? तोहे (छेयवाइ के०) लेकवादी एटले हुं माहो छुं, एवं अनिमान धरतो थको एवो जमाली नामा निन्हव ते नासनी पेरें कयमाणेकडे इत्यादि नगवंतना वचन उछापन करतो थको ते नाशो एटले संसारचक्रवालमांहे परिभ्रमण करवे करी अदृश्य थयो. एना दृष्टांते जे प्राणी समत कदाग्रहें करी एक वचननुं तत्सूत्र नाषण करशे (सनासिहि के०) ते नासशे. एटले संसारचक्रवालमांहे नमशे अदृश्य थशे. इति सूयगडांगनिर्युक्ती ॥

इत्यादिकें करी निन्हवना गणनो नाशी पोतानी राज्यथी प्रत्यें आर्मना माहामहोत्सव सहित दीक्षा लीधी. एवो ने जमाली ते जो आवया आ

त्मानो हितवंछक थयो होत, तो जगवानना " कयमाणेकडे " इत्यादिक वचन उथापत नहीं, तो इहलोकें लोकनिंदाने विषे पडत नहीं अने निन्हव कहीने लोक वगोएं करत नहिं. पण जगवंतनां वचन उथापीने निन्हव थयो,लोकोमां निंदा पाम्यो,वगोवाणो अने जगवानें कुशिष्य करी बोलाव्यो, वली संसारमां अनंता नव करशे. ए उपदेशमालानी हेयोपादेय वृत्तिमां तथा उपदेशमालानी सिद्धर्षिकृत वृत्तिमां कह्युं छे.

ते जमालीनो जीव तिर्यंच तथा मनुष्य तथा देवताने विषे केटलाएक जवभ्रमण करीने छेवट घणाकालें श्रीमहाविदेहने विषे मनुष्य जन्म पामी मोक्षनगरें जाशे. ए उपदेशमालानी कर्णिकामां कह्युं छे.

इमणां लांतकदेवलोकथी चवीने पछी तिर्यंच तथा मनुष्यने विषे पांचवार जमीने छेहडे सम्यक्त्व पामी मोक्षप्रत्यें पामशे. इति वीरचरित्रे ॥

तथा वीरजगवाननी पुत्री महासती साधवी हती, तेणें जइने जमालीने प्रतिबोध्यो पण बुज्यो नहीं, निन्हव थयो पणीज तपस्या करी तो पण अनंतसंसार उपार्ज्यो, ए वात श्रीसोमसुंदर सूरिकृत उपदेशमालाना बालावबोधमां तथा श्रीहीरविजयसूरिप्रसादें करेला प्रश्नोत्तरसमुच्चय ग्रंथमांहे कही छे. तथा श्रीजगवतीसूत्रानुसारें पन्नरजव संसारमां करवा कह्या छे. इत्यादिक घणा ग्रंथोनी जूदी जूदी साख जोइने जमालीना जव आश्रयी कोइ हठ करशो मां. ज्यां जेहवो पाठ देखो,त्यां तेहवुं व्याख्यान करजो. तत्त्व तो केवलीगम्य छे. छेवट केवलीयें दीठुं होय अने जे केवलीयें कह्युं होय, तेज प्रमाण छे, एम कहेजो. जेथी त्रूटकवारो थाय पण पोताना हठथी नवा अर्थ करशो नहीं, जे ए वातनेविषे हठ करीने स्वमत कदाग्रह पोषशे, ते जमालीनी पेठें दीर्घसंसार परिभ्रमण करशे. अने ते जमालीनीज पंक्तिमां बेठो गणाशे. ए त्रीजी सद्दहणानुं स्वरूप कह्युं.

हवे कुदृष्टि वर्ज्जन रूप सद्दहणानो चोथो जेद वखाणे छेः—

॥ मोहिज्जइ मंदमई, कुदिठि पयणेहिं गुविल टंटेहिं॥ दूरेण वज्जियवा, तेण इमे सुद्ध बुद्धीहिं ॥ १२ ॥ अर्थः—(मोहिज्जइ के०) मोह पमाडीयें अज्ञान मांहे पाडीयें (मंदमई के०) मंदमति एटले तुछ बुद्धिवाला जीवो प्रत्यें जे कारणमाटे जे उत्तम बुद्धिवाला जीवो छे तेमने तो मिथ्यात्वीनी संगति करवीज नहीं जेम सर्पना मणिने सर्पनी दाढा संबंधी

लाएक मुग्ध पुरुषोने पोताना कुमतमां आणवा लाग्यो. एम घणा ... सुधी निन्ह्वपणुं नोगवीने अंतसमय जाणी अणसण कयुं. पंदर दिवसनुं अणसण पालीने पापने अणआलोए अपडिक्कमे थके काल करीने छठ्ठा लांतक देवलोकनेविषे तेर सागरोपमने आउखे समस्त देवोमांहे ढेडनी बराबर किल्बिषी देवोमां जइ देवपणे उपनो.

गौतमस्वामीयें जमालीनुं मरण सांनली श्रीनगवान् प्रत्यें पूछ्युं के, हे नगवन्! जमाली काल करीने क्यां गयो? नगवाने कह्युं, मह्हारो कुशिष्य जमाली लांतक देवलोकें किल्बीषी देव थयो छे. उक्तंच ॥ जमालिणाम कु सिस्से आयरिय पडणिए, उवश्रायपडणिए, कुलपडणिए, गणपडणिए, सं घपडणिए, आयरिय उवश्रायाणं अजसकारए, अवसुकारए, अप्पाणं च परंच तडुनयं च वुग्गाएमाणे, वुप्पायमाणे, बहुइं वासाइं समणं परियायं पाउणंति, पाउणित्ता, अद्धमासियाए संलेहणाए, तेसिं नत्ताइं, अणसणा ए छेदित्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइय, अप्पडिक्कंते, कालमासे, काले किच्चा लंतए कप्पे उववसुं, जमालिणं नंते ताउ देवलोगाउ आउरकएणं नवरक एणं विइरकएणं कहिंउववज्जिहंति गोयमा चत्तारि पंच तरिरक जोणिय मणुस्स देवनवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता तउ पडा सिज्जहंति जाव अंतकरिंति ॥ इति नगवतीसूत्रे ॥

हवे जमालीना नव आश्रयी ग्रंथांतरथी लखीयें छैयें. "आयरियप परए,ण आयगजोउ आणुपुवीए ॥ कोवेइ छेयवाइ,जमालिमांसं स नासिहि ॥ १ ॥ व्याख्याः– आचार्यनी परंपरायें अनुक्रमें आव्यो जे अर्थ ते प्रत्यें (कोवेइ के०) कूप्यति दूपयति एटले कोपतो दूपवतो कहेवो थको? तोवे (छेयवाइ के०) छेकवादी एटले हुं माह्यो छुं, एवुं अनिमान धरतो थको एवो जमाली नामा निन्ह्व ते नासनी पेरें कयमाणेकडे इत्यादि नगवंत ना वचन उत्थापन करतो थको ते नाठो एटले संसारचक्रवालमांहे परि भ्रमण करवे करी अदृश्य थयो. एना दृष्टांते जे प्राणी स्वमत कदाग्रहें करी एके वचननुं उत्सूत्र नाषण करशे (सनासिहिं के०) ते नासशे. एटले सं सारचक्रवालमांहे नमशे अदृश्य थशे. इति सूयगडांगनिर्युक्तौ ॥

इव्यलिंगें करी निन्ह्वना गणनो स्वामी पोतानी राज्यश्री प्रत्यें छांमीने माहामहोत्सव सहित दीक्षा लीधी. एवो जे जमाली ते जो आपणा आ

त्मानो हितवंछक थयो होत, तो नगवानना " कयमाणेकडे " इत्यादिक वचन उत्थापत नहीं, तो इहलोकें लोकनिंदाने विषे पडत नहीं अने निन्हव कहीने लोक वगोएं करत नहिं. पण नगवंतनां वचन उत्थापीने निन्हव थयो,लोकोमां निंदा पाम्यो,वगोवाणो अने नगवानें कुशिष्य करी वोलाव्यो, वली संसारमां अनंता नव करशे. ए उपदेशमालानी हेयोपादेय वृत्तिमां तथा उपदेशमालानी सिद्धर्षिकृत वृत्तिमां कह्युं छे.

ते जमालीनो जीव तिर्यंच तथा मनुष्य तथा देवताने विषे केटलाएक नवभ्रमण करीने डुरंत घणाकालें श्रीमाहाविदेहने विषे मनुष्य जन्म पामी मोक्षनगरें जाशे. ए उपदेशमालानी कर्णिकामां कह्युं छे.

हमणां लांतकदेवलोकथी चवीने पछी तिर्यंच तथा मनुष्यने विषे पांचवार नमीने छेहडे सम्यक्त्व पामी मोक्षप्रत्यें पामशे. इति वीरचरित्रे ॥

तथा वीरनगवाननी पुत्री महासती साधवी हती, तेणें जइने जमालीने प्रतिबोध्यो पण बूज्यो नहीं, निन्हव थयो घणीज तपस्या करी तो पण अनंतसंसार उपार्ज्यो, ए वात श्रीसोमसुंदर सूरिकृत उपदेशमालाना बालावबोधमां तथा श्रीहीरविजयसूरिप्रसादें करेला प्रश्नोत्तरसमुच्चय ग्रंथमांहे कही छे. तथा श्रीनगवतीसूत्रानुसारें पन्नरनव संसारमां करवा कह्या छे. इत्यादिक घणा ग्रंथोनी जूदी जूदी साख जोइने जमालीना नव थाश्चर्यी कोइ हठ करशो मां. ज्यां जेहवो पाठ देखो,त्यां तेहवुं व्याख्यान करजो. तत्त्व तो केवलीगम्य छे. छेवट केवलीयें दीठुं होय अने जे केवलीयें कह्युं होय, तेज प्रमाण छे, एम कहेजो. जेथी त्रूटकवारो थाय पण पोताना हृदयथी नवा अर्थ करशो नहीं, जे ए वातनेविषे हठें करीने स्वमत कदाग्रह पोषशे, ते जमालीनी पेठें दीर्घसंसार परिभ्रमण करशे. अने ते जमालीनीज पंक्तिमां बेठो गणाशे. ए त्रीजी सद्दहणानुं स्वरूप कह्युं.

हवे कुदृष्टि वर्जन रूप सद्दहणानो चोथो नेद वखाणे छेः—

॥ मोहिज्जइ मंदमई, कुदिट्ठि पयणेहिं गुविल ढंढेहिं ॥ दूरेण वज्जियवा, तेण इमे सुद्ध बुद्धीहिं ॥ १२ ॥ अर्थः—(मोहिज्जइ के०) मोह पमाडीयें अज्ञान मांहे पाडीयें (मंदमई के०) मंदमति एटले तुछ बुद्धिवाला जीवो प्रत्यें जे कारणमाटे जे उत्तम बुद्धिवाला जीवो छे तेमने तो मिथ्यात्वीनी संगति लागेज नहीं जेम सर्पना मणिने सर्पनी दाढा संबंधी

लाएक मुग्ध पुरुषोने पोताना कुमतमां श्रापवा लाग्यो. एम घणा दां सुधी निन्हवपणुं नोगवीने अंतसमय जाणी अणसण कर्युं. पंदर दिवसनुं अणसण पालीने पापने अणश्रालोए अपडिक्कमे थके काल करीने छठ लांतक देवलोकनेविषे तेर सागरोपमने श्रावखे समस्त देवोमांहे ढेडनी बराबर किल्बिषी देवोमां जइ देवपणे उपनो.

गोतमस्वामीयें जमालीनुं मरण सांनली श्रीनगवान् प्रत्यें पूढ्युं के, हे नगवन्! जमाली काल करीने क्यां गयो? नगवाने कह्युं, म्हारो कुशिष्य जमाली लांतक देवलोकें किल्बीषी देव थयो ढे. उक्तंच ॥ जमालिणाम कु सिस्से श्रायरिय पडणिए, उवद्यायपडणिए, कुलपडणिए, गणपडणिए, सं घपडणिए, श्रायरिय उवद्यायाणं अजसकारए, अवसकारए, अप्पाणं च परंच तडुनयं च वुग्गाएमाणे, वुप्पायमाणे, बहुइं वासाइं समणं परियागं पाउणंति, पाउणित्ता, अद्धमासिश्राए संलेहणाए, तेसिं नत्ताइं, अणसणा ए ढेदित्ता, तस्स गणस्स अणालोइय, अप्पडिकंते, कालमासे, काले किञा लंतए कप्पे उववरणे, जमालिणं नंते ताउ देवलोगाउ श्राउक्खएणं नवक्ख एणं ठिइक्खएणं कहिंउववज्जिहंति गोयमा चत्तारि पंच तरिक्ख जोणिय मणुस्स देवनवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता तउ पत्ना सिज्जहिंति जाव अंतकरिंति ॥ इति नगवतीसूत्रे ॥

हवे जमालीना नव थाश्रयी ग्रंथांतरथी लखीयें ढेयें. " श्रायरियपरं परए,ण श्रायगजोउ श्राणुपुव्वीए ॥ कोवेइ ढेयवाइ,जमालिमांसं स नासिहि ॥ १ ॥ व्याख्याः– श्राचार्यनी परंपरायें अनुक्रमें श्राव्यो जे अर्थ ते प्रत्यें (कोवेइ के०) कूप्यति दूषयति एटले कोपतो दूषवतो कहेवो थको? तथा (ढेयवाइ के०) ढेकवादी एटले हुं माहो छुं, एवुं अनिमान धरतो थको एवो जमाली नामा निन्हव ते नासनी पेरें कथमाणोकडे इत्यादि नगवंत ना वचन उत्थापन करतो थको ते नाशो एटले संसारचक्रवालमांहे परि भ्रमण करवे करी अदृश्य थयो. एना दृष्टांते जे प्राणी समत कडामहे करी एके वचननुं उत्सूत्र नाषण करशे (सनासिहि के०) ते नासशे. एटले सं सारचक्रवालमांहे नमशे अदृश्य थशे. इति सूयगडांगनिर्युक्तौ ॥

इन्द्रजिते करी निन्हवना गणनो स्वामी पोतानी राज्यश्री प्रत्यें ढांडी नाहामहोत्सव सहित दीक्षा लीधी. एवो जे जमाली ते जो श्रापणा

रमानो हित्तवंठक पयो होत, तो जगवानना "कयमाणेकडे" इत्यादिक वचन उछापत नहीं, तो इहलोकें लोकनिंदाने विषे पडत नहीं अने निन्ह्व कहीने लोक वगोएं करत नहिं. पण जगवंतनां वचन उछापीने निन्ह्व पयो,लोकोमां निंदा पाम्यो,वगोवाणो अने जगवानें कुशिष्य करी वोलाव्यो, वली संसारमां अनंता जव करशे. ए उपदेशमालानी हेयोपादेय वृत्तिमां तथा उपदेशमालानी सिद्धर्षिकृत वृत्तिमां कह्युं ठे.

ते जमालीनो जीव तिर्यंच तथा मनुष्य तथा देवताने विषे केटलाएक जवभ्रमण करीने थुरंत पणाकालें श्रीमहाविदेहने विषे मनुष्य जन्म पामी मोक्षनगरें जाशे. ए उपदेशमालानी कर्णिकामां कह्युं ठे.

हमणां लांतकदेवलोकथी चवीने पढी तिर्यंच तथा मनुष्यने विषे पांचवार जमीने ठेहडे सम्यक्त्व पामी मोक्षप्रत्यें पामशे. इति वीरचरित्रे ॥

तथा वीरजगवाननी पुत्री महासती साधवी हती, तेणें जइने जमालीने प्रतिबोध्यो पण बूझ्यो नहीं, निन्ह्व पयो पणीज तपस्या करी तो पण अनंतसंसार उपार्ज्यो, ए वात श्रीसोमसुंदर सूरिकृत उपदेशमालाना बालावबोधमां तथा श्रीहीरविजयसूरिप्रसादें करेला प्रश्नोत्तरसमुच्चय ग्रंथमांहे कही ठे. तथा श्रीजगवतीसूत्रानुसारें पन्नरजव संसारमां करवा कह्या ठे. इत्यादिक पणा ग्रंथोनी जुदी जुदी साख जोइने जमालीना जव आश्रयी कोइ हठ करशो मां. ज्यां जेहवो पाठ देखो,त्यां तेहवुं व्याख्यान करजो. तत्त्व तो केवलीगम्य ठे. ठेवट केवलीयें दीठुं होय अने जे केवलीयें कह्युं होय, तेज प्रमाण ठे, एम कहेजो. जेथी त्रूटकवारो थाय पण पोताना हठथी नवा अर्थ करशो नहीं, जे ए वातनेविषे हठे करीने स्वमत कदाग्रह पोषशे, ते जमालीनी पेठें दीर्घसंसार परिज्रमण करशे. अने ते जमालीनीज पंक्तिमां वेठो गणाशे. ए त्रीजी सद्दहणानुं स्वरूप कह्युं.

हवे कुदृष्टि वर्जन रूप सद्दहणानो चोथो जेद वखाणे ठेः—

॥ मोहिज्जइ मंदमई, कुदिठि पयणेहिं गुविल ठंदेहिं॥ दूरेण वज्जियवा, तेण इमे सुद्ध बुद्धीहिं ॥ १२ ॥ अर्थः-(मोहिज्जइ के०) मोह पमाडीयें अज्ञान मांहे पाडीयें (मंदमई के०) मंदमति एटले तुछ बुद्धिवाला जीवो सर्वे जे कारणमाटे जे उनम बुद्धिवाला जीवो ठे तेमने तो निथ्यात्वीनी संगति लागेज नहीं जेम सर्पना मणिने सर्पनी दाढा संबंधी

लाएक मुग्ध पुरुषोने पोताना कुमतमां आणवा लाग्यो. एम घणा सुधी निन्ह्वपणुं नोगवीने अंतसमय जाणी अणसण कर्युं. पंदर दि. अणसण पालीने पापने अणआलोए अपडिक्रमे थके काल करीने लांतक देवलोकनेविषे तेर सागरोपमने आउखे समस्त देवोमांहे ढे बराबर किल्बिषी देवोमां जइ देवपणे उपनो.

गौतमस्वामीयें जमालीनुं मरण सांनली श्रीनगवान् प्रत्यें पूब्युं के, हे नगवन्! जमाली काल करीने क्यां गयो? नगवाने कह्युं, मह्रारो कुशिष्य जमाली लांतक देवलोकें किल्बीषी देव थयो ठे. उक्तंच ॥ जमालिणाम सिस्से आयरिय पडणिए, उवद्यायपडणिए, कुलपडणिए, गणपडणिए, संघपडणिए, आयरिय उवद्यायाणं अजसकारए, अवस्रकारए, अप्पाणं च परंच तडुनयं च वुग्घाएमाणे, वुप्पायमाणे, बहुई वासाइं समणं परियार्ग पाउणंति, पाउणित्ता, अद्धमासिआए संलेहणाए, तेसिं नत्ताइं, अणसणा ए ढेदित्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइय, अप्पडिकंते, कालमासे, काले किञ्चा लंतए कप्पे उववसुं, जमालिणं नंते ताउ देवलोगाउ आउरकएणं नवरक एणं विइरकएणं कह्विववज्जिहंति गोयमा चत्तारि पंच तरिरक जोणिय मणुस्स देवनवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता तउ पद्मा सिज्झहंति जाव अंतकरिंति ॥ इति नगवतीसूत्रे ॥

हवे जमालीना नव आश्रयी ग्रंथांतरथी लखीयें ठेयें. "आयरियपरं परए,ण आयगजोउ आणुपुब्वीए ॥ कोवेइ छेयवाइ,जमालिमांसं स नासिहिं ॥ १ ॥ व्याख्याः– आचार्यनी परंपरायें अनुक्रमें आव्यो जे अर्थ ते प्रत्यें (कोवेइ के०) कूप्यति दूषयति एटले कोपतो दूषवतो कहेवो थको? तोके (छेयवाइ के०) ढेकवादी एटले हुं माह्यो बुं, एवुं अनिमान धरतो थको एवो जमाली नामा निन्ह्व ते नासनी पेरें कयमाणेकडे इत्यादि नगवंत ना वचन उछापन करतो थको ते नाठो एटले संसारचक्रवालमांहे परि. भ्रमण करवे करी अदृश्य थयो. एना दृष्टांते जे प्राणी स्वमत कदाग्रहें करी एके वचननुं उत्सूत्र नाषण करशे (सनासिहिं के०) ते नासशे. एटले सं सारचक्रवालमांहे नमशे अदृश्य थशे. इति सूयगडांगनिर्युक्तौ ॥

इव्यलिंगें करी निन्ह्वना गणनो स्वामी पोतानी राज्यश्री प्रत्यें ठांमीने माहामहोत्सव सहित दीक्षा लीधी. एवो जे जमाली ते जो आपणा आ

पुप्फशुक कुलपतिने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामिन्! कोइ एक रू
वार अतिथि आपणी पासें आवे छे, माटे आसन आपो. खान
प्यार करी एनी परोणागत करो. ते सांजली तापस सावधान थ
ताने आसन आपी आगल वनफलादिक मूक्यां. राजा वनफल आ
स्वस्थ थइ पछी बेहु सूडाना बोलवामां महोटो तफावत जाणी आ
पाम्यो थको पूछवा लाग्यो. के तमें बेहु सूडा सरखा देखाउ छो. तेम
गुण दोषमां एवडो श्यो अंतर पड्यो? ते सांजली पुप्फशुक कहेवा
के हे राजन्! अमारा माता पिता एकज छे, साथेंज जन्म्या छेयें,
तेणे रात्रिदिवस चोरोनी संगति करी छे,अने मने तापसोनी संगत छे.
जेवी संगत तेवी बुद्धि थाय छे,ते वचन सांजली राजा हर्ष पाम्यो,ए
मां राजानुं लश्कर पण त्यां आवी पहोच्युं, पछी राजा तापसो पा
रजा मागी पोतानी नगरीयें आव्यो, अने संगतने लीधे दोष गुण
तेनी प्रशंसा करवा लाग्यो. इति कथा ॥ ए सुविहित शुद्ध प्ररूपकना
थी शास्त्र सांजलवां पण अन्य दर्शनीउना कुशास्त्र सांजलवां नहिं.
ो सद्दहणानो चोथो नेद दृष्टांतसहित कह्यो ॥

इतिश्रीतपागछालंकार नट्टारक श्रीहीरविजयसूरीश्वर पट्टालंकार श्रीवि
यसेनसूरीश्वर पट्टप्राजाविक श्रीविजयदेवसूरि विजयमानराज्ये महो
ध्याय श्रीसकलचंद्रगणिशिष्य श्रीजंबूद्वीप प्रज्ञप्तिउपांगवृत्तिकारक महो
ध्याय श्रीशांतिचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिनिः श्रीसम्यक्त्व
नाधिष्ठान श्रीसूर्यपुरादि चतुर्विधसंघस्य चतुर्दशाष्टम्यादिपर्वसु अप्रमत्त
पपौषध प्रतिपालनार्थे विरचिते श्रीसम्यक्त्वप्रकाशिनामनि श्रीसम्य
सत्ततिप्रकरणबालावबोधे चतुर्नेदश्रद्धानस्वरूपनिरूपणनामा प्रथमोऽ
रकारः संपूर्णः ॥ १ ॥

हवे समकेतना त्रण लिंग कहे छेः—

॥ सा,अणुराउ धम्म साहणे परमो॥ जिणेव गुरु वेया
न लिंगाइ ॥ १३ ॥ अर्थः—प्रथम (परमागम सुस्सू
ट आगमने विषे शुश्रूषा एटले सांजलवानी वांछा होय
भइ, सुणेइ गिण्हईय एयावि ॥ तत्तो अपोह एवा,
यदागमः ॥ सवणे नाणेय विन्नाणे,पच्चक्खाणेय सं

जे विष छे, तेनी संगति लागेज नहिं. सद्दामुं विषने उतारी नाखे, परंतु के टला एक जीव वस्त्र सरिखा छे ते जेम वस्त्रने जेहवा रंगमां नाखीयें ते वो रंग लागी जाय. तेम केटला एक मनुष्यो पण वस्त्रनी पेठेंज " ज गया तड रंगिआ " एटले ज्यां गया त्यां रंगाइ जाय, एवा छे. तेमने मो ह पमाडीयें, ते शेणें करी मोह पमाडीयें ? तो के (कुदिठिवयणेहिं के०) कुदृष्टि जे मिथ्यादृष्टि त्रणशें त्रेशठ पाखंमीयो छे, तेमने वचनें करी ॥ य तः ॥ असिइसयं किरियाणं, अकिरिय वाईण होइ चुलसीई ॥ अन्नाणिय सत्तठी, वेणइयाणं तु बत्तीसा ॥ १ ॥ अथवा कुदृष्टिनां वचन जे रामायण नारतादिक शास्त्रें करी मुग्धमति जीवोने मोह पमाडीयें, तेने आगम शास्त्र सांनळतां मीठां न लागे अने कुशास्त्र सांनळवाने जजाता जाय.

ते कुदृष्टिनां वचन कहेवां छे ? तो के (गुविलढंढेहिं के०) गहन गहनांतर कपटनां प्रतिपादक छे, जे शास्त्रोमां पूर्वापर संबंध मळे नहिं एवा वचनोनी रचना करेली छे, एवां छे माटे ते जीवने मिथ्यात्वमां पा डे, तेथी ते कुदृष्टिनां वचन (दूरेण वज्जियवा के०) दूरथी वर्जवां. अर्थात् सांनळवां नहीं. उक्तं च उपदेशमालायां ॥ आलावो संलावो, विसंनो सं थवो पसंगो य ॥ हीणायारेहिं समं, सबजिणंदेहिं पडिकुठो ॥ १ ॥ (तेण के०) ते कारणमाटे (इमे के०) ए कुदृष्टिनां वचन जे छे, तेने (सुद्ध बुद्धीहिं के०) शुद्ध एटले निर्मळ बुद्धिवाळा जीवें, सांनळवां नहिं ए सद दहणानो चोथो नेद कह्यो ॥ १२ ॥

हवे एनी उपर गिरिशुक अने पुष्प शुकनो दृष्टांत कहे छेः–

॥ कादंबरी अटवीमां वटवृक्ष उपर सूडानां वे बच्चां हतां, ते वेहु सहो दर हतां, तेमांथी एक बच्चाने निल्ल लइ गयो ते पर्वतनी पालीमां वध्युं. ते नणी तेनुं गिरिशुक नाम थयुं. अने बीजुं तापसें लीधुं ते तापसोनी पुष्प वाडीमां मोटुं थयुं तेथी तेनुं नाम पुष्पशुक पाडयुं. एकदा वसंत पुरनो स्वामी कनकध्वज घोडायें अपहर्यो थको अटवीमां आव्यो, ते राजाने देखी निल्लनो पाळेलो शुक बोल्यो के, अरे निल्लो दुसीयार थाओ. कोइक अमगार मोटा आनरणें अलंकृत थको एकलो जाय छे, माटे तेने लूंटो, मारो, फाटो. ते वचन सांनळी राजा जयत्रांत थयो थको घोडाने वनारतो नलानो आगन तापसोने आश्रमें आव्यो, तेने दूरथी आव

तो देखी पुष्पशुक कुलपतिने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामिन्! कोइ एक रू डो असवार अतिथि आपणी पासें आवे ठे, माटे आसन आपो. खान पान तैय्यार करी एनी परोणागत करो. ते सांजली तापस सावधान थ या. राजाने आसन आपी आगल वनफलादिक मूक्यां. राजा वनफल खा रोगी स्वस्थ थइ पठी बेहु सूडाना बोलवामां महोटो तफावत जाणी आ श्चर्य पाम्यो थको पूठवा लाग्यो. के तमें बेहु सूडा सरखा देखाउं ठो. तेम ठतां गुण दोषमां एवडो श्यो अंतर पड्यो ? ते सांजली पुष्पशुक कहेवा लाग्यो के हे राजन्! अमारा माता पिता एकज ठे, साथेंज जन्म्या ठैयें, पण तेणे रात्रिदिवस चोरोनी संगति करी ठे,अने मने तापसोनी संगत ठे. माटे जेवी संगत तेवी बुद्धि थाय ठे,ते वचन सांजली राजा हर्ष पाम्यो,ए टलामां राजानुं लश्कर पण त्यां आवी पहोच्युं, पठी राजा तापसो पा सेंथी रजा मागी पोतानी नगरीयें आव्यो, अने संगतने लीधे दोष गुण प्राप्तिनी प्रशंसा करवा लाग्यो. इति कथा ॥ ए सुविहित शुद्ध प्ररूपकना मुखथी शास्त्र सांजलवां पण अन्य दर्शनीउंना कुशास्त्र सांजलवां नहिं. एवो सद्दहणानो चोथो नेद दृष्टांतसहित कह्यो ॥

इतिश्रीतपागछालंकार नट्टारक श्रीहीरविजयसूरीश्वर पट्टालंकार श्रीवि जयसेनसूरीश्वर पट्टप्राजाविक श्रीविजयदेवसूरि विजयमानराज्ये महो पाध्याय श्रीसकलचंद्रगणिशिष्य श्रीजंबूद्वीप प्रज्ञप्तिउपांगवृत्तिकारक महो पाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिनिः श्रीसम्यक्त्व रत्नाधिष्ठान श्रीसूर्यपुरादि चतुर्विधसंघस्य चतुर्दशाष्टम्यादिपर्वसु अप्रमत्त तपपोषथ प्रतिपालनार्थं विरचिते श्रीसम्यकूरत्नप्रकाशिनामनि श्रीसम्य क् सप्ततिप्रकरणबालावबोधे चतुर्नेदश्रद्धानस्वरूपनिरूपणनामा प्रथमोऽ धिकारः संपूर्णः ॥ १ ॥

हवे समकेतना त्रण लिंग कहे ठेः–

॥ परमागम सुस्सूसा,अणुराउ धम्म साहणे परमो ॥ जिणेव गुरु वेया वच्चे, नियमो सम्मत लिंगाइ ॥ १३ ॥ अर्थः–प्रथम (परमागम सुस्सू सा के०) परम प्रकृष्ट आगमने विषे शुश्रूषा एटले सांजलवानी वांछा होय यतः ॥ सुस्सूसइ पडिपुछइ, सुणेइ गिएहईय एयावि ॥ तत्तो अपोह एवा, धारेइ करेइ वा सम्मं ॥ यदागमः ॥ सवणे नाणेय विन्नाणे,पच्चस्काणेय सं

जे विष छे, तेनी संगति लागेज नहिं. सहासुं विषने उतारी नाखे, परंतु केटला एक जीव वस्त्र सरिखा छे ते जेम वस्त्रने जेहवा रंगमां नाखीयें तेवो रंग लागी जाय. तेम केटला एक मनुष्यो पण वस्त्रनी पेठेंज "जह गया तह रंगिआ" एटले ज्यां गया त्यां रंगाइ जाय, एवा छे. तेमने मोह पमाडीयें, ते शेणें करी मोह पमाडीयें ? तो के (कुदिछिवयणेहिं के०) कुदृष्टि जे मिथ्यादृष्टि त्रणशें त्रेशठ पाखंमीयो छे, तेमने वचनें करी ॥ यतः ॥ असिइसयं किरियाणं, अकिरिय वाईण होइ चुलसीई ॥ अन्नाणिय सत्तठी, वेणइयाणं तु बत्तीसा ॥ १ ॥ अथवा कुदृष्टिनां वचन जे रामायण भारतादिक शास्त्रें करी मुग्धमति जीवोने मोह पमाडीयें, तेने आगम शास्त्र सांभळतां मीठां न लागे अने कुशास्त्र सांभळवाने उजाता जाय.

वळी ते कुदृष्टिनां वचन केहेवां छे ? तो के (गुविलढंढेहिं के०) गहन गह्नांतर कपटनां प्रतिपादक छे, जे शास्त्रोमां पूर्वापर संबंध मळे नहिं एवा वचनोनी रचना करेली छे, एवां छे माटे ते जीवने मिथ्यात्वमां पाडे, तेथी ते कुदृष्टिनां वचन (दूरेण वज्जियवा के०) दूरथी वर्जवां. अर्थात् सांभळवां नहीं. उक्तं च उपदेशमालायां ॥ आलावो संलावो, विसंभो संथवो पसंगो य ॥ हीणायारेहि समं, सवजिणंदेहि पडिकुट्ठो ॥ १ ॥ (तेण के०) ते कारणमाटे (इमे के०) ए कुदृष्टिनां वचन जे छे, तेने (सुद्ध बुद्धीहिं के०) शुद्ध एटले निर्मळ बुद्धिवाळा जीवें, सांभळवां नहिं ए सद्दहणानो चोथो भेद कह्यो ॥ १२ ॥

हवे एनी उपर गिरिशुक अने पुष्प शुकनो दृष्टांत कहे छेः-

॥ कादंबरी अटवीमां वटवृक्ष उपर सुडानां बे बच्चां हतां, ते बेहु सहोदर हतां, तेमांथी एक बच्चाने भिल्ल लइ गयो ते पर्वतनी पालीमां वध्युं. ने तेथी तेनुं गिरिशुक नाम थयुं. अने बीजुं तापसें लीधुं ते तापसोनी पुष्प वाडीमां म्होटुं थयुं तेथी तेनुं नाम पुष्पशुक पाड्युं. एकदा वसंतपुरनो स्वामी वक्रशिक्षित घोडायें अपहर्यो थको अटवीमां आव्यो, ते राजाने देखी भिल्लनां पालेलो शुक बोल्यो के, अरे भिल्लो हुशीयार थाओ. कोइक असवार कडां आभरणें अलंकृत थको एकलो जाय छे, माटे तेने लूंटो, मारो, बांधो. ए वचन सांभळी राजा भयभ्रांत थयो थको घोडाने त्वरालो चलावतो आगळ तापसोंने आश्रमें आव्यो, तेने दूरथी आव

तो देखी पुष्पशुक कुलपतिने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामिन्! कोइ एक रू डो असवार अतिथि आपणी पासें आवे छे, माटे आसन आपो. खान पान तैय्यार करी एनी परोणागत करो. ते सांजली तापस सावधान थ या. राजाने आसन आपी आगल वनफलादिक मूक्यां. राजा वनफल आ रोगी स्वस्थ थइ पछी बेहु सूडाना बोलवामां महोटो तफावत जाणी आ श्चर्य पाम्यो थको पूछवा लाग्यो. के तमें बेहु सूडा सरखा देखाउ छो. तेम छतां गुण दोषमां एवडो श्यो अंतर पड्यो ? ते सांजली पुष्पशुक कहेवा लाग्यो के हे राजन्! अमारा माता पिता एकज छे, सार्थेज जन्म्या छेयें, पण तेणे रात्रिदिवस चोरोनी संगति करी छे,अने मने तापसोनी संगत छे. माटे जेवी संगत तेवी बुद्धि थाय छे,ते वचन सांजली राजा हर्ष पाम्यो,ए टलामां राजानुं लश्कर पण त्यां आवी पहोच्युं, पछी राजा तापसो पा सेंथी रजा मागी पोतानी नगरीयें आव्यो, अने संगतने लीधे दोष गुण प्राप्तिनी प्रशंसा करवा लाग्यो. इति कथा ॥ ए सुविहित गुरु प्ररूपकना मुखथी शास्त्र सांजलवां पण अन्य दर्शनीउना कुशास्त्र सांजलवां नहिं. एवो सद्दहणानो चोथो भेद दृष्टांतसहित कह्यो ॥

इतिश्रीतपागच्छालंकार नट्टारक श्रीहीरविजयसूरीश्वर पट्टालंकार श्रीवि जयसेनसूरीश्वर पट्टप्रजाविक श्रीविजयदेवसूरि विजयमानराज्ये महो पाध्याय श्रीसकलचंद्रगणिशिष्य श्रीजंबूद्वीप प्रज्ञप्तिउपांगवृत्तिकारक महो पाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिनिः श्रीसम्यक्त्व रत्नाविधान श्रीसूर्यपुरादि चतुर्विधसंघस्य चतुर्दशाष्टम्यादिपर्वसु अप्रमत्त तपपोषध प्रतिपालनार्थे विरचिते श्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशिनामनि श्रीसम्य क् सप्ततिप्रकरणबालावबोधे चतुर्भेदश्रद्धानसरूपनिरूपणनामा प्रथमोऽ धिकारः संपूर्णः ॥ १ ॥

हवे समकेतना त्रण लिंग कहे छेः–

॥ परमागम सुस्सूसा,अणुराउ धम्म साहणे परमो ॥ जिणेव गुरु वेया वच्चे, नियमो सम्मत्त लिंगाइ ॥ १३ ॥ अर्थः–प्रथम (परमागम सुस्सू सा के०) परम प्रकृष्ट आगमने विषे शुश्रूषा एटले सांजलवानी वांछा होय यतः ॥ सुस्सूसइ पडिपुच्छइ, सुणेइ गिण्हईय एयावि ॥ तत्तो अपोह एवा, धारेइ करेइ वा सम्मं ॥ यदागमः ॥ सवणे नाणेय विन्नाणे,पच्चक्खाणेय सं

[illegible] नतिलहत तर नेत्र, गोराणे अकिरिय निजाणे ॥१॥ समकेत धारी [illegible] ने [illegible] तां[illegible] नांहे. ए सम्यक्त्वनुं पहेलुं लिंग एटले चिन्ह जाणवुं.

बीजुं ([illegible]ताइणो परमो हे०) धर्मसाधनने विषे मननी [illegible] [illegible] तुरंग [illegible] अनुराग होय. एटले धर्म करवाने विषे उत्कृष्ट [illegible] होय. धर्मकार्यनो अंतराय न करे. जे धर्म करतां होय तेहने साता [illegible]. ए बीजुं धर्म साधनने विषे अनुराग रूप लिंग जाणवुं ॥

त्रीजुं ([illegible] हे०) रागादिक अढारदोषें रहित एवा जिनेश्वर [illegible] (गुरु हे०) पंचाचारना प्रतिपालक गुरु, तेमना ([illegible]) [illegible] करवाने विषे (नियमो हे०) नियमवंत होय एटले [illegible] [illegible]. ए रीतें सम्यक्त्व धारीने श्रीजिनोक्त [illegible] [illegible] होय. ए त्रीजुं लिंग जाणवुं ॥ [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], गण, संघ, साहम्मिय [illegible] ॥ इति [illegible] [illegible] तिजुवन नाम [illegible] ॥ ए त्रण (समचलिंगाइं हे०) [illegible] लिंग एटले चिन्ह जाणवां ॥

[illegible] विनय [illegible] कहे छे:—

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (तेहणा हे०) [illegible] [illegible] [illegible] ॥ इति ॥ [illegible]

[illegible]

तेने रागी कहीयें जेमाटे कोइ विदग्ध होय पण जो राग रागणीनो जाण न होय तोपण तेटली तेमां चतुराइ न्यून कहेवाय. केम के सर्व चातुर्यमां रागनुं चातुर्य आवडवुं ते अत्यंत दुष्कर छे,तेमाटे ते रागनो जाणनारो पण होय ए पण विशेषण लीधुं,वली कहेवो होय? तोके जेम श्रीरामचंद्रने सीता वल्लन्न हती, पांमवोने द्रौपदी वल्लन्न हती, श्रीकृष्णने राधा, ईश्वरने पार्वती, इंद्रने इंद्राणी, नल राजाने दमयंती राणी, अत्यंत वल्लन्न हती तेम ते पण (पियपणयिणी के०) अत्यंत प्रिय एवी प्रणयिनी एटले स्त्री तेणे करी (जुउ के०) युक्त होय एटले मुख तो पूर्णचंद्राकार होय, नाल अर्द्धचंद्र समान होय, होठ प्रवालाना रंग जेवा होय, नासिका दीपशिखा समान होय, तथा मुखमांहे जाणे हंसनी पंक्तिज बेठी होय नहिं? एवा दांत होय, विशाल नीलोत्पल समान नेत्र होय, कामराजाने हिंचकवाना हिंमोला सरखा कान होय, तेमज हार, अर्द्धहार, कुंमल, बाजुबंध, कटिमेखला, कंकण, मुद्रिका, नेपुर आदिक अनेक आजरणें करी अलंकृत होय,एवी स्त्री ते पूर्वोक्त पुरुषनी पासें बेठी थकी पाननी बीडी करी आपती होय, कटाक्ष बाणें करी मारती होय, एवो पुरुष (जह के०) जेम (सुरगीयं के०) सुर जे देवता तेहना गीत प्रत्यें (सोउं के०) सांजलवाने (इछइ के०) इछे छे एटले मनुष्यने देवतानां गीत क्यांथी सांजलवानां आवे तेमाटे जेवा देवतानां गीत होय तेवां गीत सांजलवानी इछा करे. एवो अर्थ करवो ए जेम पूर्वोक्त तरुणादि गुणवालो ते देवता संबंधी गीत सांजलवानी इछा करे तेम उत्तम श्रावकने (तव्वहिया के०) तेथकी पण अधिक (समय के०) सूत्र सिद्धांत तेने विषे (सुस्सूसा के०) शुश्रूषा एटले सांजलवानी इछा होय ॥ १३ ॥

हवे ए शुश्रूषा धर्म उपरें सुदर्शनशेठ अने अर्जुनमालीनो दृष्टांत कहे छेः- एहज जंबूद्वीपें दक्षिणजरतक्षेत्रने विषे मगधदेशे राजगृही नगरीमां श्रेणिकराजा राज्य करे छे, तेनो अजयकुमार मंत्रीश्वर छे, ते राज्यनीति चलावे छे. तिहां अर्जुन नामे एक महर्द्धिक माली वसे छे. ते प्रतिदिन उजयानानिमद्द संयुक्त पोतानो कुलदेवता मुद्गरपाणि नामे यक्ष छे, तेनी पूजा करे छे. एकदा प्रजाते ते माली हाथमां करंमीयो लइ पोतानी जार्या सहित फूल लेवाने माटे उद्यानमां गयो, तिहां फूल लइ यक्ष प्रत्यें पू

जमे ॥ अनिएहए तवे चेव, वोदाणे अकिरिय निवाणे ॥१॥ समकेत धारी होय ते आगम सांजलवा वांछे. ए सम्यक्त्वनुं पहेलुं लिंग एटले चिन्ह जाणवुं.

बीजुं (अणुराउधम्मसाहणे परमो के०) धर्मसाधनने विषे मननी प रम प्रीति पूर्वक परम अनुराग होय, एटले धर्म करवाने विषे उत्कृष्ट उज माल होय, धर्मकार्यमां अंतराय न करे, जे धर्म करतो होय तेहने सहा य आपे, ए बीजुं धर्म साधनने विषे अनुराग रूप लिंग जाणवुं ॥

त्रीजुं (जिणेव के०) रागादिक अढारदोषें रहित एवा जिनेश्वर देव च केतां वली (गुरु के०) पंचाचारना प्रतिपालक गुरु, तेमना (वे यावच्चे के०) वेयावच्च करवाने विषे (नियमो के०) नियमवंत होय एटले म हारे आ अमुक वेयावच्च अवश्य करवुंज. ए रीतें सम्यक्त्व धारीने श्रीजिनदेव तथा गुरु जे सुसाधु तेना वेयावच्चने विषे राग होय. ते त्रीजुं लिंग जाणवुं ॥ उक्तं च ॥ दसविहे वेयावच्चे पण्णत्ते तं जहा आयरिय वेयावच्चे,उवद्याय वेयाव च्चे, थेर, तवस्सि, सेह, गिलाण, कुल, गण, संघ, साहम्मिय वेयावच्चे॥इति स्थानांगसूत्रे ॥ वेयावच्चेणं नंते जीवे किं जणइ, वेयावच्चेणं तिछयर नाम गोय कम्म निबंधइ ॥ इति उत्तराध्ययन सूत्रे ॥ ए त्रण (समत्तलिंगाइं के०) सम्यक्दृष्टिनां लिंग एटले चिन्ह जाणवां ॥

हवे एज त्रण लिंगनुं विशेषें स्वरूप कहे छेः–

॥ तरुणो सुही वियढो, रागी वियपणयिणीजुउ सोउं॥ इछइ जह सुरगी यं, तउहिया समय सुस्सूसा ॥ १४ ॥ अर्थः–(तरुण के०) युवान वय वालो वली (सुही के०) सुखी होय तेवा पुरुषने सचावेंज गीत नाट्या दिक वल्लन होय यतः ॥ नवि अछि नवि अहोहि,पाएण तिहुअणंमि सो जीवो ॥ जो जुवण मणुपत्तो, वियारहीउ सया होइ ॥ इति ॥ १ ॥ तथा (वियढो के०) विदग्ध एटले दक्ष होय एटले तरुण तथा सुखी होय परं तु जो विदग्ध एटले दक्ष चतुर न होय तो तेने गीतादिक वल्लन न होय माटे जेम तरुण तथा सुखी कह्यो तेम वली माह्यो चतुर पण कह्यो ॥ यतः ॥ नणी न जाणे गणी न जाणे,उंचो वेगो माले ॥ महीपी आगल किन्नर गाये, उंचे ने उगाले ॥१॥ तेमाटे विदग्ध पण कह्यो वली कहेवो होय ? तोके (रागी के०) वसंत नैरवादिक छत्रीश राग तथा ते रागनी मूर्छना त था रूपक प्रमुख सात स्वर, त्रण ग्राम, त्रण मात्रा प्रमुखनो जाण होय,

ने नमस्कार करी,अरिहंतादिक चारनुं शरण करी चोराशी लाख जीवायो नि खमावी, अढार पापस्थानक आलोइ, नंदी, सागारिक अणसण करी, महासमाधिवंत थको उपशमनो आगार, सकलगुणसागर एवो थको काउ स्सग्गें रह्यो रह्यो. तेना महिमाथकी ते यक्ष मुजर लेइ मालीना शरीरमां थी निकली पोताने स्थानकें गयो, तेथी ते माली अचेतन काष्ठनी पेठें निःसत्त्व थइ धरतीयें पड्यो, तेवारें सुदर्शनशेठ काउस्सग्ग पारी माली पासें जइ तेने शीतलोपचारें करी सावधान कस्यो, तेथी माली कठी उन्नो थयो अने कहेवा लाग्यो के, हे शेठ ! तमें क्यां जाउ गे ? शेठें कह्युं के, हुं उद्यानने विषे श्रीमहावीर देव पधास्या ठे तेने वांदवा तथा तेनी पासें धर्म सांनलवा जाउं बुं. माली कहेवा लाग्यो मुजने पण धर्म सांनलवानी अने नगवंतनां दर्शन करवानी इछा ठे, माटे मने पण तेडी जाउ. तेवा रें सुदर्शन शेठ तथा माली बेहु जण समवसरणें गया. तिहां प्रनुने वांदी ने यथायोग्य स्थानकें बेठा,बार पर्षदा मली. नगवान् पण देशना वचना मृतसुधारस वरसाववा लाग्या. मालीने वैराग्य उपन्यो अने सोचना कर वा लाग्यो. जे एवडुं में पाप कस्युं, माटे हा हा इति खेदे हुं नरकें जइश !!!

॥ यतः ॥ नय के जिवा सोयणिया,नवंति गोयमा अपामिय जिणदिस्का उ, असुअसिहंत वयणाउ, अवोहिलानाउ, अकयधम्माउ, अगहियअणु व्वयाउ. अठ मय पंच पमाय चउक्कसाय संजुत्ताउ,अखामिय सवजीवाउ,अ पालोइय सव पावाउ, जे जीवा परलोयं गछंति, ते सोयणिया हवंति, ज उ अणंत संसारे सयल छुहनिदाणे, निञ्चं हं अणुहवंता चिठंति.

हवे नगवंत अर्जुनमाली प्रत्यें कहे ठे के, हे अर्जुन ! तुं शोच म कर. सावधान था. यतः ॥ पहावि ते पयाया, खिप्पं गछंति अमर नव जेसिंपिउवोसं,जमोय खंतिय वंनचेरं च ॥ १ ॥ जेमाटे दीक्षा ल कर्मक्षय करवाने तुं समर्थ ठे, एवुं नगवंतनुं वचन सांनली लीधी, ठठ अठम दशम डुवालसादिक तप करी, ...रादिकनी कदर्थना प्रमुख खमतो थको ... करी शुक्ल ध्यानरूप अग्नियें करी ...श्री प्रशंसा पहोतो. ... एवा ते ह ... आगम श्रवण करतो सा...हा करवा माटें

जवा निमित्तें देवगृह्मांहे पेंगे, एनी बंधुमती नामें स्त्री अत्यंत रूपें करी सुंदर ठे.

एवामां राजगृह्नगरीने विषे ठ गोष्ठील पुरुष वसे ठे. ते सात व्यसनना सेवनारा ठे, तेर्ज अर्जुनमालीनी स्त्रीने घणा दिवसथी ताके ठे, पण अवसर पामता नथी. ते आजे अवसर पामी मुद्गरपाणि यक्षना देरासरमां हे ठाना रह्या ठे, ते जेवो अर्जुनमालीयें देरासरमां प्रवेश कस्यो, तेवोज ते ठ पुरुषें तेने हालीचाली शके नहिं. एवा आकरा बंधने बांध्यो, अने ते मालीने देखतां तेनी स्त्री बंधुमती सायें नोग नोगवा लाग्या, ते देखी मालीने घणो क्रोध चड्यो, पण करे शुं? जे पोतें बांध्यो पड्यो ठे ठठी शक्तो नथी ॥ यतः ॥ सह्यंते प्राणिनिः सर्वैः, पितृमातृपराजवाः ॥ जार्यापराजवं सोढुं, तिर्यंचोऽपि नहि क्षमाः ॥ १ ॥

पठी ते माली, यक्षप्रत्यें उलंनो देवालाग्यो के हे यक्ष! तुं महारो कुलदेवता ठो, तहारी प्रतिदिवस हुं पूजा करुं ढुं. तेम ठतां तहारा देखतां मुजने बंधने बांधीने महारी स्त्रीनी सायें स्वेच्छायें रमे ठे, तेथी हुं जाणुं ढुं जे तुजमां कांइ शक्तिज नथी निरर्थक हुं पाषाणज पूजुंढुं. एवुं सांजलतां ज यक्ष कोपायमान थयो थको मालीना शरीरमांहे संक्रम्यो तेवारें जेम सडेली दोरी त्रोडी नाखीयें तेम ते बंधन त्रोडी नाख्यां, अने पल्यसहस्र प्रमाण लोह्नो मुजर यक्षनी प्रतिमाना हाथमां हतो ते एणे हाथमां लीधो, ते मुजरें करी बंधुमती सहित ठ गोष्ठीलपुरुषने मारी नाख्या, पठी प्रति दिवस ठ पुरुष अने एक स्त्री एम सात माणसने मारे, तेवारें क्रोध उपशमे, तेथी आखी राजगृही नगरीमां हाहाकार थयो. राजायें पडह वजडाव्यो के ज्यांसुधी अर्जुन माली सात माणसनें मारीने पोताने स्थानकें न गयो होय, तिहांसुधी कोइ माणसे बाहिर निकलवुं नहीं. एम ठ महीना वीत्या.

एवामां नामे पण सुदर्शन अने परिणामें पण सुदर्शन एवो सुदर्शन नामे शेठ तिहां वसे ठे. ते धर्मने विषे परमरागी ठे आगम सुणवाने रुचि वंत ठे, दश प्रकारना मिथ्यात्वनो ठांमनार ठे, हवे ते सुदर्शनशेठ नगवंत आव्या सांजली मातपिता प्रत्यें महाकष्टें समजावीने प्रजुने वांदवा नि तल्यो. तेवामां यक्षावेशें अर्जुनमाली पण हाथमां मुजर उपाडीने सुदर्शन था रु॰ मारवा दोड्यो तेने आवतो देखी उत्तरासंगें नूमिका पूंजी नगवंत

ने नमस्कार करी,अरिहंतादिक चारनुं शरण करी चोराशी लाख जीवायो नि खमावी, अढार पापस्थानक आलोइ, नंदी, सागारिक अणसण करी, महासमाधिवंत थको उपशमनो आगार, सकलगुणसागर एवो थको काउस्सग्गें कभो रह्यो. तेना महिमायकी ते यक्ष मुजर लेइ मालीना शरीरमांथी निकली पोताने स्थानकें गयो, तेथी ते माली अचेतन काष्ठनी पेठें निःसत्त्व थइ धरतीयें पड्यो, तेवारें सुदर्शनशेठ काउस्सग्ग पारी मालीपासें जइ तेने शीतलोपचारें करी सावधान कर्यो, तेथी माली ऊठी उनो थयो अने कहेवा लाग्यो के, हे शेठ ! तमें क्यां जाउ गो ? शेठें कह्युं के, हुं उद्याननें विषे श्रीमहावीर देव पधार्या ठे तेने वांदवा तथा तेनी पासें धर्म सांजलवा जाउं बुं. माली कहेवा लाग्यो मुजने पण धर्म सांजलवानी अने जगवंतनां दर्शन करवानी इवा ठे, माटे मने पण तेडी जाउ. तेवारें सुदर्शन शेठ तथा माली बेहु जण समवसरणें गया. तिहां प्रजुने वांदीने यथायोग्य स्थानकें बेठा,बार पर्षदा मली. जगवान् पण देशना वचनामृतसुधारस वरसाववा लाग्या. मालीने वैराग्य उपन्यो अने सोचना करवा लाग्यो. जे एवडुं में पाप कर्युं, माटे हा हा इति खेदे हुं नरकें जइश !!!

॥ यतः ॥ जय के जिवा सोयणिया,जवंति गोयमा अपामिय जिणदिस्काउ, असुअसिद्धंत वयणाउ, अबोहिलाजाउ, अकयधम्माउ, अगहियअणुव्वयाउ. अठमय पंच पमाय चउक्कसाय संजुत्ताउ,अखामिय सव्वजीवाउ,अणालोइय सव्व पावाउ, जे जीवा परलोयं गछंति, ते सोयणिया हवंति, जउ अणंत संसारे सयल डुहनिदाणे, निचं हं अणुहवंता चिठंति.

हवे जगवंत अर्जुनमाली प्रत्यें कहे ठे के, हे अर्जुन ! तुं शोच म कर. हजी सावधान था. यतः ॥ पछावि ते पयाया, खिप्पं गछंति अमर जवणाइं ॥ जेसिंपिउववोसं,जमोय खंतिय बंजचेरं च ॥ १ ॥ जेमाटे दीक्षा लइ तप करीने कर्मक्षय करवाने तुं समर्थ ठे, एवुं जगवंतनुं वचन सांजली अर्जुनमालीयें दीक्षा लीधी, ठठ अठम दशम डुवालसादिक तप करी, लोकना आक्रोश निंद, प्रहारादिकनी कदर्थना प्रमुख खमतो थको ब नामां बे महीनानुं अनशन करी शुक्ल ध्यानरूप अग्नियें करी श्री प्रशंसा रूप काष्ठने बाली मोक्ष नगरें पहोतो. .. एवा ते दृ

सुदर्शन शेठ पण प्रतिदिन आगम श्रवण करतो सा॰ ॥क्षा करवा माटें

जवा निमित्तें देवगृहमांहे पेठो,एनी बंधुमती नामें स्त्री अत्यंत रूपें करीसुंदर छे.

एवामां राजगृहनगरीने विषे छ गोष्ठील पुरुष वसे छे. ते सात व्यसनना सेवनारा छे, तेउ अर्जुनमालीनी स्त्रीने घणा दिवसथी ताके छे, पण अवसर पामता नथी. ते आजे अवसर पामी मुद्गरपाणि यक्षना देरासरमांहे छाना रह्या छे, ते जेवो अर्जुनमालीयें देरासरमां प्रवेश कस्यो, तेवांज ते छ पुरुषें तेने हालीचाली शके नहिं. एवा आकरा बंधने बांध्यो, अने ते मालीने देखतां तेनी स्त्री बंधुमती सायें नोग नोगवा लाग्या, ते देखी मालीने घणो क्रोध चड्यो, पण करे शुं? जे पोतें बांध्यो पड्यो छे उठी शको नथी ॥ यतः ॥ सहंते प्राणिनिः सर्वैः, पितृमातृपराजवाः ॥ नार्यापराजवं सोढुं, तिर्यंचोऽपि नहि क्षमाः ॥ १ ॥

पछी ते माली, यक्षप्रत्यें उलंजो देवालाग्यो के हे यक्ष! तुं महारां कुलदेवता छो,तहारी प्रतिदिवस हुं पूजा करुं छुं. तेम छतां तहारा देखतां मुजने बंधने बांधीने महारी स्त्रीनी सायें स्वेछायें रमे छे, तेथी हुं जाणुं छुं जे तुजमां कांइ शक्तिज नथी निरर्थक हुं पाषाणज पूजुं छुं. एवुं सांनलतां ज यक्ष कोपायमान थयो थको मालीना शरीरमांहे संक्रम्यो तेवारें जेम सडेली दोरी त्रोडी नाखीयें तेम ते बंधन त्रोडी नाख्यां, अने पल्यसहस्र प्रमाण लोहनो मुजर यक्षनी प्रतिमाना हाथमां हतो ते एणे हाथमां लीधो, ते मुजरें करी बंधुमती सहित छ गोष्ठीलपुरुषने मारी नाख्या, पछी प्रति दिवस छ पुरुष अने एक स्त्री एम सात माणसने मारे, तेवारें क्रोध उपशमे, तेथी आखी राजगृही नगरीमां हाहाकार थयो. राजायें पडह वजडाव्यो के ज्यांसुधी अर्जुन माली सात माणसने मारीने पोताने स्थानकें न गयो होय, तिहांसुधी कोइ माणसे बाहिर निकलवुं नहीं. एम छ महीना वीत्या.

एवामां नामे पण सुदर्शन अने परिणामें पण सुदर्शन एवो सुदर्शन नामे शेठ तिहां वसे छे. ते धर्मने विषे परमरागी छे आगम सुणवाने रुचिवंत छे, दश प्रकारना मिथ्यात्वनो छांमनार छे, हवे ते सुदर्शनशेठ जगवंत आव्या सांनली मातपिता प्रत्यें महाकष्टें समजावीने प्रनुने वांदवा निकल्यो. तेवामां यक्षावेशें अर्जुनमाली पण हाथमां मुजर उपाडीने सुदर्शनने मारवा दोड्यो तेने आवतो देखी उत्तरासंगें नूमिका पूंजी जगवंत

ने नमस्कार करी,अरिहंतादिक चारनुं शरण करी चोराशी लाख जीवायो
नि खमावी, अढार पापस्थानक आलोइ, नंदी, सागारिक अणसण करी,
महासमाधिवंत थको उपशमनो आगार, सकलगुणसागर एवो थको काउ
स्सग्गें ऊनो रह्यो. तेना महिमाथकी ते यक्ष मुजर लेइ मालीना शरीरमां
थी निकली पोताने स्थानकें गयो, तेथी ते माली अचेतन काष्ठनी पेठें
निःसत्त्व थइ धरतीयें पड्यो, तेवारें सुदर्शनशेठ काउस्सग्ग पारी माली
पासें जइ तेने शीतलोपचारें करी सावधान कर्यो, तेथी माली ऊठी ऊनो
थयो अने कहेवा लाग्यो के, हे शेठ! तमें क्यां जाउ गे? शेठें कह्युं के,
हुं उद्याननें विषे श्रीमहावीर देव पधार्या ठे तेने वांदवा तथा तेनी पासें
धर्म सांजलवा जाउं हुं. माली कहेवा लाग्यो मुजने पण धर्म सांजलवानी
अने जगवंतनां दर्शन करवानी इछा ठे, माटे मने पण तेडी जाउ. तेवा
रें सुदर्शन शेठ तथा माली बेहु जण समवसरणें गया. तिहां प्रजुने वांदी
ने यथायोग्य स्थानकें बेठा,बार पर्षदा मली. जगवान् पण देशना वचना
मृतसुधारस वरसाववा लाग्या. मालीने वैराग्य उपन्यो अने सोचना कर
वा लाग्यो. जे एवडुं में पाप कर्युं, माटे हा हा इति खेदे हुं नरकें जइश!!!

॥ यतः॥ जय के जिवा सोयणिया,नवंति गोयमा अपामिय जिणदिरका
उ, असुअसिर्ह्दत वयणाउ, अबोहिलाजाउ, अकयधम्माउ, अगहियअणु
व्वयाउ. अठ मय पंच पमाय चउक्कसाय संजुत्ताउ,अखामिय सबजीवाउ,अ
णालोइय सव पावाउ, जे जीवा परलोयं गछंति, ते सोयणिया हवंति, ज
उ अणंत संसारे सयल डुहनिदाणे, निच्चं दं अणुहवंता चिट्ठंति.

हवे जगवंत अर्जुनमाली प्रत्यें कहे ठे के, हे अर्जुन! तुं शोच न कर.
हवी सावधान था. यतः ॥ पहावि ते पयाया, सिग्घं गछंति अमर जव
णाइं ॥ जेसिंपिउवयोसं,जमोय खंतिय बंजचेरं च ॥१॥ जेमाटे दीक्षा ल
इ तप करीने कर्मक्षय करवाने तुं समर्थ ठे, एवुं जगवंतनुं वचन सांजली
अर्जुनमालीयें दीक्षा लीधी, ठठ अठ्ठम दशम डुवालसादिक तप करी, लो
कना आक्रोश निंदा, प्रहारादिकनी कदर्थना प्रमुख खमतो थको ठ
मासनां पे महीनानुं अनशन करी शुक्ल ध्यानरूप अग्नियें करी श्री प्रशांता
रूप काष्ठने बाली मोक्ष नगरें पहोंतो. ...एवा ते ह

सुदर्शन शेठ पण प्रतिदिन आगम श्रवण करतो ...हा करवा माटें

जवा निमित्तें देवगृहमांहे पेठो, एनी बंधुमती नामें स्त्री अत्यंत रूपें करी सुंदर छे.

एवामां राजगृहनगरीने विषे ठ गोष्ठील पुरुष वसे छे. ते सात व्यसनना सेवनारा छे, तेउ अर्जुनमालीनी स्त्रीने घणा दिवसथी ताके छे, पण अवसर पामता नथी. ते आजे अवसर पामी मुद्गरपाणि यक्षना देरासरमां हे ठाना रह्या छे, ते जेवो अर्जुनमालीयें देरासरमां प्रवेश कर्यो, तेवांज ते ठ पुरुषें तेने हालीचाली शके नहिं. एवा आकरा बंधने बांध्यो, अने ते मालीने देखतां तेनी स्त्री बंधुमती सायें जोग जोगवा लाग्या, ते देखी मालीने घणो क्रोध चड्यो, पण करे शुं? जे पोतें बांध्यो पड्यो छे उठी शको नथी ॥ यतः ॥ सहंते प्राणिनिः सर्वैः, पितृमातृपराजवाः ॥ जायापराजवं सोढुं, तिर्यंचोऽपि नहि क्षमाः ॥ १ ॥

पछी ते माली, यक्षप्रत्यें उलंजो देवालाग्यो के हे यक्ष! तुं महारो कुलदेवता छो, तहारी प्रतिदिवस हुं पूजा करुं छुं. तेम छतां तहारा देखतां मुजने बंधने बांधीने महारी स्त्रीनी सायें स्वेच्छायें रमे छे, तेथी हुं जाणुं छुं जे तुजमां कांइ शक्ति नथी निरर्थक हुं पाषाणज पूजुं छुं. एवुं सांजलतां ज यक्ष कोपायमान थयो थको मालीना शरीरमांहे संक्रम्यो तेवारें जेम सडेली दोरी त्रोडी नाखीयें तेम ते बंधन त्रोडी नाख्यां, अने पलसहस्र प्रमाण लोहनो मुद्गर यक्षनी प्रतिमाना हाथमां हतो ते एणे हाथमां लीधो, ते मुद्गरें करी बंधुमती सहित ठ गोष्ठीलपुरुषने मारी नाख्या, पछी प्रति दिवस ठ पुरुष अने एक स्त्री एम सात माणसने मारे, तेवारें क्रोध उपशमे, तेथी आखी राजगृही नगरीमां हाहाकार थयो. राजायें पडह वजडाव्यो के ज्यांसुधी अर्जुन माली सात माणसने मारीने पोताने स्थानकें न गयो होय, तिहांसुधी कोइ माणसे बाहिर निकलवुं नहीं. एम ठ महीना वीत्या.

एवामां नामें पण सुदर्शन अने परिणामें पण सुदर्शन एवो सुदर्शन नामे शेठ तिहां वसे छे. ते धर्मने विषे परमरागी छे आगम सुणवाने रुचिवंत छे, दश प्रकारना मिथ्यात्वनो ठंमनार छे, हवे ते सुदर्शनशेठ नगरमां श्रीमहावीर समोसर्या ते आव्या सांजली मातपिता प्रत्यें महाकष्टें समजावीने प्रजुने वांदवा निकल्यो. तेवामां यक्षाविष्ट अर्जुनमाली पण हाथमां मुद्गर उपाडीने सुदर्शनना रु॰ मारवा दोड्यो तेने आवतो देखी उपसर्ग भूमिका पूंजी भगवंत

पड्. लोकोयें तेनुं आरोग्यद्विज एवुं नाम पाडयुं, ते ब्राह्मण घणा वर्ष प र्यंत श्रावकधर्म पाली स्वर्गे पहोतो. अनुक्रमें मोक्षमां पण जाशे. ए धर्म रागनी उपर आरोग्यद्विजनी कथा कही ॥

हवे देवगुवरुनुं वेयावच्च रूप समकेतनुं त्रीजुं लिंग कहे छेः—

॥ पूयाइए जिणाणं, गुरुणा विसमणाइए विविहे ॥ अंगीकारो निय मो ,वेयावच्चे जहा सत्ती ॥ १६ ॥ अर्थः—(जिणाणं के०) श्रीजिनेश्व रनी (पूयाइए के०) पुजा ते बे प्रकारें छे एक इव्यस्तवरूप अने बीजी नावस्तव रूप, तिहां श्रावकने तो इव्यस्तव अने नावस्तव ए बेहु उचित छे अने साधुने तो एकज नावस्तव उचित छे. इहां अष्टप्रकारी, सत्तर प्र कारी अने एकवीश प्रकारी पूजा आदिक ए सर्व इव्यस्तव कहीयें. यतः ॥ उक्कोसं दवथयं, आराहिय जाइ आवुअं जाव ॥ नावछएण पावइ, अं

१ ॥ तथापि इव्यस्तव जे छे, ते नावस्तवनुं कारण

। दवसच्चो, पायंसोजो गया ए रूढो तिणि, रुवम च

ोउपलंनाउ ॥ १ ॥ मिउपिंमो दवघडो, सुसावगो

ाहुय दवदेवो, ए माइजउ सुए नणियं ॥ १ ॥ ता

दवउउ इहं इठो ॥ जो पुणऐवं नूउं, सअप्पहाणो

ष्टपे इव्यस्तव नावस्तव नामा पंचाशके ॥

यस्तव करे, ते आज्ञा विराधक थाय ॥ यतः ॥ न

। साहुणीवा, निग्गंथे अणगारे दवछयं कुजा तेणं

ामा सेणं अजएवा, असंजए वा, देवनोइवा,देव गा

गपए इवा, उसन्निय सीलेइवा, कुसीलेवा, सछंदचा

इति माहानिशीये ॥ तेमाटें साधुने इव्यस्तव न कर

तव कीधा पछी नावस्तव करवुं. ए देव आश्रयी कह्युं.

[illegible] के०)गुरुनो विश्रामणादिक (विविहे के०)

ीकार करे, तेने विषे निश्चल होय एटले गु

[illegible] कारणें इव्य, क्षेत्र,

[illegible], अगीतार्थ, प्रमुख

[illegible] प्राति देखाय,

[illegible] तुर्थ, उएहंवि

वैद्यनुं रूप धारण करी तेना घर आगल आव्या, अने कहेवा लाग्या के अमारुं औषध ले, तो तुजने समाधि थाय. तेने ब्राह्मणें पूछयुं के, कयुं औषध खवरावो छे? तेवारे वैद्य बोल्या के, प्रथम प्रहरें मध खावुं, अने पाछले प्रहरें मद्यपान करवुं, तथा रात्रियें माखणमिश्रित कूरनो कवलो खावो, तेनी उपर वली मांस खावुं. एवा चारे अनक्ष्य विगयनां औषधो सांजलीने ब्राह्मण पोताना मनमां धूज्यो अने विचार्युं जे एवडुं महोटुं पाप करीने पछी नरकमां जइ पडवुं छे, जे माटें ॥ मज्जे महुंमि मसंमि, नवणीयं चउछए ॥ उवक्कंति असंखा, तवणा तछ जंतुणो ॥ १ ॥ ते माटें ए सावद्य औषध न करवुं. ए मने जे रोग थयो छे, ते तो एकज नव मां डुःख आपनारो छे, पण व्रतनंग करवानां माहापाप शास्त्रमां कह्यां छे ॥ यतः ॥ वयनंगे गुरुदोसो, थोवस्सवि पालणं गुणकरिय ॥ गुरुलाघ वं च नेयं, धम्मंमि अउंव आगारा ॥ १ ॥ इति पंचाशकसूत्रे ॥ ते माटें स र्वथा व्रतनंग नहींज करुं. एवो तेनो दृढ जोइने माता, पिता तथा राजा प्रमुख वडेरा लोको कहेवालाग्या के, तुं ए औषध कर के जेथी घणा का लना रोगनी समाधि थशे तो पछी नीरोगी शरीरथी घणा प्रकारना धर्म कार्य करीश, अने व्रतनंग थशे तेनुं प्रायश्चित्त लेजे. तेवारें ब्राह्मण बो ल्यो ॥ यतः ॥ जइ जीवियस्स इक्कस्स, कारणे हणइ जीव कोडीउ ॥ ता की सासयनावं, तमित्तपडिवक्कएकहवि ॥ १ ॥ माटे जो एम करवाथी लान थतो होय तो सनत्कुमार नामा चोथो चक्रवर्ती हतो, तेणें शा मा टें औषध कर्युं नहीं? पण तेणें एवुंज विचार्युं जे आ रणीयुं आव्युं छे तेनो रण आपी समजावीने उगाडी मूकीयें? तो रूडुं थाय. तेम मुजने पण ए रोग वेदवाथी पूर्वकृत कर्म क्षय थाय छे, माटे सर्वथा सावद्य न करुं. पण रीश करी हांकी काहाढीयें, तो माठुं लागे, ते माटें ए कर्मनुं रुण आपी दइयें, तो रुडुं देखाय. एम कह्या नंतर वली पण देवोयें घ णोये नलावया मांड्यो पण सर्वथा रंचमात्र चलाय मान थयो नहीं. तेवारें देवो प्रगट थइ पगे लागी कहेवा लाग्या के, धन्य छे तुजने अने ध न्य छे तहारा दृढधर्मने, जेथी इंद्रमहाराजें तहारी प्रशंसा कीधी तेवोज छुं छो. एवुं कही तेना शरीरसंबंधी सर्व रोग मटाडी तेना घरने विषे रत्ननी वृष्टि करी देवता पोताने स्थानकें गया. नगरमांहे श्रीजिनधर्मनी प्रशंसा

यइ. लोकोयें तेनुं आरोग्यद्विज एवुं नाम पाडयुं, ते ब्राह्मण घणा वर्ष प र्यंत श्रावकधर्म पाली स्वर्गे पहोतो. अनुक्रमें मोक्षमां पण जाशे. ए धर्म रागनी उपर आरोग्यद्विजनी कथा कही ॥

हवे देवगुरुनुं वेयावच्च रूप समकेतनुं त्रीजुं लिंग कहे छेः—

॥ पूयाइए जिणाणं, गुरुणा विसमणाइए विविहे ॥ अंगीकारो निय मो ,वेयावच्चे जहा सत्ती ॥ १६ ॥ अर्थः—(जिणाणं के०) श्रीजिनेश्व रनी (पूयाइए के०) पूजा ते बे प्रकारें छे एक द्रव्यस्तवरूप अने बीजी नावस्तव रूप, तिहां श्रावकने तो द्रव्यस्तव अने नावस्तव ए बेहु उचित छे अने साधुने तो एकज नावस्तव उचित छे. इहां अष्टप्रकारी, सत्तर प्र कारी अने एकवीश प्रकारी पूजा आदिक ए सर्व द्रव्यस्तव कहीयें. यतः ॥ उक्कोसं दवथयं, आराहिय जाइ आवुअं जाव ॥ नावत्थएण पावइ, अं तमुहूत्तेण निवाणं ॥ १ ॥ तथापि द्रव्यस्तव जे छे, ते नावस्तवनुं कारण छे. ॥ यतः ॥ समयंमि दवसद्दो, पायंसोजो गया ए रूढो तिणि, रुवम च रित्तो बहुहा, पउग चेउपलंनाउ ॥ १ ॥ मिउपिंमो दवघडो, सुसावगो तहय दवसाहुत्ति ॥ साहुय दवदेवो, ए माइजउ सुए नणियं ॥ १ ॥ ता नावत्थ पहेक, जो सो दवछउ इहं इछो ॥ जो पुणणेवं नूउं, सथप्पहाणो परं होति ॥ १ ॥ इति एष्टे द्रव्यस्तव नावस्तव नामा पंचाशके ॥

जे साधु थइने द्रव्यस्तव करे, ते आज्ञा विराधक थाय ॥ यतः ॥ न यवं जेणं केइ साहू वा साहुणीवा, निग्गंथे अणगारे दवछयं कुजा तेणं किं आलोवेज्जा ॥ गोयमा सेणं अजएवा, असंजए वा, देवनोइवा,देव गा चने वा, जावणं उमग्गपए इवा, दुत्तप्रिय सीलेइवा, कुसीलेवा, सछंदचा रिएवा,आलो वेज्जा ॥ इति माहानिशीथे ॥ तेमाटें साधुने द्रव्यस्तव न कर वुं अने श्रावकने द्रव्यस्तव कीधा पछी नावस्तव करवुं. ए देव आश्रयी कह्युं.

हवे (गुरुणाविसामणाइए के०)गुरुनो विश्रामणादिक (विविहे के०) विविध प्रकारनुं वेयावच्चनो अंगीकार करे,तेने विषे निश्चल होय एटले गु रुने यथाशक्तियें शुद्धमान अशनादिक आपवा तथा कारणें द्रव्य, क्षेत्र, काल, नाव, विचारीने तेमज पात्र, अपात्र, गीतार्थ, अगीतार्थ, प्रमुख उत्सर्ग अपवाद विचारीने जो सर्वथा शुद्धमान वस्तुनी अप्राप्ति देखाय, तो अशुद्धमान पण याणी आपे ॥ यतः ॥ संवरणंमि असुद्धं, डुएहंवि

गिएहं तदित पाणहियं ॥ आउरदिठं तेणे, ते चेवहिय असंवरणे ॥ १ ॥
तेने गुरुसंबंधि वेयावच्च कहीयें, तेने विषे (नियमो के०) नियम होय,
एटले आटलुं वेयावच्च करवुंज एवो होय पण यथाशक्तियें नियम करे,
केम के केटलाएकने द्रव्यनी शक्ति होय पण कायानी शक्ति न होय, त
था केटलाएकने कायशक्ति होय, पण द्रव्यनी शक्ति न होय. तेमज केटला
एकने द्रव्य अने काय बेहु शक्ति होय अने केटलाएकने बेहुमांहेली एके
शक्ति न होय, तेमाटे यथाशक्तियें वेयावच्च करवुं कह्युं, पण यथा शक्तियें
न करे तो तेने दोष लागे ॥ १९ ॥

ए उपर दृष्टांतरूप कथा कहे ठेः– माहाविदेहक्षेत्रे वज्रनाज राजा च
क्रवर्त्ती पदवी जोगवी वैराग्य पामी दीक्षा लइ चौद पूर्व जणी आचार्य प
दवी पामी विहार करता हवा. तेना बाहु, सुबाहु, पीठ अने महापीठ, ए
चार लघु जाइ ठे, तेमणें पण दीक्षा लीधेली ठे. अगीयार अंगना जण
नारा ठे. ते चारमां बाहुमुनीश्वर ठे, ते पांचशें साधुनुं वेयावच्च करे, नि
त्यप्रत्यें यथेष्ट शुद्धमान अशनादिक गृहस्थनाघरथी लावी आपे, लगारमा
त्र रीश न करे, अजिमान न करे, कोइने तुं कार रेकार न करे, केइने पश्चा
ताप न करे, ईर्ष्या न करे, पांचशें साधुने रूडां मिष्ट वचने बोलावी रूडा
मिष्ठ जातपाणी आपी संतोष पमाडे, अने सुबाहुमुनि महाजक्तिपूर्वक पां
चशें साधुने विश्रामण करे.

अने पीठ तथा महापीठ ए बे साधु सद्यायध्यान काउस्सग्गादिक क्रिया
करता थका सुखें चारित्र पाले, एकदा वज्रनाज आचार्य बाहु अने सुबा
हु ए बेहु साधुउंना साचा गुणनी प्रशंसा करता थका कहेवा लाग्या के,
माहारा गछने विषे ए बे साधु धोरी ठे, जेमाटे बाहुसाधु तो पांचशें सा
धुउंने अशनादिक शुद्धमान आहारें करी पोषे ठे, अने सुबाहुमुनि पांच
शें साधुनुं वेयावच्च करे ठे. एवी गुरुना मुखथी थती प्रशंसा सांजलीने पी
ठ अने महापीठ, ए बे साधु मत्सर धरवा लाग्या जे आपना गुरु ए सा
धुउंनाज गुणनुं वर्णन शुं करे ठे ? एवी ईर्ष्या करता हवा. अने माया क
पटथी वधारे तप करवा लाग्या. अंते आचार्यसहित पांचे जण चारित्र
पाली तपस्याकरी ठेहेले अनशन करी सर्वार्थसिद्धि विमाने पहोता. ति
हांथी चवीने वज्रनाजनो जीव, श्रीआदिनाथ प्रथम तीर्थंकर थया अने

बाहुनो जीव चवी नरतचक्रवर्त्ती थयो. तथा सुबाहुनो जीव चवी बाहुब ली थयो. तथा पीठनो जीव चवी नरतचक्रवर्त्तीनी सुंदरी नामें नगिनी थ इ. तथा महापीठनो जीव बाहुबलीनी नगिनी थइ. ईर्ष्या कखा माटे मा यातपना प्रनावें स्त्रीवेद पाम्या ॥

नरतनो जीव, पांचशें साधुनी नक्ति करवाथी चक्रवर्त्तीनी पदवी पा म्यो. अने आ अवसर्प्पिणीमां प्रसादप्रतिष्ठा बिंबप्रतिष्ठाने विषे तथा संघ वीनां तिलकने विषे आदि करी अने बाहुबल पांचशें साधुनुं वेयावच्च कर वाथी अतुल पराक्रमी थयो. संग्राम करतां नरतचक्रवर्त्तीने पण हराव्यो, अने तेणें वैराग्य पामी दीक्षा लीधी. तेमज ब्राह्मीयें पण श्री रूपनदेव पासेंथी दीक्षा लीधी अने सुंदरी दीक्षा लेती हती. तेने नरतचक्रवर्त्तीयें रू पसुंदर जाणी स्त्रीरत्न करवा माटें दीक्षा लेवा न दीधी पण नरतदिग्वि जय करवा गया पठी सुंदरीयें श्रीरूपनदेवने पूछ्युं जे, स्त्रीरत्न मरीने क्यां जाय? नगवानें कह्युं के, ठही नरकें जाय. ते सांनली खेद पामी थकी साठ हजार वर्षपर्यंत आंबिल तप कर्युं तेथी शरीर दुर्बल थइ गयुं, नरत आव्या पठी दुर्बलतानुं कारण कुटुंबीयोना मुखथी सांनली सुंदरीने दीक्षा लेवानी इछा जाणी आज्ञा आपी, पोतें वैताढयथी स्त्रीरत्न लाव्या. अनु क्रमें पांचे जीव मोक्षें पहोता माटे वेयावच्चना एवां फल जाणी गुरुनुं वे यावच्च करवुं. ए सम्यक्त्वना त्रण लिंगनो बीजो अधिकार कह्यो.

इति श्रीतपागच्चीय शांतिचंद्रगणिशिष्य रत्नचंद्रगणिविरचित श्रीसम्यक्त्व रत्नप्रकाश नामनि श्रीसम्यक्त्वसप्ततिकाप्रकरणबालावबोधे सम्यक्त्वलिंगत्र यसरूपनिरूपणनामा द्वितीयोऽधिकारः संपूर्णः ॥ २ ॥

हवे दशप्रकारना विनय करवारूप त्रीजो अधिकार कहीयें बेयें.

॥ अरिहंत सिद्ध चेइय,सुएय धम्मेय साहुवग्गेय ॥ आयरिय नवयाए, पवयणे दंसणे विणर्ज ॥ १७ ॥ अर्थः—एक अरिहंतनो विनय, बीजो सिद्धनो विनय, त्रीजो चैत्यनो विनय, चोथो (सुएय के०) द्वादशांगी रूप श्रुतनो विनय, पांचमो धर्मनो विनय. ठठो (साहुवग्गेय के०) सा धुवर्गनो विनय, सातमो आचार्यनो विनय, आठमो उपाध्यायनो विनय, नवमो प्रवचननो विनय अने दशमो (दंसणे के०) दर्शन एटले सम्यक् दर्शन तेनो (विणर्ज के०) विनय जाणवो ॥ १७ ॥

१ श्रीसीमंधरादिक वीश विहारमान तीर्थंकरनां नामस्मरणादिकें करी, तेमना चरित्र वांचवे करी, गुणस्तुति करवे करी, जे नक्ति करवी ते अरिहंतनो विनय जाणवो.

२ नमो सिद्धाणं ए पद गणवे करी सिद्धनी अवस्था ध्यायी पूजा करवे करी सिद्धनो विनय थाय.

३ चैत्योद्धार करवे करी,प्रसाद कराववे करी, बिंबप्रतिष्ठा,बिंबपूजा, बिंबने मल टालवे करी, सत्तरनेदें पूजा करवे करी, बिंबने राज्यनय, अग्निनय, जलनयादिकथी राखवे करी, चैत्यपुंजवे करी, चैत्यने चुनादिकथी धोलवे करी एम अनेक प्रकारें चैत्यनो विनय जाणवो ॥

४ श्रुतलखाववे करी, पुस्तक साचववे करी,पुस्तकने शोधवे करी,ज्ञान नणवे नणाववे करी, पाटां पूंजणी रुमाल विटांगणा प्रमुख पुस्तकना उपकरण करवे करी, पुस्तकने अग्निनय जलनयादिकथी राखवे करी इत्यादिक अनेक प्रकारें श्रुतनो विनय थाय.

५ धर्मनी प्रशंसा करवे करी, मुग्धजनने धर्म पमाडवे करी, धर्मनी स्थापना करवे करी, पौषध सामायिक प्रमुख धर्म करवे करी, श्रावकना द्वादश व्रत पालवे करी, दशविध यतिधर्म पालवे करी धर्मनो विनय जाणवो.

६ साधुवर्गने अशनादिक आपवे करी,वातादिक विकारें तेलमर्दनादिक करवे करी,रोग उपने थके वैद्य तेडी लावी औषध कराववे करी,सन्निपातादिक रोगविशेषें आकरी चिकित्सा कराववे करी,परिश्रांत साधुने विश्रामण करवे करी,कांटा काढवे करी,ए रीतें विचित्र प्रकारें साधुवर्गनो विनय जाणवो.

७ आचार्य आवते थके तेमनी साहामा जाववे करी, कर्पूर तथा सुवर्णादिकना पुष्पोथी पूजवे करी, ग्रीष्मऋतुने विषे विलेपन करवे करी, आचार्यने योग्य एवा शुद्धमान वस्त्रादिक वहोराववे करी, आचार्य आवे थके उना थावे करी, पुस्तक लखावीने आपवे करी, गुणप्रशंसा करवे करी इत्यादि अनेक प्रकारें आचार्यनो विनय जाणवो ॥

८ उपाध्यायनो विनय पण आचार्यनी पेठेंज जाणवो.

९ प्रवचननी प्रशंसा करवे करी, प्रवचननो उड्डाह टालवे करी, प्रतिष्ठादिक महोटा कार्य करवे करी, प्रवचनने दीपाववे करी, राजा तथा मंत्र्यने प्रतिबोधवे करी इत्यादि अनेक प्रकारें प्रवचननो विनय थाय.

१० निश्शंकितादिक गुणें करी शुद्धसमकित पालवाथी, नवा व्यवहा रीयाने प्रतिबोधी तेने समकेत थापवे करी,सम्यक्त्वना नूषणनुं सरूप जा णीने तेने आदरवे करी तथा सम्यक्त्वना दूषणनुं सरूप जाणी तेने परि हरवे करी दर्शननो विनय जाणवो. ए दश प्रकारनो विनय जाणवो ॥

हवे चार गाथायें करी ए दशनुं सरूप समजावे ने.

॥ अरिहंता विहरंता, सिद्धा कम्मखया सिवं पत्ता ॥ पडिमाउ चेइआइं, सुयं तु सामाइया ईयं ॥ १८ ॥ धम्मोचरित्त धम्मो, आहारो तस्स साहुव ग्गो ॥ आयरिय उवज्झाया, विसेस गुणसंपया तउ ॥ १९ ॥ पवयणम सेस संघो, दंसण मिणुंति इठ सम्मत्तं ॥ विणउ दसएहिमेसि, कायव्वो होइ एवं च ॥ २० ॥ नत्तिबहुमाणोवन्न ,जणण नासण मणासायस्सं ॥ आसायण परिहारो, विणउ संखेवउ एसो ॥ २१ ॥ अर्थः-(अरिहंता के०) अरिहंत ते कोने कहीयें जे (विहरंता के०) विहरमान तीर्थंकर सीमंधर प्रमुख जे काले जे विचरता होय,तीर्थंकर नामकर्म उदय प्राप्त थ युं होय, समवसरणादिक ऋद्धि नोगवता होय, तेने अरिहंत कहीयें. य तः ॥ सत्तरिसयमुक्कोसं, जहन्न वीसम्मदस विहरंति ॥ जम्मंपइ उक्कोसं,वी स दस हुंति उ जहन्ना ॥ १ ॥ इति ॥

(सिद्धा के०) सिद्ध कोने कहीयें ? के जे (कम्मखया के०) अष्ट कर्मनो सर्वथा क्षय करीने (सिवंपत्ता के०) मोक्ष नगरें पहोता तेने सि द्ध कहीयें ते " जिणअजिणतित्थतित्था " ए गाथाथी पन्नर नेदें जाणवा.

३ (पडिमाउ चेइआइं के०) चैत्य ते प्रतिमा जाणवी, ने प्रतिमाने बेसवानो जे घर तेने पण चैत्य कहीयें ॥ यतः ॥ देवेसु कोडिसयं, कोडी बावन्नु लरक चउणवइ ॥ सह चउआलीसं,स नतया सिद्धि अप्पडिया ॥१॥ जगर्निम पणनवइं,सहस्स दिसाहिया य तिन्निसया ॥ जोइसिय वज्जिऊणं, तिरिय जिणबिंब संखइमा ॥ २ ॥ तेरस कोडि सयाइं, गुण नवइ कोडि सद्धि लरकाइं ॥ नरणवर्ग्गे नमे, जोइसिएसु य असंखा ॥ ३ ॥ कोडि स याइ पनरस, कोडी बायाल लरक अडवन्ना ॥ लख्ख बत्तीसंजुत्ता, असीइ अहियाउ सइग्गं ॥ ४ ॥ ए शाश्वती प्रतिमानुं मान जाणवुं. ज्योतिषना विमानो असंख्याता ले, तिहां चैत्य तथा जिनप्रतिमा पण असंख्याती ने.

४ (सुयं तु के०) श्रुत ते वली (सामाइयं ईयं के०) कर्मि तेने सामाइयं

यी मांमीने यावत् दृष्टियी वाद पर्यंत जाणवुं. आचारांगादिक अगीयार अंग अने बारमो दृष्टि वाद, ए सर्व श्रुत जाणवुं ॥ १८ ॥

५-६ (धम्मो के०) धर्म ते (चरित्तधम्मो के०) चारित्रधर्म जाणवो कह्यो (तस्स के०) ते चारित्रधर्मनो (आहारो के०) आधार ते (साहुवग्गत्ति के०) साधुनो वर्ग ने इति एटले एम जाणवो. जे कारण माटें जेवारें कोइ पण साधु न पामीयें, तेवारें चारित्रधर्म पण न पामीयें, अने जेवारें साधु पामीयें, तेवारें चारित्रधर्म पण पामीयें ॥ यतः ॥ पुरिमंतिम अठ्ठ, तरेसु तिठस्स नहि वुठेठ ॥ मचिवएसु सत्तसु, इतिय कालं तु वुठेठ ॥ १ ॥ चवनागं चवनागो, तिन्निय चवनाग पलिय चवनागो ॥ तिन्नि य य चवनागो, चवचनागोय चवनागो ॥ २ ॥ इति प्रवचनसारोद्धारे ॥

७ (आयरिय के०) आचार्य ते जे ज्ञानाचारादिक पंचाचार पालवाने विषे तत्पर होय, गत्रीश गुणें करी विराजमान सुविहित शुद्धप्ररूपक, सारणा, वारणा चोयणा पडिचोयणाने विषे तत्पर सांप्रत विजयमान,तपागछाधिराज श्रीविजयसेनसूरि पट्टालंकारहार हीर श्रीविजयदेवसूरीश्वर प्रमुख जाणवा ॥ यतः ॥ सम्मत्त नाण चरणा, पत्तेयं अठ्ठठ भेइआ ॥ बारस भेठ य तवो, सूरि गुणा हुंति छत्तीसा ॥ १ ॥ अथवा ॥ आयाराइ य अठठ,तहचेव दसविहो य वियकप्पो ॥ बारस तव गवस्सग, सूरिगुणा हुंति छत्तिसं ॥ २ ॥ इति प्रवचनसारोद्धारे. ए गत्रीशीयो घणा प्रकारें ने.

८ (उवयाया के०) उपाध्याय ते जेनी पासें आवीने सूत्र नणीयें, ते जाणवा. (तउ के०) तिहां आचार्य अने उपाध्यायने विषे साधु यकी (विसेसगुणसंपया के०) विशेष गुण संपदा ने, माटें साधुयकी जुदा कह्या ने ॥ यतः ॥ पडिरूवो तेयस्सी, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को ॥ गंनीरो धीइमंतो, उवएसपरो य आयरीठ ॥ १ ॥ अपरिस्सावि सोमो, संगह सीलो अनिग्गह मइय ॥ अविकंचणो अचवलो, संपंत हियठ गुरु होइ ॥ २ ॥ एवा श्रीआचार्य नगवान् तेना पदने जे योग्य होय,तेहने उपाध्याय पद देवाय. तेमाटें उपाध्याय पण एवाज गुणवंत जोइयें ॥ १९॥

९ (पवयण के०) प्रवचन ते (धम्मसंघो के०) अथवा एटले समस्त श्रीनंदनें कहीयें तेमाटें साधु, साध्वी, श्रावक, अने श्राविका, ए चारे श्रीतीर्थंकरनी आज्ञा पाले आज्ञायुक्त होय ते प्रवचन कहीयें ॥ यतः

॥ एगो साहु एगा, य साहूणी सावउ य सड्ढीवा ॥ आणाजुत्तो संघो, सेसो पुण अट्ठि संघाउ ॥ १ ॥ तो सगचूउ सूरि, डुप्पसहा साहुणीय फग्गुसिरी ॥ नाइलसड्ढो सड्ढी, सच्चसिरी अंतिमो संघो ॥ २ ॥ दसपालिय जियकप्पा, वस्सय अणुउगदार नंदिधरो ॥ सयसं इंदाइनउ, ठठुग तवो ड दुह तणू ॥ ३ ॥ गिहिवय गुरुत्त वारस्स, चउ चउ वरिसोकयछमो अंते ॥ सोहम्मि सागराऊ, होई तउ सिविहि नरहे ॥ ४ ॥ सुयसूरि संघ धम्मो, पुव्वण्हे छिज्जहीय गणिसायं ॥ निवविमलवाहणो सुहु,म मंति नयधम्म मवण्हे ॥ ५ ॥ वीसाणवास सहसा, नवसय तिमास पंचदिण पहरा ॥ इक्का घ डिया दो पल, अक्कर इगुयाल जिणधम्मो ॥ ६ ॥ इयं डुस्सम कालो, होइ इगवीस वास सहसेहिं ॥ डुस्सम डुस्सम कालो, एवइ माणोय ना यवो ॥ ७ ॥ इति दीवालीकल्पे ॥ तेमाटें तीर्थंकरनी आज्ञा रहित जो घ णोए संघ होय, तो पण तेने असंघ कहीयें. एटले टोलुं कहीयें.

१० (इहं के०) ए श्रीजिनशासनने विषे सिद्धांतना जाण पुरुषो ठे, ते (दंसणमिहंतिसम्मत्तं के०) समकेतदर्शनने इछंति एटले वांछे ठे,ते समके त क्षायिकादिक पांच नेदें जाणवुं. जेमाटें जे शुद्धदेवने देवबुद्धियें, गुरुने गुरुबुद्धियें अने धर्मने धर्मबुद्धियें ग्रहण करे, तेने सूधुं समकेत कहीयें ॥ (विणउदस्सणहिमेसि के०) दशनो विनय यथायोग्य पणे जेहनो जेम करवो घटे, तेनो तेम विनय (कायवोहोइ के०) करवो होय ते (एवंतु के०) ए आगल कहेशे ते चार प्रकारें विनय करवो ॥ २० ॥

हवे चार प्रकारें विनयकरवो कह्यो, ते चार प्रकार कहे ठेः–

एक (नत्ति के०) नक्ति करवे करी,बीजो (बहुमाणो के०) बहुमान करवे करी, त्रीजो (वणजणण के०) वर्णजनन ते प्रशंसा करवे करी,अने (नासणमवलुवायस्स के०) अवर्णवादनुं नासण एटले टालवुं ते करवे करी एटले अवर्णवादने अणबोलवे करी,चोथो (आसायणपरिहारो के०) आशातनाना परिहारने करवे करी, (विणउसंखेवउएसो के०) ए विनय में संक्षेपथकी कह्यो. बीजा ग्रंथोने विषे विस्तारें ठे पण इहां अल्पमति तुछ मति जीवोने संक्षेपें कहीयें तो समजे माटे संक्षेपें कह्यो ॥ २१ ॥

हवे ए चार नेदनां लक्षण कहे ठेः–

नत्ति बहिं पडिवत्ति, बहुमाणो मणसि निप्नरापिई ॥ वसाजणणं तु तेसिं,

जहन्नु सढि,कर जिठ मज्जुग्गहो सेसो ॥ तथा ॥ चउदिसि गुरुग्गहो इह,अहु ठ तेरस करे सपर पक्के ॥ अणनुन्नाय ससद्दा,न कप्पए तह पविसेउं ॥२३॥

॥दसनेय विणय मेयं, कुणमाणो मणुवोवि गयमाणो ॥ सद्दहइ विणय मूलं, धम्मंति विसोहए सम्मं ॥ २४ ॥ अर्थः-(दसनेयविणयमेयं के०) ए दश नेदनो विनय ते प्रत्यें (कुणमाणो के०) करतो थको एवो (म णुवो के०) मनुष्य उत्तम नव्यजीव ते कहेवो होय? तोके (विगयमाणो के०) विगतमान एटले गयुं ठे अनिमान जेनाथकी एवो होय ॥ यतः ॥ कोहो पीई पणासेइ, माणो विणय नासएे ॥ मायामित्तिणि नासेइ, लोहो सवविणासणो ॥ १ ॥ तथा ॥ मर्दयमानमत्तगजदर्प्पा, विनयतरीरविना शनसर्प्पा ॥ क्षिणोदर्प्पहेपवादनोपी, यस्य न तुल्यो नुवनेऽकोपि ॥ २ ॥ ए आमराजाने अनिमान टालवा माटे बप्पनट्टसूरिनुं कहेलुं वाक्य ठे ते संबंध बप्पनट्टसूरिना प्रबंधथकी जाणवो ॥

ते पुरुष (विणयमूलधम्मं के०) विनय ठे मूल जेनुं एवो जे धर्म तेने (सद्दहइ के०) सर्द्दहे (इति के०) ए प्रकारें (सम्मं के०) समकेत प्र त्यें (विसोहए के०) विशुद्ध करे निर्मल करे ॥ यतः॥ इणमेव निग्गंथ पा वयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुस्सं नेयाउ असंसद्धं सल्लकत्तणं सिद्धिम ग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निवाणमग्गं अवितह मवि संधिसवडुक्खपहीणम ग्गं इहविया जीवा सिय्झंति बुय्झंति मुच्चंति परिनिग्घायंति सवडुक्खाणमंत करं ति. एम सम्यक्त्व शुद्ध करे. श्रीजिनशासननेविषे विन यमूलधर्म जाणवो.

ग्रंथांतरें बावन प्रकारें विनय कह्यो ठे ॥ यतः ॥ तिह्यर सिद्ध कुलग ण, संघ किरिय धम्म नाण नाणीणं ॥ आयरिय गुरुवज्झाय, गणीणं तेर स पयाइं ॥ १ ॥ अणसायणाय नत्ति, बहुमाणो तहय वसु संजलणा ॥ तिह्यराइ तेरस, चउगुणा हुंति बावन्ना ॥२॥ इति प्रवचनसारोद्धारे॥२४॥

हवे विनय उपर कथा कहे ठे. आ नरतक्षेत्रने विषे कुसुमनामा नग र ने, तिहां जेम अलका नगरीने विषे धनद तथा जेम देवलोकने विषे इंड अने आकाशने विषे चंड्मा शोने,तेम ते नगरीने विषे धनद एवे ना में राजा राज्य करे ने. तेने पद्मावती एवे नामें स्त्री ठे, ते स्त्री नर्तार सं सार संबंधी सुख नोगवतां घणे मनोरथें तेमने घेर पुत्रनो जन्म थयो,ते नुं नुवनतिलक एवुं नाम दीधुं. पठी ते कुमर अनुक्रमें जेम शुक्लपक्षनो

चंद्रमा वधे,तेम महोटो थयो. तेने निशालें नणवा मोकल्यो ते सर्व. क लामां प्रवीण थयो, राजधुरंधर थयो.

एकदा प्रस्तावें राजा राज्यसना नरी बेठो छे. एवामां सुवर्णदंम हस्त धार पोलीयो आवी विनति करवा लाग्यो के हे स्वामिन् ! रत्नस्थलपुर नो स्वामी अमरचंद्रराजा छे तेनो प्रधान आव्यो छे, ते तमारा दर्शन वां छे छे. माटें शी आज्ञा आपो छो ? राजायें कह्युं एने तेडी लावो. प्रतिहा र तेडी आव्यो. प्रधानें प्रणाम करी विनति करी के हे स्वामी! रत्नस्थल पुरनो स्वामी अमरचंद्रराजा तेहने यशोमती एवे नामें पुत्री छे, ते तमारा पुत्र नुवनतिलक कुमरना गुण सांजली तेनी उपर गुणानुरागिणी थइ छे. अने कहे छे के परणुं तो नुवनतिलक कुमरनेज परणुं अन्यथा बीजाने पर णुं नहीं माटें तमने अमरचंद्रराजायें विवाहनी विनति करवा मुफने मो कल्यो छे, ते वात सांजली राजा हर्ष पाम्यो अने चतुरंगिणी सेना सहित तथा कंठरव एवे नामें सामंतसहित नुवनतिलककुमरने अमरचंद्रराजाना प्रधानपुरुषनी सायें मोकलतो हवो. ते अनुक्रमें सिद्धपुरनगरनी नजीक जइ उतख्या, लोक मेरा तंबु दीये छे, जमवानी सङ्काइ करे छे, एवामां अकस्मात् ते कुमर पोताना रथ उपरथी ढली पड्यो अने मूर्छा आवी गइ. पाषाणशिलानी पेरें अचेतन थइ पड्यो. तेवारें त्यां हाहाकार थइ रह्यो. तिहां अनेक वैद्य मांत्रिक तांत्रिक मल्या, तेणें घणा उपचारो कीधा, पण ते सर्व उपर नूमिकायें जेम वर्षाद निःफल थाय, तेनी पेरें निःफल थया. कंठरव सामंत घणुंज डुःख धरवा लाग्यो ॥यतः॥ कम्माणंठिइजीवा, ण गइ तह पुग्गलाण परिणामं ॥ सव्वणु चेव जाणइ, अहवा सव्वणुसरि सावि ॥१॥ नचंता कीडंता, कम्मं कुव्वंति निग्घणा जीवा ॥ पछा तस्स वि वागा, रुयंति कलुणं महा डुरका ॥ २ ॥

एवामां नाग्ययोगें ते उद्यानने विषे कोइ केवलज्ञानी साधु पधाख्या, दे वतायें सुवर्णकमल रच्युं, तेनी उपर बेसी धर्मदेशना आपे छे. ते सांजली राजा प्रमुख सर्वलोक तेमने वांदवा गया अने कंठरव सामंतपण कुमरने तेडी तिहां केवली पासें आव्यो. पंचाभिगम साचवी देशना सांजलवा बे ठा. देशनामां केवलीयें कर्मस्थितिनो विचार कह्यो, तेवारें कंठरव सामंतें

पूछ्युं के हे भगवन्! आ भुवनतिलककुमरें श्यां कर्मकीधां ठे? के जेने योगें एने अकस्मात् महारोग उपनो?

तेवारें केवलीभगवान् ते कुमरना पाठला भवनी कथा कहेवा लाग्या धातकीखंमना भरतक्षेत्रने विषे भुवनागार नामें नगर ठे.तिहां एकदा प्रस्ता वें आचार्य घणा साधुना परिवारें परवखा थका पधाखा. ते गहमांहे वासव एवे नामें शिष्य घणो अविनीत ठे,मुनिराजरूप हंसनी मांहे बगला सरखो ठे, संक्लिष्ट अध्यवसायवालो महाकषायी विपरीत शिक्षित अश्वनी पेठे ठे,तेने एकवार गुरुयें कह्युं के हे महानुभाव! तमें साधुउंनो विनय करो, जेथी तमने रुडुं थाय ॥ यतः ॥ विणउ आवहइ सिरी, लहइ विणउ ज सं च कित्तिं च ॥ न कयाइ डुविणीउ, सुकज्ज सिंधि वियाणाइ ॥ मुलाउ खंधप्पभावो डुमस्स, खंधाउ पच्चा समुविंति साहा ॥ साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता, तउसे पुप्फं च फलं रसो य ॥१॥ एवं धम्मस्स विणउ,मूलं परमो से मुखो ॥ जिणकित्ति सूअं सिंधि, निस्सेसं चाभिगह्रइ ॥ २ ॥

हवे ते शिष्य गुरुनी शिक्षा सांभली तेवारें कोपें बलतो थको बोलवा लाग्यो, के तमें एकला मनेज शुं कहो ठो? बीजा अटला वेग ठे. तेने केम नथी कहेता? एकला महारी पठवाडेज काव्डो बांधी लाग्यो ठो? इत्यादि वचन बोलतो प्रद्वेष वहेवा लाग्यो. साधु ऊपर डुष्टात्मा थको साधुने मारवाने अर्थे ऊठ्यो, तेने बीजे साधुयें वारी राख्यो. पठी ते प्रद्वेषें करी पाणिपात्रमांहे तिलपुट विष नाखतो हवो. ते विष नाखीने वली बिहीतो थको ऊठीने नाशि गयो, मुख्य यति पाणी पीवा लाग्यो,तेने शासन देवतायें वारी राख्यो, अने कह्युं के हे साधु! तमें ए पाणी म पीवो. एमां पहेला पापीयें विष नाख्युं ठे, पठी साधुयें ते पाणी जयणायें परठव्युं.

हवे ते वासव नामें कुशिष्य जे पोतानी मेलेंज भय पाम्यो थको नाशी गयो हतो, ते अरण्यने विषे भूख तृषा खमतो दावाग्निमांहे बल्यो,रौद्र ध्यानें बाल मरण करी सातमी नरकपृथ्वीने विषे तेत्रीश सागरोपमने आउखे नारकी थयो ॥ यतः ॥ संतिमेयं डुवेठाणं, अरकाया मारणंतिया ॥ अकाम मरणं चेव, सकाम मरणं तहा ॥ १ ॥ बालाणं अकामं तुमा, मरणं असतीभवे ॥ पंमियाणं सकामं तु, उक्कोसेणं सतीभवे ॥ २ ॥ इति श्रीउत्तराध्ययनसूत्रे ॥

हवे सातमी नरकथी चवी मत्स्यादिक तिर्यंचादिकना माहा दुःख नव भोगवतो थको साधुघातनी मनसानुं कर्म जे हतुं, तेने अकामनिर्जरायें क्षय प्राय करतो करतो हमणां धनदराजानो पुत्र भुवनतिलक एवे नामें थयो छे. ऋषियातनुं कांइक कर्म शेष रह्युं हतुं, ते हमणां उदय आव्युं. तेमाटें अकस्मात् रोग ऊपनो, जेमाटें कर्म तथा रण ए बे सरखांज छे. जेम मागनार प्रस्ताव पामे अवश्य रण मागे, तेम कर्म पण प्रस्ताव पामे अवश्य उदय आवेज. तेवारें कुमरें केवलीप्रत्यें पूछ्युं,के महाराज! ए महारो रोग क्यारें उपशम थाशे? तेवारें केवलीयें कह्युं के तें कर्मनो घणो भाग जोग व्यो, माटें हवे तरत क्षय थइ जाशे, पण तहारें हजी बीजां कर्म घणां छे, माटें ते तो जो तुं दीक्षा ले, तोज क्षय थाय. तिहां पूर्वनव सांजलवाथी कुमरने जातिस्मरण ज्ञान उपनुं, तेथी वैराग्य पाम्यो. तेवारें कंवरवादिक सामंतोनी सार्थे दीक्षा लीधी. पहेले जवें अरिहंतादिक दशेनी आशातना करी हती, तेहनी आलोयणाने अर्थे श्री अरिहंतादिक दशेनो विनय करवो अंगीकार कस्रो.

हवे दीक्षा लीधी सांजलीने यशोमती मूर्छा खाइ भूमियें पडी तेने सखीयें शीतलोपचारें करी सावधान करी तेवारें विलाप करवा लागी, तेने सखीयें कह्युं के चिंता म कर. ए वर गयो तो जवा दे. अमें तुजने बीजो राजकुमर जोइने पाणिग्रहण करावी देशुं. तेवारें यशोमती बोली के हे सखीयो! तमें ए असत्य वचन म कहो. महारे तो आ भवमां पति पण एज अने गुरु पण एज छे, माटें जो महारो पति न थयो, तो हवे हुं एने महारो गुरु करीश. एवुं कही ते कुमरी, माता पितानी आज्ञा मागी, दीक्षा लेइ विकृष्ट तपश्चर्या करती विचरवा लागी.

हवे कुमरनो परिवार पाछो वली गयो,तेणें जइ कुमरना माता पितानी आगल सर्व वात कही, ते सांजली कुमरना विरहथी राजा दुःख पाम्यो, अने दीक्षा लीधी, तेमाटें हर्ष पण पाम्यो ॥ यतः ॥ ते धन्ना ते साहू,तेसिं पसंसा सुरेहिं किज्जंति ॥ जेसिं कुडुंब मझे,पुत्ताई लिंति पवज्जं ॥१॥ ते धन्ना ते साहु,पवज्जंताण पुत्तपुत्तीणं॥वीवाहम्म हुंसमिवं,कुणंति पवज्जमहिमं जे॥

हवे ते ऋषि समस्तसाधुनुं एकाकीपणे वेयावच्च करवा लाग्यो, तेनीकेवलज्ञानी साधु पण प्रशंसा करवा लाग्या. जेम भरतचक्री अने बाहुबलीयें

साधुना विनयवेयावच्च कीधां, तेम एणें दशेनुं वेयावच्च कर्युं तेमां वली सा धुनुं विशेषथी विनय वेयावच्च करवा लाग्यो. तेम वली घणा नव्यजीवोने केवलकर्मनी निर्जरा थवाना कारण माटें पोतानाज पूर्वला नवना कांइ कर्मनी धर्मकथा उपदेशमां संजलावीने प्रतिबोध देतो हवो. ते साधु जे कांइ धर्मोपदेश आपे तथा तप,जप, विनय वेयावच्चादिक जे कांइ करे, ते सर्व कर्म निर्जरा हेतुयें करे, परंतु कांइ इह लोकना स्वार्थमाटें करे नहीं, जे माटें जे कोइ साधु इह लोकना स्वार्थें धर्मोपदेश करे,ते गृहस्थें सांजलवा पण नहीं ॥ यतः ॥ से निरकूधम्म किट्टेमाणे, णो अन्नस्स हेउ धम्मं आ इस्केजा. णो पाणस्स हेउ धम्मं आइस्केजा. णो वत्थस्स हेउ धम्मं आइ स्केजा. णो लेणस्स हेउ धम्मं आइस्केजा. णो सयणस्स हेउ धम्मं आइ स्केजा. णो अन्नेसिविरुवाईणं कामनोगाणं हेउ धम्म माइस्केजा. णो अगिलाए धम्म माइस्केजा. नन्नछ कम्मं निज्जरठियाए धम्म माइस्केजा. इहखलु तस्स निरकूस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म उठाय वीराअस्सि धम्मे समुठिया ते तस्स निरकुस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म उठाणेणं उठाय ते वीराएवं सव्वोपगता ते एवं सव्वोविरता ते एवं सव्वोवसंता परिनि वुडा ॥ इति द्वितीयसूत्र कृतांगे ॥

हवे ते नुवनतिलक साधु निरपेक्षपणे दश प्रकारें विनय करी निरपेक्ष पणे तप करी, निरपेक्षपणे धर्मोपदेश आपी, पादोपगमन अणसण क री, सकलकर्म क्षय करी. आठ लाख पूर्व गृहस्थपणे, बहोंतेर लाख पूर्व साधुपणे, सर्व एंशी लाख पूर्वनुं आयु पाली मोक्षें पहोता. ए दश विनय नी उपर नुवनतिलक साधुनो दृष्टांत सांजलीने नव्यजीवें पण दश प्रकार नो विनय करवो. एज सांनलवानो सार ले. इति श्रीतपोगछाधिराज वि जय देवसूरीश्वर विजयमान राज्ये महोपाध्याय श्रीसकलचंद्रगणिविरचि ते श्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि श्रीसम्यक्त्वप्रकरणबालावबोधे दशप्रका रविनयस्वरूप वर्णननामा तृतीयोधिकारः संपूर्णः ॥ ३ ॥

हवे त्रण शुद्धिनुं द्वार कहे ले.

॥ मण वाया कायाणं, सुद्धी सम्मत्त सोहिणी तत्थ ॥ मण सुद्धि जिण जिणमय, वज्ज मसारं मुणइ लोयं ॥ २५ ॥ अर्थः—प्रथम मन प्रशस्त गणवुं अने दर्शनना निःशंकितादिक आठ आचार ले, ते मनें करी पाल

वा. तेने (मण के०) मनःशुद्धि कहीयें. अने एज आव आचार जे प्रशस्त वचनें करी पाले, ते (वाया के०) वाचा एटले वचनशुद्धि जाणवी. तेमज प्रशस्त कायायें करी पाले, ते (कायाणं के०) कायसंबंधी (सुद्धी के०) शुद्धि जाणवी ॥ यतः ॥ मनः संवृणु हे विद्व, न्नसंवृतमना यतः ॥ याति तंडुलमत्स्योऽाक्, सप्तमी नरकावनिम् ॥१॥ प्रसन्न चंद्रराजर्षे, मनः प्रसरसंवरो ॥ नरकस्य शिवस्यापि, हेतुजूतो क्षणादपि ॥ २ ॥ सार्थं निरर्थकं वा यन्, मनः सुध्यानयंत्रितम् ॥ विरतं दुर्विकल्पेन्यः, पारंगांस्तां स्तुवे यतीन्॥ ३ ॥ इति अध्यात्मकल्पडुमे ॥

ए त्रणे शुद्धि कहेवी ठे? तोके (सम्मत्तसोहिणी के०) सम्यक्त्वने शोधनारी ठे. जो मनःशुद्धि होय तो समकेत शुद्धि थाय ते विना शुद्धि थाय नहीं. जेम के अनंतानुबंधीया चार कपाय क्षय थई जाय, तो जीव समकेत पामे, अने वली पाछुं समकेत जाय, तेवारें पण अनंतानुबंधीयाना उदयथकी जाय, जेमाटें अनंतानुबंधीया चार कपाय, ते समकेतने घात करे, अने अप्रत्याख्यानीया चार कपाय ते देशविरतिने घात करे, तथा प्रत्याख्यानीया चार कपाय ते चारित्रने घात करे, तथा संजलना चार कपाय ते यथाख्यात चारित्रने घात करे, तेमाटें जिहां अनंतानुबंधीया चार कपाय होय, तिहां समकेत न होय तेथी त्यां मनःशुद्धि कहेवाय नहीं. केम के मनःशुद्धि जे ठे, ते समकेतनी शोधनारी ठे.

(तड के०) तिहां ते सम्यक्दृष्टि जीव (मणसुद्धि के०) मनःशुद्धि करीज (जिण के०) श्रीवीतरागदेव अने (जिणमय के०) जिनमत ते श्रीवीतरागदेवें प्ररूप्यो जे धर्म ए बेहुने (वज्ज के०) वर्जीने ते विना सर्व लोक प्रत्यें (ससारं के०) असार करी (मुणइ के०) जाणे एटले जगत मांहे सार ते एक श्रीवीतरागदेव अने बीजो श्रीवीतरागनो प्ररूपेलो धर्म ए बे वानां ठे बीजो सर्व आलपंपाल ठे ॥ यतः ॥ श्रीवीतरागान्नपरोस्ति देव, स्तद्धर्मतोनास्त्यपरोहि धर्मः ॥ सम्यक्त्वलाजान्न परोस्ति लाजो,मोक्षाभिलापान्न परोभिलापः ॥१॥ तथा अयसाउसो एस अट्ठे एसपरमट्ठे एसेअणट्ठे। इति द्वीतियांगे ॥ २५ ॥

हवे मनःशुद्धि उपर नरवर्मराजानो दृष्टांत कहीयें ठेयें. आ जंबूद्वीप मांहेला दक्षिणार्द्ध जरतने विपे विजयवती नामें नगरी तिहां नरवर्म नामें

परंतु एना भाग्यनेयोग्यें तिहां कोइ दिवाकर नामा ऋषि निश्चल ध्यानक रीने अध्ययन करवा बेठा ले, तेना प्रभावथी जेनी ध्वजानेविषे गरुड ले एवो गुरुडध्वज नामें देवता त्यां आव्यो, एकाग्रपणे अध्ययन सांभळता थकां ते गुरुड देवताना महिमाथी वेहुनाइने विष उतरी गयुं. वे नाइ सा वधान थया, तेवारें दिवाकर साधुने जइ वांद्या, तेमने गुरुडदेवतायें कह्युं के साधुयें गुरुडोपपात अध्ययन गण्युं,तेना महात्म्यथी हुं आव्यो,तेथी त मारुं विष उतरी गयुं, तमें जीवता रह्या. नहींकां उरमान मातायें आपेला विषथी मरण पामीने दुर्गतियें जवुं पडत. माटे आ साधुनो उपकार मानो. ते कुमरोने देवताना वचनथी अने साधुना उपदेशथी वैराग्य उपनो तेथी दी क्षा लीधी. घणा वर्षपर्यंत चारित्र पाली तपश्चरणा करी अंतें समाधि मरण पामी सौधर्मदेवलोकने विषे विद्युत्प्रन अने विद्युत्सुंदर एवे नामे देवता थया.

विद्युत्प्रन तिहांथी चवीनें विजयवती नगरीने विषे मदनदत्त एवे नामें व्यवहारीयानो पुत्र थयो, पूर्वनवना अन्यास माटें ए मदनदत्तने देखवा थी तुजने आनंद उपजे ले ॥ यतः ॥ नयणे कहिऊ पेमं, नयणे दोसंपि परिफुडं कहइ ॥ नयणे कहिऊ कामं, नयणे वेरग्गमुवदिसइ ॥ १ ॥

पढी ते देवता ए वृत्तांत सांजळीने हर्ष पाम्यो थको एकावली हार म ह्यारा कंठमां पहेरावतो हवो. वळी ते देवता साधुप्रत्यें पूछतो हवो के, हे स्वामी! मुजने आलस घणुं आवे ले तेनुं शुं कारण हशे? मह्यारो कल्पवृ क्ष प्रकंपायमान थाय ले,मह्यारां वस्त्र रजें करी मलिन थाय ले. तेवारें सा धुयें कह्युं के तह्यारुं आयुष्य हवे शेष अल्प रह्युं ले. देवतायें पूछ्युं के हुं ग वीने क्यां उपजीश? साधुयें कह्युं तुं विजयवती नगरीयें नरवर्मराजाने घे र हरिदत्त एवे नामें पुत्र थाइश. तिहां तुं मदनना कंठनेविषे एज हार दे खीने प्रतिबोध पामीश. एवुं साधुनुं वचन सांजळी देवता हर्षवंत थयो थको साधुने वांदीने स्वर्गे गयो.

पाळलथी मदनदत्तें साधुने पूढ्युं, कहो स्वामी! ए हार देवता क्यां थ की पाम्यो? तेवारें साधु कहेवा लाग्या के,पूर्वे चमरचंचा राजधानीनेविषे नवो चमरेंद्र उपनो, तेणें अवधिज्ञानें जोयुं, तो पोताना मस्तक उपर सौ धर्मेंद्रनुं सिंहासन दीठुं; तेवारें अमर्ष करतो ले मह्यारा मस्तक उपर को ण चढी बेठो ले? तेने सामानिकादिक कहेवा लाग्या के, स्वामी! ए सौध

मेंड् जे. अनादिकालनी ए स्थिति छे, कोइथी टली जाय नहीं. इंद्रे कह्युं, पूर्वे सर्व इंड् असमर्थ थया. कोइ टाली शक्यो नहीं,पण हुं टालीश. एम कही ते रीशने वशें सर्वेनुं कहेण अवगुणीने सुसीमार पुरना उद्याननेविषे श्रीमहावीरजगवान प्रतिमायें रह्या छे, तेनुं शरण करी चाल्यो ॥ य तः ॥ किंनिस्साएणं जंते असुरकुमार देवा उड्ढउप्पयंति गोयमा ॥ अरिहं तेवा, अरिहंत चेइयाणि वा, अणगारे वा जावियप्पाणो निस्सियाए उड्ढ उप्पयंतित्ति. ते समयने विषे श्रीमहावीर विद्यमान हता माटें तेमनुं शरण करी चाल्यो. महाजयंकररूप विकूर्वी सौधर्मदेवलोकनेविषे गयो. तिहां जयंकररूप देखी देवांगना त्रास पामी सौधर्मदेवलोकनेविषे हालकल्लोल थई रह्यो, इंद्रे अवधिज्ञानें करी जोयुं तो चमरेंड्ने दीठो, तेने आवतो जाणी वज्र मूक्युं, ते देखी अधोमुख फरी नाठो, तेवारें तेना कंठथकी हार इहांथी असंख्यातमे द्वीपें धरती उपर जई पड्यो.

हवे आगल चमरेंड् नाठो जाय,ते केडें वज्र चाल्यो जाय. एटले इंद्रे विचार्युं जे, चमरेंड् सौधर्मदेवलोकमां आवे तेवारें एक श्री अरिहंत, बीजुं अरिहंतनुं चैत्य, तथा त्रीजुं जावितात्मा अणगार.ए त्रणनी निश्रायें आवी शके, अन्यथा ते आवी शके नहिं. ए चमरेंड् श्रीमहावीर विद्यमान अरिहंतनी नीश्रायें आव्यो छे, तेमाटें रखे मारुं वज्र जगवंतनी आशातना करे! एहवुं विचारी इंड् पण केडे थयो, तेथी चमरेंड् अत्यंत सूक्ष्मरूप करी जगवंतना पग वचें पेठो ने वज्र जेटले जगवंतना पगनी ढूंकडुं आव्युं, एटले तो इंद्रे आवी लइ लीधुं. ते जगवंतना शरण कस्या, माटे चमरेंड्ने सौधर्मेंद्रें मूक्यो. पढी जगवंतने नमस्कार करी खमावी सौधर्मेंड् सौधर्मदेवलोकें गयो. चमरेंड् हाखो तेथी श्याममुख थयो थको चमरचचा राजधानीयें आव्यो. ते चमरेंड्नो हार विद्युत्प्रजदेवता पाम्यो. तेणें जाइनो प्रेम माटे विद्युत्सुंदर लघुजाइने ते हार आप्यो ने ते लघुजाइयें वली तुजने आप्यो, एवुं सांजली गुरुने नमस्कार करी तिहांथी चाल्यो, ते पच्चीश वर्ष लगण पृथ्वी उपर पर्यटन करी घणुं धन कमाइने तमारी पासें आव्यो छुं. हवे ते विद्युत्सुंदरदेव देवलोकथी चवी ताहरे घेर पुत्र पणे थयो छे.के नथी थयो? एवुं सांजली राजायें हरिदत्तकुमरने तेडावीने ते हार देखाड्यो. ने तेने ते

हार देखतांज जातिस्मरण उपनुं. तेथी पूर्वभव स्वरूप दीठुं, ने जेहवुं म दनदत्ते कह्युं हतुं, तेवुंज राजा आगल तेणे स्वरूप कह्युं.

हवे राजा चिंतववा लाग्यो के, जे प्रथम धर्मनो विवाद थयो, ते पुत्र नुं वृत्तांत सांभलवाथी महारो सर्व संदेह पोतानी मेले छेदाइ गयो. माटे आ त्रणे जगतमां एक श्रीअरिहंतनो धर्मज भव्यजीवोने संसारनी वीकने छेदनारो तथा स्वर्ग अने मोक्षना सुखनो दातार छे, एवो निश्चय कर्यो. एवा समयमां वनपालके आवीने राजाने वधामणी आपी के, हे स्वामी! आजे नगर बाहिर पुष्पावतंसक नामा वनने विषे घणा शिष्यना परिवारे परवर्या, चार ज्ञानना धारक, सुरासुरे सेवित एवा गणधर नामे गुरु स मवसर्या छे, एवुं सांभलीने जेम मेघनो शब्द सांभली मोर हर्ष पामे, तेम राजा हर्ष पाम्यो थको वनपालकने वधामणी आपी संतोषित करी पोते हस्ती उपर वेशी पुत्र, मित्रादिकेंसहित तेमज चतुरंगिणी सेना संघाते जइ आचार्यने वांदवा गयो, आचार्य प्रति पंचाभिगम साचवी वांदीने योग्य स्थानके वेसी धर्मदेशना सांभलवा लाग्यो. तिहां गुरु कहेवा लाग्या के,हे भव्यजीवो! सर्वधर्मनुं मूल द्वार एटले बारणांरूप, धर्मनो आधार, धर्म नुं भाजन, धर्मनो निधान, ते समकितज छे, तिहां जे देवनेविषे देवनी बुद्धि, अने गुरुनेविषे गुरुनी बुद्धि तथा धर्मनेविषे धर्मनी बुद्धि, ते सम्य क्त्व जाणवुं. अने जे तेथी विपरीत ते मिथ्यात्व जाणवुं. ते माटे सम्यक्त्व विना मोक्षप्राप्ति नहिं, अने मिथ्यात्वविना संसारनी वृद्धि नहीं.

तिहां देव ते रागद्वेषरहित श्रीजिनेश्वर जाणवा, तथा जे पंचमहाव्रत धारी साधु ते गुरु जाणवा, अने श्री भगवंतनो कहेलो दयामूल धर्म ते धर्म जाणवो, ए त्रण तत्त्वना आराधनरूप समकेत पाले छते, ते पुरु षने नरक अने तिर्यंचनी गति केवारें पण प्राप्त न थाय, तथा देवगतिनां सुख, मनुष्यगतिनां सुख अने मोक्षनां सुख वश थाय, जे प्राणी एक अंतर्मुहूर्त्तमात्र पण समकेतने फरसे, ते निश्चेथी अर्द्धपुद्गल परावर्त्तन मांहे सिद्धि पामे. एवो धर्म,गुरुपासेथी सांभलीने राजा पोताना पुत्रसहित समकेतपूर्वक श्रावकनोधर्म अंगीकारकरी हर्षधरतो पोताने घेर आव्यो.

एकदा देवलोकमां इंद्रमहाराजे नरवर्माराजानी प्रशंसा करी जे ए रा जा समकेतमां एवो दृढ थयेलो छे,के देवताथी पण चलाव्यो चले नहिं,

तेवारें सुवेगनामें देवता ते वचन खमी शक्यो नहिं, ने विचार्युं के हुं जइ तेने समकेतथकी चलावुं,पछी त्यां आवी अनाचारी साधुउनुं टोलुं बना व्युं एहवे नरवर्माराजा अश्वक्रीडायें निसरुया, तेणे ते टोलुं दीठुं. तेमां एक साधु, मदिरापान करे छे, एक साधु वेश्या संघातें क्रीडा करे छे,एक साधु उंधो कडें बांधी धनुष तीर ताणी मृगकेडें थयो छे. एम विचित्र प्रकारें साधु नां डुश्चेष्टित दीठां, त्यारें राजायें पूछ्युं के,ए तमारो शो व्यापार? साधुउ क हेवा लाग्या के, अमो जे लोकने धर्मोपदेश दहियें छेयें, ते धूतीयें छेयें, परंतु अमें पोतें तो ए करणी करीयें छेयें. राजा चिंतवे छे जे, जिनशासन मार्ग विषम छे,पण मोक्षनो मार्ग छे. ए मार्गथकी जे पड्यो तो तेहनुं अभा ग्य,ने जे ए मार्ग पामी पाधरो चाल्यो,पड्यो नहिं,तेहनुं भाग्य समजवुं. एम उलटुं राजानुं सम्यक्त्व दीपतुं थयुं, पण लवलेशमात्र मलिन न थयुं. जेम सुवर्ण अग्निमांहे घालीयें तो दीप्त थाय, तेम राजानुं सम्यक्त्व थयुं,पछी राजा यें ते यतियोने शिखामण दीधी, के आवुं चारित्र पामीने कां एवां नूंमां आ चरण आचरो छो? तमें तुरंत नरक पामशो,एहवुं कही पापथकी निवर्त्ताव तो हवो. देवता अवधि ज्ञानें करी जुवे छे तो राजानुं सम्यक्त्व चडतुं दीठुं, पण लेशमात्र पडतो परिणाम न दीठो.तेथी हर्ष पामी रूप प्रगट करी आ वी पगें लाग्यो, ने कहेवा लाग्यो के, धन्य तमारो अवतार, जेवी सभा मां वेग इंद्रमहाराजें तमारी प्रशंसा करी तेहथकी सवाई प्रशंसाने तमे यो ग्य छो, एहवुं कही माथानो मुकुट आपी राजानी गुणस्तुति करतो थको स्वर्गे गयो.ने इंद्र आगल जेहवी वात हती तेहवी कही. ते दिनथकी राजा निर्मल सम्यक्त्व पालतो हवो.छेहडे हरिदत्त कुमर संघातें दीक्षा लेइ संय म पाली तप तपी स्वर्गे पहोतो, अनुक्रमें मोक्षपद पामशे. ए सम्यक्त्वने विषे मनःशुद्धि उपर नरवर्माराजानुं चरित्र सांजली मनःशुद्धि करवी.

हवे वचनशुद्धिनुं स्वरूप कहे छे.

॥ तिथंकर चलणारा, हणेण जं मय सियइ न कज्जं॥ पछेमि तह्न नन्नं, देवविसेसेहिं वयणसुद्धि ॥ २६ ॥ अर्थः-(तिथंकरचलणाराहणेण के०) श्री तीर्थंकरना चरण कमलने आराधवे करी पूजवे करी (जं के०)जे (मय के०) महारा अंतराय कर्मने योगें करी पुत्र अथवा लक्ष्मी आदिक वस्तुसंबंधी कोइ पण (कज्जं के०) कार्य ते (नसियइ के०) सिद्ध न थयुं,

तो (तत्र के०) ते कार्यनेविषे (पत्तेमिनन्नं के०) अन्य देवप्रत्यें आराधन करवा जावं नहीं. ते अन्य देवनां नाम कहे छे. हरि, हर, ब्रह्मा, चंमी,चामुं मा, क्षेत्रपालादिक (देवविसेसेहिं के०) देवविशेष जाणवा, एटले वचनथी एवुं बोलुं, के नगवंतना पदकमल आराधतां अर्थसिद्धि थाउं. अथवा म हारा पूर्वकृत सबल अशुनकर्मने योगें ते अर्थसिद्धि न थाउं. तथापि हुं अ न्यदेवनी याचना करुं नहीं. ए (वयणसुद्धि के०) वचनशुद्धि जाणवी ॥२६॥

हवे ए वचनशुद्धि उपर धनपाल पंमितनो दृष्टांत कहियें वैयें. सकल देशमंमन श्रीमालवदेश छे, तेमां उज्जयणी नगरीयें नोजराजा राज्य करे छे. अने तेहज नगरीनेविषे वेदाध्यायी षट्कर्मनेविषे निरत एवो सोमचंद्र नामें ब्राह्मण रहे छे. तेने सोमश्री एवे नामें नार्या छे, ते जेम चंद्रमाने रोहिणी वल्लन छे, तेम ते ब्राह्मणने पण ते स्त्री अत्यंत वल्लन छे. सर्वगुण नी पात्र छे,तेने एक धनपाल अने बीजो शोजन, ए बे पुत्र छे. ते बेहु म होटा पंमित, सर्वशास्त्रना पारंगामी अने नोजराजानी सनाना मंमन छे.

हवे मध्यदेशने विषे वाराणसी नगरीमां गौतमगोत्री कुलयुत ब्राह्मण रहे छे, तेना बे पुत्र छे, एक महोटो नाइ श्रीधर अने बीजो लघुनाइ श्री पति छे, ते बेहु नाइ परस्पर प्रेमवंत चौद विद्याना जाण छे, ते प्रतिदिवस गंगास्नान करी ईश्वरनी पूजा करे. एकदा प्रस्तावें तेमने सोमेश्वर महा देवनी यात्रा करवानी मनीषा थइ. तेवारें बेहु नाइ पोताना खजानेविषे प्रज्वलित दीवा मूकी सोमेश्वरनी यात्रायें चाल्या, अनुक्रमें गुजरात देशें वर्द्धमान नगरें आवी रात वासो वस्या, तिहां बे पहोर रात्रि वीत्या केडें एक पुरुष दीवो, तेणे मस्तकें जटा मुकुटधारेलो छे, सर्वांगने विषे विनूति लगाडी, गले वासुकी नागनो हार पहेरेलो छे, नालस्थलनेविषे त्रीजुं लो चन धरे छे, अर्द्धांगें पार्वती छे, हाथमां त्रिशूल छे, माहापुष्ट शरीर अने उज्ज्वल वृषननुं वाहन छे, एवो ते पुरुष पहेला बे नाइयोनी आगल आ वी उनो रह्यो. तेने देखतांज बेहु नाइउ चमत्कार पाम्या थका तेने दंम वत् नमस्कार करी नाना प्रकारना छंदजातिनां नवां काव्य रची स्तववा लाग्या, तेवारें सोमेश्वर बोल्या के, तमें महारी यात्रा करवा आव्या गो? अने तमारो अत्यंतनाव महारा उपर छे, एवुं जाणीने हुं तमारी साहामो आव्यो छुं. हवे तमारी यात्रा फलीनूत थइ. हुं तुष्टमान थयो जे मागो ते

आपुं. ते वात सांजली वेहु जाइ हर्ष पाम्या थका कहेवा लाग्या के, आ कायायें अमोने शिववास आपो, तेवारें सोमेश्वरें कह्युं के, जो तमोने शिववासनी इछा होय, तो एहिज नगरमां श्रीवर्द्धमानसूरि ठे जेमनी धरणींद्र तथा पद्मावती सेवा करे ठे. तेनी तमें पण सेवा करो अने तेना कहेवा प्रमाणें चालो,के जेथी अजरामर शिववास पामो. एवुं कही माल्हा देव अदृश्य थया. प्रजात समयें ते वेहु जाइ पूठता पूठता पोषधशालायें आव्या, तिहां साधुउने नाना प्रकारनां तप करता सद्याय करता दीठा, तथा केटलाएक साधु काउस्सग्ग धारी, एकादशांगी अध्ययन करता दीठा, जेवारें पोषधशालाना मध्यजागें आव्या, तेवारें महोटा पादपीठ सहित सिंहासन उपर वेठेला अने वियायें करी साक्षात् बृहस्पति समान एवा श्रीवर्द्धमान सूरीश्वर प्रत्यें देखीनें वेहु जाइ आवी तेमने पगें लाग्या. दर्शन देखतांज हर्ष पाम्या. आचार्यें पूठ्युं तमें कोण ठो ? तेवारें तेणें सर्व वात अथथी ते इति पर्यंत मांमीने कही, ते सांजली वर्द्धमानसूरि खुशी थया, अने कहेवा लाग्या के, प्रथम-तमें श्रीजिनशासननो मार्ग समजीने पठी दीक्षा लो. एम कही वे जाइउने गुरुयें विनयमूल एवो श्रीजिनशासननो मार्ग समजाव्यो, तेथी जेम सूर्यनां किरण पसरवाथी अंधकारनो नाश थाय, तेम ते वे जाइनुं अज्ञान नाश पाम्युं अने सद्ज्ञाननो उद्योत थयो. तेवारें ते वेहु जाइयें दीक्षा लीधी. आचार्यें एकनुं जिनेश्वर अने बीजानुं बुद्धिसागर एवां वे नामो पाड्यां. ते वे साधु सर्वत्र विख्याति पाम्या, अनुक्रमें जिनागमना पारंगामी थया. सूरिना ठत्रीश गुणें बिराजमान जाणी वेहु जाइउने आचार्यपद दीधां. अने श्री वर्द्धमानसूरीश्वर कहेवा लाग्या के, हे वत्सो ! तमें अणहिलवाड पाटण जाउ. तिहां चैत्यवासी ठे,ते सुविहित साधुने पेसवा देता नथी, माटें तमें राजाने प्रतिबोध आपीने जेम सुविहित साधु तिहां सुखें विहार करी शके, तेम करो. एवी गुरुनी आज्ञा पामी पाटण गया पण तिहां रहेवाने कोइ स्थानकज मले नहीं.

हवे तिहां डर्लजराजानो पुरोहित सोमेश्वर जट्ट ठे,तेने घेर गया. ते पोताना पुत्रने वेद जणावे ठे. पण वेदना अर्थ विषम ठे, ते कहेता सखलाय ठे, तेवारें जिनेश्वरसूरियें ते वेदनी कांमीनो अर्थ अस्खलितपणे कह्यो, ते जोइ ब्राह्मण चमत्कार पामतो थको विचारवा लाग्यो के आ कोइ सा

ह्नात्कार ब्रह्मानुं रूप लइनेज आव्यो ठे. तेवारें आचार्यने पूठवा लाग्यो के, तमें आ वेदनी कांमीना विषम अर्थ केवी रीतें जाणो गो ? तेने आचार्ये कह्युं, अमें ब्राह्मण हता हमणां जैनी दीक्षा लीधी ठे,तेवारें सोमेश्वर भट्टें कह्युं के, तमें इहां रहो आपणे शास्त्रनी गोष्टि करियें आचार्यें कह्युं, चैत्य वासी अमोने रहेवा दीये नहीं. माटे अमाराथी इहां केम रहेवाय ?तेवा रें ते भट्टें पोतानी वेदशालामां आचार्योने राख्या. शुद्धमान अशनादिक आपी गोष्टि करतां सर्वशास्त्रोनेविषे दक्षपणुं देखी सोमेश्वर खुशी थयो.

एवामां चैत्यवासीना नफर आव्या ते आचार्यने काढवा लागा, तेवारें सोमेश्वरें डुर्लभराजाने जइ कह्युं के, तमारा राज्यने विषे तमो आम्रवृक्ष तो उन्मूली नाखो गो. अने अर्कतरु वावो गो. राजायें कह्युं ते केवी रीतें ? सोमेश्वरें कह्युं के आ सुविहित साधु सर्वशास्त्रना पारंगामी ठे तेने गामथी बाहेर काढाडो गो अने चैत्यवासी जे सर्व वातें हीण ठे,तेने राखो गो,ए विपरीत ठे.

एवी वात सांभलीने राजायें सर्व चैत्यवासीयोने कहेवरावी मोकल्युं के, जे कोइ ए सुविहित साधुने पराभव करशे, तेने हुं म्हारा नगरमांथी बाहिर काढाडी मूकाश ? एवी रीतें डुर्लभराजानो आदेश पामी, ते बेहु आचार्य तिहां पाटणमां चोमासुं रह्या, पठी बीजा पण घणा सुविहित तिहां आववा लाग्या. ते सांभली श्रीवर्द्धमानसूरि घणो हर्ष पाम्या.

हवे जिनेश्वरसूरि विहार करता उज्जयणी नगरीनेविषे गया, तिहां सोमचंद्रब्राह्मणनी सायें प्रीति थइ. तेमना मुखथी चार वेदनां व्याख्यान सांभली, सोमचंद्र खुशी थयो. प्रतिदिवस आवी ज्ञानगोष्टि करवा लाग्यो. एक दिवसें सोमचंद्रें कह्युं के,तमारा जेवा म्होटा पुरुषो सायें माहारे प्रीति थयेली ठे ठतां जो तमें माहारा पूर्वजोयें निधान दाटेलुं ठे, ते देखाडी नहीं आपो,तो ते प्रीति शा कामनी ? वली जो आप म्हारा पूर्वजोयें दाटेलुं निधान देखाडो ? तो तेमांथी अर्द्ध भाग तमोने आपुं. एवुं वचन सांभली गुरुयें तेनां ज्ञान जाणीने श्रुतज्ञानने बलें निधाननुं स्थानक देखाडयुं, प्रमाण पण कह्युं. ब्राह्मणें ते निधान खोदावी तत्काल प्रगट कीधुं, हर्ष पाम्यो थको गुरुने कहेवा लाग्यो के,एनो अर्द्धभाग तमें ल्यो. गुरुयें कह्युं के, अमें तो निधान मूकीने दीक्षा लीधी ठे. माटें एने लइने शुं करीयें ? तोपण थइ कह्युं म्हारी प्रतिज्ञाना क्यारें पण भंग न थाय, माटे तमें आो.

लइने तमारुं मन माने तेम करजो. पण म्हारी प्रतिज्ञा पूर्ण करो.
गुरुयें कह्युं के,सर्वथा अमारे द्रव्यनो कांइ पण खप नथी. परंतु जो त म्हारे प्रतिज्ञानो प्रतिबंध छे, तो तम्हारा बे पुत्रमांथी एक अमने वहोरावी आप, के जेथी तम्हारी प्रतिज्ञा पूर्ण थाय. सोमचंद्रें विचार करीने ते वचन अंगीकार कर्युं. पछी विचारीने निधान बे पुत्रने समजावी वहेंची आप्युं. पण बेहु पुत्र महामिथ्यात्वग्रस्त छे माटे तेनी आगल वात करी शके नहीं अने पुत्रो पण राज्यमानी, विद्या पारंगामी तथा धनाढ्य ए त्रणे गुणे करी अनिमानवंत छे, तेथी कहेवाय नहीं एम करतां सोमचंद्र छेल्ली अवस्थायें जेवारें रोगें पीडित थयो, तेवारें बेहु पुत्र आवी कहेवा लाग्या के, हे तातजी! तमारे जे कांइ इछा होय, ते कहो, तो पूर्ण करीयें. तेवारें सोमचंद्रें कह्युं के, म्हारी उपर रण छे,ते उपर राखीने मरुं छुं माटें तमें सुपुत्र छो, ते म्हारुं रण उतारो. पुत्रोयें पूछयुं के,तमारी उपर शुं रण छे? कोइनुं कांइ लीधुं होय तो कहो अमें तेने आपीने रणथी छोडावीयें? पितायें सर्ववृत्तांत कह्युं. तेवारें पुत्रो बोल्या, अमें तमारुं रण जरूर उतारशुं. तमें तेनी कांइ पण चिंता राखशो नहीं. एवुं पुत्रोनुं वचन सांजली सोमचंद्र हर्ष पाम्यो, अनुक्रमें परलोकें पहोतो. तेनी उत्तरक्रिया सर्व बेहु पुत्रें करी.

हवे बे नाइ विचार करे छे,के महाधूर्त श्वेतांबरें आपणा पिताने छेतर्यो ने, धूत्यो छे, छलमांहे पाड्यो छे, एटलाजमाटें जो हाथी मारमार करतो ताहामो आवे तो पण श्वेतांबरनी पोशालमांहे पेसवुंज नहीं. हवे ए कार्य आपणने करवुं पडशे, नहीं कां पितानो बोज शी रीतें पडे? पछी बे नाइउमांथी धनपालें कह्युं,हुं पितानुं रण उतारवा माटें श्वेतांबर थाइश? अने तुं घरमां रहे, तेवारें शोजन बोल्यो, म्हाराथी घरनो नार उपडे नहीं. माटे तुं घरमां रहे अने हुं श्वेतांबरनुं वचन अंगीकार करीश. पछी समस्त सज्जन वर्गने पूछीने शोजन ब्राह्मण श्रीजिनेश्वरसूरि पासें आव्यो, तेने गुरुयें पूछयुं. हे शोजन! तुं केम आव्यो? तेवारें शोजनें कह्युं के, मुजने जैनदर्शननी उपर श्रद्धा नथी. पण म्हारा बापनुं रण उतारवा आव्यो छुं,माटें जे कहो, ते करुं. तेवारें गुरुयें कह्युं के, श्रद्धाविना अमें कोइने दीक्षा आपता नथी, माटें अमारी पासें रहीने अमारो मार्ग समजी लइ पछी तम्हारुं मन माने, तो दीक्षा लेजे. एम कही तेने गुरुयें पोतानी पासें राख्यो. पछी

जेम जेम जिनशासननो मार्ग समजातो जाय तेम तेम मिथ्यात्व उंडुं थतुं जाय. एम जैनशास्त्र नणतां नणतां तेने जैनशासन उपर आस्था आवी, तेथी जेम सूर्य उग्याथी हिमनुं तेज गली जाय, तेम तेनुं मिथ्यात्व सर्व गली गयुं. तेवारें गुरुयें कह्युं, हे शोजन ! हवे तहारी इच्छा होय, तेम कर. तहारुं मन माने, तो दीक्षा ले. शोजन बोल्यो, मुजने दीक्षा आपो महारे कांइ संसारनी गरज नथी. गुरुयें पण तेने रूडो दिवस जोइने दीक्षा आपी. पठी ते शोजन मुनि, शास्त्र नणतां नणतां महाप्राज्ञ समस्त शास्त्रना पारं गामी थया. पण धनपाल पंमितें काव्यशक्तियें राजा नोजने वश करीना इना दुःख माटे वार वर्ष पर्यंत पोताना देशमां यतिनो विहार बंध कीधो.

एकदा प्रस्तावें शोजनसाधु गोचरीयें गया ठे, पण हजी गोचरीनो व खत थयो नथी, तेवामां देहरामां देव वांदवामाटे नवी थोइ करीने देव वांद्या. तिहां चोवीश तीर्थंकरनी स्तुति जोडवानुं ध्यान लाग्युं. हवे गोचरी पण करवी अने थोइ पण जोडवी. एम करतां कोइएक गृहस्थना घरने विषे गया, तिहां आहार लेवाने जोलीमांथी पातरां बाहेर काढयां, तेमां आहार लइने फरी पाठा पात्रां जोलीमां नाख्यां. तिहां एक पाषाणनी लोढी पडी हती, ते पण ते जोलीमांहे घालीने उपाश्रयें आव्या अने गुरु आगल गोचरी आलोइ पात्रां जोलीमांहेथी बाहिर काहाढयां तेवारें ते मांथी लोढी नीकली, गुरुयें पूठयुं. हे वत्स! आ शुं लाव्यो ? तेवारें शोजन मुनि सावधान थयो, अने गुरु आगलें कह्युं के हुं थोयो जोडवाना ध्यान मां हतो तेथीलोढी नाखवानुं ध्यान रह्युं नहीं. तेवारें गुरुयें पूठयुं थोइ केवा प्रकारनी जोडी ठे ते कही संनलावो. शोजनें कह्युं, "नव्यांनोज विबोधने कतरणेविस्तारिकर्मावली" इत्यादि चोवीश जोडाना यमकबंध ठंदुं काव्य कही संनलाव्यां ते सांजली गुरु हर्ष पाम्या घणीक सावाशी दीधी.

एकदा गुरुयें कह्युं के, हे शोजनमुनि ! तमें मालवे जइ धारानगरीने विषे धनपाल पंमितने प्रतिबोधीने जेम मालवामां यतिनो विहार थाय, तेम करो. एवी गुरुनी आज्ञा पामी शोजनसाधु धारानगरीयें गया. ते वखत तिहां धनपालपंमित तंबोल चावतो रक्त होठें अश्वक्रीडायें निकल्यो ठे, ते मार्गमां सामो मल्यो. हवे शोजनसाधुना आगला दांत महोटा ठे ते देखी ने ए शोजन ठे एवुं कांइ जाणतो नथी तेथी धनपाल हास्य करी कहेवा

लाग्यो के "गईन्दंत! नमस्ते" ते सांजली शोजनने विचार्युं जे जो पाठो उत्तर न आपुं, तो म्हारी पंमिताइ शा कामनी? एम चिंतवी शोजने कह्युं, "मर्कटास्य वयस्य सुखं" एवी रीतें पाठी बराबरीनी गाल सांजली, वेरीनाथा सरखी हैये लागी, पण पंमित जाणीने हर्ष पाम्यो थको कहेवा लाग्यो, "कस्य गृहे वसतिस्तव साधो?" तेवारें शोजनें कह्युं, "यस्य ममोपरि रुचिस्तस्य गृहे"

एवुं सांजली साधुनां वचन जाणीने धनपालें पोतानुं माणस साथें मो कलीने ते साधुने पोताना घरना उंटला उपर उतारो दीधो. अने केटलि एक वार पठी अश्वक्रीडा करी पोतें पण घरें आव्यो. अने शोजननी साथें गोष्टि करवा बेठो. साधुने पूठ्युं जे तमें म्हारा जाइने उंलखो ठो? शोजने कह्युं "तमें दीठे उंलखो!" तेवारें चमत्कार पाम्यो थको कहेवा लाग्यो के, शोजनसाधु तमेज ठो के? शोजने कह्युं हुंज हुं. अने तमने वंदाववा आव्यो हुं. ते सांजली हर्षवंत थयो थको आहारने अर्थें पोताने घेर तेडी गयो. तिहां ते साधु शुद्धमान आहार लीये, अने प्रतिदिन ज्ञाननी गोष्टि करे.

एकदिवस शोजनसाधु वहोरवा गया तेने वहोराववा माटे मश्करीमां त्रण दिवसनुं खाटुं दहीं आप्युं. तेवारें साधुयें कह्युं, ए अमारे कल्पे नहीं. तेने धनपालें कह्युं तमे ए खटपट मूको. खरुं कारण तो ए ठे जे ए त्रण दिवसनुं दही खाटुं थइ गयुं ठे,ते तमोने जावे नहीं तेमाटे ना कहो ठो.

साधुयें कह्युं एमां जीवोत्पत्ति थइ ठे धनपालें कह्युं जो एमां जीवो दे खाडो तो तमारी वात सत्य मानुं? अन्यथा मानुं नहीं. तमें कपट करो ठो.

साधु बोल्या,अमें कपट करता नथी ज्यो तमोने परीक्षा करवी होय तो जीवो देखाडी आपुं हुं. एम कही एक स्थालिकामां दधि लइ तेमां अल ता पोथी पलाली नाखी अने ते स्थालिका तडके मूकी तेने योगें सूक्ष्म वें इियजीव अलता उपरें प्रगट दीसवा लाग्या. ते धनपालने देखाड्या धन पाल देखीने यतिनां वचन उपर आस्थावंत थयो.

एम प्रतिदिन श्रीजिनधर्मना रहस्य समजावतां धनपालने धर्मउपर आस्था आवती गइ, अने मिथ्यात्व अंधकारदल टलवुं गयुं तेथी सम्य क्त्व उद्योत प्रगट थयो तेवारें पोतें कुटुंबसहित गुरुपासें सम्यक्त्वमूल बार व्रत उच्चर्यां प्रतिदिवस प्रथम श्रीजिनबिंबनी पूजा करे, पठी पाणी

पीये; पूजा कस्याविना कांइ पण चीज मुखमां प्रक्षेपे नहीं. एम समकेतनी दृढता थइ. तेथी तेने मिथ्यात्व, दीठुं पण रुचे नहीं एवो थयो.

हवे एकदा प्रस्तावें जोजराजा आहेडे चड्यो छे. ते महोटो आहेडो कस्या पछी परिश्रांत थयो एक वृक्षनी नीचें आवी बेगे, अने पंमितोने क हेवा लाग्यो के, आखेटकनुं वर्णन करो तेवारें सर्व पंमितोयें जेने जेवी रीतें मनमां युक्तियो आवी, तेणें तेवी रीतें आखेटकनुं वर्णन कस्युं. पछी राजायें धनपालपंमितनी साहामुं जोयुं, पण धनपालपंमित तो शुद्ध स मकेत धारी नवतत्त्वनो जाण छे, ते आखेटकनुं केम वर्णन करे? तेथी धन पालें विचार करीने नीचेंप्रमाणे काव्य कह्युं.

॥ श्रीजोजे मृगयां गतेपि सहसा चापे समारोपिते, ऽप्याकर्णांतगतेपि ल क्ष्निहिते प्येणांकलक्ष्मेपि च ॥ न त्रस्तं न पलायितं न चलितं नोत्कूर्दितं नो ल्लुतं, मृग्यां मद्दशिनां करोति दयितां कामोऽयमित्याशया ॥१॥ अर्थः- श्रीजोजराजा मृगया करवा गया त्यां तत्काल धनुष्य उपर बाण चढावी लक्ष आपीने हरणनी पासें बाण आव्यो तो पण ते हरण जयने पाम्यो नहिं, तथा नासी पण न गयो, तथा ते स्थानक पण मूकी गयो नहिं, तथा शब्द पण बोल्यो नहिं, तथा उंची फाल पण मारी नहिं. कारण केते मृगें एवो विचार कस्यो जे आ राजा छे तेज एक कामदेव छे ते मने वाहाली एवी मारी हरणी वश करी आपशे? एवी इच्छाथी त्यांज स्थिर थइ रह्यो.

॥ किं कारणं तुकविराज मृगा यदेते, व्योमोत्पतंति विलिखंति जुवं वरा हाः ॥ देव त्वदस्त्रचकिताः श्रयितुं स्वजाति, मेके मृगांकमृगमादिवराहमन्ये ॥ २ ॥ अर्थः-राजायें प्रश्न कस्यो जे, हे कविराज! हरणो आकाशमां स्फाल मारे छे,अने सूवरो जूमि विदारण करे छे,एनुं शुं कारण हशे? त्यारें धनपाल कवि तेनो उत्तर कहे छे के, हे राजन्! तारा शस्त्रनुं अत्यंत ती क्ष्ण तेज जोइने जयजीत थया थका स्वजातीय एटले ए मृगनी जातीनो जे चंद्रमामां रहेलो मृग, तेनो आश्रय लेवासारु मृगो आकाशमां उंची फालो मारे छे, अने सुवरो ते पोतानी स्वजातीनो मूल पुरुष जे आदि वा राह ते पातालमां छे तेनो आश्रय लेवामाटे पृथ्वी खोदे छे.

एम सांजलीने कोइ द्वेषीयें राजाने कह्युं जे ए कवि जैनी छे, तेथी मृग

यानुं वर्णन करशो नहिं,ते माटे एने मृगयानुं वर्णन करवाने कह्यो. ते सां
जळीने राजायें तेम कर्युं, ते उपरथी धनपाळ बोल्यो.

॥ रसातलं यातु यदत्र पौरुषं,कुनीतिरेषाऽशरणोह्यदोषवान् ॥ प्रहन्यते यद्वलिनाति दुर्बलो, हाहा महाकष्टमराजकं जगत् ॥ ३ ॥ अर्थः—जीवनी हिंसा करवी एवुं जे पराक्रम तेनो नाश थाउ. अरेरे ! ए महोटा कष्टनी वात छे अने आ जगत् पण राजरहित देखाय छे, जेमां अशरण तथा दोपरहित दुर्बल एवा पशुउने बळवान् मारवा जाय छे माटे ए अनीति छे.

ए काव्य सांजळी राजा कोपायमान थयो अने लालचोळ लोचन करी बोल्यो, हे धनपाळ ! ए तें शुं कर्युं? तेवारें धनपाळ आ प्रमाणें बोल्यो ॥

॥ वैरिणोपिहि मुच्यंते,प्राणांते तृणजक्षणात् ॥ तृणाहाराः सदैवेते, हन्यंते पशवः कथं ॥ १ ॥ अर्थः—जो मुखमां तृण लइ शत्रु आवे, तो तेने तेनो वेरी मारतो नथी तो निरंतर तृण नक्षण करनार एवा पशुउने मारवां ते शुं कहेवाय ? ए श्लोक सांजळी राजा जोजने करुणा उपनी तेथी धनुष्य नांगी नाख्युं, बाण नांग्या अने जावजीवसुधी आखेट कनुं पच्चरकाण कीधुं. राजा खुशी थयो धनपाळने सिरपाव आप्यो, पहेरामणी करी, साबाशी दीधी, अने कर्युं के तें मुजने पापथकी निवर्त्ताव्यो, माटें तुं महारो उपकारी छो.

पछी राजा आहेडाथी पाछो फरी पोताने घेर आवे छे. तिहां मार्गमां घणा ब्राह्मणोयें मळी यज्ञमां होमवा सारु यज्ञस्तंजने विषे छाग बांध्यो छे, ते करुणस्वरें बुंबारव करे छे, ते जोइ राजा धनपाळने पूछे छे के, आ बकरो शुं कहे छे? तेवारें धनपाळ पंक्तितें नीचेंप्रमाणें एक काव्य कर्युं.

॥ नाहं स्वर्गफलोपनोगतृषितोनाच्यर्थितस्त्वं मया, संतुष्टस्तृणजक्षणेन सततं साधो न युक्तं तव ॥ स्वर्गं यांति यदि त्वया विनिहता यज्ञे ध्रुवं प्राणिनो, यज्ञं किं न करोषि मातृपितृनिःपुत्रैस्तथा बांधवैः ॥१॥ अर्थः—हे राजा,आ बकरो एम कहे छे जे हुं स्वर्गनो अनिलाषी नथी तथा तेना सुखनी प्राप्ति करवाने माटे तमारी पासें में याचना पण कीधी नथी,केवल तृणनक्षण करीने सदा संतुष्ट एवो निरपराधी हुं छउं, छतां हे साधु ! मारी तमें हिंसा करो छो, ए कर्म तमने योग्य नथी. अने यज्ञमां जीवनी हिं

सा करवाथी जो ते जीवने स्वर्गप्राप्ति थती होय तो माता, पिता, पुत्र, ज्ञा इयोयें करीने यज्ञ केम करता नथी ?

ए श्लोक सांजलीने राजायें पूछ्युं के, त्यारें शुं यज्ञ करवाथी स्वर्गनी प्राप्ति नहिं थाय ? त्यारें कवि बोल्यो.

॥ यूपं छित्वा पशून् हत्वा, कृत्वा रुधिरकर्दमम् ॥ यद्येवं गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥ ६ ॥ अर्थः—यज्ञनो स्तंज तोडी नाखवाथी तथा पशुउनी हत्या करवाथी; तथा रुधिरनो कीचड करवाथी जो स्वर्गनी प्राप्ति थती होय, तो पठी नरकमां कोण जाय? वली राजायें पूछ्युं के, यज्ञ केवी रीतनो करवो? ते कही संजलावो. त्यारें कवि बोल्यो.

॥ सत्यं यूपं तपोह्यग्निः, प्राणास्तु समिधो मम ॥ अहिंसामाहुतिं दद्या, देष यज्ञः सनातनः ॥७॥ अर्थः—सत्यरूप यज्ञस्तंज तथा तपश्चर्यारूप अग्नि अने पोतानां प्राणरूप समिध, अहिंसारूप आहुति, एवी रीतनो जे यज्ञ, तेज नाश रहित निर्दोष यज्ञ जाणवो. अने यज्ञ पण तेनेज कहेवो. अने हिंसा कारक जे यज्ञ, ते निंदवा योग्य ठे. त्यारें राजायें पूछ्युं के, ए वात बीजाउने केम गमती नथी? तेनो उत्तर कवि बोल्या.

॥ हिंसा त्याज्या नरकपदवी सत्यमाजापणीयं, स्तेयं हेयं सुरतविरतिः सर्वसंगान्निवृत्तिः ॥ जैनोधर्मो यदि न रुचते पापपंकावृतेन्यः, सर्पिर्इष्टं किमलमियता यत् प्रमेही न जुंक्ते ॥८॥ अर्थः—नरकना मार्गरूप जे हिंसा तेनो त्याग करवो अने सत्य जापण करवुं, चोरी न करवी, विषय सुखनो त्याग करवो, अने सर्व परिग्रहनो त्याग करवो एवा उपदेशरूप लक्षणें करी युक्त उत्तम जैनधर्म ठे, ते ठतां पापी लोकोने ते जैनधर्म जो रुचतो नथी तो त्यां दृष्टांत कहे ठे के, जेम प्रमेह रोग ग्रस्त मनुष्यने घृत अरुचिकारक थाय ठे, तो ते घृत कांहिं दुष्ट कहेवाय ठे? तेनी पर्वे आहिं पण जाणवुं. ए वात सांजली राजायें वकरो मूकाव्यो, धनपालने घणुं सन्मान दीधुं, पठी राजा घरे आव्यो.

हवे एकदा प्रस्तावें राजा सरस्वतीकंठाजरण एवे नामें शिवना प्रासादनेविषे धनपालने सायें तेडी गयो, तिहां राजायें पूछ्युं के, हे धनपाल! आजना समयमां कोईमां एवुं ज्ञान ठे, के जेथकी चमत्कार उपजे? धनपालें कह्युं के, एवुं सम्यक्ज्ञान श्रीजिनशासनने विषे ठे, अन्यत्र तो मि

प्याल ठे, ते सांजली धनपालने जुगो पाडवामाटे राजायें कह्युं के, आ प्रासादनां त्रण द्वार ठे, ते मांहेला हुं कया द्वारमांथी पाठो नीकलीश? ते सांजली धनपाल पंमितें एक माटीना गोलामांहे कागल नाखीने थगीधर ना हाथमां आप्यो. अने थगीधरने कह्युं के,राजा बाहिर निकल्या पठी तुं आ गोलो राजाने आपजे. एम कही थगीधरने शीख दीधी. राजायें विचार्युं जे, त्रण द्वारमांथी एक द्वारनुं नाम एणें लख्युं हशे. माटे त्रणे द्वार ने पडतां मूकी शिलाटने तेडावी मंमपनी शिला पाठी हटावी उपरली वाटें राजा निकल्यो, निकल्या पठी थगीधरें माटीनो गोलो राजाने आप्यो राजायें ते गोलो नांजी मांहेथी कागल काढीने जोयुं, तो तेमां एवुं लखेलुं हतुं जे राजा शिलाट तेडी मंमपनी शिला पाठी करावी उपर द्वार करी निकलशे? ते वात वांचीने राजा चमत्कार पाम्यो अने धनपालने घणुं दान दइने श्रीजिनशासनने प्रशंसवा लाग्यो.

वली एकदा प्रस्तावें तेज शिवप्रासादने विषे धनपालपंमितने साथें तेडीने राजा गयो. त्यां राजायें तथा बीजा सर्व लोकोयें महादेवने नमस्कार कस्यो, अने धनपालपंमितें न कस्यो, तेवारें राजायें कविने पूछ्युं के, तुं केम नमस्कार करतो नथी? तेवारें कवियें आ प्रमाणें कह्युं.

॥ जिनेंद्रचंद्रप्रणिपातलालसं, मया शिरोऽन्यत्र ननाम नाम्यते ॥ गजेंद्र गंमस्थलदानलंपटं,शुनीमुखे नालिकुलं निलीयते ॥ ए ॥ अर्थः—जिनेंद्ररूपी जे चंद्रमा तेने वंदन करवाने उत्कंवित थयेलुं जे मारुं मस्तक,ते जिनेंद्रविना बीजाने नम्युं नथी अने नमस्कार करनार पण नथी; जेम हाथीना गंमस्थलपर बेसीने तेना मद करणना सुगंध लेवामां लंपट, एवा जे भ्रमरा ते कुत्तरीना मस्तक उपर बेसवाने कोइ दिवस इछता नथी. ते सांजली राजा रीशाणो अने विचार्युं जे, आ ब्राह्मणनी जाति ठे, ते अवध्य ठे, पण एणे शिवने उथाप्या माटे एनां नेत्र काढाडी लेवां जोइयें. पठी धनपालने राजायें कह्युं जे, तुं मत्तद्वेषी ठो. त्यारें फरी कवि बोल्यो.

॥ नवबीजांकुरजनना,रागाद्याः क्षयमुपागता यस्य ॥ ब्रह्मा वा विष्णुर्वा,हरिर्जिनो वा नमस्तस्मै ॥१०॥ अर्थः—मायारूपी प्रपंचना उत्पन्न करनारा एवा, जे काम, क्रोध, मद, मत्सर, लोज इत्यादिकथी रहित होय पठी

ते ब्रह्मा हो, वा विष्णु हो, वा महेश्वर हो, अथवा जिनेश्वर हो, तेने मा रो नमस्कार होजो. ए श्लोकथी पण राजा बराबर प्रसन्न थयेलो न दीठो, तेवारें धनपालें राजानो अनिप्राय जाणीने विचार्युं जे राजा खुशी थाय तेम करुं? पण श्रीजिनेंद्रविना अन्य देवनी स्तुति तो कदापि करुं नहिं.

हवे राजा महादेवनुं देहरुं मूकी पोताना घर नणी चाल्यो, मार्गमां एक वृद्धा मोशी मस्तक कंपावती हाथ धूजावती साहमी मली,ते जोइ राजायें पोतानी साथेंना सर्व पंमितोने पूछ्युं जे आ मोकरी शिर धूणावती कर कंपावती शुं कहे ठे? ते सांजली पंमितो कहेवा लाग्या.

तेमांएक पंमित बोल्यो ॥ दोहा ॥ कर कंपावे शिर धुणे, बूढी काहुं कहेइ ॥ हकारंता जम नडह, नन्नंकार करेइ ॥ १ ॥ बीजो पंमित बोल्यो के ॥ श्लोक ॥ जरायष्टिप्रहारेण,कुब्जीनूता हि वामना ॥ गतं तारुण्यमाणिक्यं,निरीक्षत पदे पदे ॥ २ ॥ पठी राजायें धनपालनी साहामुं जोयुं, तेवारें धनपाल नीचें प्रमाणें श्लोक बोल्यो,

॥ श्लोक ॥ किं नंदी किं मुरारिः किमु रतिरमणः किं विधुः किं विधाता, किंवा विद्याधरोऽयं किमुत सुरपतिः किं नलः किं कुबेरः ॥ नायं नायं न चायं न खलु नहि न वा नैव चासौ न चासौ,क्रीडां कर्तुं प्रवृत्तः स्वयमिह हि तले नूपतिर्नोजदेवः ॥ ११ ॥ अर्थः—हे राजन! आ मोशी तमोने जोइने एम कहे ठे, जे आ कोण रुड़ ठे? अथवा साक्षात् विष्णु ठे? के कामदेव ठे? तथा चंड ठे? के ब्रह्मा ठे? के कोइ गंधर्व ठे? के इंड ठे? के नलराजा ठे? के कुबेर ठे? नहिं नहिं आ रुड़ न होय, विष्णु न होय, मदन न होय, चंड न होय, ब्रह्मा, गंधर्व, इंड, नल, कुबेर एमांनो कोइ नथी! पण आ पृथ्वीपर क्रीडा करवासारु नोजराजा आवेला ठे.

ए काव्य सांजली राजा घणो हर्ष पाम्यो. अने कहेवा लाग्यो के,हे धनपाल! वर माग. जे माग ते आपुं. तेवारें धनपालें कह्युं के,चक्षु युगल आपो. ते सांजली राजा धनपालमां मनोगत नाव ज्ञान देखी चमत्कार पाम्यो,पठी घणुं दान आपीने धनपालने खुशी कर्यो.

हवे धनपालपंमितें श्रीरुषनदेवना वर्णनमय श्रीरुषनपंचाशिका नामें ग्रंथ कर्यो, तेने शिलामां कोरवाने सरस्वतीकंठानरण प्रासादनेविषे स्था

एकदा नोजराजानुं काव्य करी नोजराजाने संनलाव्युं, ते कहे ठे.

॥अन्त्यकृता वसुमती दलितं रिपूरः,क्रोडीकृता बलवता रिपुराज्य लक्ष्मीः॥
एकत्र जन्मनि कृतं तदनेन यूना, जन्मत्रये यदकरोत्पुरुषः पुराणः ॥ १ ॥

अर्थः—त्रण जन्में करी पुराणपुरुष जे विष्णु,ते जे कार्य करता हवा, ते त्रण कार्य युवान एवा नोजराजायें कर्यां,ते जेम के,विष्णुयें वाराहावतार मां पृथ्वीनो उद्धार कर्यो, अने नोजराजें आ जन्ममां पृथ्वीनो उद्धार कर्यो, विष्णुयें नृसिंहावतारमां हिरण्यकशिपुनुं उरःस्थल फाड्युं, आणे आ जन्में करी शत्रुजननुं हृदय स्फोटन कर्युं, विष्णुयें वामनावतारमां बलिराजानी सर्व राज्य लक्ष्मी लीधी, ने नोजराजायें आज जन्ममां शत्रुजननी राज्यलक्ष्मी लीधी ठे. एवुं पोतानुं वर्णन सांजली राजा हर्ष पाम्यो थको ते श्रवनपंचाशिकानी शिला उपरें मणिमय कलश स्थापतो हवो.

एक दिवसें राजायें धनपालने पूछ्युं के, केम हमणां तमें राजसनाने विषे स्वल्प आव जाव करो ठो? धनपालें कह्युं, स्वामी! में नरत राजानी कथा रचवा मांमी ठे, तेमां वखत रोकवो पडे ठे माटे वराबर अवातुं नथी. राजायें कह्युं,तो ते मुजने संनलावो. तेवारें धनपालें कह्युं. कया वखतें संनलावुं? तेनो निर्धार करी आपो. राजायें रात्रिनो वखत ठेराव्यो. पठी नित्यप्रत्यें रात्रिनी वखतें धनपाल कथा संनलाववा आवे, ते सांजलतां थकां राजाने एवो रस उपन्यो के रखे ने आ ग्रंथनो रस अन्यत्र जाय? एवा हेतुथी सोनानो थाल नीचें मंमाव्यो.

एकदा राजायें कह्युं के,हे धनपाल! तमें नरतने स्थानकें म्हारुं वर्णन करो. अने आयोध्याने स्थानकें उज्जयणी नगरीनुं वर्णन करो. तथा चरित्रने स्थानकने विषे महाकालनुं वर्णन करो, तो हुं तमोने घणुंज इव्य आपुं. अने मानमहत्त्व पण आपुं. तेवारें धनपालें कह्युं ॥ यतः ॥ जम्मह जिण पयपंकय, आराहणाउ न होइ मणइंछं ॥ तेणे नहु महकज्जं, कयावि इय रायमरकीवइ ॥ १ ॥ ते सांजली राजा क्रोधायमान थयो थको ते मूलपुस्तक लइ अग्निमांहे नाखी दीधुं, तेथी धनपालने दुःख लाग्युं, त्यांथी पोताने घेर आवी जुना मांचा उपर सुइ रह्यो, एवामां तेमनी पुत्री तिलकमंजरीयें आवीने पूछ्युं के, हे तातजी! तमोने एवडुं दुःख प्राप्त थयुं तेनुं शुं कारण ठे? तेवारें धनपालें निःश्वास मूकी सर्व वृत्तांत कह्युं. ते सांजली तिलकमंजरी बोली, हे तातजी! तमें दुःख म करो. ए सर्व कथा

म्हारे मुखाग्रें ठे, में सांजली ठे, तेवीज हैयामां धारी राखी ठे. हुं तमोने लखावीश. ते सांजली धनपाल हर्ष पाम्यो थको स्नान करी देवपूजा कीधी. पठी ते कथारत्न, तिलकमंजरीयें लखाव्युं; माटें ते ग्रंथनुं नाम पण तिलक मंजरी एवुं राख्युं. पठी धनपालपंमित त्यांथी रीसाइने सांचोर नगरें गयो.

एवामां नोजराजानी सनाने विषे परदेशी वादी वाद करवा आव्यो, तेमणे नोजराजानी सनामांहेला सर्व पंमितोने हराव्या, कोइनी पंमिताइ तेनी आगल टकी शकी नहीं. तेवारें राजाने धनपालपंमित सांजरी आव्यो माटे तेने तेडुं मोकल्युं, पण धनपालें कह्युं के, जो राजा पोतें आहीं तेड वासारु आवे, तो हुं आवुं, नहीं तो सर्वथा आवुं नहीं. तेवारें राजा पोतें जइ मनावीने तेडी लाव्यो, घणुंज मान महत्त्व दीधुं. धनपालनुं आववुं सांजलीने वादी चिंतातुर थयो. तेने रात्रियें सरस्वतीयें आवीने कह्युं के एक धनपालविना बीजा सर्वत्रस्थानकें तहारो जय ठे, माटें धनपालपंमितनी साथें तुं वाद करीश नहीं. एवुं सरस्वती देवीनुं वचन सांनली ते वादी रात्रिनोज तिहांथी ठानो मानो चालतो थयो. तेथी धनपालनो जय थयो. सर्वत्र कीर्त्ति पसरी, यशोवाद पाम्यो.

हवे धनपालपंमित एक श्रीवीतरागदेवनी स्तुति करे तेविना अन्यदेवनी स्तुति सर्वथा करेज नहीं. एवी वचनशुद्धिपूर्वक समकेत तथा बारव्रत पाली अंतसमयें अणसण आराधी स्वर्गें गयो. अनुक्रमें मोक्ष सुख पामशे? ए वचनशुद्धि उपर धनपालपंमितनी कथा कही. माटें वचनशुद्धिनुं आराधन करवुं. ए वचनशुद्धिनुं बीजुं द्वार कह्युं ॥ २६ ॥

हवे त्रीजुं कायशुद्धिनुं द्वार कहे ठे.

॥ ठिज्जंतो निज्जंतो,पीलिज्जंतो य दयमाणोवि ॥ जिणवज्ज देवयाणं,पणमइ जो तस्स तणुसुद्धि ॥ २७ ॥ अर्थः–खड्गादिकें करी (ठिज्जंतो के०) ठेदातो थको तथा कुंत नालादिकें करी (निज्जंतो के०) नेदातो थको तथा घाणीमांहे घाली (पीलिज्जंतो के०) पीलातो थको हु इति निश्चें (य के०) वली अग्निमांहे (दयमाणेवि के०) दाजतो बलतो थको पण (जिणवद्यदेवयाणं के०) श्रीजिनेश्वरदेवने वर्जीने बीजा अन्य मिथ्यादृष्टि देवोने (जो के०) जे पुरुष (ए णमइ के०) न नमे, (तस्सतणु सुद्धि के०) तेने तनुशुद्धि कहीयें. एटले कायशुद्धि कहीयें. अर्थात् एक श्रीअरिहंत दे

वने तथा श्रीअरिहंतनी आज्ञाना प्रतिपालक जे साधु तेने प्रणाम करवो, पण बीजाने प्रणाम न करवो. एवो प्रथम प्रतिमापन्न श्रावकनी पेरें निय म राखे, तेने "रायाभिउगेणं" इत्यादिक ढ आगार मोकलां न होय तेने निरागार समकेत कहीयें. अने जे ढ आगार मोकलां राखे, तेने सागार समकेत कहीयें. प्रतिमाधर श्रावकनें निरागार समकेत होय. एवी रीतें जे मनःशुद्धि वचनशुद्धि अने कायशुद्धियें करी समकेत पाले अनुक्रमें तेने क्षायिक समकेत पण आवे ॥ २७ ॥

हवे कायशुद्धिनी उपर वज्रकरणराजानो दृष्टांत कहे छे. अवंती देशमां दशपुर नामा नगरनो वज्रकरणनामें राजा छे, ते एकदा आहेडे क्रीडा करवा गयो, तिहां घणी जीवहिंसा करी, तेमां एक सगर्भा मृगलीने मारी नाखी, तेनो गर्भ तडफडतो त्रूटी पड्यो, ते देखी राजा ध्रूज्यो; अने पश्चात्ताप करवा लाग्यो के हा हा!! में ए शुं अकार्य कर्युं, अरे मुज पातकीनी शी गती थाशे!!!

एवामां त्यां एक शिलापाट उपरें ध्यानारूढ थयेलो साधु दीठो तेने राजायें जइ नमस्कार कर्यो, यतियें धर्मलाभ दीधो. राजा बेसीने साधुप्रत्यें पूछवा लाग्यो के, तमें इहां आ शुं करो छो? साधुयें कह्युं के, अमें अमारा आत्मानुं हित करीयें छैयें. तेवारें राजा हसीने बोल्यो के, तमें भूख तृषा शीत तापादिक सहन करो छो, ए शुं आत्महित करो छो? साधुयें कह्युं, जिहां अल्पकष्टथी घणुं सुख पामीयें, तेने आत्महित कहीयें; परंतु स्त्रीसंभोग मद्यमांसादि आहार करतां अनेक जीववध करवे स्वल्प सुख भोगवी पछी परभवें हजारो लाखो गमे वर्षो पर्यंत नरककुंभमांहे पचवुं पडे. हे राजन्! तेने आत्महित न कहीयें. इत्यादिक धर्मनुं रहस्य कहीने ते साधुयें राजाने समजाव्यो. राजा धर्म पाम्यो समकेत उच्चर्युं, अने एवो नियम कर्यो के, आजपछी मिथ्यादृष्टि देव तथा गुरु प्रमुखने हुं मारी कायायें करी प्रणाम करुं नहीं एवो निश्चयथी दृढधर्म अंगीकार कर्यो.

हवे उज्जयणी नगरीयें सिंहरथ राजा छे, तेणें वज्रकरण राजाने पोतानी सेवा निमित्तें तेडाव्यो, पण वज्रकरण नियमभंगनी बीकथी पोताना हाथनी मुद्रिकामां रत्नमय श्रीमुनिसुव्रतस्वामीनी प्रतिमा थापीने नमस्कार करती वखतें ते प्रतिमा सन्मुख प्रणाम करे, तेथी नियम अखंड

रहे. एवामां कोइक दुर्जनें ते सिंहरथराजा आगल चाडी करी जे वज्रकरणराजा कांइ तमने नमस्कार करतो नथी, पण वींटीमां गोठवेली पोताना देवनी प्रतिमाने प्रणाम करे छे. ए वात सांजली राजा कोप्यो अने विचार्युं जे प्रजातें जइने एने काष्ठपंजरमां नाखुं, जो प्रणाम करे तोज मूकुं. एम सिंहरथराजाने ते रात्रियें उंघ आवती नथी तेवारें राणीयें पूछ्युं, स्वामी तमोने एवडी शी चिंता उपनी छे के उंघपण आवती नथी? राजायें वज्रकरणनी वार्त्ता सर्व राणी आगल कही संजलावी.

एवामां देवकुंभपुरनगरनो रहेवासी गुणसमुद्र नामें वणिक तेनी यमुना नामें जार्या छे, तेनो चिबुक नामें पुत्र छे, ते घणा करियाणां लइ उज्जयणी नगरीयें आव्यो छे. अने ते नगरमां वखार जाडे लइ व्यापार करतो अनंगलता वेश्यानी सायें लुब्ध थयो थको तेणे सर्व द्रव्यनो व्यय करी नाख्यो. एकदा अनंगलतायें वणिकने कह्युं के, तुं राजानी राणीनां आजरण मने लावी आप, तो हुं तहारी सायें विषय सुख जोगवुं. तेवारें तेने संतोषवामाटें ते वणिक, राजाना मंदिरमां चोरी करवा पेठो, ते वखत ते राजानां वचन तेणे सांजल्यां. ते वणिक कर्मवशें चोरी करवा पेठो छे, पण जातें परम श्रावक छे, तेथी तेणें विचार्युं जे महारो स्वामी वज्रकरणराजा समकेत धारी छे,ते रखे ने बंधीखाने पडे, माटे चोरी पडती मूकीने एक वार तेने जइ खबर आपुं. पछी ते त्यांथी निकल्यो. दशपुरे आवी वज्रकरण राजानी आगल वात कही,तेणें पूछ्युं तहारा जाणवामां केम आव्युं? वणिकें पोतानुं सर्व वृत्तांत कह्युं, तेवारें वज्रकरणराजा धान्य पाणीनो संग्रह करी कोटना दरवाजा बंधक री पोते मांहे रह्यो.

एवामां सिंहरथराजा पण चडी आव्यो. ते पण दशपुरना गढने वींटी पडाव नाखी बेठो. केटलाएक दिवस पछी ते देश सर्व उजडजेवो थइ गयो. एवामां श्रीरामचंद्र, लक्ष्मण अने सीता ए त्रणे जण दक्षिणदेश तरफ जतां ते देशमां आव्या. रामचंद्रजीयें नरेला घर, हाट, सर्व सूना देखीने ते देशवासी कोइ दरिद्री पुरुषने तेनुं कारण पूछवाथी तेणें सर्व हकीगत कही. ते सांजली रामचंद्रजीयें ते पुरुषने दान आपी विसर्ज्यो. पछी लक्ष्मणजीप्रत्यें कहेता हवा के, वज्रकरण राजा आपणो साहामी जाइ शुद्धसमकेतधारी छे, माटें एनुं सहाय करवुं.एम कही ते त्रणे जण दशपुर

नगरें आव्या. तिहां उद्यानमां उतारो करी लक्ष्मणने वज्रकरण पासें मोकल्यो, तेने देखी वज्रकरण उठी उनो थयो, आसन आपी सर्व पोतानुं वृत्तांत कह्युं. नोजननी सामग्रि करावी तेवारें लक्ष्मणें कह्युं के, म्हारो स्वामी रामचंद्रजी सीताजीनी साथें उद्यानमां बेठा वे, तेमने मूकीने हुं नोजन न करुं. ते सांनली वज्रकरणराजा सर्व रसवती साथें लइ लक्ष्मणसहित उद्याननें वि पे आव्यो. सर्वजणायें हर्षसहित नोजन कर्युं. रामचंद्रजीयें सिंहरथरा जा पासें लक्ष्मणने मोकल्यो, तेणें जइ कह्युं के, हुं अयोध्यापति नरतरा जानो मोकलेलो दूत बुं. अने वज्रकरणराजा नरतराजानो साहामी नाई थाय ठे, माटे तमें एनी साथें मेलाप करो, अने युद्ध म करो. जो मेल न हीं करशो, तो तमारुं कर्युं तमें नोगवशो.

एवां लक्ष्मणनां वचन सांनलतांज सिंहरथें नृकुटि चडावीने नफरने हु कम कर्यो के, आ दूत उतां म्हारी साहामुं चडी चडी बोले ठे, माटें एने गलुं फाली बाहेर काढी मूको. ते सांनली नफर उठ्या, एटलामां लक्ष्मण एक आलानस्तंन उपाडी सर्व नफरोने हतप्रहत करी सिंहरथनो मुकुट नांगी चोटली पकडी सिंहासनथी नीचें नाखी बेहु बाहु बांधीने उघाडे पगे रामचंद्रजी पासें लइ आव्यो. तिहां सिंहरथ कहेतो हवो के, हे स्वामी! में तुमने उंलख्या नहिं, म्हारी नूल थइ मारें अपराध क्षमा करो. तेने रामचंद्रजीयें कह्युं के, वज्रकरणनी साथें मेलाप करी चालजे, अने आज पठी प्रणाम करवा बाबत एनुं नाम पण लईश नहिं. ते वात सिंहरथें कबूल करी. वज्रकरण साथें मेलाप कीधो. सिंहरथराजा रामचंद्रजीनी घणी नक्ति करवा लाग्यो, केटलाएक दिवस तेना आग्रहथी तिहां रही, पठी द क्षिणदेश नणी चाल्या. सिंहरथ उज्जयणीयें आव्यो, अने वज्रकरण दशपु रें गयो. तिहां खबर आपनार वणिकने आनरण आपी विदाय कर्यो. ते वज्रकरणराजा मन, वचन अने कायानी शुद्धियें समकेत पाली स्वर्गे प होतो. अनुक्रमें मोक्षसुख पामशे. ए कायशुद्धि उपर वज्रकरणनो दृष्टांत सांनली मन, वचन अने कायानी शुद्धिपूर्वक समकेत पालवुं ॥ इति तपागच्छालंकार श्री शांतिचंद्रगणिशिष्य श्रीरत्नचंद्रगणिविरचितश्री सम्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिकाप्रकरणबालावबोधे त्रिशुद्धिस्व रूपनिरूपणनामा चतुर्थोधिकारः ॥ ४ ॥

हवे पांचमुं पांच दोष टालवानुं द्वार कहे छे.

॥ डुसिज्जइ जेहिं इमं, ते दोसा पंच वज्जणिज्जाउ ॥ संका कंख विगिच्छा, परतित्थ पसंस संथवणं ॥ २८ ॥ अर्थः—(जेहिं के०) जे जीव, पांच दोषें करीने (इमं के०) आ समकेतने (डुसिज्जइ के०) दूषवे एटले दोषम लिन करे, ते जेम कादवें करी वस्त्र मलिन करे तेम पांच दोषें करी सम केत मलिन करे छे. (ते दोसा पंच के०) ते पांच दोष (वज्जणिज्जाउ के०) वर्जवा ते पांच दोषनां नाम कहे छे. एक शंका, बीजो कांक्षा, त्रीजो विति गिछा, चोथो परतीर्थिनी प्रशंसा अने पांचमो परतीर्थिनो संस्तव, परिचय.

हवे शंकादि दूषणोनुं स्वरूप कहे छे.

॥ देव गुरुम्मि तत्ते, अत्थि न वत्थित्ति संसउ संका ॥ कंखा कुमयहिला सो, इच्चाइपुणो दोस देसणउ ॥ २९ ॥ अर्थः—प्रथम शंकानुं स्वरूप गा थाना पूर्वार्द्धें करी कहे छेः—(देव के०) देवने विषे (गुरुम्मि के०) गुरुने विषे (तत्ते के०) नवतत्त्वादिक पदार्थोनेविषे (अत्थिनवत्थित्ति के०) अस्ति एटले, छे किंवा नास्ति एटले नथी इति एटले एवो जे (संसउ के०) सं शय तेने (संका के०) शंका एवे नामें दूषण कहीयें. ते शंकाना बे भेद छे. एक सर्वथकी शंका अने बीजी देशथकी शंका जाणवी. तिहां धर्म अस्ति अथवा नास्ति एवी जे शंका ते सर्वप्रकारें शंका जाणवी. तथा बीजी देश थकी शंका ते धर्मपदार्थ तो छे परंतु आ धर्म जे कहे छे, ते खरो छे, किंवा आ अमुक धर्माचार्य जे धर्म कहे छे, ते खरो छे? वली जिहां जइ देखियें तेवें तिहां सहु पोतपोताना धर्म दीपावी देखाडे छे. तो हवे कयो धर्म ख रो करी मानवो? एवी तेनी शंका टलेज नहीं. वली आपणुं शंका आ णीने बीजा घणा जीवोने श्रीजिनधर्मनी उपरें शंका उपजावे, तेथी सम कत्वमोहनी कर्म बांधे, भमतां भमतां एकने अनाजमांहे माखीना पांख नी शंका आवी तेनी तेने भ्रांति थाय, वली तेनाथी वली बीजा पाणी वं दा हांर तेने पण भ्रांति थाय. ए दृष्टांत जाणवो. तेमाटे देव श्रीअरिहंत अढार दोषरहित, अने गुरु त्रिविध शुद्धरूपक संप्रति विजयमान श्रीतप गच्छनायक श्रीविजयदेवसूरि प्रमुख जाणवा. तथा धर्म ते श्रीअरिहंतना हिन आगमें. ए त्रण तत्त्व निःशंकपणे अंगीकार करवां. एमां लगारमात्र पण शंका आणवी नहिं. जे निःशंकपणे समकेत पाले, ते दर्शनाचार छ

हीयें ॥ यतः ॥ दंसणसंपन्नयाएणं नंते जीवे किं जणयइ, दंसणसंपन्नाया एणं नवमिछ्त्त छेयणं करिंति परं नउझाति परं अणुझाएमाणे, अणुत्तरे णं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोए माणे सम्मंनावे माणेणं विहरतित्ति ॥

हवे एनेविषे आषाढनूति आचार्यनो दृष्टांत कहे छे. आ नरतक्षेत्रें अयोध्यानगरीयें आषाढनूति आचार्य आव्या, तेणें घणा चेला कस्या. ते सर्वं चेलानी पासेंथी वचन लीधुं के, तमें देवता थाउ. तो मुझने आवी कहेजो. पण देवोमां उपना पछी सर्व विषयासक्त थया थका कोइ पण आचार्य पासें कहेवा सारु आवे नहिं. एकदा एकं प्राणप्रिय परमवल्लन चेलो हतो, तेनी पासेंथी वचन लीधुं अने ते चेलायें काल करती वखतें कबूल कीधुं, जे हुं अवश्य तमारी पासें आवीश. पछी गुरुयें घणा दिवस वाट जोइ पण शिष्य आव्यो नहिं. तेथी गुरुने तत्त्वनी तथा परलोकनी आस्त उतरी गइ, नास्तिकमती थयो. चारित्र मूकीने स्वछंदी थको विचरवा लाग्यो. छ कायनी उपेक्षा करी पण वेष साधुनो राख्यो छे, उतास्यो नथी.

हवे पहेला देवता थयेला शिष्यें अवधिज्ञानें करी जोयुं तो गुरुने नास्तिकपणे विचरता दीठा. पछी गुरुने प्रतिबोधवाने अर्थें एक महोटुं स्थानक विकूर्व्युं. तिहां पोतें देवतायें आवी नाटक करवा मांम्युं. एक गामवालाने ते नाटक जोतां छ महीना वीती गया, ते नाटक जोतां नूख तृषा आवे नहिं. पछी ते देवता वालकनुं रूप लेइ घणां आनूषण पहेरीने गुरु आगल आव्यो. गुरुयें पूछ्युं के, तुं कोण छो? तेणें कह्युं जे महारुं नाम पृथ्वीकाइयो छे, गुरुयें तेनुं गलुं मरडीने सर्व आनरण लइ लीधां. वली केटलेक दूर जइ वालकनुं रूप लइ अटवीमां गुरु पासें आव्यो, तेवारें गुरुयें पूछ्युं तहारुं नाम शुं छे? छोकरायें कह्युं के महारुं नाम अप्काइयो छे, तेनां पण तेमज आनरण लइ लीधां. वली तेमज आगले जइ तेउकाइयो, पछी वली वायुकाइयो, वली वनस्पतिकाइयो, पछी त्रसकाइयो, एम आगल आगल जइ जूदे जूदे नामें वालकने वेषें गुरुने मल्यो अने गुरुयें पण तेने मारीने प्रत्येक वखतें आनरण उतारी लीधां. वली आगल ते देव एक साध्वीनुं रूप विकूर्वी आंखमां अंजन नाखी कंकणादिक सर्व आनरण पहेरी आव्यो. गुरुयें तेने जोइने कह्युं के, तुं महारी दृष्टिथी वेगली जती रहे. केम के तुं जिनशासनने विषे उन्मादनी करनारी छो. ते सांजली

साध्वी बोली जे तमें मह्लारां छिद्र जूर्व छो, पण तमारी जोलीमां शुं छे, तेतो तपासो ? एवा मर्मनां वचन साध्वीना मुखथी सांजलीने शंका पा म्यो थको आगल चाल्यो, एवामां देवतायें राजानुं रूप बनाव्युं ते राजाने आचार्ये साह्यमो आवतो दीठो. ते राजा प्रथमथीज ए आचार्यनो नक्त छे एवा राजानुं रूप कद्युं छे तेणे आवीने आचार्यने खमासमण देइने वांद्या, अने सुखडानी निमंत्रणा करवा लाग्यो पण आचार्ये जाण्युं जे पात्रुं उघा डीश तो आ आनरण राजाना दीठामां आवशे, माटें आहार लेवानो खप नथी, एम राजाने कह्युं. तो पण राजायें बलात्कारें सुखडी नाखवाने मिषें जोलीमां हाथ घाल्यो, एटले आनरण हाथमां आव्यां. ते जोइ रा जा क्रोधवंत थइ बोल्यो के,अरे पापिष्ट! मह्लारा छ बालक तेंज मारुया छे, आ आनरण सर्व मह्लारा बालकोनां छे. ते सांजली नयथी कंपतो थको आचार्य तिह्लांज ऊनो रह्यो. कांइ पण जवाब देइ शक्यो नहीं. तेवारें ते देवता पण चेलानुं रूप लइ आचार्यनी आगल आवी उनो रह्यो. अने पगे लागी कहेवा लाग्यो के,हे स्वामी ! आ नाटकादि कर्त्तव्य जे तमें जो यां ते सर्व मेंज करी देखाड्यां. तेने गुरुयें कह्युं में तह्लारी घणीए वाट जो इ पण तुं आव्यो नहिं, तेथी मह्लारी धर्म उपरथी आस्ता उतरी गइ, अ ने में नास्तिक मत आदर्यो. तेने देवतायें कह्युं देवलोकनां विषयसुख मू कीने आ मनुष्यक्षेत्ररूप उकरडामां कोण आवे? एकेकुं विषयसुख नोग वतां शेंकडा वर्ष वहीजाय. एटलामां तो मनुष्यना तुछ आउखां पूरां थइ जाय, पण हुंज तमारा स्नेहनो बांध्यो इहां आव्यो छुं. जूर्व तमने एक मह्लारुं नाटक जोतां मात्र छ महीना वीती गया. ए दृष्टांतें बीजा पण दे वलोक संबंधी सुख जाणी लेजो. माटें तमें हवे कांहि पण श्रीजिनधर्मने विषे शंका करशो नहिं. हुं देवतानी ऋद्धि पाम्यो छुं, ते एज धर्मना पसा यथी जाणी लेजो. ए प्रमाणें गुरुने प्रतिबोध आपीने देवता स्वर्गें गयो.

गुरु पण अलोयणा प्रायश्चित्त लइने गछवासमांहे आवी चारित्र पाल वा लाग्यो. तीर्थंकरनी आज्ञा पालतां तथा गुरुनी आज्ञा पालतां आरा धक थाय. जे कारणमाटे आज्ञायें धर्म छे. यतः ॥ आणारुइणोचरणं, आणाएच्चियं इमंतिवयणार्ड ॥ एत्तो अणाजोगंमिवि, पसु वणिज्जो इमो होइ ॥ १॥ एता परायणाहिं, पयडा जं गुरुकुलं च मोत्तवं ॥ आयार पढम

सुत्ते, ए तोच्चिय दंसियं एयं ॥ २ ॥ एयंमि परिचत्ते, आणाखलु भगवंतो परिचत्ता ॥ तिएय परिचाए, दोएहवि लोगाण चाउत्ती ॥ ३ ॥ नाणचरण परिणामे, एयं असमंजसं इमं होइ ॥ आसण सिद्धीयाणं, जीवाण तहाय नणियमिणं ॥४॥ नाणस्स होय भागी, थिरयरउ दंसणे चरित्ते अ ॥ धमा आवकहाए, गुरु कुलवासं न मुचंति ॥ ५ ॥ इति श्रीएकादश पंचाशके ॥ एम आषाढभूतिनो दृष्टांत सांभळी त्रणे तत्त्वने विषे शंका छांमवी.

हवे कांक्षा नामें बीजा दूषणनुं स्वरूप कहीये छेयें.

(कंखाकुमयहिलासो के०) जे कुमतीनो अभिलाष होय, वांछा होय तेने कांक्षा कहीयें. ते कांक्षा शायकी थाय? तोके अन्यदर्शनीयोमां (दयादिगुणे लेस देसणउ के०) दयादिक जे गुण तेनो लेश देखवा थकी कांक्षा थाय, एटले कोइक कुमति मिथ्यादृष्टि जीवमां दया, तप, संयमादिक बाह्यगुण होय, ते देखीने मूढपणाथी एवुं जाणे जे आ पण रूडुं करे छे, माटें एने आदरीयें तो पण भलुंज छे, एनी भक्ति युक्ति करीयें, तो सारी वात छे. एवी अन्यदर्शनीनेविषे अभिलाषा करे, ते कांक्षा कहीयें. ए थकी कांक्षा मोहनीयकर्म बंधाय, माटे एहवी सद्दहणा करवी के जे प्राणी श्रीजिनेश्वरदेवनी आज्ञा युक्त तप, जप, संयम, क्रिया, अनुष्ठान करे; तेहिज प्रमाण छे. अन्यथा तो अंधना गमननी बराबरी थाय. एटले अंध पुरुष घणुयें चलाय तो पण मार्ग पामे नहीं. तेम श्रीतीर्थंकरनी आज्ञा रहित जे कांइ करवुं, ते सर्व उन्मार्ग प्रस्थित कहीयें. तेनी करणी सर्व अज्ञान कष्टमांहे गणाय माटें अन्यदर्शनीयोनां तप, जप, क्रिया अनुष्ठान देखीने कांक्षा न करवी ॥ यतः ॥ तेसि बहु माणेणं, उमग्ग णुमोयणा अनिठफलं ॥ तम्हातित्थगराणा, ठिएसु जुत्तोब बहुमाणो ॥ १ ॥ तेपुण समिया तिगत्ता, पियदढधम्मा जीइंदियकसाया ॥ गंभीरा धीमंता, पन्नु वणिया महासत्ता ॥ २ ॥ उसग्ग ववायाणं, वियाणगा से वना जहा सत्ती ॥ भावविसुद्धि समेया, आणारुइणोय सम्मत्ति ॥ ३ ॥ इति एकादशमसाधु पंचाशके ॥ २९ ॥

हवे एने विषे जितशत्रुराजा अने मतिसागर नामें प्रधाननी कथा कहे छे. भरत क्षेत्रने विषे वसंतपुर नामें नगर तिहां जितशत्रुराजा राज्य करे छे, ते नामें करी यथार्थज छे तेने मतिसागर नामें प्रधान छे, तेनुं

नाम पण यथार्थज ने. एकदा प्रस्तावें राजा सना नरी वेगे ठे, एवामां कोइक अश्वनो व्यापारी नाना देश तथा नानाजातिना घोडा लइ आव्यो ठे, तेनी प्रतिहारें आवी खबर करी. राजायें व्यापारीने पासें बोलाव्यो तेणे पण पोताना घोडा राजाने देखाड्या तेमांथी जोइने चंद्रकीर्णवर्णवे हांसला घोडा राजायें लीधा. पढी राजा, नोजन करी ते घोडानी परीक्षा करवाने अर्थे मंत्रीश्वरनी सायें अश्वक्रीडा करवा चाल्यो. एक अश्व उपर राजा वेगो अने एकनी उपर प्रधान वेगो. आगल चालतां ते घोडा विपरीतशिक्षित निवड्या तेथी ते राजा अने प्रधान वेहु जण निर्मनुष्य अटवीमां जइ पड्या. वली घोडा पण घणा दोड्या, माटें वेहु मरण पाम्या. अने राजा तथा प्रधान बन्ने नूख्या तरस्या अटवीने विषे नमतां नमता एक जलस्थानक पाम्या. तिहां स्नान, मज्जन करी निर्मल जल पीधुं. अने केटलाएक दिवस तिहां नूख्या वेसी रह्या.

राजानुं सैन्य पण खबर लेतुं लेतुं तिहां आवी पहोच्युं. सर्व जनोयें राजाने नमस्कार कस्यो. हवे राजा घणा दिवसनो नूख्यो हतो, तेणें सूपकार सोइयी कंदोइने तेडी कह्युं के, म्हारा खावामाटे चणा, अडद अने वाला वगेरेना मोदक तथा वटक प्रमुख रसवती करो. कंदोइयें पण तेमज चणक प्रमुख धान्यना मोदक तथा वटक प्रमुख सुस्वादिष्ट कीधां. राजायें आद्रना ब्राह्मणनी पेठें अतृप्तो थको घणादिवसनी नूख मटाडवामाटे चणानी रसवती खाधी. वली अडदनी रसवती खाधी. वली ते आस्वादित चोलानी रसवती आस्वादी, एम अतृप्तथको घणो आहार राजायें कस्यो. वैद्यादिकें वास्यो तो पण निवर्त्त्यो नहीं. एम घणी जातिना पुष्ट आहार संपूर्ण कस्या. तेथी राजाने अजीर्ण रोग थयो, ते रोगनी घणी वेदना थ‍इ गयी आर्त्तध्यानी यको काल करी दुर्गति पाम्यो.

हवे मतिसागर प्रधान पोताना शरीरनुं स्वरूप जाणतो हतो, वमन विरेचन प्रमुख करतो हतो, जलदोष काहाडी वैद्योक्तमार्गें आहार लेतो हतो. तेथी शरीरपाटव पामी घणा वर्ष पर्यंत सुख जोगवी अंतें समाधि मरण करी स्वर्गे सुखनो नाजन थयो.

हवे एनो उपनय कहे ठेः—राजामात्य ते संसारी जीव जाणवा. तेमां राजा आहार लंपटी हतो तेथी चणकमाषादिकना मोदकादिक आरोगी अ

जीर्णादिक रोगें करी दुःखी थइ दुर्गति पाम्यो. तेम इहां ते राजाना जेवा जीव ते सार जिनधर्म मूकी अज्ञानदर्शनाभिलाष करी मरण पामी दुर्गति पामशे अने जेम मंत्रीश्वर वमनविरेचनादिकें जलदोष टाली पथ्याहार सेवी घणा दिवस सुख भोगवी समाधिमरण करी स्वर्गनुं भाजन थयो, तेम ते मंत्री जेवा जे जीव ते तपश्चरणादिकें करी कर्मदोष टाली एकाग्रमनें श्रीजिनधर्म आराधी पंडित मरण करी स्वर्ग तथा मोक्षनां सुख पामशे. एम कांक्षानेविषे नृप मंत्री कथा सांभलीने अन्यदर्शननी अभिलाषा न करवी.

हवे विचिकित्सा दोष कहीयें छेयें.

॥ विचिगिच्छा स फलं पइ, संदेहो मुणिजणंमि उ दुगंछा ॥ गुणकित्तणं पसंसा, परिचय करणं तु संथवणा ॥ ३० ॥ अर्थः—श्रीजिनवचननो आराधन करवाना (फलं के०) फल (पइ के०) प्रत्यें जे (संदेहो के०) संदेह करवो (स के०) तेने (विचिगिच्छा के०) विचिकित्सा कहीयें. एटले मासक्षपण पक्षक्षपण छठ अष्टमादिक जे तप करीयें छेयें, तेथकी फल प्राप्ति थाशे? किंवा नही थाय? एवो संदेह आणवो नहीं; परंतु श्रीअरिहंतनी आज्ञा पूर्वक जे तप जपादिक शुभकरणी करवी तेनां फल स्वर्गापवर्गादिक छेज. एवो निश्चय राखवो ॥ यतः ॥ जोजहवायं न कुणइ,मिच्छदिठि तर्उहुको अन्नो ॥ वढइय मिछत्तं, परसंसं कक्षमाणेवि ॥ १ ॥ पूर्वे जे शंका दूषण कह्युं ते श्रीजिनभाषित नवतत्त्वादिक पदार्थोनेविषे संदेह रूप जाणवुं, अने तपश्चरणादिकना फल संबंधि संदेहरूप आ विचिकित्सा दूषण जाणवुं ए रीतें शंकाथकी विचिकित्सानो भेद समजवो.

हवे वली विचिकित्सानो बीजो भेद कहे छेः—(उ के०) तु एटले पुनः (मुणिजणंमि के०) मुनिजनने विषे (दुगंछा के०) दुगंछा करवी. ते जेम के, यतिना मलें करीने मलिन थयेलां एवां गात्र तथा वस्त्र देखीने नाक मरोडे अथवा एम कहे के,प्रासुक पाणीथी स्नान करे तथा वस्त्र धोइ नाखे तो शी हरकत छे? एवी मनमां चिंतवणा करे, ते दुगंछा कहेवाय. पण यतिने तो भगवाने अस्नानी तथा अदंतधावन वाला कह्या छे एवा भगवंतना वचननी अनास्था आवी तेमाटे एने विचिकित्सा दोष कहीयें. एणे करी समकेत दूषाय तेथी आगले भवें कुरूप दुर्गंधपणुं पामे, अनंतसंसारपणे परिभ्रमण करवापणुं पामे ॥ यतः ॥ चत्तारि दुहं सिक्खा पणत्ता तं

जहा ॥ तउ मा खलु पढमाउ डुहसेया पसुत्ता तं जहा सेणंमुंमे जविता, श्रागराउ श्रणगारीयं पवइए निग्गंथे पावयणं णो सद्दहइ णो पत्तियइ णो रोचयइ णिग्गंथं पावयणं श्रसद्दहमाणे, श्रपत्तियमाणे, श्ररोएमाणे, मणं उच्चावचं नियछइ विणिग्घाय मावज्जाइ पढमा डुहसिज्जात्ति ॥

तया चत्तारि सुहसिसेयाउ पसुत्ता तं जहा ॥ सेणमुंमे निग्गंथे पावयणे निग्गंथं वा पावयणं सद्दहइ पत्तियइ रोएइ निग्गंथं पावयणं सद्दहमाणे प त्तियमाणे रोएमाणे णो मणं उच्चावचं नियछइ णोविणिग्घाय मावयाइ, प ढमा सुहसियात्ति ॥ इति स्थानांगे चतुर्थस्थानके ॥

हवे एनेविषे शुजमतिराणीनो संबंध कहीयें बेयें. जंबुद्दीपना जरतक्षेत्रे वैताढ्य पर्वतनी दक्षिणश्रेणिने विषे गजपुर नामा नगरें जयसूरि विद्याध राधिपति राज्य करे बे, तेने शुजमति नामें प्रिय श्रग्रमहीषी बे, ते स्त्रीनो जरतारनी सार्थे विषयसमुइमां जीलतां सुखें काल जाय बे, एकदा प्रस्ता वें कोइक जीव देवलोकथी चवीने शुजमतिनी कूखरूप शुक्तिकापुटनेविषे मोतीपणे श्रावी उपनो, ते गर्जने प्रजावें राणीने श्रष्टापदादिक तीर्थनी यात्रा करवानो दोहलो उपनो, तेवारें राणीयें राजानी श्रागल श्रावीने क ह्युं के, स्वामी ! तमारी संघातें मुजने श्रष्टापदादिक तीर्थनेविषे जइने देव पूजा करवानो जाव बे. ते सांजली जयसूरि राजा पूजानी सामग्री लइ शु जमतिने पण सार्थे विमानमां बेसाडी श्रष्टापद जणी चाल्यो. तिहां जइ विविध प्रकारें जगवाननी पूजा करी, दोहलो पूर्ण कस्यो. श्रष्टापदथी पाग वल्या. पढी मार्गमां श्रावतां एक वनने विषे डुर्गंध उबल्यो ते नासिकाथी खम्यो जाय नहीं. तेवारें राणी पतिने पूबवा लागी, के श्रावा चंपकादि तरुवनने विषे डुर्गंध स्यो उबले ने ? के जे नासिकाथी खम्यो जातो नथी. तेवारें राजा यें कह्युं जे श्रागली शिलापट्टने विषे ऊर्ध्वजुजादंम सूर्यनिवेशित दृष्टियुग ए वा यति प्रत्यें तुं नथी देखती के शुं ? ए महाकृपिना शरीरनो डुर्गंध उबले बे.

ते सांजली शुजमति कहे बे, के श्रीजिनशासनने विषे जेम सर्व विधि विधान रुडां कह्यां ने तेम जो यतिने प्राशुक जलथी स्नान करवुं कह्युं ह त, तो शी हरकत हती ? तेवारें राजायें कह्युं ए वचन बोलीश मां. ने कार ण माटे कह्युं बे के ॥ शुचिर्भूमिगतं तोयं,शुचिर्नारी पतिव्रता ॥ शुचिर्धर्मप रनो राजा, ब्रह्मचारी शुचिः सदा ॥ १ ॥ माटे ए यतिमहानुजावने श्रस्ना

नी यकां पण चारित्रगुणें करी पवित्रज कहीयें, तेवारें शुजमति कहेवा लागी के, घणादिवसनो मल शरीरने विषे निविड थइ बेगे डे, तेने पाणी यें धोइने आपणे मल टालीयें एवी महारी इछा डे, एवां स्त्रीनां वचने करी राजायें पद्मिनीनी पुत्तें निझरणाना शुद्ध पाणी मगावीने यतिनुं शरीर पोताना हाथें पखाली पखालीने सर्व मलनो नाश कस्यो. ते यतिना मेल टालवानी साथें पोताना शुजनाव डे माटें पोतानुं कर्म पण नाश कर्युं, पडी प्रधान, बावना चंदन लइ केशरथी घसी तेनां विलेपन कस्यां. एम ते यतिनुं शरीर सोनानी प्रतिमा सरखुं कर्युं. पडी ते बेहु यतिने चांदी विमानें बेशी अन्यतीर्थे यात्रा करवा नणी चाल्यां. तिहांथी पाग वलतां तेहिज रस्ते आव्यां. तिहां शुजमतियें यतिने घणाए जोया, पण दीग नहिं. तेवारें त्रिपपतिने कहेवा लागी के हे स्वामी! यति केम देखाता नथी? तेवारें राजायें कर्युं अा जूत्र यतिना शरीरने तो नमरायें वींटी लीधुं डे, तेणे करी दग्धस्तंन सरिखा देखाय डे आपणे जे श्रीखंम केशरादिकें करी विलेपन कीधुं, तेतो उलटुं यतिने परिसहनुं कारण थयुं, तेथी नमरायें यतिने संताप्या, माटे हाहा!! गुण, ते दोषने अर्थे थयो.

पडी विद्याधर राजा तिहां आवीने यतिना शरीरथी नमराने अलगा करवा लाग्यो, एटलामां ते यतिने पण विषम परिसह सहन करतां घाती चार कर्मनुं क्षय थइ गयुं अने केवलज्ञान उपनुं, तत्काल चार निकायना देवता मल्या, सहस्र पांखडीनुं सुवर्णकमल रच्युं तेनी उपर बेसी केवली, धर्मदेशना देवा लाग्या. जयसुरिराजायें पगे लागीने कर्युं के, स्वामी! में तमोने परीसहनुं कारण कीधुं माटें महारो अपराध क्षमा करो. तेवारें साधु बोल्या के, तें तो नक्ति करी पण ते नक्तिनुं फल मुऊने परीसह पणे परिणम्युं, ते माहारा पूर्वकृत कर्मने योगें जाणवुं ॥ यतः ॥ कोडाणं कम्माणं, दुविलाणं सुपडिकंताणं ॥ वइत्ता मुक्को नचि, पुण अ वेइत्ता तवसा वाजो ॥ १ ॥ तथापि ॥ विषक्को मल मइलं, मुणिमणे कुणइ जिण मयचु नगं ॥ सो दुत्तिए तम्मनो, नवे नवे पावइ छागं ॥ २ ॥

एवुं गुरुनुं वचन सांजलीने शुजमति राणी पण गुरुप्रत्यें खमाववा लागी. मनमांहे खेद करवा लागी, तेने गुरुयें कर्युं के, हे शुजमति! तुं खेद न कर. मुऊने निरंतर गहनां समतां निरानिहुरुट देतां घणुं कर्म निर्जर प

इ गयुं. हवे एकज़वें जोगववा जेटलुं शेष कर्म रह्युं छे, पछी ते स्त्री जरतार केवलीने वांदी पोताने नगरें आव्यां, अनुक्रमें पुत्रने राज्य आपी बेहु जणें दीक्षा लीधी. ते निरवद्य दीक्षा पाली बेहु सौधर्म देवलोकें देवदेवी थयां. हवे देवांगना चवीने सुरपुर नगरें सिंहरथ राजानी मदनावली नामें ते राजानी अत्यंत प्राणप्रिय स्त्री थइ, ते बेहु जण विषयसुख जोगवतां मदनावलीने पूर्वोक्त यतिनी डुगंछानुं कर्म उदय आव्युं, तेथी अकस्मात् तेना शरीरमांथी डुर्गंध उठल्यो ते घ्राणेंद्रियें खम्यो जाय नहिं. तेथी तेनी पासें कोइ रही शके नहिं. वैद्यने पूछयुं तेवारें वैद्यें कह्युं के ए रोग अमारा अनुजव प्रमाणें असाध्य जणाय छे, ते सांजली राजायें अरण्यमांहे प्रासाद करावी आप्युं, तिहां ते राणी रही; अने राजायें ते महेलनी चारे दिशायें सुनटोने रक्षा करवा राख्या, राणी पोताना कर्मदोषनो वांक देखी तिहां रही.

एकदा ते प्रासादने विषे सूडा अने सूडीनुं जोडलुं आव्युं तेमां रात्रिने समे सूडी सूडाने कहे छे के, हे स्वामी ! कोइ एवी रूडी वार्त्ता कहो, कें जे थकी आपणी रात्रि सुखें वीती जाय, तेने सूडायें कह्युं के, कथा बे प्रकारनी छे. एक चरिया अने बीजी कल्पिया तेमांथी तमने कइ कथा सांजलवानी इछा छे ? तेवारें सूडीयें कह्युं चरिता कथा कहो. ते सांजली सूडो कथा कहेतो हवो. अने सूडी तथा मदनावली राणी ए बेहु सांजले छे.

पूर्वे वैताढ्यपर्वतने विषे जयशूरविद्याधर राजा हतो, तेनी शुजमति नामें जार्या ते अष्टापदनी यात्रा करी पाछी वली तेवारें मार्गमां यतिना मलमलिन गात्र देखी डुगंछा करवा लागी,पछी पतिना कहेवाथी डुगंछाथी निवृत्तिने यतिनी पूजा करी, ते श्रावकधर्म पाली दीक्षा लइ सौधर्म देवलोकें देवांगना थइ. तिहांथकी चवीने सिंहरथराजानी मदनावली नामें स्त्री थइ छे. ए कथा सांजलतांज मदनावलीने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं. तेथी पोतानो पूर्वजव दीठो,तेवारें पोतानुं कर्म निंदवा लागी. वली सूडीयें पूछयुं, स्वामी! ते मदनावली हमणां क्यां छे ? सूडायें कह्युं, आ प्रासादनेविषे बेठी छे पूर्वले जवें यतिनी डुगंछा करवाथी डुर्गंध शरीर पामी छे. हवे जो ए सात दिवस सुधी त्रिकाल जिनपूजा करे,तो एनी डुर्गंध विलय थइ जाय. कपूर,कस्तूरी, जेवो शरीरनो गंध थाय. ते सांजली मदनावली हर्ष पामी; सूडो आगल पोतानुं वृत्तांत कह्युं. ए कथा कहीने सूडो सूडी बेहु अदृश्य

थइ गयां, अने मदनावलीयें विचार्युं जे ए सूडायें म्हारा पूर्वला नव शी रीतें जाण्या हशे ? एम चिंतवी पछी सात दिवस सुधी एकाग्रमनें करी त्रिसंध्य जिनपूजा करी. तेवारें सातमे दिवसें शरीरथकी दुर्गंध नाश पाम्यो. अने कर्पूर, कस्तूरी, कमलगंध प्रगट थयो. तेनी सुनटोयें जइ राजाने वधामणी आपी. राजायें तेमने दृर्षदान आप्युं. पछी राणीने हाथी उपर बेसाडी वाजते गाजते नगरमांहे पेसारो करी घेर तेडी लाव्या.

एकदा उद्यानपालकें आवी राजाने विनति करी के स्वामी! तमारा मनोरथ उद्याननें विषे एक साधुने केवलज्ञान उपनुं छे. तेनो देवता महोत्सव करे छे, तेवारें मदनावलीयें कह्युं के स्वामी! चालो केवलीने वांदीयें. धर्मदेशना सांजलीयें अने आपणा मनना संदेह नांजीयें, पछी उद्यानपालनें वधामणी आपी राजा राणी बेहु वांदवा गयां. तिहां पंचाजिगम सांचवी पंचांग प्रणाम करी धर्मदेशना सांजलवा बेठां. देशना पूर्ण थयानंतर मदनावलीयें पूछ्युं स्वामी ! जेणें मुफ दुःखणीने प्रतिबोध दीधो, ते सूडो कोण हतो? केवलीयें कह्युं के तहारो पूर्वला नवनो नरतार ते सूडाने रूपें आवी तुऊने उपकार करी गयो. मदनावलीयें पूछ्युं ते देवता हमणां तमारी सनामां आव्यो छे? केवलीयें कह्युं आ म्हारी सन्मुख बेठो छे. तेवारें सुवर्णनरणें नूपितथकी मदनावली बे हाथ जोडी देवता प्रत्यें कहेवा लागी के, हे स्वामी! तमें अवसर जोइ म्हारी ऊपर घणोज रूडो उपकार कीधो. देवतायें कह्युं के, हुं हवे आजथी सातमे दिवसें चवीने विद्याधरनो पुत्र थाइश. तिहां तुं आवीने मुऊने प्रतिबोध करजे. मदनावलीयें कह्युं के मने जाणवामां आवशे तो प्रतिबोध आपीश. ते सांजली देवता केवलीने वांदी स्वर्गे गयो.

हवे मदनावली वैराग्य पामीथकी राजाने समजावी दीक्षा लेती हवी. राजायें श्रावकधर्म पडिवज्ज्यो अने पोताने नगरें आव्यो. मदनावली साध्वी विविध प्रकारनां तप करती विचरे छे. एकदा ते साध्वी रात्रिने समयें हारदेशें काउस्सग्गमां उनी रही छे. एवामां ते देवतानो जीव चवीने मृगांक एवे नामें विद्याधरनो पुत्र थयो छे. ते यौवन पामी विद्याशक्तिवंत थयो छे. ते विद्याधर पण तिहां आव्यो अने काउस्सग्ग धारिणी दुःष्करकारिणी एवी मदनावली साध्वीने यौवनवंती देखीने कामें पीडित थयो थको प्रार्थना करवा लाग्यो के; हे मदनावली ! तुं आवी म्हारा वि

मानमां वेस. आपणे बेहु योवननो लाहो लहीयें, तुं आ तपस्यारूप कुहाडे करीने शरीररूपी कल्पवेलीने शा सारु छेदी नाखे छे ? ताहरे योव ने महारुं योवन अने महारे योवनें तहारुं योवन फलवंत थाय, एम क र. इत्यादि घणी युक्तियें करी प्रार्थना करी पण मेरु पर्वतनी चूलिका जेम वायरे करी चलायमान थाय नहिं, तेम ते साध्वी पण चलायमान थइ न हीं. तेवारें वली अनुकूल परिसह करवा लाग्यो. तेम छतां अग्नियकी जेम सुवर्ण दीपें, तेम ते परिसहथी साध्वीनुं ध्यान दीपतुं थयुं. ते शुजध्यानने योगें साध्वीने तिहांज केवलज्ञान उपनुं. तेनो देवतायें महोछव कीधो. ते महोछव देखी मृगांक विद्याधर चमत्कार पाम्यो. पछी केवली थयेली सा ध्वीयें तेने पूर्वनव संजलावी प्रतिबोध आपीने कह्युं के, तुं सांसारिक मो ह त्यागीने निःकेवल श्रीजिनधर्मनेविषे प्रीति कर. विद्याधरने पोताना पू र्वेला नव सांजलवाथी जातिस्मरण ज्ञान उपनुं. तेथी वैराग्य पामी स्वय मेव लोच करी प्रव्रज्या लइ वेगो. अने साध्वीनें कहेवा लाग्यो जे तमें रु डो प्रत्युपकार करी पोतानो बोल पाल्यो. पछी ते चारित्र आराधी तपस्या करी कर्म निर्घाटन करी केवलज्ञान पामी मोक्षें पहोच्यो. तेमज मदनावली साध्वी पण घणा दिवसपर्यंत केवलपर्याय पाली मोक्षें पहोंची. ए विचि कित्सा उपर शुजमतिनो दृष्टांत सांजली विचिकित्सा करवी नहीं.

हवे चोथो प्रशंसा दोष कहीयें छैयें.

(गुणकित्तणंपसंसा के०) जे मिथ्यादृष्टिना गुणोनुं कीर्त्तन करवुं, तेने प्र शंसा कहीयें. तेमनी प्रशंसा करवा थकी मिथ्यात्वनी वृद्धि थाय, तथा मि थ्यात्वसंबंधी करणी करवानी इछा उपजे, एटले ए पण करणी रूडी छे, एवुं जाणी मिथ्यात्वनी करणी विशेषयकी करे ॥ यतः॥ आणाएअ वट्टंते, जो बवूदेइनोह दोसेणं ॥ सो आणा अणवछं, मिछत्त विराहणं पावो ॥१॥ इति एकादशमसाधु पंचाशके ॥

हवे ते प्रशंसा वे प्रकारनी छे. एक देशथकी अने बीजी सर्वथकी; ते मां जे सहु पोत पोतानो धर्म करे, तें रूडो छे, एवुं बोलवुं ते सर्वथकी प्र शंसा कहीयें, अने जे मिथ्यादृष्टिनुं एकीकरण वखाणवुं ते देशथकी प्रशंसा कहीयें. जेम जे कोइ चोरने वखाणे ते चोर होय जेम अनयकुमारें चोर वखाण्या ते जातें चांमाल हतो तेने बोध आपी आंवानी चोरी मनावी

पण ते जातें चोर न हतो तेम जे मिथ्यादृष्टिने वखाणे ते मिथ्यादृष्टिमांहे जले. तथा जे अनाचारीने वखाणे तेने अनाचारी कहीयें ॥ यतः ॥ नवहिंठाणेहिं समणे निग्गंठे संनोइयं विसंगनोइयं करेमाणे नाइकम्मइ तं जहा ॥ आयरियपडिणीयं, उवघायपडिणीयं, थेरपडिणीयं, साहु कुल गण संघ नाण दंसण चरित्तपडिणीयं. जे घणीज मिथ्यादृष्टिनी अने कुमतिनी प्रशंसा करे ते दर्शन प्रत्यनीक मांहे गणाय. तेमाटे मिथ्यादृष्टिनी प्रशंसा न करवी ॥ यतः ॥ जे निकुवा निकुणीवा परपासंमाणं पसंसं करेज्जा, जे विपणंनिएहगाणं पसंसं करेज्जा, जेनिएहगाणं अणुकूलं नासेज्जा, जेणनि एहगाणं आयथणंविसेज्जा, जे निएहगाणंगायं सद्धं पयकरंवा परुवेज्जा,जे णेनिएहगाणं संतीए कायकिलेसाइए तवेइवा संजमेइवा माणेइवा विसा णेइवा सुएवा पडिचेइएवा अविसुद्दमुद्दपरिसामयगएसजाहिज्जो सेवियणं परमाहम्मि एसु उववज्जेजाणं जहा सुमति ॥ इति महानिशीथे चतुर्थाध्ययने॥

हवे ए मिथ्यादृष्ट्यादिकनी प्रशंसा करवानेविषे सुमतिनो दृष्टांत अने प्रशंसा अणकरवानेविषे नागीलनो दृष्टांत कथा रूपें कहीयें छैयें.

आ नरतक्षेत्रें मगधदेशें कुशस्थलपुरनगरने विषे जीवादिक नवतत्त्व ना जाण एवा सुमति अने नागील एवे नामें बे नाइ घणा धनाढ्य वसे ले. अन्यदा अंतराय कर्मने योगें तेमनी पासेंथी धन जतुं रह्युं, तो पण पो तानुं सत्य मूकता नथी. कूड कपट बल छद्म नथी करता. प्रतिक्रमण पौष धादिक शुभकरणी कस्या करे, तेने कदापि मूके नहीं. एम करतां जेवारें अत्यंत इव्यहीन थया अने सगा सणेजाना स्वार्थ पहोंचता रह्या अने मान महत्त्वपणुं पण उत्तुं थयुं, तेवारें बे नाइ विचार करवा लाग्या के, आपणे धनहीन थया तेथी सर्वत्र मानहीन थया ॥ यतः॥ जा वीहो ता पु रिसत्त, होइ आणावडिछउ लोउ ॥ गलीउ दयंयणं वि, जला विदूरं परिचयइ ॥ १ ॥ तेमाटे हवे आपणे परदेश जइयें के ज्यां आपणने कोइ उलखे नही. एवुं विचारी ते बेहु नाइ परदेशें चाल्या. वाटें चालतां चालतां पांच साधु तथा एक श्रावकने मार्गे जता दीठा. तेवारें नागीलें कह्युं के, हे नाइ सुमति! आपणने ए सथवारो रुडो मल्यो माटें ए साधुनी सायें जइयें. ते वात सुमतियें कबूल करीने बेहु नाइ तेमनी संघातें चाल्या. आगल चालतां ते साधुनी नागीलें परीक्षा करी अने तेणे ते साधुनां केटलां एक अपलक्षण

दीधां. जेम खराब ऊवेरात होय ते ऊवेरीनी परीक्षायें पहोंचे नहीं, तेम ते साधुउने पण नागीलें पाखंमी कपटी जाण्या. परीक्षायें पोहोता नहीं तेवारें पोताना नाइ सुमतिने कहेवा लाग्यो के, आपणे एनी सार्थे जवुं नहीं, कारण के चावीशमा तीर्थंकर श्रीनेमिनाथ नगवानना मुखथी में सां नल्युं ठे, के ॥ जहा एवंविहे अणगारे रुवे नवंति तेअकुसीले तेविहीएविनि रीसिउ,ण कप्पंतीति ॥ कुसिलोसन्न पासबो, सबंदो सिढिलो तहा ॥ दिही एवी इमं पंच, गोयमा न निरीसए ॥ १ ॥

तेमाटें ए सथवारो मूकी बीजो सथवारो जोइशुं, जे माटें एमनी सार्थे जातां पण आलापसंलापादिक थाय,ते थातां श्रीतीर्थंकरनी आज्ञानो अति क्रम थाय,तेथी जीव अनंत संसारी थाय ॥ यतः ॥ पमाएणं च रत्ताणं,णंत संसार वड्ढणं ॥ जम्मालि ढुज्झा सावद्य,आयरिया ईण तिव्वयं ॥ १ ॥ आणाइय सरणं, तप्नंगे जाण किं न नग्गंति॥आणं च अइक्कंतो,कम्मादेसा कुणइ सवं २

ते सांनली सुमतियें नागीलने कह्युं के, तुं ए साधुउनो सथवारो मूकी जावा चाहातो होतो सुखें जा. परंतु हुं तो ए सथवारो मूकीश नहीं. तुं घेलो थयो ठो. जे ए साधुउमां दोष देखे ठे. पण ए साधुउ निर्दोष म हानुनाव ठे. एम बेहु नाइ परस्पर विरोध बोलता थका पोतपोतामां अ प्रीति थावा लागी, तेवारें नागील कहेवा लाग्यो ॥ यतः ॥ जीवाणं चिय ए थं, दोस कमठजाल कलियाणं ॥ जे चउगइ निप्फिडणं, हेउवएसं न धुज्झं ति ॥ १ ॥ नोवेमि तुप्न दोसं, नायावि कालस्स देमिदोसमहं ॥ जहिय उ क्खिएस, होयरावि नणिया पकुप्पंति ॥ २ ॥

एवुं नागीलनुं वचन सांनलीने सुमति जे ठे,ते परिणामें कुमति ठे, ते नागिलप्रत्यें कहेवा लाग्यो के, एक तुंहीज शास्त्रवादी आव्यो जे आवा म हानुनावना अवर्णवाद बोले ठे. हुंतो जाणुं बुं जे ए साधुउनी उपरांत कोइ ठेज नहीं. जे विचित्र प्रकारनां तप करे ठे, गोचरीनी शुद्धि करे ठे, तपें करी कुर्बल शरीरवाला थया ठे, अने तुं महोटो श्रावक थइ पड्यो ठो, के जे एवा महानुनावने कुशीलीया अने अनाचारी करी दीये ठे. तेवा रें नागील बोल्यो जे, मुजने एनी ऊपर कांइ लगारमात्र पण द्वेषबुद्धि नथी. पण तीर्थंकर पासेंथी सांनल्युं ठे, जे एवा लक्षणें लक्षित जे होय, तेने कु शीलीया कहीयें, माटे तेवानुं मोहोढुं पण न जोवुं.

तेवारें सुमति बोल्यो के, जेहवो तुं निर्बुद्धि ठो तेवो तह्हारो तीर्थंकर प ण निर्बुद्धिज हशे, के जेणें एवा साधुउंनी सार्थे संगत करवामाटे तुजने निवार्यो ठे. एटलुं बोलतांज सुमतिनुं महोढुं नागीलें पोताने हाथें करी ढांक्युं अने कहेवा लाग्यो के, हे नाइ! एवुं वचन मुखथी न बोल. श्री तीर्थंकरदेवनी आशातना करी अनंतसंसारी कां थाय ठे? तुं ए साधु उनां तप क्रिया अनुष्ठान वखाणे ठे पण हुं तो एमने बालतपस्वी जा णुं हुं, जेमाटें एमां कांइ साधुना गुण देखाता नथी, केम के गइकालें एम णे एक उढण विनानी स्त्री दीठी, तेने जोवा लाग्या पण तेनी उपरथी पोतानी दृष्टि पाठी खेंची लीधी नहीं. तेमाटे कह्युं ठे के ॥ यतः ॥ चित्तनित्ति न निज्झाए, नारीवानु अलंकियं ॥ नक्खरंपिव दिठूणं, दिठिं पडिसमाहरे ॥ १ ॥ तथा वली तेने देखीने आलोयुं पडिक्कम्युं पण नहीं तथा आजे प्र नातें वस्त्रने ठेहडे हरिकायनो संघट कीधो तथा काचा पाणीनो परिसंगो ग कीधो, इत्यादिक एनां घणांज विपरीत आचरण में दीठां. तेमाटें तुज ने कहुं हुं के, एनी संगति करवी तथा प्रशंसा करवी रूडी नथी.

ते सांजली सुमति बोल्यो के, नाइ! ए साधु कुशीलिया हो अथवा सु शीलिया हो, पण महारे तो एनी सार्थेज जावुं ठे. माटें महारो हाथ मू क, ए पठी ए लांबा निकली जशे तो हुं एमने मली शकीश नहीं. तेवारें नागीलें तेनो हाथ मूकी दीधो, सुमति त्यांथी जइने पहेला साधुउने म ल्यो. अनुक्रमें ते साधुउंनी पासेंथी ते सुमतियें दीक्षा पण लीधी. एम कु शीलीये कुशीलीया एकठा मल्या; जेम काजलमां काजल मली जाय तेनी पेठें जाणवुं. अनुक्रमें बार वर्ष पर्यंत महारौरव दुष्काल पड्यो. ते मांहे पांचे साधु घणा अनाचरण सेवी अंते अणालोइ अपडिक्कमी काल क री पिशाचादिक व्यंतरदेवोनां वाहनपणें उपना. तिहांथी चवी म्लेछदेश मां उपजशे. तिहां घणा जीवोनो वध करी मद्यमांस नक्षण करी सातमी नरकपृथ्वीयें जाशें. तिहांथकी चवी घणाकाल नमी त्रीजी चोवीशीयें व ली समकेत पामशे. ते समकेत पाम्या पठीना नवथकी त्रीजे नवें पांच साधुउंमांथी चार साधु मोक्षें जाशे, अने पांचमो जे सर्वथकी महोटो ठे ते तो अनव्य ठे एकांत मिथ्यादृष्टि ठे, ते केवारें मोक्ष पामशे नहीं.

वली गोतमस्वामीयें पूठ्युं के, हे नगवन्! सुमतिनो जीव नव्य ठे के

अनव्य ठे? नगवंतें कह्युं नव्य ठें. तेवारें गौतमें पूठ्युं जो नव्य ठे, तो ते काल करी किहां जइ उपन्यो ? नगवान् बोल्या, परमाधामी देवनेविषे जइ उपन्यो. गौतमे पूठ्युं, हे स्वामी ! नव्यजीव होय, ते परमाधामी देवमां उपजे ? नगवाने कह्युं, हा उपजे. गौतमें पूठ्युं, कोण जीव उपजे ? नगवाने कह्युं के, जे जीव माहामिथ्यात्वने उदयें करी पोताना गुरुनो तथा पोतानो उपरी जे आपणी उपर परम हितचिंतवतो होय तेनो परम हितोपदेश न माने ते द्वादशांगी रूप श्रुतज्ञान विराधी सिद्धांतनो मार्ग जाणी अणजाणी अनाचार प्रशंसीने परमाधार्मिक देवोनी जातिमांहे जइ उपजे, तेम ए सुमति पण अनाचारीनी प्रशंसा करी श्रीतीर्थंकरनी आशातना करी परमाधार्मिक देवमां जइ उपनो ठे. वली श्रीगौतमे पूठ्युं आगल एनी शी गति थाशे ? नगवान् बोल्या, एणें अनाचारनी प्रशंसा करी तेयकी सन्मार्ग प्रनाशन वखाण्युं, ते कर्मना उदयथी अनंतसंसारीपणुं उपार्ज्युं, तेमाटे हुं एना केटला नव तुजने कहुं. एतो अनेक पुजलपरावर्त्त नमतां नमतां पण संसार परिन्रमणनो पार पामशे नहीं. तो पण तुजने एना संदेपथी स्वल्प नव कहुं ढुं, ते तुं सांनल.

आ जंबूद्वीपने वींटी रह्यो जे लवणसमुड तेमां जे स्थानकें गंगा अने सिंधु ए बे महोटी नदीयें प्रवेश कस्यो ठे, ते स्थानकथकी दक्षिणदिशिना नागें वेदिकाथकी पंचावन योजन गया. पठी साडाचार योजन प्रमाण हाथीना कुंनस्थलनें आकारें साडात्रण योजन उंचो द्वीप ठे, तिहां अत्यंत घोर अंधकारमय घडीयालने आकारें सुडतालीश गुफा ठे. ते गुफाउंने विषे जलचारी मनुष्य वसे ठे. ते मनुष्य वज्रकृपननाराच संघयणवाला, माहाबलिष्ट पराक्रमवंत, साडाचार हाथ प्रमाण शरीरवाला, संख्याता वर्ष आउखाना धणी ठे, तेमने मद्य मांस प्रिय ठे, स्वनावेंज परस्त्री लंपट ठे, देखवामां काले वर्णे, दुर्वर्ण, दुर्गंध, खरस्पर्शवाला माजार, राक्षसना जेवी कठिण नाषाना बोलनारा, एवा अंतरंग गोलीया मनुष्य ठे तेनी अंतरंग गोली लेइ चमरी गायना श्वेतवालनी सायें गुंथी बेहु काने बांधी समुड्मां हे प्रवेश करीयें तो तेना महिमायें करी जलहस्ती, मगरमच्छ, कछप, सुसुमार, म्हादिक जलजंतुउथी नय थाय नहीं. अने समुड्मांहे पेशी समुड अवगाहीनें मनोवांठित रत्न लेइ घरे आवे. पण ते मनुष्योनी गोली काहा

डतां लेतां घणु दुःख उपजे, ते दुःख नारकीना दुःखनी साथें मेलवीयें ते टलां छे पण ते जीवतांथकां तेहनी गोळी काढी शकाय नहीं, जे कारण माटे ते मनुष्यो महाबलवंत होय छे.

इहां श्रीगौतमस्वामीयें पूछ्युं के, हे भगवन्! ते मनुष्यनी गोळी कया प्रकारें लेवाय? तेवारें भगवानें कह्युं, हे गौतम! तेहज लवणसमुद्रनेविषे वज्रमय शिलासंपुट महाघरट्टने आकारें छे. ते शिलासंपुट उघाडीने तेमां मधु, मद्य, मांसना भाजन मूके ते मूकनार रत्नद्वीपना वाणीया पापना प्राणीया एवा मनुष्य छे. ते मनुष्यने आवतां जेटले ते देखे, तेटले ते रत्नवाणीयाने मारवाने अर्थे उजाता धाइ आवे अने रत्नवाणीया पण जेवारें तेमने आवता देखे, तेवारें मधु, मद्य, मांसना खंभें भरेला तुंबडा नाखतां नाखतां ते रत्नवाणीयां पाछा नासे. अने पहेला अंतरंगगोळीया मनुष्य ते मधुआदिकने खावामाटे तिहां ते शिलासंपुटमांज रहे. ते खाइ रह्या अंतर फरी पण तेमनी पछवाडे दोडे. तेवारें वळी पण ते तेवीज रीतें मद्यमांस नाखे. ए प्रमाणें जे स्थानकें वज्रमय शिलाघरट्ट उघाडा करी मूक्या छे, तेमांहे मांसादिक गंधना खेंच्या खावामाटें प्रवेश करे अने रत्नवाणीया पण ते स्थानकें आवे, पछी सात आठ दिवस केडें सर्व हथीयारें सहित सन्नाह पहेरी ते शिलाघरट्टने चारें वाजु सात मांमले वींटी केटलाएक ते शिला संपुट एकठा मेलवे जो ते मांहेथी पण ते निकलवा पामे तो ते मनुष्यो सपरिवार रत्नवाणीयानो प्रलय करे, एवा ते बलवंत छे. आखो रत्नद्वीप उजड करे, पण ते घरट्टसंपुटमांहे आव्याथका पण मरे नहीं. अने तेनां हाड काना खंभ पण थाय नहीं. एवा ते दुर्मर छे, तेमनां हाड पण वज्रमय छे.

हवे ते रत्नवाणीया महाबलवंत वृषभ जोतरी अरहट्टनी पेरें ते वज्रशिलासंपुट भमाडे. एवुं एकवर्ष पर्यंत करे, तिहां अंतरंग गोळिया एक वर्षसुधी महोटी वेदनाने अनुभवीने जो काल करे, तोपण तेना हाथ पग प्रमुखनां संधाण त्रूटे परंतु हाड खंभोखंभ थाय नहीं. एटले हाडना कटके कटका थाय नहीं. हवे जेवारें ते मनुष्योना आंगुलि प्रमुख अवयव आटानी पेरें बाहेर पडता देखे, तेवारें रत्नवाणीया, ते शिलासंपुटनो उपरलो पुट परहो करे अने शोधी करीने तेहनी गोळीयो उपाडी लीये.

इहां गौतमस्वामी पूछवा लाग्या के, भूख्या तरस्या छता एवी वेदनाने

अनुनवता थका पण एक वर्ष पर्यंत केम जीवता रही शके ठे? जगवाने कह्युं स्वकृतकर्मना उदयथकी जीवता रहे ठे. हे गौतम ! ते सुमतिनो जीव परमाधार्मिक देवतामांहेथी चवीने अंतरंग गोलिया मनुष्यमांहे आवी उपजशे, तिहां वेदना नोगवी वली पण तेहज अवतार लेशे. एम अनुक्रमें सात नव तिहांज करशे. पठी नवमे नवें व्यंतरदेव थाशे, दशमो वनस्पतिमां लींबडानो अवतार लेशे, अगीयारमो मनुष्यमां स्त्रीपणे उपजशे. बारमो तिहांथी ठठी नरकपृथ्वीयें जाशे. १३ तिहांथी चवी कोढीयो मनुष्य थशे. १४ तिहांथी चवी यूथाधिपति हस्तिपणे उपजशे. १५ तिहांथी चवी अनंतकाय वनस्पतिमांहे. १६ तिहां अनंतो काल परिन्रमण करशे. १७ तिहांथी निकली मनुष्य थशे. १८ तिहांथी चवी स्वयंनुरमण समुद्रने विषे माहामत्स्य थशे. १९ तिहांथी मरी सातमी नरकपृथ्वीयें जशे. २० तिहांथी चवी वलदपणे ऊपजशे. २१ वलद मरीने मनुष्य थाशे. ए प्रमाणें घणा नव करी महाइन्यकुलनेविषे अवतार पामी दीक्षा लेशे. २२ तिहांथी अनुत्तरविमानें देवता थशे. २३ तिहांथी चक्रवर्त्ती महासम्यग्दृष्टि थाशे, ते चक्रवर्त्तीनी पदवी नोगवी पठी दीक्षा लइ यथोपदिष्ट दीक्षा पाली केवलज्ञान पामी २४ मोक्षें जशे. माटे हे गौतम ! ए सुमतियें कुशीलियानी संगति करी वली ते कुशीलियानी प्रशंसा करीने तीर्थंकरदेवनी आशातना करी तेथी अनंता नव संसारमां परिन्रमण करशे. अंतरंग गोलियानां दुःख पामशे, तेमाटें मिथ्यादृष्टि प्रमुखनी प्रशंसा न करवी ॥ इति महानिशीथना चोथा अध्ययनगत सुमतिनी कथा॥

हवे पांचमो मिथ्यादृष्टिनो परिचय करवो ते दोष कहे ठे. मिथ्यादृष्टि प्रमुखनी साथें जे (परिचयकरणंतु संथवणं के०) परिचयनुं करवुं तेने संस्तवन कहीयें, माटे ते सम्यक्दृष्टियें वर्जवुं. केम के मिथ्यादृष्टिनी साथें परिचय करतां थकां बोधबीज जाय अने परिचय करवाथी एवा परिणाम थाय जेम के एनो धर्म पण रूडो ठे. एवुं बोलतां थकां मिथ्यात्व तथा कुमतिनी वृद्धि थाय माटे मिथ्यादृष्ट्यादिकनो संस्तव टालवो ॥ २० ॥

ए उपर सौराष्ट्रवासी श्रावकनो संबंध कहीये ठैयें. सौराष्ट्रदेशने विषे कोणिक आचार्यनो उपासक, एक श्रावक ज्ञानादिक तत्त्वनो जाण ठे. अन्यदा डुक्काल पडवाथी ते श्रावक मालवा नणी चाल्यो, मार्गमां बोध जो

को मळ्या तेनी साथें जवा लाग्यो. तेवारें बौद्धोयें कह्युं के, आ अमारो उ पधि उपाडो तो तमोने खावा सारु आपीयें ते तेणें अंगीकार कर्युं. पछी तेनी साथें परिचय करतां तेनो परिणाम एने परिणम्यो. अनुक्रमें चालतां *मार्गमां असाध्य रोग उपनो, तेवारें तेने मार्गमां पडतो मूकी रक्त वस्त्र* उढाडीने बौद्धो चालता थया, ते मरीने यक्षदेव थयो. तिहां अवधिज्ञान नो उपयोग दीधो. तेवारें रक्तवस्त्रें ढाकेलुं पोतानुं शरीर दीठुं, ते देखीने वि चारवा लाग्यो जे, बौद्धना पसायथी हुं यक्ष थयो छुं, तो हवे बौद्धना शास ननो महिमा वधारुं. एम चिंतवी जिहां बौद्ध जोजन करवा बेठा हता, ति हां जइने कंकण, केयूर, मुद्रामंडित पोतानो हाथ देखाड्यो, अने पोता नी सर्व हकीगत कही. वली लाडु तथा घेवर प्रमुख बौद्धोने खावासारु निरंतर आपवा लाग्यो. एवो प्रज्ञाव देखी घणा लोक बौद्धना नक्त थया. सर्व कहेवा लाग्या जे बौद्धनुं शासन घणुं सारुं छे. जेमाटे एमने देवता आवीने गाडवा जेवडा लाडवा आपे छे.

एकदा उज्जयणी नगरीयें कोणिक आचार्य आव्या तेनी आगल श्राव कलोकोयें सर्व वृत्तांत कह्युं के, स्वामी ! आ प्रकारें कुमतियोनी वृद्धि थाय छे. ते सांजली आचार्यें पोताना यतियोने शीखावी मोकल्या के, जेवारें हाथ निकले तेवारें कहेजो के हे यक्षोत्तम ! तुं प्रतिबोध पाम. अने पंच परमेष्ठी नमस्कार संजार. तुं उत्तम श्रावक हतो छतां मिथ्यात्वनी वृद्धि केम करे छे ? एवी आचार्यनी शिखामण सांजलीने यतियो तिहां गया ति हां यक्षनो हाथ निकल्यो तेने यतियोयें पकडी राख्यो अने गुरुयें कहेलो संदेशो कह्यो, ते सांजली यक्ष प्रतिबोध पाम्यो. तेना हृदयमांथी मिथ्या त्व ज्ञान गयुं. अने सम्यक्ज्ञान तेना हृदयमां आव्युं, तेवारें ते यक्षें उज्ज यणीयें गुरुसमीपें आवीने पाप आलोवया कह्युं. गुरुयें तेने कह्युं के, पाप नी आलोयणा एहज छे के तहारामां मिथ्यात्व व्याप्युं छे, तेनो त्याग कर. ते पण तेमज निरंतर तिहां आवीने सर्वजनने कहेवा लाग्यो के बीजां सर्व दर्शन मिथ्या छे एक श्रीजैनदर्शन छे, तेहज मुक्तिनुं अर्थी छे, माटे तेनेज आदरो. एम सर्वनी आगल प्रतिदिन श्रीजिनशासनना गुण बोल तो विचरवा लाग्यो, तेथी घणालोको प्रतिबोध पामी बौद्धमत मूकीने श्री जिनधर्मना रागी थया. एवी सोराष्ट्रवासी श्रावकनी कथा सांजली अन्य

दर्शनीनो परिचय टालवो जेम धंतुरानी संगतथी तेल विणसी जाय तेम मिथ्यात्वनी संगतथी समकेतनो विनाश थाय. तथा जेम मोगरानी संगतथी ते लमां सुगंध थाय, तेम सुगुरु तथा साधर्मीनी संगतथी समकेत सुगंधी थाय.

इति तपागछालंकारश्रीशांतिचंद्रगणिशिष्यश्रीरत्नचंद्रगणिविरचितश्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिकाप्रकरणबालावबोधे शंकादिपंच दूषणस्वरूपनिरूपणनामा पंचमोऽधिकारः ॥ ५ ॥

हवे बहुं आठ प्रभाविकोनुं द्वार कहे छे.

॥ सम्मं दंसण जुत्तो, स सई सत्ति प्पभावगो होई ॥ सो पुण इह विसिठो, निदिठ्ठो सुत्त निईए ॥ ३१ ॥ अर्थः—जे (सम्मंदंसणजुत्तो के०) निरतिचार पणे सम्यक्त दर्शनें करीने युक्त होय (स के०) ते पुरुष (सईसत्ति के०) यतिशक्तियें (प्पभावगोहोई के०) प्रभाविक होय श्रीजिनशासननी दीप्ति करे, (सोपुण के०) ते पुरुष वली (इह के०) इहां श्री जिनागमप्रणीतसूत्रने विषे ज्ञानादिक गुणें करी (विसिठो के०) विशिष्ट प्रधान वचनादिक लब्धिनो धणी एवो (निदिठो के०) कह्यो छे ते जेम आकाशने विषे सूर्य, चंद्र अने घरने विषे जेम दीपक शोभे ने, अजवालुं करे छे. तेम श्रीजिनशासनरूप आकाश तथा घर तेनेविषे सूर्य, चंद्र तथा दीपक समान ते पुरुष जाणवो. (सुत्तनिईए के०, सूत्रनी नीतियें करी जाणवो, सूत्र जे आगल पावयणी प्रमुख कहेशे, ते सूत्रने न्यायें कह्यो ॥३१॥

हवे ते प्रभाविक आठ नेदं ने, ते आठ नेद कहे छेः—

॥ पावयणी धम्मकही, वाई निमित्तिउ तवस्सी य ॥ विया सिद्धो य कई, अठेव पभावगा नणिया ॥ ३२ ॥ अर्थः—एक (पावयणी के०) प्रावचनिक, बीजो (धम्मकही के०) धर्म कथिक, त्रीजो (वाई के०) वादी, चोथो (निमित्तिउ के०) नैमित्तिक, पांचमो (तवस्सी के०) तपस्वी, (य के०) वली छठो (विया के०) वियावान, सातमो (सिद्धो के०) सिद्ध (य के०) अने आठमो (कई के०) कवि ए (अठेव के०) आठज (पभावगा के०) प्रभाविक श्रीवीतरागें (नणिया के०) कह्या छे ॥ ३२ ॥

हवे प्रकरणकर्त्ता ए आठनुं सरूप कहे छेः—

॥ अणुचिय सुत्तथरो, पावयणी तित्थवाहगो सूरी ॥ पडियोहिय नाव

णो, धम्मकही कइए लद्धिल्लो ॥ ३२ ॥ अर्थः-(कालुचिय के०) का लोचित एटले जे कालें जेटलो उचित अर्थात् योग्य होय, तेटला वर्त्तमान (सुत्तधरो के०) सूत्रनो धारक होय उपलक्षणथी तेटला श्रुतना अर्थनो धारक पण लेवो, जेमाटे सूत्र अने अर्थ संयुक्त जोइयें. केम के अर्थविना सूत्र नथी अने सूत्र विना अर्थ नथी, जेम घृतविना दूध नथी अने दूध विना घृत नथी. ए दृष्टांतें जाणवो. ते (पावयणी के०) प्रावचनिक कहियें. एटले प्रवचन द्वादशांग गणिपिटक ठे, जेह्ने ते प्रावचनिक जाणवुं उत्तम आचार्यादिकें प्रवचननो अभ्यास करवो. केम के प्रवचनना अभ्यास विना आलोचना दानादिक कल्पे नहिं. तेमाटे अर्थसहित द्वादशांगीनो जे धारक होय, तेने प्रजाविकाचार्य कहीयें ॥ यतः ॥ चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, तं जहा सुत्तधरे एगे नामं णो अहधरे, अहधरे एगे नामं णो सुत्तधरे, एगे सुत्तधरेवि अहधरेवि, एगेणो सुत्तधरे णो अहधरे ॥ इति ॥

ते प्रावचनिक कहेवो होय? तोके (तिछवाइगो के०) तीर्थ जे चतुर्विध श्रीसंघ तेनो वादक एटले प्रवर्त्तक होय एटले चतुर्विध संघने शुद्ध मार्गने विषे प्रवर्त्तावे एवो (सूरी के०) आचार्य कहीयें. एटले जिनशासन ज्ञानवंतने आधारिक कह्यो ॥ यतः ॥ जयणाए इकम्मं, खवेई बहुआइं वा सकोडीहिं ॥ तन्नाणी तिहिं गुत्तो, खवेइ उस्सासमाएण जवे ॥ १ ॥ तथा ॥ जा जयमाणस्स जवे, विराहण सुत्तविहि समग्गस्स ॥ सहोइ निज्जरफला, अप्पविसोहिय जुत्तस्स ॥ १ ॥ ए प्राजाविकनो पहेलो जेद कह्यो.

हवे प्राजाविकनो बीजो जेद कहे ठेः-(पडिबोहिय जवजणो के०) प्रतिबोध्या ठे जव्यजनोने जेणें एवो (धम्मकही के०) धर्मकथिक नामें बीजो प्राजाविक कहीयें जे माटे (कहणलद्धिल्लो के०) कथनलब्धिवंतनो उपदेश लागे एटले लब्धिवंतना कथनथी सांजलनारने उपदेश लागे ते उपदेश पण जव्यने देवो कह्यो, तेनुं कारण ए ठे जे अजव्यने तो उपदेश लागेज नहीं. परंतु जव्यने पण सामग्री मलेज उपदेश लागे ॥ यतः ॥ सामग्गी अजावाउ, ववहारिय रासि अप्पवेसाउ ॥ जवावि ते अणंता, जे मुक्क सुहं न पावंति ॥ १ ॥ माटे जव्यने पण एम ठे तो अजव्यने तो मुक्तिनी वार्त्ताज करवी नथी. एटलामाटे मुक्तिगमन योग्य एवा व्यवहारराशिया जीव लेवा तेमां पण जे संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ता मनुष्य जाति

लेवा तेमां पण आचार, देश, कुल, धर्मश्रवण, श्रद्धानादिक पाम्या होय एवा न्नव्यजीव उपदेशने योग्य कह्या ठे. तेने पण जे खीराश्रव, लद्धाश्र वादि लब्धिवंत होय तेहनो उपदेश लागे॥ यतः॥ जो हेउवायपरकंमि, हेउउ आगमंमि आगमिउ॥ सो समय पन्नवउ, सिद्धंत विराहगो अन्ना॥ १॥ एटला माटे कथनलब्धिवंत जोइयें एटले कथन करवानी लब्धि जेमां हो य तेनोज उपदेश लागे, कारण के, केटलाएक न्नणेला पण होय ठे परंतु ते वखाण करी जाणे नहीं. ठाश बाकला जेवो अर्थ करे, तेथी लोक एवुं जाणे जे ए न्नणाज नथी, तेमाटे ए विशेषण सार्थकज जाणवुं॥ ३३॥

॥ हवे ए प्रावचनिक तथा धर्मकथिक ए वेहु गुणने विषे श्रीवज्रस्वामी नो संबंध कहीयें ठेयें. न्नरतक्षेत्रे अयवंती नामें देश तेमां तुंबवन नामे सन्निवेश ठे. तिहां एक धनगिरिनामें इन्यसुत वसे ठे. ते स्वन्नावेंज वैराग्य वंत ठे, तेनां माता पिता पाणिग्रहण करवानुं कहे पण ते माने नहीं. ह वे तेज नगरमां धनपालशेठनी पुत्री सुनंदा ठे, ते पोताना माता पिताने कहेवा लागी जे, हुं जो परणुं तो धनगिरिने परणुं, पण तेने धनगिरियें कह्युं, हुं वैरागी ढुं माटें महारो प्रतिबंध म कर, जिहां तहारा न्नाइयें दीक्षा लीधी ठे, तिहां हुं पण दीक्षा लइश, एवुं जाणी जो मुजने परणे तो सु खें परण. सुनंदायें कह्युं एक वार पाणिग्रहण करो, पठी न्नावे तेम कर जो. तेवारें धनगिरियें तेनो अत्यंत राग जाणीने पाणिग्रहण कीधुं. पण कह्युं के हुं दीक्षा लइश. तोपण स्त्रीनी जाति मायावी थाय ठे, माटें मायायें करी धनगिरिने कहेवा लागी के जो एक पुत्र थाय, तो महारे आधारन्नूत थाय माटे महारी साथें विषयसुख न्नोगवो. पठी दीक्षा लेजो. ए वात मा नीने धनगिरि पण तेनी साथें संसारसुख न्नोगववा लाग्यो. एम करतां तेने उंधान रह्युं अष्टापद तीर्थनेविषे गौतमस्वामी प्रतिबोधित तिर्यग्जृंनक देवतानो जीव देवपणाथी चवीने शुन्नस्वप्नें सूचित गर्न्नपणे आवी उपनो तेवारें धनगिरियें कह्युं के स्वप्ननें अनुसारें तहारे उत्तम पुत्र थाशे. एवात निश्चय जाणीने हवे तुं मुजने दीक्षा लेवा दे. एम कही स्त्रीने समजावीने सिंहगिरिजी आचार्य पासें जइ धनगिरियें दीक्षा लीधी.

अनुक्रमें पुत्र जन्म थयो, तेवारें पाडोसण कहेवा लागी के आज जो एनो बाप होत तो पुत्रजन्मनो महोटो महोत्सव करत, बापविना बीजो

काण महोत्सव करे? एने आपें तो दीक्षा लीधी छे. ए वचन सांजलतांज पहेला बालकने जातिस्मरण उपनुं, तेवारें विचारवा लाग्यो जे, मुजने दीक्षा उदय आवे, एवो उपाय करुं. एवुं मनमां धारीने रुदन करवा लाग्यो, माताने संतापवा लाग्यो, माता एना रुदनथी सुइ शके नहीं, बेसी शके नहीं, जोजन करी शके नहीं, ए रीतें माताने घणुंज संताप करतो हवो. माता घणो उद्वेग पामी महोटे कष्टें करी छ महीना अतिक्रम्या.

एवामां उद्याननें विषे श्रीसिंहगिरि आचार्य पधार्या. तिहां आर्यसमित अने धनगिरि ए बे साधु सद्याय करी, उपयोग देइ गोचरीनी आज्ञा मागवा गुरुनी पासें आव्या. आचार्यें कह्युं आज तमोने उत्तम निमित्त उपनो छे, तेथी कोइ अपूर्व वस्तुनो लाज जोइयें, माटे सचित्तवस्तु पामो ते लेजो. नाकारो करशो मां. एम आज्ञा मागी गोचरीयें पधार्या, ते सुनंदाने घरे आव्या तेवारें बोकरे रोवा मांड्युं, माताने संतापवा मांड्यो तेवारें सुनंदा करसंपुटें करी पुत्र आपवा लागी अने कहेवा लागी के आ लियो तमारो बेटो? एनाथी तमेंज सुख जोगवो. तेने धनगिरियें कह्युं के हमणां तो तुं आपे छे, पण पछी पश्चात्ताप करीश. तेवारें पाछो मागवा आवीश, तो हुं आपीश नहीं. सुनंदायें कह्युं महारे एनो खप नथी. हुं तमोने आपुं छुं; सुखें लइ जाओ. तेवारें धनगिरियें पडोशी लोकोने साक्षी करीने बालकने जोलीमांहे लीधो. लइने पाधरा उपाशरे गुरु समीपें आवी जोली मूकी. गुरुयें जोली उपाडी जोइ तो तेमां जार घणो जाण्यो, तेवारें बोल्या के, आ शुं वज्र छे के? एवुं कहीने जोली उघाडी तो मांहे दिव्यस्वरूप बालक दीठो. पछी तेनुं वज्र एवुं नाम दीधुं. उपाशरामां आव्या पछी बालकें रुदन करवुं बंध कीधुं. गुरुयें ते बालक साध्वीयोने आप्यो साध्वीयें सय्यातरनी आपनारी श्राविकाने धवरावबामाटे ते बालक सोंप्यो. तेणे धवरावी पाछो उपाश्रयें आवी पारणामां राख्यो. गुरु अन्यत्र विहार करी गया. हवे तिहां शालामां साध्वीओ जणवा करे छे, अने ए बालक छ महीनानो पारणामां पोढेलो छतां ते साध्वीओना पाठ सांजलीने पारणामां रह्यां थकां बालकें अगीयार अंगजणी मुख पाठें करी लीधां.

अनुक्रमें जेवारें ते बालक त्रणवर्षनो थयो तेवारें तेमां बत्रीशवर्षना माह्या पुरुषमां जेटलुं चातुर्य कला विज्ञान होय, तेटलुं दीसवा लाग्युं. ते

देखीने सुनंदानुं मन चलायमान थयुं. अने कहेवा लागी जे हुं माहारो पुत्र पाछो लइ जइश. तेने संघें कह्युं के ए गुरुनो माल छे, ते कोइथी ले वाय नहीं अमाराथी अपाय पण नहीं तेवारें कजीयो करवा लागी जेव ट वालक नहीं मलवाथी राजदरवारमां गइ, गुरु पण अन्यत्र विहार करी पाछा आव्या. श्रीसंघनी विनतिथी गुरु पण राजदरवारमां गया. राजायें एवो न्याय कस्रो के, तमो वेहुजण पोतपोतानी तरफथी जुदी जुदी वस्तु उ वालकने आपो. तेमां जेनी वस्तुउ ए वालक लइ लेशे, तेने ए पुत्र आ पशुं. तेवारें सुनंदायें सुखडी तथा रमकडां प्रमुख वालकनी आगल मू क्यां पण वालकें तेनी साहामुं पण जोयुं नहीं. पछी धनगिरिजीयें रजोह रण, मुहपत्ति तथा नोकरवाली प्रमुख धर्मोपकरणरूप रमकडां वालकनी आगल मूक्यां, अने कह्युं के हे, कुमर! अमारी पासें तो ए धर्मनी रमत छे तहारुं मन माने, तो ले. ए रमत तुजने नहीं गमे, तो संसारनी रमत ले. तेवारें कुमर रजोहरण प्रमुख सर्व वस्तु लइ तेने मस्तकें चडावी नाचवा कु दवा लाग्यो. ते देखी संघमांहे जयजयकार थयो. सर्व वोल्या जे आ वाल क पण श्रीजिनासननो प्राभाविक थयो. राजायें कह्युं के न्याय थइ चूक्यो. आ वालक गुरुने आपी द्यो. पछी तेने साध्वीउने उपाशरे राख्यो. केटलि एक प्रतमां आ ठेकाणे साध्वीउने भणतां भणतां वालकने अगीयार अंग मुख पाठें थयां, एवुं लख्युं छे. अने केटलिकमां पूर्वें वालकनी छ महीनानी अ वस्थामां ए वात लखी छे, माटे जेम सुज्ञोने जाणमां होय ते प्रमाणे वांचवी.

पछी जेवारें वज्रकुमर आठ वर्षनो थयो तेवारें गुरुयें तेने दीक्षा दीधी, तेवखत सुनंदायें विचार्युं जे हुं हवे घरमां कोने अर्थें रहुं. एम चिंतवी सिंहगिरि आचार्य पासेंथी दीक्षा लीधी.

आचार्य अनुक्रमें उज्जयणीयें विहार करतां मार्गमां वज्रमुनिना पूर्वभ व संबंधिनो मित्र जृंभक देवता हतो ते वज्रमुनिने देखी हर्ष पाम्यो. पछी परीक्षा करवामाटे वाणीयानो सथवारो विकूर्वीने भोजननिमित्तें गुरुने आग्रह करवा आव्यो के महाराज! शुद्धमान रसवती छे, माटे वेहेलाने मो कलो. गुरुयें आज्ञा आपी वज्रमुनि वहोरवा गया परंतु सूक्ष्ममेघ वृष्टि दे खी पाछा वल्या, तेवारें देवतायें वृष्टि रोकी राखी अने कहेवा लाग्यो के हवे पधारो. वज्रमुनि वहोरवा गया, तिहां तेणे कोलाफलनी भिक्षा देवा

मांमी. तेवारें वज्रमुनियें उपयोग दीधो, जे हमणां वर्षाऋतुमां कोळाना फळ क्यांथी लाव्या हशे? तेनो हेतु समजातो नथी वली आना पग नू मिने ढवता नथी माटे ए कोइ देवतायें ढळ कर्युं जणाय ठे, तेथी मुज ने वैक्रियपिंम अकल्प ठे एवुं कही, त्यांथी पाग वल्या. एवी रीतनी आ हारसंबंधी शुद्धि जोइने देवता हर्ष पाम्यो. पठी प्रगट थइ मुनिने वंदना करी कहेवा लाग्यो के में तमारी आहारशुद्धिनी परीक्षा करवामाटे आ रुत कर्युं, पण तमें महोटा यति ठो, माटे चूक्या नहीं तो हवे माहारा अनु ग्रहने अर्थे वैक्रिय बहुरूपिणी विद्या ल्यो. तेवारें वज्रमुनियें श्रीजिनशास ननी प्रभावनाने अर्थे ते विद्या लीधी. देवता वांदीने पोताने स्थानकें गयो.

एकदा ज्येष्ठमासमां वज्रमुनि बाहेर गया ठे, तेवारें तेहज देवता तत्का लना साकरचूर्णें भरेला घेवर लइने मुनिने निमंत्रणा करतो हवो. ते पण मु नियें उपयोग देइ अनालो जाणी लीधां नहीं, तेवारें देवतायें संतुष्ट थइने मानुष्योत्तर पर्वतपर्यंत जावानी आकाशगामिनी विद्या आपी.

एकदा गुरु ठंमिलभूमियें गया ठे अने बीजा साधुउ पण सर्व गोचरी प्रमुखें बाहेर गया ठे, तेवारें वज्रमुनि बालक्रीडाथी साधुउना संथारादिक चारे बाजु मूकी, पाथरी, पोतें तेनी वचमां बेसीने गाढे स्वरें जेवी रीतें गुरु वाचना आपे, तेवी रीतें अनुक्रमें जूदी जूदी अगीयारे अंगनी वांचना दे वा लाग्यो. एवामां गुरु आव्या तेमणे बारणे ठाना उभा रहीने सर्व वांच ना सांजली ने घणो हर्ष पाम्या. पठी ते बालकने कांइ पण शंका न पडे तेवी रीतें गुरुयें महोटा स्वरथी निसिही कही, एटले वज्रमुनियें पण सर्व उ पधि, स्थानकें मूकीने द्वार उघाड्यां, गुरुना पग पुंज्या, दांमो हाथथकी लीधो.

हवे गुरुयें विचार्युं जे एनी विद्या प्रगट करवी जोइयें, एम निर्धारी सर्व यतियोने तेडी कर्युं के, अमें गामडे विहार करशुं. तिहां सात आठ यति साथें लइशुं. बाकी तमो सर्व यतियो इहां रहेजो. तेवारें यतियोयें कर्युं अमने वाचना कोण देशे? गुरुयें कर्युं वज्रमुनि देशे. यतियें तहत्ति कही ॥ यतः ॥ सीसगिरिसुतिसाणं, नदं गुरुवयण सद्दहंताणं ॥ वयरो किंदाई, वायणंति नवि कोविय विचणं ॥ १ ॥ गुरुयें विहार कर्यो पाठल साधुउ स र्वे विनयवान् ठे माटें गुरुनुं वचन प्रमाण करी विनयपूर्वक वज्रमुनि पासें वाचना लेता हवा. वज्रमुनियें ते साधुउने एवी युक्तिथी वाचना आपी के

जेथकी गुरु घणा दिवस वाचना आपवाथी जेटलुं नणावे, तेटलुं व
नियें एक वाचनामां नणावी दीधुं. तेथी साधुउ एवी चाहना करवा
ग्या के आपणा गुरु आववाने हजी चार दिवस वधारे लागे तो सारुं
य, तो तेटलामां अमारुं अमुक श्रुतस्कंध पूर्ण थइ जाय.

पठी केटलाएक दिवस वीत्या केडे गुरु आव्या तेमनी साहामा स
उ तेडवाने गया, तेवारें गुरुयें पूठयुं, नो साधुउ ! तमारे वाचना सुखें थ
साधुउ बोल्या, हा महाराज ! तमारे प्रसादें थइ. हवे अमारे वाच
चार्य ए वज्रमुनिज होजो. यतियोयें वज्रमुनिनी घणी प्रशंसा करी तेव
गुरुयें अगीयारे अंग वज्रने आपीने वांचनाचार्य कस्यो. अनुक्रमें गुरु
पुर नगरें आव्या, अने वज्रमुनिनी पदानुसारिणी लब्धि देखी विचार्युं
ए पूर्वाध्ययनने योग्य ठे. ए अमाराथी अधिक थाशे ॥ यतः ॥ चत्तारि
सा पसुत्ता अइजाए समजाए अणुजाए कुलिंगाले. ए चारमां वज्रमुनि
तिजात ठे माटे एने पूर्वान्यास करावीयें.

ते समयें दश पूर्वी श्रीनद्रगुप्ताचार्य अवंतीमां ठे, ते विहार करवा
समर्थ ठे माटे तिहांज रहे ठे, एवुं विचारीने गुरुयें यतियोना संघनी
थें वज्रमुनिने उपाध्यायणीयें मोकल्यो. श्रीनद्रगुप्ताचार्यें तेनो विनय देखी
हर्ष सहित पूर्व नणाववा लाग्या. महाप्राज्ञ ठे माटे स्वल्पकालमां द
पूर्व नणी गया. अनुक्रमें सिंहगिरि आचार्य वली पण दशपुरें पधास्या अ
विचार्युं के वज्रमुनिने जिहां पूर्व नणवानो उद्देश कीधो तिहांज अनुज्ञा
रीयें. एम चिंतवी श्रीवज्रस्वामीने दशपुरनगरें तेडाव्या ॥ यतः ॥ जन्तुद्देस
णुन्नावि, तउ किज्जई कमो इम्मो अहि ॥ दिठिवाय महागम, सुत्तहाणं
उ पच्चा ॥ १ ॥ पठी तिहां वज्रसाधुने आचार्यपद स्थापनाने विषे तिर्य
जृंनक जातिना देवता महोत्सव करता हवा. अनुक्रमें सिंहगिरि आचार्य
च्छनो नार सर्व वज्रस्वामीने आपी पोतें स्वर्ग गया. वज्रस्वामी पांचशें स
धुना समुदाय साथें गाम नगरादिकें विहार करता हवा.

हवे पाटलीपुर नगरें धनो नामें शेठ वसे ठे तेने मनोज्ञ नामें स्त्री
तेनी रुक्मिणीनामा पुत्री ते रूपें करी श्रीकृष्णपत्नी रुक्मिणी समान ठे.
शेठने घरे साध्वीउ उतरी ठे, तेमनी पासें नणातां थकां रुक्मिणीयें
ज्रस्वामीना गुण तथा रूपनुं वखाण सांनलीने ते कुमरीयें वज्रस्वामीने

सायेज पाणिग्रहण करवानी प्रतिज्ञा करी, एटले परणुं तो एनेज परणुं, नहींतो बीजा कोइनी सार्थे परणुं नहीं एवो निश्चय कर्यो.

एवामां श्रीवज्रस्वामी पण पाडलीपुरे पधार्या, राजा साहामो तेडवा गयो तेने यतिनां वृंद साहामां मळे, तेमांहे जेने रूपवंत देखे तेने ए वज्र स्वामी छे एम मानीने राजा नमस्कार करी वंदना करे, तेवारे साधुउ कहे ता जाय के, गुरु पाछळथी आवे छे एम करतां अनुक्रमे गुरु आव्या, तेम नुं सर्वातिशायी रूप देखी राजा घणो हर्ष पाम्या. गुरुने वांदी गुणस्तुति करी, गुरु उद्याने उतर्या, राजायें वसंतरागादिकना आलापें धर्मदेशना सांभळी करी वांदीने राजा पोताने आवासें गयो. तिहां पोताना अंतःपुर नी आगळ गुरुना रूप स्वरादिकनो वर्णव कर्यो. अंतःपुरें कह्युं जे अमोने गुरु देखाडो. पछी पालखी, सुखासन, रथ प्रमुखमां बेसी अंतःपुर वांदवा निकळ्यो. अनुक्रमें चालतां गुरुपासें आवीने वंदना करी राणी सर्व हर्ष पामी.

धनश्रेष्ठी पण कोटिसुवर्णे भर्या रथ सार्थे पोतानी रुक्मिणी पुत्रीने लइ गुरुपासें आव्यो. गुरुयें विचार्युं जे महारुं रूप देखी घणी स्त्रीयो कर्मबंध करशे, माटे रूप परावर्त्तन करी बेठा थका धर्मदेशना दीये छे. तिहां सर्व स्त्रीउ वातो करवा लागी, के हा, हा विधाता चूक्यो छे, के जेणे कोकिलना कंठथी पण अधिक एवो एमनो स्वर कीधो, पण रूप सारुं कीधुं. तेथीज विधातायें कोकिलनो दृष्टांत जगतमां प्रसिद्ध कीधो छे. जेम कोकिल काळी छे तेनां स्वर मूक्यो छे, तेम रूप हंसपक्षीनां मूक्युं छे. विधाता पण एवो अवळो छे. एवुं लोकोना मुखथी साधुयोयें सांभळ्युं जे गुरुनी देशना तो अमृत सरखी छे, पण रूप तो सामान्य छे, ते आलाप संलाप गुरुयें सांभ ळ्यो तेवारे श्रीजिनशासननी प्रभावनाने अर्थे बीजे दिवसें सुवर्णसहस्रपत्र कमल उपर तेजना पुंज जेहवुं स्वाभाविक रूप छे तेवा रूपें व्याख्यान करवा बेठा, ते देखी सर्व लोक चमत्कार पाम्यां. घने घणा जीव प्रतिबोध पाम्या ॥यतः ॥दोहो॥ किंहि परिमल किंहिंउज्जल, किंहिं रस किहिं नवि गंध ॥ रे चंपय तुहिं तिन्नि गुण, सदल सुरूव सुगंध ॥ १ ॥

हवे धनश्रेष्ठी बोल्यो जे सातपेढी सुधी द्रव्य खातां खूटे नहीं, एटला द्रव्यनी सार्थे महारी रुक्मिणी कन्यानुं पाणिग्रहण करीने सातभूमिया आवासनेविषे पधारो, यौवननो लाहो ल्यो. गुरुयें कह्युं अमे विषयना

लोनी नथी विषयसुखने तो विष समान जाणी पडता मूकीने अमें दीक्ष लीधी ले. एम कही ते कन्याने प्रतिबोध आपी धर्म पमाडीने पोतानी शिष्य णी करी. एम वज्राचार्ये श्रीजिनशासननी प्रभावना करी.

हवे एकदा प्रस्तावें गुरुयें पूर्वदेशथी उत्तरदेशें विहार कर्यो. तिहां भ वितव्यताने योगें काल कराल डुःकाल पड्यो, कोइ रांक पण आगल घ हेर निकली शके नहीं. तेवारें श्रीसंघें विनति करी के महाराज! तमें अ मारें माथे गुरु लतां अमो डुःकालमां नूख मरायी डुःखी थयुं मांटें एल लाज तमोने ले ॥ यतः ॥ रयणायर तीर परंहि, याण पुरिसाण जं च द लिदं ॥ सा रयणायर लज्जा, नहु लज्जा इयर पुरिसाणं ॥ १ ॥ ते सांभ ली आचार्य पण लाज जाणी कपडाना पट्ट उपरें पोतें वचमां बेठा अने चारे बाजु श्रीसंघ बेठो. पली गंधर्वगीत गाते आकाशमार्गे चाल्या ॥ यतः ॥ साहम्मिय वच्छलंमि, उजया उजया य सज्जाए ॥ चरण करणेसुपरया, तिथस्स पनावमाएण ॥ १ ॥ एवामां एक पडोसी ब्राह्मणे ते पट्ट जातां देखी गुरु प्रत्यें कहेवा लाग्यो महाराज! हुं पण तमारो शय्यांतर बुं. तो मुजने एकलाने कां मूकी जाउ लो? गुरुयें कृपा आणी तेने पण पट्टमांहे बेसाड्यो, अनुक्रमें आकाशें रह्या थका थानकें थानकें जिन चैत्यवंदावता गुरु सुनिद्द देशनेविषे महानिशिनामा नगरीयें पट्ट लइ गया. तिहां राजा दिक सर्व बौद्धधर्मी ले ते जेवारें पजोसणना दिवसो आव्या तेवारें बौद्ध लोकोयें राजाने कहीने सर्व मालिलोकोने कहेवराव्युं जे जैनी लोकोने फूल आपवां नहीं. तेवारें उंशीयाला थया थका श्रीसंघें वज्रस्वामीने विन ति करी के, महाराज! फूल मली शकतां नथी ते सांभली गुरुयें विचार्युं जे ए कर्त्तव्य यतिने करवा योग्य नथी तथापि केवल श्रीजिनप्रवचननी उ न्नति करवाथी माहालान ले. एवुं जाणीने आकाशगामिनी विद्याने वडे मालवदेशें महेश्वरी नगरीनेविषे हुताशन व्यंतर चैत्यनी पासेंना उद्यानने विषे गया. तिहां तडित नामें माली ते आचार्यना पिता धनगिरिजीनो मि त्र बे, तेणे आचार्यने नमस्कार कर्यो, अने आव्यानुं कारण पूबयुं. तवे गुरुयें कह्युं फूल जोइये लेयें ते एकगं करी राखजो वलता आविशुं तेवारें लेता जइशुं. एवुं कहीने पली गुरु, हिमाचलपर्वतें पद्मद्रहनिवासिनी देवीनी पासें गया. तेमने श्रीदेवीयें वांद्या अने पोतानी पासें

प्रयोजन पूछ्युं. आचार्यें कह्युं कमल जोइयें छैयें. ते समयें तेणे देवार्चा निमित्तें एकलक्ष कमल आण्यां हतां, तेज आप्यां. ते कमल लइने पाछा मा लवाना वननेविषे आव्या, तिहांथी माली पासेंथी वीश लाख फूल लइ पूर्वेनवना मित्र जृंनकदेवतायें विमान रच्युं, तेमां बेसिने देवडुंडुनि वाजते महानिशीपुरी नगरीयें आव्या. तिहां फूल, श्रावकोने आप्यां. श्रीजिनमंदिर ने विषे देवतायें तथा श्रावकें महोटी पुजा करी. राजायें मालीने पूछ्युं के, महारी आज्ञाविना फूल कोणें आप्यां? मालीयें कह्युं अमें आप्यां नथी. पछी अनुक्रमें गुरुनुं माहात्म्य सांजली राजा पोतें वांदवा आव्यो. तिहां गुरुनुं रूप देखी धर्मदेशना सांजली राजा प्रतिबोध पाम्यो, श्रावक थयो. बीजा पण घणां लोक प्रतिबोध पाम्यां अने श्रावक थया.

एक दिवस दक्षिण मार्गमां जातां थकां श्रीवज्रस्वामीने श्लेष्म थइ आव्युं, तेवारें साधुउंनी पासेंथी गोचरीमां सुंठ मगावी ते साधुउं लइ आव्या, तेने पोतें कानमां धरी राखीने विचार्युं जे पछी खाशुं, पण चूलमां एमज रही गइ, खवाणी नहीं. ते पडिक्कमणुं करती वखतें खमासमण देतां पडिलेहणां करतां नीचें पडी गइ, तेवारें गुरुयें विचार्युं जे हुं दशपूर्वधर छुं तेने आवी चूल ते वली केम पडी? एथी जाण्युं जे हवे महारुं आयुष्य स्वल्प रह्येलुं जणाय छे, माटें अनशन करवुं योग्य छे. अने पोताना शिष्य वज्रसेनने कह्युं के बार डुकाली पडशे, तेवारें तुं सोपारापुर पाटण जाजे, कोइ तुने पूछे के सुनिक्ष क्यारें थशे? तेवारें ताहरे एम ध्यानमां राखवुं के जे दिवसें लाख मौल्यनी एक हांमीचडे, ते दिवसथी बीजे दिवसें सुगाल थाशे. एमविचारी जवाब आपजो अमें तो हवे अनशनकरशुं. एम कहीने वज्रसेनने विहार कराव्यो. पोतानी पासें रहेला साधुउंने जेवारें निक्षा नहिं मले, तेवारें लब्धियें विद्यापिंम करीने केटलाएकने जमाड्या, पछी एक दिवसें साधुउंने कह्युं के जो चारित्रने दोष लगाडी जमो, तो ए विद्यापिंम ल्यो. तेवारें साधु बोल्या अमारे चारित्र साथें अर्थ छे, माटें ए पिंम लेशुं नहीं. पछी वज्राचार्यजी, पांचशें साधुउंने लइने अनशन करवाने माटें चाल्या. तेमां एक न्हानो चेलो हतो तेने गुरुयें वार्यो के तुं अनशन करीश नहीं तेणें कह्युं हुं अशुद्ध पिंम लइश नहीं तो पण तेने नोलव्यो के तुं इहां बेश, हुं आवुं छुं पण ते चेलायें मोहथी कह्युं जे

हुं तो तमारी पछवाडे आवीश. तो पण गुरुयें समजावीने राख्यो, तेवारें चेलायें जाण्युं जे गुरु महाराजने अप्रीति न थाय, तेम करुं तो ठीक. एवुं चिंतवीने फरी पर्वतना मूलमां आवी तपेली शिला उपर ते चेलायें अनश न करी लीधुं, ते बालक हतो माटें सुकुमार पणाथी तत्काल मिणनी पेठें गली गयो. शुनध्यानें मरण पामी देवलोक गयो. देवताउयें नेला थइने तेनो महिमा कस्यो, तेवारें बीजा साधुउयें पण विशेष दृढ थइने अनशन कस्यां,परंतु मिथ्यात्वी देवीयो श्राविकाउनां रूप करी तिहां आवीने साधुउने अनशनमां मोदकादिकनी निमंत्रणा करवा लागी. अने बोली के,हे महारा ज ! आ शुद्ध निर्दोष आहार ठे ते ल्यो. तेवारें साधुउने अप्रीति कपनी जाणी नजीकना बीजा पर्वतनी शिलापट्ट उपर जइने निर्विघ्नपणे अनशन कर्युं, शुनध्यानथी काल करीने वज्रस्वामी प्रमुख देवलोक गया, तेवारें इंद्र माहाराजें रथ उपर बेशी पर्वतने प्रदक्षिणा देइ सर्व साधुउने वांद्या. तिहां ते इंद्र माहाराजना रथनी रेखा मंमाणी, तेथी ते पर्वतनुं रथावर्त एवुं नाम थयुं. तथा तिहांना वृक्ष पण साधुउने नमवाथी नमेला थकाज आज पर्यंत देखाय ने एमने पाटें वज्रसेनाचार्य पण महाप्रानाविक थया. श्रीवज्र स्वामी देवलोक गया पठी दशमुं पूर्व तथा चोथुं अर्द्धनाराच संघयण विठेद गयुं ॥ इति प्रावचनिक तथा धर्मकथिक प्रानाविकयुगलेवज्राचार्यनी कथा॥ हवे त्रीजो वादी प्रानाविक तथा चोथो नैमित्तिक प्रानाविक कहे ठे.

॥ वाईपमाणं कुसलो, रायडुवारेवि लद्ध माहप्पो ॥ निमित्तिउ निमित्तं, कहइ मि पवंचए निउणं ॥३४॥ अर्थः-(वाई के०) जे वादी होय ते (पमाणं के०) प्रमाण एटले तर्कशास्त्रनेविषे (कुसलो के०) कुशल विचक्षण जोइयें. जैनप्रमाणने विषे तथा सर्व प्रमाणने विषे निपुण होय जेमाटें अज्ञातप्रमाण जे होय ते वाद करी शके नहीं. जेम दाढारहित सर्प होय ते पराजव करी शके नहीं. ए प्रमाण शास्त्रथकी अजेय थाय जेम मेदपाट देशें आहडपुरी नगरीयें बत्रीश दिगम्बराचार्य साथें वाद करीने श्रीजगचंद्रसूरि हता, ते हीरला जगचंद्र एवुं बिरुद पाम्या. तेमज श्रीमुनिसुंदर सूरि श्रीरत्नशेखर तेंयें ब्राह्मणोनी साथें वाद करीने दफतरखाननी सजाने विषे " वादिगोकुलसंकट " एवुं बिरुद पाम्या ॥ यतः ॥ समणस्स जगवउ

महावीरस्स चत्तारिस्सया वाईणं सदेव मणुआ सुराए परिसाए अपराजि याणं उक्कोसिया वाईसंपया होत्था॥ एम चोवीशे तीर्थंकरने वादीनी संपदा वे.

जिहां उत्तम वन होय, तिहां कांटाला वृक्षनी वाड पण जोइयें. तेम गच्छनायकने वादीनी वाड जोइयें. जे शास्त्रने वारें बोलतो थाके नहीं, किहांएक वालवुं पडे, तो चालवे पण थाके नहीं, भूख्युं तरस्युं रहेवुं जो इयें. तिहां भूख तृषाथी मरे नहीं. ते माटे कहुं के (रायडुवारेविलद्धमाह प्पो के०) राजद्वारने विषे पण लब्ध एटले विशेषें पाम्युं छे माहात्म्य जेणें अर्थात् पणावाद जीतीने राजसनानेविषे प्रसिद्ध थयो होय, जेम पणा संग्राममां जय पामीने सुनट प्रसिद्ध थयो होय तेम ए जाणवो.

ए वादी प्रनाविकनी ऊपर मल्लवादीनो संबंध कहीयें छेयें. नरतक्षेत्रने विषे नृगुकच्छ नामें नगरें श्रीजिणाणंदसूरि चोमासुं रह्या हता ते समय तिहां बौद्धदर्शनी पणा रहेता हता, तेमनो जिणाणंदसूरि सायें वाद थयो, ते वखत राजानी समक्ष बेहु पक्ष वालायें एवो ठेराव कस्यो के,जे वादी हारे तेने देशोटो आपवो अने जे जीते ते देशमां रहे. तिहां वाद करतां नवितव्यताने योगें जैनमती हास्या अने बौद्धमती जीत्या, तेवारें जैनमती तिहांथी चाल्या ते वल्लनी नगरीयें आव्या, तिहां जिणाणंदसूरि पणा चिं तातुर थका रह्या, ते जिणाणंदसूरिनी डुर्लनदेवी एवे नामें बहेन छे तेना एक अजितयश,बीजो यक्ष अने त्रीजो मल्ल एवा त्रण पुत्र छे, तेनो धणी कालधर्म पामे थके डुर्लनदेवीयें वैराग्य पामी, त्रणे पुत्रोनी सायें दीक्षा लीधी. ते साध्वीये गुरु तथा संघने पोताना गुणें करी वश कीधा, पुस्तक ना नंमारनी अधिकारिणी थइ. पोतें पुस्तकोने लखावे, गोंडे, बांधे, संनारी राखे; एम सर्व नंमार तेणें पोताने हाथे राख्यो. गुरुये त्रणे चेलाने सम स्त शास्त्र नणाव्यां, पण एक नयचक्र नामें प्रमाण ग्रंथ नणाव्यो नहीं. कारण के पूर्वाचार्ये प्रमाणवाद नामा पूर्वमांथी सारोद्धार करीने नयचक्र शास्त्र रच्युं छे. ते देवताधिष्ठित छे माटें जेणे श्रुतदेवतानुं आराधन करी ते देवतानी आज्ञा लीधी होय, तेनाथी नणाय. एवा हेतुथी नणाव्युं नहीं.

हवे ते त्रण शिष्यमांथी गुरुयें एक मल्लवादीने योग्य जाणीने नयचक्र ग्रंथ साध्वीना हाथ आप्यो. अने जाण्युं जे नाग्याधिक हशे, तो पोतानी मेळें वांचशे. अने जाणपणुं करशे. पछी त्रणे चेला साध्वीनी पासें मूकी

ने गुरुयें तिहांथी विहार कस्यो. हवे मल्लवादीने इच्छा उपनी जे ए ग्रंथ हुं वांचुं. गुरुयें मुजने शा माटें जणाव्यो नही होय? पढी ते ग्रंथ साध्वी थी पण गनो नंमारामांथी लइने वांचवा लाग्यो. तेमां पहेली आर्या वांचे ठे, ते आवी रीतेंः—विधिनियमनंगवृत्ति, व्यतिरिक्तत्वादनर्थकं वोक्तम् ॥ जैनादन्यच्छासनमनृतं नवतीति वैधर्म्यं ॥ १ ॥ ए आर्यानो अर्थ समजीने हर्ष पाम्यो थको आंख मीची एवामां श्रुतदेवी तेना हाथमांथी पुस्तक लइने अदृश्य थइ गइ. आंख उघाडी जुए ठे तो हाथमां पुस्तक दीठुं नहीं. तेवारें चिंतातुर थको विचारवा लाग्यो के में गुरुनी अनाज्ञायें पुस्तक वांच्युं, तेनुं फल हुं पाम्यो.

पढी ते वात मल्लवादीयें साध्वीनी आगल कही, साध्वीयें श्रीसंघने कह्युं श्रीसंघ घणुं दुःख धरवा लाग्यो. मल्लवादीयें एवो अनिग्रह कस्यो, के जो ए पुस्तक मने पाछुं मले, तो हुं आहारमांहे विगय वहोरुं, तिहां सुधी धान्यमां एक वाल खावा मोकला राख्या तथा ज्यांसुधी पुस्तक न मले तिहां सुधी वनमांहेज रहेवुं एवो निश्चय कस्यो. पढी श्रीसंघें आग्रह करीने मल्लवादीनी देह रक्षाने अर्थें विगय मोकलुं राखवानुं कह्युं. मल्लवादीयें पण संघनुं कहेण मान्युं यतः ॥ कयकिच्चेहिवि तिहुयण, गुरुहिसिर हरिय पाणी पत्तमेहिं ॥ जं मन्निज्जइ संघो, आणं को तस्स लंघेइ ॥ १ ॥ पढी वल्लनी नगरीनी पासें एक पर्वत हतो,तिहां जइ रह्या. एक वाल नामे धाननुं नोजन करे, श्रीसंघ पण प्रतिदिवस श्रुतदेवतानुं आराधन करे.

॥ हवे एकदा प्रस्तावें रात्रिने समयें मल्लवादी जागे ठे, नयचक्र शास्त्रनी पहेली आर्यानो अर्थ विचारे ठे. एवामां श्रुतदेवीयें आवी पूछ्युं के इष्टं ? मल्लें कह्युं नाग्य वल्युं. वली ठ महिना पढी तेज जगायें तेज वखतें श्रुतदेवीयें पूछ्युं " काभ्यां " कोनी साथें मल्लें कह्युं " घृतगुडाभ्यां " घृत गोल सायें एवी धारणा शक्ति देखी श्रुतदेवी चमत्कार पामी अने प्रत्यक्ष थइ कहेवा लागी के, माग. माग. हुं संतुष्ट थइ ठुं. मल्लें कह्युं के, नयचक्रशास्त्रनुं पुस्तक आपो. श्रुतदेवीयें पुस्तक आप्युं अने कह्युं के तुं वादने विषे अजय थाइश, एवो वर आपी देवी अदृश्य थइ. पढी श्रीसंघें महोटा आमंबरसहित मल्लने नगरमां प्रवेश करवानो महोत्सव कस्यो. तथा वली श्रीसंघें जिणाणंदसूरिने पण परदेशथी आग्रह करी तेडी आव्या. त्र

णे जाइने आचार्यपद देवराव्यां. मल्ल बोल्यो के, भरूअचमां जइ बौद्धनी साथें वाद करी बौद्धने देश त्याग करावुं, तोज मारूं नामुं प्रमाण नहीं तो अप्रमाण जाणवुं.

एवी प्रतिज्ञा करी श्रीसंघनी आज्ञा मागी, भरूअच नगरें आवी राजाने जइ मल्या. तिहां नविन काव्यादिक रची, राजाने खुशी करीने कह्युं के, हे राजन्! बौद्धने तेडावो, हुं तेमनी साथें वाद करीश. राजायें बुद्धानंद नामें बौद्धमतना आचार्यने तेडीने कह्युं के आ मल्लसाथें वाद करो. नहींतो देशवटो ल्यो. तेणें पण वाद करवो कबूल कर्यो. पछी वादी, प्रतिवादी, साक्षी अने सभापति, ए चार परठव्या. तेवार राजायें पूछयुं के तमारामांथी प्रथम प्रश्न कोण करशे? तेवारें भवितव्यताने योगें बौद्धे कह्युं के प्रथम वादी बोले, पछी प्रतिवादी बोले. राजायें मल्लवादीने कह्युं तमे प्रथम बोलो. मल्लवादीयें ते वात प्रमाण करीने नयचक्र शास्त्रनी युक्तिनो उच्चार कर्यो, जेम समुद्र गर्जना करे, तेम गर्जना करतां जेम जेम बोलतो जाय, तेम तेम तेनो स्वर मेघनी परें गंभीर थतो दीठामां आव्यो. एम छ दिवसपर्यंत वादी अने प्रतिवादी आपस आपसमां बोल्या. तेमां छठे दिवसें मल्लवादीयें एवो पूर्वपक्ष कीधो, के जे पछी बौद्धानंदने धरदरावी नाख्यो. जुवाब आपी शक्यो नहीं. तेवारें परिश्रांत थयो थको सातमा दिवसनो वायदो राख्यो, सभाजनो उठी ने सर्व पोतपोताने घेर गया. मल्लवादी गुरु दर्पसहित उपाश्रये आव्या, बौद्धानंदे खडी (चाक) ना कटकाथी मल्लवादीनो पूर्वपक्ष लखवा मांड्यो, पण सांभरे नहीं. तेथी चिंतातुर थयो रात्रि उजागरो करवो पड्यो, ऊंघ आवी नहीं. हृदयस्फोट थयो. तेवारें खडीनो कटको हाथमां थकांज मरण पाम्यो.

प्रभातें दातण पाणी करी तांबूल खाइ राजा सभामांहे आव्यो, मल्लवादी गुरु पण दर्पसहित सझाय करी राज्य सभायें आवी बेठा. सर्वेसना भन्नी तेवारें पूछ्युं बौद्धानंद, हजी आव्या नथी तेनुं कारण शुं? घणी वार वाट जोतां पण नाव्यो तेवारें तेने तेडवामाटे राजायें माणस मोकल्युं. तेणे जइ ओरडो उघाडी जोयुं तो आगल पाटलो पडेलो छे, तेनी ऊपर खडीथी अक्षरो लखेला छे हाथमां खडीनो कटको रहेलो छे एवो थको मुवो पड्यो छे. ते जोइ राजपुरुषें आवीने राजा आगल यथास्थित

वात कही. तेवारें राजायें बौद्धोने देशवटो दीधो. ते दिवसना बौद्ध ग
छे, ते हजी हिंदुस्थानमां आव्या नथी.

पछी राजायें जिणाणंदसूरि प्रमुख सर्व संघने निशान सहित गाजते
जते गाममांहे आएयो. ते दिवसथी राजायें मल्लनुं नाम मल्लवादी एवुं स
पन कर्युं. ए रीतें श्रीजिनशासननी घणी प्रनावना करीने मल्लवादी सू
स्वर्गें गया. ए त्रीजा वादी प्रानाविक उपर मल्लवादी सूरिनी कथा कही

हवे चोथो निमित्त प्रानाविक कह्यो, छे तेनी व्याख्या करे छे.

(निमित्तिउ निमित्तं के०) तेहवा दीस श्रीजिनशासनना कार्यने वि
जे निमित्तना जाण होय ते निमित्त प्रयुंजे, ते निमित्त आठ प्रकारनां छे
आदिव्य, २ औत्पातिक, ३ आंतरिक्ष, ४ नौम, ५ अंगफुरकण, ६ स्वर, ७
क्षण, ८ व्यंजन, परिज्ञान रूप इहां जे कोइ अकारणे निमित्त प्रयुंजे,
ते विराधक जाणवो ॥ यतः ॥ जोइस निमित्त अरकर, कोउ आएसनूइ
धमेहिं ॥ करणाणुमोयणेहिय, साहुस्स तवरकउ होइ ॥ १ ॥ तेमाटे (क
म्मि के०) कार्यें एटले जिहां श्रीजिनशासननी महत्प्रनावना थाती हो
एवा कार्यमां निमित्त (पउंजए के०) प्रयुंजे ते पण कोण प्रयुंजे के
(निउण के०) निपुण माह्यो होय ते प्रयुंजे. कारण के जे कोइने का
निमित्त कह्युं अने ते जो मले नहीं तो उलटी श्रीजिनशासननी अप
जना थाय, माटे तेम न करवुं ॥ ३४ ॥

हवे ए निमित्त प्रानाविक उपर श्रीनद्रबाहु स्वामीनो दृष्टांत कही
येयें. आ नरतक्षेत्रे महाराष्ट्रदेशमां प्रतिष्ठानपुर नगरने विषे वाराहमिहि
अने नद्रबाहु ए नामें बे ब्राह्मण नाइउ रहेता हता, ते चौद विद्याना पारगाम
छे, एकदा प्रस्तावें विहार करतां श्रीयशोनद्रसूरि तिहां उद्यानने विषे अ
वी समोसस्या, तेमने राजा प्रमुख सर्व लोक वांदवा जाय छे, ते जोइ
बे नाइ ब्राह्मण पण वांदवा गया. तिहां गुरुनी देशना सांजली नद्रबा
वैराग्य पाम्यो, तेवारें वाराहमिहिरने कह्युं के, हुं तो दीक्षा लइश, वाराहमि
हिरें कह्युं हुं पण तहारी साथें दीक्षा लइश. परस्पर प्रेम छे, माटे बे
नाइयें दीक्षा लीधी. बेहु नाइ गुरुपासें चौद पूर्व नस्या तेमां नद्रबाहु त
सुविहित चूडामणि थया.

हवे जो पण वाराहमिहिर महोटो नाइ छे, तो पण तेने ?

सूरियें आचार्यपदने अयोग्य जाणीने आचार्यपद आप्युं नहीं ॥ यतः ॥ वुढोगणहर सद्दो, गाय सामाइहिं धीरपुरिसेहिं ॥ जो ततवइ अपत्ते, जाणंतो सोइ महापावो ॥१॥ जे माटे आचार्यपद तो गणधरोयें धारण कर्युं ते जो अविनीत अयोग्यने आपे, तो आपनार पण अनंत संसारी थाय. एवुं जाणीने गुरुयें श्रीसंभूतिविजयजी तथा, श्रीभद्रबाहुजी ए बेहुने परस्पर प्रीति जाणी तथा आचार्यपदने योग्य जाणी बेहुने पट्टधर कीधा. भद्रबाहुने आचार्यपद मल्युं जोइने वाराहमिहिर अभिमान आणी पूर्वे जे बार वर्षपर्यंत चारित्र पाल्युं हतुं ते कर्मोदयने वशें चारित्रथी भ्रष्ट थयो. ॥ यतः ॥ कछवि जीवो बलिउ, कछवि कम्माइ हुंति बलियाइं ॥ जीवस्सय कम्मस्सय, पुवनिबद्धाइं वेराइं ॥ १ ॥ हवे वाराहमिहिर कोपानलयुक्त थयो थको गछथी बाहेर नीकलीने गुरुनी उपर द्वेष धरवा लाग्यो, चौदे पूर्व भणेलो हतो माटे चंदपन्नत्ति, सूरपन्नति प्रमुख जैनशासनना ज्योतिष्य ग्रंथो जोइ ते उपरथी बीजा नवीन ज्योतिषनां वाराहीसंहिता प्रमुख ग्रंथो बनावी साधुनो वेष मूकीने ब्राह्मणनो वेष धारण करी लोकोनी आगल निमित्त कहीने तेनाथी आजीविका चलाववा लाग्यो, तेने लोक पूछे के एटलुं तमें क्यांथी जाण्या? तेवारें लोकोनी आगल एवुं कहे के में एक दिवस नगरनी बारणे लग्न कुंमली मांमी, ते कुंमलीने भांग्या विना एमज पाछो चाली निकल्यो. पछी जेवारें याद आव्युं, तेवारें भूसाडी नाखवा गयो अने तिहां जइने जोवे तो कुंमलीमां सिंहलग्ननो स्वामी सिंह ते पूछडुं वधारीने ऊपर बेठो छे पछी में लग्नने भक्तिने लीधे महारी हाती कठिण करीने सिंहनी नीचें घुसीने लग्न भुंसाडी नाख्युं. महारी भक्ति जोइने सिंहनो अधिपति जे सूर्य ते तिहां आव्यो अने महारा उपर तुष्टमान थइने बोल्यो के, माग. माग. तेवारें में कह्युं, मुझने नक्षत्रादिकनो चार खरेखरो जेवो छे तेवो बतावो. पछी सूर्य पोताना ज्योतिषना मंमलचारमां मुझने लइ गयो. तिहां मने सर्व चार बताव्या, ग्रहचक्र बताव्युं ते ज्योतिषना बलथी हुं त्रण कालनी वात जाणुं छुं. एवी कल्पित वातो कहीने लोकोमां पूजाय, राजा प्रमुखने निमित्त कहीने खुशी करे अने चमत्कार पमाडे. एम घणा लोकोने मिथ्यात्वी कर्या. एवा अवसरमां श्रीभद्रबाहु स्वामी पण ते नगरमां आव्या तेमने राजा प्रमुख सर्व लोक वांदवा

गया श्रावकोयें महोटा महोत्सव सहित गाममां प्रवेश कराव्यो,
राह मिहिरथी ते सहन थयुं नहीं, तेवारें विचार्युं जे एनुं मान ...
रुं, तो सारी वात थाय. एवुं चिंतवी एक दिवस राजसनामां
राजाने कहेवा लाग्यो के, श्राजथी पांचमे दिवसें पूर्व दिशाथी .
वशे, ते त्रीजे पहोरे वरसशे. श्रा हुं कुंमालुं करुं छुं, तेना वच्चमां
पलनुं माठलुं पडशे. एवुं निमित्त कह्युं ते वात श्रावकोयें श्रावीने
हु स्वामी श्रागल कही, के हे स्वामी ! श्रा वाराहमिहिरें कहेली .
छे किं वा श्रसत्य छे ? तेवारें नद्रबाहु बोल्या, कांइक सत्य छे श्रने
श्रसत्य छे, केम के पूर्व दिशाथी नहीं पण ईशान कोणेथी श्रावशे,
घडी दिवस पाछलो रहेशे तेवारें पडशे, पण त्रीजो पहोर कह्यो
कह्यो छे. वली बावन पलनो नहीं परंतु वायुथी सुकाइ जाशे माटे
एकावन पलनो मत्स्य रहेशे, तथा कुंमालानां मध्यनागमां नहीं
कुंमालानी कोर उपर एक बाजुयें पडशे, माटे ते वाराहमिहिर
ना योगथी श्राटलुं जुठुं बोले छे. ए वात पण श्रावकोयें राजाने
राजा बोल्यो. साच जूठनी खबर हवे तरत पांच दिवसमां ज॰
एटलामां पांचमो दिवस श्राव्यो तेवारें वर्षाद वरश्यो श्रने श्री
स्वामीना कहेवा प्रमाणें सर्व वात सत्य थइ, तेवारें राजा प्रमुख
कोयें श्रीनद्रबाहु स्वामीनुं ज्ञान वखाण्युं. श्रने वाराहमिहिरनी
ची कांइ जुठी वात पडी गइ तेथी तेनी मानता कमती थवा
एक दिवस राजाने घेर पुत्रजन्म थयो तेनी वाराहमिहिरे .
नावीने एकशो वर्षनुं श्रायुष्य वर्त्ति काढाडयुं, त्यारें सर्व लोक ०६
ने राजाने वधाववा श्राव्या. श्रन्यदर्शनी योगी, संन्यासी, प्रमुख ..
शीर्वाद श्रापवाने श्राव्या, परंतु एक श्रीनद्रबाहु गया नहीं, तेवारें
हमिहिर राजाने कहेवा लाग्यो के, हे राजन् ! तमारे घेर पुत्रजन्म
ते नद्रबाहुने रुच्यो नहीं, तेथी श्रांही श्राशीर्वाद श्रापवा श्राव्यो नहीं,
ए श्वेतांबरनें दंमवो जोश्यें. ए वात पण श्रावकोयें जइ श्रीनद्रबाहु
मीने कही. तेवारें नद्रबाहु बोल्या वारंवार केम जवाय ? एक वार
श्रावक बोल्या क्यारें जाशो ? गुरु बोल्या श्रावमे दिवसे रात्रिने वखतें बि॰

योगथी पुत्र मरण पामशे,तेवारें मुख देखाडी आवशुं. ए वात श्रावकोयें
राजाने कही, राजायें सर्व बिलाडीयोने आखा गाममांथी बाहेर का
ढी मूकावी, तथा बिलाडी कोइना घरमां अथवा गाममां न आवी श
केना शेंकडो गमे जावता कर्या. परंतु आठमे दिवसे देवयोगें दासीना
थी कमाडनी गांसणी बालकना माथा उपर आवी पडी तेथी बालक
ण पाम्यो. धावीयें जइ वाराहमिहिरने कह्युं, वाराहमिहिर मूर्छा खाइ ध
यें पड्यो, वली सावधान थयो थको रोवा लाग्यो. अनुक्रमें राजायें
त सांभली तेथी गुरुने ज्ञाने चमत्कार पाम्यो. तेवारें वाराहमिहिर बो
, बिलाडीथी तो मरण पाम्यो नही? पछी गुरुयें गांसणीनी उपर बि
डीना मुखनो आकार लाकडामां करेलो हतो ते देखाड्यो राजायें कह्युं
तांबरनां वचन खोटां न थाय, पछी गुरुने पूछता हवा के एकज लग्नमां
लो फेर केम पड्यो? गुरुयें कह्युं अमें बेहु श्रीयशोभद्रसूरिना शिष्य
ं, पण ए गुरुप्रत्यनीक थइ चारित्र मूकी गलामां जनोइ पहेरी भ्रष्ट
ो छे, माटे एनुं वचन मलतुं नथी. पछी राजानुं चित्त तेना उपरथी उतरी
ं तेथी वाराहमिहिर लज्जा पाम्यो, माटे तिहांथी निकली अन्यत्र स्था
कें जइ तापसी दीक्षा लइ. अज्ञानकष्टथी जैन उपर द्वेष चिंतवतो मरण
मीने व्यंतर देवता थयो. तेणे आवी श्रीसंघमां मरकीना रोगनो उपद्र
कर्यो, तेथी घणां लोक मरवा लाग्यां, तेवारें श्रावकोनो उपद्रव टालवा
माटे महामहिमावंत एवुं "उवसग्गहर" नामें स्तोत्र गुरुयें बनाव्युं. तेनुं
घरनेविषे गणवुं सरु थयुं तेथी सर्व उपद्रव दूर थइ गयो. पछी सर्व
कोना घरमां जो थोडुं शुं काम होय तो पण ते उवसग्गहरनो पाठ
, के ते काम पार पडी जाय, एम करतां करतां छेवट लोकोमां एवी
ल पडी गइ के जो गाय दूध न आपे, तो पण उवसग्गहर स्तोत्र गुणे,
वारें गाय पण दूध आपती थाय. एमज वली कोइक छाणा वीणवा गइ
एकली हती तेनी छाणानी पोटली उपाडी आपवाने कोइ बीजो माणस
वखत तिहां हाजर हतो नहीं तेवारें तेणें पण त्यां उवसग्गहरनो पाठ
र्यो, तेथी नागें पोते आवीनें भारी उपाडी तेना माथा उपर राखी दीधी.
एमज एक स्त्री रोटला करवा बेठी हती,तेनो छोकरो फाडे गयो,ते रोवालाग्यो
णे जाण्युं जे रोटलो बली जाशे, त्यारे उवसग्गहरनो पाठ कर्यो के तर

त नागराजा आवीनें कहेवा लाग्यो जे, शुं काम ठे? स्त्रीये कह्युं ठोकरो रडे ठे. तेने राखो. तेवारें ते ठोकराने शौच करावी रोतो रखाव्यो. एवुं प्रा यें सांजलाये ठेयें. एवी रीतें नीच कामो लोको करावता लाग्या, तेवारें नागराज खीज्यो अने गुरुपासें आवी विनति करी के, हे महाराज! संघ थी हुं एक क्षणमात्र पण अलगो रही शकतो नथी,लोको तो पूर्वोक्त हलकां हलकां काम ते पण माहरी पासें करावे ठे, तेवारें गुरुयें जाण्युं जे ए नि र्जाग्य लोको देवने खीजावशे तो उलटो अनर्थ थइ पडशे, माटे आ स्तो त्र जंमारी मूकवुं युक्त ठे. तेमने नागेंद्रें कह्युं, हे स्वामीनाथ! आप ठही गाथा जंमारी मूको अने शेष पांच गाथाथीज हुं म्हारे स्थानकें वेगे थ को सर्व उपद्रव टालीश. एवुं सांजलीने गुरुयें ठही गाथा जंमारी मूकी. ए म संघने उपगार कीधो, श्रीजिन शासननी उन्नति थइ. वली श्रीजद्रबाहु स्वामीना करेला श्रीआचारांग, सूयगडांग, आवश्यक, दशवैकालिक, उ त्तराध्ययन, दशाकल्प, व्यवहार, सूरपन्नति, रुषिजाषित ए दशनी नि र्युक्ति प्रमुख अनेक ग्रंथ हालमां विद्यमान ठे. ए श्रीजद्रबाहुस्वामी श्री माहावीर स्वामीथी एकसो सित्तेर वर्षें अनशन आराधी देवलोकें गयां. ए चोथा नैमित्तिक प्राजाविकनें विषे श्रीजद्रबाहुस्वामीनी कथा कही॥

हवे पांचमो तपस्वी प्राजाविक तथा ठहो सिद्ध प्राजाविक कहे ठे.

॥ जिणमय मुप्नासंतो, विगिठे खमणेहिं जणइ तवस्सी ॥ सिद्ध बहू विय्यमंतो, वियावंतो य उचियवयणं॥ ३५॥ अर्थः-विकृष्ट तप जे मास खमण, पासखमण, अठाइ प्रमुख तप करतो थको श्री (जिणमयं के०) जिनमतप्रत्यें जिनशासनप्रत्यें (उप्नासंतो के०) दीपावतो थको (विगि ठेखमणेहिं के०) विग्रंथ अने साधु होय तेने (तवस्सी के०) तपस्वी प्राजाविक (जणइ के०) कह्यो ठे.॥ यतः॥ एगोय होइ हरिणो, बीउ हि ठिविसस्स सप्पस्स॥ तइउय कूव फलगे, कोसवरे थूल जद्दमुणि॥ १॥

माटे जे तप करवुं ते निर्मायपणें करवुं, ए प्रकारें जे तप करे, ते तप परत्र हितकारी थाय. यतः॥ दसहिं गणेहिं संपन्ने अणगारे आगमेत्ति जद्दत्ताए कम्मं पकरेंति तं जहा॥ अणिदाणयाए, दिठिसंपयाए,जोगवाहिया ए, खंतिखमणिइ जिइंदियत्ताए, अमाइल्लयाए, अप्पसन्नयाए, संसा मण याए, पवयणवनुलयाए पवयण उप्नावणयाएत्ति॥ इति श्रीगणांगे॥

अन्यथा अज्ञान तप तो जीवें घणायें कस्यां, पण श्रीजिनशासनो सार जे दया तेने जाणी नहीं, तो सर्व तप वृथा जाणवां. कायक्लेशरूप जाणवां. जो मायायें तप करे, तो स्त्रीवेद पामी स्त्रीना कामभोग पामे, पण तेनुं फल आगल स्त्री रत्ननी परें दुर्गतिनुं जाणवुं. तेमाटे केवल कर्मनिर्ज्जरा हेतुयें तपस्या करे, प्रस्तावें तपोलब्धियें करी श्रीजिनशासननां कार्य करे, ते तपस्वी नामें पांचमो प्रभाविक जाणवो.

हवे एनी ऊपर विष्णु कुमारनो संबंध कहीयें बैयें:—एज भरतक्षेत्रें हस्तीनागपुरें, पद्मोत्तरनामें राजा तेने ज्वाला नामें स्त्री बे, तेणे एकदा प्रस्तावे सिंह स्वप्नमां दीगे, तेने प्रभावें विष्णुकुमर जन्म्या. अन्यदा वली ते ज्वालामुखीयें चौदस्वप्न दीगं, तेने प्रभावें महापद्मनामें नवमो चक्रवर्त्ती लघुपुत्र जन्म्यो, विष्णुकुमार तो धुरयकीज निःस्पृही वैराग्यवान् हतो, माटे तेणें युवराज पदवी लीधी नहीं. तेवारें तेना पितायें महापद्मने युवराज पदवी आपी. हवे ते समये उज्जयिणी नगरीनो नरवर्मनामे राजा बे, तेनो मिथ्यात्ववासित नमुचि एवे नामें मंत्रीश्वर बे. एकदा श्रीमुनिसुव्रत स्वामीना शिष्य श्रीसुव्रत नामें आचार्य ते अयवंति नगरीना उद्याननें विषे आव्या, तेमने लोक वांदवा जाता देखीने राजा नमुचि प्रधानने कहे बे, के चालो आपणे पण आचार्यने वांदवा जइयें, तेवारें मंत्रीयें कयुं के, हुं एनी सायें वाद करीश, तेने राजायें पण भइकभावें कह्युं तहारे वाद करवो होय तो सुखें वाद करजे.

पबी नरवर्मराजा नमुचिसहित जइने गुरुने वांदी बेग, तिहां नमुचि प्रधान मदमत्त थइने आचार्य सायें वाद करवा लाग्यो. तेने असमंजस बोलतो जाणीने आचार्यना शिष्य बोल्या, अरे डुष्ट! तुं आचार्यनी सायें शुं बोले बे? हुंज तुजने जवाब आपुं, तेटलो बस बे. पबी ते शिष्यें प्रमाण शास्त्रनी चर्चायें नमुचिने निरुत्तर कस्यो. ते मंत्रें खील्यो सर्प जेम हालीचाली शके नहीं, तेम शिष्यनी युक्तियी बंधायो थको नमुचि कांइ पण बोली शक्यो नहीं. मानभ्रष्ट थयो थको तिहांयी उठी गयो. पबी द्वेष धरतो थको तरवार हाथमां लइने रात्रिने समयें यतिने मारवा माटें तिहां गयो, तेने शासनदेवतायें थंभी राख्यो. हाली चाली शके नहीं, प्रभातें तेने थंभ्यो देखीने लोक सर्व चमत्कार पाम्यां. आचार्य

करुणा आणीने शासनदेवी पासेंथी मूकाव्यो. राजायें ते वात सांजली प्रधानने डुष्ट जाणी देशबाहेर काढी मूक्यो. नमुचि तिहांथी निकल्यो थको हस्तीनागपुरें गयो, तिहां कलाना योगें महापद्म कुमारनो प्रधान थयो.

हवे तिहां कोइक सिंहबल नामें फटाइयो राजा छे ते धाड लइ महापद्मकुमारना गामोमां लूंट फाट करे छे. गाम जांजे छे, मार्गमां पंथीजनोने लूंटे छे, तेवारें महापद्में कह्युं के, कोइ सिंहबलराजाने बांधी लावे, एवो छे? नमुचियें तेने जीतवा बीडुं लीधुं अने राजानुं कटक लइ सिंहबलसायें युद्ध करवा गयो, तिहां युद्ध करी सिंहबलने बांधी लावीने महापद्मने आवी सोंप्यो. तेवारें महापद्म प्रसन्न थइ कहेवा लाग्यो के वर माग! नमुचियें कह्युं के, हाल नंडारे राखो. जेवारे काम पडशे, तेवारें हुं मागी लइश. एवुं कहीने नमुचि पोताने घेर गयो.

हवे एकदा महापद्मनी माता ज्वालायें श्रीअरिहंतनो रथ फेरववा तैयार कीधो छे, अने तेनी शोक्य लक्ष्मी नामें छे, ते मिथ्यामतिवाली छे, माटें तेणें ब्रह्मानो रथ फेरववा माटे तैयार कीधो छे, तिहां ज्वालायें कह्युं, प्रथम महारो रथ नगरमां निकलशे अने लक्ष्मीयें कह्युं प्रथम महारो रथ नगरमां फरवा निकलशे, एम बे शोक्योने मांहोमांहे क्लेश थवा लाग्यो तेथी पद्मोत्तरराजायें क्लेश मटाडवा सारु बेहु रथ फेरववामाटे मनाइ करी. तेवारें महापद्मकुमर पोतानी मातानो मनोरथ नंग थयो देखीने देशांतर जणी चाली निकल्यो, ते कुमर नाग्यवंत छे माटें ज्यां जाय त्यां तेनी अनेक राजा सेवा करे, तेणें अनेक राज्य कुमरीयोनां पाणिग्रहण कर्यां. अनुक्रमें पितानी वृद्धावस्था जाणी पाछो हस्तिनागपुर जणी आव्यो. तेने पितायें राज्य आपी पोतें सुव्रताचार्य पासेंथी दीक्षा लीधी. तेनी सायेंज विष्णुकुमारें पण दीक्षा लीधी.

पाछल महापद्म चक्ररत्न पामी नरतक्षेत्रनी छ खंड पृथ्वी सायीने हस्तिनागपुरें आव्यो. तेवे राजायें मली बार वर्षपर्यंत राज्याभिषेकनो महोत्सव कीधो. पछी महापद्मचक्रवर्त्तियें लक्ष्मी जे पोतानी मातानी शोक्य छे, तेनो रथ रहीने पोतानी माता ज्वालायें तैयार करेलो श्रीअरिहंतनो रथ नगरमांहे फेरव्यो. श्रीजिनशासननी प्रनावना करी, गाम गाम श्रीजिनप्रासाद कराव्यां.

हवे पद्मोत्तर साधु इंडियजय करी नाना प्रकारनां तप करी केवलज्ञान पामी मोक्षें पहोता. अने विष्णुकुमर मासखमण पक्खमणादिक घणां प्रकारना तप करता थका वैक्रियादिक समस्त लब्धिउं पाम्या, मेरुपर्वत उपर जइने तपस्या करता थका काउस्सग्ग ध्याने रहे छे.

एकदा सुव्रताचार्य, श्रीहस्तिनागपुरें आवी चोमासुं रह्या छे, तिहां महापद्मचक्रवर्तिपासें नमुचि प्रधान छे, ते जे करे, ते थाय. तेनो हालहुकम चाले छे, ते नमुचि पूर्वलुं वैर स्मरण करी अधिकद्वेष आचार्यनी उपर चिंतववा लाग्यो अने संधान जोइ चक्रवर्ती पासें जइ पूर्वला भंमारें मूकेला वरदानने बदले सात दिवसपर्यंत राज मागी लीधुं. कोइक आचार्य वली एवुं कहे छे के छ महीना सुधी नमुचियें राज्य मागी लीधुं छे. चक्रवर्ती तो नमुचिनुं कूडकपट कांइ जाणतो नथी, तेथी वरदानने बदले राज्य आप्युं. नमुचि राजगादीयें बेगे अने चक्रवर्ती पोताना महेलमांहे रह्यो.

तिहां नमुचियें यज्ञ मंमाव्यो. तेवारें सर्व पाखंमीदर्शनीउ तेने आशीर्वाद देवा आवें, दान लेवा आवे, अने जैनना यतितो सर्व निःस्पृही छे, माटे कोइ दान लेवा आव्या नहीं. ते छल पामीने नमुचियें सुव्रताचार्यने तेडावीने कह्युं के हुं राजें बेगे छुं, यज्ञ कीधो छे. तिहां मने सर्व मलवा आव्या,अने तमें मलवा आव्या नहीं माटे जाउ इहांथी महारा देशमां तमारे रहेवुं नहीं. तेने गुरु घणां मिष्ट वचनें करी समजावता हवा,पण कोइ रीतें समजे नहीं.अने कह्युं के सातदिवसनो अवधि आपुं छुं. एटलामां जो नहीं जाशो अने आठमे दिवसें हुं तमोने देखीश तो मारी नाखीश.

आचार्य पोताने स्थानकें आवी सर्व यतियोने पूछवा लाग्या जे आपणामां कोण शक्तिवंत साधु छे? जे ए नमुचिने समजावे. यतियोयें कह्युं विष्णुकुमार एने समजावशे. गुरुयें कह्युं विष्णुकुमारने मेरु उपरथी तेडी आवे, एवो कोइ यति शक्तिमान् छे, तेवारें एक यतियें कह्युं के, महारामां मेरुपर्वतें जवानी शक्तितो छे पण पाछुं आववानी शक्ति नथी. गुरुयें कह्युं विष्णुकुमार तुजने तेडी आवशे, ते सांजली यति गुरुनी आज्ञा लइ लब्धि साधन करी मेरुपर्वतें विष्णुकुमरपासें जइ वांदीने सर्व समाचार संजलाव्या, तेवारें विष्णुकुमार पण ते मुनिनी साथे तेडी गुरुनी पासें आव्या, गुरुने वंदना करी पूछ्युं. महाराज जे कार्य करवानुं होय ते कहो.गुरुयें कह्युं

जिनशासननुं कार्य करवाथी महोटो लाभ ठे, माटे नमुचिने समजावो.

विष्णुकुमार पण नमुचिनी राजसभाये जइ घणे मीठे वचने तेने सम जावता हवा, पण शीलानी पेरें ते दुष्ट समजे नहीं.

विष्णुकुमारें कह्युं भरतक्षेत्रमां तो तहारुं सर्वत्र राज्य ठे, माटे ते मू कीने ए साधुउ क्यां जाय? तेने नमुचियें कह्युं त्रण पगलां भूमि आपुं हुं. पण तेनी बाहिर कोइ यतिने देखीश तो मारी नाखीश. ते वचन सांभली विष्णुकुमार कोपायमान थयो थको लब्धिने बले लक्ष योजननुं रूप करीवे पगें करी सर्व पृथ्वी रोकी मूकी अने कह्युं के,अरे नमुचि! हवे त्रीजो पग हुं किहां मूकुं? एम कही नमुचिना मस्तक उपर मुक्युं ते नमुचिविष्णुकुमरना पगथी आक्रम्यो थको काल करीने नरकने विषे गयो ते रूप करवाथी सर्व पृथ्वी आक्रमी,पर्वत चलाचल थया, इंद्रमहाराजें मेरुसमानरूप देखी भ यभ्रांत थइ अवधिज्ञान प्रयुंजी सर्ववृत्तांत जाएयुं. पठी समाधान करवा मा टे गंधर्व देवांगना मोकली तेऐं आवी वीणानादे मधुरस्वरें गीतगान करी विनति कीधी के स्वामी! प्रसन्न थाउ कोप मूको. सुव्रताचार्यें पण आवी ने कह्युं हवे कोप मूको. नमुचि जिनशासननो अपराधी हतो, तेने शिक्षा दीधी. हवे रूप संकोच करो वली महापद्मचक्रवर्त्ती पण आवीने पगें ला ग्यो अने कहेवा लाग्यो जे में अयोग्यने राज्य आप्युं, मांजारीने दूध सो प्युं ते विणशें पण सुधरे नहीं तद्रूप महारो अपराध खमो. तेवारें विष्णु कुमारें वैक्रियरूप संहरीने पोतानुं सहज रूप आदर्युं. महापद्मने उलंभो देइ कह्युं के तें जिनशासनना द्वेषीने सर्वस्व स्वाधीन करीने तुं पोतें महेलमां जइ बेसी रह्यो, यतियोनी कांइ पण खबर लीधी नहीं, एटले तहारो वांक ठे माटे उलंभो देउं हुं. चक्रवर्तीयें कह्युं महारो गुनो थयो. आज पठी क दापि एवो गुनो करुं नहीं. ए रीतें तेने उपशांत करी पगे लागी चक्रवर्त्ती पोताने घेर गयो. सुव्रताचार्य सायें विष्णुकुमार उपाश्रयें आवी गुरुपा सेंथी आलोयणा लइ पडिक्कमीने स्फाटिकना पेरे निर्मल थयो ॥ यतः ॥ आयरिय गच्छंमि य,कुल गण संघेय चेइय विणासे ॥ आलोइय पडिक्कंतो, सुद्धो जं निज्जराविउला ॥ १ ॥

तिहां विष्णुकुमार त्रिविक्रम एवुं नाम पाम्यो. घणा वर्ष लगण शुद्ध दीक्षा पाली तपश्चरणे करी जिनप्रवचन दीपावी केवलज्ञान उपार्जी मो

ईं गयो. ए रीतें तपस्वी प्रज्ञाविकने विषे विष्णु कुमारनो वृत्तांत कह्यो.
हवे ठ्ठो विद्याप्रज्ञाविक कहे ढेः—

(सिद्धिबहुविद्यमंतो के०) सिद्धि पामी ढे घणा विद्याउं जेहने एटले प्रज्ञप्त्यादिक शोल विद्याउं तथा सिद्धि पाम्या ढे घणा मंत्र एटले सूरिमंत्रादिक जेहने एवो जे होय ते (विद्यावंतोय के०) विद्यावंत प्रज्ञाविक मांहे जले तिहां जेमां स्त्री देव अधिष्ठायक होय ते विद्या कहीयें अने पुरुष देव अधिष्ठायिक होय ते मंत्र कहीयें तथा (उचियणो के०) उचितनो जाण जोइयें. जो एविद्यामंत्रने जो जिनशासनदीपाववा अर्थे फोरवे तो आराधक थाय अने तेनेज यथातथा फोरवे तो विराधक थाय ॥ यतः ॥ विद्यमंतं जोगं, तेगिछं कुणई नूई कम्मं च ॥ अरकरनिमित्तजिवी, आरंज परिग्गहे रमई ॥ १ ॥ इतिउपदेशमालायां ॥ ३५ ॥

एनी उपर आर्य खपटाचार्यनो दृष्टांत कहे ढे. श्रीवर्द्धमान स्वामीना शासनने विषे विद्यामंत्र बलवंत आर्य खपटाचार्य ढे. एकदा प्रस्तावें विहार करतां नृगुकछें पधास्या. तिहां बौद्धमत वासित बलमित्र राजा ढे माटे तिहां बौद्धाचार्य प्रतिदिन जैननी निंदामय वखाण करे एवो ढे तेथी नृगुकछना संघें मलीने गुरुने विनति करी के अमे बौद्धनी आगलें महोटुं कष्ट सहन करता रहीयें ढैयें ! ए नित्य प्रत्यें जैननी निंदा करे ढे माटे एनी सार्थे वाद करीने एनुं मुखनंग करो तो रुडुं थाय ॥ यतः ॥ कंटकानां खिलानां, द्विविधैव प्रतिक्रिया ॥ उपानमुखनंगोवा, दूरतोवापसर्पणं ॥ १ ॥ ते सांजली आचार्य बोल्या, अमें क्लेश वाद करीयें नहीं. ते वखत आचार्यनो नाणेज जुवन नामें ढे,ते वादविवादमां शूरवीर ढे, माटे ते जुवने बौद्धोनी सार्थे वाद करे अने बौद्धने हरावे तेथी बौद्ध नासता फरे.

ते वात सांजलीनें अन्यगामथी कोइक वृद्धकर नामें बौद्धनो आचार्य आव्यो तेणे प्रथम तो जुवनसाधुनी सार्थे राजासमक्ष वाद करवा मांमयो, तिहां बौद्ध हास्या अने जुवन जीत्यो, तेवारें वृद्धकर बौद्धाचार्ये विचार्युं जे ए जैनाचार्यना शिष्यथी हुं हास्यो तो हवे महोटुं शुं देखाडुं ? तेथी तेणे अनशन लइ जैनना साधु उपरें द्वेष धरतां थकां काल कीधो, ते मरीनें कोइएक नगरना उद्यानने विषे यक्ष थयो. ते यक्ष जैनना श्रावकोने मारी प्रमुखना रोग उपजावी,उपद्रव करी संतापवा लाग्यो श्रावकोयें आ

वीने आचार्यने कह्युं त्यारें खपटाचार्यतेय जुना चैत्यने विषे जइने जुना खासडां ते यक्षने काने वलगाड्यां. पठी तेनी पलोंठी ऊपर पग मूकी समस्त अवयव ढांकीने सूइ रह्या घोरनिद्रा घोराववा लाग्या.

एवामां ते देराशरनो पूजारो आव्यो. तेणे आचार्यने घणुंए जोर करी जगाडवा मांम्यो, पण आचार्य जाग्या नहीं तेवारें पूजारे जइने राजानी आगल पोकार कर्यो. राजा पोतें तिहां आव्यो अने पोते आचार्यनुं वस्त्र दूर करे तो ते वस्त्र बमणु महोटुं थाय तेवारें ताजणाना प्रहार देवा मांम्या. ते प्रहार राजाना अंतःपुरमां जइ लाग्या अंतःपुरमां सोर बकोर थइ रह्यो. ते जोइ राजायें विचार्युं जे ए कोइ सामान्य पुरुष नथी एम जाणी राजा आवी पगे लाग्यो अने कहेवा लाग्यो के,स्वामी प्रसन्न थाउं. महारो अपराध माफ करो. तेवारें आचार्य तिहांथी उठ्या अने राजाने धर्मलाभ आपी जवा लाग्या यक्षने कहेवा लाग्या के अरे यक्ष उठ महारी सायें चाल ते सांभली यक्ष पण आचार्यनी साथें चाल्यो तिहां चैत्यनी आगल महोटी वे शिला पडी हती ते पण यक्षनी पठवाडे चाली ते चमत्कार राजा प्रमुख सर्व लोकें दीठो पठी राजा आचार्यने पगें पडीने कहेवा लाग्यो के,स्वामी तिलायी यक्ष घसायठे एने डुःख थाय ठे माटे कृपाकरीने मूको तेवारें खपटाचार्य वोल्या एणे अमारा संघने घणो संताप्यो ठे.राजायें कह्युं हवे नहीं संतापे एवी राजानी विनति सांभली यक्षने मूक्यो यक्ष जइ पोताने स्थानकें वेगे,शिला पण स्थिर थइ. राजायें महोटा महोत्सवसहित गुरुने नगरमां प्रवेश कराव्यो गुरुनी देशना सांभली राजा प्रतिबोध पाम्यो. गुरुयें विहार कर्यो.

एकदा प्रस्तावें नृगुकछथी श्रीसंघना मोकलेला बे यति आवीने गुरुने विनति करवालाग्या के, स्वामी ! कोइक डुर्विनीत शिष्य ठे तेणे डव्यानुयोगमय आगमनां पानां नंमारमांहेथी काढीने वांच्या तें मांहेथी आकृष्टी विद्या काढी तेने साधीने तेना बले विविध प्रकारनां पकवान्नफलादिक अणावीने खावा मांम्यां तेने गीतार्थें वार्या थकां तेमनी सायें वढवाड करीने बौद्धमतनेविषे जइ बौद्धनी सायें मल्या ते बौधना पात्र आकाशें मोकली वसता नरीने मगावे. बौधने सूखडी प्रमुख यथा वांछित खवरावे ठे. ते चमत्कार देखीने घणां लोक बौद्ध दर्शनी थायठे तेमाटे अमोने श्रीसंघे मल्ली आपनी पासें मोकल्या ठे ते वचन सांभलीने ते यतियुगलनी सायें आचार्य नृगुकछें पधार्या.

तिहां विद्याने बलें करी आचार्यें ते शिष्यनां पात्रां विविध प्रकारनी सुभद्र भद्रिकायें नरयां, आकाशमार्गेथी आवता हता तेने आवतांज आकाशथकी आकर्षी शिलातलने विषे आस्फाल्या थका नांगीने कटके कटका थइ नूमिने विषे पड्या ते देखीने पहेलो कुशिष्य तथा दुष्ट बौद्धो ते सर्व जेम वायराथी आक नाश पामे तेम नाशिगया.

पठी आर्यखपटचार्य बौद्धना चैत्यने विषे गया तिहां बौधोयें कह्युं के प्रतिमाने नमस्कार करो आचार्य क्रोधें नख्या थका बोल्या के अरे बौद्धो तमें सत्वर उठीने महारे पगें लागो. एवुं कहेतां वारज बौद्धदेव बोद्धिसत्वनी प्रतिमा आवी गुरुने पगें लागी ते केटलाएक दिवसपर्यंत तेमज गुरुना पगमां लागी रही एवो चमत्कार देखीने पण बौद्धलोक प्रतिबोध पाम्या. केटलाएक दिवस तिहां रहीने गुरुयें अन्यत्र विहार कस्यो.

हवे पाम्लीपुर नगरने विषे वाहड नामें राजा ते केवल विप्रनक्त ठे ते राजा सर्व दर्शनीउने तेडीने कहे के तमें विप्रने पगे लागो तो महारा नगरमांहे रहो नहींकां नगर मूकी चालता थाउ एवा राजाना आदेशथी सर्व दर्शनी विप्रने पगे लागीने तिहां रह्या. परंतु जैनना साधुउयें सात दिवसनी अवधि मागी ते राजायें पण आपी पठी उपाश्रयें आवी विचार करवा लाग्या के हमणा आपणामां जैनशासननो प्राजाविक थाय एवो कोण ठे?

तेवारें एक शिष्य बोल्यो जे खपटाचार्यना शिष्य महेंद्र उपाध्याय हाल आपणा देशमां पधास्या ठे, ते प्राजाविक ठे ते सांजलीने श्रीसंघे तेमने तेडवामाटे बे यति मोकल्या. यतियें तिहां जइ सर्व वार्ता कही संजलावी तेवारें महेंद्र उपाध्याय पण ते यतियुगलनी सायें पाम्लीपुरें आव्या तिहां आहार करी स्वस्थ थइ पण यतियोने परिवारें परवख्या थका करवीर वृक्षनी लांबी बे काम हाथमां राखी राजद्वारें गया राजा पण सिंहासने आवीने बेग. राजानी बेहु बाजुयें पलोंठी वाली हस्त कर्ण ललाट प्रमुख अंगनेविषे लांबां लांबां टीलां काढीने ब्राह्मणोनी पंक्तियो बेठी ठे, उपाध्यायने राजायें कह्युं के ब्राह्मणोने नमस्कार करो. उपाध्यायें कह्युं, कइ पंक्तिना ब्राह्मणोने नमस्कार करीयें? राजायें कह्युं, ब्राह्मण सर्व पूजनीयज ठे माटे बेहु पंक्तिना ब्राह्मणोने पगें लागो. तेवारें महेंद्र उपा

ध्यायें वेढु कांव ब्राह्मणनी वेढु पंक्तियें फेरवी तेथी विप्रोनां मस्तको द डानी पेठें श्यागले जइ पड्यां. ते देखी राजा प्रमुख सर्वलोक त्रास पाम्या; गाममां हाहाकार थइ रह्यो. राजा पोते सिंहासनथी ऊठीने उपाध्यायने पगें लागो अने कह्युं के स्वामी,महारी नूल थइ ते माफ करो.

उपाध्यायें कह्युं, वली पण कहे के विप्रने पगें लागो. राजा बोल्यो महाराज महारो एकवार थयेलो अपराध खमो उपाध्यायें कह्युं तहारो अपराध माफ करुं बुं. पण हवे तुं विप्रनी वातमां पडीश नहीं,राजायें क ह्युं तमे दयालु गो माटे विप्रोने जीवितदान आपो एवामां अकाशवाणी थ इजे सर्व विप्रो दीक्षा लीये, तो जीवता रहे ते वात शेष विप्रोयें अंगीकार करी तेवारें उपाध्यायें तत्काल ते सर्व विप्रोनां मस्तक गला ऊपर मूकाव्यां ते मूकतावेंतज पोताने स्थानकें यथातथ्य वेसी गया ब्राह्मण सघला जीव ता रह्या. अने दीक्षा लीधी. राजायें पण श्रावकधर्म अंगिकार कस्यो.

ब्राह्मणोने दीक्षा देइ श्रीजिनशासनना प्रनाविक महेंइ उपाध्याय नृगु कच्छें आव्या तिहां पोताना गुरुने वांदी वेठा. आर्यखपटाचार्यें श्रीमुनिसु व्रत स्वामीना चैत्यनी प्रतिष्ठा करी श्रीमहेंइ उपाध्यायने आचार्य पदें स्था पी गष्ठानुज्ञा दीधी. पोतें उत्तमार्थ साधीस्वर्गेपहोता तेमने पाटें महेंइाचार्य पण महाप्रनाविक थया. आम्रवृक्षनां फलपण आम्रज होय ए दृष्टांतें जा णवुं. ए विद्यामंत्रप्रनाविक ऊपर आर्यश्रीखपटाचार्यनुं चरित्र कह्युं ॥

हवे सातमा सिद्धप्रनाविक तथा आठमा कविप्रनाविकनुं स्वरूप कहे बे.

॥ संघाइ कज्ञसाहग, चूर्णंजन जोग सिद्ध सिद्धे ॥ नूयत्र सठगाथी, जिण सासण जाणउ सुकई ॥ ३६ ॥ अर्थः—(संघाइ के०) संघ ते सा धु, साध्वी, श्रावक, अने श्राविका लक्षण जाणवो तथा आदि शब्द थकी जिनगृह, जिनबिंब, उपाश्रय, ज्ञानभंमार प्रमुख (कज्ञ के०) कार्य लेवां ते कार्यना (साहग के०) साधक जे (चूर्णंजनजोग के०) चूर्ण तथा अं जन अने योग तेणें करीने जे (सिद्ध के०) सिद्ध थयो तेने (सिद्धे के०) सिद्ध कहीयें. एटले एटला वानां जेनां करेला साचा थाय पण खो टा नथाय विघटे नहीं तेने सिद्ध कहीयें. हवे चूर्ण ते शुं कहीयें, तो के जे थकी सुवर्णसिद्धि, रजतसिद्धि थाय एवा चूर्ण होय बे जेम कालिकाचार्यें सोनानो इटवाह करी शाकराजानुं कटक सर्व संतोष्युं, ते चूर्ण जाणवुं.

हवे अंजननुं स्वरूप कहे छेः— आंखमां अंजन करवायका निधान देखी यें चूर्ण्यो होयने राजा प्रमुखनी पालिमां पेसी जमे तोपण कोइ देखे न हीं वली बीजापण एवा चिंतितकार्य करीयें. ते सर्व अंजन कहीयें.

तथा योग ते औषधिने योगें पादलेप करवाथी आकाशगामिनी गति थावे,तीर्थयात्रा करीयें तथा जे औषधिने योगें सौनाग्य पामीयें दौर्नाग्य पामीयें.एवा ए औषधादिकना योग कह्या छे. पण जे जाणकार होय ते मात्र संघादिकना कार्यने अर्थेज फोरवे. ते गुरुनी तथा श्रीतीर्थंकरनी आज्ञायें फोरवे केमके श्रीजिनशासनने विषे सर्वक्रिया आज्ञा प्रधान छे ॥ यतः ॥ छठ्ठ मदसम, दूवालसेहिं मासद्ध मासखमणेहिं ॥ अकरितो गुरुवयणं, अणंत संसारिउ होइ ॥ १ ॥ इति पंचम प्रत्याख्यान पंचाशके ॥

हवे एनी उपर पादलिप्ताचार्यनो दृष्टांत कहे छेः— एहज नरतक्षेत्रने वि षे अयोध्यानगरीयें फलक नामें श्रेष्ठी धनाढ्य छे तेने पडिमा नामें स्त्री छे, तेणें पुत्र थवामाटे वैरुट्या देवीने आराधी देवीयें स्वप्नमां आवीने कयुं के तुं श्रीनागहस्ति आचार्यनुं पगधोयण पीजे, तेथी तुजने घणा पुत्र थाशे ए वुं कहीने देवी अदृश्य थइ. प्रनातें पडिमा श्राविका पडिक्कमणुं करी, देव जुहारी, उपाश्रयें आवी एटले गुरुनो पगधोयण परठववाने वैयावच्ची साधु बाहेर निकल्यो छे तेने पडिमा श्राविकायें पूछ्युं आ शुं छे ? साधुयें कयु गुरु नुं पगधोयण छे, श्राविकायें कह्युं ए मुजने आपो महारे एनो खप छे ते थो यण साधुयें आप्युं घेर जइ श्राविकायें पीधुं ते पीकरीने पाछी उपाश्रयनां आवी गुरुने वांदी करी सर्ववृत्तांत कह्युं. तेवारें गुरुयें श्रुतोपयोग देइ कह्युं के हे श्राविका, तुजने जे पहेलो पुत्र थाशे तेने गंगाडीने तुं यमुनाना तटउपर दशवर्षपर्यंत वास करजे,तो ए पुत्र जीवशे अन्यथा पहेलोपुत्र जीवशे नहीं.

ते सांजली श्राविकायें कह्युं एटलुं महाराथी बनशे नहीं. माटें प्रथम पुत्र जे थाशे, ते हुं तमोने आपीश गुरुयें कह्युं एम करीश तो चिरंजीवी थाशे. एवी वात अंगीकार करी ते श्राविका घेर आवीने फलकशेठने आ गल सर्ववात कही, तेणेपण ते वात अंगीकार करी पछी ते श्राविकाने ते हिज रात्रीयें नागलोकपकी चवी रत्नपनागदर्शन स्वप्न सूचित देवना ग र्नपणे आवी ऊपनो. स्त्रीयें स्वप्ननुं वृत्तांत शेठने प्रनातें आवी कह्युं शेठ बोल्या तुजने उत्तम पुत्र थाशे. अनुक्रमे सातमे महिने ते स्त्रीने एवो दो

दोहोलो उपनो जे हुं उद्याननेविषे जइ दान आपुं, तेवात शेठ आगल क
ही शेठें उद्याननेविषे दान देवरावी दोहोलो पूर्ण कस्यो.
हवे दिवस पूर्ण थये थके पुत्रनो जन्म थयो,शेठें जन्ममहोत्सव कीधो रत्नमय नाग स्वप्नमां दीठो तेमाटें तेनुं नाम पण नागेंद्र दीधुं पठी ते पुत्र लइ गाजते वाजते उपाश्रयें आवी गुरुने अर्पण कस्यो. तेने गुरुयें कह्युं, अ मारो थको आठ वर्ष लगण तमें पालण पोषण करो, पठी अमे दीक्षा देशुं एवुं गुरुनुं बोलवुं सांजली ते पुत्रने घेर लइ आव्या ते अनुक्रमें वधतो आठ वर्षनो थयो, तेवारें तेनें महामहोत्सवे गुरुयें दीक्षा दीधी. पडिमा श्राविकाने बीजा पण राजहंस सरखा घणा पुत्र थया ते कुलना आधार नूत थया अने प्रथम पुत्र गह्ननो आधारनूत थयो.
हवे ते न्हानो चेलो पासेना घरथकी आठण वहोरी आव्यो तेंने गुरु यें पूठयुं चेला तुं आलोइ जाणे ठे चेलायें कह्युं हा महाराज तमारा प्र सादें हुं जाणुं ठुं. गुरुयें कह्युं केवी रीतें आलोइयें? चेलो बोल्यो ॥ अंबंबं ग्रीए, अपुप्फिअं पुप्फदंतपंतीए ॥ नवसालीकं जीयं, नववहूई कुडएण म हदिन्नं ॥ १ ॥ ए आर्यामां शृंगार पोषण कस्यो माटें गुरु खीज्या थका बोल्या हे "पलीत!" तेवारें चेलायें कह्युं एक मात्रा अधिक आपो एम तेनी चतुराइयें गुरु संतोषवंता थयाथका "ज्ञापलित्त" एवो नाम देता हवा.
हवे ते शिष्य पोतानी प्रज्ञाने वशें करी जे कांइ सांजले ते सर्व जाणे ए ना मुखपाठेंज ठे एम बहुश्रुत थयो जाणीने गुरुयें तेने सूरिपद दीधुं गह्न नुज्ञा दाधी. पठी ते शिष्य सर्वत्र स्वदर्शन, परदर्शनमां जाणीतो थयो गुरु यें तेने योग्यजाणीनें पादलेप विद्या आपी जेनाथी आकाशमां गमन कर वानी शक्ति आवे तेथकी पादलिप्त सूरि कहेवाणा.
एकदा गुरुनी आज्ञा मागी पादलिप्तसूरि साधुना समूहसहित पाडली पुरें आव्या.तिहां मुरुड नामे राजा राज्य करे ठे तेने कोणिकें सूत्रनो दडो आप्यो ठे. ते घणाजनोंने देखाड्यो, पण तेनो कोइ तार काढी शके नहीं उखेडी शके नहीं पठी राजाये पादलिप्तसूरि आव्या जाणीने तेडाव्या.सूरि पण सनामां आवी बेठा राजायें सूत्रनो दडो आपी कह्युं ए दडो उखेली आपो. आचार्यें उष्णपाणीमांहे दडो मूक्यो तेवारे ते उष्णपाणीनें योगें द डा उपर चडावेलुं मीण उतरी गयुं. तार मली आव्यो दडो उखेली आप्यो.

राजा खुशी थयो वली राजायें एक दाबडो उघाडवा माटें आप्यो तेने पण गुरुयें तेमज उष्ण पाणीमां मूक्यो उष्णताने योगें लाख उतरी गइ तेथी संधीसंधी प्रगट थइ तेवारे दाबलो उघाडी आप्यो.

हवे गुरुयें एक तूंबडूं रत्नें जरी शीवीने राजाना हाथमां उघाडवा आप्युं राजायें उघाडवा माटे घणा उपाय कस्या पण शीववानो मूलस्थानक पाम्यो नहीं ए प्रकारें राजा गुरुनी चतुराइ देखी चमत्कार पाम्यो.

एकदा राजाने असाध्य रोग थयो वली मस्तकें शूल थयुं, वैद्य तथा योगी प्रमुख घणा आव्या, पण वेदना शमे नहीं तेवारें आचार्यने तेडाव्या गुरुयें कह्युं तिहां आववानुं शुं कामछे ? तमे तिहां जइने राजाने अमारी सन्मुख सुवरावो अमे इहांज बेठां वेदना समावी देशुं तेवारें प्रधाने राजा ने गुरुनी साहामो सुवाड्यो गुरुयें तिहां बेठां राजाना जानु ऊपर आंगुली फेरवी के राजानी वेदना तरत शमी गइ राजायें महोटो महोत्सव कस्यो पोतें श्रावकधर्म अंगीकार करी गुरुनो परमभक्त थयो.

हवे गुरु तिहांथी संघनीसाथें विहार करी मथुरा नगरीयें आव्या,तिहां देवताना करेला थूभने विषे देव जुहास्या तिहांथकी संघनी साथें गुजरात मांहे ॐकारपुरने विषे आव्या. तिहां देवयात्रा करी तिहांथी खेडपुरें आव्या, तिहां चार पाहुडा पाम्या, जेमां पूर्वना अधिकार विशेष होय तेने पाहुड कहियें. योनिपाहुड, निमित्तपाहुड, विद्यापाहुड अने सिद्धपाहुड तेमां, प्रथम योनिपाहुडमांहे तो विविध औषधीनेयोगें करी जीवनी तथा अजीवनी उत्पत्तिना प्रकार पामीयें. बीजा निमित्तपाहुडमांहे अष्टांग निमित्त पामीयें. त्रीजा विद्या पाहुडने विषे मंत्रविद्यानी साधना तथा तेनां फल कह्यां छे. चोथा सिद्धपाहुडने विषे सर्व सुवर्णसिद्धि रूपसिद्धि प्रमुख सिद्धिउ पामीयें ए चार पाहुड पामीने पादलिप्तसूरि देवदाणवने पण अजेय थया.

हवे ते समयें दक्षिणदेशे खेडपुर, लाटदेशें भृगुकछ, सोरठदेशें वलभी नगरी तथा सूरासनदेशें मथुरानगरी ए चार नगरने विषे जैननो संघ घणो पामीयें तिहां खेडपुरनो संघ भली गुरुने अन्यत्र विहार करवा आपे नहीं. कारण के तिहांनो राजा उग्र छे ते ए गुरुविना बीजा कोइने वश नावे.

एवामां भृगुकछने विषे ब्राह्मणो भली श्रावकोने पूजादिक कार्य करवा दीये नहीं. तेमाटे संघे गुरुने विनंति लखी मोकली जे आप अत्र पधारजो

घणी जिनशासननी उन्नति थाशे. तेवारें गुरुयें कह्युं कार्त्तिकवदि प्रतिपदाने दिवसें नरुअचें आवी देवजुहारवानो अमारो नाव ठे एवुं सांजलीने श्री संघे पण ते दिवसें नेगायइने महोटा विस्तारसहित पूजा मांमी.

आचार्यें पण एक प्रहर लगण वखाण वांचीने खेडपुरथकी पादलिप्त विद्यायें नृगुकच्छें पधास्या. तिहां पण समस्त संघ वाट जोतो बेगे ठे एट लामां अश्वाववोध तीर्थने विषे गुरु आव्या दीग, तेवारें संघ हर्ष पाम्यो थको आवीने गुरुने वंदना करी राजादिकने पण सूरि आव्यानी खबर थइ तेवारे राजा तथा ब्राह्मण प्रमुख समस्त लोक आवी गुरुने पगे लाग्या, संघे पण राजा प्रमुख समस्त लोकने वस्त्रादिक आपवे करी संतोष पमाड्या. राजायें गुरुने कह्युं के महारो शो वांक ठे के आप महारा नगरमां पधार ता नथी? गुरुयें कह्युं खेडपुरनो संघ आववा देतो नथी, तेने डहवीने अवाय नहिं. माटे अमे हवे आहार पाणी तिहांज जइ करशुं.

राजायें वीनव्यो के जो तमे प्रतिदिवस देव जुहारवा पधारो, तो हुं आठ दिवसपर्यंत महोटा विस्तारपूर्वक पूजा रचावुं. ए विनति गुरुयें अंगी कार कीधी. अनुक्रमें वल्लजी नगरीयें आव्या, तिहां शत्रुंजय गिरनार प्रमु ख तीर्थोनी यात्रा करी पठी ढंकपुरनगरें आवी देव जुहास्या.

ते ढंकपुरमां एक नागार्जुन योगी ठे तेणे सुवर्णसिद्धिना योगथी घणा लोकने संतोष्या ठे तेमाटे तेनी अत्यंत प्रसिद्धि थयेली ठे ते योगी आवी आग्रह करीने गुरुने पोताना मठमां तेडी गयो, तिहां तेणे गुरुना प्रासुक पाणीयें पग धोइने नक्ति करी ते नक्तिनी सायें विनति पण करी के स्वामी मथुरामां आठ दिवस तमारे देरासरें पूजा महोत्सव ठे, माटें प्रतिदिन प धारवुं. तेनुं वचन मान्य करीने गुरु, मथुरायें पधास्या. तिहां देवजुहारी खेडपुरनगरें आवी आहार करे एटला सर्व कार्य त्रण पहोरमांहे करे. एवी पादलेपशक्ति ठे एम [illegible] लगण उपर कहेला सर्व स्थानकें यात्रा करी फरी खेडपु[illegible] [illegible]र करे.

हवे ना[illegible]र्जुन [illegible] सुंघीने ते मांहेथी १०७ औषध [illegible] [illegible] पठी ते एकशोने सात औषधी साथें [illegible] लाग्यो पण उडीने वली [illegible] चांदां पड्यां तेजोइ गुरुयें

तेने चांदा पछ्यानुं वृत्तांत पूछयुं, तेवारें तेणे यथास्थित वार्त्ता कही दीधी. गुरु तेनुं ज्ञान देखी चमत्कार पामी कहेवा लाग्या के, तें सर्व औषध जाएयां. पण गुरुजाग रह्यो छे. तेवारें नागार्जुन पगेलागी वीनवतो हवो के, महाराज! हुं सुवर्णसिद्धि तमने आपुं, पण मुजने ए विद्या आपो. गुरुयें कह्युं सुवर्णसिद्धिने अमे शुं करीयें एवुं कही गुरु चालता थया. जोगी तेमने वोलाववा आव्यो तिहां कुंनारनो इंटनिवाह छे, ते इंटनिवाहनी उपरें गुरुयें चूर्ण नाख्युं अने नागार्जुनने कह्युं तुं प्रनातें ए इंटनिवाह जोजे एवुं कही मथुरा नणी आकाशमार्गें चाल्या. प्रनातें योगी आवीने जूएछे, तो पहेलुं घर वधुं सुवर्णमय दीठुं ते जोइने योगीनुं मन चलायमान थयुं अने मनमां विचार्युं जे एनी आगल महारी शी गणती छे.

वली एकदा प्रस्तावें गुरु श्रीशत्रुंजय पधार्या जाणीने नागार्जुनें आवी गुरुने पगें लागी कह्युं, स्वामी! विद्या आपो गुरुयें कह्युं तुं श्रीजिनधर्म अंगीकार करे तो हुं विद्या आपुं अन्यथा न आपुं पछी ते नागार्जुने श्रावकधर्म आदर्यो, तेने श्रावकधर्म आपी पादलेप विद्या पण आपी ते नागार्जुन धर्म पामी तथा विद्या पामी हर्ष पाम्यो थको शत्रुंजयनी तलहटीयें गुरुने नामे पालीताणुनगर वसाव्युं गुरुनुं नाम पादलिप्त हतो तेनो अपभ्रंश शब्द थइने पालीताणु नाम थयुं, पछी ते नागार्जुन हर्षवंत थको परम जैनधर्म पालतो परम श्रावक थयो.

हवे पयठाणपुरने विषे शालिवाहन राजा राज्य करे छे. तेनी सनामां हे चार पंमित लक्षलक्ष श्लोक प्रमाण शास्त्र रचीने आव्या तेमां आत्रेय कवियें एक लक्ष प्रमाण वैद्यकशास्त्र कर्युं तथा कपिल कवियें एक लक्ष प्रमाण धर्मशास्त्र रच्युं तथा वृहस्पतियें एक लक्ष प्रमाण नीतिशास्त्र रच्युं, तथा पंचाल कवियें एक लक्ष प्रमाण कामशास्त्र रच्युं. ते चारे जण आवीने राजाने कहेवा लाग्या के अमे शास्त्र रच्यां छे, ते तमारे सांजलवां जोइयें. राजायें कह्युं एवडां महोटां शास्त्र सांजलतां हुं क्यारे परवारुं ते माटे एक पद "आयंताज्यां" एटले एकेका पदमां कविनुं नाम बीजुं आ यशास्त्रनुं नाम, रहस्य आणीने मुजने समजावो जेम हुं सांजलुं.

तेवारें ते चारे पंमित एकेका पदमांहे नामगर्भित शास्त्रनुं रहस्य करी लाव्या ॥ तद्यथा ॥ जीर्णेनोजन मात्रेयः, कपिलप्राणिनां दयां ॥ वृहस्पतिरविश्वासः,

पंचालः स्त्रीपु मार्दवं ॥ १ ॥ ते सांजली राजा हर्ष पाम्यो. दान आपी जा शिवशासननी प्रशंसा करवा लाग्यो. तेवारें राजानी पट्टराणी . नामें श्राविका छे, ते राजाप्रत्यें कहेती हवी ॥ तागडयं तुवा इंद .. मय नरेण डुप्पिह्वा ॥ जा जाव न पालि तवं, पंचवयण नाउं समूल ॥ १ ॥ राजायें पूछ्युं ते पादलिप्तसूरि कोण छे? राणीयें सर्व तेनुं ब आयथी मांमीने कह्युं तेवारें शालिवाहन राजायें पोताना शंकरनामा धानने खेडपुरनेविषे गुरुने तेडवा मोकल्यो ते शंकर प्रधान खेडपुरें गुरुने आदरसहित तेडी आव्यो. राजायें महोटा आर्मवरसहित न प्रवेश करवानो महोत्सव कर्यो. पछी राजायें चारे पंमितनी साहामुं ज त्यारें बृहस्पतियें राजाने कह्युं एनी पंमिताइनी परीक्षा करशुं, पछी राज नी आज्ञा मागी कोइ हीरो नामे राजानो सेवक हतो तेने एक थाली थी नरी आपी अने कह्युं के ए थाली गुरुनी आगल जइ मूकजे तेणे थाली लावी गुरु आगल मूकीने कह्युं के घृतदर्शन मंगलनुं कारण छे माटे ल्यो

गुरुयें अंतरंगनाव समजीने लघु लाघवी कलायें करी ते घृतमांहे पात ली सुइ घाली ते उपरथी एवो नाव जणाव्यो के जेम घृतमांहे बारीक सुइ घालीने घृत नेद्युं छे तेम हुं नगरमांहे आवी तमारा मर्म नेद करीश. हीरा यें तेवीज थाली तिहांथी आणीने राजा आगल मूकी तेमां सूइ देखीने बृ हस्पतिनो मद गल्यो काष्ठनी पेठें निश्चेष्ट थयो अने विचार्युं जे ए आचार्य नी साथें अमारुं काइ जोर चालशे नहीं.

हवे महोत्सवें करी गुरुने नगरमां पधराव्या प्रतिदिवस राजा पण तेमनो रचेलो ग्रंथ सांनले तेथी राजा गुरुनो परमनक्त थयो चारे ब्राह्मणने बोलावे नहीं. तेवारें पंचालय पंमित मत्सरें नराणो थको राजाने कहेवा लाग्यो के ए जैनाचार्य सर्व महारां करेलां शास्त्र चोरीने वांचे छे. राजायें पूछ्युं ते केम ? पंमितें कह्युं ए तरंगलोला कथा महारे मुख पाठें छे राजायें कह्युं, ते केम जणाय ? तेवारें आचार्यनो रचेलो ग्रंथ तेने एकदा सांनली ने पंचालय पंमितें धारी राखेलो हतो, ते पाठ राजाने कही संनलाव्यो. रा जायें ते सत्य करी मान्यो.

हवे ए वातथी संघने लज्जानुं कारण थयेलुं जाणी श्रीजिनशासननी दी प्ति करवाने अर्थे गुरुयें उपाय कर्यो, ते आवी रीतें के गुरु कपटथी मर

ण पाम्या, तेमने श्रावको मद्दोटा आमंत्ररथी बाहेर परठवानो उपाय क रवा लाग्या, ते गुरुनुं मरण सांजळीने नगरनां लोक सर्व तेमना गुण सं नारी संजारी रडवा लाग्यां, तेवारें पंचालकवि पण रडवा लाग्यो, तद्य था ॥ सीसे कद्दवि न फुटं, जम्मस्स पालित्तयं हरंतस्स ॥ जस्समुद्द नि ज्जराउं, तरंगलोला नईवुढा ॥ १ ॥ ते पंचालनुं वचन सांजली गुरु वेग था श्रीसंघें पण गुरु जीवता थया, तेनो मद्दोत्सव कर्यो. गुरुने लोकें पू छ्युं साद्देब! आप केवी रीतें जीवता थया? गुरुयें कह्युं आ पंचालकविना वचनामृतथी जीवतो थयो छुं. जे माटे पंचालें पोताना मुखथी कह्युं के तरंगलोला ए ग्रंथ पादलिप्त सूरिनो करेलो छे, एवुं कह्युं तेथी एणे रा जानो कलुषजाव दूर कर्यो. ए वातथी राजायें पण जाण्युं जे मुजने पंचा लें खोटुं समजाव्युं तेथी राजायें पंचालपंमितने देशोटो दीधो तेवारें आ चार्यें, राजाने समजावीने पंचालने नगर मांहेज रखाव्यो. तेवार पछी उ पकार कर्यो. तेमाटें पंचालकवि प्रतिदिवस गुरुनी सेवा करवा प्रवृत्त्यो. ए रीतें घणा वर्षपर्यंत श्रीजिनशासननी दीप्ति करी, छेवट आउखानो अं तसमय जाणी अनशन आदरी इंद्रनी सजाना मंमन थया. ए सिद्धप्राजा विक उपर पादलिप्त सूरिनो संबंध कह्यो ॥

हवे आठमो कवि प्रजाविक कहे छेः—

(जूयछत्थ के०) जूतार्थ शास्त्रनो जोडनार एटले श्रीजिनशासनमांहे वीतरागदेवें जेह्वा जाव कह्या छे, तेवाज जावें प्ररूपणा करी नवा शा स्त्रोनी (गया के०) गाथा बांधे तथा काव्य बांधे तथा गद्यमय जोडी नवीन ग्रंथोनी रचना करे तथा (जिणसासणजाणउ के०) श्रीजिनशास नना सर्व मर्म रहस्यनो जाण श्रीजिनशासननो जक्त एवो जे होय. तेने (सुकई के०) सुकवि कहीयें ते जिनशासननो प्राजाविक थाय ॥ ३६ ॥

ए कविप्रजावकनेविषे श्रीसिद्धसेन दिवाकरनो संबंध कहीयें छैयें. विद्याधरगछने विषे श्रीपादलिप्तसूरिना संतानीया श्रीस्कंदिलाचार्य छे, ते विहार करता गौडदेशने विषे कोशल गामें पहोता. तिहां मुकुंद नामा ब्रा ह्मण गुरुनी देशना सांजली प्रतिबोध पाम्यो; जेमाटे " यथा चतुर्भिःकनकं परीक्ष्यते, निघर्षण छेदन तापताडनैः ॥ तथैव धर्मोविडुषा परीक्ष्यते, श्रुते न शीलेन तपोदयागुणैः ॥ १ ॥ " ते ब्राह्मणें विचार्युं जे श्रुत, शील, तप

पंचालः स्त्रीषु मार्दवं ॥ १ ॥ ते सांजली राजा हर्ष पाम्यो. दान आपी जा शिवशासननी प्रशंसा करवा लाग्यो. तेवारें राजानी पट्टराणी ... नामें श्राविका ठे, ते राजाप्रत्यें कहेती हवी ॥ तागडयं तुवा इंद ... मय नरेण कुप्पिज्ञा ॥ जा जाव न पालि तवं, पंचवयण नाउं समूल ... ॥ १ ॥ राजायें पूठ्युं ते पादलिप्तसूरि कोण ठे? राणीयें सर्व तेनुं वृ... थाद्यथी मांमीने कह्युं तेवारें शालिवाहन राजायें पोताना शंकरनामा धानने खेडपुरनेविषे गुरुने तेडवा मोकल्यो ते शंकर प्रधान खेडपुरें ... गुरुने आदरसहित तेडी आव्यो. राजायें महोटा आमंबरसहित न... प्रवेश करवानो महोत्सव कस्यो. पठी राजायें चारे पंमितनी साहामुं ज... त्यारें बृहस्पतियें राजाने कह्युं एनी पंमिताइनी परीक्षा करशुं, पठी ... नी आज्ञा मागी कोइ हीरो नामे राजानो सेवक हतो तेने एक थाली घृ... थी जरी आपी अने कह्युं के ए थाली गुरुनी आगल जइ मूकजे तेणे ... थाली लावी गुरु आगल मूकीने कह्युं के घृतदर्शन मंगलनुं कारण ठे माटे ला...

गुरुयें अंतरंगजाव समजीने लघु लाघवी कलायें करी ते घृतमांहे पात ली सुइ घाली ते उपरथी एवो जाव जणाव्यो के जेम घृतमांहे थारीक ... घालीने घृत जेयुं ठे तेम हुं नगरमांहे आवी तमारा मर्म नेद करीश. हीरा यें तेवीज थाली तिहांथी आणीने राजा आगल मूकी तेमां सूइ देखीने बृ हस्पतिनो मद गयो काष्ठनी पेठें निश्चेष्ट थयो अने विचार्युं जे ए आचार्य नी साथें अमारुं काइ जोर चालशे नहीं.

हवे महोत्सवें करी गुरुने नगरमां पधराव्या प्रतिदिवस राजा पण तेमनो रचेलो ग्रंथ सांजले तेथी राजा गुरुनो परमजक्त थयो चारे ब्राह्मणने बोलावे नहीं. तेवारें पंचालय पंमित मत्सरें जराणो थको राजाने कहेवा लाग्यो के ए जैनाचार्य सर्व महारां करेलां शास्त्र चोरीने वांचे ठे. राजायें पूठ्युं ते केम? पंमितें कह्युं ए तरंगलोला कथा महारे मुख पाठ ठे राजायें कह्युं, ते केम जणाय? तेवारें आचार्यनो रचेलो ग्रंथ तेने एकदा सांजली ने पंचालय पंमितें धारी राखेलो हतो, ते पाठ राजाने कही संजलाव्यो. रा जायें ते सत्य करी मान्यो.

हवे ए वातथी संघने लज्जानुं कारण थयेलुं जाणी श्रीजिनशासननी दी प्ति करवाने अर्थे गुरुयें उपाय कस्यो, ते आवी रीतें के गुरु कपटथी मर

ग पाम्या, तेमने श्रावको महोटा आमंबरथी बाहेर परठवानो उपाय क
वा लाग्या, ते गुरुनुं मरण सांजलीने नगरनां लोक सर्व तेमना गुण सं
गरी संजारी रडवा लाग्यां, तेवारें पंचालकवि पण रडवा लाग्यो, तद
त ॥ सीसे कहवि न फुटं, जम्मस्स पालित्तयं हरंतस्स ॥ जस्समुह नि
झराउं, तरंगलोला नईवुढा ॥ १ ॥ ते पंचालनुं वचन सांजली गुरु वेग
थया श्रीसंघें पण गुरु जीवता थया, तेनो महोत्सव कस्रो. गुरुने लोकें पू
छ्युं साहेब! श्राप केवी रीतें जीवता थया? गुरुयें कह्युं आ पंचालकविना
चनामृतथी जीवतो थयो छुं. जे माटे पंचालें पोताना मुखथी कह्युं के
तरंगलोला ए ग्रंथ पादलिप्त सूरिनो करेलो छे, एवुं कह्युं तेथी एणे रा
ज्ञानो कलुषजाव दूर कस्रो. ए वातथी राजायें पण जाण्युं जे मुफने पंचा
लें खोटुं समजाव्युं तेथी राजायें पंचालपंमितने देशोटो दीधो तेवारें आ
चार्यें, राजाने समजावीने पंचालने नगर मांहेज रखाव्यो. तेवार पढी उ
पकार कस्रो. तेमाटें पंचालकवि प्रतिदिवस गुरुनी सेवा करवा प्रवृत्त्यो.
ए रीतें घणा वर्षपर्यंत श्रीजिनशासननी दीप्ति करी, छेवट आउखानो अं
तसमय जाणी अनशन आदरी इन्द्रनी सजाना मंमन थया. ए सिद्धप्राजा
विक उपर पादलिप्त सूरिनो संबंध कह्यो ॥

हवे आठमो कवि प्रजाविक कहे छेः–

(नूयबलव के०) नूतार्थ शास्त्रनो जोडनार एटले श्रीजिनशासनमांहे वीतरागदेवें जेहवा जाव कह्या छे, तेवाज जावें प्ररूपणा करी नवा शास्त्रोनी (*गया के०*) *गाथा बांधे तथा काव्य बांधे तथा गद्यमय* जोडी नवीन ग्रंथोनी रचना करे तथा (जिणसासणजाणउ के०) श्रीजिनशासनना सर्व मर्म रहस्यनो जाण श्रीजिनशासननो जक्त एवो जे होय, तेने (सुक्कई के०) सुकवि कहायें ते जिनशासननो प्रजाविक थाय ॥ ३६ ॥

ए कविप्रजावकनेविषे श्रीसिद्धसेन दिवाकरनो संबंध कहीयें छयें. विद्याधरगच्छने विषे श्रीपादलिप्तसूरिना संतानीया श्रीस्कंदिलाचार्य छे, ते विहार करता गोडदेशने विषे कोशल गामें पहोता. तिहां मुकुंद नामा ब्राह्मण गुरुनी देशना सांजली प्रतिबोध पाम्यो; जेमाटे " यथा चतुर्निकनकं परीक्ष्यते, निघर्षण छेदन तापताडनैः ॥ तथैव धर्मोविडुषा परीक्ष्यते, श्रुतेन शीलेन तपोदयागुणैः ॥ १ ॥ " ते ब्राह्मणें विचार्युं जे श्रुत, शील, तप

पंचालः स्त्रीषु मार्दवं ॥ १ ॥ ते सांनळी राजा हर्ष पाम्यो. दान आपी जा शिवशासननी प्रशंसा करवा लाग्यो. तेवारें राजानी पट्टराणी भो... नामें श्राविका छे, ते राजाप्रत्यें कहेती हवी ॥ तागडयं तुवा इंद ... मय नरेण डुप्पिन्ना ॥ जा जाव न पालि तवं, पंचवयण नाउं समूल . ॥ १ ॥ राजायें पूछ्युं ते पादलिप्तसूरि कोण छे? राणीयें सर्व तेनुं ... आद्यथी मांमीने कह्युं तेवारें शालिवाहन राजायें पोताना शंकरनामा धानने खेडपुरनेविषे गुरुने तेडवा मोकल्यो ते शंकर प्रधान खेडपुरें गुरुने आदरसहित तेडी आव्यो. राजायें महोटा आमंबरसहित न... प्रवेश करवानो महोत्सव कस्रो. पछी राजायें चारे पंमितनी साहामुं ... त्यारें बृहस्पतियें राजाने कह्युं एनी पंमिताइनी परीक्षा करशुं, पछी ... नी आज्ञा मागी कोइ हीरो नामे राजानो सेवक हतो तेने एक थाली ... थी नरी आपी अने कह्युं के ए थाली गुरुनी आगल जइ मूकजे तेणे पण थाली लावी गुरु आगल मूकीने कह्युं के घृतदर्शन मंगलनुं कारण छे माटे लां.

गुरुयें अंतरंगनाव समजीने लघु लाघवी कलायें करी ते घृतमांहे पात ली सुइ घाली ते उपरथी एवो नाव जणाव्यो के जेम घृतमांहे बारीक सू घालीने घृत नेद्युं छे तेम हुं नगरमांहे आवी तमारा मर्म नेद करीश. हीरा यें तेवीज थाली तिहांथी आणीने राजा आगल मूकी तेमां सूइ देखीने बृ हस्पतिनो मद गल्यो काष्ठनी पेरें निश्चेष्ट थयो अने विचास्युं जे ए आचार्य नी साथें अमारुं काइ जोर चालशे नहीं.

हवे महोत्सवें करी गुरुने नगरमां पधराव्या प्रतिदिवस राजा पण तेमनो रचेलो ग्रंथ सांनले तेथी राजा गुरुनो परमनक्त थयो चारे ब्राह्मणने बोलावे नहीं. तेवारें पंचालय पंमित मत्सरें नराणो थको राजाने कहेवा लाग्यो के ए जैनाचार्य सर्व महारां करेलां शास्त्र चोरीने वांचे छे. राजायें पूछ्युं ते केम ? पंमितें कह्युं ए तरंगलोला कथा महारे मुख पाठें छे राजायें कह्युं, ते केम जणाय ? तेवारें आचार्यनो रचेलो ग्रंथ तेने एकदा सांनळी ने पंचालय पंमितें धारी राखेलो हतो, ते पाठ राजाने कही संनळाव्यो. रा जायें ते सत्य करी मान्यो.

हवे ए वातथी संघने लज्जानुं काण थयेलुं जाणी श्रीजिनशासननी दी प्ति करवाने अर्थे गुरुयें उपाय कस्रो, ते आवी रीतें के गुरु कपटथी मर

ण पाम्या, तेमने श्रावको महोटा आमंबरथी बाहेर परठवानो उपाय क रवा लाग्या, ते गुरुनुं मरण सांजलीने नगरनां लोक सर्व तेमना गुण सं नारी संनारी रडवा लाग्यां, तेवारें पंचालकवि पण रडवा लाग्यो, तद या ॥ सीसे कहवि न फूटं, जम्मस्स पालित्तयं हरंतस्स ॥ जस्समुह नि ज्झराउ, तरंगलोला नईवुहा ॥ १ ॥ ते पंचालनुं वचन सांजली गुरु वेगा थया श्रीसंघें पण गुरु जीवता थया, तेनो महोत्सव कर्यो. गुरुने लोकें पू ग्धुं साहेब! आप केवी रीतें जीवता थया? गुरुयें कह्युं आ पंचालकविना वचनामृतथी जीवतो थयो छुं. जे माटे पंचालें पोताना मुखथी कह्युं के तरंगलोला ए ग्रंथ पादलिप्त सूरिनो करेलो छे, एवुं कह्युं तेथी एणे रा जानो कलुषनाव दूर कर्यो. ए वातथी राजायें पण जाएयुं जे मुजने पंचा लें खोटुं समजाव्युं तेथी राजायें पंचालपंमितने देशोटो दीधो तेवारें आ चार्ये, राजाने समजावीने पंचालने नगर मांहेज रखाव्यो. तेवार पढी उ पकार कर्यो. तेमाटें पंचालकवि प्रतिदिवस गुरुनी सेवा करवा प्रवृत्त्यो. ए रीतें घणा वर्षपर्यंत श्रीजिनशासननी दीप्ति करी, बेवट आउखानो अं तसमय जाणी अनशन आदरी ईशानी सनाना मंमन थया. ए सिद्धप्राना विक उपर पादलिप्त सूरिनो संबंध कह्यो ॥

हवे आठमो कवि प्रानाविक कहे छेः—

(नूयइसद्ध के०) नूतार्थ शास्त्रनो जोडनार एटले श्रीजिनशासनमांहे वीतरागदेवें जेस्वा नाव कह्या छे, तेवाज नावें प्ररूपणा करी नवा शा स्त्रोनी (गया के०) गाथा बांधे तथा काव्य बांधे तथा गद्यमय जोडी नवीन ग्रंथोनी रचना करे तथा (जिणसासणजाणउ के०) श्रीजिनशास नना सर्व मर्म रहस्यनो जाण श्रीजिनशासननो नक्त एवो जे होय, तेने (सुकई के०) सुकवि कहायें ते जिनशासननो प्रानाविक थाय ॥ ३६ ॥

ए कविप्रनावकनेविषे श्रीसिद्धसेन दिवाकरनो संबंध कहीयें बैयें. विद्याधरगच्छने विषे श्रीपादलिप्तसूरिना संतानीया श्रीस्कंदिलाचार्य छे, ते विहार करता गोडदेशने विषे कोशल गामें पहोता. तिहां मुकुंद नामा ब्रा ह्मण गुरुनी देशना सांजली प्रतिबोध पाम्यो; जेमाटे " यथा चतुर्निर्कनकं परीक्ष्यते, निघर्षण छेदन तापताडनैः ॥ तथैव धर्मोविदुषा परीक्ष्यते, श्रुते न शीलेन तपोदयागुणैः ॥ १ ॥ " ते ब्राह्मणें विचार्युं जे श्रुत, शील, तप

पंचालः स्त्रीषु मार्दवं ॥ १ ॥ ते सांजली राजा हर्ष पाम्यो. दान
जा शिवशासननी प्रशंसा करवा लाग्यो. तेवारें राजानी पट्टराणी
नामें श्राविका ठे, ते राजाप्रत्यें कहेती हवी ॥ तागडयं तुवा इंद
मय नरेण डुप्पिद्ा ॥ जा जाव न पालि तवं, पंचवयण नाउ समूल
॥ १ ॥ राजायें पूठ्युं ते पादलिप्तसूरि कोण ठे? राणीयें सर्व तेनुं
आयथी मांमीने कह्युं तेवारें शालिवाहन राजायें पोताना
धानने खेडपुरनेविषे गुरुने तेडवा मोकल्यो ते शंकर प्रधान खेडपुरें
गुरुने आदरसहित तेडी आव्यो. राजायें महोटा आमंबरसहित
प्रवेश करवानो महोत्सव कस्यो. पठी राजायें चारे पंमितनी साहामुं
त्यारें बृहस्पतियें राजाने कह्युं एनी पंमिताइनी परीक्षा करवुं, पठी
नी आज्ञा मागी कोइ हीरो नामे राजानो सेवक हतो तेने एक थाली
थी नरी आपी अने कह्युं के ए थाली गुरुनी आगल जइ मूकजे तेणे
थाली लावी गुरु आगल मूकीने कह्युं के घृतदर्शन मंगलनुं कारण ठे
गुरुयें अंतरंगनाव समजीने लघु लाघवी कलायें करी ते घृतमांहे
ली सुइ घाली ते उपरथी एवो नाव जणाव्यो के जेम घृतमांहे वारीक
घालीने घृत नेद्युं ठे तेम हुं नगरमांहे आवी तमारा मर्म नेद करीश.
यें तेवीज थाली तिहांथी आणीने राजा आगल मूकी तेमां सूइ देखीने
हस्पतिनो मद गल्यो काष्ठनी पेठें निश्चेष्ट थयो अने विचार्युं जे ए
नी साथें अमारुं काइ जोर चालशे नहीं.
हवे महोत्सवें करी गुरुने नगरमां पधाराव्या प्रतिदिवस राजा पण
रचेलो ग्रंथ सांनले तेथी राजा गुरुनो परमनक्त थयो चारे
बोलावे नहीं. तेवारें पंचालय पंमित मत्सरें नराणो थको राजाने
लाग्यो के ए जैनाचार्य सर्व महारां करेलां शास्त्र चोरीने वांचे ठे.
पूठ्युं ते केम ? पंमितें कह्युं ए तरंगलोला कथा महारे मुख पाठ ठे राजायें
कह्युं, ते केम जणाय ? तेवारें आचार्यनो रचेलो ग्रंथ तेने एकदा सांनली
ने पंचालय पंमितें धारी राखेलो हतो, ते पाठ राजाने कही संनलाव्यो. रा
जायें ते सत्य करी मान्यो.
हवे ए वातथी संघने लज्जानुं काण थयेलुं जाणी श्रीजिनशासननी दी
प्ति करवाने अर्थे गुरुयें उपाय कस्यो, ते आवी रीतें के गुरु कपटथी मर

ा पाम्या, तेमने श्रावको महोटा आडंबरथी बाहेर परठववानो उपाय क
वा लाग्या, ते गुरुनुं मरण सांजळीने नगरनां लोक सर्वे तेमना गुण सं
भारी संभारी रडवा लाग्यां, तेवारें पंचालकवि पण रडवा लाग्यो, तद
था ॥ सीसे कहवि न फुटं, जम्मस्स पालित्तयं हरंतस्स ॥ जस्समुह नि
ज्झराउं, तरंगलोला नईवुढा ॥ १ ॥ ते पंचालनुं वचन सांजळी गुरु वेग
थया श्रीसंघें पण गुरु जीवता थया, तेनो महोत्सव कर्यो. गुरुने लोकें पू
छ्युं साहेब! आप केवी रीतें जीवता थया? गुरुयें कह्युं आ पंचालकविना
वचनामृतथी जीवतो थयो छुं. जे माटे पंचालें पोताना मुखथी कह्युं के
तरंगलोला ए ग्रंथ पादलिप्त सूरिनो करेलो छे, एवुं कह्युं तेथी एणे रा
जानो कलुषभाव दूर कर्यो. ए वातथी राजायें पण जाण्युं जे मुजने पंचा
लें खोटुं समजाव्युं तेथी राजायें पंचालपंमितने देशोटो दीधो तेवारें आ
चार्यें, राजाने समजावीने पंचालने नगर मांहेज रखाव्यो. तेवार पछी उ
पकार कर्यो. तेमाटें पंचालकवि प्रतिदिवस गुरुनी सेवा करवा प्रवृत्त्यो.
ए रीतें घणा वर्षपर्यंत श्रीजिनशासननी दीप्ति करी, छेवट आउखानो अं
तसमय जाणी अनशन आदरी इंद्रनी सजाना मंमन थया. ए सिद्धप्राजा
विक उपर पादलिप्त सूरिनो संबंध कह्यो ॥

हवे आठमो कवि प्राजाविक कहे छेः—

(कूयसत्थ के०) सूतार्थे शास्त्रनो जोडनार एटले श्रीजिनशासनमांहे वीतरागदेवें जेहवा जाव कह्या छे, तेवाज जावें प्ररूपणा करी नवा शा स्त्रोनी (गथा के०) गाथा बांधे तथा काव्य बांधे तथा गद्यपद्य जोडी नवीन ग्रंथोनी रचना करे तथा (जिणसासणजाणउं के०) श्रीजिनशास नना सर्व मर्म रहस्यनो जाण श्रीजिनशासननो जक्त एवो जे होय, तेने (सुकई के०) सुकवि कहीयें ते जिनशासननो प्राजाविक थाय ॥ ३६ ॥

ए कविप्रजावकनेविषे श्रीसिद्धसेन दिवाकरनो संबंध कहीयें छेयें. विद्याधरगछने विषे श्रीपादलिप्तसूरिना संतानीया श्रीस्कंदिलाचार्य छे, ते विहार करता गौडदेशने विषे कोशल गामें पहोता. तिहां मुकुंद नामा ब्राह्मण गुरुनी देशना सांजळी प्रतिबोध पाम्यो, जेमाटे "यथा चतुर्भिःकनकं परीक्ष्यते, निघर्षण छेदन तापताडनैः ॥ तथैव धर्मोविदुषा परीक्ष्यते, श्रुतेन शीलेन तपोदयागुणैः ॥ १ ॥" ते प्रकारें विचार्युं जे श्रुत, शील, तप

अने दया ए चार वानां मांहेलुं एके वानुं पण शिवशासनमांहे शुद्ध न थी. तेमज वली ते शासनमां अनिनिवेश मिथ्यात्व तो छेज, माटे तेनां ए चार वानां शुद्ध पण कहेवाय नहीं. अने जैननां ए चारे वानां शुद्ध छे. एम ते वैराग्य पाम्यो थको दीक्षा लेतो हवो. हवे ते मुकुंदचंद नामा साधु हरहमेश ढढर शब्द करतो शास्त्र गोखतो रहे.

तेने गुरुयें वाख्यो के, हे महानुनाव! रात्रियें महोटे शब्दें गोखवुं नहीं. जेमाटे महोटे शब्दें गोखवाथी जो अनार्यलोक जागे तो दलवा, खांमवा, पीलवा प्रमुख आरंनमां प्रवर्त्ते ॥ यतः ॥ जागरिया धम्मिणं, अहम्मीणंतु सुत्तया सेया ॥ वज्ञाहिव नगिणीए, अकही सुजिणो जयंतीणं ॥ १ ॥ इति नगवती सूत्रना नाावनी गाथा तथा यतिदिनचर्या ग्रंथमां पण ए गाथा छे.

पछी ते साधुयें रात्रें गोखवुं मूकी दइने दिवसेंज महोटे ढढर स्वरें गोखे. ते लोकोने अनिष्ट लागे तेमज न्हाना चेला तथा गृहस्थना छोकरा तेनी उपर हसे, एकदिवस तेने केटलाएकें कह्युं के आ वृद्धपणमां आकरें शब्दें गोखीने शुं मूसलो फूलावशो एवुं हांसुं सांनलीने ते विद्यानो अर्थी थतो सरस्वती देवीना चैत्यें जइ बेठो तिहां एकवीश उपवास कस्या, तेना नाग्य योगें सरस्वती प्रगट थइने कह्युं के हे आर्य! तुं सर्वविद्यानो पारंगामी था. एवुं कही देवी अदृश थइ.

पछी ते साधुनी जेवारें कोइयें हांसी करी तेवारें एणे कह्युं आगो मू सलो फूलावी देखाडुं. पछी चउटामां जइ स्थूल मूसलो अणावी तेने मंत्र शक्तियें करी पत्र पुष्प फलादिकें करी फूलावी देखाड्यो अने कहेवा लाग्यो के जे महारी सामें वादें आवे तेनी उपर पत्रावलंबन कीधुं छे. एम कहे. स्कंदिलाचार्यें तेने प्रानाविक जाणी आचार्य पद आप्युं. तेमनुं वृद्धवादी एवुं नाम दीधुं अने पोतें अनशन करी देवसनाना नूषण थया. एकदा श्रीवृद्धवादी सूरि नरूयचें पधास्या तिहां तेमनो घणो महिमा वध्यो.

हवे नज्जयणी नगरीयें विक्रमादित्यराजा राज्य करे छे. तेनो प्रधान दे वऋषि ब्राह्मणनी देवसिका स्त्री छे, तेनो सिद्धसेननामा पुत्र छे, ते सकल विद्यानो पारंगामी छे परंतु अहंकारी छे तेथी तेणे एवी प्रतिज्ञा करी छे के मुऊने जे जीते, तेनो हुं शिष्य थाउं. पछी तेणे वृद्धवादी सूरिनुं पत्रावलंबन सांनली सुखासनें बेठो थको घणा गर्वें परवस्यो थको नृगुकच्छ आवे छे.

एवामां वृद्धवादीसूरि पण कोइ कार्यांयें घणा शिष्यने परिवारें बाहिर नि कल्या छे. तेवारें सिद्धसेनें छात्रोने पूछयुं ए कोण श्वेतांबर जाय छे? छात्रें कह्युं ए वृद्धवादी सूरि वादि मदभंजन जाय छे.

ते सांभळी सिद्धसेन, तेमनी पासें आव्या अने कहेता हवा के तमा री सार्थे हुं वाद करीश. आचार्यें कह्युं इहां रानमां श्यो वाद करवो, इहां पोकार करवाथी शुं वळवानुं छे चालो नगरमां जइ राज्यसभायें वाद करी यें. सिद्धसेने कह्युं आ गोवाळीया आपणा साक्षी छे एज हार जीत कहे शे, ते आपणने प्रमाण छे. गुरुयें विचार्युं जे ए पंमित तो छे पण उता वळीयो छे. तेवारें गुरुयें कह्युं पूर्वपक्ष कर.

पछी सिद्धसेने गाढे स्वरें पूर्वपक्ष कर्यो, अने संस्कृतभाषामां कठिण काव्य बोलवा लाग्यो, गोवाळीया बोल्या एने तो भूत लाग्युं जणाय छे? कोइ रीतें ए बोलतो रहेतो नथी. महोटे सादें बोलीने अमारा कानने पीडा करे छे हवे ते वारंवार तर्कवादें जेवारें आरडी थाक्यो? तेवारें वृद्ध वादीने कहेवा लाग्यो के हवे तमें उत्तरपक्ष करो.

वृद्धवादीयें मनमां चिंतव्युं जे आ गोवाळीयानी सभामां श्यो तर्कवा द करीयें? इहां तो आंधळाने आरीसो देखाडवानो न्याय थाय, माटें विचार करीने काछडो बांधी रजोहरण केडमां बांधी पीहीणीछंदनी राशि भणता कांइक नाचता कूदता थका मुखथी एवी रीतें कहेता हवा. तद्यथा ॥ नवी मारीयें नवी चोरीयें परदारा गमन निवारीयें, थोवाथोवुं दा इयें, तो सग्गे टडवडी जाइयें ॥ १ ॥ कालुंकांबल नीचोवट्ट, छाशें भरीयो दीवडो घट्ट ॥ एवड पडीयो नीले झाड, अवर किश्युं छे सग्ग निलाड ॥ २ ॥ इत्यादिक छंद भणता जाय अने दांमो उछाळी नाचता जाय, तेवा रें गोवाळीया पण लाकडी उछाळी गुरुने प्रदक्षिणा देता नाचता हुवा अने कहेता हवा के आ वृद्धवादी गुरु महोटा पंमित छे अने आ बापडो वां भणीयो तो मात्र महोटा पोकार करी जाणे छे, पण कांइ भण्यो नथी.

एवुं गोवाळीयानुं वचन सांभळी सिद्धसेन ब्राह्मण आवी गुरुने पगें लागीने कहेवा लाग्यो जे हुं तमारो शिष्य थयो मुजने दीक्षा आपो तमें समयना जाण छो अने हुं समयनो जाण नथी माटें हुं मूर्ख छुं तेथी हुं हार्यो अने तमें जीत्या तेने गुरुयें कह्युं एथी तुं कांइ हार्यो नथी अने हुं

जीत्यो पण नथी एतो मात्र आपणे रमततुल्य चर्चा थइ माटे चालो आ पणे राज्यसन्नामां जइ वाद करीयें,तिहां जे जीतहार थाय ते वेहुने प्रमाण ले. सिद्धसेनजीयें कह्युं के में प्रतिज्ञा करेली ले के जे मुजने हरावे तेनो हुं शिष्य थाउं माटें दीक्षा आपो. पली गुरु नगरमां तेडी आव्या राजसन्नामां वांदें जीतीने रूडुं मुहूर्त्त जोइ तेने दीक्षा आपी. राजायें ते वात सांजलीने जिहां गुरुयें तालोटा दीधा हता तिहां तालारस नामें गाम वसाव्युं तिहां श्रीरुषजदेवनुं प्रासाद कराव्युं तेनी वृद्धवादी सूरियें प्रतिष्ठा करी.

मुकुंदचंद साधुनुं नाम सिद्धसेन थाप्युं अनुक्रमे पूर्वगत आम्नाय मां हेली केटलिएक विद्याउं नण्या माटे योग्य जाणी गुरुयें तेमने आचार्य पद आपतां सिद्धसेनदिवाकर एवुं नाम दीधुं ॥ यतः ॥ वाईय खमासम णे, दिवायरे वायगित्ति एगठा ॥ सुत्ते पूव्वगयंमि, एए सद्दाय पयट्टती॥१॥

एकदा सिद्धसेनसूरि गुरुनी आज्ञा मागी उज्जयणीयें आव्या तिहां श्रा वकोयें महोटे महोत्सवें पेसारो कराव्यो नगरीना चोकमां आव्या तेवारें राजा विक्रमादित्य पण हाथी उपर चडेला एमने सामा मल्या अने पू ठ्युं, ए कोण आवे ले? श्रावकोयें कह्युं सर्वज्ञ पुत्र आवे ले. राजायें तेनी परीक्षा करवा निमित्ते हाथी उपर चड्यो ठतां मनथी प्रणाम कर्यो गुरुयें तेने महोटे स्वरें धर्मलान दीधो. राजा समज्यो जे मुजने महोटो जाणी धर्मलाज दीधो हशे. एम विचार करी गुरुने पूठ्युं तमोने जे नमस्कार क रे, तेने तमें धर्मलाज द्यो लो के जे नही नमे, तेने पण धर्मलान द्यो लो? शुं तमारो धर्मलान घणुं सस्तो ले? गुरुयें कह्युं अमारो धर्मलान कोडी चिं तामणि रत्नोथी पण अधिक महर्घ्य ले माटे जे नमे तेनेज आपीयें तमें मनमां नावथी नमस्कार कर्यो माटे तमोने धर्मलान दीधो, जेमाटे प्रथ मपणु नावनमस्कारने ले ॥ यतः ॥ वावाराणं गुरुउं, मण वावारो जिणेहिं पसुत्तो ॥ जो नेइ सत्तमिवा, अहवा मुक्कं पराणेइ ॥१॥ ते सांनली राजा ह र्ष पाम्यो हाथीथकी उतरीने वंदना करी कोडीसुवर्ण नाणक आगल मूक्यां. गुरुयें कह्युं अमें ए सुवर्णने शुं करीयें अमें तो निर्मम लैयें. राजा बोल्यो में ए धनोद्दा कल्प्यो माटे हवे महारें नंडारमां ए इव्य स्वप आवे नहीं. पली ते इव्य राजायें जीर्णचैत्योद्वार निमित्ते श्रावकोने नलावी, अने वहीमां आवी रीतें धर्मलाने जलाव्युं ॥ यतः ॥ धर्मलान इति प्रोक्ते दूराडुंछ्रितपाणये॥

सूरये सिद्धसेनाय. ददौकोटिं धराधिपः ॥१॥ पुणे वास सहस्से, सयंमि व रिसाण नवनवइ कलिए ॥ होइ कुमर नरिंदो, तुहविक्कमराय सारिच्छो ॥ १ ॥ राजा विक्रम गुरुनो भक्त थयो पछी गुरु अनुक्रमें विहार करतां चित्रकूटें आव्या. तिहां प्रासादें देव जुहारी समस्त प्रासाद जोतां एक प्रासादें लेखमय स्तंभ दीठो वृद्धश्रावकने पुछ्युं ए शुं छे ? श्रावकें कह्युं ए पूर्वाचार्ये मंत्राक्षरमय पुस्तक नाखी लीप्तमय स्तंभ कीधो छे. एने कोइ उघाडी शके नहीं. गुरु प्रतिदिन देरासरें आवी स्तंभने सुंघे. एम सुंघता तेनी सर्व औषधियो जाणवामां आवी, पछी तेनी प्रतिपक्षी औषधि पाम्या ते औषधिउनो रस छांट्यो तेथी पाका चीभडानी पेरें स्तंभ फाटी पड्यो, तेमांहेथी एक पानुं काहाडी वांच्युं तेमांथी एक सरशवविद्या अने बीजी सुवर्ण विद्या ए बे विद्या मली एटलामां घांचो फाटेलो हतो ते मली वज्रमय थइ गयो. अने आकाशवाणी एवी थयी जे हे आचार्य ! ए विद्याने तुं अयोग्य छो माटे चपलस्वभाव मूक नहींका जीवितना संदेहमां पडीश. बे विद्या पाम्या तेमां सरशव विद्या तो कोइ काम पडे तो जेटला सरशवना दाणा मंत्रीने जलाशयमां नाखीयें तेटला असवार बेंहेंतालीश प्रकारना हथीयारें सहित बाहेर निकलीने लडाइना मेदानमां खडा थइ आवी उभा रहे. ते शत्रुनी सेनानो भंग करी पछी अदृश्य थइ जाय अने सुवर्णविद्याथी वगर प्रयासें जेटलुं सुवर्ण जोइयें तेटलुं तयार थइ जाय. ए बे विद्या गुरुने मली पछी तिहांथी विहार करीने गुरु,पूर्वदिशें कुमारपुरने विषे गया तिहां देवपाल नामें राजा छे तेने प्रतिबोधीने पाको जैनधर्मी कर्यो. ते प्रतिदिन एमनी पासें वखाण सांभलवा आवे, तेथी परस्पर प्रीति थइ एम केटलोएक काल व्यतीत थयो. एकदा राजाने चिंतातुर देखी गुरुयें चिंतानुं कारण पुछ्युं, राजायें कह्युं स्वामी ! म्हारा घणा वेरी एकठा थइ कटक लइ आवे छे, माटे हवे म्हारे शुं करवुं ? गुरुयें कह्युं कांइ चिंता म करो. सर्व रूडुं थाशे.

केटलाएक दिवस पछी वेरीउयें आवी राजानुं नगर वींटयुं गुरुयें पाणीयें भरेलुं कुंडुं अणावी तेमां विद्यायें अभिमंत्रित सरशव मूक्या, तेमां जेटला सरशव हता तेटला समस्त आयुधें सहित असवार निकल्या तेणे वेरीना सवारो सायें युद्ध करी हतप्रहत कीधा नंतर पोतानी मेलें अदृश्य थइ गया. राजायें, जयभंभा वजडावी सूरिनी पासें आवी पगे लागीने

जीत्यो पण नथी एतो मात्र आपणे
पणे राज्यसन्नामां जइ वाद करीयें
छे. सिद्धसेनजीयें कह्युं के में प्रति
शिष्य थावं माटें दीक्षा आपो.
वादें जीतीने रूडुं मुहूर्त्त जोइ
जिहां गुरुयें तालोटा दीधा ए
श्रीरूपन्नदेवनुं प्रासाद कराव
मुकुंदचंद साधुनुं नाम
देली केटलिएक विद्याउ
पद आपतां सिद्धसेनदि
ऐ, दिवायरे वायगित्ति
एकदा सिद्धसेनसू
वकोयें महोटे महो
राजा विक्रमादित्य
ठयुं, ए कोण आवे
परीक्षा करवा नि
तेने महोटे स्वरें ध
धर्मलान्न दीधो हतो.
रे, तेने तमें धर्मलान्न
शुं तमारो धर्मलान्न ध
तामणि रत्नोथी पण ह
मनमां न्नावयी नमस्कार
नपणु न्नावनमस्कारने छे ॥
पणुतो ॥ जो नेइ सत्तमिया, ह
पे पाम्यो हाथीयकी उतरीने वंद
गुरुयें कह्युं अमें ए सुवर्णने शुं करी
ए धर्मादा कल्प्यो माटे हवे महारें नंम
इव्य राजायें जीर्णचैत्योद्धार निमित्ते आप
रीतें धर्मलान्ने लखाव्युं ॥ यतः ॥ धर्मलान्न

एकदा सिद्धसेनसूरि अहंकारमां मग्न थया थका श्रीसंघने कहेवा ला ग्या के तमे कहो तो सर्व सिद्धांतनो प्राकृत नाषा टालीने संस्कृत करुं जे म लोक आपणने हसे नहीं ते सांजली श्रीसंघें कह्युं के तमोने प्रायश्चित्त उपन्नुं जेमाटें सर्वाक्षर सन्निपात लब्धिना धणी एवा श्रीगणधर देव तेमांहे संस्कृत नाषा करवानी शक्ति हती तथापि लोकोपकारने अर्थे सिद्धांतो प्राकृत नाषामां कर्यां ठे, तेथी श्रीतीर्थंकरनी तथा गणधरनी आशातना तमें करी, माटे तमोने पारांचिक नामें प्रायश्चित्त उपनुं तेथी केम बूटशो ?

तेवारें पश्चात्ताप करता श्रीसंघने विनति करता हुवा के दशमुं प्रायश्चित्त विच्छिन्न थयुं ठे तो पण श्रीसंघनी आज्ञा होय तो तुल्यना रूप दशमुं प्रायश्चित्त हुं आदरुं. संघें कह्युं जेम तमारो नाव होय तेम करो. पढी सिद्धसेन सूरियें मौन आदरी रजोहरण मुहपत्ति गोपवी अवधूतनो वेश धारण करी जेम कोइ उंळखे नहीं एवी रीतें बार वर्षपर्यंत नमवानो निर्धार कर्यो. जेमाटे कोइ उंळखे तो वली बीजी वार बार वर्षपर्यंत एमज करवुं पडे, तेमाटे अज्ञात थका नमवा लाग्या एम आठ वर्ष वीत्या केडे उज्जयणीयें आवी महाकालने प्रासादें लिंग ऊपरें पग राखी पलेडी उंढीने सुता. पुजारे उगाडवा माटे घणुं जोर कर्युं पण उठ्या नहीं तेवारें राजाने खबर करी राजा विक्रमादित्यें पोतें आवी उगाड्या तोपण उठ्या नहीं तेवारें राजायें ताजणानो मार देवा मांड्यो, ते ताजणा सर्व राजाना अंतःपुरने लाग्यां तिहांथी बुमो आवी राजायें विचार्युं ए सामान्यपुरुष नथी सिद्धपुरुष ठे, तेमाटे पगे लागीने उगाड्या पढी राजायें कह्युं आ देव ठे एनी स्तवना करीयें पण एने रुसवीयें नहीं. सिद्धसेनें कह्युं ए देव महारी स्तुति खमी शके नहीं जो हुं स्तुति करुं, तो ए लिंग फाटी पडे.

राजायें कह्युं स्तुति करतां जे थाउ ते नले थाउ. कपूर खातां दांत पडी जाय, तो पण कपूर खावुं. सिद्धसेनजीयें कह्युं हमणां तो एम कहो ठो पण पढी तमोने दुःख उपजशे, दुःहवाशो. राजायें कह्युं मुजने दुःख नहीं उपजे तमे एनी स्तुति करो, एवुं कहे थके सिद्धसेनदिवाकरें श्रीमहावीरनी स्तुतिरूप बत्रीशी करी तेनो पहेलोज श्लोक कहेतां लिंगमांथी धूम्र निकल्यां पढी श्रीपार्श्वनाथनो महिमा जाणी कल्याणमंदिरस्तोत्र कर्युं, तिहां " यस्मिन् हरप्रभृतयोपि हतप्रनावा " ए अगीयारमुं काव्य कहेतां

धूम्रज्वाला प्रगट थइ. ते जोइ मिथ्यात्वी लोकें कह्युं के महादेवनुं त्रीजुं नेत्र प्रगट थयुं हवे आ निक्षुकने वाली नस्म करशे. तेवारें तो वली तड तडाट करतो अग्नि निकल्यो. पठी कल्याणमंदिरनुं तेरमुं काव्य कहेतां थकां लिंग फाटी पड्युं, धरणिंद्रना सहाय थकी श्रीपार्श्वनाथनी प्रतिमा प्रगट थइ. पठी कल्याणमंदिर पूर्ण चुम्मालीकाव्य प्रमाण कर्युं प्रजुनी स्तवना करी नगवान् पासेंथी क्षमापन माग्युं तेवारें राजायें पूछ्युं के, हे नगव न्! आ शुं अपूर्व अदृश्य दीठामां आव्युं? आ ते वली कयो नवीन देव ठे अने आ शी रीतें प्रगट थयो? तेवारें सिद्धसेनजीयें अयवंतिसुकुमार नो पुत्र माहाकाल हतो, तेणें पोताना पिताना नामथी अयवंती पार्श्व नाथनुं मंदिर बंधावी तेमां श्रीपार्श्वनाथनी मूर्त्ति स्थापी, तेनी केटलाएक वर्षपर्यंत लोकोयें पूजा करी. पठी अवसर पामीने ब्राह्मणोयें पोता नुं जोर वधेलुं जाणी श्रीजिनप्रतिमाने नीचें दावीने तेनी ऊपर आ शि वनुं लिंग स्थापन कर्युं ठे. इत्यादि जे कांइ वृत्तांत हतुं, ते सर्व राजाने कही संनलाव्युं. वली हे राजन्! आ महारी स्तुतिथी शासन देवतायें शिवनुं लिंग फाडीने वचमांथी आ प्रतिमा प्रगट करी दीधी. हवे तमें स त्यासत्यनो निर्णय करी ल्यो. तेवारें राजायें सो गाम मंदिरनो खरच न लाववामाटे आप्यां. अने देवनी समक्ष गुरुमुखथी बार व्रत ग्रहण कर्यां. अने श्रीसिद्धसेनसूरिनो महोटो महिमा वधारीने पोताने स्थानकें गया. वादीइसिद्धसेन दिवाकरनी पदवी आपी राजा प्रतिबोध पाम्यो. घणाएक मिथ्यात्वी जीवो मिथ्यात्व मूकीने श्रावक थया. तिहां अयवंति पार्श्वनाथ नुं तीर्थ स्थापन थयुं. ते श्रीजिनशासननुं महोटुं कार्य कीधुं, माटें श्रीसं घें शेष चार वर्षनुं प्रायश्चित्त वक्षीसमां मूक्युं. तेवारें संघना कहेणथी उ घो, मुहपत्ति, लइ गह्रमांहे आव्या. घणा नविन ग्रंथो रचीने श्रीजिनशा सननी प्रजावना करी. हवे एकदा प्रस्तावें सिद्धसेन दिवाकर विहार करता करता मालवामां ॐकार नामें नगरें आव्या. ते नगरना नक्त श्रावकोयें विनतिकरी जे हे नगवन! आ नगरनी समीपें एक गाम हतुं, तेमां सुंदर नामा राजपुत्र ग्रामणी हतो, तेने बे स्त्री हती, तेमां एक स्त्रीयें प्रथम पु त्री जन्मीने ते वखतें तेनी शोक पण प्रसुतवान हती तेथी ते स्त्रीयें मन मां खीजीने विचार कर्यो जे महारीशोक जो पुत्र न प्रसवे तो ठीक. केम के

जो तेने पुत्र प्रसवयशे तो ते पतिनी घातक थाशे, तेथी तेणे राज्ञी साथें मंत्रीनें जेवो तेनी शोकें पुत्र प्रसव्यो. तेवांज बहार नाखी दीधो. अने तुरत नो मरी गयेलो छोकरो तेनी पासें राखी दीधो. पछी जे पुत्रने बहार नाखी दीधो हतो, तेने कुलदेवीयें गायनुं रूप करीने पाल्यो, ने ज्यारें ते आठ वर्षनो थयो, त्यारें ॐकार नगरना शिवभवनना अधिकारी जगडे, तेनें देखीने पोतानो चेलो बनाव्यो. एकदा प्रस्तावें कान्यकुब्ज देशनो राजा आंखे आंधलो छे. तेणे दिग् विजय कार्यथी त्यां पडाव कर्यो. तेवामां रात्रियें शिवजक व्यंतर देवतायें ते छोटा चेलाने कह्युं के जेघनोग राजाने देखाथी तेनी आंख सारी थाशे. ने तेणें तेम कराथी राजानी आंख सारी थइ तेथी राजायें मंदिरना खरचखारु सो गाम तेने आप्यां. ने आ मंदरो शिवमंदिर छे ते पण, तेणें बनाव्यां छे. अने अमें आ नगरमां रहीयें छैयें परंतु मिथ्यादृष्टियो बलवान् होवाथी अमोने जिनमंदिर बनाववा देता नथी, ते वास्ते आपने विनति करीयें छैयें के, आ शिवमंदिरोथी अधिक ऊंचुं जैनमंदिर बने तो ठीक थाय. आपतो सर्व रीतें समर्थ छो. एवां श्रावकोनां वचन सांभळीने, वादीन्द्रअवंतीमां आव्या अने चार श्लोक हाथमां लइने विक्रमादित्यना द्वार पासें आवी द्वारपालनी साथे राजाने कहेवराव्युं जे “ दिदृक्षुर्भिक्षुरायातस्तिष्ठति द्वारवारितः ॥ हस्तन्यस्तचतुः श्लोकः, किमा गच्छतु गच्छतु ॥ १ ॥ ते श्लोक सांभळीने विक्रमादित्यें तेना बदलामां बीजो श्लोक लखीने मोकल्यो जे “ दत्तानि दश लक्षाणि, शासनानि चतुर्दश ॥ हस्तन्यस्तचतुः श्लोको, यदागच्छतु गच्छतु ॥२॥ ते श्लोक सांभळीने आचार्ये कहेवराव्युं के भिक्षु तमने मळवा चाहे छे, परंतु धन लेवा आव्या नथी, त्यारें राजायें तेने सन्मुख बोलाव्या ने ओळखीने कहेवा लाग्या के गुरुजी ! घणो दिवसें आजे दर्शन दीधां ? त्यारें आचार्य कहेवा लाग्या के धर्मकार्य करवामां घणोकाळ रोकाण थवाथी आपनी पासें आवी शक्यो नही. हवे चार श्लोक हुं कहुं छुं ते सांभळो ॥ अपूर्वेयं धनुर्विद्या, भवता शिक्षिता कुतः ॥ मार्गणौघः समभ्येति, गुणोयाति दिगंतरं ॥ १ ॥ सरस्वती स्थिता वक्त्रे, लक्ष्मी करसरोरुहे ॥ कीर्त्तिः किंकुपित राजन, येन देशांतारंगता ॥ २ ॥ कीर्त्तिस्ते जातजाड्येव, चतुरंभोधिमज्जनात् ॥ आतपायध

रानाथ, गता मार्त्तममंडलम् ॥ ३ ॥ सर्वदा सर्वदोसीति, मिथ्या संस्तूयसे जनैः ॥ नारयो लेभिरे पृष्ठं, नवक्षःपरयोषितः ॥ ४ ॥

ए चार श्लोक सांजलीने राजा नानाप्रकारना वस्त्र देवा लाग्यो, गुरुयें कह्युं तुं राजा ठो, माटें तह्मारां वस्त्र अमने कल्पे नहीं. राजायें कह्युं तो तमें शुं कहो ठो? जे आप कहो, ते हुं करुं. आपनी आगल हाथ जोडी उन्नो बुं. गुरुयें कह्युं ॐकारपुरनेविषे महादेवना प्रासाद थकी उंचुं जैन नुं प्रासाद करावी तिहां जइने तेनी प्रतिष्ठा करावो.राजायें तेमज प्रासाद कराव्युं अने सिद्धसेनसूरीश्वरने हाथें तेनी प्रतिष्ठा करावी. तेथी तिहां न रडा लोकोना श्यामवदन थयां. श्रावकजनो घणुंज हर्ष पाम्या. एम सि द्धसेनसूरियें गाम गाम जिनशासननी प्रन्नावना करी.

पठी प्रतिष्ठान नगरें आव्या, तिहां आयुष्य पूर्ण थयुं जाणी अनशन व्रत करी अतिचार आलोइ पृथ्वीने विषे जिनशासनना प्रान्नाविक थइ,स्वर्ग लोकें जिनशासननी प्रन्नावना करवा गया. श्रीसंघे महोटो महोत्सव कर्यो.

पठी संघें गुरु देवगति पाम्या तेना समाचार जणाववाने अर्थे चित्र कूट गामें न्नाट मोकल्यो, ते न्नाटें जइने आचार्यनां वखाण कह्यां, ते आ वी रीतें ॥ स्फुरंति वादिखद्योताः, सांप्रतं दक्षिणापथे ॥ वारं वार एवुं कहेव थी तिहां सिद्धसेन दिवाकरनी न्हानी बहेन वालसरस्वती एवे नामें हती, तेणें पूर्वलां बे पद सांजलीने आगलां बे पद कह्यां, ते कहे ठेः— नूनमस्त गतोवादी, सिद्धसेनदिवाकरः ॥ १ ॥ ते सांजलीने चित्रकूटना संघने घणु ज दुःख उपनुं. न्नाटने संतोषी वीसर्ज्यो. ए कविप्रान्नाविकआश्रयी श्रीसि द्धसेनदिवाकरनो संबंध कह्यो.

हवे प्रकारांतरें प्रान्नाविकना न्नेद कहे ठेः—

॥ सवे पन्नावगा ते, जिणसासण संसकारिणा जे उ ॥ न्नंगंतरेणवि जर्ड, ए ए न्नणिया जिणमयम्मि ॥ ३७ ॥ अर्थः—(सवेपन्नावगाते के०) ते सर्वे प्रन्नावक कहीयें (तु के०) वली (जे के०) जेणे प्रकारें (जिण सासणसंसकारिणा के०) श्रीजिनशासननी श्लाघाना करनारा (जर्ड के०) जे कारण माटे कह्युं ठे के (न्नंगंतरेणवि के०) न्नंगांतरें एटले प्र कारांतरें पण (एएन्नणिया के०) ए प्रान्नाविक आठ प्रकारें कह्या ठे. (जि णमयम्मि के०) श्रीजिनमतनेविषे ते आगली बे गाथायें कहेठे ॥ ३७ ॥

॥ अइसेसित्ता इड्ढि, धम्मकहि वाइ आयरिय खवग ॥ निमित्त विद्या राया, गणसंमउअ तित्त पनाविंति ॥ ३० ॥ ॥ इय संपत्ति अनावे, जत्ता पूआइ जिण मणोरमणं ॥ जिणजइवि सयं सयलं, पनावणा सुद्द नावेणां ॥ ३१ ॥ अर्थः-(अइसेसित्ता के०) अतिशेषिता एटले परम उत्कर्ष पामी ने जंघाचारण, विद्याचारण, आशिःविष, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, प्रमुखनी (इड्ढि के०) ऋद्धि जेणे एवा जे होय तेने अतिशेष ऋद्धि प्राना विक कहीयें. ए प्रथम प्रानाविक जाणवो.

तथा बीजो (धम्मकहि के०) धर्मकथिक ते व्याख्यान करवानी लब्धि वंत प्रानाविक जाणवो. त्रीजो जे परवादीने जीतीने जय पामे, ते (वाइ के०) वादी प्रानाविक कहीयें. चोथो बारशें ने ठत्रुं आचार्यना गुण तेणे करी अलंकृत जे होय ते (आयरिय के०) आचार्य प्रानाविक कहीयें. पांचमो जे विकृष्ट तपस्यानो करनार होय, ते (खवग के०) क्षपक प्रा नाविक जाणवो. बठो जे त्रिकाल निमित्तनो जाण होय, ते (निमित्तं के०) नैमित्तिक प्रानाविक जाणवो. सातमो जे नाना प्रकारनी विद्या मंत्रादिक नो जाण होय, ते (विद्या के०) विद्यावंत प्रानाविक जाणवो. आठमुं जे (राया के०) राजाउनो (गण के०) समूह तेने (संमउ के०) संमतो एटले वल्लन होय ते (तित्तंपनाविंति के०) तीर्थ प्रनाविक एटले श्रीजिन शासन प्रत्यें प्रनावना करे दीपावे ते तीर्थप्रानाविक कहीयें ॥३०॥

हवे कालना विषम पणा थकी कदापि ए आठ प्रानाविक न होय, तो प्रानावकपणुं केम थाय ? ते कहे ठेः-(इय के०) ए पाठल वे प्रकारें कह्या एवा जे प्रनाविको तेनी (संपत्ति के०) संपदा तेने (अनावे के०) अनावे ए टले पाठल कहेला प्रानाविक जेवा कोइ प्रानाविक कदापि कोइ कालादि कने दोषें न लाने तो ते समयें आ प्रमाणेना कार्य करनारा जे पुरुषो हो य, तेने पण श्रीजिनशासनना प्रानाविक कहीयें. ते जेम के श्रीशत्रुंजय, गिरनार, अर्बुदाचल, प्रमुख तीर्थोनी (जत्ता के०) यात्रा महोटा महोटा संघने सायें तेडीने करवी, केम के एवी यात्रा घणा जीवने प्रतिबोधवानुं कारण थाय. जेम श्रीनरतचक्रवर्त्तियें संघने यात्रा करावी, जेमाटें आ अ वसर्प्पिणीने विषे प्रथम संघवी नरतचक्रवर्त्ती थयो ते श्री अष्टापदें प्रथम प्रासाद बंधावी तेनी आचार्यपासें प्रतिष्ठा करावीनें प्रानाविक थयो.

तथा (पूआइ के०) पूजादि ते श्रीअरिहंतनी तथा अरिहंतनी प्रतिमानी, गुरु जे आचार्य उपाध्याय प्रमुखनी यथायोग्य पूजा करवी. तेमज आदि शब्द थकी सर्वजीवने अनयदान देवानी पटह उद्घोषणा करवी,अद्भुत प्रासाद निर्म्मापण, ए शिवाय बीजां पण श्रीजिनशासनना अद्भुत कार्य लेवां.

तथा जेथकी (जनमणोरमणं के०) लोकना चित्त हर्ष पामे, घणा यांजन थकी अनिग्रह धरीने लोक यात्रा करवा माटे चाली आवे, तेवा कार्य करवा तेने जनमनोरमण कार्य कहियें.

तथा (जिणजइ विसयं सयलं के०) श्रीजिन अने यति एटले साधु ते संबंधिया सकलकार्यनुं करवुं, ते जिनशासननी प्रनावना कहीयें, पण ए (पनावणा के०) प्रनावना केवी रीतें करवी ? तो के (सुद्धनावेणं के०) शुद्धनावनाथी एटले निर्मायपणे दृष्टिराग रहितपणे केवल गुणानुरागीपणे करवी. पोताना चित्तमांहे लेशमात्र पण रागद्वेषनो परिणाम आणवो नहीं ते शुद्धनाव कहीयें. तेवा नावें करी करवी यतः ॥ शैथिल्यमात्सर्यकदाग्रहः क्रुधोनुतापमानाविधि गौरवाणि च ॥ प्रमाददंनौ कुगुरुः कुसंगतिः, श्लाघार्थिता वासुकृतांतदा इमे ॥ १ ॥

तथा वली जे कार्य करे, ते श्रीतीर्थंकरनी तथा प्रवर्त्तमान गछनायकनी आज्ञायें करे, जेमाटें आज्ञा विना करे, ते निष्फल थाय यतः ॥ समिति पविनिसवा, आणावज्जंति नवफला चेव ॥ तिछ गुरुदेसे एवि, ए तत्तउ सा तउद्देसा ॥१॥ मूढा अणादिमोहा, तहा तहा एउ संपयट्टंता ॥ तं चेव यमण्णंता, अवमणंता ण याणंति ॥२॥ मोरकछीणा तउ तह, आणाए चेव सव जेतेण ॥ सवछ विजय इयवं, सम्मंति कयं पसंगेणं ॥ ३ ॥ इतिश्रीअष्टम प्रतिष्टापंचाशके ॥ ३ए ॥

हवे एनी उपर संघपति श्रावकोमांहे रत्नसमान रत्नश्रावकनो संबंध कहीयें ठेयें. एज नरतक्षेत्रें काश्मिर देशें नवफूल नामा पाटण तिहां नवदत्त नामा राजा राज्य करे ठे. तेनें विजयादेवी पटराणी ठे.

हवे तेहज नगरने विषे पूर्णचंद्रनामा शेठ वसे ठे. तेना त्रण पुत्ररत्न ठे, एक रत्न, बीजो मदन अने त्रीजो पूर्णसिंह, एवं त्रण पुत्र ठे. तेमां रत्नने पोमिणी नामें स्त्री ठे, तेनो कोमल नामें पुत्र ठे.

हवे श्रीनेमीश्वरना निर्वाण पठी आठसहस्र वर्ष वीत्या केडें पट्टमहा

देव नामें केवली साधु पण साधुने परिवारें परवस्या. नवफुल नगरना उ द्यानने विषे आव्या देवकृत सहस्रपांखडीनुं कमल तद्रूप सिंहासनने बेठा थका देशना देवा लाग्या. उद्यानपालकें राजाने खबर आपी. राजा पण तिहां आवी बेठो, रत्नप्रमुख त्रण नाइ पण परिवार सहित वांदवा आ व्या. धर्मदेशना सांजलवा बेठा. तिहां केवली नगवान् देशनामां तीर्थ यात्राना फल वर्णवता हवा॥ तद्यथा ॥ अहो तीर्थस्य माहात्म्यं, पुंमरीक निजागिरेः ॥ पशवोपि हि यत्रस्था, लभ्यंते सुरसंपदम् ॥ १ ॥ ततोपि रैवत गिरेः, कृता सेवा महाफला ॥ विमलाचलदेशत्वा, तद्रूपोयं यतःस्मृतः ॥२॥ विशेषतस्त्वयं नेमिः, पवित्रं कृतवान्निजः ॥ प्रव्रज्याज्ञाननिर्वाण, कल्याणिक महामतिः ॥३ ॥ श्रीमदुज्वैयमाहात्म्यं, ब्रुवंति लौकिकाअपि ॥ श्रूयंते च प्रना साख्य, पुराणे वदतांवर ॥ १ ॥ पद्मासन समासीनै, श्याममूर्त्ति दिगंबरं ॥ नेमनाथं शिवेत्येवं,नाम चक्रेऽस्य वामनः॥२॥ कलिकाले महाघोरे, सर्व कल्मष नाशकः ॥ दर्शनात् स्पर्शना देव, कोटियज्ञफलप्रदः ॥ ३ ॥ तेमाटे जेणें जावशुद्धियें श्रीशत्रुंजय रेवताचलनी यात्रा करी तेणे मोक्षकमला वरी. इत्यादि धर्मदेशना सांजली रत्नश्रावक गुरुनें पगे लागी अनिग्रहधारी थयो. जे हुं श्रीशत्रुंजय तथा गिरनार तीर्थनी यात्रा करुं तोज बीजी विगय ले उं तथा तिहां सुधी ब्रह्मचर्य पालुं. एवो अनिग्रह करी घेर जइ सजाइ करी अने श्रीसंघने खोला पाथरी अरजी करी. संघ सर्व यात्रा माटे तैय्यार थ यो. शाह रत्नसिंह राजानी आज्ञा मागवा गयो.राजायें कह्युं के घोडा, हाथी, मेरा, निशान, जे जोइयें, ते ल्यो. अनें शीघ्र यात्राना मनोरथ पूर्ण करी आवजो. एम कहीने राजायें नालिकेर प्रमुख आपीने विदाय कस्यो.

हवे एनी स्त्री पोमिणी ते राजानी विजयापटराणीने मलवा गइ. वि दायगिरी मागी, तेणे पण घणी आगता स्वागता करी. श्रीफल पटकूल आपी पोमिणीने विदाय करी. पढी रूडुं मुहूर्त्त लग्न साचवी रत्नशाह प ण संघनी साथें निशान गाजते प्रयाण कर्युं, तेमनी साथें पट्टमहादेवसू रि पण यात्रायें चाल्या. प्रतिदिन व्याख्यान सांजले देवपूजा स्नात्रादिक कार्यमां प्रवर्त्ते, रत्नशाह सर्व संघनी आगल चोकी करतो चाले अने म दन तथा पूर्णसिंह ए बे नाइ श्रीसंघनी बेहु पासें रखवाल करे. तथा रत्न शाहनो पुत्र कोमल ले, ते श्रीसंघनी पठवाडे चोकी करतो चाले. एम अ

विछिन्न प्रयाणें चालतां पंथमां लोल अने तोल एवे नामें वे पर्वत आव्या. तिहां संघें उतारो कस्यो, नोजन करी रात्रियें संघ तिहांज रह्यो.

प्रजातें प्रयाणनंजानाद सार्थे संघ चालवा लाग्यो, एटले कज्जल वर्णे मह्योटा दांत मह्योटी दाढें करी नयंकर माह्याकाय मुख वाघनी पेठें प सारी रहेलो ले. एवो राक्स, खावं खावं करतो प्रगट थयो. स्त्री प्रमुख लोक सर्व नासवा लाग्यां. आगल फोजना सुनटो हता तेऐं आवी पूछ्युं के थरे तुं कोण गे? तेणें कह्युं के हुं राक्स ढुं. मुजने समजाव्या विना जो आगल जाशो तो हुं सर्वलोकने नक्षण करीश. एवामां रत्नशाह आ वी ऊनो रह्यो. तेमने सुनटें सर्व हकीगत कही संनलावी. केटलाएकें कह्युं पाठा वलीयें. केटलाएकें कह्युं एनी सार्थे युद्ध करीयें; रत्नशाहें कह्युं पाठा तो सर्वथा नज वलीयें, श्रीनेमीश्वरनी यात्रा तो अवश्य करवी.

पठी रत्नशाहें तेने समजाववा कह्युं के तमें जइने एने जेम तेम सम जावो. नाट तेने समजाववा गयो. राक्सें कह्युं एक माणस मुजने आपी ने बीजा सर्व कुशलें जाउ. ते राक्सनो एवो निश्चय जाणी नाटें आवी शेठने कह्युं तेवारें रत्नशेठें समस्त श्रीसंघने कह्युं तमें जाउ सुखें समाधें यात्रा करो. हुं आहीं राक्सपासें रहुं ढुं. तेवारें शेठना वे नाइ तथा पुत्रें कह्युं तमें संघवी गो, माटें तमारे आगल चालवुं जोइयें, तेथी तमें जाउ अने अमेज ए राक्सना मुख आगल रहीशुं. रत्नशेठें ते सर्वने समजावी तेमने संघनी सार्थे चालता करी साहसिकपणुं आदरी श्रीनेमिनाथनुं श रण पडिवज्जी कायोत्सर्ग करीने पोतें तिहांज रह्या. तेनी सार्थे पोमिणी संघवीयण तथा कोमलपुत्र ए वेहु जण पण रत्नशाह न जाणे तेवी रीतें कायोत्सर्ग करीने गाना तिहांज शेठनी पासें रह्या.

हवे ते राक्सें, संघवीने तिहांथी उपाडीने पर्वतनी गुफामांहे घाली वा हेर शिला देइ वेसाड्यो अने ते डुष्ट राक्स अट्टाट्टहास्य करी वीहीवरा ववा लाग्यो. संघवीयें श्रीनेमीश्वरनुं ध्यान धर्युं.

एवा अवसरें श्रीगिरनारजीने विषे मेघनाद, कालमेघ, गिरिविदारण, कपाट, सिंहनाद, खाटिक, रैवतक, एवे नामें सातक्षेत्रपाल श्रीअंबिकादेवीने नमस्कार करवा आव्या ले एटलामां रैवताचल जाणीयें त्रूटीज पडशे एवो कंपवा लागो, साते क्षेत्रपाल श्रीअंबिकाजी प्रत्यें कहेवा लाग्या के हे स्वा

नेनि! शा कारण माटे श्रीगिरनारजी कंपायमान थाय ठे? तेवारें अंबि
काजीयें ज्ञानें करी जोयुं तो शाहरत्नसंघवीने उपद्रव थतो दीठो. ते
जोइ अंबिकाजी साते क्षेत्रपालनी साथें तिहां आवीने राक्षसने पगे जाली
नेटले शिलातलें पछाडवा लागी, एटलामां पोतानी आगल दिव्याजरणें
भूषित एवा एक मनुष्यने देखती हवी तथा शाहरत्न संघवीनी स्त्री पोमि
णी अने कोमलपुत्र ए वेहु जणने पण आगल उनां रह्यां दीठां.

हवे ते दिव्यस्वरूपी नर अंबिकाजीने कहेवा लाग्यो के हुं शंकरनामा
वैमानिक देव छुं. पट्टमहादेवसूरियें गिरनारनुं माहात्म्य कह्युं. ते सांजली
रत्नशाहें अजिग्रह कीधो. जे गिरनारजीनी यात्रा अवश्य करवी, तिहां सु
धी वीजी विगय लेवी नहीं,तेवारें हुं सजामां वेगो हतो,ते में ए शेठनी प
रीक्षा करवा माटे एटला वानां कर्यां. ए त्रणे मनुष्य रत्न जेवांज ठे, जे
माटें ए लेश मात्र सत्त्वथी चलायमान थया नहीं. वली ते देवता, अंबि
काजी तथा सातक्षेत्रपालने कहेवा लाग्यो के, धन्य ठे तमोने जे तमें संघ
वीनुं सहाय करवा आव्या. हुं जो तमारी सायें युद्ध करुं तो तमारुं कांइ
महारी आगल चाले नहीं कारण के हुं वैमानिक देव छुं. तो पण तमारा
साहसनी प्रशंसा करुं छुं. एवुं कही संघवीने पगे लागी अपराध खमावी त्र
णे जणने उपाडी संघमांहे मूकीने देवता पोताने स्थानकें गयो.

इहां सर्वने हर्षे उपनो हर्षजंना वजडावी अंबिका अने क्षेत्रपाल पण
गिरनारें आव्या ते पण संघवीनी सायें गिरनारना पाहाड उपर चड्या.
श्रीनेमीश्वर जगवानने प्रणाम कीधो. गजेंद्रपदकुंमे जइ स्नान करी सोना
ना तथा रूपाना कलश जरी गंधोदकें महमिकायें अनिषेक कर्यो, रत्ना
शाहें कोइक लेपमय बिंबने अजाणतां घणा सुगंध जलें करी न्हवण पु
जा करतां ते प्रतिमा गली गइ तेवारें संघवी पश्चात्ताप करतो कहेवा ला
ग्यो के हा हा मुजने तीर्थजंगनुं पाप लागुं! हवे हुं ए पापथी केम छूटी
श!!! एवो खेद करी अजिग्रह कीधो के जेवारे हुं ए तीर्थोद्धार करुं ते
वारेंज जोजन करुं तिहांसुधी महारे जोजन करवुं नहीं.

एवो निश्चय करी संघना रखोपा माटे पोताना बे जाइने राखीने पोतें
अंबिका देवी आगल जइ बेगा. बे माससुधी उपवास थया तेवारें अंबि
काजीयें आवी कह्युं हे वत्स! उठ अने महारी सायें कंचनबलानक तीर्थे

ने विषे चाल. एम कही अंबिकाजी आगल चाल्यां अने तेमनी पाछल
जशाह चाल्यो जाय अनुक्रमें कंचनबलानक तीर्थ गया तिहां अढार प्रतिमा
रत्नमय अढार हेममय, अढार वज्रमय अने अढार रौप्यमय एम बहोंतेर
प्रतिमा दीठी, तेवारें हर्षे उपनो तेथी जूख तृषा सर्व वीसरी गइ.

हवे शेठने अंबिकायें कह्युं तहारुं मन माने ते एक प्रतिमा ले. शेठें रत्न
मयबिंब लीधुं अंबिकायें कह्युं आगल काल विषम आवशे म्लेछराजा था
शे तेवारें ए प्रतिमा रही शकशे नहीं तेमाटे वज्रशिलामय बिंब ले. शेठें
पण ते वचन सत्य जाणीने वज्रशिलामय बिंब लीधुं अने देवीने पूछ्युं ए
बिंब वज्रमय घणुं जारी छे माटे केवीरीतें लइ जाउं? देवीयें कह्युं काचें सूत्रें
वींटी सूत्रनो छेहडो हाथमां जाली चाल्यो जा, पण पाछुं वली जोइश मां.
शेठ एमज लइ चाल्यो घणी जूमि उल्लंघी पण हाथमां लगार मात्र जार
जणायो नहीं तेथी संघवीयें जाण्युं प्रतिमा आवे छे के नथी आवती? ए
वी शंका आणी पाछुं वली जोयुं तो बिंब तिहांज स्थिर थइ रह्युं घणा
कारें उद्यम कस्यो पण बिलकुल हाले नहीं, तेवारें तिहांज प्रासादनी
ना करी; श्रीनेमिनाथजीनी प्रतिमानी पूजा करीने पछी पारणुं कर्युं, ..
संघें पण पूजा करी. एम तिहां घणा दिवस रही मनना मनोरथ पूर्ण
पछी संघवी श्रीशेत्रुंजयनी यात्रा करवा चाल्या.

अनुक्रमे श्रीशत्रुंजयें आव्या. यात्रा कीधी साधर्मिकवात्सल्य प्रमुख
कर्या. एवी रीतें घणा तीर्थोनी यात्रा करी क्षेमकुशलें काश्मीरदेशें नव
पाटणे पोताने घरे आव्या. राजायें नगर प्रवेशादिक महोत्सव कर्या.
ते शेठ, नवानवां जिनशासननां कार्य करी जिन . . . प्रजाव
एम यात्रादिक कार्य करी पण श्रीजिनशासननो प्रजाविक थाय, ए
संघवीने दृष्टांतें जनमनोरमण कार्य जे करे, ते प्रजाविक थाय ॥

इति तपागच्छालंकार जट्टारक श्रीहीरविजयसूरिश्वर क्रमात् ५८४
श्रीविजय देवसूरीश्वर विजयमानराज्ये महोपाध्याय श्रीशकलचंद्रगणि
ष्योपाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणिशिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिविरचिते श्रीस
म्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिकाबालावबोधे ५८४।
निरूपण नामा षष्ठोधिकारः समाप्तः ॥ ६ ॥

हवे समकेतनां पांच भूषणनुं सातमुं द्वार कहे छेः–

॥ समत्त भूसणाइं, कोसल्लं तिच्छ सेवणं भत्ती ॥ थिरया पभावणाविय, भावच्चं तेसि वुच्छामि ॥ ४० ॥ अर्थः–ए आगल कहेशे ते पांच (सम त्तभूसणाइं के०) समकेतनां भूषण कहीयें. जेम पुरुषने मुकुट, कुंमल, हार, अर्द्धहार, कटिसूत्र, मुद्रिकादिक भूषण छे तेणें करी पुरुष शोभायमा न देखाय छे तेम समकेत पण ए पांच भूषणें करी शोभायमान देखाय ते पांचे भूषणनां नाम कहे छे.

१ एक (कोसल्लं के०) कुशलपणुं एटले श्रीसमकेतना क्षायिक, क्षयोपश मादिक जे भेद कह्या छे तेना जाणवाने विषे दक्षपणुं होय. तथा बीजा पण दिनकृत्य, रात्रिकृत्य, पक्षकृत्य, चातुर्मासिककृत्य, संवत्सरकृत्य, जन्मकृ त्यादिकने विषे जे निपुणपणुं होय तेने कौशल्य कहीयें.

२ बीजुं (तिच्छसेवणं के०) तीर्थ जे जिनजन्मादिक कल्याणकनी भूमि तेनुं सेवन करवुं ॥ उक्तं च ॥ जम्म दिरका नाणं, तिच्छयराणं महाणुभावाणं ॥ जच्छयकिर निवाणं, आगाढं दंसणं होइ ॥ १ ॥ अथवा जंगम तीर्थ जे आचार्य, उपाध्याय, महानुभाव अणगार, तेमना विनय वेयावच्चादिकनुं करवुं ते तीर्थसेवन कहीयें.

३ त्रीजुं (भत्ती के०) भक्ति करवी ते जे समकेतधारी होय तेनो वि नय वेयावच्च श्लाघा करवी तेने भक्ति कहीयें तिहां देवगुरुनी भक्ति करवी.

४ चोथुं (थिरया के०) स्थिरता ते कोइ देव दानव आवीने चलावे तो पण चले नहीं मनमां विचारे के जेवारें तेवारें जीव मोक्ष फल जे पाम शे ते ए समकेतबीज पामशे, माटे एनी आस्था राखवी. यतः ॥ चारित्र याने भवेपि, गुणमाणिक्यपूरिते ॥ तरंत्येव महांभोधौ, सम्यक्त्वफलक ग्रहात् ॥१॥ ध्यानं दुःखनिधानमेव तपसः संतापमात्रं फलं, स्वाध्यायोपि हि वध्य एव कुधियां तेभिग्रहाः कुग्रहाः ॥ अश्लाघ्या खलुदान शीलतुल ना तीर्थादियात्रा वृथाः, सम्यक्त्वेन विनैवस्यादपिच यत्तत्सर्वमंतर्गडुः ॥ २ ॥ एवी समकेतने विषे श्रेणिकादिकनी पेरें स्थिरता राखवी.

पांचमुं (पभावणाविय के०) प्रभावना ते श्रीजिनशासननी उन्नति नुं करवुं मनमां ए प्रमाणे विचार राखवो के जेणे करी श्रीजिनशासननी दीप्ति थाय एवो प्रकार कह्यो छे, तेनीज शोधमां रहेवुं अने छतीसामर्थ्यें ते

णिक मरीने छठी नरकपृथ्वीयें गयो. तेने पाटें उदायी राजा राज्यें बेगे.

हवे उदायीराजाने पितानां दुःखने लीधे चंपानगरीमां रहेवुं सोहाय नहीं. तेथी प्रधानने कह्युं के कोइ रूडुं स्थानक जूउ. तिहां नगरवसावीने रहीयें.

मंत्रीश्वरें स्थानक जोतां जोतां गंगातटें अर्ग्निकासुत आचार्यनी करोडी पडी हती तिहां पाडलवृक्ष कग्यो वे तेनी पासें आव्या तिहां एक सूडो मुखवि कासी रह्यो वे तेना मुखमांहे सहेजें आवी जीवडा पडे वे तेनो सूडाने आहार थाय वे ए वृत्तांत देखीने प्रधाने विचार्युं जे इहां सूडाना मुखमांहे सहेजें प्रयासविना जीव आवी पडे वे तेहज सूडाने आहार थाय वे तेम ए जगायें नगर वसावीने वास करवाथी राजा अने प्रजा बेहुने सुखें प्रया सविना आजीविका चालशे. एवुं निर्धारी नगरस्थापनाने काजें सूत्र दीधुं. नगर वसाव्युं पाडलवृक्ष तिहां हतुं माटे पाडलीपुर नाम दीधुं. उदायी राजा तिहां आवी वश्यो ते उदायीयें घणीपृथ्वी जीतीने पोताने वश क री, गुरुसमीपें सम्यक्त्व मूलद्वादशव्रत उच्चार करी परमश्रावक थयो. चार पर्वना अहोरत्ता पोषध करे प्रतिदिवस देवपूजा करया पठी मुखमां पाणी घाले घरमां पोषधशालायें उनय संध्यायें पडिक्कमणुं करे. तेथी उदायीरा जा रुषि कहेवाणो उदायिराजर्षी एवुं नाम पडयुं, जिनशासननो परमभक्त थयो, जिनशासननी सर्वक्रियाने विषे निपुण थयो.

हवे उदायीराजायें युद्ध करीने कोणिक राजाने मार्यो तेहनुं सर्वस ली धुं तेनो पुत्र असमर्थथको उज्जयणीना राजानी चाकरी करवा लाग्यो. ते णे एकदा प्रस्तावें उज्जयणीना राजाने कह्युं जो तमे सहाय करी महारुं राज्य पाछुं अपावो तो हुं उदायीराजाने मारी आवुं, उज्जयणीना राजायें जाण्युं जे सहेजें माथाथकी वेरी जाय वे तो हवे बीजुं शुं जोइयें? एवुं विचारी तेने संबल आप्युं ते दुष्टात्मा तिहां आवी उदायीराजाने मारवा ना घणा उपाय करे वे, पण लाग पामतो नथी पठी उदायीना घरमां य तिउनो प्रवेश निर्गमन देखी विचार्युं जे एवो वेष धारण करवाथी महारुं कार्य थाशे तेवारें कपट वैराग्य देखाडी गुरुनी पासेंथी दीक्षा लीधी. पांच समिति त्रणगुप्ति शीखे, गुरुने खुशी करे, विनयवैय्यावच्च करी गुरुने वश करे, एम शोल वर्षसुधी कपट दीक्षा पाली, पण जातें अनव्य वे माटे करुणारसें रोम मात्र नेदाय नहीं. केवलराजाने मारवाने अर्थें चारित्रशुद्ध पाले वे.

एकदा आचार्य पाडलीपुर पधार्या छे. उदायीराजा पर्वदिवसने विषे प्रजातें उठी, प्रतिक्रमण करी श्रीमहावीरनी प्रतिमा पूजी, उपाश्रयें आवी, गुरुमुखें पोषध उच्चरी, १०४ स्थानक साचवतो,द्वादशावर्त वंदन देइ, व्याख्यान सांजली, चैत्यपरिपाटी करी, आपणा महोलने विषे पोषधशालायें जइ पुस्तक वांचनायें करी पोषध आराधे. संध्यायें प्रतिक्रमण कराववा गुरुने तेडुं मोकल्युं, गुरुयें साधुउने कह्युं कोण यतिपरवार्या छे जे महारी सायें आवे? तेवारें ते अजव्यसाधु उपधि लइने तैयार थयो कहे पधारो स्वामी! हुं आपनी सायें आवुं छुं. गुरु नइकजावें कपट अणजाणतो सायें तेडी गयो. तिहां रजोहरणें करी राजाने प्रतिक्रमण करावे, राजा प्रतिक्रमण करी, सयाय करी, पोरिसी जणावी, विधि संथारो पाथरी, संथराविधि जणी, चउसरण गणी, नवकरवाली गणी, धर्मजागरण करी, कुर्कुटनी पेरें पग पसारीने सूतो, क्रियाध्यायें थाक्या माटें उंघ आवी गइ तेमज गुरुने पण उंघ आवी गइ. तेवारें पहेलो अजव्य साधु कपटनिद्रा करी उठयो कंको लहनी पाली गुप्त राखी हती ते काढीने राजाना कंठमां मारी राजायें समरणसहित काल कीधो. अने पहेलो अजव्यसाधु शरीर बाधानुं मिषकरीने तेनुं कारण द्वारपालने समजावीने बाहेर नीकली गयो.

रुधिरप्रवाह गुरुने संथारे आव्यो. गुरु जाग्या अजवाली रात्रि हती माटे अजवाले जोयुं तो रुधिर वहेतुं दीतुं तेनुं मूल जोवा लाग्या तो राजाने गले पाली दीठी, पाछें जोयुं तो कुशिष्य देखातो नथी तेवारें गुरुयें विचार्युं जे ए कुशिष्यनुंज काम करेलुं छे. पछी गुरुयें विचार्युं जे प्रजातें जिनशासननो उड्डाह थाशे, माटें अमने पण एज श्रेयस्कर छे. एम निरधारी गुरुयें पण अणसण आराधना करी गले पाली जरावी काल कीधो. राजा तथा गुरु बेहु आराधक थइ स्वर्गे गया. प्रजातें कुशिष्यनो उड्डाह थयो. ते अजव्यने घणुए शोध्यो पण किहांय मल्यो नहीं. नासीने उड्डायणीयें जतो रह्यो. उड्डायणीना राजानी आगल सरूप कह्युं. राजायें तेने महा अधर्मी दुष्ट जैनशासननो उड्डाह कारक जाणी देशबाहिर काढी मूक्यो. जे माटे पापीने क्यांय जगा मले नहीं. अने धर्मीनी सर्वत्र जय छे ए सनत्कुमार कोशल्य नामें चूरणनी उपर उदायी राजानुं दृष्टांत कह्युं.

हवे गाथाना पाछला बे पदना अर्थे करी बीजुं तीर्थसेवा भूषण कहे
(तिछ के०) तीर्थ जे श्रीशत्रुंजय, उज्ज्यंतगिरि, अष्टापद प्रमुखनी
रंतर (सेवाय के०) सेवा ते (सयं के०) स्वयं पोतें करवी यात्रायें
तिहां केटलाएक दिवस रही पूजा करवी जो सामग्री होय तो अंतसम
जाणी पुत्रादिकने घरनो जार सोंपी पोतें निश्चिंत थइ संबल लेइ तीर्थे
सेवा करवी तथा (संविग्गजणेणसंसग्गी के०) संविग्नजन एटले संवेगी जन
सार्थे संसर्ग करवो. जेमाटें संवेगीनो संसर्ग करतां थकां पोताने संवेग
प्राप्ति थाय. तेथी वली बीजा घणा जीवोने ते संवेगी करे, जेम फूलस
सौगंधिक तो हतां ते तेलने सौगंधिक करे तेथकी मोघरेल चंपेलादि
तेल लगाडे थके पुरुषमां सुगंध थाय ए दृष्टांते जाणवुं ॥ यतः ॥ वस
गुरुकुले निच्चं, जो गवं उवहाणवं ॥ पियंकरे पियंवाइ, से सिरकं लद्धु म
हइ ॥ १ ॥ इति उत्तराध्ययने ॥ तथा ॥ एसोपुण संविग्गं, संविग्गं सेसय
ण जणयंतो ॥ कुग्गह विरहेण लद्धु, पावेइ मोरकं सया सोरकं ॥ १ ॥ इ
एकादशे साधुपंचाशके ॥

जेम श्रीगौतमस्वामी तथा केशीगणधर ए बेहु मले थके तेनो धर्मवा
सांजलीने घणा जीव संवेग पाम्या. तेमाटें सुविहित, शुद्धप्ररूपक, ज्ञान
तनी सार्थे गोष्टि करवी. पण मिथ्यादृष्टि तथा भ्रष्टाचारी कुमत्यादिकन
संसर्ग न करवो. केम के तेनुं ज्ञानपण नरकपातने अर्थे थाय ॥

हवे एने विषे नागदत्तनुं दृष्टांत कहीयें ठेयें. कुसुमपुर नगरने विषे ध
करी धनद समान एवा नागचंद्र नामा शेठ वसे ठे तेनी नागश्री नामें नाय
ठे, तेने घणा मनोरथें नागदत्त नामें पुत्र थयो. ते बालपणे पण प्रियध
दृढ धर्मी थयो. बालपणामां बार व्रत पालनार, तप करनार,उपधान व
नार देवजक्ति, गुरुजक्ति कारक नवतत्त्वज्ञाननो विज्ञानवंत थयो.

एकदा प्रस्तावें नागदत्त चैत्यपरिपाटी करतां कोइ एकने श्रीजिनजवन
विषे अपूर्व आजरण,अपूर्व फूल,श्रीखंम, केसर,कर्पूर, अगरु, धूप, अने
पश्रेणियें करी महोटे विस्तारें पूजा करतो देखीने चमत्कार पाम्यो. अ
मनोरथ करवा लाग्यो के एवी पूजा हुं पण करुं तो मने आनंद थाय.
यतः ॥ स्वर्गस्थितानामिहजीव लोके, चत्वारि चिन्हानि वसंति देहे ॥ दा
प्रसंगो मधुरा च वाणी, देवार्चनं सद्गुरुसेवनं च ॥ १ ॥

पछी ते वात पोताना पिता नागचंद्रशेठनी आगल करी, के हे पिताजी! आजे रूपनदत्तशेठनो पुत्र जिनदत्त नामें छे,ते प्रवहणथकी घणुं द्रव्य उपार्जी आव्यो छे. तेणे देवगृहमां अपूर्व पूजा करी छे. एवी पूजा आजपर्यंत में क्यांहिपण दीठी नथी तेमाटेएवी पूजा करवानो मुजने चाव छे,तेने नागचंद्रश्रेष्ठियें कह्युं,आपणी पासें पण द्रव्य घणुं छे माटे सुखें पूजानो मनोरथ पूर्ण करो. नागदत्तें कह्युं तमारा द्रव्यें हुं मनोरथ पूर्ण न करुं, हुं पण प्रवहण लेइ परदेशें जइ द्रव्य कमावी एवी पूजा करुं तो मनोरथपण पूर्ण थाय.

शेठें पुत्रनो हठ जाणी प्रवहणे चढवानी आज्ञा दीधी. तेणें पांचशो वाहाण करियाणांनां जयां.गाममां पडह वजडाव्यो के जेने प्रवहणें चडी देशांतरें जावुं होय ते सुखें आवजो. जे जेम कहेशे,तेम भाडावगेरेनो ठीक बंदोबस्त करी आपीशुं, माटें कोइ वातें सीदायवुं नहीं. एवुं सांजली घणां लोक तेनी सायें चालवाने तैय्यार थइ वाहणें बेठां. अनुक्रमें रूडे मुहूर्त्तें सर्व सामग्री करी पांचशें वाहण लइ चाल्यो. वाहणो वेगें चाल्यां जाय छे, एवामां अकस्मात् वादलां थयां मेह अंधारो तोफान लागवाथी वाहण उन्मार्गें पड्यां. जेम उन्मत्तशिष्य गुरुनी आज्ञाना वशथकी टलीजाय, तेम नाखवाना वशथकी वाहाण टली गयां. पर्वतोनी वचमां आवी गया. एवामां एक वाहाण बूड्युं ते वाहाणमांहेला मरीगयेला माणसोने पाणीमां तरतां लोकोयें दीठां, ते जोइ सर्व वहाणोनां लोक जयत्रांत थयां.

एवामां एक वाणीयो कंठगतप्राण थयो हतो, तेणें हाथनी संज्ञायें पाणी माग्युं, नागदत्तें तेने पाणी लावी पीवराव्युं. तेथी कांइक स्वस्थ थयो थको नागदत्तें पूछ्युं के,तुं कोण छो ? तेणे कह्युं हुं कोसंबी नगरीनो रहेवासी धनश्रेष्ठीनो पुत्र छुं. हुं एकशो वहाण लइने चाल्यो, ते पापने उदयें वायरे करी प्रेयाँ प्रवहण गिरिकुंभलने विषे पड्यां. इहां चारे बाजु पर्वत आवी गया, माटें वायरानो संचार न होवाथी वहाण ठामनां ठाम पडी रह्यां हाले चाले नहीं. अनुक्रमें जातुं पाणी खुटुं जूख तृषायें माणस सर्व मरण पाम्यां. हुं एक जीवतो रह्यो छुं. ए में महारुं वृत्तांत कह्युं. हवे तुं मुजने परलोकनो संबल आप. तेवारें तेने नागदत्तें ॥ पाणाइवायं मलियं,चोरिकं मेहुणं दविण मुछं ॥ कोह माणं मायं, लोनं पिज्जं तहा दोसं ॥ १ ॥ कलहं अप्नक्खाणं, पेसुन्नं रई अरइ समाउत्तं ॥ परपरिवायं माया मोसं मिछ

नसल्लं च ॥ २ ॥ वोसीरइत्ताइमाइ, मुक्क मागसंसग्ग विग्घनूयाइं ॥ डुग्गइ निवंधणाइं, अठारस पावठाणाइं ॥३॥ एगो हं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ ॥ एवं अदीणमणसो, अप्पाणं मणुसासइ ॥ ४ ॥ एगो मे सासउ अप्पा, नाणदंसणसंजुउ ॥ सेसा मे वाहिराजावा, सवे संजोग लरकणा ॥ ॥ ५ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डुरकपरंपरा ॥ तम्हा संजोग संवंधं,स वं तिविहेण वोसिरियं ॥ ६ ॥ अरिहंतो महदेवो,जावजीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ ७ ॥

ए प्रमाणें ते कुमरें संवल आप्युं तेने लइने शुनध्यानें परलोकें पहोतो. देवलोकें जइ उपनो. तिहां देवांगना साथें रमवा लागो. ए वृत्तांत सांजली सर्वलोक नयत्रांत थयां थकां नागदत्तने गालो देवा लाग्यां. कहेतां हवां के तें अमने आपदामां नाख्यां अमें इहां नूख तरषथी मरण पामशुं.

एवा समयें सिंहलद्वीपना राजायें एवी प्रतिज्ञा करेली ठे, के कोइ पण पुरुष आपदामां पड्यो होय, ते वात राजाना सांनलवामां आवे, तो तेनी आपदा टाल्या विना राजा जमतो नथी. ते पांचशें वहाण पर्वत कुंनलने विषे पडेलां देखी राजाना पुत्रें जइ पोताना पितानी आगल,ए वात कही. ते सांनली राजायें पडह वजडाव्यो के जे कोइ प्रवहणने इहां लइ आवे, तेने हुं लक्ष टका सुवर्णना आपुं. ते पडहने एक वृद्ध नाखवो ठव्यो तेणें राजानी पासेंथी लक्ष सुवर्ण लइ पोताना पुत्रने आप्यां. पोतें पुत्रपासेंथी विदायगिरि मागी एक लघु प्रवहण लइने समुइमांहे चालतो नागदत्तनी पासें आव्यो, तेने देखी नागदत्त हर्ष पाम्यो.

पठी ते वृद्ध नावडीउ वहाणने वाहेर काहाढवा माटें उपाय कहेवा लाग्यो जे आ पर्वतना शिखरने विषे एक महोटुं चैत्य ठे, तिहां महोटी नेरिका ठे ते शिखरनी उपर तमारामांथी कोइएक पुरुष चडीने ढक्का वजाडे, ते ढक्काना शब्दथी तिहां नारंम पंखी घणां ठे, ते उडशे तेनी पांखोना वायराने योगें सर्व वहाणो चालवा मांमशे. ते पाधरा इहांथी सिंहलद्वीप ढूकडो ठे, तिहां जाशो. तिहां गया पठी सर्वजनोने कल्याण ठे. परंतु जे एक जण ढक्का वजाडवा जाशे, तेनुं मरण थाशे. कारण के तिहां कांइ फल जल अन्न, मलशे नहीं. एटलुं वोलीने नावडीयो ठानो रही गयो.

पठी कुमरें सर्वजनोने पर्वतना शिखर उपर चडवा माटे पूठ्युं, पण

कोइ हा नणे नहीं. तेवारें कुमरें विचार्यु जे एक महारा मरणथी घणा लोक जीवता रहेशे, माटें हुंज जाउं. एवुं साहस आदरी पर्वतना शिखर ने विषे चढीने ढक्का वजडावी, तेना नाद थकी घणां नारंम पंखी उड्यां, तेनी पांखना वायराने योगें वहाण चालतां थयां ते सिंहलद्वीपें आव्यां. राजा हर्ष पाम्यो कोइ पासेंथी दाण पण लीधुं नहीं पण वहाणना मुख्य वेपारी नागदत्त न आव्याना खबर सांजलीने खेद पामतो बीजानी उपर अनाव करवा लाग्यो सर्वलोकोयें वसाणां वेची नवां करियाणां लइने वहाणो नर्यां. घणो लान लइने पोताना नगरने विषे आव्यां, नागचंद्र शेठ तेमनी साहामो आव्यो पण पुत्रने दीठो नहीं अने लोकोना मुखथी नागदत्तनुं वृत्तांत सांजली घणुंज दुःख पामतो देखी बीजा वाणीया कहेवा लाग्या के, हे शेठ! तहारा पुत्रें साहस अंगीकार करीने अमो सर्वने जीवता राख्या, अमें अमारे घरें कुशलें आवी पहोता, ते नाग दत्तना पसायथी समजजो. एवुं कही सर्वलोक दुःख धरे ठे.

एवामां आकाशमार्गे एक विमान आवतुं दीठुं, तेने सर्वलोक उंची न जर करी जोवा लाग्यां. थोडीशी वारमां विमान पण नूमियें उतरी आ व्युं, तेमांथी नागदत्तकुमर स्त्री सार्थे उतरी आवीने पिताने पगे लागो, तेने जोइ सर्वलोको चमत्कार पाम्यां. तिहां नागदत्त पोतानुं वृत्तांत कहे तो हवो, के हुं सत्त्व आदरी पर्वत शिखरें चढी ढक्का वजाडी तिहांथी पाठो उतरी नीचें श्रीरूषनदेवजीने देहरे जइने प्रतिमाने वांदी पूजी उप वास करी बेठो. केटलाएक दिवस वीत्या पठी तिहां आजरणालंकृत शरी रवालो दिव्यरूप धारण करनारो एवो एक पुरुष आव्यो,ते पण प्रतिमाने वांदी पूजी बाहिर आव्यो तेने में हाथ जोडी पूछ्युं सामी! तमें कोण ठो? तेणें कह्युं के हुं वैताढ्यपर्वतनो रहेवासी विद्युत्प्रजनामा विद्याधर छुं हमणां हुं नंदीश्वरद्वीपें देव वांदवा गयो हतो तिहांथी फरी आहीं देव वांदवा आव्यो. हुं इहां तुऊने देखी अवलोकनी विद्याने पूछ्युं,ए पुरुष कोण ठे? वि द्यायें तहारुं सर्ववृत्तांत कह्युं ताहारुं चरित्र सांजलीने हुं हर्ष पाम्यो. हुं म हारी पुत्रीनुं पाणिग्रहण करवा तमोने विनति करुं छुं. तथा वली तेनी सार्थे हुं तमोने आकाशगामिनी विद्या आपुं, ते पण ल्यो. एम कही ते विद्याधरें विद्याशक्तियें करी तिहां पोतानी पुत्री अणावी परणावी दीधी. विविधप्रका

रनां नोजन थणावी मुजने घणादिवसना उपवासनुं पारणुं कराव्युं. आ काशगामिनी विद्या आपी, महोटा पुरुष प्रसन्न थया तो शुं न करे?

पढी में कह्युं महारा माता पिता घणुं ःख करतां हशे, माटें महारे न गरें पहोचतो करो. तेवारें तेणें मुजने घणी ऋद्धिसहित विमान आपी इ हां पहोंचाड्यो. ते वात सांजली सर्वलोक हर्ष पाम्यां. महोत्सव सहि त कुमरने नगरप्रवेश कराव्यो.

हवे नागदत्तें विचार्युं जे जेहने अर्थे हुं देशांतर गयो हतो, तेना पसा यथी हुं घणी ऋद्धि पामीने कुशलें क्षेमें घेर आव्यो, तो हवे महोटा वि स्तारें श्रीजिनेश्वरनी पूजा करुं. एम चिंतवी जिनमंदिरमां नित्यप्रत्यें नव नवा विस्तारपूर्वक नवनवा प्रकारनी पूजा करे. तेथी घणा जीव बोधबी ज पामे. वली साधुजनने शुद्धमान अशन, पान, खादिम, स्वादिम, वस्त्र, पा त्रादिकने दानें करी लक्ष्मीने कृतार्थ करे. एम ढेहले समयें वैराग्य पामी सु स्थित आचार्यनी पासेंथी दीक्षा लइ उग्र तपश्चर्या करी अंतें अनशन आ राधि स्वर्गरूप श्रेष्ठपद पाम्या. ए तीर्थ सेवाने विषे नागदत्तशेठनी कथा कही.

हवे नक्तिनूषण तथा प्रनावनानूषणनुं दृष्टांत कहे ढे.

॥ नत्तिं आयर करणं, जहोचियं जिणवरिंद साहूणं ॥ थिरया दढ स म्मत्तं, पनावणुस्सप्पणा करणं ॥ ४२ ॥ अर्थः-(नत्तिं के०) नक्ति ते (आयरकरणं के०) आदरनुं करवुं, (जहोचियं के०) यथोचितपणे (जि णवरिंद के०) श्रीजिनवरेंड तथा तेमनी आज्ञायें युक्त एवा जे (साहूणं के०) साधुजनो तेमनी नक्ति एटले आदर करवो. हवे जिननक्ति केवी री तें होय ते? कहे ढे ॥ यतः ॥ तिन्निनिसिहि तिन्निउ, पयाहिणा तिन्नि चेव य पणामा ॥ तिविहा पूया य तहा, अवत्थ तिय नावणं चेव ॥ १ ॥ ति दिसि निरखण विरइ, पयनूमि पमक्षणं च तिक्खुत्तो ॥ वणाइ तियं मुद्दा, तियंच तिविहं च पणिहाणं ॥ २ ॥ इयदहतियं संजुत्तं, वंदणयं जो जिणाण तिकालं ॥ कुणइ नरो उवउत्तो, सो पावइ सासयं गणं ॥३॥ ए जिननक्ति. कही अने साधुनी नक्ति तो वली साधु आवता जाणी सन्मुखजावुं, मस्तकें अंजलि बंध करवो, आसन देवुं, वंदन पर्युपासनानुगमन करवुं, दश प्रकारनुं वैय्यावच्च करवुं, अन्न, पान, वस्त्र, पात्र, पीठ, फलकनुं देवुं, औषध नैषज्य पथ्यादिक सामग्रीना संप्रदान प्रमुख करवे करी साधुनी नक्ति थाय ॥ यतः ॥

क्तिर्जिनेंद्रस्य गुरोः सुसेवा, क्रियापरत्वं व्यवहारशुद्धिः ॥ जितेंद्रियत्वं सु
ताश्रयत्वं, धन्यस्य धर्मो हृदि वर्त्त तेऽसौ ॥ १ ॥

हवे एने विषे बाह्याभ्यंतररूप कामिनीनो दृष्टांत कहे छेः— राजगृह
गरें अमिततेज नामें राजा छे तिहां एक परिव्राजक रहे छे. ते विद्या
त्रें करी जे कांइ नगरने विषे सार वस्तु देखे, तथा स्त्रीरत्न देखे तेने चो
। लइ जाय. तेवारें समस्त पुरनां लोक एकठां मली राजानी आगल पो
ार करवा गयां. राजायें तेमने कह्युं के तमें सहु पोतपोताने घेर जइ नि
श्चिंत थइने सूइ रहो. हुं पांच दिवसमांहे ते चोर पकडीने जो शिक्षा न
रुं, तो अग्निमां प्रवेश करुं ! एवुं कही लोकोने विसर्जन कर्यां. पछी रा
जायें ते चोरनी शुद्धिने अर्थे पोतानां घणां माणसो मोकल्यां, पण चोर
हाथ लागो नहीं. एम चार दिवस वीती गया. पांचमे दिवसें राजा पोतें
हाथमां तरवार लइने चोरने शोधवा निकल्यो. तेणें संध्या समयें पहेला
परिव्राजकने तंबोलीनी दुकानें पाननां बीडां लेतो दीठो तिहांथी वली सरइ
वाने हाटें मोघरेल, चंबेली अने केवडानां तेल लेतो दीठो. राजायें विचार्युं
जे चोर तो एज जणाय छे. पछी राजा प्रछन्नवृत्तियें तेहनी पछवाडे लाग्यो.

ते परिव्राजक नगर बाहेर जइने एक जगायें शिला उघाडी भूमिगृह
मांहे पेठो. राजा पण तेनी पछवाडे उघाडी तरवार सहित गयो, तिहां
चोरीनी सर्व वस्तु दीठी, ते परिव्राजकें राजाने आव्यो देखी तेने मारवा
दोड्यो, राजायें लघुलाघवी कलायें ते परिव्राजकनी चोटली झाली वरा
थाणी शिर छेदी नाख्युं. पछी राजा ते रात्रियें तिहांज रह्यो, प्रभातें सर्व
नगरनां लोकोने तेडीने कह्युं के सहु कोइ पोतपोतानी चीज उलखी ल्यो.
तेवारें जेनी जेनी जे जे वस्तुउ हती, तथा स्त्रीयो हती ते सहुयें पोतपो
तानी लइ लीधी. तिहां राजानी कीर्त्ति विस्तार पामी.

हवे ते स्त्रीयोमांथी एक स्त्रीने ते परिव्राजकें कामण कीधां हतां, तेथी
ते पोताना पतिने वश थइ नहीं. पतिनी सार्थे बोले पण नहीं तेवारें तेना
धणीयें घणा मंत्र तंत्रना जाणने पूछयुं. एकें कह्युं के एने परिव्राजकें का
मण कीधां छे, माटें ए परिव्राजकना हाड दूधनां धोइने एने पीवरावो तो
एनां कामण उतरे, तेवारें परिव्राजक उपरथी राग उतरी जाशे, अने पो

ताना धणी उपर रागिणी थशे. पढी तेना पतियें तेमज कर्युं. तेथी तेनां कामण उतरी गयां, अने पोताना धणी उपर रागी थइ.

हवे एनो उपनय कहे बे. जेम ए स्त्री कामणने योगें ते परिव्राजकने मूकी अन्य कोइनी उपर अभिलाषा न करे, तेम जे सुश्रावक होय ते प ण निःकेवल श्रीजिनधर्मभावित बतो केवल श्रीजिनवर तथा सुसाधुनं उपर प्रेम राखे, परंतु अन्य कोइनी उपर नक्तिराग राखे नहीं. ए त्रीज़ नक्तिराग नामें समकेतनुं नूपण कह्युं.

हवे चोथुं स्थिरता नामें नूपण कहे बे. (थिरया के०) स्थिरता नि श्चलता तेने (दढसम्मत्तं के०) दढ समकेत कहीयें, जे माटे दढसम्य क्त्ववान् पुरुषने जो देव, दानव,चलाववा नगाववा आवे, तो पण ते च ले नहीं समकेतथकी खसे नहीं. अन्यदर्शननी अत्यंत पूजा प्रनावना थ ती देखे तो पण तेनो लेशमात्र रोमोत्कंप न थाय. समकेत विना बीजा सर्व अज्ञानमार्ग बे, एम माने, वायराथी जेम धूळी उडी जाय बे तेम ए अज्ञानी मिथ्यादृष्टियो संसारचक्रने विषे उडता फरशे एवुं माने ॥ यउ क्तं ॥ चत्तारि पुरिस जाया पन्नत्ता तं जहा ॥ एगेपिय धम्मे नो दढधम्मे. द ढधम्मे णाम एगे नोपिय धम्मे एगे पियधम्मेवि दढधम्मेवि. एगे पियधम्मे नो दढधम्मे ॥ इति ठाणांगसूत्रे ॥

हवे ए स्थिरता नूपण उपर सुलसानो दृष्टांत कहीयें बेयें, मगधदेशें राजगृहि नगरें प्रसेनजितराजा राज्य करे बे, तेनो नाग एवे नामें सारथिनी प्रियात्मा सुलसानामें स्त्री हती ते नागसारथिने पुत्र नथी तेनो डुःख ध रतो शोकातुर थको रहे. तेने सुलसा कहे के हे स्वामी ! तमें डुःख म करो. जे कर्ममां लख्युं हशे, ते थाशे, ते अन्यथा थनार नथी. एम करतां पण जो आपने स्थिरता न रहे, तो अन्यस्त्रीनुं पाणिग्रहण करो, के जेम तेथकी पुत्रप्राप्ति थाय, तो पण रूडुं बे. तेनें नागें कह्युं अन्यस्त्रीनुं पाणि ग्रहण तो हुं सर्वथा नहींज करुं परंतु अन्यदेव जे खेत्रपालादिक बे तेम नी मानता पूजा करिशुं. जे थकी आपणने पुत्र प्राप्ति थाशे.

सुलसायें कह्युं एक श्रीवीतरागदेवने पूजतां जे थाउ ते नलें थाउ, प ण सर्वथा अन्यदेवनुं आराधन तो हुं मन, वचन अने काया ए त्रणे योगें करुंज नहीं. हवे सुलसा एकाग्र मनें त्रिकाल देवपूजा करे, विशेष

थकी साधु नक्ति करे. एकदा प्रस्तावें इंद्रमहाराजें सनामां बेग. सुलसानी जिनधर्मने विषे स्थिरतासंबंधि प्रशंसा करी. ते एक मिथ्यादृष्टि अदेखा देवतायें सद्दही नहीं. पगी ते देव साधुनुं रूप करी सुलसाने घरे आव्यो. ध र्मलान दइ उनो रह्यो. ते साधुने आवता देखी सुलसा नक्ति रागें वनी थ इने वंदन कर्युं अने पूबयुं स्वामी! शे कामें पधाख्या गे? साधुयें कह्युं के ग्लान साधुना वेयावच्चने माटे लक्षपाक तेल जोइयें गेयें ते तह्मारे घेर ठे, एवुं सांनलीने लेवा आव्यो गुं. एवुं वचन साधुनुं सांनली हर्षे पा मती थकी घरमां जइ सुलसायें तेलनो घडो नरेलो आएयो पण देवप्रना वें ते हाथथी विबूटो थयो,तेथी घडो नांगी पड्यो. तेवारें बीजो घडो लइ आ ववा लागी, ते पण देवप्रनावें हाथमांथी बूटी नांगी पड्यो, एम सात घडा आएया ते साते नांगी पड्या, तो पण सुलसानो चित्तरूपी घट नांग्यो नहीं. घडा नांगी पड्या तेनुं लगार मात्र पण मनमां चिंतवण थयुं नहीं. जे आ अनागीयो कोण तेल लेवा आव्यो ठे, के जेना आववाथकी मह्यारा सा त घडा तेलना फूटी पड्या? एवी वातनी चिंतवणा लगार पण मनमां आ वी नहीं. परंतु उलटी एवी चिंतवणा करवा लागी जे धिक्कार ठे मुजने हुं अल्पपुण्यवान् बुं जेमाटे मह्यारुं तेल साधुने अर्थे काममां न आव्युं कारज साध्य न थयुं! एम पश्चात्ताप करवा लागी.

एवी रीतें सुलसानुं मन साधु नक्ति उपर अत्यंत रागी थयेलुं जोइने हार अर्द्धहारें मंमित पहेलो साधु देवरूपें थइ उनो रह्यो अने सुलसा प्रत्यें कहेवा लाग्यो के माग. माग. हुं तह्मारी उपर संतुष्ट मान थयो बुं.जे ह्वा देवसनामांहे इंद्रमहाराजें तह्मारा गुण वखाएया, तेथकी पण तह्मारा मां अधिक गुण ठे. एवुं देवतानुं बोलवुं सांनलीने सुलसायें कह्युं मह्यारे पुत्र नथी ते तमें प्रसन्न थाउ. जेम मह्यारे पुत्र थाय एवुं कहे उते देवता यें बत्रीश गोली आपी अने कह्युं जे एक गोली खावाथी एक पुत्र थशे ए म अनुक्रमें बत्रीश गोली खावाथी बत्रीश पुत्र थाशे. वली पण काम पडे, तेवारें मुजने संनारजे हुं आवीश. एम कही देवता अदृश्य थयो.

पाउलथी सुलसायें विचाखुं जे एकेक गोली खावाथी बत्रीश वखत सू वावड करवानां डुःख नोगववां पडशे माटें बत्रीशें गोलीने एकजवार आ रोगी जाउं के जेथकी एकज बत्रीश लक्षणो पुत्र थाय, तो बहु सारुं. जेमा

टे क्रमी सरखां घणां गोकरां थयां तो पण शुं? अने न थयां तो पण शुं! ॥ यतः ॥ एकेनापिहि पुत्रेण, सिंहः स्वपिति निर्भयं ॥ सदैव दशभिः पुत्रैर्जारं वहति गर्दजी ॥ १ ॥ एवुं विचारी बत्रीशे गोली एकठी साथे खाधी, तेने जोधे बत्रीश गर्ज एकग साथें रह्या. तेनो जार खमी शकायां नहीं. तेवारें देवताने संजाख्यो तेणें आवीने कह्युं के, हे सुलसा! आ तें शुं कर्युं? हवे तहारे बत्रीश पुत्र महाबलवान् थाशे. परंतु जेम बत्रीशेनो जन्म साथें एकज वखतें थाशे, तेम एमनुं मरण पण समकालें एकठुंज थाशे. ए जवितव्यता कोइ टाली शके नहीं, माटें हवे तहारे चिंता न करवी, तहारी गर्जसंबंधि वेदना हुं टालीश. एम कही ते देव वेदना टाली ने जतो रह्यो. पूर्ण मासें सुलसाने बत्रीश पुत्रनो जन्म थयो, नागसारथि हर्ष पाम्यो, तेणें जन्ममहोत्सव कर्यो, अनुक्रमें मह्योटा थया यौवन पाम्या, श्रेणिकराजाने ते बत्रीशे परमवल्लज थया. सदैव श्रेणिकनी पासें रहे.

हवे चेडामहाराजानी सुज्येष्ठा तथा चेलणा प्रमुख सात पुत्री बे ते मां सुज्येष्ठायें श्रेणिकनुं रूप सांजलीने पोतानी पासें गानो तेडाव्यो बे, ते वारें श्रेणिकराजा सुरंग खोदावी रथ तैयार करी, तेमां बेसी सुलसाना बत्रीश गोकराने साथें लइने सुरंगने रस्तेथी संकेत करेला स्थानकें आ व्यो. सुज्येष्ठाने चेलणा साथें घणो प्रेम बे माटें चेलणा आगल ते वा त कही, तेवारें चेलणायें कह्युं हुं पण तहारी साथें आवीश! बे जणी रथ उपर बेसी चालती थइ संकेतस्थानकें आवी सुज्येष्ठायें कह्युं महारां आजरणनो करंमियो वीसरी गयो बे, माटें रथनें आहीं राखजो, हुं लइ आवुं बुं. एम कही ते करंमीयो लेवा गइ, तेने विलंब थयो तेवारें सुल साना बत्रीश पुत्रें श्रेणिकने कह्युं महाराज! इहां वैरीनां स्थानकें आपण ने रहेवानुं काम नथी, जो चेडो महाराजा जाणशे, तो आपणने जीवता जावुं मुशकील थाशे. माटें रथ चलावीयें, तेवारें चेलणानो रथ आवतो जोइ तेने सुज्येष्ठा जाणी सुरंगना अंधारामां पोताना रथमां बेसाडी ली धी. अने श्रेणिकें रथ चलाव्यो. पाबल बत्रीश रखवाला रह्या, एवामां सु ज्येष्ठा आवी तेणें रथ दीगे नहीं, तेवारें मनमांहे चिंतव्युं जे महारा म नोरथ फल्या नहीं, माटें हुं पोकार करुं. एवुं विचारी पोकार कर्यो के चे लणाने श्रेणिक लइ जाय बे, ते सांजली चेडो महाराजा युद्ध करवा स

ऊ थयो. तेवारें तेनो वैरंगिक सुजट चड्यो तेणें सलंगमांहेथी जाता दीठा, तेथी बाण ताणीने मूक्युं, ते एके बाणे सुलसाना बत्रीशे पुत्र मरण पाम्या. श्रेणिक रथने आकरो चलावी आगल निकली गयो, अने वैरंगिक सुजट पण सुलसाना बत्रीश पुत्र मुवा पडया हता, तेथी सलंगमांहे आगल पहोंची शक्यो नहीं, पाठो वली गयो. श्रेणिकें राजगृहीमां आवी गंधर्वविवाहें चेलणाने परणी.

हवे नागसारथि अने सुलसा बेहु जण पोताना बत्रीश पुत्रोनुं मरण सांजली डुःख करवा लाग्यां, श्रेणिकें तेमने घेर जइ धीरज आपी समजाव्यां, शोक निवर्त्ताव्यो. पठी ते बेहु कर्मना कटुकविपाक जाणी विशेषथकी श्रीजिनधर्मने आराधता थयां.

एकदा श्रीमहावीरस्वामी चंपा नगरीयें समोसस्या ठे, तिहां अंबडपरिव्राजकवेषी श्रीवीरदेवनो परम श्रावक ठे, ते राजगृहि नगरें जावा लाग्यो, तेवारें जगवानने पूठतो हवो के स्वामी! हुं राजगृही नगरें जाउं ठुं. आपने कोइने कांइ संदेशो कहेवो ठे? जगवानें कह्युं सुलसा श्राविकाने अमारो धर्मलाज कहेजो. हवे अंबडपारिव्राजक वीरने वांदीने चाल्यो. विचार्युं जे सुलसामां श्यो गुण ठे के बीजा अनेक श्रावक श्राविकाने मूकीने नीरागी पुरुष सुलसानेज धर्मलाज कहेवरावे ठे? माटे कांइ विशेष गुण होवो जोइयें. हुं सुलसाना गुणनी परीक्षा करुं. एम चिंतवतो राजगृहीमां पाधरो सुलसाने घेर आव्यो अने कहेवा लाग्यो के मने जिक्षा आपो. हवे सुलसाने एवी प्रतिज्ञा ठे जे सुपात्र टाली अन्यदर्शनीने जिक्षा न आपवी, तेमाटें व्रतजंग थवाना जयथी तेने जिक्षा न आपी, अने ते पारिव्राजकनी सामुं पण जोयुं नहीं. तेवारें ते तेमज पाठो वली गामनी पूर्व दिशिनी पोलें चार जुजावालो हंसना वाहन उपर बेसी ब्रह्मानुं रूप लइने बेठो. पासें सावित्री बेठी ठे, राजगृही नगरीना लोक सर्व नमस्कार करवा गयां, पण सुलसा वांदवा आवी नहीं. बीजे दिवसें गामनी दक्षिणदिशिनी पोलें गरुडासन शंख, चक्र, गदादिक धारक कृष्णनुं रूप लइ बेठो, तेने जोवाने तथा नमस्कार करवाने सर्व लोक गयां, पण सुलसा गइ नहीं. त्रीजे दिवसें पश्चिमदिशिनी पोलें वृषजवाहन, शूलपाणि, कपालधर, जटाधारी, अर्धांगें पार्वतीसहित माहादेवनुं रूप लइ बेठो. तिहां प

ए सर्व लोक वांदवा आव्यां, पण सुलसा आवी नहीं. चोथे दिवसें उत्तर दिशिनी पोलें समवसरण प्राकार त्रय चामर अशोकवृक्षादिक ऋद्धियें करी विराजमान पच्चीशमो तीर्थंकर थइ बेठो. जैनलोको कहेवा लागां के पच्चीशमा तीर्थंकर समोसख्या ठे, चालो तेमने वांदवा जइयें, पण सुलसायें कह्युं पच्चीशमो तीर्थंकर होयज नहीं. एतो कोइ माया करी बेठो ठे. महारो देव तो चोवीशमो तीर्थंकर श्रीवीर विराजमान चंपानगरीयें समोसख्या ठे तेज ठे.

एवी सुलसानी परीक्षा जोइने अंबडें विचाखुं जे एवा गुण एमां ठे तो ज नगवंत नीरागी पुरुषें धर्मलान कहेवराव्यो ठे, माटें ते योग्यज ठे. पठी वैक्रियलब्धि विसर्जिने अंबड सुलसाने घेर आव्यो, अने कह्युं जे श्रीमहावीरें तुजने धर्मलान कह्यो ठे. एटलुं सांनलतां तेनी साहामुं जोयुं. हर्षित थइ वेसवाने आसन मूक्युं. कुशलादिक पूठवा लागी देरासरें देव जुहाख्या, परस्परें हर्षवार्त्ता करी अंबड पोताने स्थानकें गयो. एम स्थिरता नामा नूषणने विषे सुलसा श्राविकानी कथा कही.

हवे पांचमा प्रनावना नामा नूषणनुं स्वरूप कहे ठेः—(पन्नावणा करणं के०) श्रीजिनशासनोनुं जे ते प्रकारें करीने प्रोत्सर्प्पणा एटले प्रसिद्धि तुं करवुं तथा धारवुं तेने (पन्नावणा के०) प्रनावना कहीयें. साधुसाध्वीनी शक्तियें करी प्रनावना करे तथा श्रावक श्राविकानी शक्तियें करी प्रनावना करे. पण ठतीशक्ति गोपवे नहीं ॥ ४२ ॥

हवे ए प्रनावनानेविषे कालिकाचार्यनो दृष्टांत कहीयें ठेयें. नरतक्षेत्रे धारावास नामें नगर तिहां वैरिसिंह नामें राजा ठे, तेनी सुरसुंदरी नामें पटराणी ठे, तेमनो समस्त कला तथा रूपनो निधान एवो कालिक नामें पुत्र ठे, ते एकदा प्रस्तावें अश्वक्रीडायें निकल्यो, ते पण वसत सुधी अश्वक्रीडा करी विश्रांत थयो. उद्यानमांहे वेसवा माटें सारी ठांयडानी जगायें जाय ठे, एटलामां देशनामृतमेघं वर्षता एवा गुणसुंदर नामें आचार्यने दीठा, तेमने वंदना करीने कालकुमार पण देशनामृत पीवा बेठो. आचार्य पण योग्यजीव जाणी उपशम, संवेग, निरवद्यादिकनी करवा वाली धर्मदेशना आपता हवा. ते सांनली कुमर प्रतिबोध पाम्यो, तेवारें हाथ जोडीने आचार्यप्रत्यें विनववा लाग्यो के तमें इहां रहो. हुं माहरां माता पिताने समजावीने दीक्षा लइश. सूरियें कह्युं "जहासुखं देवाणुप्पिया महापडिबंध करे

ह्" पढी कुमर आचार्यने वांदी घेर गयो, मातापिताने समजाववा लागो पण ते समजे नहीं. अने दीक्षा लेवानी आज्ञा आपे नहीं, तेवारें कुमरें कह्युं मुजने नरक तिर्यंचनां दुःख तथा रोग शोक आवे तेना जामीन थइने घरमां राखो अने कहो के ए दुःखने तहारी पासें अमें आववा नहीं देशुं ? एवी जामीनगरी लखी आपो.

माता पितायें कह्युं ए वातोनो कोइ जामीन थायज नहीं, कुमरें कह्युं श्रीगुणसुंदर आचार्य जामीन थाय ठे, अने कहे ठे के हुं कहुं ते प्रमाणे कर, तो नरकादिकनां दुःख तथा रोगशोकादिक क्यारें पण न आवे, तेमाटे हुं तेमनी पासें जाइश, अने जो तमें जामीन थइ राखो, तो हुं तमारी पासेंज रहुं. एम महत्कष्टें मात पिताने समजावी महामहोत्सवपूर्वक पांचशें राजपुत्रसहित गुरु समीपें आवीने दीक्षा लीधी. अनुक्रमें प्रज्ञा वलें करी सकल आगमशास्त्रना पारंगामी थया. योग्य जाणी गुरुयें आचार्यपद दीधुं.

अनुक्रमें विहार करतां धारावास नगरें आव्या, तेमने समस्त स्वजनवर्गे वांदवा आव्यो. गुरुयें धर्मदेशना दीधी, पोतानी न्हानी बेहेन सरस्वती नामें हती. तेने प्रतिबोधीने दीक्षा दीधी, अनुक्रमें विहार करतां पांचशें साधुयें परिवस्या थका नवितव्यताने योगें उज्जणीनगरीयें आव्या. उद्यानने विषे उतस्या, नगरनां लोक सर्व वांदवा आव्यां. गुरुयें धर्मदेशना दीधी. सर्व लोक देशना सांजली गुरुने वांदी पोतपोताने घेर गयां.

एकदा प्रस्तावें सरस्वती साध्वी गुरुने वांदवामाटे उपासरे आवे ठे, ते वामां गर्दजिल्लराजानी सवारी निकली, ते राजानी दृष्टि सरस्वती साध्वी उपर पडी अत्यंत सुंदर रूप देखी कामनूतें ग्रस्यो थको सुनटने हाथे साध्वीने पकडी पोताना अंतःपुरमां रखावी तिहां जेम सींचाणे ग्रहण करेली चीडी पुकार करे, तेम सरस्वती साध्वी पोकार करवा लागी. घणा विलाप करती हवी. अनुक्रमें ते वात आचार्यें सांजली, तेवारें गर्दजिल्लराजानी पासें जइ न्यायरीतें समजाव्यो राजरीतें, धर्मरीतें समजाव्यो. एम अनेक प्रकारें समजाव्यो तो पण जेम सन्निपातग्रस्त रोगीने कोइ औषध लागे नहीं, तेम राजाने उपदेश लाग्यो नहीं. गर्दजिल्ल ते खरेखरो गर्दजल थयो. जेमाटे पशुजातिमां पण सर्व पशुजातिने शिक्षा लागे, पण एक गधेडाने शिक्षा लागे नहीं. तेम ए राजाने पण शिखामण लागी नहीं. तेवारें गुरु पाछा वली

आव्या. श्रीसंघने सर्व वात कही. सर्व संघ मलीने ते राजाने समजाव गयो, पण राजा महेलथी बाहिर निकल्योज नहीं. तो पछी कोनी आग जइ विनति करे! सर्व प्रधानो मली समजाववा गया, तेवारें तेने कह्यं तमें जाउ तमारा मात पिताने उपदेश आपो. मुजने तमारो उपदेश ला नहीं. तेवारें श्रीसंघनी समक्ष गुरुयें प्रतिज्ञा करी ॥ यतः ॥ जे संघप णीया, पवयण उववायगा नरा जेहा ॥ संघें उववाय करा, तंडुवेका रिणोजेय ॥ १ ॥ तेसि वच्चामिगइ, जई एयं गद्दनिल्ल रायमहं ॥ उम्मूले णसहसा, रक्काउ नठ मक्कायं ॥२॥ जे माटे आगममांहे कह्युं छे ॥ यतः साहूण चेइयाणय, पडिणियंतह अवन्नवायेव ॥ जिण पवयणस हियं, सव्वथामे ण वारेइ ॥ ३ ॥

एम संघ समक्ष प्रतिज्ञा करीने पछी घेलानी पेठें नगरमांहे नमतां रे, अने कहेता जाय के ए गर्दनिल्ल राजा ते महारी आगल शा हिसावम डुं एनो राज्यछेद करी महारी बहेनने पाछी लइश. एम बोलतां चहु मांहे फरया करे, लोक सर्व गर्दनिल्लराजाने वगोवे, अने कहे के राजा न्याय करे छे, एनुं राज्य हवे रहेशे नहीं. ए राजा माहादुष्ट छे, साध्वीन शीलनो खंमनार थयो, माटें हवे कांइ ए राजा राज्य उपर रही शकशे नहीं जे साध्वीना विरहथी कालिकाचार्य जेवा पण घेला थया. माटे ए महापापि राजा छे, महोटां पाप करे छे. इत्यादिक लोको परस्पर वातो करे, ते पण राजा सांजले, तो पण ते वात मनमां आणे नहीं.

हवे कालिकाचार्य राजाने समजाववो सर्वथा असाध्य जाणीने गच्छनो नार गीतार्थने जलावी तिहांथी चाल्या ते अनुक्रमें जतां जतां शाककूलने विषे गया. तिहां प्रथम सांइना प्रधानने मल्या, तेनी साथें वार्तांविनो करी सल्लाहसंप कीधो, ते प्रधाने पोताना सांइसाथें आचार्यनो मेलाप करा व्यो. पछी प्रतिदिन सांइनी पासें जाय मंत्रतंत्रादिकें तेने वस कर्यो.

एकदा प्रस्तावें आचार्य सांइनी साथें गोष्ठि करे ले, एवामां पडिहारे आवी सांइने विनव्यो, के हे स्वामी! आपणा साहनो जे सांइ तेनो दूत आव्यो छे. सांइयें कह्युं इहां तेडी लावो. तेवारें द्वारपाल तेने तेडी लाव्यो. आवी प्रणाम करीने सांइ पासें उनो रह्यो, अने कहेवा लाग्यो के साह ना साइयें बहुसांइने जेटणुं मोकल्युं छे, एवुं कहीने छुरीनुं जेटणुं सांइनी

आगल मूक्युं. ते नेटणुं देखी वर्षाकालें जेम आकाश श्याम थइ जाय, ते म ते सांइनुं श्यामवदन थयुं. आचार्यें पूछ्युं रूपे थवो जोइयें, ते स्थानकें विषाद श्यो ? तेवारें ते सांइयें कह्युं के अमारा प्रभु सांइ जेनी उपर रुसे, तेने तेनी नामांकित छूरी मोकले. तेमाटे शुं जाणुं जे शे कारणें महारी उपरें कोप करीने छुरी मोकली छे ? हवे तेनी आज्ञा उलंघीयें तो स मस्त कुटुंब परिवार सहित अमने मारी नाखे, तेमाटे गले छुरी लीधी जोइयें. कारण के अमारो स्वामी उग्रदंभ छे. आचार्यें पूछ्युं के, एकला त मारा उपरज रुष्ट थयो छे, किंवा बीजा घणा उपर रूठो छे ? तेवारें सांइ यें कह्युं महारी छुरीनी उपर छन्नुमो आंक छे तेमाटे बीजा पंचाणुं सां इ उपरें छुरी आवी छे. ते पंचाणुं सांइ सर्व गले छुरी लेशे अने छन्नुमो हुं पण गले छुरी लइश.

तेने गुरुयें कह्युं मरवामांहे नली वार नथी, जो जीवता रहेशो, तो सें कडा गमे कल्याण देखशो. तेमाटे तमें सर्व पंचाणुए सांइने दूत मोक लीने तेडावो तो हुं तमो सुधां छन्नुं सांइने हिंदुस्थानमां तेडी जाउं, अने तमोने राज्य अपावुं. एवुं आचार्यनुं वचन सांभली पंचाणुं सांइने दूत मो कली तेडावी लीधा, ते पण सर्वने आचार्यें समजाव्या. सर्वे छन्नु एकमते थया. पछी शाहाना सांइना दूत विसर्जीने समस्त कुटुंबपरिवार सार्थे लइ गुरुने आगल करी यानपात्र मंगावी सिंधुनदी उतर्या. सिंधुदेशमांहे थइ सोरठदेशें आव्या. तिहां सोरठना राजाने वश करी सोरठ लीधी. एवामां वर्षा काल आव्यो, तेवारें छन्नुं जणे मली छन्नुभागें सोरठ वेहेंची लीधो. जू दा जूदा परगणामां रह्या सुखीया थया तिहां सुखमां वर्षाकाल व्यतिक्र म्यो अनुक्रमें शरत्काल आव्यो, धान्य नीपनां, मार्ग चोखा थया.

तेवारें कालिकाचार्यें कह्युं हुं तमोने ए देश अपाववा सारु तेडी नथी आव्यो, परंतु माहारी साथें चालो हुं तमने मालवदेश जे सर्वदेशोनुं मंड न छे. जिहां घणा गोल, गहूं, शाली, अफिम प्रमुख उपजे छे, ते देश त मोने लइ आपुं. तेवारे सांइयो बोल्या के, जो द्रव्यनो खजानो होय तो कटकाइ थाय. ते खजानो खूटो छे तमारा माटे देश लूंटी शकता नथी इ हां सोरठमां तो अमें जोजन मात्र पामीयें छेयें, पण खजानो थतो नथी अने खजानाविना कटकाइ पण थाय नहीं. आचार्यें ते वात मान्य

करीने एक कुंनारनो इंटवाह वेचातो लइ तेमां एक चपटीमात्र चूर्ण प्रक्षेप कर्यु. तेथी ते आखो इंटवाह सोनानो थइ गयो, अने कह्युं के सुवर्णनो इंटवाह वेहेंची ल्यो. ते सघळुं साइयें वेहेंची लीधो. गुरुनी कळा देखी हर्ष पामीने सर्व लश्करनी तैयारी करी चालता थया. ते अनुक्रमें लाटदेशने विषे आव्या. तिहां नृगुकच्छें बलमित्र नानुमित्रराजाने सायें लइ अनुक्रमें मालवानी गडासंधी लगें आव्या, तेवारें गर्दनिल्लें सांजळ्युं जे कटक लइने कालिकाचार्य आवे ठे. तेवारें पोतें पण सज्ज थइ लश्कर लइने साहामो लडवा चाली आव्यो, परस्पर युद्ध थयुं. गर्दनिल्ल हार्यो थको अवंतीना कोटमां पेसी पोळ देइने मांहे वेसी रह्यो. कटकें आवीने चारे बाजुयें कोट वींटी लीधो. कोटनी मांहे धान्य पाणि चारो प्रमुख जइ शके नहीं प्रतिदिवस युद्ध थाय.

एकदा सांजनुं कटक चडयुं पण मांहे कोट शून्य दीठो, कोइ साहामो लडवा चडी आव्यो नहीं, तेवारें आचार्यने सांध्योयें पूठ्युं के कोट सूनो देखाय ठे, अने गर्दनिल्ल गर्द्दन्न देखातो नथी, तेनुं शुं कारण हशे? तेवारें गुरुयें कह्युं आज आठमनो दिवस ठे तेथी ए गर्दनी विद्या साधे ठे, माटे तमें जूर्ज कोटनी अटाली ऊपर गर्दनी हशे. पठी तेणें उंचा चडी जोयुं तो गर्दनी दीठी, गुरुने कह्युं स्वामी गर्दनी देखाय ठे? तेवारें गुरुयें कह्युं ए गर्दनी विद्या साधीने ए गर्दनी मूकशे तेनो शब्द जे कोइ द्विपद अथवा चतुष्पद जीवो सांजळशे, ते सर्व लोही वमता नूमियें पडशे. तेमाटे आपणां द्विपद तथा चतुष्पद सर्व कटक जे होय, ते इहांथी उतरीने गर्दनीनां शब्द कानें न पडे, एटला दूर जइ वेशो जेम ए गर्दनीनो शब्द आपणे सांजळीयें नहीं. एवुं आचार्य कहे ठते सर्व कटक बे गाउ दूर जतां रह्यां.

वळी आचार्यें कह्युं के एकशो आठ धनुर्धर शब्दवेधी होय ते महारी सायें आवो. पठी तेमांथी १०८ शब्दवेधी अचूकबाणलक्ष वेधी एवा सुनट शोधी तेने पोतानी सायें लइ गुरु पण बाण लइ कोट समीपें गया अने सर्व १०८ ने कह्युं, के जेवारें ए गर्दनी चूंकवा माटें मुख पसारे.एटले समकाळें एकसाथेंज बाण मूकजो. ए गधेडीनुं मुख बाणोथी नरी मूकजो के जेम ए बोली शके नहीं, तेम करजो जो चूकशो तो एनो शब्द सांनळतांज तमारुं मरण ठे, एम निश्चय जाणजो. तेमाटे घणी खबरदारीथी

सावधान रहेजो, रखे चूकी जाउ. गुरुयें एवुं कहे थके जेवुं गधेडीयें चूक वामाटें मुख पसार्युं, तेवांज एकसो ने आठ बाण समकालें छूट्यां तेथी ते गधेडीनुं महोढुं नराइ गयुं. चूंकी शकी नहीं. तेवारें ते गर्दभी विद्या, गर्द भिल्लराजाना मुखमां मूत्र तथा लींडां करी लात मारी जती रही, गुरुयें कह्युं ए राजानुं बल एटलुंज हतुं ते गयुं. हवे सर्व जण सामटा एकठा थइ नगरना कोटने नेड्यो, गुरु आगल थइ कटक लइने कोट नेड्यो,गुरुयें कह्युं लूंटशो मां. कोइने मारशो मां. निःकेवल गर्दभिल्लने जीवतो पकडजो. एवुं कही वडासाहनी आण वर्त्तावी गर्दभिल्लने जीवतो गुरुनी आगल मूक्यो. के आ तमारो वेरी छे, माटे तमारुं मन माने ते करो.

गुरुयें कह्युं अरे पापिष्ट ! अरे निर्लज्ज ! अरे दुष्ट ! अरे अकार्य कारक! हवे साध्वीनुं शीलभंग कर्युं, तेनुं फल तुं पाम. एम कही वली करुणा आणीने कह्युं तें अमारुं वचन न मान्युं, तथा संघनुं वचन न मान्युं, सा ध्वीना शीलनुं खंडन कीधुं तेमाटें नरक तिर्यंच गतिने विषे अनंत संसार भमीश ॥ यतः॥ जो अवगणइ संघं, पावोसोवपि माणमयलित्तो ॥ सो अ प्पाणं बोलइं, डुक्कमहासागरे भीमे ॥ १ ॥ सिरिसमणसंघ यसा, यणाए पा वंति जं डुक्कं जीवा ॥ तं साहिउं समछो, जइ परजयवंति णो होइ ॥२॥ ते माटें ए पाप आलोइ प्रायश्चित्त कर, तो छूटीश, एवुं कहे थके जेम सन्निपा तियाने डुग्धादिकनुं पान करवाथी विष व्यापे, तेम ते राजाने ए शीखाम ण वचन रुच्यां नहीं, तेवारें जैनयतिनी एवी मर्यादा छे के वेरीने पण मा रवो नहीं. एवुं विचारी करुणा आणी तेने मूकी दीधो अने कह्युं के तहारे हवे आ देशमां रहेवुं नहीं. एम कही विसर्जन कर्यो. ते गर्दभिल्ल राज्य भ्रष्ट थयो थको इहलोकने विषे घणां डुःख पामी काल करीने नरक निगो दादिकनी गतिने विषे अनंता काल पर्यंत अनंता भव भमशे.

हवे गुरुयें जे सांइने प्रथम जइ मल्या हता, ते सांइने अवंतीनुं राज्य आप्युं अने बीजा पंचाणुं सांइने सामंत पणे तेनी चाकरीमां राख्या, प ण ते सर्वगुरुनी आज्ञा मानवा लाग्या. पछी ते शाककुलमांथी आव्या मा टें शाक वंश कहेवाणो. सरस्वती साध्वीने पाछुं मूलथकी चारित्र थापीने शुद्ध कर्युं. पोतें पण आलोइ पडिक्कमीने पाछा गछमांहे आव्या. हवे सर स्वती साधवी तथा आचार्य सुखें चारित्र पालवा लाग्या, जिनशासननी उ

न्नति करवाथी समस्त देशनो तथा नगरनो संघ सर्व हर्ष पाम्यो. जेम कोइनुं निधान गयुं होय, तेने कोइ पाछुं वाली आपे, ते जेम हर्ष पामे, तेम सरस्वती साध्वी पोतानुं गयेलुं शील तथा गयेलुं चारित्र पामी हर्ष पामी.

हवे नृगुकछने विषे श्रीकालिकाचार्यना नाणेज बलनानु कुमार राज्य करे छे. ते आचार्यनी नगिनी नानुश्रीना पुत्र छे, ते बलमित्र नानु गुरुने तेडवाने अर्थे मतिसागर नामा प्रधानने मोकल्यो, तेणें आवी कह्युं के स्वामी! तमारा नाणेजें तमोने घणी विनति करी कहेवराव्युं छे, के एक वार श्रीनरुचें चैत्य जुहारवाने पधारो जेम अमारी उत्कंठा पूर्ण थाय. ते सांनली घणे कष्टें शाकराजाने समजावी गुरु नरुचें पधार्या. जे घणा महोत्सवे पेसारो कराव्यो. स्वजनवर्गने हर्ष ऊपनो. गुरु प्रतिदिवस धर्मदेशना दीये, ते देशना सांनली बलनानु कुमार प्रतिबोध पाम्यो. कह्युं मुजने दीक्षा आपो, गुरुयें समस्त स्वजनवर्गने समजावी दीक्षा दीधी.

हवे गुरुनी देशना सर्वजनोने मीठी लागे, पण एक राजाना पुरोहित ने कडवी लागे, जेम सूर्य उग्यो ते सर्व कोइने रुचे, पण एक घूडने न रुचे नहीं, ए दृष्टांतें जाणी लेवुं.

ते पुरोहित गुरुनी संघाते वांकुं बोले, तेम तेने 'वांकुं लाकड वांकुं वहे' ए न्याय खाणो जाणीने गुरुपण प्रश्न प्रमुख करे वलतुं ते बोली न शके एवो करी मूके.

हवे ते पुरोहित मनमां प्रद्वेष वहेतो थको राजाप्रत्यें कहे के हे स्वामी! ए महातपस्वी यति माहाशीलवंत सत्यवंत छे, पण ए यतिना पग आक्रमे माहा प्रायश्चित्त लागे, तेमाटें जे वाटें ए जाय तेवाटें तमारे जावुं युक्त नथी. राजा पण डुब्बलकरणा थाय माटे जेम कोइ कहे तेम तेने कान ने लागे, परंतु तत्त्वातत्त्व विचारे नहीं ॥ यतः ॥ बलीनरिंद चित्तं, वक्खा एं पाणियं च महिलाउं ॥ तज्जय वच्चंति सया, जच्चय धुत्तेहि निज्जंति ॥ १ ॥ राजायें पुरोहितने पूछयुं एना पदनुं आक्रमण केम टले? पुरोहितें कह्युं अनेषणा करावीयें, तो टले.

राजा पुरोहितने वचनें कामख्यो थको जाणे पुरोहितें कामण कीधां होय नहिं एवो थको कहेतो हवो के हे पुरोहित! तुं जाणे तेम कर. जेम ए गुरु जता रहे ते उपाय कर, इहां दूध मांजारने नलाव्युं, ते दृष्टांत आवी मल्युं. पछी ते पुरोहित लोकोने उपदेश दीये जे गुरुने आधाकर्मी

आहार आपीयें. तो आपणने आप्यानुं फलज होय, पण ए वातमां पाप नथी, तेवारें लोक पण जड्क ते आधाकर्मी जेली जेली वस्तु गुरुने वहो रावे. यति जिहां जिहां वहोरवा जाय, तिहां सर्वत्र अनेषणीय आहार दे खे, ते आवी गुरुने कहे, तेवारें गुरुयें पण राजारूपी दूध ते पुरोहितरूपी आठणने योगें विनष्ट थयुं जाणुं, तेमाटे हवे इहां रहेवानो लाग नथी ॥ यतः ॥ असिवे जणोयरिए, रायासप्पेनएय गेलन्ने ॥ एएहिं कारणेहिं, अ पत्ते होइ निग्गमणं ॥ १ ॥ एवुं विचारी गुरु पजोसण कस्या विनाज चालता थया. उपव्या जगवंतने न गणे चोमासुं, ए उखाणो साचव्यो. अनुक्रमें चालतां चालतां मरहट्ठदेशें पइठाणपुरना संघने आगलथी जणाव्युं, के अ मो आवीयें ठैयें. जिहां सुधी अमें आवीयें नहीं तिहां सुधी तमें पजोस ण करशो मां. अमो आव्या पठी पजोसण करशुं. हवे तिहां परमश्रावक शालिवाहन राजा ठे ते गुरुनुं आगमन सांजली हर्ष पाम्यो थको, श्रीसं घनी साथें घणे आमंबरें साहामो आव्यो, घणे विस्तारें नगरप्रवेश महो त्सव कीधो. शालिवाहन राजा प्रमुख प्रतिदिन धर्मदेशना सांजले. घणा ध र्ममहोत्सव थाय. अनुक्रमें पजोसणपर्व नजीक आव्यां. गुरुयें राजाप्रत्यें कह्युं जादरवा शुदि पंचमीने दिवसें पजोसण ठे. राजायें कह्युं तेहीज दिवसें इंड्महोत्सव ठे माटे लोकानुवृत्ति ते दिवस साचव्वो जोश्यें. तेमाटे पजो सणनां कर्तव्य जे पूजा स्नात्रादिक ठे, ते सचवाय नहीं. तेथी प्रसाद क रीने ठठ्ठने दिवसें पजोसण करो के, जेम पजोसणनां कर्तव्य सर्व सुखें स चवाय. गुरु कहे ॥ अविचलइ मेरुचूला, सूरो वा उग्गमिज्ज अवराए ॥ न यपंचमीइ रयणी, पज्जूसवणा अइक्कमई ॥ १ ॥ जहाणं जगवंमहावीरे वासाणं वासइ राएमासेविइक्कंते वासावासं पज्जोसवेइ तहाणं गणहराविं, जहाणं ग णहरा तहाणं गणहरसीसा, जहाणंगणहरसीसा तहाणं अम्मगुरुणो,जहाणं अम्मगुरुणो तहाणं अम्मेवि वासावासं पज्जोसवेमो तं रयणि णोअइक्कमिज्जा ॥
एवुंसांजली राजायें कह्युं चोथें पजोसण करो,तेवारें सूरि कहे एमज हो. चोथें पजोसण करतां दोष नथी “ अंतराविअसेकप्पइ णोनं रयणिं उवा यणाविं तए ” ए श्रीकल्पसूत्रना अक्षरने मेले चोथें पजोसण करतां दो ष नथी,ते वचन सांजली राजा प्रमुख सकलसंघ हर्ष पाम्यो. राजायें ज इ अंतःपुरमांहे वात कही. अंतःपुरी हर्ष पामती कहेवा लागी जलुं थयुं जे

अमावास्यायें तो उपवास छे, तेने पारणे साधु अठम तपनुं उत्तर पारणुं करशे तेने प्रतिलाजना करी पछी पारणुं करीशुं. तेथी महोटो लाजथाशे ॥यतः॥ पहुसंतगिलाणेसु, आगमगाहीसु तह्य कयलोए ॥ उत्तर पारणगंमि य, दिन्नंसु बहु फलं होइ ॥ १ ॥

पछी ते लोक हर्ष पाम्यां थकां साधुनक्ति विशेष करे मरहट्ठदेशें ते दिवसें साधुनी पूजानो महोत्सव प्रवर्त्त्यो. ए कारणें श्रीकालिकाचार्यें चोथें पजोसण आण्युं, ते सर्वसंघेंमान्युं ॥ यतः ॥ असढाइण न वङ्कं,गीयत्थ वारियंति मयच ॥ आयरणविहु आणंति, वयणउ सुबहुमणंति ॥ १ ॥ तेवारें ते समयें जेटला सुविहित आचार्य हता, तेणें कालिकाचार्यनुं वचन प्रमाण कीधुं. जेमाटें जेणे सुविहिताचार्यनुं वचन न मान्युं तेणें तीर्थंकरनुं वचन पण न मान्युं, अने जेणें तीर्थंकरनुं वचन न मान्युं तेणे सुविहित आचार्यनुं वचन पण न मान्युं एम परस्पर संबंध जाणवो.

तथा चोथ प्रमाण करवाने अर्थे चोमासा त्रण पण चौदशें कीधां अन्यथा चोमासा त्रण पूनमें हतां. एम कालिकाचार्यनुं वचन सघला गछवासी आचार्यें मान्युं, पछी घणाकालांतरे एटले संवत् ११५९ वर्षे पूनमीयो मत प्रगट थयो. तेमांथी वली संवत् १२०४ना वर्षे आंचलीयो मत प्रगट थयो, पण कालिकाचार्यना वखत मांहेला कोइ पांचमीया देखाता नथी ते माटे जाणीयें छैयें जे चोथनुं पजोसण ते शुद्ध छे अने पंचमीयें करे ते मिथ्यावाद छे. एम उत्तममतिना धणीयें विचारवुं. तथा अधिक मास आवे श्रावण महिने पजोसण करे छे, ते पण घटमान नथी जेमाटे पजोसण जादरवा शुक्लपक्ष प्रतिबंध छे माटे श्रावणनां पजोसण करवां ते पण एक मत वादज कहेवाय, पण गुरुपरंपरा न कहेवाय. ए पण विचारजो.

हवे कालिकाचार्य अनुक्रमें विहार करता कर्मयोगें तेमना सघला शिष्य दुर्विनीत थया, कोइ आज्ञा माने नहीं, अने शास्त्रमां तो आज्ञा तेज प्रमाण छे ॥ यतः ॥ छठ्ठम दसम डुवालसेहिं मासद्ध मासखमणेहिं ॥ अकरितो गुरुवयणं, अणंत संसारिउ होइ ॥ १ ॥ गुरुआणा नंगाउ, रणे कठ तवंपि काऊणं ॥ तहविहु पत्तो नरयं, सो कुलअवाल्हुव साहू ॥२॥ गुरुआणाअइक्कमणे, आयाविंत्तो करेइ वित्तं ॥ तहवि न पावइ मोक्खं, पुत्तवे दोवई चेव ॥

हवे आचार्य शिखामण आपे,तेवारें शिष्य उलंठ वचन बोले ते सांजली

गुरु विचारे ॥ यतः ॥ तारिसा मम सीताउ, जारिसा गलिगदहा ॥ गलिग इहे चइत्ताणं, दढं गिण्हइ संजमं ॥ १ ॥ तह्मा छंदेण आगाउ, चिठ्ठए इ अ छंदेण॥छंदेअ वठ्ठमाणोवि, सिसे छंदेण मुत्तवे ॥ २ ॥ हुं एमने छोडी जाउं तो महारुं चारित्र सुखें पले अने ए शिष्यनी शुद्धि पण ठेकाणे आवी जाय. एवुं चिंतवी ते परमार्थ शय्यातर श्रावकने कही वली एवुं कह्युं के,अमे अमारा शिष्यना शिष्य श्रीसागरचंद्र आचार्य छे तेमनी पासें जाशुं. तमोने महारा शिष्यो घणाज अमारा अर्थीथका पूछे तो जवाब आपजो नहीं, कां सहेज लाज पूछे तिहांसुधी जवाब आपशो नहीं. एम शय्यातर श्रावकने समजावीने रात्रियें शिष्योने सुता मूकी आचार्य चाल्या, ते अविछिन्नप्रयाणे चालतां सागरचंद्राचार्य पासें गया. सागरचंद्राचार्यें जाण्युं जे कोइक मोटो आव्यो छे, माटें अवज्ञायें उठी उजा थया नहीं. बेसवाने आसन पण आप्युं नहीं ॥ यतः ॥ अपुवं दंठुणं, अप्नुठाणं तु होइ कायवं ॥ साहुम्मि दिठ्ठपुवे, जहारियं जस्स जं जोगं ॥ १ ॥ एवो आगमोक्त आचार छे ते अहंकारथी संजाल्यो नहीं. आचार्य आवी पासें बेठा, सागरचंद्राचार्यें वखाण कह्युं, वखाण पूर्ण थये थके कालिकाचार्य प्रत्यें पूछ्युं जे में केवुं वखाण कीधुं? आचार्यें कह्युं रूडुं कीधुं.

पछी कालिकाचार्यने पूछता हवा के मने विषमजाव व्याख्यान पूछो? तेने गुरुयें कह्युं धर्मास्तिकाय वादनुं वखाण करो. तेवारें गुरुसंघाते धर्मास्तिकायवादनी प्रमाणवादें चर्चा करी, पण गुरुयें पोतानुं नाम तथा स्वरूप प्रकट न कह्युं ॥ यतः ॥ देवतानां गुरूणां च, नाम नोपपदं विना ॥ उच्चरेन्नैव जायायाः, कथंचिन्नात्मनस्तथा ॥ १ ॥ ए प्रकारें गुरु सागरचंद्राचार्य पासें रह्या पण कोइ उलखे नहीं.

पाछलथी तिहां ते डुष्ट शिष्य प्रजातें जाग्या थका आचार्य प्रत्यें न दीठा, तेवारें शोधवा लाग्या, शोधतां न मल्या, ते वखत शय्यातर श्रावक पासें जइ पूछवा लाग्या के आचार्य किहां गया? श्रावकें कह्युं हुं शुं जाणुं? तमारा गुरुनी वात तमें जाणो. तेवारें शिष्य बोल्या जिहां गया हशे तिहां तमने कहिने गया हशे. तमने कह्या विना जाय नहीं. ते सांजली श्रावक जमुह चडावी बोल्यो अरे अविनीतो! तमें गुरुनी आज्ञा मानता न हता, अने गुरुनी सायें विरुद्ध वचन बोलता हता, तेवारें गुरु तुमथी

वाजें आवी चाल्या गया. हवे गुरु विना अवढ थका रडता फरो ॥ यतः॥ रुसइ चोइज्जतो, वहइ हियएण अणुसयं जणिउं ॥ नय कहिकरणिज्जे, गुरुस्त आलोण सो सीसो ॥ १ ॥ जीहाएविलिहिंतो, न नद्दउ सारणा जहिं त हि ॥ दंमेण य वि ऐहो, गुरुकुलवासेण किंतस्स ॥ २ ॥ एम शय्यातर श्रावकें घणुंये ठंकाखा ठता नय पाम्या थका वोल्या जे अमने गुरुनो वरांसो पज्यो आज पठी अविनीतपणुं नहिं करीयें, माटे अमने गुरुनी शुद्धि कहो, तो तिहां जइ गुरुने पगे लागी अविनय खमावी गुरुनी आज्ञामां रहीयें! ...त्यारें शय्यातर श्रावकें ते सघला चेलाने पाधरा थया जाणीने कह्युं के गुरु आहींथी अमुक नगरें गुरुना शिष्यना शिष्य श्रीसागरचंद्राचार्य ठे, तेमनी पासें गया ठे, तिहां तमें जाउ.

पठी ते सर्व शिष्योनो समुदाय तिहां चाल्यो. मार्गमां लोक पूठे ए कोण जाय ठे? तेने कहे के ए कालिकाचार्य जाय ठे. एम परंपरायें साग रचंद्राचार्यें सांनल्युं, जे महारा गुरुना गुरु कालिकाचार्य आवे ठे. तेवा रें हर्ष पाम्यो थको पासें वेठेला तेहिज कालिकाचार्य ठे, तो पण पोतें अजाण ठे, माटें तेमनेज कहे ठे, के आज महारा पितामह आवशे, तें वारें तेणें कह्युं में पण ए वात सांनली ठे. एम करतां केटलिएक वेलायें साधुनो समुदाय आव्यो. सागरचंद्राचार्य पोताना गुरु आव्या जाणी ऊी उना थया, तेवारें साधुउ वोल्या तमें वेसो. अमें तो सर्व यति ठैयें, अने आचार्य तो पहेलाज घणा दिवस थया तमारी पासें आव्या ठे. सागरचंद्र चार्यें कह्युं इहां तो एक मोसो साधु आव्यो ठे, आचार्य तो आव्या नथी. एम वात करे ठे, एटलामांज गुरु पण वाहिर थंमिलें गया हता, ते आ वी पहोता. तेमने साधुसमुदाय जइ पगे लाग्यो. सागरचंद्राचार्यें कह्युं ए कोण ठे? शिष्य वोल्या ए कालिकाचार्य आपणा गुरु ठे. ते सांनली साग रचंद्राचार्य लज्जा पामीने खमावता हवा. अने घणुं झूरवा लाग्या के हा हा में चिंतामणिरत्न महारा हाथमां आव्युं पण जाण्युं नहीं !!! गुरुयें कह्युं ए तहारो वांक नथी,परंतु अज्ञाननो वांक ठे. पठी तेणे अज्ञान दोष खमावी गुरुने द्वादशावर्त्त वंदन करी अशन, पान, खादिम,स्वादिमादिकें नक्ति करी.

हवे गुरु वखाण करे अने सागरचंद्राचार्य पासें वेसे ते सागरचंद्रें प्रथम ज्ञाननो गर्व कीधो ठे, माटे ज्ञानगर्व उतारवाने अर्थे वखाणमां गुरु

दृष्टांत देखाडवा सारुं एक पायो ते जाजनविशेष गुरुयें नदीनी वालुकायें जराव्यो. वली खाली कराव्यो वली जराव्यो वली खाली कराव्यो एम करतां वालुका सर्व उडी गइ, अने पायो खाली रही गयो. सागरचंद्राचार्यें पूठयुं के स्वामी! ए श्यो विनोद कर्यो? तेवारें गुरुयें तेना उपर नय देखाड्यो के सांजल! हे वत्स! जेम वालुकायें जरेलो पहेलो संपूर्ण पायो तेम सुधर्मा स्वामी कने प्रतिपूर्ण श्रुत पामीयें, ते पण वली सातिशय पामीयें. तेनी अपेक्षायें जंबुस्वामीमां कांइक न्यून अल्पातिशय पामीयें. जे कारण माटे ठट्ठाणवडीया साधु ठे ए प्रकारें श्रुत न्यून थातां थातां यावत् महारायकी तहारा गुरुपासें अति हीनश्रुत, अने तेथकी वली तहारे विषे हीनतर पामीयें ते पण दुःसमकालना अनुजावथकी प्रणष्टातिशय पामीयें. तेमाटे हवे श्रुतनो गर्व न करवो ॥ यतः ॥ आसन्नपणं मईउ, तरतम जोगेण हुंति मइविजवा ॥ मा वहुउ कोवि गवं, अहमे को पिंमिउं इउ ॥ १ ॥ एवुं कहे थके सागरचंद्राचार्ये श्रुतगर्वनुं मिछामिडुक्कड देइ गुरुने खमाव्या. पठी गुरु पण शिष्यने परिवारें परिवस्या तिहांथी विहार करी जिनशासनने प्रजावता पृथ्वीतलने पवित्र करता पइट्ठाणपुरने विषे आव्या.

हवे एकदा सौधर्माधिपति शक्रेंद्र महाविदेहने विषे सीमंधरस्वामीनां वखाण सांजले ठे, तिहां अधिकार विशेषें निगोदना सरूपनो विचार चाल्यो ॥ यतः ॥ गोलाय असंखिज्जा, असंख निगोइउ हवइ गोलो ॥ इक्कंमि निगोयए, अणंत जीवा मुणेयवा ॥१॥ अछि अणंता जीवा, जहिं न पत्ता तसाइ परिणामो ॥ उपज्जंति चयंति य, पुणोवि तठेव तठेव ॥ २ ॥ इत्यादि सौधर्मेंद्र निगोदना विचार सांजली हर्ष पाम्यो थको प्रजुने पूठतो हवो. हे स्वामी! आजना समयमां जरतक्षेत्रनेविषे एवा निगोदना विचार कहेनार कोइ ठे किंवा नथी? तेवारें जगवाने कह्युं हे सौधर्माधिप! जेवो अमो निगोदनो विचार कह्यो, तेवो विचार कहेनार जरतक्षेत्रमां एककालिकाचार्य ठे.

ते वात सांजली इंड आश्चर्य पाम्यो थको वृद्धब्राह्मणनुं रूप धारण करी ललाटें महोटुं टीलुं करी यज्ञसूत्र तथा हस्तमां तिलक करी महोटी, धोती, सर्वत्र स्वर्णी जे दाढा, तेणें करी धूजायमान थइने कालिकाचार्य पासें आवी वेदों अने पूठयुं, रहो स्वामीजी! श्रीजिनशासनने विषे निगोदना विचार केवी रीतना कह्या ठे? आचार्ये हर्ष पामीने जेहवा सीमंधर

स्वामीयें विचार कह्या तेवाज कही संनलाव्या. इंडें वली विशेष ज्ञान जोवा माटें पूछ्युं, के स्वामी! हुं वृद्ध छुं अणसण करवा वांछुं छुं. माटें म हारुं आयुष्य शेष केटलुं छे? एवुं कहीनें हाथ देखाडवा मांड्यो तेवारें आचार्यें श्रुतोपयोग देइ पक्ष, मास, वर्ष, पल्योपमादिकनी वृद्धि करतां बे सागरोपमायु कह्युं, ते सांनली इंडें कह्युं महाराज! मनुष्यनुं एटलुं आयुष्य क्यांथी होय? आचार्यें कह्युं मनुष्यनुं आयुष्य एटलुं न होय पण तुं तो इंड छो. एवो आचार्यनो ज्ञानातिशय देखी हर्षित थयो थको इंड बोल्यो,स्वामी! धन्य छे तमारा ज्ञानने जेना श्रुतज्ञाननी सीमंधरस्वामीयें पण साक्षी पूरी,एम कही घणी प्रशंसा करी कहेवा लाग्यो,स्वामी! मुझ सेवकने कांइ कार्य प्रसाद करो. आचार्यें कह्युं जे कार्य करवानुं हतुं ते करी वेठा छयें, बीजुं निःस्पृहीने वली शुं कार्य कराववुं होय? एवुं आचार्यें कहे थके य तिउ सर्व गोचरीयें गया हता, तेमने जाण कराववामाटे इंड महाराज उ पाश्रयनुं बारणुं फेरवी गुरुने वांदीने स्वर्गे गया.

केटलिएक वेला पछी यतियो वहोरी आव्या पण उपाश्रयनुं बारणुं देखे नहीं, तेने गुरुयें आवी देखाड्युं अने इंड आव्या संबंधि सर्ववृत्तांत यतियो आगल कही संनलाव्युं. यति तथा श्रावक लोक सर्व आश्चर्य पाम्या, श्रीजिनशासननी प्रनावना थइ. एम जिनशासननी घणी प्रनावना करी आयुनो अंत आव्यो जाणी अनशन आदरी आहीं मनुष्योने प्रतिबोधी पछी देवसनामां जइ तिहां देवताने प्रतिबोध देवा गया. ए प्रनावनारूप स म्यक्त्वनुं पांचमुं नूषण तेनेविषे कालिकाचार्यनुं दृष्टांत कह्युं.

इहां एक शंका रहे छे के कालिकाचार्यजी त्रण थया छे, तेमां प्रथम श्रीविक्रमाजितना संवत्नी आगल श्रीपन्नवणाजी सूत्रना कर्त्ता जे कालि काचार्यजी महाराज थया छे, तेमने इंडमहाराज निगोदना विचार पूछवा आवेला छे, एवुं महारा सांनलवामां आव्युं छे, अने आ कालिकाचार्यजी महाराज, लग नग विक्रम संवत्ना ९९३ वर्षे विद्यमान हता, माटे तेम नुं तथा एमनुं अगीयारशें वर्षनुं लगनग आंतरुं छे, तेम छतां जे प्रत उ परथी ए पुस्तकमें छाप्युं छे, ते प्रतमां ए वात लखेली हती तेथी में छापी छे. पछी जेम बीजी प्रतोमां अथवा अन्यग्रंथोमां वृद्धवचन होय ते प्रमाण छे.

इतिश्री तपागछालंकारोपाध्याय श्रीशांतिचंड गणिशिष्योपाध्याय श्रीरत्न

चंद्रगणि श्रीसम्यक्त रत्नाधिष्ठान श्रीसूर्यपुरस्यादि चतुर्विधसंघस्य चतुर्दश्यष्टम्यादिपर्वसु वांचनार्थं अप्रमत्त तया पोषध प्रतिपालनार्थं विरचिते श्रीसम्यक्तरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्व सप्ततिकाबालावबोधे पंच सम्यक्त्व रूपणस्वरूपनिरूपण नामा सप्तमोऽधिकारः समाप्तः ॥ ७ ॥

हवे समकेतना पांच लक्षणनुं आठमुं अधिकार कहे ठे.

॥ लक्खिज्जइ सम्मत्तं, हियय गयं जेहिं ताइं पंचेवा ॥ उवसम संवेगो तह, निव्वेयणुकंप अत्थिक्कं ॥ ४३ ॥ अर्थः- (जेहिं के०) जेणें हेतुयें करी (हिययगयं के०) हृदयगत (सम्मत्तं के०) सम्यक्त्वने (लक्खिज्जइ के०) लखीयें जाणीयें जे आ अमुक नव्यजीवना हृदयमां उपशमादिक समकेत ठे, एवुं जाणीयें जेम धूमें करी पर्वतनेविषे अग्नि जाणीयें, एटले पर्वतनेविषे अग्नि हशे, त्यारेंज धूम देखाय ठे, पण अग्निविना धूम होय ज नहीं तेम ए पांच लक्षण जे कहेशे, तेविना सम्यक्त्व पण नहींज होय. जो ए पांच लक्षण होय तोज ते समकेतधारी होय जेम जे ठत्र चामरादिक धरावतो होय तेज राजा कहेवाय, तेम ए पण जाणवुं.

(ताइं के०) ते समकेतनां लक्षण (पंचेव के०) पांचज होय, तेनां नाम कहे ठेः—एक (उवसम के०) उपशम, बीजुं (संवेगो के०) संवेग (तह के०) तथा त्रीजुं (निव्वेय के०) निर्वेद, चोथुं (अणुकंप के०) अनुकंपा, पांचमुं (अत्थिक्कं के०) आस्तिक्य ए पांच नाम कह्यां. हवे एनो अर्थ कहीयें ठैयें.

प्रथम उपशम ते क्षमा धारण करवी, बीजुं संवेग ते नववैराग्य संसारना सुखनेविषे आसक्तता न होय. त्रीजुं निर्वेद ते मोक्षनी वांठा एटलेमनमां एवो विचार रहे, के ते दिवस केवारें आवशे, के जेवारें हुं मोक्ष सुख पामीश! एवी वांठा हरहमेश तेना मनमां रहे. जेम घृतपूर खावानी वांठा रहे. पठी ते तुरत न पामे ते प्रारब्धाधीन ठे पण घृतपूर खावानी इछा रहे तेपण रूडी जाणवी तेम मोक्ष पण तुरत पामे अथवा घणे काले पामे तो पण मोक्ष पामवानी इछा रहे, ते पण रूडी जाणवी. चोथुं अनुकंपा ते डुःखीया जीवनेविषे करुणा रहे. ठती सामर्थ्यें डुःखीया जीवनुं डुःख टाले अने न टाली शके तो पण मनमां एवी अभिलाषा रहे जे आ जीवने हुं डुःखथकी मुक्त करुं तो रूडुं. पांचमुं आस्तिक्यता ते श्रीवीतरागें जे

जीवादिक नवतत्त्व कह्यां ठे, तेनेविषे शुद्ध सद्दहणा राखे, तेनां ए वात तो निश्चल थयेली होय के जे श्रीअरिहंतजीयें नाख्युं ठे, ते था अन्यथा होयज नहीं. एवे वैराग्यें बराबरी थाय ॥यतः॥ इयलि... खलु, इक्कंल कराजिणेहि पसुत्ता॥नावपहाणा सहुणं,ठ अन्ने ६... ॥१॥ संपुसाविहि किरिया, नावेण विणा न हुंति किरियत्ति ॥ लत्तणठ, गवेजववायणाएणं ॥ २ ॥ आणोहेणाणंता, मुक्को गेवे... सरीरा ॥ णयतह्य संपुसा, एस किरियाए उववाउ ॥ ३ ॥ ताणंत सो... त्ता, एसाएउ दंसएति सिद्यंति ॥ एवं मग्गहज्जुत्ता, एसाए वुहाए इत्ति ॥ ४ ॥ इयणिय वुद्धि इ इमं, आलोवे ऊए इह जइयवं॥अयंत... नवविरहय महं जणेए ॥५॥ इति चतुर्दश शिलांगपंचाशके ॥ ४३ ॥

हवे प्रथम उपशम लक्षणनुं अने बीजुं संवेगनामा लक्षणनुं स्वरूप कहे ठे.

॥ अवराहेवि महंते, कोहाणुदउवियाहिं उवसम्मो ॥ संवेगो मुक्खं पह अहिलासो उ नवविरागो ॥ ४४ ॥ अर्थः– कोइयें (महंते के०) मह्रोटो आपणो अपराध कस्यो, ते अपराधीनो (अवराहेवि के०) अपराध ठे तो पण तेनी उपर (कोहाणुदउवियाहिं के०) क्रोधनो अनुदय करवो एटले क्रोध प्रगट न करवो, तथा ते क्रोधनुं फल जे ताडनादिक ते पण न करवुं तेने (उवसम्मो के०) उपशम कहियें जेम कुरगडूना पात्रामांहे यति थूंक्यो तोपण तेने उपशम आव्यो परंतु लेशमात्र कपायोदय न थयो ॥ यतः॥ कडुअ कसाय तरूणं, पुप्फं च फलं च दोवि विरसाइं ॥ पुप्फेण जाइ कुविउ, फलेण पावं समायरइ ॥ १ ॥ जो पण ठद्मस्थने विषे सत्तामां कपाय होय, तो पण ते उदय प्राप्त न करे, तेने क्षमावंत कहीयें॥ यतः॥ किंसक्कावुतुजे, सराग धम्मंमि कोइ अकसाउ ॥ जो पुण धरिज धणियं, डुवयणु जालि एस मुणि ॥ १ ॥ ए गाथाना पूर्वार्द्धे उपशमनुं स्वरूप कह्युं हवे कथा कह्या पठी गाथाना उत्तरार्द्धे संवेगनुं स्वरूप कहेशे.

ए उपशम क्षमानी उपर मेतार्य मुनिनुं दृष्टांत कहे ठेः– साकेतपुरने विषे चंडावतंसक राजाने वे स्त्री परमवल्लन ठे. प्रथम सुदर्शना अने बीजी प्रियदर्शना, तेमां सुदर्शनाने एक सागरचंड अने बीजो मुनिचंड ए वे पुत्र ठे, अने प्रियदर्शनाने पण एक बालचंड अने बीजो गुणचंड एवे नामें वे पुत्र ठे, ते मेरुपर्वत जेम वे सूर्य अने वे चंद्रमा तेणें करी शोने,तेम चंड

वतंसक राजा पण पुत्रनां बे जोडलायें करी शोने बे. राजायें सागरचंद्रने युवराज पदवी आपी अने मुनिचंद्रने उज्जयणीनुं राज्य आप्युं.

एकदा हिमंतऋतुनेविषे राजा, राज्यकार्य करी मंत्रीश्वर प्रमुखने विसर्जीने रात्रें वासघरनेविषे आव्यो. घरमां घणो उद्योत करतो दीवो दीगे. तेवारें विचार्युं जे ए दीवो ज्यां सुधी उल्लवाइ न जाय तिहांसुधी म्हारे काउस्सग्ग पारवो. एम निर्धारी काउस्सग्ग धारी उनो रह्यो. वली प्रथम प्रहरनेविषे शय्यापालिकायें जाण्युं जे रखे अंधकार थाय ? एवी वांगयें ते दीवो सींच्यो. पडी ते दीवायें करी जेम बाह्य अंधकार नाश पामे, तेम शुनध्यानें करी राजानो कर्मरूप अंधकार नाश पाम्यो, एमज बीजे त्रीजे अने चोथे पहोरें पण शय्यापालिका दीवो सींचती जाय, पण ते राजानो अनिग्रह जाणती नथी, हवे जेवारें थोडीसी रात्रि शेष रही, तेवारें शय्यापालिकाने उंघ आवी गइ. दीवो बुजाइगयो जोइने राजायें काउस्सग्ग पार्यो, काउस्सग्ग पारी जेटले शय्यायें सुवा जाय, तेटले घणो वखत सुधी काउस्सग्गमां रह्या हता, तेने लीधे पग लोइयें नराणा, तेथी जेम छिन्नवृक्ष त्रूटी पडे, तेम राजानुं सुकुमाल शरीर नूमियें पड्युं, तेवारें नमस्कारमंत्र स्मरण करतो शुनध्यानें आयु पूरुं मरण पामी राजा स्वर्गे गयो. प्रनातें खबर पडवाथी सर्व परिवार शोक करतो तेनी अंतक्रिया करी.

हवे सागरचंद्र पोतानी उरमान माताने कहेवा लाग्यो, हुं दीक्षा लउं. अने तमारा पुत्रने राज्य आपुं, उरमान मातायें कह्युं राज तमोने गजे माटे तमें राज्य नोगवो म्हारो पुत्र तमारी चाकरी करशे म्होटा नाइनी चाकरी करवामां कांइ लाज नथी. एम कहे थके मंत्रीश्वरें सागरचंद्रने राज्य आप्युं. हवे स्त्रीनुं चित्त चंचल थाय बे माटे उरमान मातायें विचार्युं जे एने मारी नाखीने म्हारा पुत्रने राज्य अपावुं, एवुं चिंतवी ते ठल जोयां करे.

एकदा प्रस्तावें सुदर्शना राणीयें सागरचंद्रने अर्थे दासीने हाथें उद्याननेविषे एक लाडु मोकल्यो, प्रियदर्शनायें ते दासीने पूठयुं तुं क्यां जाय बे ? दासीयें कह्युं राजाने उपवासना पारणा माटे लाडु लइ जाउं बुं. तेवारें प्रियदर्शनायें दासीना हाथथी लाडुउ लइ लघुलाघवी कलायें तेने विष लिप्त करी तेमज दासीना हाथमां पाबो आप्यो. दासीयें जइ सागरचंद्रराजाने आप्यो, तेणे विचार्युं जे प्रथम न्हाना नाइने खवरावीने पडी

हुं खाउं, तो ठीक. एवुं विमासी तेमांथी अडधो लाडवो लघु नाइने वहेंची आप्यो नाइयें तरतज खाधो. तेवुंज तेना शरीरमां विष व्यापी गयुं. अने जूमियें पड्यो. राजायें औषध प्रमुख करी लघुनाइने जीवाड्यो. पठी रा णीने पूछ्युं, कोना हाथथी लाडवो लीधो हतो? तेणें प्रियदर्शनानुं नाम कह्युं. राजायें विचार्युं ए काम एणे कर्युं हशे, पण जो ए लाडुउं में खा राख्यो हत, तो अपध्यानें मरी नरकें जात, माटे हजी सावधान थाउं.

एम विमासी प्रियदर्शीनाना पुत्रने राजपाटें वेसाडी पोतें दीक्षा लइ अनुक्रमें गीतार्थ थया. विहार करतां उज्जयणी नगरीयें आव्या. तिहां साधुना संघने पूछ्युं जे तमारुं चारित्र सुखें पले ले? तेवारें यतिना समु दायें कह्युं राज्यपुत्र तथा पुरोहितपुत्र उल्लंठ ले, ते यतियोने संतापे ले, माटें इहां रहेवुं विषम ले. ते वात सांजली पाधरा पुरोहितने घरे आव्या, तिहां आकरे शब्दें धर्मलाज दीधो, घरना चाकर सर्वे वारवा लाग्या के, अरे साधु! तुं इहां क्हिां आवी चड्यो? जो राजपुत्र जाणशे, तो तुजने संताप करशे माटे जो तुं तहारुं जलुं चहातो हो, तो इहांथी जतो रहे. एवुं सांजलतां वली पण गाढे शब्दें धर्मलाज दीधो.

ते धर्मलाज सांजली राजानो पुत्र तथा पुरोहितनो पुत्र बेहु नीचें आव्या बलात्कारें यतिने हाथें जाली मेडी उपर अगासीयें लइ गया, अने कहे वा लाग्या अरे मुंम! अमारी आगल तुं नाच. यतियें कह्युं तालविना नाटक थाय नहीं माटे तमें ताल वजावो, ने हुं नाचुं. पठी यतियें नाच वा मांड्युं अने ते बे जण ताल वजाडवा लाग्या, तेने यतियें कह्युं अरे मूर्खो! तालनंग शुं करो लो? अरे कुलने कलंक सरखा एटलो ताल न जाडवो, ते पण तमारा माता पितायें शीखव्यो नथी, के जे तमें नृत्यने विषे तालनंग करो लो? एवी यतिनी वाणी सांजली ते क्रोधांध थइ बोला के आ मुंमानी मुंम फोडो. एवुं कही ते बेहु उट मली यतिने मारवा उ ठ्या, यति पण बल करी तेमना अंगोपांगनी संधि उतारी मेडीपरथी उतरी ने वनमांहे जतो रह्यो. संधियो उतरी जवाथी बेहु जण पुंकारव करवा लाग्या.

ते वात सांजली राजा तिहां आव्यो जूए तो बेहु आंख फाडी प ड्या ले. राजायें विचार्युं महात्मानाइ ... .. एवो कोइ गुरुनें विं कुशल नथी. जे ... नाखे! ... यतिउने पूछ्युं,

सर्वयतिउं बोल्या, अमारामां कोइ एवो ठेज नहीं जे एवुं काम करे! परंतु एक परोणो यति आव्यो हतो तेणे कीधुं होय तो तेनी अमने खबर नथी. पछी तेनी खबर काहाढवामाटे वनने विषे गया, त्यां सागरचंद्रसाधुने दीठा, तेमने देखीने राजा लज्जा पाम्यो थको नीचुं मुख करी ऊनो रह्यो. सागरचंद्रसाधुयें कह्युं के जलो तें चंद्रावतंसक राजानो वंश दीपाव्यो! जेमाटे तुं तहारा पुत्रने तथा पुरोहितना पुत्रने यतिउंने उपद्रव करतां वारी नथी शकतो? माटें धिक्कार छे तहारा राज्य जोगववाने! तेवारें राजा पगे लागी विनति करवा लाग्यो के, महाराज! ए महारो अपराध क्षमा करो अनें प्रसन्न थाउ. आवीने बेहु जणने समाधि करो. आज पछी यतिने कोइ पण उपद्रव करे नहीं. यतियें कह्युं जो बेहु जण दीक्षा लीये,तो हुं एने साजा करुं. राजायें कह्युं ते कहे छे,के अमें दीक्षा लइशुं पण साजा करो. पछी साधुयें आवी बेहुने साजा करी दीक्षा दइने पोते अन्यत्र विहार कर्यो.

हवे राजपुत्रें विचार्युं जे काकायें मुझने रुडुं कीधुं जे संसारमां पाप करवा थकी निवारीने दीक्षा दीधी, तेमाटें कर्मक्षय करवा निमित्तें दीक्षा पालतो तपस्या करतो विचरवा लाग्यो अने पुरोहितपुत्र जे दुःख पामतो थको जैनधर्मनी दुगंछा करतो हतो ते पण शुद्ध चारित्र पाली तप करतो विचरवा लाग्यो. ते बेहु आयु पूर्ण थये देवलोकें देवपणे एकठा जइ उपना. परस्पर प्रेमथी कामजोग विलसता थका परस्पर बोलबंध करता हवा के आपण बेहुमांथी जे प्रथम चवे, तेने बीजो आवी प्रतिबोध करे.

तेमां प्रथम पुरोहितनो जीव देवपणाथी चवीने दुगंछाकर्मने योगें राजगृहनगरें चांमालने घेर गर्भमां पुत्रपणे उपनो. हवे तेहिज नगरें धन्ना सार्थवाहनी जार्याने पुत्र जीवता रहेता नथी तेमाटें दुःखणी थइ छे तेने ते चांमालिनी स्त्री सायें प्रीति छे, एकदा ते चांमालिणी गर्जवती थकी सार्थवाहनी स्त्रीपासें मलवा आवी छे सार्थवाहनी स्त्री पण गर्जवती छे तेणीयें तेनी आगल पोताना पुत्र मरणनां दुःख कह्यां,तेवारें चामालिणीयें कह्युं जो महारे हमणां पुत्र आवशे, तो ते पुत्र हुं तुझने आपीश. अनुक्रमें समकालें बेहुने प्रसव थया, चांमलिणीयें पुत्र जन्म्यो अनें सार्थवाहणीयें मुवेली दीकरी प्रसवी. पछी अंतरंग माणसनी सायें मूवेली पुत्री मोकलीने चंमालिणीनो पुत्र पोताने घेर कोइ न जाणे, तेम थणाव्यो.

अने ते पुत्रनुं मेतार्य एवुं नाम दीधुं. चांमालिनी स्त्रीयें पोताना धणीने मृतपुत्री जणेली देखाडी. अनुक्रमें ते मेतार्यपुत्र सर्वकलानो पारंगामी थयो, यौवन पाम्यो पितायें इज्यकुलनी उपनी आठकन्या सायें विवाह जोड्यो.
हवे ते पूर्वजवना मित्र देवतायें अवधिज्ञानें जोइ तिहां आवी प्रतिबोध दीधो, पण कर्मने वशें तेने उपदेश लागे नहीं. तेवारें देवतायें विचार्युं जे एने कष्टमां पाडीश, तो ए प्रतिबोध पामशे. अन्यथा सुखीयो थको प्रतिबोध पामशे नहीं. पठी जेवारे मेतार्य आठ कन्यानुं पाणिग्रहण करवा वरघोडे चढ्यो ठे, चहुटामांहे आव्यो, तेवारें ते देवता पहेला मातंगना शरीरमां अधिष्ठित थयो तेवारें वरघोडाने देखी मातंग पोतानी स्त्रीने कहेवा लाग्यो के हे प्रिये ! आपणी बेटी मुइ न हत तो तेनो आवो विवाह महोत्सव करत,ते सांजली स्त्रीनी जाति तुछ होय माटे तेणें अंतरनी वात कही दीधी, जे हे प्रिये ! तमें शोक न करो. ए पण तमारोज पुत्र ठे. तेनुं कारण चांमालें पूढवाथी ते चंमालिणीयें वधी प्रथमथी वात कही संजलावी दीधी, तेवारें चंमालें तेने पोतानो पुत्र जाणी अश्वथकी पग जालीने नीचें पाडी नाख्यो. अने कहेवा लाग्यो अरे पापी! तुं महारो पुत्र थइ उत्तमकुलना लोकने केम अपवित्र करे ठे? हवे हुं एक महारा कुलनी कन्या परणावीश. एवुं कही बलात्कारें हाथ जाली वणवानी खाडमां नाखी दीधो. मेतार्य लाज्यो थको दीनवदन करी रह्यो बोली न शक्यो.सार्थवाह अने तेनी स्त्री प्रमुख लोक सर्वे उंशीयाला थइ पोताने घेर गया. देवतायें वधा लोकोने मनमां संशय पाड्यो अने सर्वें जाण्युं जे ए सत्यवात जणाय ठे.
पठी देवता दिव्यस्वरूप धारण करी मेंतार्यने कहेवा लाग्यो के आवी अवस्था पाम्यो तो पण प्रतिबोध केम नथी पामतो? हजी कांइ वधारे संकटमां पडवा इछे ठे? मेतार्यें कह्युं महारा कुलनुं कलंक उतार तो पठी तुं जे कहे, ते धर्म अंगीकार करुं. देवतायें कह्युं कुलनुं कलंक हुं केम टाली शकुं? तें पूर्वले नवें यतिनी निंदा करी पठी चारित्र पाल्युं ठे, माटे चांमालनुं कुल पाम्यो. मेतार्यें कह्युं आ आठ कन्या उपरांत श्रेणिकराजानी पुत्री परणावी कलंक टाली बार वर्ष घरवास रहीने पठी हुं दीक्षा लेउं. एम कर.
ते सांजली देवतायें वली सर्व सज्जननां मन फेरवी नाख्यां, तेथी सर्वे चहूटामां आवी पाठी जाननी तैय्यारी करवा लाग्यां, मातंग पाठो जान

मां चाली आव्यो. अने हाथ जोडी कहेवा लाग्यो के में ते वखत मदिरा पीधी हती, तेथी एल फेल बकी गयो, पण ए महारो पुत्र नथी. महारो अपराध माफ करो. तेवारें सर्वना जर्म टल्या, आवकन्या परण्यो.

हवे श्रेणिकनी कन्या परणाववामाटें देवतायें एक गग आप्यो, ते प्रतिदिन रत्नमय लींमी करे, तेथी मेतार्यना पितायें रत्नोनो थाल जरीने श्रेणिक आगल नेटणुं मूक्युं. श्रेणिकें कह्युं श्या कामें आव्या गे? तेणें क ह्युं ताहरी पुत्री महारा पुत्रने परणावी आप. राजायें गलहत्थो दइ वाहिर कढाव्यो. तो पण प्रतिदिवस रत्नोनो थाल नरी राजा आगल नेटणुं ल इ आवे, अने कन्यानी मागणी करे, तेवारें राजा तेने तिरस्कार करी कढावे.

हवे अनयकुमारें विचार्युं एटला रत्नने मातंग क्यांथी लइ आवे गे? एम विमासी अनयकुमारें मातंगने पूग्युं. मातंगें कह्युं अमारे घेर एक ब करी गे, ते जेटली लींमी करे गे,तेटलां सर्व रत्न थाय गे. तेथी महारे घेर रत्न घणां गे, अनयकुमारें कह्युं ए गगली राजाने आप तो हुं तहारी वां ग पूरुं, ते सांनली मातंग ते गगली राजाने घेर लइ आव्यो, तिहां लीं मी करे पण रत्न थाय नहीं, तेवारें राजायें गगली पाग़ी तेने घेर मोक ली तो तेमज रत्न थवा लाग्यां. तेवारें अनयकुमारें देवमहिमा जाण्यो पगी मातंगने कह्युं वैजारगिरिसुधी सुखें गाडां, वहेल, रथ, जइ शके तेवो मार्ग करी आप. तेणें देवप्रनावथकी तेज वखतें सुखें रथ, हाथी, घोडा जइ शके एवो सरलमार्ग करी आप्यो. जेथी सर्वलोक सुखसमाधें जइ श्रीवीरने वांदवा जवा लाग्या, वली अनयकुमारें कह्युं राजगृहने फरतो अनंग प्राकार, रूडां कोशीसां सहित करी आप. तेणें ते पण तत्काल क री आप्यो, वली अनयकुमारें कह्युं क्षीरसमुइनुं जल आणी आप के जे थकी तहारा पुत्रने स्नान करावी पवित्र करीयें. तेणें कहेतां वारज खीर समुइनुं जल आणी आप्युं.

एटलां कार्य कर्या पगी श्रेणिकराजायें अनयकुमारनुं वचन पालवाने अर्थे गत्रतलें क्षीरसमुइना पाणीथी मातंगना पुत्रने न्हवरावी पवित्र क री कन्यानुं पाणिग्रहण प्रथमनी आव कन्याउं साथें कराव्युं. वार वर्ष मे तार्यें देवता पासें मागी लीधां हतां, अने वली वीजां वार वर्ष नव स्त्रीयें मली देवता पासेंथी माग्यां. सर्व मली चोवीश वर्ष पर्यंत नव स्त्रीयो साथें

कामभोग भोगवी पछी नव स्त्रीसहित दीक्षा लइ मेतार्य साधु गुरुनी पासें नव पूर्व भण्या. निर्मल चारित्र पालतां विचरवा लाग्या.

एकदा विहार करतां राजगृही नगरीयें सोनीने घेर आहार लेवाने अर्थे आव्या. श्रेणिकराजायें अभिग्रह कर्यो छे जे १०८ यव सोनाना लइ तेनुं जगदीश्वर आगल स्वस्तिक करुं, तो मुखमां पाणी घालुं. तेमाटें ते सोनीयें १०८ यव सोनाना घडी चोकी उपर मूक्या, पोतें कार्य विशेषें उरडामां गयो, एवामां क्रौंचपक्षी ते भक्ष्य वस्तु जाणीने गली गयो. ते साधुयें दीठा. सोनी बाहिर आव्यो, तो यव दीठा नहीं. मेतार्यने पूछ्युं महाराज! यव क्यां गया? तेवारें मेतार्यें विचार्युं जे ए सोनी दुष्ट छे ते क्रौंचपक्षीने मारी एना पेटमांथी यव काढी लेशे. तेना मरणनुं निमित्त हुं थाइश! माटे महारे मोन धारण करवुं,एज श्रेय छे. एम धारी मोन रह्या. सोनारें चोर जाणी वाधरीयें माथुं वींट्युं खेंची करी बांध्युं. तेना जोरें आंख बेहु निकली पडी उपर चाबकाना प्रहार दीधा, तेवारें ते यति चामडाना पटबंधने संयम राज्य पटबंध करी जाणतो अने चाबकाना प्रहारने अमृतधारा जेवुं मानवा लाग्यो. मेतार्यमुनि उपशमसुधा पान करी क्षपक श्रेणि आरोहि केवलज्ञान पामी, सिद्धशिलानो शृंगार थई अनंत सुख पाम्यो.

हवे सुवर्णकारना गृहनेविषे सुतारे कुहाडे करी काष्ट फाड्युं तेनो खंभ उडीने क्रौंचपक्षीने गले लागो. तेना घातनी पीडायें १०८ यव निकली पडया. ते देखी सोनार पश्चात्ताप करवा लाग्यो के, हा हा!! आ में शुं कर्युं!!! जो राजाश्रेणिक जाणशे, तो मुजने बेहाल करी मारी नाखशे. एवुं जाणी भय पामी दीक्षा लइ मेंतार्यनांज रजोहरण प्रमुख उपकरण लइ श्रेणिकराजानी पासें जइ धर्मलाभ दीधो, पोतानुं सर्व वृत्तांत श्रेणिक आगल कह्युं. श्रेणिकें कह्युं, तें भयथी दीक्षा लीधी, पण हवे निर्भयपणे पालजे. एवुं कही सुवर्णकार ऋषिप्रत्यें विदाय कर्यो. ए मेतार्यमुनिनुं चरित्र सांभली कर्णपवित्र करी श्रीसम्यक्त्वनुं उपशमनामे लक्षण आदरवुं ॥

हवे गाथाना उत्तरार्द्ध करीसंवेगनामा बीजुं लक्षण कहे छेः–तिहां (मोक्खपइं के०) मोक्षप्रत्यें जे (अहिलासो के०) अभिलाष एटले वांछा ते (संवेगो के०) संवेग कहीयें. (तु के०) वली (भव के०) संसार तेथकी जे (विरागो के०) वैराग्य ते पण संवेग कहीयें, जेमाटें जे मोक्षाभिलाषी

होय, तेने नववैराग्य अवश्य होयज. अने जेने नववैराग्य होय, तेने मोक्षाभिलाष अवश्य होय. एम ए बेहुने परस्पर संबंध छे ॥ यतः ॥ संवेगेणं भंते जीवे किं जणयति, संवेगेणं अणुत्तरं धम्मं सद्धं जणयति, अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगहव्वमागच्छंति अणंताणुबंधि कोह माण माया लोहे पावंति नवं कम्मं न बंधंति॥ तप्पवइयं वणं मिछत्तविसोधिं काऊण दंसणाराह एहनवति दंसण विसुद्धिए अछेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति सोहियणं विसुद्धाइ तंच पुणो भवग्गहणंणाइक्कमतित्ति ॥ ४४ ॥

हवे ए संवेगने विषे दंमदंतमुनिनो दृष्टांत कहे छे. हस्तिशीर्ष नामा नगरें दमदंत नामें राजा हतो, ते एकदा जरासंध प्रतिवासुदेवनी सेवा निमित्तें राजगृही नगरीयें गयो छे. ते अवसर पामी पांच पांमवो पोतानुं सबल सैन्य लइने दंमदंतराजानो देश भांज्यो, लूंट्यो, ते वात सांभली दंमदंत राजायें जरासंधनुं साहाय्य पामी सबल कटक लइ आवी हस्तिनागपुर पर घेरो नाख्यो. दूत मोकली पांमवोने कहेवराव्युं के, हुं जरासंधनी सेवायें गया पछी तमें छल करीने म्हारो देश लूंट्यो, पण हवे तमें हस्तिनागपुरथी बाहेर निकलीने म्हारी साहामा आवी युद्ध करो तो हुं जाणुं, जे तमें खरा बलवंत छो. पांमवो भयभ्रांत थया थका बाहेर आवे नहीं त्यारें दंमदंत राजायें कहेवराव्युं के जो सिंह होता तो साह्मा आवी युद्ध करता. पण हुं एटला दिवस तमारुं गाम वींटी बेगे बुं, तेम छतां तमें लडवा आव्या नहीं, ते उपरथी जाणुं छुं जे तमें शीयालीया छो. एवुं कहेवरावी दमदंत पोताने नगरें पाछो आव्यो.

एकदा श्रीधर्मघोषसूरिनी देशनारूप सुधा पान करी संसारविषय मदिरापानथकी विरक्त थयो थको परमसंवेग पामी दंमदंतराजायें दीक्षा लीधी, अनुक्रमें गीतार्थ थइ एकलो विहार करतो हस्तिनागपुरनी पोले मेरुनी परें अचल थइ काउस्सग्गें रह्यो. एवामां अश्वक्रीडायें निकलेला युधिष्ठिर प्रमुख पांचे पांमवो ते मुनिने देखता हवा, तेवारें अश्वथकी उतरी पगे भालस्थल लगाडी वांदी गुणस्तुति करी जे धन्य तमारो अवतार जे तमो आवुं दीक्षारूप राज्य पाम्या! एवुं कही आगल क्रीडा करवा गया. पाछलथी दुर्योधन पण घणा परिवारसहित निकल्यो, तेणे पण ते मुनिने दीठा, तेवारें क्रोधें भराो बोल्यो के, अरे आ पापीने मारो. एवें घ

ण दिवसथुधी आपणने गढरोहमां राख्या हता, हवे कपट करी इहां वे
ठो छे. एवुं कही सामो पथरो नाख्यो ते साधुने लाग्यो तो पण साधु
समभावथी चूक्या नहीं. पछी यथा राजा तथा प्रजा ए न्यायें ते दुर्योधन
गया पछी तेना माणसो पण ते साधु उपर पथरा फेंकता गया, ते पाषा
ण खंभे करी यति ढंकाइ गयो, अचेष्ट थइ पड्यो देखायो नहीं.

एवामां पांच पांमव क्रीडा करी पाछा वल्या, तेणें यतिने दीठो नहीं.
लोकोने पूछ्युं अरे आहीं यति हता, ते किहां गया? लोकें दुर्योधननुं वृ
त्तांत कह्युं. ते सांजली युधिष्ठिरें विचार्युं जे हा हा ए पापी नरकगामीयें
आ शुं अकार्य कर्युं छे! यतः ॥ गणंडवय वयरं, मयं हीणं तरंगवा ॥ जे
णजहियगंतवं, चिन्नवितारी सोहीइं ॥ १ ॥ एवुं कही पाषाण सर्व परा
करावी यतिनुं वेयावच्च करी वांदी स्वस्थ करी अपराध खमावीने घेर आव्या.

हवे ते महामुनि वेदनायें पीडित थको अपकारी जे कौरव अने उप
कारी जे पांमव ते बेहुनी उपर समभाव चिंतवतो थको क्षपकश्रेणि आरो
ही केवलज्ञान पामी शिवपुरनेविषे अनंतसुखराशि जोगवतो थयो ॥ यतः॥
परिक्तंतो दुक्खो, हणेण तह पंमवेण थुवंतो ॥ समसत्तुमित्त जावो, सो
दमदंतो मुणी जयउ ॥ १ ॥ इति ऋषिमंमलसूत्रे ॥

प्रजातें राजा युधिष्ठिरनी सेवा करवामाटे दुर्योधन आव्यो, तेने युधिष्ठिरें
कह्युं अरे कुलांगार! तुं हमणां यतिने मारवा लागो पण जे दिवसें आपणुं
नगर वींटी पड्यो हतो ते दिवसें तुं क्यां गयो हतो? शामाटे युद्ध करवा
सामो न थयो? ते ऋषि हमणां जेवारें क्षमा आदरी हथीयार छोडी
ने बेठो, तेवारें तुं मारवा दोड्यो? इत्यादिक घणां वचन कही शिखामण
आपी. पण ते दुर्योधनने नरकें जावुं छे माटे कांइ जवाब न आपतां नीचुं
मुख करीने रह्यो. दमदंत राजऋषि कृतकृत्य थया. ए संवेग लक्षणने विषे
दंमदंतराजानी कथा कही, माटे समतारूप सुधापान करी संवेग आदरो॥४४॥

हवे त्रीजुं लक्षण निर्वेद छे तथा चोथुं लक्षण अनुकंपा छे अने पांच
मुं लक्षण आस्तिक्य छे, ए त्रणेनुं स्वरूप अनुक्रमें कहे छेः—

॥ निव्वेउ नारगिरिा, नुरियं संसार चारयगिहस्स ॥ दुहिए दयाणुकंपा,
अत्थिक्क नत्ति जिणवयणे ॥ ४५ ॥ अर्थः—हवे (निव्वेउ के०) निर्वेद ते
शुं कहीयें? तो के (तुरियं के०) उतावळे (संसार के०) संसाररूपीयां

(चारयगिह्स्स के०) चारक घर एटले बंधिखानानुं घर तेहने (चागि ग्रा के०) त्यागवानी इछा तेने निर्वेद एवे नामें समकेतनुं लक्षण कहीयें; एटले संसाररूप बंदिखानाना घरने उतावले त्यागवानी जे इछा करवी ते निर्वेद जाणवो संसाररूप बंदीखानाना घरथी निर्वेद एटले निकलवुं.

केटलाएक आचार्य संवेगनो अर्थ नववैराग्य कहे छे, अने मोक्षनी वांछा, तेहने निर्वेद कहे छे ए अर्थ पण घटे छे ॥ यतः ॥ निव्वेएणं भंते जीवे किंजणयइ निव्वेएणं जीवे दिव्वमाणुस्स तिरिच्छएसु कामभोगेसु विरज्जमाणे निव्वेयं हव्वमागच्छत्ति सव्वविसएसु विरज्जत्ति सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरंभपरिग्गह परिच्चायं करेंति आरंभ परिग्गह परिच्चायं करेमाणे संसार मग्गं वुच्छिंदंति सिद्धिमग्गं पडिवन्नेय जवति ॥ इति उत्तराध्ययन सूत्रे ॥ ए गाथाना पूर्वार्द्धनो अर्थ कह्यो, उत्तरार्द्धनो अर्थ कथा कह्या पछी आवशे.

हवे ए निर्वेद लक्षण उपर हरिवाहनराजानी कथा कहीयें छैयें:–एहिज जरतक्षेत्रे जोगवती नगरीयें इंद्रदत्तराजा राज्य करे छे, तेनी मणिप्रजा नामें पट्टराणी छे तेने हरिवाहन नामें पुत्र छे. हवे तेहज नगरमां जमंदर नामें सुतार वसे छे, तेनो नरवाहन नामें पुत्र छे, तथा वसुसार नामें श्रेष्ठी वसे छे. तेने धनंजयनामे पुत्र छे. हवे राजपुत्र हरिवाहन तथा सुतार पुत्र नरवाहन अने श्रेष्ठीपुत्र धनंजय, ए त्रणेने मांहोमांहे मित्राचारी थइ, प्रतिदिन एकठा मली रमतक्रीडादिक करे.

एकदा राजायें पोताना पुत्रने घणीज आकरी शिखामण आपी जे हे पुत्र ! तुं मित्रोनी साथे रमत कया करे छे ते मूकीने अभ्यास कर. नहीं तो म्हारो देश मूकीने चाल्यो जा. एवी राजानी वात सांभली त्रणे मित्रे मली आपसमां विचार कर्यो, के जो राजायें देश मूकवा कह्युं, तो हवे आपणने परदेशेंज जावुं, अने आपणा भाग्यनी परीक्षा करवी. एवुं विचारी त्रणे जण पोताना पिता प्रमुखने पूछया विनाज देशांतरे चालता थया. मार्गे जातां म्होटा अरण्यने विषे पड्या. एवामां एक गजेंद्र पोतानो शुंडादंड ऊंचो करीने हरिवाहन कुमरनी साहामो दोड्यो. एटले शेठनो पुत्र अने सुतारनो पुत्र ए बेहु जण नाशि गया. पछी गजशिक्षानां सिद्धलक्षण एवा कुमरें पोतानी कलायें हाथीने वश कीधो. पछी ते हाथीना उपर चढी बेठो अने पोताना बे मित्रोने शोधवा चाल्यो. घणोज शोध कर्यो, पण मित्र मल्या नहीं.

आगल जातां एक महोटुं सरोवर दीठुं, तिहां कुमर हाथीथकी उतरीने श्रम टालवाने अर्थे सरोवरमांहे स्नान करवा पेठो, जलक्रीडा करी खेद टाली बाहेर निकल्यो. तिहां मित्रोना विरहथी दुःखी थयो थको सरोवर नी समीपें एक महोटुं आराम ठे, तेमांहे क्षेमंकर नामें यक्षनुं एक महोटुं चैत्य दीठुं तेमांहे पेठो. रात्रियें एक खूणामां जइ सूइ रह्यो.

एवामां तिहां रात्रियें अप्सराउयें आवी नाटक मांम्युं ते नाटक देखी कुमर चमत्कार पाम्यो. पठी ते अप्सराउ नाटक करी परिश्रांत थइ थकी पोतानां सखरां वस्त्र मूकी बीजां वस्त्र पहेरी पुष्करिणीमां जलक्रीडा करवा गइ. पाठलथी कुमरें उठी तेमनां वस्त्र लइ लीधां. केटलिएक वार पठी ते जलक्रीडा करी देहरे आवीने जूए, तो कपाट दीधां दीठां. तेवारें विचार्युं जे कोइक धूतारो ठे ते आपणां वस्त्र लइ कपाट देइ मांहे बेसी रह्यो ठे. पठी ते बाहिर रही थकीज हरिवाहनने घणुं घणुं बीहीवराववा लागी, पण मृगलीनो बीहीवराव्यो सिंह कांइ बीये नहीं. तेम हरिवाहन पण तेना थी बीहीनो नहीं. तेवारें अप्सराउयें जाण्युं जे मांहे कोइ साहसिकपुरुष ठे माटे एने मन गमतुं करीयें तो वस्त्र पामीयें, अन्यथा वस्त्र मलशे नहीं. तेथी सौम्यवचन कहीने वस्त्र मागवा लागी. कुमरें कह्युं, तमारा वस्त्रने वायरो लइ गयो ठे माटे जाउ वायरापासेंथी वस्त्र मागी ल्यो.

ते सांजली अप्सराउ बोलीयो तहारो सत्त्वगुण जोइ अमे संतुष्ट थये लीउ ठैयें माटे वर माग. एवुं सांजली कुमरें कपाट उघाडी वस्त्र आप्यां. सहु पोतपोतानां वस्त्र लइ कुमरने कहेती हवी के तुं राजपुत्र ठो, एवो अमें निश्चय कर्यो माटे आ खड्गरत्न आपीयें ठैयें ते ले. एनाथी युद्धमां तहारो जय थशे तथा आ कंचुकरत्न आपीये ठैयें ते तुं तहारी स्त्रीने आपजे. तथा अमारा वचनथकी शीघ्र राज पामीश. एवी आशीष देइ देवांगनाउ पोतपोताने स्थानकें गइ.

प्रनातें खड्गरत्न लइने कुमर चाल्यो, आगल जातां एक नगरी दीठी. तेमां घरहाट प्रमुख सर्व विविध वस्तुयें नरेलां ठे, पण कोइ मनुष्यने दीठुं नहीं. तेवारें आश्चर्य पामतो राजाना महेलमां गयो. तेनी त्रीजी नूमियें चड्यो तिहां एक मनोहर रूपवंती कन्या तेणे दीठी, कन्यायें पण कुमरने देखी उठी उन्नी थइ बेसवानुं आसन मूक्युं, तेना उपर कुमर बेठो. पठी कन्या

प्रत्यें पूछवा लाग्यो के था कयुं नगर ठे? एनी शी हकीगत ठे? अने तुं पण एकाकी इहां केम रही ठो? ते मने समजाव.

तेवारें कन्या हाथ जोडी कुमरप्रत्यें कहेवा लागी के हे महापुरुष! सांजल. एनुं वृत्तांत कहुं बुं. सावत्तिनगरीना विजय नामें राजा तेनी अनं गलेखा नामें हुं पुत्री बुं,एकदा हुं गवाक्षे बेठी हती,तेवारें जयंतनामा वि द्याधरें मुजने दीठी, ते कामविह्वल थइ मुजने तिहांथी अपहरीने इहां पुर स्थापना करी आणी मूकी ठे. अने मुजने कहे ठे के तुं महारीसाथें पाणिग्रहण कर. हुं आ नगरनुं राज्य पालतो थको तहारी साथें जोगजो गवतो रहीश. ते विद्याधर विवाहनी सामग्री करवा गयो ठे. आज काल आवी बलात्कारें महारुं पाणिग्रहण करशे. पण पूर्वे मुजने महारा पिताने घेर ज्ञानवंत मुनिराजें कह्युं ठे के प्रियदत्तराजानो पुत्र हरिवाहन नामें ठे, ते ताहारो पति थाशे. ते मुनिनुं वचन खोटुं थाय ठे,तेनुं पण मुजने महोटुं डुःख लागे ठे, के एवा महानुजावनां वचन केम व्यर्थ थाय ठे?

तेवारें हसी करीने कुमर कहे ठे के हे सुभ्रु! एवा विद्याधरने मूकीने ह रिवाहनना पाणिग्रहणने शुं वांठे ठे? हंसली हंसने मूकी बगलाने केम वांठे? माटे हरिवाहनने मूकी विद्याधरसाथें पाणिग्रहण कर, हवे कुमरनुं रूप, तेज, वचनचातुर्य, देखी कुमरीयें विचार्युं जे रखे ने ए हरिवाहनज महारा जाग्ययोग्यें खेंचाइ आव्यो होय,तो केम? ए पण एवां वचन कही महारी परीक्षा करतो हशे शुं? एम चिंतवी कुमरप्रत्यें कहेवा लागी के, हे स्वामिन्! तमें जूउं महारो चित्तोल्लास तेवोज थाय ठे, माटे जाणुं बुं जे हरिवाहन ते तमेंज ठो,तो हवे महारी उपर कृपा करी आपणो वंशादिक प्रगट करो. जेम मुजने हर्ष उपजे एवी वार्त्ता करे ठे, एवामां तो शरणा इ नफेरी प्रमुख तूर्यनाद थयो, ते सांजली कुमरीयें कह्युं, हे स्वामी! शीघ्र नासो, शीघ्र नासो. जेमाटे जयंतिविद्याधर आव्यो ते महाडुष्ट ठे तमोने मारी नाखशे. माटे तमे हवे लगारमात्र विलंब म करो.

कुमरे कह्युं हे सुभ्रु! तुं चिंता म कर. महारुं बल जोजे कहेवुं ठे? एवा मां तो विद्याधर आव्यो, ते कुमरने देखी कोपाकुल थइ बोल्यो अरे महारा अंतःपुरमांहे कोण आव्यो ठे? कुमर बोल्यो, श्रीइंद्रदत्तराजपुत्र हरिवाहन आ कुमरीनुं पाणिग्रहण करवा आव्यो ठे. जो तुजने युद्ध करवानी इछा

होय तो आव महारी साहामो. जो के महारा हाथ कहेवा ठे ? एवुं सांज्ञ
ळीने कुमरनी साथें युद्ध करवा माटें ते विद्याधर खड्ग लइ आव्यो, कुमरें स
फरत्नें करी तेनी तरवारना वे कटका करी नाख्या. ऊंचो उछली मुष्टि
प्रहारें मायानो मुकुट जांगी चोटली जाली हेगो नाखी तेना हृदय उप
चडी वेगो. तेवारें विद्याधरें कह्युं, हे महापुरुष ! मूक. मूक. वले करीनेज में
तहारुं कुल जाणी लीधुं. माटे सुखें तुं ए कन्यानुं पाणिग्रहण कर. अने आ
नगरीनुं राज्य पण तुंज जोगव. मुजने तहारो मित्रकरी लेखव. कुमरे तेने मू
क्यो तेवारें ते कुमरने पगें लागी घणो जक्तिजाव देखाडी वैताढयें गयो.

हवे कुमरें अनंगलेखानुं पाणिग्रहण करी ते अप्सरायें आपेलुं कंचुक
पहेराव्युं तिहां तेनी साथें विपयसुख जोगवतो ते नगरीनुं राज्य पाले ठे.
सुराज्यें करी गामगामनां लोक आवी तिहां वस्यां. नगरी एवी संकीर्णथ
इ के मांहे तिल पडवा जेटली पण जगा मले नहीं. एवुं नगर वस्युं, तेनुं
विद्याधर नगर एवुं नाम दीधुं. हवे ते नगरनी पासें एक रेवानदी ठे, तिहां
हरिवाहन राजा अनंगलेखानी सायें जलक्रीडा करवा गयो ठे. अनंगलेखा
पण कंचुकादिक नवां वस्त्रने नदीना तट उपर राखी जलक्रीडा करवा पा
णीमां पेठी ठे, घणी वार जलक्रीडा करी पाठी आवी जींजेलां वस्त्र उतारी
नवां वस्त्र पहेरवा लागी एवामां एक मत्स्य आवीने ते कंचुकरत्ननी मां
हे पद्मराग नामें रत्न ठे, तेने विषे मांसनी बुद्धि आणी गलामांहे उतारी
गयो. तेनी पाठल घणा सुजटो दोड्या पण मत्स्य पाणीमांहे अदृश्य थइगयो.

ते राणी कंचुकने डुःखें डुःख करती रहे राजा पण डुःख करवा लाग्यो
हवे ते मत्स्य तिहांथी दूरदेशें वेनानदीने तटें महापुरी नगरी ठे तिहां न
रकुंजरराजा ठे ते जलक्रीडा करी मंत्री प्रमुख परिवारसहित क्रीडा पर्वत
उपर वेगा ठे, एवामां एक माठीयें आवी तेमनी आगल कंचुकरत्न मूक्युं
अने राजाने कह्युं आज महोटो मत्स्य आव्यो हतो, तेना उदरमांहेथी
ए कंचुकरत्न नीकल्युं ठे, राजायें विचार्युं जेनुं ए कंचुक ठे, ते स्त्रीरत्ननुं
रूप पण केहेवुं हशे ? एम राजा कंचुकने देखी कामें पीडित थयो, अने
माठीने प्रसाद दान आपी विसर्जन कर्यो.

हवे राजा कामज्वर पीडित थयो थको मंत्रीप्रत्यें कहेवा लाग्यो के हे
मंत्री ! तुं जो मुजने जीवाडवो वांठतो होय, तो आ कंचुकनी पहेरनार स्त्रीने

पेदा कर. मंत्रीयें ते स्त्रीने मेलववा माटे घणा उपाय कस्या, पण शोध पाम्यो नहीं. तेवारें सातदिवस उपवास करी राज्यनी अधिष्ठायिका देवी आराधी. ते देवी प्रगट थइ कहेवा लागी के, सर्वथा ए वात तमें करशो नहीं केम के ए हरिवाहन राजानी अनंगलेखा नामें स्त्री ले, हजी सर्पनी मणि लेवानी हिम्मत चाले, पण ते स्त्रीनुं शीलरत्न लेवाय नहीं. तेने मंत्रीयें कह्युं एक वार ते स्त्री मने आणी आप. पछी राजा ले, ने ते स्त्री ले. एवुं प्रधाननुं बोलवुं सांभलीने देवीविद्याधर पुरें आवी तिहां अरिहंतनी प्रतिमानी पूजानेविषे प्रवर्त्तमान थयेली अनंगलेखाने दीठी, तेवीज तिहां थी अपहरीने नरकुंजर राजाना घरनेविषे लावी मूकी पछी मंत्रीनी विदाय गीरी मागीने देवी पोताने स्थानकें गइ.

नरकुंजर राजा आवी कहेवा लाग्यो के, हे प्रिये! आ तहारुं कंचुक देखी कामें पीडित थइने में देवांगनाने हाथे तुजने इहां अणावी ले, माटे हवे तमें महारी साथें कामभोग करवाने प्रवर्त्तो, यौवन सफल करो.

अनंगलेखायें कह्युं जो मुजने हाथ लगाडीश तो तहारुं मरण ले माटे साडा त्रण हाथ दूर रहीने माहारी साथें वात कर. राजायें विचार्युं एने एना धणीनो ताजो विरह थयेलो ले माटें ए एम कहे ले, पण विलंबे सिद्ध थाशे. एवुं विचारी राजा पालो वली गयो. अने तें स्त्री अश्रुपातें भूमिका सींचती हरिवाहननुं रूप आलेखी तेहुं मुखडुं जोती रहे ले.

हवे पूर्वेला हरिवाहनना बे मित्र एक तो सुतारनो पुत्र, अने बीजो शेठनो पुत्र, ए बे जण हस्तीना भयथकी हरिवाहनने एकला मूकी नाशि गया हता, ते दूर देशांतर भमतां भमतां विंध्याचलनी अटवीमां गया, तिहां तेणे वंशजालमांहे नीचुं मुख अने उंचा पग करी धूम्रपान करतो हाथमां जपमाला लइ जाप करतो थको एक पुरुष दीठो, ते पुरुष पण मनुष्यनो संचार जाणी मंत्रजाप पूर्ण थये थके बाहिर आवी बेहुप्रत्यें कहेवा लाग्यो के, हे महापुरुषो! तमें कोण लो? इहां केम आव्या लो? एवुं सांभलीते बेहु जण बोल्या, हे वीर पुरुष! कुलादिक पुलवानुं शुं काम ले! अमे दैवयोगें भमता भमता इहां निकली आव्या लेयें, तहारे जे काम होय ते कहे. तेवारें विद्याधरें कह्युं हुं त्रिलोकी विद्या साधुं लुं. तेनी में पूर्वसेवा तो करी ले, हवे उत्तरसेवाने विषे तमें उत्तरसाधक थाउ, के जेम महारे वि

या सिद्ध थाय. एवुं सांभळी ते बेहु जण उत्तरसाधक थया. अने विद्याधर उत्तरसाधक पामीने होमपूर्वक विद्या साधवा मांमी, ते थोडे दिवसें वि द्यासिद्धि पाम्यो. तेवारें विद्याधरें कह्युं तमो बेजण थकी मद्वारी विद्यासि द्ध थइ हवे तमोने शुं आपीने हुं कृतकृत्य थाउं? एम कही एक रूप परावर्तनी अने बीजी अंजनसिद्धि, त्रीजी वैरीसैन्यविमोहिनी, चोथी विमा नकारिणी, ए चार विद्याउ आपीने विद्याधर गयो. ते गगनवल्लभ नगरने विषे जइ वैरीने जीती पोतानुं राज्य कबजे करी राज्य सुखे भोगववा लाग्यो.

हवे ते शेठपुत्र तथा सूतार पुत्र बेहु जण नमता नमता बेना नदी ने तटें आव्या, तिहां लोकोना मुखथी अनंगलेखानी वात सांभळी ते स्त्री ने जोवा वांछता अंजने करी अदृश्य थइ अनंगलेखानी पासें आव्या ति हां जुवे ने, तो ते हरिवाहननुं रूप आलेखी तेनुंज ध्यान करती रहेली दीठी. पछी ते बेहु जणें तेनी परीक्षा करवा निमित्तें हरिवाहननी छबीनो पट्ट अपहरि लीधो, ते पट्ट गयो जाणी वळी घणुं डुःख करवा लागी ते ने बेहु जणे कह्युं तहारुं डुःख शुं ने? अमनें कहे तो अमें टाळीयें. तेवा रें तेणें हरिवाहननुं प्रथमथी मांमीने पाणिग्रहणपर्यंत सर्व वृत्तांत लखी देखाड्युं. ते वांचीने बेहु जणे पोताना मित्रनी स्त्री जाणी आवी पगें ला ग्या, अने कहेता हवा के तुं कशी वातनी चिंता करीश मां. अमें तहा रा पतिना मित्र बैयें. एवुं कहीने पछी बेहु जण राजानी सनायें गया, राजायें तेमने आसन आपी बेसाड्या, अने पूबवा लाग्यो के तमें क्या देशथकी आव्या बो? वळी ज्ञान विज्ञान कांइ जाणता हो, तो मने क हो. एवुं राजानुं वचन सांभळी ते बोल्या अमो नोगवती नगरीथकी आव्या बैयें. मोहनी अने वशीकरणी प्रमुख घणी विद्याउ जाणीयें बैयें. तमारे कोइ काम होय ते कहो, तो ते अमें करी आपीयें.

राजायें तेमने एकांतें तेडीने कह्युं के आ अनंगलेखा स्त्री मने वश करी आपो. तेवारें तेणे एक चूर्ण काढीने राजाने आप्युं अने कह्युं के, ए चूर्णनुं तिलक करी ए स्त्रीपासें जाजो, तो तमारे वश थाशे. एवुं तेमनुं कथन स त्य मानी राजा तिलक करी स्त्री पासें गयो, तिहां हरिवाहनना मित्रोयें पूर्वे कही मूकेलुं हतुं ते संकेतप्रमाणें अनंगलेखा उठी थइ राजानी मा हामी चाली आवी, तेने राजायें भोगनी प्रार्थना करी तेवारें अनंगलेखा

कह्युं म्हारे श्रीअष्टापदजीनी यात्रा करवानो अभिग्रह छे. ते पूर्ण था
तो पछी तमें जेम कहेशो, तेम करीश. राजा पोतानो अर्थ सिद्ध थयो
राणीने पहेला वेहु जण पासें आवी ते वात कही. तेवारें ते वेहु जणे कह्युं
में कांइ चिंता म करो. अमें एने अष्टापदनी यात्रा तरत करावी तमारी
पासें लइ आवशुं, कारण अमारी पासें आकाशगामिनी विद्या छे तेथी व
ीश कोश उंचे चडतां अने अष्टापदें जतां आवतां कांइ पण विलंब ला
शे नहीं. एवुं कही विमाननी रचना करी, तेमां अनंगलेखाने वेसाडी
वेमानने आकाशमार्गें चडाव्युं. पछी आकाशें रह्यांथकां कहेवा लाग्या के,
अमो वे जण हरिवाहनना मित्र छेयें अनंगलेखाने लइ जाइयें छेयें. जो
तमारामां शक्ति होय, तो अमारी सामा आवो.

ते सांजली राजा पोताना सुजटोने कहेतो हवो के, अरे सुजटो! तमें
एने पकडो. ए स्त्री लइ जाय छे पण आकाशगामिनी विद्या कोइ पासें न
होवाथी सर्व सुजट हारी पाछा वली आव्या, राजा निराश थइ वेठो, ते
वारें पहेला वेहु जण वली विमानमांहेथी उतरी अंजनविद्यायें करी राजा
ना घरथकी वे कन्याउने अपहरी विमानमां वेसाडी लइ चाल्या, ते वि
द्याधरनगरने उद्यानें आव्या, तिहां सर्व लोकोने शोकातुर दीठां. तेवारें
लोकोने पूछवा लाग्या के, केम आहीं सर्व लोक शोकमय देखाय छे तेने
कोइकें कह्युं के अनंगलेखा राणीना विरहथी अमारो राजा सशोक छे, ते
माटें राजाना शोकने लीधे लोक पण सशोक छे.

हवे श्रेष्ठीपुत्र सिद्धपुरुषनुं रूप लइने राजसनायें गयो, तेने राजायें
पूछ्युं तहारामां शी शी विद्याउ छे? तेणें कह्युं महारी पासें तो घणी वि
द्याउ छे, तमारे जे अर्थ होय ते कहो. राजायें कह्युं महारी स्त्री अनंग
लेखा आणी आपो. तेवारें ते सिद्धपुरुष पूर्वें सुतारनी सायें संकेत कस्या
प्रमाणें पछेडी उढी ध्यानमां वेठो के तरतज विमाने वेठीथकी अनंग
लेखा तिहां आवी. तेने देखीने राजा घणुंज हर्ष पाम्यो. विमानथकी अ
नंगलेखा वे कन्याउनी सायें उतरी राजाने पगे लागी राजा चमत्कार पाम्यो
थको सिद्धपुरुषने कहेतो हवो के हवे मने महारी स्त्री तो मली पण म
हारा वे मित्रोनो सायें वियोग थयेलो छे, तेनो मेलाप करी आपो, तो
हुं आपनो महोटो उपकार मानुं. एवो राजानो पोतानी उपर प्रेम देखी

ते बेहु मित्र पोतानुं मूलरूप प्रगट करी राजाने पगे लाग्या. राजायें आनंदयुक्त थकां विचार्युं जे विधाता अनुकूल होय तेवारें सर्व अनुकूल थाय.

पढी राजायें बेहु मित्रो पासें पोतानी सर्व वार्त्ता मूलथी मांमी कही, तेमणें पण पोतानी सर्व हकीगत कही. त्रणे मित्र परस्पर प्रेमथी रह्या. बे कन्या आणी ते बेहु मित्रने परणावी, पढी पोतानी शक्तियें घणां राजाने जीती मित्रने बीजा देशोनां राज्य आपी पोतें विद्याधरपुरनुं राज्य पालतो विचरे.

हवे इंद्रदत्तराजा वृद्ध थयो, तेवारें हरिवाहनकुमरने पोतानी पासें बोलावी रूडुं मुहूर्त्त जोवरावी राज्यपाटें थाप्यो. पोतें दीक्षा लइ घणुं तप तपी कर्मक्षय करी शाश्वतुं मुक्तिनुं राज्य लीधुं.

पितायें जेवारें दीक्षा लीधी, तेवारें हरिवाहन, बे मित्र अने अनंगलेखा ए चारे जणे सम्यक्त्वसहित श्रावकधर्म आदर्यो. पढी हरिवाहन राजा तीर्थयात्रा, रथयात्रा, अष्टाह्निक, अन्नपदान पट्टह, जिनप्रासादबिंबप्रतिष्ठादिक अनेक उत्तम कार्य करी श्रीजिनशासननो प्रभाविक थयो.

एक सहस्र वर्ष वीत्या केडें उद्याननेविषे केवली भगवान् पधार्या, उद्यानपालें वधामणी आपी तेने हर्षदान देइ राजा हरिवाहन पोताना बे मित्र तथा अनंगलेखा सायें वांदवा गयो. धर्मदेशना सांभली संसारथकी निर्वेद पाम्यो थको पूछवा लाग्यो के कहो स्वामी! म्हारुं आयुष्य केटलुं छे? केवलीयें कह्युं तहारुं आयुष्य नवप्रहर मान छे, ते सांभली राजा धूजवा लाग्यो के हा!!! हवे नवप्रहर मांहे हुं म्हारुं शुं आत्मसाधन करीश! केवलीयें कह्युं चिंता म कर. हजी कांइ विणश्युं नथी तुं तरत दीक्षा ले ॥ यतः ॥ अंतोमुहूत्तमित्तं, विहिणाविहिया करेइ पवज्जा ॥ पुव्वाणं पकोडिं, चिरकाल कयाइं किं भणिमो ॥ १ ॥ कंचणमणि सोवाणं, थंभसहस्सुसियं सुवन्न तलं ॥ जोकारिज्ज जिणहरं, तउवि तव संजमो अहिउं ॥ २ ॥ केवलीयें एवुं कह्या नंतर पोताना विमलवाहन पुत्रने राज्य आपी राजायें मित्रद्वय तथा अनंगलेखानी सायें दीक्षा लीधी संसारथकी निर्वेद पाम्यां भावना भावतां हुउ, के धन्य ए गुरु के जेणें हुं संसार समुद्रमांहे बुडतां बाहिर काढ्यो तथा अनित्यादिक बार भावना भावतो रह्यो एवामां अकस्मात् मस्तकें शूल वरनुं घणी वेदना थइ तो पण चित्तिस्थानी वांग्रा थी नहीं. मनमां विचार्युं जे रूडुं थयुं के पाछला भवनां करेलां कर्म दूर

य आव्यां, तेने जोगवीने रण उतारुं छुं एम वेदना अहियासतो शुन ध्या नें काल करी सर्वार्थसिद्धविमाने तेंत्रीश सागरोपमने आउखे देवता थयो. तिहांथी चवी महाविदेहमांहे उत्तमकुल पामी दीक्षा लइ मोक्षें जाशे. त था बे मित्र अने अनंगलेखा पण माहाविदेहमां मोक्षें जाशे. ए त्रीजा निर्वेद लक्षणनी उपर हरिवाहनराजानी कथा कही ॥ ३ ॥

हवे समकेतनुं चोथुं लक्षण अनुकंपा छे, ते कहीयें छेयें. (डुहिए दया णुकंपा के०) डुःखीया प्राणीने विषे जे दया करवी, तेने अनुकंपा कही यें ते अनुकंपा बे प्रकारें छे. एक द्रव्यथकी अने बीजी जावथकी तेमां पोतानी शक्तिने अनुसारें द्रव्यादिक आपीने आगलानुं डुःख टालवुं ते द्र व्यथकी अनुकंपा जाणवी अने जावथकी तो आर्द्रहृदय थाय जे अरे आ डुःखी जीव छे, हुं एनुं डुःख नांजी शकतो नथी? एवुं मनमांहे जावे ते जावथकी दया कहीयें ॥ यतः ॥ दठ्ठूणपाणि निवहं, जीमे नवसायरम्मि डुरकत्तं ॥ अविसेसोअणुकंपा, डुहावि सामहउं कुणइ ॥ १ ॥

हवे ए अनुकंपाने विषे जयराजानी कथा कहीयें छेयें. हस्तिनागपुरने विषे जयनामें राजा छे, ते एकदा सजा पूरी बेठो छे एवामां अकस्मात् लो कोने दोडतां दीठां, तेवारें राजायें वेत्रीने पूछ्युं ए लोक धाय छे, ते शुं छे ? वेत्रें समाचार लइ आवी राजाने कह्युं स्वामी पूर्वे तमारा पितायें प्र जातें एक स्वप्न दीठुं हतुं. ते स्वप्ननो विचार करी रूडेवानें सप्नमां जेहवा विचार कह्या हता. तेवां चित्रामण चितरावीने तेने लुगडाथी ढांकी रा ख्यां हतां, ते प्रतिदिन पूजाता हता हवे आज उन्मत्तशतामंद, गोविंद, ध रणीधर, प्रमुख कुमरें लुगडुं उघाडी ते चित्र जोयुं तेथी ते त्रणे कुमर तत्काल अचेत थयाथका पड्या छे. तेने जोवा माटें लोक दोडे छे.

ते सांजलीने तेनो प्रतिकार करवा माटे राजा तिहां गयो, ते पण मू र्त्ति देखतांज मूर्छा खाइ पडी गयो, तिहां मंत्री प्रमुख परिवारें मली शी तलोपचारें करी राजाने सावधान कर्यो. कुमरो पण सावधान थया, प छी राजा स्वस्थ थइ दंतधावन करी सजामां आवी बेठो. मंत्रीश्वरें राजा प्रत्यें पूछ्युं, स्वामी! मूर्त्ति देखीने त्रण कुमर तथा तमोने मूर्छा आवी तेनुं कारण शुं हशे ? राजायें प्रधानने कह्युं सांजल. एनुं घणुं वृत्तांत छे ते कहुं छुं

विजयवर्द्धन नगरें शार्दूल नामें राजा तेनी निंदा नामें जार्या, तेनो चं

द नामें पुत्र हतो. तेने पुरोहितनो पुत्र विष्णु अने मंत्रीनो पुत्र सुबुद्धि त था श्रेष्ठीनो पुत्र शंख, ए त्रणे जणनी सार्थे मित्राचारी हती प्रतिदिन एकठा रमे, एकठा जमे अने एकठा जमे. अन्यदा अश्वक्रीडायें करी परिश्रांत को राजानो कुमर महोटा आंबाना वृक्षनी हेठे वीसामो लीये ले. एवा एक कापालिक आव्यो तेने कुमरें नमस्कार कीधो. कापालिकें आशीर्वा दीधो जे तुं नागलोकनी स्त्रीनो नाथ थाजे. तेवारें कह्युं हुं मनुष्य बुं, नागलोकनी स्त्रीनो स्वामी शी रीतें थावं? योगीयें कह्युं गुरुना प्रसादथी शुं न थाय? सर्व चिंतव्या पदार्थ थाय. जे पृथ्वीमां भ्रमण करे, ते स कांइ पामे, पण जे कूपना देडका सरखां होय, ते कांइ पण न पामे? ए योगीनां वचन सांभली मंत्रिपुत्रनी सार्थे कुमर घेर आव्यो.

रात्रे कुमरें आवी योगीने पूछ्युं के स्वामी! नागलोकनी स्त्री शी री पामीयें. योगी कहे सांभल. वंध्याचल नामा पर्वतें सुवेल नामा यक्ष प्रासाद ले. तेनी पाछी नीतें गुफा ले तिहां नागस्त्री घणी ले. तेनो नाथ तुं थाइश. एवो हुं तहारुं सौभाग्य देखुं बुं. एवुं सांभली कुमर कामवश थयो थको पिताने पूछयाविना त्रण मित्रसहित योगीनी सार्थे जवा ला ग्यो तेने त्रण मित्रें कह्युं के, हे कुमर! तुने योगीनो विश्वास करवो योग्य नथी ॥ यतः ॥ न नारिषु न मूर्खेषु, न विरोधिषु शत्रुषु ॥ नचाविज्ञातशीले पु, विश्वसंति विपश्चिताः ॥ १ ॥ नवितव्यताने योगें ते त्रण मित्रोनां व चन अवगणीने कुमार ते योगीसार्थे चाल्यो. अनुक्रमें विंध्याचलें गया, ति हां योगीयें चार बोकडा वेचाता लीधा. ते चार जणने एकेको बोकडो आप्यो. अने कह्युं के सर्व जण एकेको बोकडो मारीने यक्षनी पूजा करी. पछी आंख मीचीने पगे लागो, के जेम साध्य सिद्ध थाय.

तिहां त्रण जणा तो योगीनुं वचन मानी बोकडाने मारी आंख मीची यक्षनें पगें लाग्या अने श्रेष्ठीपुत्रें तो पापथकी नयपामी गमनो व ध न कस्यो. योगीयें तरवार काढी ते त्रणेनो शिरछेद कीधो. अने श्रेष्ठी पुत्र शंखने पण योगी मारवा लाग्यो, तेवारें यक्षें कह्युं हे पापिन्! एने मारीश नहीं, कारण के एणे तहारुं कथन कीधुं नथी एणे बोकडो मार्यो नथी. एतो जीवदयावान् पुरुष ले, तेमाटे एने मारीश नहीं. एवुं कहेय के योगी यक्षने मनाववा गयो, एटलामां श्रेष्ठीपुत्र शंख ते बोकडाने ल

ने नाशी गयो. वोकडाने जीवतो सुगमें मूकीने विचार्युं जे ए त्रणे मित्रें पाप कीधुं तो ते पापनुं फल पाम्या. पण हवे हुं म्हारा स्वजनने मुख शुं देखाडुं ? माटें जिहां कोइ मुजने उलखे नहीं एवी नूमियें जतो रहुं. एम चिंतवी आगल चाल्यो, तेने नाग्ययोगें मार्गमां सुबुद्धि नामें श्रावक मल्यो, तेनी आगल पोताना डुःखनी वात कही, त्यारें श्रावकें कयुं धन्य ठे तुजने के तें जीवदया पाली पोतानो आत्मा उगार्यो. हवे तुं धर्म मूकी श मां. एम मारगमां बेहुने मित्राइ थइ. श्रावकें तेने चौद पूर्वनुं सारनूत एवुं पंचपरमेष्ठीनुं स्मरण आप्युं, अने कयुं जे एनुं स्मरण करवाथी तुजने इहलोकें तथा परलोकें रूडुं थाशे.

एम ते एकठा पंथें चाल्या जाय ठे एवामां मार्गे नीमनामें पल्लीपतिनी धाड आवी, तेणें सथवारो लूंट्यो, घणां लोको नासी गयां. तथा मराणां अने ए शंख प्रमुख दश वंदीवानो पकडाया. तेने पल्लिपतिपासें लइ गया, पल्लिपतियें कयुं जार्ज. एमने देवीने देहरे राखो. जेवारें अगीयारमो नर मलशे. तेवारें देवीने बलि आपीशुं. एम कही राख्या. हवे शंख पोताना मुखयी नवकारमंत्रनुं स्मरण मूके नहीं गण्याज करे. एम करतां अगीयारमो पुरुष पण कोइ स्थल थकी आव्यो तेवारें अष्टमीने दिवसें चामुंमानी आगल अग्यार जणने वली देवामाटें उना कीधा. तेमने अंघोल करावी तरवार तैयार करे ठे. एवामां पोकार करतो पल्लिपतिनो माणस आव्यो के, स्वामी ! धार्ज, धार्ज. तमारो पुत्र नूतग्रस्त थयो ठे, मरणदशानी ढूकडो आव्यो ठे, ते सांजलतां वार पल्लिपति तिहां गयो. तेवारें शंख नवकारमंत्रनो महिमा जाणी चोकीदारने कहेवा लाग्यो के अमो अगीयार जणने तमें जीवता मूको. तो ए तमारा पुत्रने हुं जीवाडुं. पल्लिपतियें कयुं एने तेडी लावो. शीघाइर्ड आवी शंखने तेडी गया. हवे शंखें तिहां मंमलरचना करी पलेडी वंढी कमलबंधन नमस्कार जाप करवा लाग्यो, तेना महिमायकी नूतडुं नासी गयुं. कुमर उठी वेगे थयो. पल्लिपतियें तेने खोलामां लीधो, नवो जन्ममहोत्सव कीधो. शंखना कहेवाथी दश वंदीवानोने जमाडी वस्त्र आपीने पल्लिपतियें ढोडी मूक्या. अने निरपराधी जीवोनो हवेथी वध करवो नहीं. एवो पडह वजडाव्यो. ते दिवसथी पल्लिपति ते शंखने गुरुनी पेरें आराधवा लाग्यो.

एकदा प्रस्तावें शंखना मात पितायें पोताना पुत्रनी खबर पामीने तिहां तेडुं मोकल्युं पल्लिपतियें घणा आमंबरसहित तेने घेर पहोंचतो कीधो. ते आवी पोतानां मातपिताने मल्यो, त्रणे मित्रनुं स्वरूप कह्युं. राजा प्रमुख सर्व लोक डुःख करवा लाग्यां. तिहां शंख गुरु समीपें शुद्ध धर्म पामी शुनकार्यामां इव्यव्यय करतो घणी श्रीजिनशासननी उन्नति करतो जीवदया मां तत्पर थयो. एम घणुं पुण्यकर्मोपार्जन करी मरीने देवलोकें देवता थयो.

ते देवनुं जेवारें शेष स्वल्पायु रह्युं, तेवारें गुरुने पूठ्युं नगवंत ! हुं बोध बीज केम पामीश ? गुरुयें कह्युं हस्तिनागपुरें शूरराजानो पुत्र जय एवे नामें तुं थाइश. तिहां चित्र जोतां जोतां त्रण मित्रनी सार्थे तुं प्रतिबोध पामीश. ते वात गुरुनी पासेंथी सांजलीने ते देवता शूरराजा पासें आव्यो, अने राजाने कह्युं के तमारी नींतने विषे माहारा पूर्व वृत्तांत आलेखवो, तेणे महारा स्वप्न पाम्याथकी महारुं तथा महारा त्रण मित्रनुं पूर्ववृत्तांत चितराव्युं तेने लूगडांथी ढांकी मूक्युं, अने हुं शंखनो जीव देवलोकथी चवी आहीं शूरराजानो पुत्र थयो छुं. तथा ए त्रणराजपुत्र महारा पूर्व नवना मित्र ते पण ए चित्र देखी मोह पामी. जातिस्मरण पाम्या अने मुजने पण जातिस्मरण उपनुं तेणें करी में महारुं समस्त पूर्वनव वृत्तांत कह्युं. तिहां समस्त लोक राजानो तथा त्रण मित्रनो पूर्वनव सांजली दयाने विषे तत्पर थया. सर्व लोको नवकारमंत्र तथा जीवदयानी आस्ता आणी धर्म करवाने प्रवर्त्त्या. पठी ते जयराज त्रण मित्रनी सार्थे गुरुनी समीपें चारित्ररत्न पामी आराधक थइ अनंतसुखनुं नाजन थयो. ए समकेतना चोथा अनुकंपा लक्षणने विषे जयराजानुं चरित्र कह्युं.

हवे पांचमुं आस्तिक्य नामें समकेतनुं लक्षण कहे छे.

(अइक्कमछिजिणवयणे के०) श्रीजिनेश्वरना वचन उपर जे आस्था राखे, तेने आस्तिक्यता कहीयें ॥ यतः ॥ मन्नइ तमेव सवंमि, सकजिणेहिं पसुत्तं ॥ सुहपरिणामो सम्मं, कंखाइवि मुत्तिया रहिउं ॥ १ ॥ ४५ ॥

ए आस्तिक्यने विषे पद्मशेखरनी कथा कहीयें छैयें. आ नरतक्षेत्रने विषे पृथ्वीपुर नगरें पद्मशेखर नामें राजा राज्य करे छे. तेणें श्रीविनयंधरसूरिनी पासेंथी जीवादिक नवपदार्थनो विचार लेइ वज्रलेखनी पेरें श्रीजिनवचन ऊपर आस्ता राखी छे. ते राजा प्रतिदिन सजायें बेगे थको गुरु

ना गुणवर्णन करे. तेथी पण जीवने धर्मउपर, गुरु उपर तथा श्रीजिन वचननी उपर श्रास्ता श्रावे. परंतु एक श्रेष्ठीनो पुत्र विजय नामें छे ते राजा प्रत्यें कहे के जे ए साधुनी गुणस्तुति करे छे ते सर्व पलाल फूलनी परे छे, एवा ते वली जगतमां कोण छे के जे पांचे इंद्रियना विषय जीती शके? ते माटे ए सर्व यतिउंनी कपटाइ छे माहारो तो ए अभिप्राय छे के दुःखी या जीवने मारीयें तो ते मास्या थका पूर्वकर्मवेदीने जवांतरें सुगति पामे.

हवे ते विजयने प्रतिबोधवा माटे राजायें पोताना यक्ष एवे नामें अंतरंग पुरुषने कह्युं के ए विजयनी सायें तुं मित्राइ करी तहारा उपर विश्वास उपजाव. पछी तेणे तेम करीने जेम ए विजय न जाणे, तेवी रीतें विजयना रत्नकरंभकमांहे राजानुं आजरण मूक्युं. राजायें पडह वजडाव्यो जे महारुं आजरण गयुं छे माटे जेना घरमांहेथी निकलशे तेने हुं चोरनो दंम आपीश. तेमाटें जे कोइ जाणो तो मने आवी कहेजो, जे कहीने पाछुं आपशे तेनी उपर दंम नथी. हवे जेवारें कोइयें पण आवीने राजाने न कह्युं तेवारें राजायें पोताना सुजटो मोकलावीने घेर घेर शोध करी ते शोध करतां विजयने घरे करंमीया मांहेथी आजरण निकल्युं, तेवारें राजायें विजयने तेडावी पूछ्युं, तें केम महारुं आजरण चोर्युं ? विजयें कह्युं हुं जाणतो पण नथी. राजायें कह्युं जे चोर होय, ते क्यारे पण पोताना मुखें माने नहीं. एम कही राजायें तेने मारवानो हुकुम आप्यो. एवो अकस्मात् चोरीनुं कलंक चडे उते मरवाना जयथी कंपतो एवो जे विजय ते पोताना यक्षनामें मित्रने कहेवा लाग्यो के तुं महारो मित्र ठो, माटें हमणां मने गमे ते उपाय करीने जीवतो रखाव. दंम परठीने पण जीवतो रहुं तेम कर.

तेवारें यक्षमित्रें राजानी आगल जइ कह्युं के स्वामी ! विजय कहे छे, के हुं तमारा आजरणनी वात जाणतो पण नथी. महारे माथे फोकट कलंक चड्युं छे, माटें महारी पासेंथी दंम लइने मने मुक्त करो. ते सांजली राजायें कह्युं अरे यक्ष ! ए विजय कहे छे, के दुःखीया जीवने मारी नाखीयें तो मस्या थका ते जीव पोतानुं कर्म जोगवी सुगति पामशे, तो ए पण रूडुं छे, जे ए विजयपण मस्यो थको सुगति पामशे. जेमाटे विजयना कहेवा प्रमाणे जीव तो मरवा माटे यांत्रेज छे, तो हवे विजयने मरवा माटें शी हरकत छे ? एमां एने शा वास्ते आटलुं थयुं दुःख लागे छे ? अने प्रपं

च करवो पड़े छे ? दंम आपवो पडे छे ? ए वात यहें आवी विजयने कही तेवारें विजयें कह्युं आवी रीतें मरण पामीने मने सुगति जोश्ती नथी माटे जेम तेम करी मने जीवित दान अपाव. ते सांजली वली पण यहें आवीने राजाने वीनव्यो के स्वामी विजय तो कहे छे, के मुजने मरण थकी जीववुं घणुं वह्लन छे, तेमाटे एने मूकी द्यो. त्यारें राजायें कह्युं महारा घरथकी एक तेलनुं जरेलुं जाजन लइ आखा नगरमां जमवुं अने तेमांथी एक तेलनो बिंडुमात्र पण नीचें पडवा न देतां तेवुंनुं तेवुं जाजनमहारी आगल पाछुं आवी मूके, तो हुं जीवतो मूकीश. तेणे ते वात कबूल करी.

पछी राजायें समस्त नगरलोकने कहेवराव्युं के चहूटे चहूटे शेरीयें शेरीयें वीणा, वेणु, मृदंग वजाडो. अने वेश्याउने कहेवराव्युं के तमें शोल शणगार सजी रस्तामां आवी नृत्य करो, मधुरस्वरें गीतगान करो. एवा राजाना हुकुम प्रमाणें सर्व कोइ कार्य करवामां प्रवर्त्तन थयां. एवामां विजयपण कंतसुधी जरेलुं तेलनुं जाजन लेइ रस्तामां निकल्यो, घणुये रसीयो हतो, पण मरणना जयथी मार्गे जातां वीणा वेणुनादें करी वेश्याने नाचवामां एणे काननो तथा नेत्रनो चालो कीधो नहीं, एनुं एक तेल मांहेज ध्यान रह्युं. जे रखे ने तेलनुं एक बिंडु पडी जाय ? जो बिंडु पडशे तो राजा मारी नाखशे. तेमाटें घणोज सावधानपणे तेलना जाजनने नगरने विषे जमाडी जेहवुं जरेलुं हतुं तेवुंने तेवुंज राजानी आगल आवी मूक्युं अने राजाने प्रणाम कस्यो. तेवारें राजा हसीने बोल्यो के अरे विजय ! तुं कहेतो हतो जे इंड्रियो चपल छे, तेने कोइ पण जीती शके नहीं, अने यतिउ कपट करे छे, तो हवे तें आजे इंड्रियोने केम जीती लीधीयो ? तेवारें विजयें कह्युं सर्वथकी मरणनुं जय महोटुं छे, में पण मरणना जयथी इंड्रियोनें जीती. एम सर्व जीवोने जीवितव्य वह्लन छे, मरणने कोइ वांछतो नथी.

हवे राजा पोतें दृष्टांत आपीने विजयने समजावे छे, राजा कहे छे के जेम तें मरणना जयें करी इंड्रियोवश कीधीयो, मरण थकी तुं बीहीनो, तेम ए यतिउ पण अनंता जवनेविषे मरण करवुं, तेना जयथी इंड्रिय जय करे छे. तेमाटें तुं कां नास्तिक थाय छे ? एम दृष्टांत आपी राजायें प्रतिबोध्यो थको विजयश्रेष्ठियें आस्तिकपणुं आणीनें श्रावकपणुं पडिवज्युं. ए रीतें पद्मशेखर राजायें घणा जीवोने युक्तिपूर्वक प्रतिबोध आपी श्रीजिनवचन उप

र थास्ता थणावी. एम श्रीजिनधर्मे थाराधि श्रीजिनवचन उपर थास्ता धरतो थंतें थनशन जइ सुरनिवनने विषे जइ देववृंदने प्रतिबोध देतो हुवो. ए थास्तिक्यनामा समकेतलक्षणने विषे पद्मशेखर राजानुं दृष्टांत कह्युं.

इति महोपाध्याय श्रीचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणितत्शिष्य श्रीरत्नचंद्रगणिविरचित श्रीसमस्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिका वालावबोधे सम्यक्त्वलक्षणस्वरूपनिरूपण नामाऽष्टमोधिकारः संपूर्णः ॥ ८ ॥

हवे छ प्रकारनी जयणा राखवी, तेनुं नवमुं थधिकार कहे छेः—

॥ परतिछियाणं तदे, वयाण तग्गहिय चेइयाणं च ॥ जं छव्विहवावारं, न कुणइ सा छव्विहा जयणा ॥ ४६ ॥ थर्थः—(परतिछि के०) परतीर्थी ते थन्यतीर्थी मिथ्यादर्शनी जे तापस पारिव्राजकादिक तेने तथा (तदेवयाण के०) तेना देव जे हरि, हर, ब्रह्मादिक तेहने तथा (तग्गहिय के०) तेणें ग्रहण कर्या एवा जे श्रीथरिहंतना (चेइयाणंच के०) चैत्य प्रतिमा तेने (जं के०) जे (छव्विहवावारं के०) षड्विध व्यापार एटले छ प्रकार नो व्यवहार (नकुणइ के०) न करे (सा के०) ते (छव्विहाजयणा के०) छ प्रकारनी जयणा एटले यत्ना कहीयें, एम सिद्धांतना जाण कहे छे.

हवें ते छ प्रकारनां नाम कहे छेः—

॥ वंदण नमंसणं वा, दाणाणुप्पयाणमेसि वज्जेइ ॥ थालावं संलावं, पुव्वमणालित्तगो न करेइ ॥ ४७ ॥ थर्थः—एक (वंदण के०) वंदन, बीजुं (नमंसणं के०) नमस्कार, (वा के०) वली त्रीजुं (दाण के०) दान थने चोथुं (थणुप्पयाण के०) थनुप्रदान (एसि के०) ए चार वानां परतीर्थि प्रमुखने विषे (वज्जेइ के०) वर्जे, तथा पांचमो (थालावं के०) थालाप थने छठो (संलावं के०) संलाप एवा छ प्रकार, ते पूर्वोक्त परतीर्थि प्रमुखने विषे न करवा. तिहां जे (पुव्वमणालित्तगो के०) प्रथम थनालापक एटले पहेलुं बोलाव्याविनानुं तेनी सायें बोलवुं,ते (ए करेइ के०) करे नहीं, एटले थणबोलाव्यो बोले ते थालाप कहीयें, जे कारण माटे बोलाव्या पछी तो श्रीगौतमस्वामीयें पण जगवती प्रमुख सूत्रनेविषे प्रश्नना उत्तर थाप्या छे, तथा मडुथा प्रमुख श्रावकें पण उत्तर थाप्या छे, एम जगवती प्रमुख सूत्रोनेविषे देखीयें छेयें ॥ यतः ॥ तेणं काले

णं तेणं समएणं समणजगवं महावीरे जावगुणसीलए चेइए समोसढे जा परिसागडीगया तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स जगवउ महावीरस्स जिठे अंतेवासी इंदजुइणामं अणगारे गोयमगोत्तेणं एवं जहा वित्तीयसए नियंठुदेसए जावनिस्कायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं जत्त पाणं पडिग्गहं इम पडिग्गाहि रायगिहाउ जावअतुरियम चवलजाव रीयं सोहेमाणेरा तेसिं अन्नउत्थियाणं अडुरसामंतेणं विति वयति त तेण ते अन्नउत्थिया जयवं गोयमं अडुरसामंतेणं वित्तिवयमाणं पासंती पासेत्ता अन्नमन्न सदावंतीता एवं वयासी ॥ एवं खलु देवाणुप्पिया, अम्हं इमाकहा अविउप्पकडा अयंचणं गोयमे अम्हं अडुरसामंतेणं विति वयति तं सेयं खलु देवाणुप्पिया अम्हं इमा कहा अविउप्पकडा अयंच णं गोयमे अम्हं अडुरसामंतेणं वित्तिवयति तं सेयं खलु देवाणुप्पिया अम्मं गोयमं एयमठं पुच्छित्तए तिकट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमठं पडिसुण तित्ता जेणेव जगवं गोयमे तेणेव उवागछंति उवागछित्ता ते जयवं गोयमं एवं वयासी एवं खलु गोयमा तव धम्मायरीए धम्मे वादेसए णायपुत्ते पंचत्थि काए पणवेति तं जहा धमत्थिकायं जाव आगासत्थिकायं तं चेव जावरुविकायं अरुविकायं पणवेत्ति स कहमेयं गोयमा एवं तएणं से जगवं गोयमे ते अ न्नउत्थिए एवं वयासी नो खलु देवाणुप्पिया अत्थिजावं नत्थित्ति वंदामो ता वयंसा खलु तुप्रे देवाणुप्पिया एयमठं सयमेव पच्चुवेक्खह तिकट्टु न अन्नउ त्थिए एवं वयासित्ति ॥ श्रीजगवतीसूत्रे ॥ ४७ ॥

हवे एज गाथानो अर्थ, ग्रंथकार विवरीने देखाडे ठेः—

॥ वंदणयं करजोडण, सिरनामण पूयणं च इह नेयं ॥ वायाइ नमुक्कारो, णमंसणं मण पसाउ य ॥ ४८ ॥ अर्थः—प्रथम हाथनुं जोडवुं, ते अंजलि करवे करी तेने (वंदणयं के०) वंदनक कहीयें, तथा (सिरनामण के०) शिरनुं नमाववुं तथा पुष्पादिकें करी (पूयणंच के०) पूजवुं (इह के०) ए आजिनशासनने विषे एटलां वानां वंदनमांहे अवतरे, एम (नेयं के०) जाणवुं. एटलां वानां परतीर्थीने न करवां ॥यतः॥ परतित्थियाण पणमण, उन्नावण थुणण जत्तिरागं च ॥ सक्कारं सम्माणं, दाणं विणयं च वज्जे ॥ १ ॥ ए प्रथम यत्ना कहीयें. (हवे बीजी यत्ना कहे ठे. (वायाइ रचनें करी (नमुक्कारो के०) नमस्कारनुं करवुं, तथा गुणकीर्त्तन ते

दिक देवनुं स्तवन करवुं तथा (मणपसाउंय के०) मनप्रसाद ते मिथ्याद्द ष्टि देव तथा तेमना तापसादिक गुरुउं जे ठे, तेमने दीठे थके हर्षनुं पामवुं आदरनुं देवुं ते नमंसणरूप बीजी यत्ना कहीयें ॥ ४८ ॥

हवे एनेविषे संग्रामशूरनो दृष्टांत कहीये ठेयंः- एहज नरतक्षेत्रें प पद्मिनीखंम नामें नगरी ठे. तिहां शूरसेनराजा राज्य करे ठे. तेनो संग्राम शूरनामा कुमार ठे, तेने बालपणाथी आहेडानुं व्यसन ठे, माटें ते आहे डो करवाने अर्थें परदेशथी शिकारी कुतरा मगावे ने प्रतिदिन आहेडो करे. एकदा तेना पितायें तेने समजाव्युं के हे पुत्र ! आहेडानो उद्यम तुं करे ठे, ते नरकनुं कारण ठे, जे माटे निरपराधी जीवोनो वध करवो, तुज ने योग्य नथी. ए आहेडानुं व्यसन मूकी दे अने जो नहीज मूके, तो म हारा नगरथी बाहिर जतो रहे, जेम हुं ताहारुं मोहोढुं देखुं नहीं ? तेम कर. एवां पितानां वचन थकी डुःख पाम्यो थको ते डुष्ट गामथकी निकली नगरनी बाहिर घर बांधीने रह्यो. तिहां नित्यप्रत्यें प्रजातें उठी सार्थें कुतरा लेइने घणा जीवोनो संहार करी आवे.

एकदा ते सघला कुतराने मूकीने कोइग्रामांतरें गयो ठे, एवामां ते कु तरानां स्थानकनी समीपें एक श्रुतकेवली, अवधिज्ञानना धणी एवा श्री शीलंधराचार्य आवी उतस्था, तेमणें ते कुतराने प्रतिबोधवाने अर्थें मधुरस रें सिद्धांतनी गाथा नणवा मांमी, ते गाथा आ प्रमाणें ॥ यतः ॥ खिणमित्त सुरक कक्के, जीवा निहणंति जे महा पावा ॥ हरिचंदण वणसंमं, दहंति ते ठार कक्कंमि ॥ १ ॥ जीवस्स दया रहिउं, जीवो अन्नं करेइ जो धम्मं ॥ आरुहइ ठिन्नकन्नं, सो खरमेरावणं मुत्तं ॥ २ ॥ इत्यादिक ते आचार्यनी वाणी सांजलतां कुतराउंने जीवदयानी वासना आवी. अने चिंतववा ला ग्या के अमो जीववध करी नरकें जाशुं, घणां डुःख पामशुं, तेमाटे हवे आपणने आ जन्मपर्यंत जीववध न करवो. एवुं व्रत लइ बेगा.

हवे संग्रामशूर कुमार ग्रामांतरथी आव्या नंतर आहेडें चढ्यो, तिहां कू तराने ठूटा मूक्या. पण ते कोइ जीवनी साहामा डोडे नहीं, पणुं ए तु तु करे तथा कालीया कालीया, मोतीया मोतीया, धोलीया, धोलीया, वा जीया वाजीया, एवां एवां नाम लइ पोकारे, तो पण कुतरा तो जाणे पथ रानाज घडेला होय नहिं? तेवा स्तब्ध थइ रह्या.

एवुं जोइ कुतराना रखवालने ते डष्ठ पूठतो हवो के ए कुतरा हरण दिकनी साहामा धसता नथी तेनुं शुं कारण ठे? तेणे कह्युं बीजुं तो कांइ कारण हुं जाणतो नथी पण ए कुतरा जिहां रहे ठे, तेनी साहामा यति ठ आवी रह्या ठे, ते जीवदयानां शास्त्र नणता हता, न जाणीयें ते सांन ळीने एमनां चित्तपण जीवदयावासित थयां होय?

एवी वात तेना मुखथी सांनळीने चिंतववा लाग्यो जे हाहा यतियोनी वाणीथी आ पशुठ पण प्रतिबोध पाम्या, अने हुं अनागीठ अधम थको रात्रिदिवस निरपराधी जीवोने मारतो फरुं बुं, तो नरक विना बीजे क्यां हिपण जवाने मह्मारुं स्थानक देखातुं नथी. एवुं विचारी कुतराने ठांडी मूक्या अने कह्युं के तमें तमारा गुरु जेथकी प्रतिबोध पाम्या तेनी पासें जाठ.

एवुं सांनळतांज ते सर्व कूतरा गुरुनी पासें आव्या अने हाथ जोडी विनीत श्रावकनी पेरें आगळ आवी बेठा. कुमर पण कौतुकें वाह्यो गुरु समीपें आव्यो अने गुरुने नमस्कार करी कहेतो हवो, स्वामी! मुऊने प ण धर्म कहो, जेम हुं पण प्रतिबोध पामुं. तेवारें गुरु बोल्या, हे कुमर! देव श्रीअरिहंत अढार दोषें रहित अने गुरु सुविहित शुद्ध प्ररूपक, श्री अरिहंतनी आज्ञा प्रतिपाळक, तथा धर्म, श्रीअरिहंत नाषित विनयमूळ जीवदयासार, ए रत्नत्रयनुं तुं आराधन कर ॥ यतः ॥ जे अईया जेय पडि पुन्ना जेय आगमिस्सा अरिहंता नगवंता ते सवे एवमाइक्कंति एवं नासं ति एवं परूवयंति सवे पाणा सवे नूआ सवे जीवा सवे सत्ता ण हिंसीय वा ण उवदवेयवा ण परियावेयवत्ति अपिच किंताए पढियाए पलालनूयाए पय कोडीए जंइत्तियंननायं परस्स पीडा ण कायवा. एवो उपदेश सांनळीने कुमरें शुद्ध निरतिचार समकेत उच्चर्युं. तथा निरपराधी जीवोना वध कर वानुं पञ्चरकाण कर्युं. पठी आत्माने कृतार्थ मानतो थको पोताने घेर आ व्यो. अने कूतरा पण तिर्यचने उचित धर्म पाळता थका सुखें रहे ठे. पो तानुं कुमर आहेडो मूकीने श्रावक थयो, एवुं जाणी शूरसेनराजायें हर्ष पामता तेहने युवराज पदवी आपी. एम पिता पुत्र बेहु सुखें राज्य पाळे ठे.

एकदा कुमरनो मित्र, सागर नामे हतो, ते समुद्रमांहे यानपात्र लइ पर देशें जइ घणी लक्ष्मी उपार्जीने घेर आव्यो, ते नेटणुं लइ कुमरने मळवा आ व्यो, तेणे नेटणुं मूकी प्रणाम करी समुद्र संबंधी वार्त्ता कही. कुमरें पूछ्युं,

कांइ आश्चर्य दीठुं होय, तो कहो. तेवारें ते कहेवा लाग्यो के सांजलो, आश्चर्यनी वात कहुं छुं. में जरसमुइमांहे कल्पवृक्षनी शाखायें हिंचतो पल्यंक ते उपरें अद्भुत रूप लावण्यने धरनारी चोशठ कलामां कुशल, शोल शृंगारें जूषित एवी कन्या बेठेली दीठी. ते देखीने जेटले हुं महारा प्रवहणने तेनी पासें लइ गयो, तेटले कल्पवृक्ष पल्यंक अने कन्या सर्व अदृश्य थइ गयां. हुं चमत्कार पाम्यो. एटले महारा सेवकें कह्युं इहां कोइ देवांगना वसे छे, ते आपणने देखी पाणीमां अदृश्य थइ गइ. ए आश्चर्य में दीठुं.

हवे कुमर, कामें पीडित थयो थको विचारे छे जे ए स्त्रीने हुं केम पामुं ? पछी हरखी पितानो आदेश मागी सागरमित्रने साथें लइ प्रवहणे बेसी समुइमार्गें चाल्यो. जातां जातां ते स्थानक पाम्या, तिहां तेमज कल्पवृक्षनी शाखायें बांधेला पल्यंकनी उपर कुमरीने रमती दीठी, पछी जेवारें तेनी साहामुं वहाण चलावे, तेवारें सर्व इंइधनुष्यनी पेरें अदृश्य थइ जाय. पछी कुमरने सर्व जनोयें वार्यो छतां पण हाथमां तरवार लइ ते कन्यानी पाछल झंप दीधो, तिहां जलकांतरत्न निर्मित सप्तजूमि प्रासादनेविषे सातमी जूमिका उपर पड्यो थको चिंतववा लाग्यो के ए प्रासाद पाणीमां केम रहेतुं हशे ? एवो संशय मनमां उपनो तिहां तेने जलकांतरत्ननो महिमा सांजरी आव्यो तेवारें तेनो संशय मट्यो.

हवे कुमर तिहांथकी छेल्लनी जूमिकायें गयो, तिहां कल्पवृक्षनी शाखानेविषे पल्यंक प्रलंबमान दीठो, ते उपरें दिव्यरूप कन्या सूती दीठी. पछी उढणुं परहुं करीने तेनुं मुखकमल जोयुं ते पण तेहनो स्पर्श पामी तत्काल उठीने कहेवा लागी के, हे स्वामी! जलें आव्या. एवुं कही पल्यंकें बेसाडी नाम स्थानादिक पूछवा मांमयां, कुमर पण हर्ष पाम्यो थको नगरनुं नाम पितानुं नाम अने पोतानुं नाम तथा इहां आववानो हेतु पण कह्यो वली कुमरें कह्युं के तुं कोण छो? अने इहां केम रहेली छो ? इत्यादिक चरित्र कहे.

तेवारें कुमरी बोली. सांजल हे महापुरुष ! वैताढ्यपर्वतें दक्षिणश्रेणीयें रथनूपुरचक्रवाल नगरनेविषे विद्युत्प्रजविद्याधर राजानी मणिमंजरी नामें हुं पुत्री पिताने अत्यंत वल्लन छुं, अन्यदा महारे पितायें निमित्तियाने पूछ्युं महारी पुत्रीनो वर कोण थाशे ? तेवारें निमित्तिये कह्युं समुइमांहे जलकांतरत्ननुं सप्तजूमिकामय प्रासाद करावी, तिहां कल्पवृक्षनी शाखायें प्र

लंबमान पल्यंकें बेसी वीणा वजाडती ए ताहरी पुत्रीने राख, तिहां शूर सेनराजानो पुत्र संग्रामशूर आवीने एनुं पाणिग्रहण करशे. ते निमित्तिया ना कहेवाप्रमाणें सर्व सज्जाइ करीने महारे पितायें मुजने इहां राखी ले. आज दिवससुधी तमारी वाट जोती इहां रही बुं. ते आज महारो मनो रथरूप वृक्ष अकस्मात् फलीनूत थयो. हवे तमने नासे, तेम करो.

एवी बेहु जण परस्पर प्रेमवार्त्ता करे ले, एवामां तिहां एक अकस्मात् थयो ते कहीयें लैयें. एक घोर विकालरूपवालो, हाथमां खड्ग धारण करनारो, अने जाणे मशीमां बोली काढ्यो होय नहिं ? एवा काला शरी रवालो एक राक्षस तिहां प्रगट थइने कहेवा लाग्यो के अरे कुमर ! हुं सात दिवसनो नूख्यो बुं, अने ए कन्या महारुं नक्ष ले, तो तेने तुं केम परणवा वांले ले ? एवुं कही कुमरीना नेत्ररसहित पग उपाडीने पो ताना मुखमांहे घाल्या, कुमरें तेनी उपर खड्ग वाह्युं, पण खड्गना बे कटका थइ पड्या. तेवारें कुमर बाहुयुद्ध करवा लाग्यो, तेमां पण राक्षसें कुमर नें हेठो नाखी बांह वाली पिठवाइयें बांध्यो, पढी कुमरप्रत्यें कहेवा लाग्यो के, हे कुमर ! आ तहारी स्त्रीने हुं मूकुं पण जो एना बदलामां तुं मु जने एक स्थूलशरीरवाली स्त्री आणी आपे. अथवा तहारी नगरीमांहे घणी दासीयो महोटा स्थूलशरीरवाली ले, ते आणी आपे, तो हुं एने मूंकुं. अने तेनुं नक्षण करुं. अथवा जो एम पण न करे,तो आ निकट हु कडा महारा गुरु चरक पारिव्राजक ले, तेने आवी पगे लाग, अथवा एज महारा प्रासादनेविषे हरि, हर अने ब्रह्मानी मूर्त्तियो ले, तेने नमस्कार करी, पूजा कर. अथवा महारी प्रतिमा करावीने तेनी नित्यप्रत्यें पूजा कर. तो हुं तहारी स्त्रीने मूकी आपुं. जो एम नहीं करीश, तो आखी गली जइश.

ते सांनली कुमरें कह्युं के हुं जो स्थूलदेहवाली स्त्री तुजने आणी आ पुं, तो तेनो तुं वध करे. ते वध करवानुं पाप मने पण लागे, तेथी महा रो व्रतनंग थाय. माटे ए काम महाराथी न थाय, तेमज वली देव तो श्रीजिनेश्वर अने तेमनी आज्ञाना प्रतिपालक सुसाधु ते महारा गुरु ले तेम ने मूकीने बीजा कोइने हुं नमस्कार पण करुं नहीं. एक श्रीअरिहंत वि ना बीजा लौकिक देवने हुं प्रणाम पण न करुं, अने पूजा पण न करुं. वली हे राक्षस ! ए तुजने पण योग्य नथी, जे हिंसा थइने जीवघनां

धंधो करे छे? तेवारें राक्षसें कह्युं जो एटलां वानां तुं न करे, तो इहांज श्रीजिनगृह छे तेनेविषे श्रीवीतरागनी प्रतिमा छे, तेने पूज. ते वात कुमर कबूल करीने हर्षवंत थयो थको प्रतिमा पूजवा गयो. तो तिहां ते प्रतिमाप्रत्यें बोक्षोने पूजा करतां दीठा. ते जोइ कुमर बोल्यो ए बिंब मिथ्यादृष्टि जनोयें परिग्रहीत छे तेमाटे मुजने पूजवुं कल्पे नहीं. ए कार्य करुं तो म्हारा सम्यक्त्वनी हाणी थाय. माटें जो तुं म्हारो शिरछेद करे ते हुं कबूल करीश, पण जे कार्य करवाने तुं कहे छे,ते मांहेलुं एक पण कार्य हुं करीश नहीं. हवे तहारा विचारमां आवे ते कर.

एवुं सांभली ते राक्षस कुमरीप्रत्यें तेना पगथी गलवा लाग्यो, तेवारें कन्या बुंबारव करवा लागी,केंअरे आर्यपुत्र! आ राक्षस जे कहे छे, ते कार्य करीने हमणां तुं मुजने जीवती रखाव. वली गुरु समीपें जइने सम्यक्त्वनो उच्चार करजे. एम कुमरीयें बुंबारव करतां राक्षस, कुमरीने गलतो गलतो गलासुधी आव्यो, अने कुमरने कहेवा लाग्यो के एने संपूर्ण गली ने पछी हुं तुजने पण गली जइश. अरे! एक दासी पण तहाराथी अपाती नथी, जला नथी अपाती तो रहुं, पण हजी तुजने जीववानी आशा होय तो दासी रही, पण एक वगली पाणीमांथी पकडीने मुजने लावी आप. तेने कुमरें कह्युं के तुं गमे ते कर, पण हुं कांइ तहारुं वचन मान्य करीने व्रतभंग करनार नथी. जेमाटें मारी नाखवाथी उपरांत बीजी कोइ शीक्षा कांइ तहाराथी थाय तेम नथी, अने मरवुं तो एक वार छेज, पण समकेत पामवुं माहाडष्कर छे, ते कांइ वारंवार पमातुं नथी माटें तुं तहारुं वचन मानवा संबंधी कांइ पण आशा राखीश नहीं. हुं मरवाथी बीहीतो नथी. एवुं कुमरनुं साहस देखीने चमत्कार पाम्यो थको ते राक्षसनुं रूप मूकीने दिव्यरूप धारण करी कुमरने पगे लाग्यो, अने कह्युं के, जेहवो सौधर्मेंद्रें तुजने सभामांहे वखाण्यो. तेहवोज तुं साहसिक छो. हुं इंद्रमहाराजनुं वचन मानतो न हतो, पण में तुजने सोनानी पेठें कसी जोयो, तो तुं तेवोज छे. हवे हुं सौधर्मवासी देव छुं, ते तहारी उपर संतुष्ट थइ कहुं छुं. के तुं जे कांइ म्हारी पासें माग, तेहुं आपुं. कुमरें कह्युं म्हारे देव गुरुना प्रसादथकी कोइ वस्तुनी खपती नथी.एवुं कहे छते ते देवता गंधर्व विवाहें कुमरीनुं पाणिग्रहण करावी कुमरनी रजा लइ देवलोकें गयो.

कुमर पण मणिमंजरीनी सार्थे विषयसुख जोगवतो थको तिहांज रह्यो.

एकदा प्रज्ञप्ति विद्यायें जइने मणिमंजरीना पिताने समाचार कह्या, ते वारें ते तिहां आवी घणी ऋद्धि आपीने मणिमंजरी सहित कुमरने पद्मिनीखंम नगरें तेडी गयो, कुमर पोताना माता पिताने पगे लाग्यो, मणिमंजरीनो पिता विदायगिरि मागी वैताढ्यें गयो. शूरसेन राजा पण वृद्धावस्थायें पुत्रने राज्य आपी पोतें दीक्षा लइ धर्मराज्य पालवा लाग्यो. कुमर पण सम्यक्त्वमूल श्रावकव्रतरूप धर्म पाली अंतें समाधिमरण करी देवलोकनां सुख जोगवी अनुक्रमें मुक्तिने विषे अनंत सुखनो जोक्ता थाशे. ए वंदन अने नमनरूप बे यत्नाने विषे संग्रामशूरनी कथा कही ॥

हवे त्रीजी दान अने चोथी अनुप्रदान ए बे यत्ना तथा पांचमी आलाप अने ठठी संलाप एवी चारे यत्नानुं स्वरूप कहे ठेः—

॥ गउरव पिसुणं वियरण, मिठासण पाण खक्क सक्काणं ॥ तंचिय दाणं वहुसो, अणुप्पयाणं मुणि विंति ॥ ४९ ॥ सप्पणयं संजासण, कुसलं वोलागयं च आलावो ॥ संलावो पुणरुत्तं,सुहडुह गुण दोस पुन्नाउ ॥ ५०॥

अर्थः—जे (गउरवपिसुणं के०) गौरव एटले आदर तेनुं पिशुन एटले सूचक एवुं (वियरणं के०) वितरण जे दान ते दानेंकरी आदर जाणियें. ते माटे गौरव पिशुन कह्युं हवे ते दान कइ कइ वस्तुनुं होय ? ते कहे ठे. (इठासण के०) इष्ट वचन एवुं अशन जे उंदनादिक अने (पाण के०) पाणी ते शुद्ध जल, इक्षुरस, नालिकेरजलादिक जाणवा तथा (खक्क के०) खाद्य ते फलादिक अने (सक्काणं के०) शय्या, वस्ति, रहेवानुं स्थानक इत्यादिकनुं जे दान ते महत्त्वनुं जणावनारुं ठे, माटें एवुं दान मिथ्यादृष्टिने देतां थकां कोइ देखे, तो एवुं जाणे जे ए श्रावक थइने मिथ्यादृष्टिने एवडो आदर करे ठे. तो ए पण गुणवंतज हशे, माटें अमें पण एने आदर आपीयें एम मिथ्यात्वनी वृद्धि थाय. एटला माटे न देवुं ए दानरूप त्रीजी यत्ना कहीयें. हवे (तंचियदान के०) तेहज दान जे एकवार आपवुं तेतो दान कहेवाय पण जे (वहुसो के०) वारंवार देवुं तेने (अणुप्पयाणं के० अनुप्रदान एटले अनुप्रसाद कहीयें. ए रीतें (मुणि विंति के०) मुनियो कहे ठे,ए चोथी अनुप्रदान यत्ना कहीयें. इहां घर आगल कोइ अन्यदर्शनीनो जिक्षाचर आव्यो होय तेने लोकव्यवहारें तथा अनुकंपायें दान देवानो

कांइ निषेध नथी ॥ ४९ ॥ अर्थः- (सप्पणयं के०) सप्रणय एटले स्नें ह सहित जे (संजासण के०) संजाषण करवुं, ते थ्यालाप कहीयें. ते केवी रीतें थाय ? ते कहे ठेः-(कुसलं के०) तुमने कुशल ठे ? (वा के०) अथ वा (सागयं के०) स्वागतं एटले सुथ्यागतं अर्थात् तमें थ्याव्या ते नखुं थ युं ? तमें नलें थ्याव्या ? अथवा सुखें थ्याव्या इत्यादिकनुं जे पूठवुं, तेने (च के०) वली (थ्यालावो के०) थ्यालाप कहीयें, ते थ्यालाप मिथ्यादृष्टिनी सार्थे न करवो. ए पांचमी थ्यालाप नामें यत्ना जाणवी.

थ्यने (संलावोपुणरुत्तं के०) पुनरुक्त एटले वारंवार जे थ्यालाप करवो तेने संलाप कहीयें. अथवा (सुहदुह गुणदोसपुठाउ के०)सुख दुःख गुण दो पना पूठवाथकी पण संलाप थाय. पुत्र, पुत्री, कुटुंब, परिवार, तथा शरीर थ्या श्रयी इव्यथ्याश्रयीथाय व्ययादिकना सुखनुं जे पूठवुं ते सुखपृठा कहीयें. तथा हमणां तमें डुचित्ता देखाउ ठो. राजा, चोर,गोत्री प्रमुख तमने संतापे ठे. एटला माटें तमें डुःखीया ठो ? एवुं पूठवुं, ते डुःखपृठा जाणवी. तथा क या कया शास्त्रने विषे तमारो परिचय ठे ? अथवा तमें कां नणता नथी ? कलान्यास करो जेम रूडुं थाय ? तमारामां थ्यौदार्य, धैर्य, सत्त्वादिक गुण रूडा ठे ? इत्यादिकनुं जे पूठवुं, ते गुणपृठा कहीयें. तथा तमें डुर्बल देखा उ ठो, तेमज वली ज्वर, ताप, पित्त कफादिक रोगनुं पूठवुं,ते दोष पृठा क हीयें. ए प्रकार करवे करी संलाप कहीयें. ते संलाप मिथ्यादृष्टिनी सार्थे न करवो. जे माटें मिथ्यादृष्टिनी सार्थे जे थ्यलाप संलाप करवो, ते डुर्गति नुं कारण ठे. ए ठ यत्ना कहीयें ॥ यतः॥थ्यालावो संलावो, विसंजो संथवो पसंगो य ॥ हीणायारेहि समं, सवंजिणंदेहिं पडिकुठो ॥१॥ थ्याणाइ थ्यवट्टंतं, जो उववुहिज्ज मोहदोसेणं ॥ तिठयरस्स सुयस्स य,संघस्स य पच्चणीउ सोय ॥

हवे ए पाठली चार यत्नाने विषे मंत्रितिलकनो संबंध कहीयें ठेयें. एज नरतक्षेत्रें विजयपुर नगर तिहां नलराजा राज्य करे ठे. तेनी सौना ग्यमंजरी एवे नामें पट्टराणी ठे, थ्यने मंत्रितिलक एवे नामें प्रधान ठे. ते सकलबुद्धिनिधान ठे. एकदा राजा पोताना मंत्रीनी सार्थे थ्याहेडो करवा निकल्यो, वनमांहे एक मृगलो दीठो, राजा तथा मंत्री बेहु मृगलानी पूठें लागा, ते जेटले मृगनी उपर बाण नाख्युं, एटले मृग बोल्यो, के हे क्षत्री उ

राजा हुं छुं. हमणां भुवनसार साधु कहेवावुं छुं. एवुं पोताना वैराग्यनुं कारण कही साधु छाना रह्या.

नलराजा पण साधुना वैराग्यनुं कारण सांभली हर्ष पामी कहेतो हवो, के हे महाराज! एवी मति तमारा सरखा उत्तमपुरुष होय तेनेज आवे. पण हुंतो भारे कर्मी छुं माटे मने एवो वैराग्य आवतो नथी. तथापि मने आप कृपा करी शुद्ध समकेतनो उच्चार करावो. समकेत हुं पाळीश. तेवारें साधुयें समकेतनुं स्वरूप राजाने समजावीने पछी समकेत उच्चराव्युं.

राजायें पूछ्युं सामी! ए मृग कोण हतो के जेणे महारी उपर आटलो उपकार कर्यो. साधुयें कह्युं ए तह्मारो पाछला भवनो ब्राह्मण मित्र तो, ते अज्ञानकष्ट करी यक्ष थयो छे, हमणां मुजने देखी भडकनावी पां, अने तुजने देखी तह्मारी उपर एने प्रीति उपनी, तेवारें मृगलानुं रूप धारण करी तह्मारी उपर साधुसमागमरूप उपकार कीधो ॥ यतः ॥ चंदन शीतलं लोके, चंदनादपि चंद्रमाः ॥ चंद्रचंदनयोर्मध्ये, शीतः साधुसमागमः ॥ १ ॥ पछी यक्ष पण मृगलानुं रूप छांमी साधुने पगें लागी, समकेत अंगीकरतो हवो. वली राजाने कह्युं अवसरें संभारजो, हुं आवीश. एम कहेते यक्ष पोताने स्थानकें गयो.

राजा तथा प्रधान बेहु नगरमां आवी राजायें रत्नमय जिनप्रतिमा भरावी तेनी पूजा करतो साधर्मिकवात्सल्य, अष्टमी, चतुर्दशी, पोषधोपवासादिकने पारणे साधर्मिकवात्सल्य प्रमुख कार्य करवामां प्रवर्त्ततो हवो. मंत्रितिलक प्रधान पण राजानी पेठें शुभकृत्य करवा लाग्यो.

एकदा कर्मयोगें मंत्रितिलकने असाध्य रोग थयो. वैद्यें पण हिम्मत मूकी कह्युं, के ए रोग अमारे साध्य नथी. एवुं कही पोताने घेर गया. एवामां एक परिव्राजकनो वेश धारी वैद्य आव्यो तेणे प्रधानने समाधि करी तेथी प्रधान तेनो पक्षपात करवा लाग्यो. मिष्ट मिष्ट अशनपानादिक भक्ति करावानां तेनें आपे, घणों आदर आपे, राज्य सभायें तेडी लावे, राजानी आगल तेना गुण बोले, तेने राजा कहे ए मिथ्यादृष्टिनी स्तुतिरूप भक्ति करी कां आपणा समकेतरूप क्षीरोदक वस्त्रने मलीन करे छे? मंत्री कहे गुणवंतना गुण बोलतां समकेत मलिन न थाय.

एकदा पृथ्वीस्थान नगरथी कोइ चार पुरुषें मली नलराजाने कान

लख्यो जे हे स्वामिन्! तमारो वैरी जे नीलराजा तेणे एक पांत्रीश व र्षनो परिव्राजक पापरूप मक्षिकायें कालो थयेलो महामायावी वाचाल छे, तेने तमोने मारवामाटे मोकल्यो छे, तेनो विश्वास करशो नहीं. एवो लेख राजायें एकांतें वांचीने परिव्राजकने पकडवामाटे सुनटो मोकल्या, ते सुनटें तेने पकडी बांधी लातो तथा मुष्टिना प्रहार कखा तेथी तेनी क डमांथी कंक लोहमय छुरी निकली आवी, सुनटें ते छुरी लइने राजाने देखाडी, तेवारें राजायें पूछ्युं आ शुं आश्चर्य? तेणें नीलराजानी यथा स्थित वार्त्ता कही संनलावी. राजायें प्रधानने तेडी कह्युं के जेनां तुं वखा ण करतो हतो, तेनां चरित्र जोइ ले. एम कही राजायें तेने मंत्रिपदथी उतारी बीजो मंत्री थाप्यो. मंत्री पण पोतानुं समकेत मलीन थयुं जा णी आलोयण प्रायश्चित्त लइ समकेतनी शुद्धि करतो हवो. पछी तेने शु द्धसमकेत पालतो जाणीने राजायें तेडीने वली पण तेने मंत्रिपदें स्था प्यो. वली पण राजा तथा प्रधान बेहु जनने परस्पर तेमज प्रीति थइ.

हवे घात करनारो परिव्राजक, राजाप्रत्यें कहेवा लाग्यो में नावथकी जैनदीक्षा लीधी छे, माटे मारवो होय तो मार, अने जीवतो मूके तो मूक. तहारुं मन माने, तेम कर. राजायें विचाखुं के जो तुं सम्यक्त्व पाम्यो हो, तो पण नावचारित्रीयो थयो कहेवाय तेमाटे हुं तुजने मूकुं छुं. एम कही परिव्राजकने मूक्यो. राजायें चिंतव्युं महारो वैरी नीलराजा छे, तेनी सार्थे युद्ध करुं तो घणा जीवोनो संहार थाय, माटे यक्षनुं स्मरण करुं पछी राजा यें अष्ठम तप करी पौषध लइ पौषधशालायें बेसी यक्षनुं स्मरण कखुं. य क्ष तेना मनोगत नावने जाणी नीलराजाने बांधीने तेनी पासें लइ आव्यो. तेने नलराजायें कह्युं अरे पापी! हवे कहे हुं तुजने केवी शिक्षा करुं? नी लराजायें कह्युं हुं तहारे शरणें आव्यो छुं, माटें मन माने तेम कर. एम क हे थके नलराजायें तेने पोतानी आज्ञा मनावी पोतानो सेवक करी मूकी दीधो.

हवे नलराजा कर्मराज तथा धर्मराज बेहु राज्यने सरखां पालतो थ को रह्यो. एकदा उद्यानपालें आवी वधामणी दीधी जे स्वामी! उद्यान नेविषे मुनि पधाखा छे, तेने राजा हर्षदान आपी पोतें मुनिने वांदवा गया. तिहां जोयुं तो जेमनी पासेंथी पोतें धर्म पाम्यो छे, तेज साधु पधा खा दीठा. साधुयें पण कह्युं, हे राजन्! तुं मने उंलखे छे? राजायें कह्युं

य एटले मिथ्यादृष्टि गुरुउंना नक्त होय एवा (जेउ के०) जे (जणगा के०) जनकादिक ते माता पिता ज्येष्ठ नाइ, तथा काका प्रमुख तेने गुरु कहीयें ॥ यतः ॥ पिता माता कलाचार्यो, एतेषां ज्ञातयस्तथा ॥ वृद्धधर्मो पदेष्टारो, गुरुवर्गः सतां मतः ॥ १ ॥ ए जनकादिक (मिछदिछिणो के०) मिथ्यादृष्टि होय एटले कुदृष्टि शाक्यादिकना नक्त होय ते बलात्कारें करी पोताना पासेंथी गुरवादिकने वंदावे तथा नियमनंग करावे, तेने गुरु निग्रह कहीयें तेथी समकेतनो नंग न होय. तथा (कांतारोवमाईसिपयं के०) कुधादिकरूप कांतारने विषे जे सीदावबुं तेणें करी (इह के०) यांहिं (वृत्तिकांतारं के०) आजीविकारूप वनाटवि तद्रूप दुःखें करी नियमनो नंग थाय नहिं ॥ ५२ ॥

हवे एनो नावार्थ कहीयें बैयें. कोइक सम्यग्दृष्टि जीव वसगें आवादनो जाण होय, ते वृत्ति चलाववा रूप कांतारने विषे पड्यो, अर्थात् महा दरिद्री अवस्थाने विषे पड्यो, कोइ रीतें पण आजीविका चाले नहीं, अने जीव्युं पण जोइयें ते पुरुष पोताना चित्तने विषे श्रीजिनधर्मनेज तत्त्वपणे जाणतो बतो तेने मिथ्यादृष्टियें द्रव्य थकी नियमनंग करावीयें, ते वृत्तिकांतार कहीयें, तेणे करी सम्यक्त्वादिक नियमनो नंग न थाय ॥५३॥ हवे ए ब आगारें करी समकेत नंग न थाय ते शामाटें ? तेनो हेतु कहे बे.

॥ न चलंति महासत्ता, सुनिज्जमाणावि सुद्ध धम्माउ ॥ इयरेसि चल ण नावे, पच्चन नगंग एएहिं ॥ ५४ ॥ अर्थः-(महासत्ता के०) महा सत्त्वना धणी होय ते देव, दानव मानवादिकें (सुनिज्जमाणावि के०) घणुए नेदाता थकां कदर्थना पमाड्या थका पण (सुद्धधम्माउ के०) शुद्धधर्म जे श्रीवीतराग देवनो नांखेलो निर्मल धर्म तेथकी (न चलंति के०) चलायमान थाता नथी. जेम मेरुपर्वत वायरें करी चलायमान थाय नहीं तेम धर्मने विषे जेमनुं अत्यंत दृढ मन थयेलुं बे एवा महा सत्त्ववान् पुरुषो पण तेनी पेठें जाणवा. परंतु एवा महासत्त्व पुरुषो (इयरेसि के०) इतर जे मंदसत्त्ववान पुरुषो बे, तेमने (चलणनावे के०) चलनारपणुं बे, तेवा जनोने (एएहिं के०) ए ए ब आगार बे एनां रक्षरें करी (पच्चन नगंग के०) प्रतिज्ञानो नंग न थाय, बे.

माटे जे उत्सर्गे मार्गे राखी शके, तो ते घणुंज रूडुं छे, परंतु जे उत्स र्गमार्गे राखी न शके, तो ते ए छ आगार मोकलां राखीने समकेत पा ले, तो पण नलुं छे ॥ यतः ॥ महासत्ताणुना, सत्तनिसे होय पवयणे नत्ति ॥ अपंवपंतुलीज्ञा, लाहा कंखिव वाणीयउं ॥ ५४ ॥

हवे ए छए आगारने विषे मृगांकलेखानुं दृष्टांत कहे छेः—मालवदेशें उ ज्जयणी नगरीयें अवंतीसेन नामें राजा राज्य करे छे, तेज नगरमां एक धनसार एवे नामें सार्थवाह रहे छे, तेनी रंजा नामें जार्या छे, तेने मृगांक लेखा नामें पुत्री छे. ते बालजावथकी पण निर्मलसमकेतनी धरनारी श्री जिनधर्मने विषे तत्पर थने जीवाऽजीवादिक नवतत्त्वनी जाण छे.

एकदा ते कुमरी उद्याननें विषे धनसारसार्थवाहनुं करावेलुं उत्तंग तो रण शिखरबंध श्रीजिनप्रासाद छे, तिहां सकल सामग्री लइने पूजा कर वाने अर्थे गइ. प्रथम इव्यपूजा करीने पठी जावपूजा निमित्तें काउस्सग्ग करी उत्नी रही छे. एवामां तिहां सागरश्रेष्ठीनो पुत्र पोताना मित्रने साथें लइ देव जुहारवा आव्यो छे. तेणें देव जुहारी वली जइक पणाथी काउ स्सग्ग धारी प्रतिमाने नमी पगे लाग्यो वांद्यो. ते जोइ हाथ ताळोटो देइ तेनो मित्र हस्यो, श्रेष्ठी पुत्रें पूठयुं शा कारणें हस्यो? मित्रें कह्युं ए प्रति मा नथी पण धनसार्थवाहनी पुत्री मृगांकलेखा छे, तेने तुं पगे लाग्यो.

हवे ते श्रेष्ठिपुत्र मृगांकलेखानुं रूप जोइ कामनूतें ग्रस्त थयो थको घेर जइ उत्तरडे पर्यंकें सूतो, मात पितायें बोलाव्यो बोले नहीं, घणुंए पूठे, पण पाठो उत्तर आपे नहीं. तेवारें तेना मित्रें सर्व वात मातपिता आग ल कही समजावी. मातपितायें कह्युं, ए योग्य वात छे, ते अमें करीशुं, तुं आवी जोजन कर. इत्यादिक घणुं समजावीने जमाड्यो.

पठी तेज उद्यानमां तेज देरासरनी पासें सागरदत्तें पण एक श्रीऋष नदेवनुं प्रासाद कराव्युं, तेनी प्रतिष्ठा करावता तेना दशाह्निकना दश मा दिवसने विषे जमणवार करी छे. तिहां धनसार्थवाहने तेड्यो छे, ते कुटुंबसहित आवी जोजन करी मंम्पमां बेठा छे, तेवारें सागरदत्तें ज्यो तिषियाने संज्ञा करी ते उपरथी ज्योतिषीयो बोल्यो जे आज विवाह मेलव वानो अत्यंत श्रीकार सर्वोत्तम श्रेयस्कर दिवस छे, एवो दिवस कोइ का लांतरेंज आवे छे. जो धनसार्थवाहनी कन्या मृगांकलेखा अने सागरदत्त

नो पुत्र सागरचंद्र ए बेहुनो विवाह आज थाय, तो सर्वोपरि रूडो योग गणाय, तेवारें धनसार सार्थवाह पण सागरचंद्रनुं रूप देखी हर्ष पाम्यो थको बोल्यो, नलुं. एम कही तिहांज विवाह मेलवीने बेहु जण उठया, पोतपोताने घेर जइ विवाहनो महोत्सव करवा प्रवृत्त्या कन्याना बापें कन्याने पीठी चोली ले, अने वरना बापें वरराजाने पीठी चोली ले.

एवामां सागरचंद्र पोताना धनमित्र प्रत्यें कहे ले. के ते वखत वेरासरमां में मृगांकलेखाने रूडी रीतें निरखी नथी, तेमाटें मुजने रूप जोवानी उत्कंठा ने, ते जो तुं महारी साथें आवे, तो तिहां जइ एनुं रूप रूडी रीतें जोइ आवीयें, धनमित्रें कह्युं तुं पाटें बेगो ले ते शी रीतें निकली शकीश? तेणें कह्युं रात्रें ठानुं बाहिर निकलवामां कांइ विशेष नथी. एम कदामह लइ बेगो, तेवारें मित्रें कह्युं चाल जइ आवीयें? पछी रात्रें श्याम वस्त्र पहेरी हाथमां खड्ग लइ जिहां कन्या पाटें बेठी ले तिहां आव्या, ते अवसरें मृगांकलेखा पोतानी चित्रलेखा अने पत्रलेखादिक सखीयोना परिवारें परवरी थकी पोत पोतामां गोष्टि करे ले, तिहां चित्रलेखा मृगांकलेखाने कहे ले, के धन्य तहारो अवतार! जे तुजने सागरचंद्र जेवो वर मल्यो॥ यतः॥ अनुरूपकलाशाली, पंमितःसवयः सुधीः॥ धनवाननुरक्तश्च, पुण्यैःसंप्राप्यते पतिः॥ १॥

हवे स्त्रीजातिनो स्वनावज ने, के एक बोले तो तेथकी वली बीजी जे बोले, ते अवश्यंज बोले, ते प्रमाणें पत्र लेखा बोली उठी के मृगांकलेखाने योग्य वर तो धनश्रेष्ठीनो पुत्र अनंगदेव हतो कारण के ते रूपें करी साक्षात् अनंग जेवोज ले. तेवारें वली चित्रलेखा बोली जे मृगांकलेखाना वरने अर्थे संवर नामा ज्ञानीने पूछयुं तेवारें तेणें कह्यु के अनंगदेवनुं वीश वर्षनुं आयु ने, माटे ते योग्य नथी. तेथी अनंगदेवने शुं करीयें? ते सांनली पत्रलेखा बोली अरे सखि! तुं जाणती नथी? जे थोडुं होय तो पण अमृत नलुं जाणवुं अने विष तो एक नार जेटलुं होय तो ते पण शा कामनुं!

एवी सखियोनी वातो थती मृगांकलेखायें बेठी सांनली पण लाजने लीधे निवारण कीधी नहीं. अने ते बेहु सखीयोनी वात सागरचंद्रें ठानां रही सांनली, तेथी घणो गर्व चढी खड्ग काढीने मारवा दोड्यो, तेने मित्रें ह

ध जाली राख्यो, अने कह्युं के सखीयो परस्पर वातो करे छे. एमा मृगां कलेखानो श्यो वांक छे? एम समजावीने घेर लइ गयो.

पछी सागरचंद्रें विरक्तचित्ते करी पितानी लज्जायें पाणिग्रहण कीधुं, प रण्या पछी तेना पिता सागरदत्ते सूवाने माटे महोटो आवास करावी आ प्यो पण सागरचंद्र दुष्टात्मा ते मृगांकलेखानी साथें द्वेष धरतो ढूकडो ना वे. बोलावे पण नहीं, मृगांकलेखानुं नाम सांजले तो पण रीष करी उठे.

ए विषे मृगांकलेखा परमार्थ अजाणती, कर्मनो दोष अवडती घणो खेद करती थकी दुःखें काल निर्गमन करे छे, एम ते विरहाग्नियें पीडित थकां श्रीजिनधर्माराधन करतां एकवीश वर्ष निर्गमन कर्यां.

हवे एकदा अवंतीसेन राजा, लाटदेशना राजाने जीतवामाटे जाय छे, तेवारें सागरदत्तने तेडीने राजा कहेवा लाग्यो के तमारा पुत्र सागरचं चंद्रने महारी सार्थे मोकलो, जेमाटें महारा सैन्यने अन्न वस्त्रादिक सर्व वस्तु पूरे. सागरदत्ते पोताना पुत्रने कह्युं के राजा तेडी जाय छे, तेनी सा थें जरूर जवुं जोइयें,ते सांजली सागरचंद्र पण अश्व रथ मेरा प्रमुख सज्ज करी माता, पिता,जाइ, काका प्रमुखने पगें लागी विदायगिरि मागी चालवा लाग्यो, ते जेवारें मृगांकलेखाना घर आगल आव्यो, तेवारें मृगांकलेखाने दीठी पण बोलावी नहीं, तो पण मृगांकलेखा आवी पगें लागीने अ श्रुपात करवा लागी तथापि तेने अवगणी तिरस्कार करी चाल्यो तेथी मृ गांकलेखा वली घणुंज दुःख पामी थकी शय्यायें आलोटती रोवा लागी, मनमां विचारे छे,जे घरना दासने पण बोलावे छे,अने मुजने आवी रीतें ठेली नाखे छे. माटें ए महारा पूर्वकर्मनो दोष समजवो. एवुं चिंतवत्ती रही.

सागरचंद्र गाम बाहिर नदीने तटें जिहां कटकें उतारो कीधो छे,तिहां मेरा देइ पर्यंकें सूतो छे. एवामां वारंवार करुणस्वरें रुदन करती कोइक किन्नरीनो स्वर सांजल्यो, तेवारें मनमां विचार्युं जे आ रात्रिने विषे कोण स्त्री रुदन करे छे? एम चिंतवी खड्ग लइ शब्दने अनुसारें चाल्यो आगल जातां वनना कुंजमांहे सर्वाभरणें भूषित एवी एक स्त्रीने रडती दीठी. तेने कहेवा लाग्यो के हे बहेन! तुं शा माटे रडे छे? त्यारें स्त्रीयें कह्युं एवो कोइ नथी जे महारुं दुःख जांगे, सागरचंद्रे कह्युं एक वार तहारे दुःख शुं छे, ते कहे तो पछी दुःख जांगवानी वात छे? स्त्री बोली महारो प्राणेश्वर हरि

प्रज नामें किन्नर ठे मह्यारुं नाम हारावलि ठे, ते अमें बेहु विमानें बेसी चालतां मार्गमां मह्यारो पति बोल्यो, चालो आ वन निकुंजमांहे केलीगृह ठे तिहां रमीयें. में कह्युं इहां नहीं रमशुं, परंतु मेरुपर्वतना शिखरने विषे उद्यान ठे, तिहां रमशुं. एवुं कह्याथी मह्यारो धणी मह्याराथी रीसावीने गयो ठे, चालतो नथी, बे प्रहर थया घणी ए पगे लागुं बुं, पण मानतो नथी तेथी मह्यारुं हृदय फाटी पडे ठे. पण ए मह्यारो पति तो वज्र जेवुं हृदय करी बेगे ठे, तेमाटे तुं महापुरुष गे. तेथी अमारो बेहुनो मेलाप करावी आप.

ते सांजली सागरचंद्र पहेला किन्नरपासें जइ तेने मनाववा लाग्यो, तेवारें किन्नर हसीने बोल्यो, अरे सागरचंद्र! तुं मुजने मनाववा आव्यो गे, पण तुं तह्यारुं पोतानुं पाप जोतो नथी? जे एकवीश वर्ष थइ गयां ठतां निरपराधी सतीमांहे शिरोमणि एवी मृगांकलेखाने तें बोलावी पण नथी, अने मुजने समजाववा आव्यो गे, तो तें ए सुनाषित साचुं कह्युं जणाय ठे? ते सुनाषित आ प्रमाणें ठे ॥ यतः॥ परोपदेशे कुशला, दृश्यंते बह्वो नराः॥ स्ववाक्यमनुवर्त्तंते, ये ते जगति डुर्लनाः ॥१॥ एवुं कहेतो थकोज ते किन्नर पोतानी किन्नरीने विमानमां बेसाडी आकाशमार्गे चालतो थयो.

पाठलथी किन्नरीनी दासी आवीने सागरचंद्रने कहेवा लागी जे मह्यारी स्वामिनीयें मह्यारे मुखें तुमने कहेवराव्युं ठे, के तमें मह्यारी उपर उपकार कस्यो तेनो मह्याराथी कांइ प्रत्युपकार थयो नथी, माटें आ बे वस्तु आपुं बुं, ते तमें ल्यो. एवुं कही एक मूली आपी जे घसीने पगें लेप करीयें तो आकाशें गमन करवानी शक्ति आवे, वली बीजी एक औषधी आपी तेने घसीने कपालें तिलक करीयें तो रूप परावर्त्तन करवानी शक्ति आवे, एवुं कही बे औषधि आपीने दासी जती रही.

हवे कुमर विचारे ठे, के धन्य ठे तेहने के जे स्त्रीना संकडागमे दोष देखे ठे, तो पण पाणीमां रेखानी पेरें क्रोध धरे ठे. परंतु हुं कहेवो अधम पुरुष बुं, के जे स्त्रीमां दोष अणदीठे पण स्त्रीनी उपर पाषाण मांहेली रेखा सरखो कोप करी बेगे बुं, हा हा निरपराधी अबलाने एकवीश वर्ष पर्यंत विरहें संतापी!!! एम चिंतवी ते वात धनमित्र आगल कही. धनमित्रें कह्युं तें ए मह्योटुं पाप कीधुं. ए पाप तुं तह्यारा उपरथी उतार, नहीं कां ए अबला डुःख करती मरण पामशे, ते वात सांजली मूली घसी पादलेप करी

आकाशगमनी विद्या साधी मृगांकलेखाने घेर गया तेंमां प्रथम तो धनमित्र गयो तेनें मृगांकलेखायें हांकी काढयो, के अरे तुं कोण छे ? जे रात्रिने वखतें म्हारा घरमां प्रवेश करे छे ? जलो हो तो नीकल. नहीं कां म्हारा शीलने प्रजावें करी नस्म थाइश! धनमित्रें कह्युं हे बहेन! हुं सागरचंद्रनो मित्र छुं तम्हारे घेर सागरचंद्र आवे छे, तेनी वधामणी देवा आव्यो छुं. माटें दुःख गंमीने आनंद पाम. एवुं कहेतां वार तिहां सागरचंद्र पण आव्यो, एटले सखीयोनो वर्ग उठी गयो अने धनमित्र पण बीजा घरमां जइ बेठो.

हवे सागरचंद्र अश्रुजलें पोतानो अपराध धोतो थको कहेवा लाग्यो के तुं निरपराधी छतां में तुजने घणुं संतापी ते म्हारो अपराध तुं क्षमा कर. जेम विद्या नणीने वीसारी मूकीयें, तेम में तुजने परणीने वीसारी मूकी ते म्हारो सर्व अपराध तुं वीसारी मूक. अने संतोष आणीने म्हारी सायें बोल. ते सांजली मृगांकलेखायें कह्युं ए सर्व म्हारा पूर्वकर्मनो दोष छे, तमारो एमां कांइ वांक नथी. एम कही स्त्री नरतार घणाकालना विरहाग्नि प्रत्यें सुखजलें करी उलवतां हवां. तिहां स्त्री जर्त्तार परस्परें रमतां रात्रि अतिक्रमी, प्रजात थवा लाग्यो, तेवारें सागरचंद्रें कह्युं हुं कटकमां जाउं छुं केम के राजा संजारशे माटे हाजर रहेवुं जोइयें, मृगांकलेखायें कह्युं के तमे जाउ छो. म्हारे ऋतुस्नाननो दिवस छे, जो गर्न रह्यो हशे, तो पाछलथी सासु ससराने म्हारे उत्तर श्यो आपवो ? तेने सागरचंद्रें स्वनामांकित मुद्रिका आपी. मृगांकलेखानो हार लीधो. अने कह्युं के म्हारा मातापिता तुजने पूछे तो आ मुद्रिका देखाडजे. एवुं कही तेनी आंखमांथी आंसु लुही पोतानी आंखें आंसु आणतो सैन्यमांहे गयो.

पाछल मृगांकलेखाने उदरें कोइ पुण्यवंत देवतानो जीव आवी उपनो. उदरवृद्धि पामवा लाग्युं. तेवारें पछा सार्थवाही तापणनी पेठें कोप करती पूछवा लागी. ते मृगांकलेखायें सागरचंद्रनी मुद्रिका देखाडी तो पण सासु ससरो बेहु कहेवा लाग्यां जे एवां स्त्रीनां कपट अमें घणां जाणीयें छैयें. तें अमारा कुलनेविषे कलंक लगाडयुं. माटें हवे तमें घरबाहिर निकलो. एम कहीने जेम निर्धनपुरुष पामेली लक्ष्मीने हांकी काढे, तेम मृगांकलेखाने काढी मूकी तेमनी सायें चित्रलेखा सखी पण निकली. पछा सासुयें तेना पीयरने पण केवरावी मोकल्युं जे तमारी पुत्री कुचरित्र

कमाइ करी आवे ले, माटें जोइ तपासीनें घरमां पेसवा देजो. तेथी मा ता पितायें पण तेने कह्युं के इहां तह्मारे माटें रहेवानी जगा नथी. ति हां तह्मारी इच्छा थावे, तिहां जा. मृगांकलेखायें विचार्युं जे एक विधाता वांके सर्व वांकुं थाय अने विधाता पाधरो होय, तो सर्व पाधरुं थाय.

एम भाविने काहाढी थकी तिहांथी निकली मध्यान्ह समय एक वृक्ष नी नीचें विसामो लेइ आगल चाली एटले रात्रि पडी, ते रात्रि वृक्षनीचें अतिक्रमी प्रनातें तिहांथी चालती थइ, पण मार्ग नूली थकी एक विकट अटवीमां जइ पडी. तिहां रोवा लागी,तेवारें चित्रलेखायें कह्युं हे बहेन! तुं त्रण दिवसनी नूखी ले, माटे कंदमूलादिकना आहार पाणी कर, तो जीवती रहीश अन्यथा गर्नपात थशे, तो बालहत्यानुं पाप लागशे.

मृगांकलेखायें कह्युं यद्यपि कंदमूलनुं नक्षण वृत्तिकांतार आगारें करी अनुज्ञात ले एथी नियमनंग न थाय, तो पण हुं नक्षण करीश नहीं. एवी दृढ लइने एमज नूखी रही. एवामां तिहां एक चित्रगुप्त नामें सार्थवाह आव्यो, तेणें आवी कह्युं हे बहेन ! में मह्मारा माणसना मुखथकी तह्मारो वृत्तांत सांनल्युं ले,हवे तुं रडीश मां. मह्मारा सथवारामें विषे आव, तुं कहीश तिहां हुं तुजने मूकीश. एवा सार्थवाहनां वचनामृतें हर्ष पामी थकी पोतानुं सर्ववृत्तांत सार्थवाहनी आगल कही संनलाव्युं,अने कह्युं के हे सार्थवाह ! तुं मुजने अवंतीसेनराजाना कटकमां पहोंचाड. हुं तह्मारो उपकार मानीश, सार्थवाहें हाकारो कह्यो. सार्थवाह तेने साथें लेइ आगल चाल्यो. कुलदेवीनी पेरें मृगांकलेखाने आराधतो हवो,तेथी तिहां घणुं सुख पामी.

एवामां चित्रलेखा सखी वनमांहे इंधण लेवा गइ, तेने एक सिंह उपा डी लइ गयो. सार्थवाहें घणुं जोवरावी,पण जडी नहीं. तेवारें मृगांकलेखा बोली हवे वली पूरां कर्म उदय आव्यां,जे मह्मारी सखी पण मह्माराथी वि खूटी पडी. तेथी रोवा लागी. तेने सार्थवाहें आश्वासन देइ समजावी राखी.

एवामां लाटदेश नजीक आव्यो, ते राजाने विजयराजासाथें मित्राचारी ले, तेमाटें तेणें माणसथकी सार्थवाहने आव्यो जाणी माणसाना अवंती सेन राजानी साथें पोताना मित्रनुं वेर ले माटे सार्थवाहने लूंट्यो. तेवारें मृगांकलेखा एक देवकुलने खूणे बुपी बेसी रही. अरसमांहे सिंहादिक श्वापदोनो स्वर सांनलतां थकी नयाकुल थइ तेथी पुत्र जन्म थयो, तेनो

चंद्रमा जेवी कांति देखी खोलामां लइ रोवा लागी, अरे पुत्र ! आ वखतें तह्मारो पिता होत, तो जन्ममहोत्सव करत, पण हमणां आहीं जंगलमां तह्मारो जन्म महोत्सव कोण करशे ? एवुं कही विलाप करे छे. तेने वनदेवतायें समजावी ॥ यतः ॥ वुड्ढिवाहाणिवा, गुरुयाणं नउणं हीण दीणाणं ॥ महिमा उवरागोवा, ससीसुराणं न ताराणं ॥१॥ एवुं कहीने रोती राखी.

अनुक्रमें प्रजात थयुं तेवारें सागरचंद्रनी नामांकित मुद्राने वस्त्रनी गांठे बांधी ते वस्त्रथी पुत्रने ढांकी पोतें स्नान करवा तथा वस्त्रधोवाने तलाव उपर गइ, एवामां कोइ चूख्यो कूतरो आव्यो, ते मांसनी गंधें बालकने दांतथी ग्रहण करी लइने चालतो थयो, दैवयोगें ते छोकरानुं आयुष्य बलवान् होवाथी ते वखत तिहांथी ढूकडुं एक वैश्रमण नामें नगर छे तेनो रहेवासी एक श्रेष्ठी, नदी तटें शौचने अर्थें आव्यो छे, तेनी दृष्टियें पड्यो, तेवारें तेणें कूतराने हांकी तेना मुखमांथी बालक जीवतो पडाव्यो, कूतरो नाशी गयो, शेठ हर्ष पामतो छतो निधाननी पेरें ते बालक लइने पोतानी अपुत्रीयाणी धनवती नार्याने जइ आप्यो. धनवतीयें पण तेज समयें एक मुवेलो पुत्र जख्यो छे,तेने दासीने कही नखावी दीधो अने पहेलो जीवतो बालक पोतानी पासें सुवाख्यो. पछी तिहां शेठें महारे घेर पुत्र जन्म थयो, एवुं लोकोमां कहीने महोटो महोत्सव कीधो. तेनुं नाम सुरेंद्रदत्त दीधुं. ते पुत्र बीजना चंद्रमानी पेरें वधतो महोटो थाय छे. ते पुत्रना आव्या पछी तेना माहात्म्यथी वैश्रमण श्रेष्ठी धनें करीने साचे साचो वैश्रमणना जेवोज थयो. धनवतीने मृतगर्भनुं कलंक उतखुं, ते पछी वली बीजा पण एक नरदेव अने बीजो धनद एवा बे पुत्र तेणें जख्या, सुरेंद्रदत्त पण अनुक्रमें सर्वकला नख्यो, यौवन पाम्यो, वैश्रमणश्रेष्ठीयें तेने बत्रीश कन्यानुं पाणिग्रहण कराव्युं ते कुमर, दोगुंदक देवना सुख जोगवतो हवो.

पाछलथी मृगांकलेखा स्नान करी आवीने जूवे छे, तो पुत्र दीठो नहीं. तेवारें विलाप करवा लागी, हा हा मुजने शी डुर्मति उपनी जे हुं आवा रत्न जेवा बालकने अरण्यमां मूकीने स्नान करवा गइ !!! एम विलाप करवा लागी, एवामां तिहां ललिता एवे नामें एक गोवालीयानी स्त्री आवी तेणें मृगांकलेखाने समजावीने रोती राखी, अने पोताना गोकुलमांहे तेडी गइ, तिहां तेने दूध दहीं पीवरावी सुखिणी करी.

कमाइ करी आवे छे, माटें जोइ तपासीनें घरमां पेसवा देजो. तेथी माता पितायें पण तेने कह्युं के इहां तहारे माटें रहेवानी जगा नथी. जिहां तहारी इछा आवे, तिहां जा. मृगांकलेखायें विचार्युं जे एक विधाता वांके सर्व वांकुं थाय अने विधाता पाधरो होय, तो सर्व पाधरुं थाय.

एम मावित्रें काहाढी थकी तिहांथी निकली मध्यान्ह समय एक वृक्षनी नीचें विसामो लेइ आगल चाली एटले रात्रि पडी, ते रात्रि वृक्षनीचें अतिक्रमी प्रभातें तिहांथी चालती थइ, पण मार्ग भूली थकी एक विकट अटवीमां जइ पडी. तिहां रोवा लागी,तेवारें चित्रलेखायें कह्युं हे बहेन! तुं त्रण दिवसनी भूखी छो, माटे कंदमूलादिकना आहार पाणी कर, तो जीवती रहीश अन्यथा गर्भपात थशे, तो बालहत्यानुं पाप लागशे.

मृगांकलेखायें कह्युं यद्यपि कंदमूलनुं भक्षण वृत्तिकांतार आगारें करी अनुज्ञात छे एथी नियमभंग न थाय, तोपण हुं भक्षण करीश नहीं. एवो हठ लइने एमज भूखी रही. एवामां तिहां एक चित्रगुप्त नामें सार्थवाह आव्यो, तेणें आवी कह्युं हे बहेन ! में महारा माणसना मुखथकी तहारुं वृत्तांत सांभल्युं छे,हवे तुं रडीश मां. महारा सथवाराने विषे आव, तुं कहीश तिहां हुं तुजने मूकीश. एवा सार्थवाहनां वचनामृतें हर्ष पामी थकी पोतानुं सर्ववृत्तांत सार्थवाहनी आगल कही संभलाव्युं,अने कह्युं के हे सार्थवाह ! तुं मुजने अवंतीसेनराजाना कटकमां पहोंचाड. हुं तहारो उपकार मानीश, सार्थवाहें हाकारो कर्यो. सार्थवाह तेने सार्थे लेइ आगल चाल्यो. कुलदेवीनी पेरें मृगांकलेखाने आराधतो हवो,तेथी तिहां घणुं सुख पामी.

एवामां चित्रलेखा सखी वनमांहे इंधण लेवा गइ, तेने एक भिल्ल उपाडी लइ गयो. सार्थवाहें घणुं जोवरावी,पण जडी नहीं. तेवारें मृगांकलेखा बोली हवे वली पूरां कर्म उदय आव्यां,जे महारी सखी पण महाराथी विछूटी पडी. तेथी रोवा लागी. तेने सार्थवाहें आश्वासन देइ समजावी राखी.

एवामां लाटदेश नजीक आव्यो, ते राजाने विजयराजासार्थें मित्राचारी छे, तेमाटें तेणे मालवाथकी सार्थवाहने आव्यो जाणी मालवाना अवंतीसेन राजानी साथें पोताना मित्रनुं वैर छे माटे सार्थवाहने लूंट्यो. तेवारें मृगांकलेखा एक देवकुलने खूणे छुपी बेसी रही. अरण्यमांहे सिंहादिक श्वापदोनो स्वर सांभलवे करी भयाकुल थइ तेथी पुत्र जन्म थयो, तेनी

चंद्रमा जेवी कांति देखी खोलामां लइ रोवा लागी, अरे पुत्र ! आ वखतें तहारो पिता होत, तो जन्ममहोत्सव करत, पण हमणां आहीं जंगलमां तहारो जन्म महोत्सव कोण करशे ? एवुं कही विलाप करे छे. तेने वनदेव तायें समजावी ॥ यतः ॥ वुट्ठिवाहाणिवा, गुरुयाणं नडणं हीण दीणाणं ॥ महिमा उवरागोवा, ससीसुराणं न ताराणं ॥१॥ एवुं कहीने रोती राखी.

अनुक्रमें प्रनात थयुं तेवारें सागरचंद्रनी नामांकित मुद्राने वस्त्रनी गांठे बांधी ते वस्त्रथी पुत्रने ढांकी पोतें स्नान करवा तथा वस्त्रधोवाने तलाव उपर गइ, एवामां कोइ नूख्यो कूतरो आव्यो, ते मांसनी गंधें बालकने दांतथी ग्रहण करी लइने चालतो थयो, दैवयोगें ते छोकरानुं आयुष्य बलवान् होवाथी ते वखत तिहांथी ढूकडुं एक वैश्रमण नामें नगर छे तेनो रहेवासी एक श्रेष्ठी, नदी तटें शौचने अर्थें आव्यो छे, तेनी दृष्टियें पड्यो, तेवारें तेणें कूतराने हांकी तेना मुखमांथी बालक जीवतो पडाव्यो, कूतरो नाशी गयो, शेठ हर्ष पामतो छतो निधाननी पेरें ते बालक लइने पोतानी अपुत्रीयाणी धनवती नार्याने जइ आप्यो. धनवतीयें पण तेज समयें एक मुवेलो पुत्र जण्यो छे,तेने दासीने कही नखावी दीधो अने पदेलो जीवतो बालक पोतानी पासें सुवाड्यो. पछी तिहां शेठें महारे घेर पुत्र जन्म थयो, एवुं लोकोमां कहीने महोटो महोत्सव कीधो. तेनुं नाम सुरेंद्रदत्त दीधुं. ते पुत्र बीजना चंद्रमानी पेरें वधतो महोटो थाय छे. ते पुत्रना आव्या पछी तेना माहात्म्यथी वैश्रमण श्रेष्ठी धनें करीने साचे साचो वैश्रमणना जेवोज थयो. धनवतीने मृतगर्भनुं कलंक उतर्युं, ते पछी वली बीजा पण एक नरदेव अने बीजो धनद एवा बे पुत्र तेणें जण्या, सुरेंद्रदत्त पण अनुक्रमें सर्वकला नण्यो, यौवन पाम्यो, वैश्रमणश्रेष्ठीयें तेने बत्रीश कन्यानुं पाणिग्रहण कराव्युं ते कुमर, दोगुंदक देवना सुख नोगवतो हवो.

पाछलथी मृगांकलेखा स्नान करी आवीने जुवे छे, तो पुत्र दीठो नहीं. तेवारें विलाप करवा लागी, हा हा मुजने शी कुमति उपनी जे हुं आवा रत्न जेवा बालकने अरण्यमां मूकीने स्नान करवा गइ !!! एम विलाप करवा लागी, एवामां तिहां लज्जिता एवे नामें एक गोवालीयानी स्त्री आवी तेणें मृगांकलेखाने समजावीने रोती राखी, अने पोताना गोकुलमांहे तेडी गइ, तिहां तेने दूध दहीं पीवरावी सुखिणी करी.

कमाइ करी आवे ठे, माटें जोइ तपासीनें घरमां पेसवा देजो. तेथी मा ता पितायें पण तेने कह्युं के इहां तहारे माटें रहेवानी जगा नथी. ति हां तहारी इछा आवे, तिहां जा. मृगांकलेखायें विचार्युं जे एक विधाता वांके सर्व वांकुं थाय अने विधाता पाधरो होय, तो सर्व पाधरुं थाय.
एम मावित्रें काहाढी थकी तिहांथी निकली मध्यान्ह समय एक वृक्ष नी नीचें विसामो लेइ आगल चाली एटले रात्रि पडी, ते रात्रि वृक्षनीचें अतिक्रमी प्रनातें तिहांथी चालती थइ, पण मार्ग नूली थकी एक विकट अटवीमां जइ पडी. तिहां रोवा लागी,तेवारें चित्रलेखायें कह्युं हे बहेन! तुं त्रण दिवसनी नूखी ठो, माटे कंदमूलादिकना आहार पाणी कर, तो जीवती रहीश अन्यथा गर्नपात थशे, तो बालहत्यानुं पाप लागशे.
मृगांकलेखायें कह्युं यद्यपि कंदमूलनुं नक्षण वृत्तिकांतार आगारें करी अनुज्ञात ने एथी नियमनंग न थाय, तो पण हुं नक्षण करीश नहीं. एम ह्व लइने एमज नूखी रही. एवामां तिहां एक चित्रगुप्त नामें सार्थवाह आव्यो, तेणें आवी कह्युं हे बहेन ! में महारा माणसना मुखथकी तहारुं वृत्तांत सांनल्युं ठे,हवे तुं रडीश मां. महारा सथवाराने विषे आव, तुं कहीश तिहां हुं तुजने मूकीश. एवा सार्थवाहनां वचनामृतें हर्ष पामी थकी पोतानुं सर्ववृत्तांत सार्थवाहनी आगल कही संनलाव्युं,अने कह्युं के हे सार्थवाह ! तुं मुजने अवंतीसेनराजाना कटकमां पहोंचाड. हुं तहारो उपकार मानीश, सार्थवाहें हाकारो कर्यो. सार्थवाह तेने साथें लेइ आगल चाल्यो. कुलदेवीनी पेरें मृगांकलेखाने आराधतो हवो,तेथी तिहां घणुं सुख पामी.
एवामां चित्रलेखा सखी वनमांहे इंधण लेवा गइ, तेने एक निल्ल उपा डी लइ गयो. सार्थवाहें घणुं जोवरावी,पण जडी नहीं. तेवारें मृगांकलेखा बोली हवे वली पूरां कर्म उदय आव्यां, जे महारी सखी पण महाराथी त्रूटी पडी. तेथी रोवा लागी. तेने सार्थवाहें आश्वासन देइ समजावी राखी.
एवामां लाटदेश नजीक आव्यो, ते राजाने विजयराजासाथें मित्राचारी ठे, तेमाटें तेणे मालवाथकी सार्थवाहने आव्यो जाणी मालवाना अवंती सेन राजानी साथें पोताना मित्रनुं वेर ने माटे सार्थवाहने लूंट्यो. तेवारें मृगांकलेखा एक देवकुलने खूणे ठुपी बेसी रही. अरण्यमांहे सिंहादिक श्वापदोनां स्वर सांनलवे करी नयाकुल थइ तेथी पुत्र जन्म थयो, तेनी

चंड्रमा जेवी कांति देखी खोळामां लइ रोवा लागी, अरे पुत्र ! आ वखतें तह्मारो पिता होत, तो जन्ममहोत्सव करत, पण हमणां आहीं जंगलमां तह्मारो जन्म महोत्सव कोण करशे ? एवुं कही विलाप करे ठे. तेने वनदेव तायें समजावी ॥ यतः ॥ वुद्धिवाह्याणिश्रा, गुरुयाणं नवणं हीण दीणाणं ॥ महिना उवरागोया, ससी सुराणं न ताराणं ॥१॥ एवुं कहीने रोती राखी.

अनुक्रमें प्रनात थयुं तेवारें सागरचंड्रनी नामांकित मुड्राने वस्त्रनी गांठे बांधी ते वस्त्रथी पुत्रने ढांकी पोतें स्नान करवा तथा वस्त्रधोवाने तलाव उपर गइ, एवामां कोइ नूख्यो कूतरो आव्यो, ते मांसनी गंधें बालकने दांतथी ग्रहण करी लइने चालतो थयो, दैवयोगें ते ठोकरानुं आयुष्य बल वान् होवाथी ते वखत तिहांथी ढूकडुं एक वैश्रमण नामें नगर ठे तेनो रहेवासी एक श्रेष्ठी, नदी तटें शौचने अर्थे आव्यो ठे, तेनी दृष्टियें पड्यो, तेवारें तेणें कूतराने हांकी तेना मुखमांथी बालक जीवतो पडाव्यो, कूतरो नाशी गयो, शेठ हर्ष पामतो ठतो निधाननी पेरें ते बालक लइने पोतानी अपुत्रीयाणी धनवती नार्याने जइ आप्यो. धनवतीयें पण तेज समयें एक मुवेलो पुत्र जण्यो ठे, तेने दासीने कही नखावी दीधो अने पठे लो जीवतो बालक पोतानी पासें सुवाड्यो. पठी तिहां शेठें मह्मारे घेर पुत्र जन्म थयो, एवुं लोकोमां कहीने महोटो महोत्सव कीधो. तेनुं नाम सुरें इदत्त दीधुं. ते पुत्र बीजना चंड्रमानी पेरें वधतो महोटो थाय ठे. ते पुत्र ना आव्या पठी तेना माहात्म्यथी वैश्रमण श्रेष्ठी धनें करीने साचे साचो वैश्रमणना जेवोज थयो. धनवतीने मृतगर्ननुं कलंक उतरयुं, ते पठी वली बीजा पण एक नरदेव अने बीजो धनद एवा बे पुत्र तेणें जण्या, सुरेंड्दत्त पण अनुक्रमें सर्वकला नण्यो, यौवन पाम्यो, वैश्रमणश्रेष्ठीयें तेने बत्रीश कन्यानुं पाणिग्रहण कराव्युं ते कुमर, दोगुंदक देवना सुख नोगवतो हवो.

पाठलथी मृगांकलेखा स्नान करी आवीने जुवे ठे, तो पुत्र दीठो नहीं. तेवारें विलाप करवा लागी, हा हा मुजने शी कुमति उपनी जे हुं आवा रत्न जेवा बालकने अरण्यमां मूकीने स्नान करवा गइ !!! एम विलाप करवा लागी, एवामां तिहां ललिता एवे नामें एक गोवालीयानी स्त्री आवी तेणें मृगांकलेखाने समजावीने रोती राखी, अने पोताना गोकुलमांहे तेडी गइ, तिहां तेने दूध दहीं पीवरावी सुखिणी करी.

कमाइ करी आवे ठे, माटें जोइ तपासीनें घरमां पेसवा देजो. तेथी माता पितायें पण तेने कह्युं के इहां तहारे माटें रहेवानी जगा नथी. जिहां तहारी इछा आवे, तिहां जा. मृगांकलेखायें विचार्युं जे एक विधाता वांके सर्व वांकुं थाय अने विधाता पाधरो होय, तो सर्व पाधरुं थाय.

एम माविंत्रें काढाढी थकी तिहांथी निकली मध्यान्ह समय एक वृक्षनी नीचें विसामो लेइ आगल चाली एटले रात्रि पडी, ते रात्रि वृक्षनीचें अतिक्रमी प्रजातें तिहांथी चालती थइ, पण मार्ग नूली थकी एक विकट अटवीमां जइ पडी. तिहां रोवा लागी,तेवारें चित्रलेखायें कह्युं हे बहेन! तुं त्रण दिवसनी नूखी ठो, माटे कंदमूलादिकना आहार पाणी कर, तो जीवती रहीश अन्यथा गर्जपात थशे, तो बालहत्यानुं पाप लागशे.

मृगांकलेखायें कह्युं यद्यपि कंदमूलनुं नक्षण वृत्तिकांतार आगारें करी अनुज्ञात ठे एथी नियमजंग न थाय, तो पण हुं नक्षण करीश नहीं. एवी हव लइने एमज नूखी रही. एवामां तिहां एक चित्रगुप्त नामें सार्थवाह आव्यो, तेणें आवी कह्युं हे बहेन ! में महारा माणसना मुखथकी तहारुं वृत्तांत सांजल्युं ठे,हवे तुं रडीश मां. महारा सथवाराने विषे आव, तुं कहीश तिहां हुं तुजने मूकीश. एवा सार्थवाहनां वचनामृतें हर्ष पामी थकी पोतानुं सर्ववृत्तांत सार्थवाहनी आगल कही संजलाव्युं,अने कह्युं के हे सार्थवाह ! तुं मुजने अवंतीसेनराजाना कटकमां पहोंचाड. हुं तहारो उपकार मानीश, सार्थवाहें हाकारो कर्यो. सार्थवाह तेने सायें लेइ आगल चाल्यो. कुलदेवीनी पेरें मृगांकलेखाने आराधतो हवो,तेथी तिहां घणुं सुख पामी.

एवामां चित्रलेखा सखी वनमांहे इंधण लेवा गइ, तेने एक निल उपाडी लइ गयो. सार्थवाहें घणुं जोवरावी,पण जडी नहीं. तेवारें मृगांकलेखा बोली हवे वली पूरां कर्म उदय आव्यां,जे महारी सखी पण महाराथी विछूटी पडी. तेथी रोवा लागी. तेने सार्थवाहें आश्वासन देइ समजावी राखी.

एवामां लाटदेश नजीक आव्यो, ते राजाने विजयराजासायें मित्राचारी ठे, तेमाटें तेणे मालवायकी सार्थवाहने आव्यो जाणी मालवाना अवंतीसेन राजानी सायें पोताना मित्रनुं वैर ठे माटे सार्थवाहने लूंट्यो. तेवारें मृगांकलेखा एक देवकुलने खूणे ठुपी बेसी रही. अरण्यमांहे सिंहादिक श्वापदोनो स्वर सांजलवे करी नयाकुल थइ तेथी पुत्र जन्म थयो, तेनी

चंद्रना जेवी कांति देखी खोळामां लइ रोवा लागी, अरे पुत्र! आ वखतें तहारो पिता होत, तो जन्ममहोत्सव करत, पण हमणां आहीं जंगलमां तहारो जन्म महोत्सव कोण करशे? एवुं कही विलाप करे छे. तेने वनदेव तायें समजावी ॥ यतः॥ बुद्धिवाहाणिवा, गुरुयाणं नउणं हीण दीणाणं ॥ महिमा उवरागोवा, सत्तीसुराणं न ताराणं ॥१॥ एवुं कहीने रोती राखी.

अनुक्रमें प्रभात थयुं तेवारें सागरचंद्रनी नामांकित मुद्राने वस्त्रनी गांठे बांधी ते वस्त्रथी पुत्रने ढांकी पोतें स्नान करवा तथा वस्त्रधोवाने तलाव उपर गइ, एवामां कोइ भूख्यो कूतरो आव्यो, ते मांसनी गंधें बालकने दांतथी ग्रहण करी लइने चालतो थयो, दैवयोगें ते छोकरानुं आयुष्य बल वान् होवाथी ते वखत तिहांथी ढुकडुं एक वैश्रमण नामें नगर छे तेनो रहेवासी एक श्रेष्ठी, नदी तटें शौचने अर्थे आव्यो छे, तेनी दृष्टियें पड्यो, तेवारें तेणें कूतराने हांकी तेना मुखमांथी बालक जीवतो पडाव्यो, कूतरो नासी गयो, शेठ हर्षे पामतो छतो निधाननी पेरें ते बालक लइने पोतानी अपुत्रीयाणी धनवती नामाने जइ आप्यो. धनवतीयें पण तेज समयें एक मुवेलो पुत्र जस्यो छे,तेने दासीने कही नखावी दीधो अने पछे लो जीवतो बालक पोतानी पासें सुवाड्यो. पछी तिहां शेठें महारे घेर पुत्र जन्म थयो, एवुं लोकोमां कहीने महोटो महोत्सव कीधो. तेनुं नाम सुरेंद्रदत्त दीधुं. ते पुत्र बीजना चंद्रमानी पेरें वधतो महोटो थाय छे. ते पुत्र ना आव्या पछी तेना माहात्म्यथी वैश्रमण श्रेष्ठी धनें करीने तावे सावो वैश्रमणना जेवोज थयो. धनवतीने मृतगर्भनुं कलंक टल्युं, ते पछी वली बीजा पण एक नरदेव अने बीजो धनद एवा बे पुत्र तेणें जस्या, सुरेंद्रदत्त पण अनुक्रमें सर्वकला भस्यो, यौवन पाम्यो, वैश्रमणश्रेष्ठीयें तेने बत्रीश कन्यानुं पाणिग्रहण कराव्युं ते कुमर, दोगुंदक देवना सुख भोगवतो हवो.

पाछलथी मृगांकलेखा स्नान करी आवीने जुवे छे, तो पुत्र दीठो नहीं. तेवारें विलाप करवा लागी, हा हा मुजने शी दुर्मति उपनी जे हुं आवा रत्न जेवा बालकने धरत्तमां मुकीने स्नान करवा गइ!!! एम विलाप करवा लागी, एवामां तिहां लज्जिता एवे नामें एक गोवालीयानी स्त्री आवी तेणें मृगांकलेखाने समजावीने रोती राखी, अने पोताना गोकुलमांहे तेडी गइ, तिहां तेने दूध दहीं पीवरावी सुखिणी करी.

एकदा गोकुलनो धणी वसंत नामें ठे,तेणे तेने दीठी,तेवारें कामें पीडित थको जोगेनी प्रार्थना करतो हवो. तेणे जेम कोइ दासीनो तिरस्कार करीयें, तेवो तिरस्कार कस्यो. तेने ललितायें समजाव्यो, जे ए सती ठे, आपणा गोकुलमां आवी ठे,मारें एनो केड तुं मूकी दे. तो पण तेणें विचास्युं जे मह्वारे घेर आवी ठे माटे मह्वारुं कथन मानेज ठूटे, एवुं निर्धारी एकदा मृगांकलेखाने उंघमा सूती देखी उपाडीने पोताने घेर लइ गयो. अने विषय जोगववानी प्रार्थना करी तिह्वां मृगांकलेखायें यद्यपि " बलाभिउंगेणं " ए आगार ठे, तो पण पोतानुं शील राख्युं, शील लोपवा दीधुं नहीं. तेना शीलना प्रजावें वसंतने वासी वल्यूं, तेह्वज रात्रियें मरण पामीने डुर्गतियें गयो. गोकुलने विषे मृगांकलेखानो शीलमहिमा विस्तार पाम्यो. वसंतना कुटुंबपरिवारें तेने घणुं मान आपीने ललिताने घेर मोकली, पण मार्ग जूली पडी तेथी अरण्यमां निकली गइ. मार्गमां वडवृक्षनी ठायायें जइ वेठी थकी कर्मनो परिणाम विचारे ठे.

कर्मयोगें मकरंद नामें तापस तिह्वां आव्यो, तेणे मृगांकलेखाना सर्व समाचार सांजली आश्रमें लइ जइ कुलपतिने आपी. तेणें पोतानी पुत्री करी मानी अने एक तापसनी सार्थें कोइ महिरनामा ग्रामनी निकट जइ मूकी. तिह्वां ते गामनो सुंदर नामें स्वामी ठे, तेना माणसें तेने पकडीने आगल उंगणीश माणस बंदीवान ठे, तेनी पासें जइ वीशमी एने पण मूकी. ते सुंदरने घेर पुत्रनो जन्म थयो ठे,तेमाटे तेणें दश पुरुष अने दश स्त्री जइकाली देवीने चडाववानी मानता करी ठे,तेथी ए वीशे बंदीवानोने देवीना मठने विषे लइ आव्या, तिह्वां सुंदर पोतें आवीने वीश जणने कहेवा लाग्यो जे अमारे घेर पुत्र जन्म थाय, तो जइकालीदेवीने दश स्त्री तथा दश पुरुष, मली वीश माणसनो बलि आपीयें. एवी अमें मानता करी ठे. मारें तमारो इह्वां बलि देवाशे, तेथी जेह्वने जे इष्ट होय, तेनुं स्मरण करो. एवुं सांजली उंगणीश माणस तो जयें करी त्रास पामतां बोली शक्यां नहीं परंतु एक मृगांकलेखा बोली जे प्रथम मुफने मारी बलि आपो. जेम हुं बीजा माणसनुं मरण मह्वारी नजरें देखुं नहीं. मने माह्वारा मरणनी चिंता नथी, पण उंगणीश जणना मरणनी चिंता ठे.

एवुं सांजली सुंदर बोल्यो के हे जगिनी! एकली तुफनेज हुं मूकुं हुं.

तेने मृगांकलेखायें कह्युं हे नाइ सुंदर ! मुजने मारी नाख. पण उंगणीश जनने मूकी आप. जो उंगणीशने मारे, तो हुं एकली जीवती रहीने शुं करुं ? तेवारें सुंदर, मृगांकलेखानो करुणामय परिणाम देखीने चिंतवे ने ॥ यतः ॥ निजप्राणैः परप्राणान्, परित्राति सउत्तमः॥ माहशाविपरीतं तु, प्रकुर्वंति महाधमाः ॥१॥ एवुं विचारी जीववधनुं पच्चरकाण करी वीशे माणसने मूकी दीधां. सर्वे मृगांकलेखाने आशीष देतां पोतपोताने स्थानकें गयां.

मृगांकलेखा तिहांथी चालती वली पण मार्ग चूकीने एक अटवीमां जइ पडी. तिहां एक कालविकराल जेवो नूख्यो सिंह, तेने खावा आव्यो. तेवारें मृगांकलेखा बोली एक महारो पति सागरचंद्र मूकीने आजपर्यंत में परपुरुष चिंतव्यो नथी, एवा महारा शीलनो जो महिमा होय, तो आ विघ्न विलय थइ जजो. एटलुं कहेतांज ते सिंह काष्ठना पुतला जेवो थइने तिहांज उनो रही गयो. मृगांकलेखा आगल चाली संध्यासमयने विषे काली मशीमांहे त्रण वार जबोली काढी होय, एवी एक राक्षसी नूखीथकी तिहां आवती दीठी, तेवारें पण मृगांकलेखायें तेमज कह्युं, के महारो पति सागरचंद्र विना जो अवर पुरुष में महारा मनें करी चिंतव्यो न होय, तो ते महारा शीलना प्रनावें करी ए राक्षसी हताशा थाउ. ए वचनथी राक्षसी पण निराश थइ चाली गइ. मृगांकलेखायें तिहां एक वटवृक्षनी नीचें रात्रि काहाढी, प्रनातें चालवा मांड्युं. चालतां चालतां सिद्धार्थपुरनी बाहिर उद्याने देवकुलने विषे पथिश्रांतथकी विश्राम लेवा बेठी.

कर्मना वशथकी तिहां एक कामसेना नामें वेश्या आवी, ते तेनुं रूप सुंदर देखी तिहांथी जोरावरीयें उपडावीने घेर लइ गइ. अने कहेवा लागी के तुं महारे घेर गणिकानो धंधो कर. मृगांकलेखायें कह्युं हुं कुलीन स्त्री थइ ए काम न करुं, तेवारें तेने वेश्यायें घणुं संतापी, तो पण तेणें वेश्यापणुं अंगीकार न कीधुं. पापना वशथकी तेहिज रात्रियें कामसेना वेश्या मरण पामी, तेवारें तेनी दासीयें जोरावरीथी मृगांकलेखाने कामसेनाने पाटें थापी तो पण तिहां ते निष्कलंक शील पाले, दासीनो स्वार्थ न पहोंचे. तेवारें ते दासीयें रीष आणीने कनकध्वज राजानी आगल जइ मृगांकलेखाना रूपनुं वर्णन कर्युं, राजायें तेने तेडवा माटे पोतानो प्रतिहार मोकल्यो, तेणें आवी कह्युं के चाल, तुफने कनकध्वज राजा तेडे ने.

एकदा गोकुलनो धणी वसंत नामें ठे,तेणे तेने दीठी,तेवारें कामें पीडित थको जोगनी प्रार्थना करतो हुवो. तेणे जेम कोइ दासीनो तिरस्कार करीयें, तेवो तिरस्कार कखो. तेने ललितायें समजाव्यो, जे ए सती ठे, आपणा गोकुलमां आवी ठे,माटें एनो केड तुं मूकी दे. तो पण तेणें विचार्युं जे म्हारे घेर आवी ठे माटे म्हारुं कथन मानेज छूटे, एवुं निर्धारी एकदा मृगांकलेखाने उंघमा सूती देखी उपाडीने पोताने घेर लइ गयो. अने विषय जोगववानी प्रार्थना करी तिहां मृगांकलेखायें यद्यपि " बला निउंगेणं " ए आगार ठे, तो पण पोतानुं शील राख्युं, शील लोपवा दीधुं नहीं. तेना शीलना प्रजावें वसंतने वासी वळ्यूं, तेहज रात्रियें मरण पामीने कुगतियें गयो. गोकुलने विषे मृगांकलेखानो शीलमहिमा विस्तार पाम्यो. वसंतना कुटुंबपरिवारें तेने घणुं मान आपीने ललिताने घेर मोकली, पण मार्ग जूली पडी तेथी अरण्यमां निकली गइ. मार्गमां वडवृक्षनी ठायायें जइ बेठी थकी कर्मनो परिणाम विचारे ठे.

कर्मयोगें मकरंद नामें तापस तिहां आव्यो, तेणे मृगांकलेखाना सर्व समाचार सांजली आश्रमें लइ जइ कुलपतिने आपी. तेणें पोतानी पुत्री करी मानी अने एक तापसनी साथें कोइ महिरनामा ग्रामनी निकट जइ मूकी. तिहां ते गामनो सुंदर नामें स्वामी ठे, तेना माणसें तेने पकडीने आगल उंगणीश माणस बंदीवान ठे, तेनी पासें जइ वीशमी एने पण मूकी. ते सुंदरने घेर पुत्रनो जन्म थयो ठे,तेमाटे तेणें दश पुरुष अने दश स्त्री नइकाली देवीने चडाववानी मानता करी ठे,तेथी ए वीशे बंदीवानोने देवीना मठने विषे लइ आव्या, तिहां सुंदर पोतें आवीने वीश जणने कहेवा लाग्यो जे अमारे घेर पुत्र जन्म थाय, तो नइकालीदेवीने दश स्त्री तथा दश पुरुष, मली वीश माणसनो बलि आपीयें. एवी अमें मानता करी ठे. माटें तमारो इहां बलि देवाशे, तेथी जेहने जे इष्ट होय, तेनुं स्मरण करो. एवुं सांजली उंगणीश माणस तो जयें करी त्रास पामतां बोली शक्यां नहीं परंतु एक मृगांकलेखा बोली जे प्रथम मुफने मारी बलि आपो. जेम हुं बीजा माणसनुं मरण म्हारी नजरें देखुं नहीं. मने म्हारा मरणनी चिंता नथी, पण उंगणीश जणना मरणनी चिंता ठे.

एवुं सांजली सुंदर बोल्यो के हे जगिनी! एटली तुफनेज हुं मूकुं बुं.

तेने मृगांकलेखायें कह्युं के भाइ सुंदर! मुजने मारी नाख. पण उगणीश जनने मूकी आप. जो उगणीशने मारे, तो हुं एकली जीवती रहीने शुं करुं? तेवारें सुंदर, मृगांकलेखानो करुणामय परिणाम देखीने चिंतवे छे॥ यतः॥ निजप्राणैः परप्राणान्, परित्राति सत्तमः॥ मादृशाविपरीतं तु, प्रकुर्वंति महाधमाः॥१॥ एवुं विचारी जीववधनुं पच्चरकाण करी वीशे माणसने मूकी दीधां. सर्वे मृगांकलेखाने आशीष देतां पोतपोताने स्थानकें गयां.

मृगांकलेखा तिहांथी चालती वली पण मार्ग चूकीने एक अटवीमां जइ पडी. तिहां एक कालविकराल जेवो भूख्यो सिंह, तेने खावा आव्यो. तेवारें मृगांकलेखा बोली एक महारो पति सागरचंद्र मूकीने आजपर्यंत में परपुरुष चिंतव्यो नथी, एवा महारा शीलनो जो महिमा होय, तो आ विघ्न विलय थइ जजो. एटलुं कहेतांज ते सिंह काष्ठना पुतला जेवो थइने तिहांज उनो रही गयो. मृगांकलेखा आगल चाली संध्यासमयने विषे काली मशीमांहे त्रण वार जबोली काढी होय, एवी एक राक्सी भूखीय की तिहां आवती दीठी, तेवारें पण मृगांकलेखायें तेमज कह्युं, के महारो पति सागरचंद्र विना जो अवर पुरुष में महारा मनें करी चिंतव्यो न होय, तो ते महारा शीलना प्रभावें करी ए राक्सी हताशा थाउ. ए वचनथी राक्सी पण निराश थइ चाली गइ. मृगांकलेखायें तिहां एक वटवृक्षनी नीचें रात्रि काहाढी, प्रभातें चालवा मांमयुं. चालतां चालतां सिद्धार्थपुरनी बाहिर उद्याने देवकुलने विषे पथिश्रांतपणे विश्राम लेवा बेठी.

कर्मना वशथकी तिहां एक कामसेना नामें वेश्या आवी, ते तेनुं रूप सुंदर देखी तिहांथी जोरावरीयें उपडावीने घेर लइ गइ. अने कहेवा लागी के तुं महारे घेर गणिकानो धंधो कर. मृगांकलेखायें कह्युं हुं कुलीन स्त्री थइ ए काम न करुं, तेवारें तेने वेश्यायें घणुं संताप्ी, तो पण तेणें वेश्यापणुं अंगीकार न कीधुं. पापना वशथकी तेहिज रात्रियें कामसेना वेश्या मरण पामी, तेवारें तेनी दासीयें जोरावरीथी मृगांकलेखाने कामसेनाने पाटें थापी तो पण तिहां ते निष्कलंक शील पाले, दासीनो साथे न वहीं चे. तेवारें ते दासीयें रीस आणीने कनकध्वज राजानी आगल जइ मृगांकलेखाना रूपनुं वर्णन कर्युं, राजायें तेने तेडवा माटे पोतानो प्रतिहार मोकल्यो, तेणें आवी कह्युं के बाल, तुजने कनकध्वज राजा तेडे छे.

एकदा गोकुलनो धणी वसंत नामें ने,तेणे तेने दीठी,तेवारें कामें पीडित थको जोगनी प्रार्थना करतो हवो. तेणे जेम कोइ दासीनो तिरस्कार करीयें, तेवो तिरस्कार कस्यो. तेने ललितायें समजाव्यो, जे ए सती ने, आपणा गोकुलमां आवी ने,माटें एनो केड तुं मूकी दे. तो पण तेणें विचास्तुं जे मह्लारे घेर आवी ने माटे मह्लारुं कथन मानेज सूटे, एवुं निर्धारी एकदा मृगांकलेखाने उंघमा सूती देखी उपाडीने पोताने घेर लइ गयो. अने विषय जोगववानी प्रार्थना करी तिहां मृगांकलेखायें यद्यपि " बला निउंगेणं " ए आगार ने, तो पण पोतानुं शील राख्युं, शील लोपवा दीधुं नहीं. तेना शीलना प्रजावें वसंतने वासी वल्यूं, तेह्ज रात्रियें मरण पामीने दुर्गतियें गयो. गोकुलने विषे मृगांकलेखानो शीलमहिमा विस्तार पाम्यो. वसंतना कुटुंबपरिवारें तेने घणुं मान आपीने ललिताने घेर मोकली, पण मार्गे जूली पडी तेथी अरण्यमां निकली गइ. मार्गमां वडवृक्षनी गयायें जइ बेठी थकी कर्मनो परिणाम विचारे ने.

कर्मयोगें मकरंद नामें तापस तिहां आव्यो, तेणे मृगांकलेखाना सर्व समाचार सांजली आश्रमें लइ जइ कुलपतिने आपी. तेणें पोतानी पुत्री करी मानी अने एक तापसनी साथें कोइ मह्रिनामा ग्रामनी निकट जइ मूकी. तिहां ते गामनो सुंदर नामें स्वामी ने, तेना माणसें तेने पकडीने आगल उंगणीश माणस बंदीवान ने, तेनी पासें जइ वीशमी एने पण मूकी. ते सुंदरने घेर पुत्रनो जन्म थयो ने,तेमाटे तेणें दश पुरुष अने दश स्त्री जइकाली देवीने चडाववानी मानता करी ने,तेथी ए वीशे बंदीवानोने देवीना मठने विषे लइ आव्या, तिहां सुंदर पोतें आवीने वीश जणने कहेवा लाग्यो जे अमारे घेर पुत्र जन्म थाय, तो जइकालीदेवीने दश स्त्री तथा दश पुरुष, मली वीश माणसनो वलि आपीयें. एवी अमें मानता करी ने. माटें तमारो इहां वलि देवाशे, तेथी जेह्ने जे इष्ट होय, तेनुं स्मरण करो. एवुं सांजली उंगणीश माणस तो जयें करी त्रास पामतां बोली शक्यां नहीं परंतु एक मृगांकलेखा बोली जे प्रथम मुफने मारी वलि आपो. जेम हुं बीजा माणसनुं मरण मह्लारी नजरें देखुं नहीं. मने माह्लारा मरणनी चिंता नथी, पण उंगणीश जणना मरणनी चिंता ने.

एवुं सांजली सुंदर बोल्यो के हे जगिनी ! एकली तुफनेज हुं मूकुं छुं.

तेने मृगांकलेखायें कह्युं हे नाइ सुंदर ! मुफने मारी नाख. पण उंगणीश जनने मूकी श्राप. जो उंगणीशने मारे, तो हुं एकली जीवती रहीने शुं करुं ? तेवारें सुंदर, मृगांकलेखानो करुणामय परिणाम देखीने चिंतवे ठे ॥ यतः ॥ निजप्राणैः परप्राणान्, परित्राति सउत्तमः ॥ मादृशाविपरीतं तु, प्रकुर्वंति महाधमाः ॥१॥ एवुं विचारी जीववधनुं पच्चरकाण करी वीशे माणसने मूकी दीधां. सर्वे मृगांकलेखाने श्राशीष देतां पोतपोताने स्थानकें गयां.

मृगांकलेखा तिहांथी चालती वली पण मार्ग नूलीने एक श्रटवीमां जइ पडी. तिहां एक कालविकराल जेवो नूख्यो सिंह, तेने खावा श्राव्यो. तेवारें मृगांकलेखा बोली एक महारो पति सागरचंद्र मूकीने श्राजपर्यंत में परपुरुष चिंतव्यो नथी, एवा महारा शीलनो जो महिमा होय, तो श्राविघ्न विलय थइ जजो. एटलुं कहेतांज ते सिंह काष्ठना पुतला जेवो थइने तिहांज उनो रही गयो. मृगांकलेखा श्रागल चाली संध्यासमयने विषे काली मशीमांहे त्रण वार जबोली काढी होय, एवी एक राक्षसी नूखीथकी तिहां श्रावती दीठी, तेवारें पण मृगांकलेखायें तेमज कह्युं, के महारो पति सागरचंद्र विना जो श्रवर पुरुष में महारा मनें करी चिंतव्यो न होय, तो ते महारा शीलना प्रनावें करी ए राक्षसी हताशा थाउ. ए वचनथी राक्षसी पण निराश थइ चाली गइ. मृगांकलेखायें तिहां एक वटवृक्षनी नीचें रात्रि काहाढी. प्रनातें चालवा मांम्युं. चालतां चालतां सिद्धार्थपुरनी बाहिर उद्याने देवकुलने विषे पथिश्रांतथकी विश्राम लेवा बेठी.

कर्मना वशथकी तिहां एक कामसेना नामें वेश्या श्रावी, ते तेनुं रूप सुंदर देखी तिहांथी जोरावरीयें उपडावीने घेर लइ गइ. श्रने कहेवा लागी के तुं महारे घेर गणिकानो धंधो कर. मृगांकलेखायें कह्युं हुं कुलीन स्त्री थइ ए काम न करुं, तेवारें तेने वेश्यायें घणुं संतापी, तो पण तेणें वेश्यापणुं श्रंगीकार न कीधुं. पापना वशथकी तेहिज रात्रियें कामसेना वेश्या मरण पामी, तेवारें तेनी दासीयें जोरावरीथी मृगांकलेखाने कामसेनाने पाटें थापी तो पण तिहां ते निष्कलंक शील पाले, दासीनो स्वार्थ न पहोंचे. तेवारें ते दासीयें रीष श्राणीने कनकध्वज राजानी श्रागल जइ मृगांकलेखाना रूपनुं वर्णन कह्युं, राजायें तेने तेडवा माटे पोतानो प्रतिहार मोकल्यो, तेणें श्रावी कह्युं के चाल, तुजने कनकध्वज राजा तेडे ठे.

एकदा गोकुलनो धणी वसंत नामें बे,तेणे तेने दीठी,तेवारें कामें पीडित थको नोगनी प्रार्थना करतो हवो. तेणे जेम कोइ दासीनो तिरस्कार करीयें, तेवो तिरस्कार कस्यो. तेनें ललितायें समजाव्यो, जे ए सती बे, आपणा गोकुलमां आवी बे,माटें एनो केड तुं मूकी दे. तो पण तेणें विचार्युं जे मह्मारे घेर आवी बे माटे मह्मारुं कथन मानेज ठूटे, एवुं निर्धारुं एकदा मृगांकलेखाने उंघमा सूती देखी उपाडीने पोताने घेर लइ गयो. अने विषय नोगववानी प्रार्थना करी तिहां मृगांकलेखायें यद्यपि " बलानिर्उगेणं " ए आगार बे, तो पण पोतानुं शील राख्युं, शील लोपवा दीधुं नहीं. तेना शीलना प्रनावें वसंतने वासी वल्यूं, तेहज रात्रियें मरण पामीने उर्गतियें गयो. गोकुलने विषे मृगांकलेखानो शीलमहिमा विस्तार पाम्यो. वसंतना कुटुंबपरिवारें तेने घणुं मान आपीने ललिताने घेर मोकली, पण मार्ग नूली पडी तेथी अरण्यमां निकली गइ. मार्गमां वडवृद्दनी गयायें जइ बेठी थकी कर्मनो परिणाम विचारे बे.

कर्मयोगें मकरंद नामें तापस तिहां आव्यो, तेणे मृगांकलेखाना सर्व समाचार सांनली आश्रमें लइ जइ कुलपतिने आपी. तेणें पोतानी पुत्री करी मानी अने एक तापसनी साथें कोइ महिरनामा ग्रामनी निकट जइ मूकी. तिहां ते गामनो सुंदर नामें स्वामी बे, तेना माणसें तेने पकडीने आगल उंगणीश माणस वंदीवान बे, तेनी पासें जइ वीशमी एने पण मूकी. ते सुंदरने घेर पुत्रनो जन्म थयो बे,तेमाटे तेणें दश पुरुष अने दश स्त्री नइकाली देवीने चडाववानी मानता करी बे,तेथी ए वीशे वंदीवानोने देवीना मठने विषे लइ आव्या, तिहां सुंदर पोतें आवीने वीश जणने कहेवा लाग्यो जे अमारे घेर पुत्र जन्म थाय, तो नइकालीदेवीने दश स्त्री तथा दश पुरुष, मली वीश माणसनो बलि आपीयें. एवी अमें मानता करी बे. माटें तमारो इहां बलि देवाशे, तेथी जेहने जे इष्ट होय, तेनुं स्मरण करो. एवुं सांनली उंगणीश माणस तो नयें करी त्रास पामतां बोली शक्यां नहीं परंतु एक मृगांकलेखा बोली जे प्रथम मुफने मारी बलि आपो. जेम हुं बीजा माणसनुं मरण मह्मारी नजरें देखुं नहीं. मने माह्मारा मरणनी चिंता नथी, पण उंगणीश जणना मरणनी चिंता बे.

एवुं सांनली सुंदर बोल्यो के हे नगिनी! एकली तुफनेज हुं मूकुं बुं.

तेने मृगांकलेखायें कह्युं हे नाइ सुंदर! मुजने मारी नाख. पण उंगणीश जनने मूकी आप. जो उंगणीशने मारे, तो हुं एकली जीवती रहीने शुं क रुं? तेवारें सुंदर, मृगांकलेखानो करुणामय परिणाम देखीने चिंतवे ले ॥ यतः॥ निजप्राणैः परप्राणान्, परित्राति सज्जनः॥ माहशाविपरीतं तु, प्र कुर्वंति महाधमाः ॥१॥ एवुं विचारी जीववधनुं पच्चरकाण करी वीशे माण सने मूकी दीधां. सर्व मृगांकलेखाने आशीष देतां पोतपोताने स्थानकें गयां.

मृगांकलेखा तिहांथी चालती वली पण मार्ग नूलीने एक अटवीमां जइ पडी. तिहां एक कालविकराल जेवो नूख्यो सिंह, तेने खावा आव्यो. तेवारें मृगांकलेखा बोली एक महारो पति सागरचंद मूकीने आजपर्यंत में परपुरुष चिंतव्यो नथी, एवा महारा शीलनो जो महिमा होय, तो आ विघ्न विलय थइ जजो. एटखुं कहेतांज ते सिंह काष्ठना पुतला जेवो थ इने तिहांज ऊनो रही गयो. मृगांकलेखा आगल चाली संध्यासमयने विषे काली मशीमांहे त्रण वार जबोली काढी होय, एवी एक राक्षसी नूखीय की तिहां आवती दीठी, तेवारें पण मृगांकलेखायें तेमज कह्युं, के महारो पति सागरचंद विना जो अवर पुरुष में महारा मनें करी चिंतव्यो न हो य, तो ते महारा शीलना प्रनावें करी ए राक्षसी हताशा थाउ. ए वचन थी राक्षसी पण निराश थइ चाली गइ. मृगांकलेखायें तिहां एक वटवृक्षनी नीचें रात्रि काहाढी, प्रनातें चालवा मांम्युं. चालतां चालतां सिद्धार्थपुरनी बाहिर उद्याने देवकुलने विषे पथिश्रांतथकी विश्राम लेवा बेठी.

कर्मना वशथकी तिहां एक कामसेना नामें वेश्या आवी, ते तेनुं रूप सुंदर देखी तिहांथी जोरावरीयें उपडावीने घेर लइ गइ. अने कहेवा लागी के तुं महारे घेर गणिकानो धंधो कर. मृगांकलेखायें कह्युं हुं कुलीन स्त्री थइ ए काम न करुं, तेवारें तेने वेश्यायें घणुं संतापी, तो पण तेणें वेश्या पणुं अंगीकार न कीधुं. पापना वशथकी तेहिज रात्रियें कामसेना वेश्या मरण पामी, तेवारें तेनी दासीयें जोरावरीथी मृगांकलेखाने कामसेनाने पा टें थापी तो पण तिहां ते निष्कलंक शील पाले, दासीनो स्वार्थ न पहों चे. तेवारें ते दासीयें रीष आणीने कनकध्वज राजानी आगल जइ मृगां कलेखाना रूपनुं वर्णन कह्युं, राजायें तेने तेडवा माटे पोतानो प्रतिहा र मोकल्यो, तेणें आवी कह्युं के चाल, तुजने कनकध्वज राजा तेडे ले,

एकदा गोकुलनो धणी वसंत नामें छे,तेणे तेने दीठी,तेवारें कामें पीडित थको भोगनी प्रार्थना करतो हवो. तेणे जेम कोइ दासीनो तिरस्कार क रीयें, तेवो तिरस्कार कस्यो. तेने ललितायें समजाव्यो, जे ए सती छे, आपणा गोकुलमां आवी छे,माटें एनो केड तुं मूकी दे. तो पण तेणें विचा र्युं जे महारे घेर आवी छे माटे महारुं कथन मानेज छूटे, एवुं निर्धारी एकदा मृगांकलेखाने उंघमा सूती देखी उपाडीने पोताने घेर लइ गयो. अने विषय जोगववानी प्रार्थना करी तिहां मृगांकलेखायें यद्यपि " बला निउंगेणं " ए आगार छे, तो पण पोतानुं शील राख्युं, शील लोपवा दी धुं नहीं. तेना शीलना प्रजावें वसंतने वासी वल्यूं, तेहज रात्रियें मरण पामीने दुर्गतियें गयो. गोकुलने विषे मृगांकलेखानो शीलमहिमा विस्तार पाम्यो. वसंतना कुटुंबपरिवारें तेने घणुं मान आपीने ललिताने घेर मो कली, पण मार्ग नूली पडी तेथी अरण्यमां निकली गइ. मार्गमां वडवृक्ष नी गयायें जइ बेठी थकी कर्मनो परिणाम विचारे छे.

दैवयोगें मकरंद नामें तापस तिहां आव्यो, तेणे मृगांकलेखाना सर्व समाचार सांजली आश्रमें लइ जइ कुलपतिने आपी. तेणें पोतानी पुत्री करी मानी अने एक तापसनी सायें कोइ मदिरनामा गामनी निकट जइ मूकी. तिहां ते गामनो सुंदर नामें स्वामी छे, तेना माणसें तेने पकडीने आगल उगणीश माणस बंदीवान छे, तेनी पासें जइ वीशमी एने पण मू की. ते सुंदरने घेर पुत्रनो जन्म थयो छे,तेमाटे तेणें दश पुरुष अने दश स्त्री नइकालीदेवीने चडाववानी मानता करी छे,तेथी ए वीशे बंदीवानोने ते वीना मठने विषे लइ आव्या, तिहां सुंदर पोतें आवीने वीश जणने कहे वा लाग्यो जे अमारे घेर पुत्र जन्म थाय, तो नइकालीदेवीने दश स्त्री त था दश पुरुष, मली वीश माणसनो बलि आपीयें. एवी अमें मानता क री छे. माटें तमारो इहां बलि देवाशे, तेथी जेहने जे इष्ट होय, तेनुं स्मर ण करो. एवुं सांनली उगणीश माणस तो नये करी त्रास पामतां थकां रुदन्त्यां नहीं परंतु एक मृगांकलेखा बोली जे प्रथम मुजने मारी बलि आ पो. जेम हुं बीजा माणसनुं मरण महारी नजरें देखुं नहीं. मने माहारा मरणनी चिंता नथी, पण उगणीश जणना मरणनी चिंता छे.

एवुं सांनली सुंदर बोल्यो के हे नगिनी! एकली तुंज केम हुं मूकुं तुं?

तेने मृगांकलेखायें कह्युं हे नाइ सुंदर! मुजने मारी नाख. पण उगणीश जनने मूकी आप. जो उगणीशने मारे, तो हुं एकली जीवती रहीने शुं करुं? तेवारें सुंदर, मृगांकलेखानो करुणामय परिणाम देखीने चिंतवे डे ॥ यतः॥ निजप्राणैः परप्राणान्, परित्राति सउत्तमः॥ मादृशाविपरीतं तु, प्रकुर्वंति महाधमाः ॥१॥ एवुं विचारी जीववधनुं पच्चरकाण करी वीशे माणसने मूकी दीधां. सर्वे मृगांकलेखाने आशीष देतां पोतपोताने स्थानकें गयां.

मृगांकलेखा तिहांथी चालती वली पण मार्ग चूलीने एक अटवीमां जइ पडी. तिहां एक कालविकराल जेवो नूख्यो सिंह, तेने खावा आव्यो. तेवारें मृगांकलेखा बोली एक म्हारो पति सागरचंड् मूकीने आजपर्यंत में परपुरुष चिंतव्यो नथी, एवा म्हारा शीलनो जो महिमा होय, तो आ विघ्न विलय थइ जजो. एटलुं कहेतांज ते सिंह काष्ठना पुतला जेवो थइने तिहांज उनो रही गयो. मृगांकलेखा आगल चाली संध्यासमयने विषे काली मशीमांहे त्रण वार जबोली काढी होय, एवी एक राक्षसी नूखीय की तिहां आवती दीठी, तेवारें पण मृगांकलेखायें तेमज कह्युं, के म्हारो पति सागरचंड् विना जो अवर पुरुष में म्हारा मनें करी चिंतव्यो न होय, तो ते म्हारा शीलना प्रनावें करी ए राक्षसी हताशा थाउ. ए वचनथी राक्षसी पण निराश थइ चाली गइ. मृगांकलेखायें तिहां एक वटवृक्षनी नीचें रात्रि काहाढी. प्रनातें चालवा मांमयुं. चालतां चालतां सिद्धार्थपुरनी बाहिर उद्याने देवकुलने विषे पथिश्रांतपणे विश्राम लेवा बेठी.

कर्मना वशथकी तिहां एक कामसेना नामें वेश्या आवी, ते तेनुं रूप सुंदर देखी तिहांथी जोरावरीयें उपडावीने घेर लइ गइ. अने कहेवा लागी के तुं म्हारे घेर गणिकानो धंधो कर. मृगांकलेखायें कह्युं हुं कुलीन स्त्री थइ ए काम न करुं, तेवारें तेने वेश्यायें पणुं संतापी, तो पण तेणें वेश्यापणुं अंगीकार न कीधुं. पापना वशथकी तेहिज रात्रियें कामसेना वेश्या मरण पामी, तेवारें तेनी दासीयें जोरावरीथी मृगांकलेखाने कामसेनाने पाटें थापी तो पण तिहां ते निष्कलंक शील पाले, दासीनो साथे न पडांचे. तेवारें ते दासीयें रीव आणीने कनकध्वज राजानी आगल जइ मृगांकलेखाना रूपनुं वर्णन कर्युं, राजायें तेने तेडवा माटे पोतानो प्रतिहार मोकल्यो, तेणें आवी कह्युं के चाल, तुजने कनकध्वज राजा तेडे ने,

एकदा गोकुलनो धणी वसंत नामें ठे,तेणे तेने दीठी,तेवारें कामें पी
थको नोगनी प्रार्थना करतो हवो. तेणे जेम कोइ दासीनो तिरस्कार
रीयें, तेवो तिरस्कार कस्यो. तेने ललितायें समजाव्यो, जे ए सती
आपणा गोकुलमां आवी ठे,माटें एनो केड तुं मूकी दे. तो पण तेणें वि
खुं जे मह्वारे घेर आवी ठे माटे मह्वारुं कयन मानेज तूटे, एवुं निध
एकदा मृगांकलेखाने चंघमा सूती देखी उपाडीने पोताने घेर लइ ग
अने विषय नोगववानी प्रार्थना करी तिहां मृगांकलेखायें यद्यपि " ब
निउगेणं " ए आगार ठे, तो पण पोतानुं शील राख्युं, शील लोपवा
धुं नहीं. तेना शीलना प्रनावें वसंतने वासी वल्यूं, तेहज रात्रियें मर
पामीने डुर्गतियें गयो. गोकुलने विषे मृगांकलेखानो शीलमहिमा विस्त
पाम्यो. वसंतना कुटुंबपरिवारें तेने घणुं मान आपीने ललिताने घेर
कली, पण मार्ग नूली पडी तेथी अरण्यमां निकली गइ. मार्गमां वडवृ
नी ठायायें जइ बेठी थकी कर्मनो परिणाम विचारे ठे.

कर्मयोगें मकरंद नामें तापस तिहां आव्यो, तेणे मृगांकलेखाना स
समाचार सांनली आश्रमें लइ जइ कुलपतिने आपी. तेणें पोतानी पु
करी मानी अने एक तापसनी साथें कोइ महिरनामा ग्रामनी निकट ज
मूकी. तिहां ते गामनो सुंदर नामें स्वामी ठे, तेना माणसें तेने पकडी
आगल उंगणीश माणस बंदीवान ठे, तेनी पासें जइ वीशमी एने पण
की. ते सुंदरने घेर पुत्रनो जन्म थयो ठे,तेमाटे तेणें दश पुरुष अने दश स्त्र
नइकाली देवीने चडाववानी मानता करी ठे,तेथी ए वीशे बंदीवानोने
वीना मठने विषे लइ आव्या, तिहां सुंदर पोतें आवीने वीश जणने क
वा लाग्यो जे अमारे घेर पुत्र जन्म थाय, तो नइकालीदेवीने दश स्त्री
था दश पुरुष, मली वीश माणसनो बलि आपीयें. एवी अमें मानता
री ठे. माटें तमारो इहां बलि देवाशे, तेथी जेहने जे इष्ट होय, तेनुं स्म
ण करो. एवुं सांनली उंगणीश माणस तो नयें करी त्रास पामतां बोल
शक्यां नहीं परंतु एक मृगांकलेखा बोली जे प्रथम मुफने मारी बलि आ
पो. जेम हुं बीजा माणसनुं मरण मह्वारी नजरें देखुं नहीं. मने माहारा
मरणनी चिंता नथी, पण उंगणीश जणना मरणनी चिंता ठे.

एवुं सांनली सुंदर बोल्यो के हे नगिनी! एकली तुफनेज हुं मूकुं उं

तेने मृगांकलेखायें कह्युं हे भाइ सुंदर ! मुजने मारी नाख. पण उगणीश जनने मूकी आप. जो उगणीशने मारे, तो हुं एकली जीवती रहीने शुं क रुं ? तेवारें सुंदर, मृगांकलेखानो करुणामय परिणाम देखीने चिंतवे छे ॥ यतः ॥ निजप्राणैः परप्राणान्, परित्राति सउत्तमः ॥ मादृशाविपरीतं तु, प्र कुर्वंति महाधमाः ॥१॥ एवुं विचारी जीववधनुं पच्चरकाण करी वीशे माण सने मूकी दीधां. सर्वे मृगांकलेखाने आशीष देतां पोतपोताने स्थानकें गयां.

मृगांकलेखा तिहांथी चालती वली पण मार्ग चूलीने एक अटवीमां जइ पडी. तिहां एक कालविकराल जेवो भूख्यो सिंह, तेने खावा आव्यो. तेवारें मृगांकलेखा बोली एक महारो पति सागरचंद्र मूकीने आजपर्यंत में परपुरुष चिंतव्यो नथी, एवा महारा शीलनो जो महिमा होय, तो आ विघ्न विलय थइ जजो. एटलुं कहेतांज ते सिंह काष्ठना पुतला जेवो थ इने तिहांज उनो रही गयो. मृगांकलेखा आगल चाली संध्यासमयने विषे काली मशीमांहे त्रण वार जबोली काढी होय, एवी एक राक्षसी भूखीथ की तिहां आवती दीठी, तेवारें पण मृगांकलेखायें तेमज कह्युं, के महारो पति सागरचंद्र विना जो अवर पुरुष में महारा मनें करी चिंतव्यो न हो य, तो ते महारा शीलना प्रजावें करी ए राक्षसी हताशा थाउ. ए वचन थी राक्षसी पण निराश थइ चाली गइ. मृगांकलेखायें तिहां एक वटवृक्षनी नीचें रात्रि काहाढी. प्रजातें चालवा मांड्युं. चालतां चालतां सिद्धार्थपुरनी बाहिर उद्याने देवकुलने विषे पथिश्रांतपणे विश्राम लेवा बेठी.

कर्मना वशथकी तिहां एक कामसेना नामें वेश्या आवी, ते तेनुं रूप सुंदर देखी तिहांथी जोरावरीयें उपडावीने घेर लइ गइ. अने कहेवा लागी के तुं महारे घेर गणिकानो धंधो कर. मृगांकलेखायें कह्युं हुं कुलीन स्त्री थइ ए काम न करुं, तेवारें तेने वेश्यायें घणुं संतापी, तो पण तेणें वेश्या पणुं अंगीकार न कीधुं. पापना वशथकी तेहिज रात्रियें कामसेना वेश्या मरण पामी, तेवारें तेनी दासीयें जोरावरीथी मृगांकलेखाने कामसेनाने पा टें थापी तो पण तिहां ते निष्कलंक शील पाले, दासीनो स्वार्थ न पडो चे. तेवारें ते दासीयें रीष आणीने कनकध्वज राजानी आगल जइ मृगां कलेखाना रूपनुं वर्णन कह्युं, राजायें तेने तेडवा माटे पोतानो प्रतिहा र मोकल्यो, तेणें आवी कह्युं के चाल, तुजने कनकध्वज राजा तेडे छे,

एकदा गोकुलनो धणी वसंत नामें छे,तेणे तेने दीठी,तेवारें कामें पीडित थको जोगनी प्रार्थना करतो हवो. तेणे जेम कोइ दासीनो तिरस्कार करीयें, तेवो तिरस्कार कस्यो. तेने ललितायें समजाव्यो, जे ए सती छे, आपणा गोकुलमां आवी छे,माटें एनो केड तुं मूकी दे. तो पण तेणें विचार्युं जे मह्यारे घेर आवी छे माटे मह्यारुं कथन मानेज छूटे, एवुं निर्धारुं एकदा मृगांकलेखाने उंघमा सूती देखी उपाडीने पोताने घेर लइ गयो. अने विपय जोगववानी प्रार्थना करी तिहां मृगांकलेखायें यद्यपि " बला भिओगेणं " ए आगार छे, तो पण पोतानुं शील राख्युं, शील लोपवा दीधुं नहीं. तेना शीलना प्रजावें वसंतने वासी वल्यूं, तेहज रात्रियें मरण पामीने डुर्गतियें गयो. गोकुलने विपे मृगांकलेखानो शीलमहिमा विस्तार पाम्यो. वसंतना कुटुंबपरिवारें तेने घणुं मान आपीने ललिताने घेर मोकली, पण मार्ग जूली पडी तेथी अरण्यमां निकली गइ. मार्गमां वडवृक्षनी छायायें जइ बेठी थकी कर्मनो परिणाम विचारे छे.

कर्मयोगें मकरंद नामें तापस तिहां आव्यो, तेणे मृगांकलेखाना सर्व समाचार सांजली आश्रमें लइ जइ कुलपतिने आपी. तेणें पोतानी पुत्री करी मानी अने एक तापसनी साथें कोइ मह्रिरनामा ग्रामनी निकट जइ मूकी. तिहां ते गामनो सुंदर नामें स्वामी छे, तेना माणसें तेने पकडीने आगल उंगणीश माणस वंदीवान छे, तेनी पासें जइ वीशमी एने पण मूकी. ते सुंदरने घेर पुत्रनो जन्म थयो छे,तेमाटे तेणें दश पुरुप अने दश स्त्री जइकाली देवीने चडाववानी मानता करी छे,तेथी ए वीशे वंदीवानोने देवीना मवने विपे लइ आव्या, तिहां सुंदर पोतें आवीने वीश जणने कहेवा लाग्यो जे अमारे घेर पुत्र जन्म थाय, तो जइकालीदेवीने दश स्त्री तथा दश पुरुप, मली वीश माणसनो वलि आपीयें. एवी अमें मानता करी छे. माटें तमारो इहां वलि देवाशे, तेथी जेहने जे इष्ट होय, तेनुं स्मरण करो. एवुं सांजली उंगणीश माणस तो जयें करी त्रास पामतां बोली शक्यां नहीं परंतु एक मृगांकलेखा बोली जे प्रथम मुजने मारी बलि आपो. जेम हुं वीजा माणसनुं मरण मह्यारी नजरें देखुं नहीं. मने माह्यारा मरणनी चिंता नथी, पण उंगणीश जणना मरणनी चिंता छे.

एवुं सांजली सुंदर बोल्यो के हे जगिनी ! एकली तुजनेज हुं मूकुं छुं.

तेने मृगांकलेखायें कह्युं हे जाइ सुंदर ! मुजने मारी नाख. पण उंगणीश जनने मूकी आप. जो उंगणीशने मारे, तो हुं एकली जीवती रहीने शुं करुं ? तेवारें सुंदर, मृगांकलेखानो करुणामय परिणाम देखीने चिंतवे ले ॥ यतः ॥ निजप्राणैः परप्राणान्, परित्राति सउत्तमः ॥ मादृशाविपरीतं तु, प्रकुर्वंति महाधमाः ॥१॥ एवुं विचारी जीववधनुं पच्चरकाण करी वीशे माणसने मूकी दीधां. सर्वे मृगांकलेखाने आशीष देतां पोतपोताने स्थानकें गयां.

मृगांकलेखा तिहांथी चालती वली पण मार्ग नूलीने एक अटवीमां जइ पडी. तिहां एक कालविकराल जेवो नूख्यो सिंह, तेने खावा आव्यो. तेवारें मृगांकलेखा बोली एक महारो पति सागरचंड मूकीने आजपर्यंत में परपुरुष चिंतव्यो नथी, एवा महारा शीलनो जो महिमा होय, तो आ विघ्न विलय थइ जजो. एटलुं कहेतांज ते सिंह काष्ठना पुतला जेवो थइने तिहांज उनो रही गयो. मृगांकलेखा आगल चाली संध्यासमयने विषे काली मशीमांहे त्रण वार जबोली काढी होय, एवी एक राक्षसी नूखीथकी तिहां आवती दीठी, तेवारें पण मृगांकलेखायें तेमज कह्युं, के महारो पति सागरचंड विना जो अवर पुरुष में महारा मनें करी चिंतव्यो न होय, तो ते महारा शीलना प्रनावें करी ए राक्षसी हताशा थाउ. ए वचनथी राक्षसी पण निराश थइ चाली गइ. मृगांकलेखायें तिहां एक वटवृक्षनी नीचें रात्रि काहाडी, प्रनातें चालवा मांम्युं. चालतां चालतां सिद्धार्थपुरनी बाहिर उद्याने देवकुलने विषे पथिश्रांतथकी विश्राम लेवा बेठी.

कर्मना वशथकी तिहां एक कामसेना नामें वेश्या आवी, ते तेनुं रूप सुंदर देखी तिहांथी जोरावरीयें उपडावीने घेर लइ गइ. अने कहेवा लागी के तुं महारे घेर गणिकानो धंधो कर. मृगांकलेखायें कह्युं हुं कुलीन स्त्री थइ ए काम न करुं, तेवारें तेने वेश्यायें घणुं संतापी, तो पण तेणें वेश्यापणुं अंगीकार न कीधुं. पापना वशथकी तेहिज रात्रियें कामसेना वेश्या मरण पामी, तेवारें तेनी दासीयें जोरावरीथी मृगांकलेखाने कामसेनाने पाटें थापी तो पण तिहां ते निष्कलंक शील पाले, दासीनो साथे न पहांचे. तेवारें ते दासीयें रीष आणीने कनकध्वज राजानी आगल जइ मृगांकलेखाना रूपनुं वर्णन कह्युं, राजायें तेने तेडवा माटे पोतानो प्रतिहार मोकल्यो, तेणें आवी कह्युं के चाल, तुजने कनकध्वज राजा तेडे ले,

मृगांकलेखायें कह्युं राजा कोण, अने हुं कोण? जा हुं नथी आवती. ते सांभली प्रतिहारें कह्युं राजानियोग मानवोज जोइयें, तेमाटे खुशीथी आवो, तो रूडुं. ते सांभली मृगांकलेखा अणबोली रही, तेवारें ते सुखासने बेसाडी लइ जावा लाग्यो, मृगांकलेखा कपटें गांडी बनीने सुखासनथकी नीचें पडी, लुगडां फाडे माथें धूड घाले, लोकोने पथरा मारे, यद्वा तद्वा बोले, ते जोइ वेश्यानी दासी तेने उपाडी पोताने घेर लइ गइ. मंत्र वा दीने तेडाव्या, मंत्रवादी ढूकडा आवे, तो तेने माटीना ढेफाथी मारे. तेवारें मंत्र तंत्रने विषे निपुण एवो कनकबाहु नामें पोतानो अंगरक्षक हतो, तेने राजायें कह्युं के एने श्यो दोष छे? ते तुं जइने जोइ आव.

ते कनकबाहुयें तिहां जइ एकांतें श्रीचंद्रप्रजस्वामीना शासननी अधि ष्ठायिका ज्वालामालिनी नामें देवी छे, तेने मृगांकलेखाना शरीरमां उता रीने पूछवा लाग्यो, के मृगांकलेखाने श्यो दोष छे. तेवारें ते देवी मृगां कलेखाने मुखें कहेवा लागी के एने कांइ पण दोष नथी परंतु ए माहात ती अवंतीराजाना मंत्री सागरचंद्रनी नार्या परमश्राविका छे,ते कर्मने वश इहां आवी चडी छे. अने शील पालवाने माटें घेली बनी गइ छे,तेने तमें कुलदेवीनी पेठें आराधो के जेथी तमारुं कल्याण थाय.

एवुं सांभली देवीने विसर्जन करी राजा पासें जइ परमार्थ समजावी कनकबाहु पोताने घेर मृगांकलेखाने तेडी गयो. लोकोमांहे सती कहेवाणी. देवांगनायें साख पूरी. हवे मृगांकलेखा तिहां सुखें रही थकी चिंतववा लागी, के हा हा जूवो कर्मपरिणाम कहेवा छे!! म्हारो धणी सागरचंद्र किहां छे! म्हारो पुत्र किहां छे! म्हारी सखी चित्रलेखा किहां छे! कहेवां विकट कर्म कीधां छे के एटलानो वियोग हुं पामी! वली माथें कलंक च ढेलुं छे! निरंतर एवी चिंतवणा करती तिहां कालक्षेप करे छे.

हवे मृगांकलेखानो पुत्र सुरेंद्रदत्त महोटो थयो, तेवारें घणुं धन कमा इने पिताने वल्लन थयो ते जोइ धनवती जननी चिंतववा लागी जे ए सुरें द्रदत्त छतां म्हारा अंगजात बे पुत्र कांइ सुखी थाय नहीं, तेम मानेता पण थाय नहीं, माटें ए सुरेंद्रदत्तने विषप्रयोगें मारी नाखुं. एवा अभिप्रायथी त्रण मोदक बनाव्या, तेमां बे न्हाना निर्विष कस्या अने महोटो विषमिश्रित कस्यो, ते लाडु नांमागारें त्रणे नाइ बेगा हता, तिहां

दासीने हाथें मोकल्या. दासीयें धनवतीना कह्याप्रमाणें बे न्हाना लाडु नरदेव तथा धनदेवने आप्या अने एक महोटो लाडु सुरेंद्रदत्तने आप्यो. पण सुरेंद्रदत्त कार्याकुल हतो, तेथी तेणें खाधो नहीं, एमज राखी मूक्यो. अने बे जाइयें बे लाडवा खाधा. वली नूख्या थया त्यारें सुरेंद्रदत्तें पोतानो लाडवो अडधो अडध करीबे जाइने वहेंची आप्यो बे जाइयें तरत खाधो,ते खातां वार मूर्छा खाइ पडी गया, तेनां घणां औपचारिक उपचार कर्या, पण कांइ टांकी लागी नहीं, बे जाइयें काल कीधो. वैश्रमण शेठें सर्व समाचार जाण्या अने विचार्युं जे धनवती निश्चें एने मारशे, तेवारें सुरेंद्रदत्तने एकांतें तेडीने शेठे तेने सर्व वार्त्ता कही तथा सागरचंद्रनामांकित मुद्रारत्न आप्युं, अने कह्युं के तुं ताम्रलिप्ती नगरीयें जा. जो इहां रहीश तो ए दुष्ट स्त्री तुजने विषादिक प्रयोगें कपटथी मारशे.

एवुं सांजली सुरेंद्रदत्त ताम्रलिप्ती नगरीयें आव्यो, तिहां घणुं धन उपार्जीने एकदा श्रीरुषजदेवना प्रासादें पूजाने अर्थे गयो. तिहां शासनदेवी चक्रेश्वरी मातानी मूर्त्ति छे, तेनो महोटो महिमा जाणीने अष्टम तप करी ब्रह्मचर्य धारी थइ देवीनुं आराधन करवा बेठो. तेवारें चक्रेश्वरी प्रगट थइने बोली के हे वत्स ! तहारो पिता सागरचंद्र अने मृगांकलेखा माता ए बे तुजने सिद्धार्थपुरी नगरीना प्रियमेलक उद्यानमां मलशे. तेमाटें खेद म कर. तुजने देखवाथी जेना स्तनमांहेथी दूधनी धारा वरसे, तेहने तुं तहारी माता करी जाणजे. लोक सागरचंद्रने देखी कहेशे, ए सुरेंद्रदत्तनो पिता छे. आज थकी एक महीनामां तहारां माता पिता मलशे, एम निश्चय जाणजे. एवुं कही देवी अदृश्य थइ. सुरेंद्रदत्त पण देवीने वचनें श्रीरुषजदेवने पूजी पारणुं करी सिद्धार्थपुर जणी चाल्यो.

हवे अवंतीसेन राजायें विजयराजाने जीती लीधो, तेवारें कटकथी विदायगिरी मागीने सागरचंद्र पोताने घेर आव्यो. माता पिताने पगे लाग्यो जे द्रव्य उपार्जन करी लाव्यो हतो, ते सर्व पिताने आपीने पत्नी मृगांकलेखाने घेर आव्यो. तिहां जेम चक्षुर्हीन मनुष्य शून्य देखाय, तेम ते घर पण मृगांकलेखा विना शून्य दीठुं, तेवारें विचार्युं जे ए शुं पीयर गइ छे ? किंवा कोइ बीजो विचार होय तो ते केम घटे ?

पछी तिहांथी आवी माताने पूछ्युं, तेवारें मातायें कह्युं के हे वत्स !

हारी साह्यमो आवे ठे, एटलामां सुरेंद्रदत्त दूरथी दंमवत् प्रणाम करतं आवीने पिताने पगे लाग्यो, तेने सागरचंद्रें उपाडीने उत्संगें वेसाड्यो आनंदाश्रुयें स्नान कराव्युं. सर्व आवी सोपारीना वृक्ष नीचें वेठां. मृग कलेखायें चित्रलेखायें परस्पर आलिंगन लीधां, ते दिवसें ते चार जणने जे आनंद उपनो, तेनी सीमा केवली जाणे, अथवा ते चारे जणनां मन जाणे!

हवे कनकध्वजराजा कनकवाहुना मुखथी सागरचंद्रनुं आगमन जाणी साह्यमो चाली आव्यो. तेमने हस्ती उपर चडावी नगर सणगारीने पोताने आवासें तेडी लाव्यो. घणी आगता स्वागता करी, एक महीनासुधी पोताने घेर खमावी पठी साथें कटक आपी उज्जयणीयें पहोंचतो की धो. तिहां पण सुयशा सिद्धपुत्रें अवंतिसेनराजाने तथा कुमरना माता पिताने आगलथी जइ मृगांकलेखा तथा सुरेंद्रदत्त पुत्रनी सायें सागरचंद्र आव्यानी वधामणी दीधी, ते सांजली अवंतीसेन राजा सागरदत्तशेठनी साथें तेमने तेडावा माटें सामो आव्यो. सागरचंद्र राजाने तथा पोताना पिताने पगे लाग्यो. नगर शणगायुं, हाथी उपर वेसाडी नगरमां प्रवेश कराव्यो. सागरचंद्र तथा मृगांकलेखा आवी पद्माने पगे लाग्यां. सुरेंद्रदत्त पण वडी आइने पगे लाग्यो. वडी आइयें खोलामां वेसाड्यो. समस्त नगरलोकने हर्ष उपनो, वधामणां थयां, सागरचंद्रे घणुं द्रव्य खरचीने श्रीजिनजुवनने नाना प्रकारें पुजा करी, साते खेत्रें वित्त वावर्युं.

एकदा प्रस्तावें श्रीयुगंधर केवली उद्याननें विपे समोसखा, तेनी उद्यानपालें वधामणी दीधी. तेवारें राजा तथा सागरचंद्र, सुरेंद्रदत्त, मृगांकलेखा, चित्रलेखा, जनक, जननी आदिक नगरवासी समस्त लोक वांदवा गयां. वांदी धर्मदेशना सांजली घणा जनोयें सम्यक्त्वादिक उच्चखां.

हवे मृगांकलेखा पूठती हवी, के हे जगवन्! में पूर्वें श्यां कर्म कीधां के जे थकी हुं कलंकादिक अनेक डुःख पामी? केवली कहे, हे मृगांकलेखा! सांजल. सिंहपुर नगरने विपे कंदर्प नामें ब्राह्मण हतो, ते कनकरत्नमय प्रासादने विपे अनंगदेवराजपुत्रें आराधतो थको अहंकार वहेतो रहे ठे. तेहीज नगरें एक सत्यकीर्त्ति नामें तापस रहे ठे, ते माहातपस्वी लोकमांहे पूजातो प्रसिद्ध ठे. हवे पुरोहित ते तापसनी पूजाने अणसहेतो थको अनंगदेव राजपुत्रने मुखें कंदर्पविप्रने कहेवरावतो हवो, जे शत

कीर्त्ति तापसनी उपर कोइ एवुं कलंक चडावीयें के जेयकी एनी पूजा प्र नावना घटी जाय, ते सांजली कंदर्प ब्राह्मणें पण कयुं के हुं ठल जोइने वखत आवे ए काम जरूर करीश. एनी प्रतिष्ठाने हाणी पहोंचाडीश.

हवे तेहीज नगरने विषे पद्मदेवश्रेष्ठीनी कमला नामें पुत्री ठे, ते ल लितांगशेठना पुत्रनी उपर आसक्त ठे. तेमाटें ते पुत्री लोकोमांहे व्यनि चारिणी कहेवाय ठे. ते कमला कन्या एकदिवस पोताना माता पिताने क ह्याविनाज किहांएक जती रही ठे, अने देवयोगथी सत्यकीर्त्ति तापस पण तेज दिवसें कोइने कह्याविना एमज ग्रामांतरें गयेलो ठे. तेवारें लोकमां वात चाली रही जे कमला कोइकनी सायें चाली गइ ठे, ते ठल पामीने कंदर्पविप्रें वात चलावी जे कमलाने तो सत्यकीर्त्ति तापस लइ गयो ठे. ते वात लोकोयें सत्य करी मानी लीधी अने सत्यकीर्त्तिनो निरादर थ यो. पठी सत्यकीर्त्तिने ग्रामांतरथी आवतो जाणीने कंदर्प ब्राह्मणे विचा र्युं जे हुं लोकमांहे खोटो पडीश. तेमाटें लोकोने कयुं के दुष्ट तापस आ व्यो ठे तेने शिक्षा आपीयें पठी घणालोकनी सायें जइ यष्टिमुष्टिने प्रहारें करी तापसने मार मार्यो. ते तापसें उपशांत पणे ताडना सहन करी.

कंदर्पविप्रने सातमे दिवसें जीनमां फोडलो थयो, तेनी वेदनायें मरण पामी कूतरो थयो, कूतरो पण तेवीज जीननी वेदनायें मरण पामी वेश्या थइ. तिहां चंदनव्यवहारीयानो पुत्र श्रावक हतो, तेनी सायें वेश्यानो सं बंध होवाथी वेश्या जिनधर्म पामी. एकदा सरोवरें गइ, तिहां विलास करतुं राजहंसनुं मिथुन दीठुं, तेवारें क्रीडायें हंसने लइ कुंकुमें करी तेनुं शरीर विलेपी मूक्युं. तेमाटें हंसलीयें तेने चक्रवाल जाणीने एकवीश घडी काल प्रमाण तेनी सायें क्रीडा नहीं. धणीने विरहें डुःख पामती करुणस्वरें रोवा लागी, तेने देखी ते वेश्याने करुणा आवी, तेवारें जलें करी कुंकुम धोइ हं सने उजलो कीधो. हंस, हंसी, बेहु संयोग पामी रमवा लाग्यां. पठी ते वेश्या पोताने घेर जइ घणा कालसुधी श्रीजिनधर्म पाली मायादोषें सौध र्मेइनी अग्रमहिषी थइ. तिहांथी चवीने इहां तुं मृगांकलेखा थइ ठो.

तथा अनंगदेव जे राजपुत्र हतो, तेणें कंदर्पविप्रें करेला पापनी अनुमो दना कीधी. तेथी ते घणा नव संसारमांहे नमीने इहां चित्रलेखा नामे त हारी सखीपणे आवी उपनो ठे. तें जे तापसने कलंक दीधुं तेना पापें

करी तुं इहां कलंक पामी. वली तें जे तापसने माखो हतो, तेणे करी तुं दुःख पामी तथा अनंगदेवें तहारा पापने सहाय कीधुं, तेमाटें इहां चित्रें सायें तहारी सायें दुःख नोगव्युं, तथा एकवीश घडी पर्यंत हंस हंसीने वियोग पाम्यो, तेथी तुं एकवीश वर्षसुधी पतिनी सायें वियोग पामी, एवी कर्मनं विपरीतता जाणीने कर्म छेदवाने अर्थे साधुनो धर्म तथा श्रावकधर्म पालो.

मृगांकलेखा केवलीना मुखथी पूर्वनवनां कर्म सांजली ते कर्मने आलोइ पडिक्कमी प्रायश्चित्त आलोइ शुद्ध श्रावकधर्म पालती हवी. सागरचंद पण समकेतमूल श्रावकधर्म आदरी धर्मकार्यने विषे तत्पर थयो. अंत समयें सागरचंद तथा मृगांकलेखा बेहु जण दीक्षा लइ कर्मक्षय करी शिवपदने अनुनवता हवा. ए समकेतना ठ आगारने विषे मृगांकलेखानी कथा कही.

इति महोपाध्यायश्रीशांतिचंद्रगणिशिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिविरचिते श्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशिकानामनि श्रीसम्यक्त्वसप्ततिकाप्रकरण बालावबोधे सम्यक्त्वषडाकारस्वरूपनिरूपण नामा दशमोऽधिकारः समाप्तः ॥ १० ॥

हवे अगीयारमुं समकेतनी ठ नावनानुं द्वार कहे ठेः-

॥ नाविज्ज मूलनूयं, डुआरनूयं पइठ निहि नूअ ॥ आहार नायण निर्म, सम्मत्तं चरण धम्मस्स ॥ ५५॥ अर्थः-(सम्मत्तं के०) समकेत अर्थं (नाविज्ज के०) एवुं नावीजें विचारीयें जे (चरणधम्मस्स के०) चारित्र धर्मनुं (मूलनूयं के०) मूलनूत ठे जेम जे वृक्षनुं मूल सबल होय ते वृक्ष वायरादिकें पडे नहीं. सुकाइ पण न जाय, तथा तेने शीत तापना पराजव पण न थाय, शाखा, प्रतिशाखा, पत्र, फूल फलें करी विस्तार पामे, तेम चारित्ररूप धर्मनुं समकेतरूप मूल जो दृढ होय, तो ते चारित्रमें देव, दानव, मानवादिक रूप वायरायें चलाव्यो चले नहीं, परिसहादिकें विणसे नहीं, तेमाटें समकेतने मूलनूत कहीयें. ए प्रथम नावना जाणी.

२ तथा समकेत ते ठे ते चारित्र धर्मरूप राजनगरनुं (डुआरनूयं के०) द्वारनूत ठे एटले चारित्रधर्मरूप राज्यनगर तथा राज्यमंदिर ठे ते मांहे जो समकेतरूप द्वार होय तो प्रवेश कराय. ते द्वार सबल जोइयें जे द्वार मिथ्यात्वमोहनीय कर्मादि रिपुयें नांगी शकाय नहीं. तेमां प्रमादरूप चोर प्रवेश करी शके नहीं, तेमाटें समकेतने द्वार नूत कहीयें ए बीजी नावना.

३ तथा चारित्रधर्मरूप प्रासाद ठे ठे, तेनो समकेत ते ठे, ते (पइठ

कें०) प्रतिष्ठानभूत छे. एटले चारित्रधर्मरूप प्रासाद जे छे, तेने जो सम्य क्त्वरूप प्रतिष्ठान सबल होय तो ते चिरस्थायी थाय,जेम राजप्रसादादिक नेविषे पीठबंध सबल जोइयें,तो ते प्रासाद पडे नहीं तेम चारित्रधर्म रूप प्रासाद छे, तेने समकेतरूप प्रतिष्ठान पीठबंध सबल होय तो ते पडे नही. तेमाटे समकेतने प्रतिष्ठानभूत कह्युं. ए त्रीजी भावना जाणवी.

४ तथा समकेत जे छे, ते (निहिभूय्य कें०) निधिभूत छे एटले चारित्र धर्मना मूलगुण अने उत्तरगुणरूप आदिक जे रत्न, तेने राखवाने समकेत निधानभूत छे. जेम चक्रवर्त्तीना निधानमांहे सघली वस्तु पामीयें, तेम समकेतरूप निधानमांहे चारित्रधर्मना मूलगुण उत्तरगुणरूप रत्न पामीयें, तथा ते मूलगुण उत्तरगुणनुं उत्पत्ति स्वरूप पामीयें, तेमाटें समकेतने नि धिभूत कह्युं. ए चोथी भावना जाणवी.

५ तथा समकेत जे छे, ते (आहार कें०) आधारभूत छे, जेमाटें चा रित्रधर्म जे रहे, ते समकेतने आधारें रहे, जेवारें समकेतरूप आधार भां गो, तेवारें तेनुं आधेय जे चारित्र ते पण गयुं, एम जाणवुं. कारण के चारित्रधर्मविना समकेत रहे,पण समकेतविना चारित्रधर्म रहे नहीं. माटें चारित्र ते आधेय छे अने समकेत ते आधारभूत छे. ए पांचमी भावना.

६ तथा (इमं कें०) आ समकेत जे छे, ते (भायणं कें०) भाजन छे, एटले चारित्रधर्मरूप जे घृत, डुग्ध, दहीं, इक्षुरस, श्रीफल जल प्रमुख छे, ते समकेतरूप सुवर्णादि भाजनविना रही शके नहीं. तेमाटें समके तने भाजन कह्युं, ए छठी भावना जाणवी ॥ ५५ ॥

हवे एज गाथानुं विवरण सूत्रकार त्रण गाथायें करी करे छे.

॥ देइ लहुं मुरकफलं, दंसणमूले दढम्मि धम्मडुमे ॥ मुलं दंसण दारं,ए पवेसो धम्मनयरम्मि ॥ ५६ ॥ नंदइ वयपासाउ, दंसण पीढम्मि सुप्प इठंमि ॥ मूलुत्तरगुण रयणा,णं दंसण अरकय निहाणं ॥ ५७ ॥ सम्मत्त महाधरणी, आहारो चरण जीव लोअस्स ॥ सुयसील मणुन्नरसो, दंसण वर भायणे धरइ ॥ ५८ ॥ अर्थः-(धम्मडुमे कें०) यतिधर्म तथा श्रा वकधर्मरूप डुम एटले वृक्ष तेने विषे (दंसणमूले दढंमि कें०) दर्शन जे समकेत ते रूप मूल दृढ छते (मुरकफलं कें०) मोक्षरूप फल प्रत्यें (लहुं कें०) शीघ्र (देइ कें०) दीये छे, जेम बीजा पण सबलवंत जे आम्रादि

करी तुं इहां कलंक पामी. वली तें जे तापसने माखो हतो, तेणे करी तुं दुःख पामी तथा अनंगदेवें तहारा पापने सहाय कीधुं,तेमाटें इहां चित्रें खायें तहारी सायें दुःख भोगव्युं,तथा एकवीश घडी पर्यंत हंस हंसीने वियोग पाड्यो,तेथी तुं एकवीश वर्षसुधी पतिनी सायें वियोग पामी,एवी कर्मनी विपरीतता जाणीने कर्म छेदवाने अर्थे साधुनो धर्म तथा श्रावकधर्म पालो.

मृगांकलेखा केवलीना मुखथी पूर्वभवनां कर्म सांजली ते कर्मोने आलोइ पडिक्कमी प्रायश्चित्त आलोइ शुद्ध श्रावकधर्म पालती हवी. सागरचंद्र पण समकेतमूल श्रावकधर्म आदरी धर्मकार्यने विषे तत्पर थयो. अंत समयें सागरचंद्र तथा मृगांकलेखा बेहु जण दीक्षा लइ कर्मक्षय करी शिवपदने अनुभवता हवा. ए समकेतना छ आगारने विषे मृगांकलेखानी कथा कही.

इति महोपाध्यायश्रीशांतिचंद्रगणिशिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिविरचिते श्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशिकानामनि श्रीसम्यक्त्वसप्ततिकाप्रकरण बालावबोधे सम्यक्त्वषडाकारस्वरूपनिरूपण नामा दशमोऽधिकारः समाप्तः ॥ १० ॥

हवे अगीयारमुं समकेतनी छ भावनानुं द्वार कहे छेः–

॥ भाविज्ज मूलभूयं, दुवारभूयं पइठ निहि भूय ॥ आहार भायण मिमं, सम्मत्तं चरण धम्मस्स ॥ ५५॥ अर्थः–(सम्मत्तं के०) समकेत प्रत्यें (भाविज्ज के०) एवुं भावीजें विचारीयें जे (चरणधम्मस्स के०) चारित्र धर्मनुं (मूलभूयं के०) मूलभूत छे जेम जे वृक्षनुं मूल सबल होय ते वृक्ष वायरादिकें पडे नहीं. सुकाइ पण न जाय, तथा तेने शीत तापना पराभव पण न थाय, शाखा, प्रतिशाखा, पत्र, फूल फलें करी विस्तार पामे, तेम चारित्ररूप धर्मनुं समकेतरूप मूल जो दृढ होय, तो ते चारित्रधर्म देव,दानव, मानवादिक रूप वायरायें चलाव्यो चले नहीं, परिसहादिकें विणसे नहीं, तेमाटें समकेतने मूलभूत कहीयें. ए प्रथम भावना जाणवी.

२ तथा समकेत जे छे ते चारित्र धर्मरूप राजनगरनुं (दुवारभूयं के०) द्वारभूत छे एटले चारित्रधर्मरूप राज्यनगर तथा राज्यमंदिर छे ते मांहे जो समकेतरूप द्वार होय तो प्रवेश कराय. ते द्वार सबल जोइयें जे द्वार मिथ्यात्वमोहनीय कर्मादि रिपुयें भांगी शकाय नहीं. जेमां प्रमादरूप चोर प्रवेश करी शके नहीं, तेमाटे समकेतने द्वार भूत कहीयें ए बीजी भावना.

३ तथा चारित्रधर्मरूप प्रासाद जे छे, तेनो समकेत जे छे, ते (पइठ

कें०) प्रतिष्ठानभूत ठे. एटले चारित्रधर्मरूप प्रासाद जे ठे, तेने जो सम्यक्त्वरूप प्रतिष्ठान सबल होय तो ते चिरस्थायी थाय,जेम राजप्रसादादिक नेविषे पीठबंध सबल जोइयें,तो ते प्रासाद पडे नहीं तेम चारित्रधर्म रूप प्रासाद ठे, तेने समकेतरूप प्रतिष्ठान पीठबंध सबल होय तो ते पडे नही. तेमाटे समकेतने प्रतिष्ठानभूत कह्युं. ए त्रीजी भावना जाणवी.

४ तथा समकेत जे ठे, ते (निहिभूअ के०) निधिभूत ठे एटले चारित्र धर्मना मूलगुण अने उत्तरगुणरूप आदिक जे रत्न, तेने राखवाने समकेत निधानभूत ठे. जेम चक्रवर्त्तीना निधानमांहे सघली वस्तु पामीयें, तेम समकेतरूप निधानमांहे चारित्रधर्मना मूलगुण उत्तरगुणरूप रत्न पामीयें, तथा ते मूलगुण उत्तरगुणनुं उत्पत्ति स्वरूप पामीयें, तेमाटें समकेतने निधिभूत कह्युं. ए चोथी भावना जाणवी.

५ तथा समकेत जे ठे, ते (आहार के०) आधारभूत ठे, जेमाटें चारित्रधर्म जे रहे, ते समकेतने आधारें रहे, जेवारें समकेतरूप आधार भांगो, तेवारें तेनुं आधेय जे चारित्र ते पण गयुं, एम जाणवुं. कारण के चारित्रधर्मविना समकेत रहे,पण समकेतविना चारित्रधर्म रहे नहीं. माटें चारित्र ते आधेय ठे अने समकेत ते आधारभूत ठे. ए पांचमी भावना.

६ तथा (इमं के०) आ समकेत जे ठे, ते (भायणं के०) भाजन ठे, एटले चारित्रधर्मरूप जे घृत, ड्रग्ध, दहीं, इक्षुरस, श्रीफल जल प्रमुख ठे, ते समकेतरूप सुवर्णादि भाजनविना रही शके नहीं. तेमाटें समकेतने भाजन कह्युं, ए ठही भावना जाणवी ॥ ५५ ॥

हवे एज गाथानुं विवरण सूत्रकार त्रण गाथायें करी करे ठे.

॥ देइ लहुं मुक्खफलं, दंसणमूले दढम्मि धम्मडुमे ॥ मुक्खं दंसण दारं,ण पवेसो धम्मनयरम्मि ॥ ५६ ॥ नंदइ वयपासाउ, दंसण पीढम्मि सुप्पइठंमि ॥ मूलुत्तरगुण रयणा,णं दंसण भरकय निहाणं ॥ ५७ ॥ सम्मत्त महाधरणी, आहारो चरण जीव लोअस्स ॥ सुयसील मणुन्नरसो, दंसण वर भायणे धरइ ॥ ५८ ॥ अर्थः-(धम्मडुमे के०) यतिधर्म तथा श्रावकधर्मरूप डुम एटले वृक्ष तेने विषे (दंसणमूले दढंमि के०) दर्शन जे समकेत ते रूप मूल दृढ उते (मुक्खफलं के०) मोक्षरूप फल प्रत्यें (लहुं के०) शीघ्र (देइ के०) दीये ठे, जेम बीजा पण सबलवंत जे आम्रादि

कनां वृक्ष ठे, ते शीघ्र फलप्रत्यें आपे ठे. तेम यतिधर्म अने श्रावकधर्मरूप जे वृक्ष ठे,तेने जो समकेतरूप मूल थइ निश्चल होय, तो ते मोक्षरूप फल शीघ्र उतावलां आपे. ए प्रथम नावना जाणवी.

तथा (धम्मनयरम्मि के०) चारित्रधर्मरूप नगरने विषे (दंसणदारं के०) सम्यक्त्वदर्शनरूप द्वारप्रत्यें (मुत्तुं के०) मूकीने (णपवेसो के०) प्रवेश न थाय, एटले बीजा जीवो धर्मरूप नगरनी मांहे तोज पेशा कही यें, के जो समकेतरूप दरवाजो पाम्यो होय तो. जिहां सुधी जे जीवने समकेतरूप दरवाजो प्राप्त थयो नथी, तिहां सुधी ते जीवने धर्मरूप नगरमां प्रवेश थयो नथी. तिहां सुधी ते जीवो नूलाज नम्या फरे ठे. परंतु जे वारें जीवनें समकेतरूप दरवाजो प्राप्त थशे, तेवारेंज धर्मरूप नगरमां प्रवेश कराशे ॥ यतः ॥ अन्नाणं खलु कठं,अन्नाणाउ ण किंचि कठ्ठयरं ॥ नव सायरं अपारं, जेणावरिया नमंति जीआ ॥ १ ॥ संमत्तसार रहिया, जाणंता बहुविहाइं सवाइं ॥ अरयव तु वलग्गा, नमंति संसार कांतारे ॥२॥ ए बीजी नावना जाणवी ॥ ५६ ॥

यति अने श्रावकना (वयपासाउ के०) व्रतरूप जे महोटो धर्मप्रासाद ठे तेने दृढ एवो (दंसणपीढंमि के०) समकेतदर्शनरूप पीठ जे पायो ते (सुप्पइठंमि के०) सुप्रतिष्ठ एटले सारो थाप्यो होय तो (नंदइ के०) नांदे एटले चिरकालपर्यंत रहे पण पडे नहीं. ते प्रासाद ऊगमगे नहिं पण निश्चल रहे. परंतु समकेतरूप पायाविना अन्यदर्शनरूप पायायें करी धर्मरूप महोटा प्रासादनुं मंमाण थाय नहीं, ए त्रीजी नावना जाणवी.

तथा (मूलुत्तरगुणरयणाणं के०) मूलगुण अने उत्तरगुणरूप रत्न तिहां साधुना मूलगुण ते पंचमहाव्रत अने उत्तरगुण, ते पिंमविशुध्यादिक ॥यतः॥ पिंमस्स जा विसोही, समईउ नावणा तवो डुविहो ॥ पडिमा अनिग्गहा विय, उत्तरगुणमो वियाणाहिं ॥ १ ॥ ए उत्तरगुण जाणवा. तेमज श्रावकना मूलगुण ते पांच अणुव्रत जाणवां. अने उत्तरगुण ते त्रण गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत ठे, अथवा आवीरीतें कहेवुं ॥ दशविध पच्चस्काण, चार अनिग्रह, सात शिक्षाव्रत, बार प्रकारनां तप, अगीयार प्रतिमा, बार नावना, चारप्रकारनो धर्म, सत्तरप्रकारनी पूजा, इत्यादिक ए सर्व श्रावकजनोनां उत्तरगुण जाणवा. एम साधु श्रावकना मूल उत्तरगुणरूप जे रत्न

तेनुं (अरकयनिहाणं के०) अक्षय अखूट निधान ते (दंसण के०) समकेत छे. जेम निधानविना रत्ननुं अवस्थान न पामीयें, तेम सम्यक्त्वविना मूलोत्तरगुणरूप रत्न पण न पामीयें. ए मूलोत्तरगुण जे छे, ते अमूल्य छे, माटे रत्ननुं उपमान दीधुं, अने पूर्वोक्त समस्त गुणरूपजे रत्न तेनो आधार समकेत छे, गुण आधेय छे माटें समकेतने निधाननी उपमा दीधी. एवुं जे मनमां नाववुं, ते चोथी नावना जाणवी ॥ ५७ ॥

तया महोटी पृथ्वी एटले जेनुं १०००० योजन प्रमाण जाम पणे पृथ्वीपिंम छे, तलीयामां तीर्छि सातराज प्रमाण विस्तार वाली ते जेम असंख्याता द्दीपसमुद्र परिवेष्टिता सचराचर जीवलोक तेनो आधार छे, तेम (चरणजीवलोअस्स के०) चरण जे देशविरति सर्वविरति रूप चारित्र प्रधान एवो जे जीवलोक एटले नव्यप्राणीनो गण, तेनो (आहारो के०) अधार ते क्षायिक, क्षायोपशमिक, औपशमिक, वेदक अने सास्वादन, ए पांच प्रकारनुं जे (सम्मत्त के०) सम्यक्त्व, तद्रूप (महाधरणी के०) महोटी पृथ्वी छे, केम के? ए समकेतरूप पृथ्वीना आधारविना चारित्ररूप जीवलोक रही शके नहीं, एवी नावना ते पांचमी नावना.

तया (सुय के०) श्रुत ते द्दादशांगीरूप अने (सील के०) शील जे आचार ते सर्वसावद्य वर्जनरूप क्रिया एनो अनिप्राय कहीयें छैयें. सम्यग्ज्ञान अने सम्यक् चारित्र, ए बेहु परस्पर मव्यां थकां अर्थ साधक थाय ॥ यतः ॥ संजोग सिद्धीइ फलं वयंति, न इग चक्केण रहो पयाइ ॥ अंधोय पंगूय वणे समिच्चा, ते संपउत्ता नयरं पविठा ॥१॥ तेमाटे श्रुतशीलरूप जे (मणुन्नरसो के०) मनोज्ञ रस छे, ते प्रत्यें (दंसणवर के०) वर प्रधान समकेत दर्शन रूप जे (नायणे के०) नाजन, पात्र विशेष तेने विषे (धरइ के०) स्थापे, धरी राखे, कारण के समकेत रूप नाजनविना श्रुतशीलरूप मनोज्ञ रस रही शके नहीं. ए छठी नावना जाणवी ॥५०॥

हवे ए छ नावनाने विषे चंद्रलेखानुं दृष्टांत कहीयें छैयें. आ जंबुद्दीपने विषे मलय नामें पर्वतनी उपर छत्र समान वटवृक्ष छे, तिहां शुकमिथुन वसे छे, ते मिथुनने रूडुं देखी कोइक विद्याधर लइ गयो. तेणें लइजइ मणिमय पांजरमां राख्युं. सारा सारा कूर दाडिम बीजादिकनुं नोजन करावे, समस्त कला नणावी. छए दर्शनना नेद शीखाव्या, जिहां पोतें जाय,

तिहां तेने साथें लइ जाय. एक घडी मात्र पण अलगा मूके नहीं. एकदा चारणश्रमण साधुयें ते विद्याधरने प्रतिबोधीने शुकमिथुनने मलयाचल पर्वतें पाछुं वटवृक्ष उपर मूकाव्युं. पठी ते मिथुनने स्वेछायें विविधप्रकारना नोग विलास नोगवतां एक पुत्र थयो, अनुक्रमें सूडासूडीने परस्परें कलह थयो, तेवारें सूडायें बीजी सूडी संघरी अने आगली सूडीने बोलावे नहीं, पठी सूडीयें कह्युं म्हारो पुत्र मने आप. सूडायें कह्युं ए म्हारो पुत्र ठे, ते हुं नहीं आपुं. जेमाटे पुत्र ते पितानो अने पुत्री ते मातानी एवो लोक व्यवहार ठे. सूडीयें कह्युं, ए न्याय ते कोना घरनो? जेमाटे में गर्न धस्यो, पाली पोषी म्होटो कीधो, माटे म्हारोज पुत्र कहेवाय. एम बेहु पोतपोतामां विवाद करवा लाग्यां, तेवारें सूडायें कह्युं के चाल. आ नगर आपणी नजीक ठे, तिहां राजसनायें जइ न्याय करावीयें. जे प्रमाणें ते ठेरावी आपशे, ते प्रमाणें आपणने कबूल ठे.

पठी ते बेहु जण नगरने विषे गयां. राजसनायें जइ बेठां. राजा, मंत्री प्रमुख सनानां लोक आगल विवाद कस्यो. मंत्री प्रमुखें घणो विचार कस्यो, पण कोइने रूडो विचार चित्तमां प्रतिनासे नहीं. तेवारें प्रधानें कह्युं ए वातनी समज अमने पडती नथी माटें अन्यत्र स्थानकें जइ कोइ रूडा जाण पुरुष होय तेनी पासें न्याय करावो. तेवारें ते गामना कुलेलित नामें राजायें कह्युं जे आपणी पासें न्याय करावबा आव्यां ठे, ते जो आपणे न्याय न करीयें, तो आपणने लज्जा जेवुं ठे. माटें ए विवाद हुं पोतें नांजीश.

पठी राजायें पोतें विचार करीने एवो ठेराव कस्यो, के जे बीज वावे ठे, तेमांथी जे अनाज उपजे ठे ते बीज वावनार धणी लइ जाय ठे. तेम बेटो ते बापनोज कहेवाय अने बापज लीये, परंतु माता तो नियमा अलगीज रहेवी जोइयें. जेम नूमिकामां बीज वावनारो बीज लइ जाय, अने नूमि क्षेत्राधिपनी कहेवाय. नूमिकाने बीजनो संबंध नथी, तेमाटे सूडी, पोतानुं क्षेत्र जे शरीर तेने नलें लइ जाय, पण पुत्रनो संबंध एने नथी. एवो विचार करी राजायें शुकपुत्र सूडाने आप्यो, तेवारें सूडी रोवा लागी अने राजाने कहेवा लागी के जे न्याय तमें कीधो, ते नलो कीधो? राजा आगल कोनुं चाले? पण ए न्याय तमारी वहीमां लखावो. जेम ए वली पण बीजा विवादमां काम आवे. बीजो कोइ विवाद आवे, तो तेनो चुकादो प

ए एमज कराय! राजायें पण ते वात कबूल करीने ते न्याय मंत्रीने हाथे वहीमां लखाव्यो ॥ यतः ॥ बीजिनएव हि बीजं, क्षेत्रं जवतीह तत्कृतामेव ॥ ढुर्जजितमहिनाथो, निर्णयमेवं स्वयं चक्रे ॥ १ ॥

ए श्लोकने सूडीयें राजाना दफतरमां लखाव्यो अने पोतें पुत्रने विरहें मूर्छा पामी ढली पडी. सूडो हर्ष पाम्यो ठतो पुत्रने लइ गयो. प्रधाने शीत लोपचारें करी सूडीने सावधान करी. सूडी पोताना धणी तथा पुत्रथकी वितूटी थकी श्रीशत्रुंजयतीर्थें जइ श्रीऋषनदेवनां दर्शन करी संसारथी विरक्त थइ थकी कहेती हवी ॥ यतः ॥ न गिहं न हि नरतारो, नय सयणा नेय अंगजाउ य ॥ सरणं इह संसारे, एग मिह जिणमय मुत्तं ॥ १ ॥ एम कही अनशन करी वेठी. अंतसमयें ढुर्जजित राजानो अन्याय तेना मनमां आव्यो, तेमाटे मध्यमनावथकी कांची नगरीयें चंदनसागरशेठने घरे घणा पुत्र ठे, तेनी उपर ए पुत्रीपणे उपनी, तेनुं नाम चंद्रलेखा दीधुं. ते पूर्वनवना अन्यासथी निश्चल सम्यक्त्वधारिणी जिनधर्ममांहे प्रवीण थइ.

पठी तिहां तेने राज्यसनादिकनी नूमि देखी जातिस्मरण ज्ञान उपनुं, सूडासूडीनो नव दीठो, विवादनी वात सांनरी आवी, कर्मप्रकृति खेत्रसमास प्रमुख ग्रंथोना विचार जाणवामां प्रवीण थइ. तेवारें चिंतववा लागी जे राजायें अन्याय कीधो ठे, माटें हवे एनां फल हुं एने देखाडुं. एवुं मनमां विचारी चंदनसागरश्रेष्ठीनी पासें सेराह, खुगह, हांसला, नीलुआ, कालुआ प्रमुख नानादेशना घोडा अणावी श्रीकार पायगायें वांध्या. ढुर्जजितराजा जोवा आव्यो, घोडा देखी घणो हर्ष पाम्यो. वेचाता लेवानी मागणी करी. शेठें कहुं ए घोडा हुं वेचतो नथी ए महारे घेर वांध्या रहेशे. वली राजायें कहुं ताहारा किशोर आप. तेवारें शेठें पांच वर्ष पर्यंत माग्या आप्या, तेमांथी घणा किशोर थया, तेवारें पोतानी पुत्री चंद्रलेखाना कहेवाथी शेठें ते किशोर पोताने घेर आणी वांध्या ते वात अश्वरक्षके जइ राजा आगल कही. राजायें रोष करी चंदनशेठने तेडाव्यो, तेवारें चंद्रलेखायें पिताने कहुं के राजा पूछे, तो कहेजो जे महारी पुत्रीने खबर ठे.

हवे चंदनशेठने राजायें पूछ्युं के तमें महारा अश्वकिशोर केम लीधा? शेठें कह्युं ए वातनो जवाब महारी पुत्री आपशे. हुं जाणतो नथी. राजायें कहुं तमारी पुत्रीने तेडावो. तेवारें चंद्रलेखा अद्भुत शृंगार करी सुखासने

समयें संगीत मंमावे. राजा पण तेमज विस्मय पामतो सांजले. अने चंड्लेखा पण प्रजातनां वाजा वाग्यां सांजले के नाटकने विसर्जन करी कन्याउने पिताने घेर मोकली पोतें महेलमां आवी बेसे.

राजा ते नाटनी जगा शोधवा माटें घणुंय जमे, पोतें जूवे, जोवरावे, पण नाटकनी जगा क्यांहि मले नहीं. एकदा राजा, राजसजायें आवी बेठा, तेवारें सर्वने पूठ्युं के रात्रें संगीत क्यां थाय ठे? पण कोइ जवाब आपे नहीं. एम ते राजा नाटकना स्थलनी शोध माटे कष्टें दिवस अतिक्रमतो, क्यारें ए स्थानक देखशुं! एवे ध्यानें रहे ठे.

चंड्लेखायें राजानो मनोगत जाव जाणी एक कन्याने योगणीना वेषनो आंमबर करावी संकेत करी शीखवीनें राजानी समीपें मोकली. ते योगणीने वेशें राजसजायें आवी. राजायें मान देइ आसन आपी बेसाडी. ते पण राजाने आशीष आपी बेठी. राजायें पूठ्युं हे स्वामिनि! तमारा मांहे शी शी शक्ति ठे? योगणीयें कह्युं तमारे शक्ति पूठीने शुं करवानुं ठे? जे काम होय, ते कहो, तो करी आपीयें. एवुं तेनुं वचन सांजली राजा तेने पोताने घेर तेडी लइ गयो. जलां जोजन करावी, जलां वस्त्रें करी संतोषी. वली रात्रिने समयें संगीत सांजली राजायें कह्युं ए संगीत क्यां थाय ठे? ते मुजने देखाडो. योगणीयें कह्युं ए देवतानां नाटक एवी रीतें देखाडाय नहीं माटें जो तमने जोवानी इछा होय, तो तमारी आंखे त्रण पाटा बांधी पठी देव शरीर तमने आपीने तिहां तेडी जइशुं. राजायें ते वात पण अंगीकार करी. प्रजात समयें योगणीयें मंमल मंमाव्युं, मंत्रजाप करवा लागी. 'उँफुट्फुट्स्वाहा' एवो जाप करती रात्रिने समयें लोकोनी आव जाव बंध थया पठी राजानी आंखें त्रण पाटा बांधीनें चंड्लेखाने घेर तेडी गइ. तिहांथी चंदनश्रेष्ठीने घेर लइ गइ, तिहांथी द्वारनिवासिनी देवीने घरे लइ गइ, पठी सलंग जवनना द्वारने विषे एकांतें राखीने आंखना पाटा ठोड्या, तेवारें राजायें पाताल जुवन दीठुं ते जाणे साक्षात् देवजुवनज होय नहिं? तेनी मध्यमां रत्नमय सिंहासने बेठी चंड्लेखा दीठी, राजायें जाण्युं ए कोइक महर्द्धिक देवनी देवांगना ठे.

पठी राजाने देखी पच्चास कन्यायें न्हाना प्रकारनुं संगीत मांम्युं, ते जोइ राजायें विचार्युं, जे मने जे लोचन मल्यां ठे, तेनुं फल हुं आजे पा

म्यो. जेमाटें में साक्षात् देवांगनाउने म्हारी नजरें दीठी. तथा देव नाटक पण साक्षात् दीठुं. पठी एक प्रहर लगण नाटक करी तत्काल विसर्ज्युं.

एवामां एक दासी कहेवा आवी के हे स्वामिनि ! रसवती नीपनी ठे, माटें जमवा पधारो. तेवारें ते जमवा उठी. जोजनशालायें गइ. तिहां था ली वाटका प्रमुख सर्व सुवर्णना थाणी मूक्या. राजा एक खूणे उनो जु वे ठे, तो जे जे वस्तु देखे, ते सर्व मणिमय सुवर्णमय देखे, ते देखीने आश्चर्य पामे. चंद्रलेखा, दासीयोना यूथ सायें जमवा बेठी. योगणी पण पासें जइ बेठी. तिहां विविध प्रकारना मेवा, सुखडी, शाल, दाल सालणा प्रमुख जे जे राजा देखे ठे, ते ते सर्व अपूर्वगंध अपूर्व रसमय देखे ठे.

हवे योगणीयें पूठयुं के स्वामिनि ! तमें कोण ठो ? आ पृथ्वीतल के म पवित्र कर्युं ठे ? ते कृपा करी अमोने कहो. एवुं पूठवाथी स्त्री माया स्वजाव केलवी अश्रुपात करी बोली के हे योगणी ! हे स्वामिनी ! म्हारुं वृत्तांत सांजलो. हुं धरणींद्रनी पटराणी धरणींद्रने परमवल्लज हुं अने आ म्हारी दासीयो ते वीणावादमां अत्यंत कुशल एमनी बराबर वीणा कोइ पण वजाडी शके नहीं. ए मुजने अत्यंत वल्लज ठे, ते दासीयो म्हारा स्वा मी धरणींद्रे म्हारी पासेंथी मागी, में कह्युं हुं नहीं आपुं. जो ए तमने आपुं, तो म्हारा नाटकनो जंग थाय, तेवारें नागराजायें कह्युं, तमें नहीं आप शो, तो हुं जोरावरीयी लइ मूकीश. एवुं वचन म्हारा स्वामीनुं सांजली हुं तिहांथी रीसाइ आवीने इहां रत्नमय जुवन करी रहेली हुं. हवे तुमने कहुं हुं के जे रीतें नागराजा म्हारुं आ रहेवानुं स्थानक न जाणे, तेवी रीतें तमें मंत्रनी शक्ति फोरवजो. एवुं कही वली पण चंद्रलेखा योगणी प्रत्यें कहेवा लागी, के पणे कालें तमें मुजने मल्या ठो, माटें आपणे एक था लमां जेगां जमवा बेसशुं, एम कही बेहु जणी एकज थालमां जमवा बेठी.

तेवारें चंद्रवतीनी संज्ञायें पहेली योगणी बोली हा, हा, हुं एक परो णो सायें तेडी आवी हुं, ते वीसरी गयो. चंद्रलेखायें कह्युं कोण परोणो ठे ? योगणी कहे, पुर्जितराजा ठे, तेवारें चंद्रलेखा नाक मरोडी कहेवा लागी के अरे रे औदारिक शरीरवालो मलमूत्रनो सागर, अपवित्रतानो सागर, एवो मनुष्य ते वली इहां केम आव्यो ठे ? योगणी कहे हे स्वामिनि ! तमें नाक शा वास्ते मरडो ठो ? में मंत्रशक्तियें करी तेनुं दिव्य शरीर क

खुं ढे. तेमाटे म्हारा वचनथी एने एकज थालमांहे जमाडो. ए देवतानी रसवती एणे चाखी नथी, जेथी ए पण जमीने पढी मनुष्यलोकमांहे वा तो करशे ? एम कही योगणीयें राजाने तेड्यो, तिहां ते राजा एवी रस वतीने पण कृतार्थपणुं मानतो जमतो हवो. जम्या नंतर ढेहेडे गंगोदकें चलु कराव्यो, पंच सौगंधिक अपूर्व तंबोल आप्यां.

पढी योगणीयें कह्युं हे राजन् ! उठो आ घरनी सर्व शोना जूवो, राजा पण ठाम ठाम दासीयो सायें हसतो थको जोवा लाग्यो. जोइ जो इने हर्ष पामतो हवो. पढी योगणीने राजायें कह्युं, तम्हारा प्रतापथी मह्वारी सघली वांछा पूर्ण थइ. हवे ए देवांगना सायें जो रमवानो अव सर आपो, तो हुं कृतार्थ थाउं. योगणीयें कह्युं ए वात कहेशो मां. कारण के जो मनुष्यनी सायें रमी ढे, एवी वात धरणींद्र जाणे, तो एनो त्याग करी मूके, तथापि म्हारी पासें मंत्रबल ढे, तेणें करी तमारी इछा पूर्ण करीश. पण एक वात तमोने कबूल करवी पडशे, के आ जन्मपर्यंत एवुं वचन माथे चडावी रहेवुं पडशे. राजायें कह्युं जेम तमें कहेशो, तेम हुं करीश. तेवारें योगणीयें चंद्रलेखाने कह्युं ए राजा ताह्वरो आज्ञाकारक ढे, माटे एनुं मनोवांछित पूर्ण कर. वली हमणां ए घणी रात्रिनो जागेलो ढे, माटे तह्वारा भुवननी मेडीयें सुखशय्यायें सूवाडीने देवशय्यानुं सुख पामवा दे. चंद्रलेखायें हा कही. तेवारें एक दासी बोली उपर पल्यंक न थी,माटे जो सूवो तो उपर पल्यंक लइ जाउं. ते सांनली राजा हर्ष पाम्यो थको योगणीना वचनथकी पल्यंकने पोताना मस्तकें उपाडी उपर लइ ग यो. तिहां पल्यंक अने तलाइ सर्व दासीनी पेरें पोतें पोताने हाथे पाथरी. पढी चंद्रलेखा नाना प्रकारना संनोगरसें करी राजानुं चित्तरंजन करती हवी.

पढी राजा बीजी पोतानी स्त्रीयोने रासनी जेवी गणीने तेमने पडती मू की अने प्रतिदिवस ते योगणीनी सायें आवी चंद्रलेखानी संघातें कामनोग मां प्रवर्त्ते. अने पल्यंक पण उपर लइ पाथरे. पढी योगणीयें कह्युं अरे चंद्र लेखा ! तह्वारो पति तह्वारो दास थयो अने तह्वारी प्रतिज्ञा पूर्ण थइ. चंद्रले खायें पण पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण थइ जाणीने शोलश्रृंगार सजी हसती हसती अंतःपुरमां आवी राजाने कहेवा लागी,के स्वामी ! में तो तमोने डह्या हता माटें मुफने तमें त्यागी दीधी, पण आ बीजी अंतःपुरीयें श्यो अपराध की

धो ठे, जेमाटे एमने त्यागी दीधी ठे? अथवा देवांगनाना विलासमां अमा रा जेवीना साहामुं तमे किहां जोशो? ते वचन सांभली राजा चमक्यो अने चंद्रलेखानी साहामुं जोइ जोइने उंलखी लीधी, तेवारें कह्युं के ए सर्व तहारां चरित्र जणाय ठे. एवुं कहेतांज चंद्रलेखा आवीने राजाने पगे लागी,अने कह्युं स्वामी योगणीने वचने में आपनो अपराध कीधो,ते क्षमा करजो. राजायें चंद्रलेखानुं बुद्धिविज्ञान देखीने पटराणी करी थापी. पठी राजाने पाताल भुवनें सर्व अंतःपुरनी सार्थे रमतां थकां हजारो वर्ष व्यतिक्रम्यां.

एकदा उद्यानने विषे अभयंकर सूरि समोसस्या. उद्यानपालकें वधामणी दीधी तेमने यथायोग्य दान देइने सर्व सङ्काइ करी चंद्रलेखाने सार्थे तेडी राजा, वांदवा गयो. वांदीने योग्यस्थानकें बेठो. आचार्यें धर्मदेशना दीधी. नानाप्रकारनी धर्मदेशनाने अधिकारें गुरु, चंद्रलेखाप्रत्यें कहेता हवा, के हे चंद्रलेखा! तुं कां प्रतिबोध पामती नथी? आपणा पूर्वभवें समकेतनां फल पाम्यां जाणी शामाटें प्रमाद करे ठे? पूर्वे सूडीने भवें श्रीशत्रुंजयतीर्थे श्रीरूषभदेवने आराधी कुलेलितराजानी उपर कोप धरीने समकेतना वशथी चंदनसारश्रेष्ठिनी तुं सर्वकलानिधान पुत्री थइ. अने वली इहां धर्म पण पामी ठो, तो हवे प्रमाद शा माटें करे ठे? एवुं गुरुनुं वचन सांभली चंद्रलेखायें श्रावकनां बार व्रत उच्चस्यां. तथा राजा प्रमुख लोक पण सर्व यथाशक्तियें समकेतादिक व्रत उच्चरी पोत पोताने घेर गयां.

एकदा चंद्रलेखा पर्वतिथियें व्रत पालवाने अर्थे पोताने घेर पोषधशालायें पोषध लइ करीने निश्चल मेरुनी परें अकंप थइ काउस्सग करी रही ठे. एवामां एक मिथ्यादृष्टि देवी अने बीजी सम्यग्दृष्टि देवी ठे ते मने परस्पर प्रीति ठे, तेमां सम्यग्दृष्टि देवीयें श्रीजिनधर्मनी प्रशंसा करी अने जिनधर्मना पालनारा साधुउनी दृढतातो अत्यंत श्रेय ठे, परंतु श्रावक श्राविकामां पण धैर्यता संबंधी वखाण करतां वर्त्तमानकालें चंद्रलेखानी धीरज वखाणी ते सांभली मिथ्यादृष्टि देवी चंद्रलेखा पासें आवी. राक्षसनुं रूप विकूर्वी, जाणे पाहाडने फाडी नाखशे, एवा महोटा ठरा हाथमांहे लइ महोटे सादें बोलती हवी के आ तहारा पोषध काउस्सग प्रमुख मूकी चरवला मुहपत्तिने नाखी दइने आ अमारा पगनी पूजा कर, नहींतो तुजने एकज कवलें आखीने आखी महारा मुखमांहे उतारीश. एवी

राक्षसीनी वाणी सांजली चंड्लेखा लेशमात्र पण काउस्सग्गथकी चला यमान यइ नहीं. तेवारें महोटा हाथीयोनां रूप लइने चंड्लेखाने बीहीव रावदा माटे घणा उपसर्ग कस्या. पढी सिंहनां,सर्प्पनां, विकराल रूप करी वीहीरावी तो पण अचल रही. पढी डुर्ललितराजाने चोटलीयें पकडी चंड लेखा आगल आणीने कहेवा लागी के आ तहारुं कपट मूकी दे. नहीं तर आ तहारा धणीने मारी नाखीश. एम कही राजाने चावके मारवा मांड्यो. राजा बुंबारव करी बोल्यो,अरे मनें मूकाव,मूकाव; ए मुऊने मारे ढे. ते सांजली चंड्लेखायें विचार्युं के धर्म करतां थकां जे होनार हो, ते जलें हो. जेमाटे धर्म करतां मातुं थायज नहीं.

ए रीतें जेम जेम क्षोजावे, तेम तेम चंड्लेखानुं मन निश्चल थातुं जाय. एम शुक्लध्यानें चडती क्षपकश्रेणि आरोही केवलज्ञान पामी तेवारें ढूकडा रहेला सम्यग्दृष्टि देवतायें साधुनो वेश आणी आप्यो. चंड्लेखायें पण चार मुष्टि लोच करी वेश परिधान कीधुं, देवतायें सुवर्णकमल रच्युं ते नी उपर वेसी धर्मदेशना देवा लागी. ते उपसर्ग करनारी मिथ्यादृष्टि व्यंतर देवीयें आवीने अपराध खमाव्यो. चंड्लेखायें, डुर्ललित राजा प्रमुखने प्रतिबोध देइ घणा काल पर्यंत विहार करी जव्यलोकोने तारी श्रीशत्रुंजयपर्वतें मोक्ष कमला वरी. ए ढ जावनाने विषे चंड्लेखानी कथा कही.

इति महोपाध्याय श्रीशांतिचंड्गणिशिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंड्गणिविरचितें श्रीसम्यक्त्वरत्नप्रकाशनामनि सम्यक्त्वसप्ततिकाबालाववोधे सम्यक्त्व षड्जावना स्वरूप निरूपणनामा एकादशोऽधिकारः संपूर्णः ॥ ११ ॥

हवे समकेतनां ढ स्थानकनुं बारमो अधिकार कहीयें ढेयें.

॥ अत्थि जिउ तह निच्चो, कत्ता जुत्ता य पुण्ण पावाणं॥ अत्थि धुव निवाणं, तस्सोवाय ढठाणा ॥ ५ए ॥ अर्थः-(अत्थिजिउ के) जीवड्व्य अत्थि एटले ढे, एणे नास्तिक वाद उठाप्यो, ए प्रथम लक्षण ढे (तह के०) तथा जीव जे ढे ते ड्व्यनी अपेक्षायें (निच्चो के०) नित्य शाश्वतो ढे. ए बीजुं लक्षण तथा (कत्ता के०) जीव कर्त्ता ढे, एटले ज्ञानावरणीयादिक आठे कर्मनां कर्त्ता ढे, तेमां सात कर्मनो निरंतर समयसमयें बंधक ढे, अने कदाचित् कोइक समयें आठे कर्मनो बंधक ढे, ए त्रीजुं लक्षण. तथा (य के०) वली (जुत्ता के०) जीव जोक्ता ढे, शेनो जोक्ता ढे?

तो के (पुण्णपावाणं के०) पुण्य अने पापनो जोक्ता ठे, तिहां शुनकर्म नो बंधक जीव पुण्यनो जोक्ता ठे, अने अशुनकर्मनो बंधक जीव पापनो जोक्ता ठे, ए चोथुं लक्षण. तथा (अछिधुवनिवाणं के०) ध्रुव एटले नि र्भे निर्वाण जे सकलकर्मक्षयरूप मोक्ष ते अछि एटले ठे, ए पांचमुं लक्ष ण. तथा (तस्तोवायठ के०) ते मोक्षनो ज्ञान दर्शन चारित्रादिक उपाय ठे, ए ठहुं लक्षण ए (ठन्नणा के०) ठ स्थानक कहीयें ॥ ५ए ॥

ए ठ स्थानकना जाणवायकी तथा सईहवायकी जाणीयें जे एनी पासें सम्यक्त्व ठे, पण जेने ए लक्षणनुं श्रद्धान न होय, तेनी पासें सम केत न कहेवाय. जे माटें ज्ञान तो मिथ्यादृष्टि पासंमी पासें पण पामीयें केम के किंचिदून दश पूर्वनो जणनार तो मिथ्यादृष्टि पण कह्यो ठे. तेना किंचि दून दश पूर्व ते पण मिथ्याश्रुत कहीयें. मिथ्यादृष्टियें ग्रहण कर्युं माटें जे टलुं मिथ्यादृष्टियें परिग्रहीत पूर्वश्रुत,ते सर्व मिथ्याश्रुत कहीयें. कारण के मिथ्यादृष्टि जेटलुं श्रुत जणे,ते सर्व विपरीत पणे सईहे. अने विपरीत पणे वखाणे. अने सम्यग्दृष्टिपरिग्रहीत मिथ्याश्रुत होय ते पण सम्यग्श्रुत थाय ॥ यतः ॥ व्याकरण ठंदोलंकृति, नाटक काव्यतर्क गणितादि ॥ सम्य ग्दृष्टि परिग्रह, पूतं जयति श्रुतज्ञानम् ॥ १ ॥ इति सिद्धांतस्तोत्रे.

हवे ए ठ लक्षणनुं स्वरूप कहे ठे.

॥ आया अणुजवसिद्धो,गमई तह चित्तचेयणाईहिं ॥ जीवो अछि अव स्सं, पञ्चक्खो नाण दिठीयं ॥ ६० ॥ अर्थः–(आया के०) आत्मा (अ णुजवसिद्धो के०) अनुनव सिद्ध ठे, प्रत्यक्षपणे सिद्ध ठे (तह के०) तेम (गमई के०) गमति ते अनुमानें पण जाणीयें ठेयें. ते शी रीतें जाणीयें ठेयें ? तो के (चित्तचेयणाइहिं के०) चित्त एटले ज्ञानगुणे करी जाणीयें ठेयें, तथा चेयणाइ एटले चेतना चैतन्य तेणे करी जाणी ठेयें, आदि शब्द थकी सुख, छःख,इछा,जय इत्यादिक जे आत्मगुण ते लेवा. सुखछःखादि कनो वेत्ता आत्मा होय, पण अचेतन स्तंनादिक जे ठे ते सुख छःखना वेत्ता न होय. एटला माटे (जीवो अछि अवस्सं के०) जीव अवश्य निश्च य ठे, (पञ्चक्खेनाणदिठीयं के०) ज्ञानदृष्टिने प्रत्यक्ष ठे, जेहवो आत्मा लोकाकाश प्रदेश प्रमाण असंख्यात आत्मप्रदेशवंत ठे. तेहवो, ज्ञानदृष्टियें देखे ठे. ए प्रथम स्थानकनुं स्वरूप कर्युं ॥ ६० ॥

हवे बीजा स्थानकनुं स्वरूप कहे छे.

॥ दवछ्यायनिच्चो, उप्पायविणास वज्जिउं जेण ॥ पुवकयाणुसरणउं, पज्जाया तस्स उ अणिच्चा ॥ ६१ ॥ अर्थः-(दवछ्यायनिच्चो के०) इव्यार्थनयने मतें विचारतां आत्मा नित्य छे, जे कारण माटें (उप्पायविणासवज्जिउंजेण के०) उत्पाद ते उपजवुं अने विणास जे विणसवुं तेणें करीने वर्जित छे रहित छे, जे कारण माटे जो घट अनित्य छे, तो तेनी उत्पत्ति पण छे,तथा विनाश पण छे अने आत्मानी उत्पत्ति पण नथी अनें विनाश पण नथी परंतु आकाशनी परें नित्य छे, (पुवकयाणुसरणउ के०) पूर्वकृत कर्मना अनुसरणथकी (पज्जाया तस्स उ अणिच्चा के०) ते आत्माना पर्याय ते वली अनित्य छे जेमाटे पर्यायार्थिक नयें विचारतां आत्मा अनित्य छे जेम पूर्वभवने विषे हुं श्रावक हतो, में प्रतिष्ठा करावी इती,प्रतिमा भरावी हती. प्रासाद कराव्युं,इत्यादिक जे पूर्वे करेलां कृत्य तेना अनुस्मरणथकी एटले सांभरवा थकी आत्माना पर्याय जे मनुष्यत्व, तिर्यंचत्व, देवत्व, नरकत्व इत्यादिक छे ते अनित्य छे, एवा अनेक पर्याय उपजे विणसे छे. तेमाटे आत्मा, पर्याय आश्रयी अनित्य छे. अने आत्मा मूल इव्यें नित्य छे. ए बीजुं स्थानक कह्युं ॥ ६१ ॥

हवे त्रीजुं स्थानक कहे छे.

॥ कत्ता सुहासुहाणं, कम्माण कसाय जोग माईहिं ॥ मिछ दंसण चरण वीरिय, सामग्गिवसा कुलालु व ॥६२॥ अर्थः-ए आत्मा (सुहासुहाणं कम्माण के०) शुभाशुभकर्मनो (कत्ता के०) कर्त्ता छे एटले करणशील छे. जेमाटे रुडी सामग्री पामीने शुभकर्म करे छे, अने भूंडी सामग्री पामीने अशुभकर्म करे छे. ते शेणे करी करे छे? तो के (कसायजोगमाईहिं के०) कषाय योगादिकें करीने एटले अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी अने संज्वलन, ए चार चार भेदें क्रोध, मान, माया अने लोभना मली शोल भेद तथा सत्यमनोयोगादिक पन्नर प्रकारना योग, एवं एकत्रीश तथा आदिशब्दथकी हास्यादिक नव नोकषाय, आनिमद्रिकादिक पांच प्रकारनुं मिथ्यात्व तथा पांच इंडिय अने उठ्ठा मननो अनिग्रह तथा पृथ्वीकायवध, अप्कायवध, तेउकायवध, वाउकायवध, वनस्पतिकायवध, त्रसकायवध, एवं सत्तावन्न हेतुयें करी जीव,कर्मनां बंध करे छे. तिहां दृष्टांत क

हे ठेः-(मिउ के०) माटी (दंम के०) दंम (चक्र के०) चक्र अने (ची वर के०) चीवर प्रमुखुं इत्यादिकनी (सामग्गिवसा के०) सामग्रीना वश थकी (कुलालुव के०) कुलालवत् एटले कुंनारनी परें अर्थात् जेम कुंनार जे ठे, ते माटी, दंम चक्र अने चीवर प्रमुखनी सामग्री पामीनें घट करे ठे, तेम जीव कषायादिकनी सामग्री पामीने कर्मबंध करे ठे,ए त्रीजुं स्थानक कह्युं.

हवे चोथुं स्थानक कहे ठे.

॥ जुञ्जइ सयं कयाइं, परकय जोगे अइप्पसंगो उ ॥ अकयस्स नत्थि जोगो, अन्नह मुक्केवि सो कज्ज ॥ ६३ ॥ अर्थः-(सयंकयाइं के०) स्वकृतकर्मप्रत्यें (जुञ्जइ के०) जोगवे ॥ यतः ॥ नानुक्तं क्षीयते कर्म, कल्पकोटिशतैरपि ॥ अवश्यमेव जोक्तव्यं, कृतं कर्म शुनाशुनम् ॥ १ ॥ अने (परकयजोगे के०) परकृतकर्मनो जोग मानीयें तो (अइप्पसंगो के०) अतिप्रसंग दोष आवे तथा तुकार निश्चयनयार्थे ठे जो जीवने अन्यकृत कर्मनुं जोगववुं मानीयें, तो देवदत्तना जमवायकी यज्ञदत्तने पण तृप्ति थावी जोइयें, पण एम तो देखातुं नथी जे जमे ठे, तेनेज तृप्ति थती दे खाय ठे, पण अन्यने तृप्ति थती नथी माटें परकृतकर्म जोगवे नहीं. स्वयंकृत कर्मज जोगवे ॥ यतः ॥ जीवेणं जंते अत्तकडे छुरके परकडे छुरके इति अकयस्सनत्थि माटे (अकयस्सनत्थि जोगो के०) अकृत कर्मनो जोग नथी (अन्नह के०) अन्यथा जो अकृतकर्मनो जोग मानीयें तो (मुक्केवि के०) मोक्षने विषे पण (सो कज्ज के०) ते कर्मनो जोग होय. उडता रोगनी परें जो कर्म पण उडीने वलगी जाय,त्यारे तो सिद्धना जीवने पण कर्म लागी जाय ! तेमाटें स्वयंकृत कर्मज आत्मा जोगवे. ए चोथुं स्थानक कह्युं ॥ ६३ ॥

हवे पांचमुं स्थानक मोक्ष ठे तेनुं स्वरूप कहे ठे.

॥ निव्वाण मरकय पयं, निरुवम सुहसंगयं सिवं अरुयं॥ जियराग दोस मोहे, हिं नासियंता धुवं अत्थि ॥ ६४ ॥ अर्थः-(निवाणं के०) निर्वाण एवुं (अरकयपयं के०) अक्षयपद ठे, शाश्वतुं स्थानक ठे, ते एक सिद्धनी अपेक्षायें सादि अनंत ठे अने सर्वसिद्धनी अपेक्षायें अनादि अनंत ठे. सिद्धने पतनना अनावथकी पाठो अवतार लेवो नथी माटे अक्षय ठे वली कहेवुं ठे ? तो के (निरुवमसुहसंगयं के०) निरुपम सुखसंगत ठे, ते इःखगर्जित नथी, तेमाटे निरुपम सुखसंगत कह्युं. तथा (सि

के०) निरुपद्रव ले, एटले उपद्रव रहित ले. केम के तिहां सात नय मांहेलो एके नय नथी, तथा बावीश परिसह मांहेलो एके परिसह नथी, तेमाटे शिव कह्युं उपद्रवरहित कह्युं तथा (अरुयं के०) अरुज ले एटले रोगरहित ले जेमाटे रोग तो शरीराश्रित ले तिहां मोक्षमां शरीरना अना वथी रोगरहित पणुं ले, तेमाटे अरुज कह्युं. हवे ते मोक्ष केवी रीतें जा णीयें ? ते कहे ले:–(जिय राग दोस मोहेहिं के०) जीत्या ले राग द्वेष अने मोह जेणें एवा आप्त पुरुषोयें (नासियंता के०) नाषित कथित ले पण धुतारवाने अर्थे नथी कह्युं. जितरागदोषमोह एवा जे जिन, तेणें कह्युं ले. (ता के०) तेमाटे (धुवं के०) निश्चे (अछि के०) ले. जे श्रीवीतराग देवें कह्युं ते ठलुंज ले, एमज जाणवुं. ए पांचमुं स्थानक कह्युं ॥ ६४ ॥

हवे ठहुं स्थानक, ते मोक्ष साधवानो उपाय कहे ले.

॥ सम्मत्त नाण चरणा, संपुन्नो मोरक साहणोवाउ ॥ ता इह जत्तो जुत्तो, स सत्तिउ नाण तत्ताणं ॥ ६५ ॥ अर्थः–(सम्मत्त के०) स म्यक्त्व जे उपशम, क्षयोपशम क्षायिकादिक आत्मानो शुनपरिणाम तथा (नाण के०) ज्ञान विशेष जे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, म नःपर्यवज्ञान अने केवलज्ञान तथा (चरणा के०) चारित्र जे सामायिक ठेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात ए त्रण वानां तेणें करी (संपुन्नो के०) संपूर्ण पूरे पूरो ले. (मोरकसाहणोवाउ के०) मोक्ष साधवानो उपाय (ता के०) ते कारण माटे (इह के०) ए उपायने विषे एटले मोक्षरूप कार्यनुं जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप उपा य ले तेने विषे (जत्तो के०) यत्न करवो ते (जुत्तो के०) युक्त ले (ससत्तिउ के०) स्वशक्तियकी पण, कोने ? तो के (नाणतत्ताणं के०) जेणे ज्ञाने करी त त्त्व जाण्युं ले, तेहने एटले जेणे श्रीजिनवचननां रहस्य जाण्यां ले, तेने ए उपायने विषे स्वशक्तियकी यत्न करवो युक्त ले,ए ठहुं स्थानक कह्युं ॥६५॥

हवे ए ठ स्थानकने विषे नरसुंदर राजानो संबंध कहीयें ठैयें. एहीज नरतक्षेत्रने विषे कांची नामें नगरमां नरसुंदर नामें राजा राज्य करे ले ते राजा नास्तिक वादी ले. जीवादिक पदार्थ मानतो नथी, देवगुरुनो द्वेषी ले,तेने सुरसुंदरी नामें अग्रमहिषी ले, अने सुमति नामें प्रधान ले.

हवे चंद्रपुरनगरने विषे चंद्रसेन नामें सामंत ले, तेने मंत्रतंत्रादिकनो

जाण एवो एक योगी मित्र ले, ते चंद्रसेन सामंत नरसुंदर राजानी सेवा थकी उद्वेग पाम्यो थको योगीने कहेवा लाग्यो के तुं महारो मित्र गो माटें महारुं एक काम कर. योगीयें कह्युं शुं काम ले ? ते मने कहे. चंद्रसेनें कह्युं नरसुंदरराजानी चाकरीमां मने कांहिं पण सुख नथी. माटे ए राजाने मारी नाखीयें, तो हुं सुखसमाधिमां रहुं ! ते वात पहेला डुष्टात्मा योगीयें अंगी कार करी. पठी ते योगी कांचीनगरीयें आव्यो, अने मंत्रतंत्रादिक विद्यायें करी लोकोमांहे प्रसिद्धि पाम्यो. राजायें तेनी कलासंबंधी तारिफ सांजली तेडावीने पूछ्युं, तमें कया देशथकी आव्या गो ? योगीयें कह्युं आप योगी योना जक्त गो. एवुं सांजली हुं श्रीपर्वतथकी तमारुं दर्शन करवा आव्यो हुं.

राजायें पूछ्युं तमारी पासें कइ कइ विद्याउं ले ? तेवारें योगी बोल्यो हुं रात्रिने दिवस करी देखाडुं अने दिवसने रात्रि करी देखाडुं. धरतीने आका श करुं, आकाशने धरती करुं, समुड्ने एक चुलुकें आचमन करुं इत्यादि विद्याउं ले, माटे तहारे जे काम होय ते कहे, तो हुं करी आपुं. तेवारें योगीने प्रधाने कह्युं एटला महोटा आमंबर अमारे करावबा नथी पण महारी स्त्री प्रणयकलह थकी रीसाईने ग्रामांतरें गइ ले, तेने इहां वेगां आणी आप, तो ए सर्व तहारुं बोलवुं साचुं करी मानीयें. ते सांजलीने योगीयें मंमल मांम्युं, मंत्र साध्यो, आकर्षण मंत्रें करी लोटथी खरडेला हाथे रोटला करती एवी थ कील मंत्रीभरनी स्त्री आणी. मंत्री हर्ष पाम्यो थको नाचवा लाग्यो, राजाने ते योगीनी उपर आस्ता आवी. तेवारें राजायें एकांतें तेडीने योगीने पूछ्युं हे स्वामी ! कालवंचना थाय के न थाय ! एटले आयु पूरण थये मरण प्राप्त थाय ले, ते न थाय, एवो कोइ उपाय ले, के नथी? योगीयें कह्युं जे थकी कालने वंची घणुं जीवीयें मरीयें नहीं, एवो उपाय ले. पण जो तुं महारी दीक्षा लइ महारो चेलो था, तो ते उपाय चाले नहीं कां चाले नहीं. ते सांजली राजायें प्रधानने राज्य जलावी पोतें योगी पासे दीक्षा लीधी.

योगीयें कह्युं नासिकाथकी बार आंगुल पवन बाहिर निकले अने दश आंगुलमांहे पेसे, तेथी जे विपरीत करे, ते मरणने वंचे. इत्यादिक कही योगीयें राजाने जूमिमांहे पाल्यो. पठी हिंसादिक पापमांहे बोल्यो, एम नि त्यप्रत्यें करावतां एकदा राजाने विषनविष आपीने योगी नाशी गयो, वि ष चड्या पठी राजा अचेतन थइ पड्यो. समस्त परिवार रोवा लाग्यो, प्र

के०) निरुपद्रव छे, एटले उपद्रव रहित छे. केम के तिहां सात भ मांहेलो एके नय नथी, तथा बावीश परिसह मांहेलो एके परिसह नथी, तेमाटे शिव कह्युं उपद्रवरहित कह्युं तथा (अरुयं के०) अरुज छे एटले रोगरहित छे जेमाटे रोग तो शरीराश्रित छे तिहां मोक्षमां शरीरना अभ वथी रोगरहित पणुं छे, तेमाटे अरुज कह्युं. हवे ते मोक्ष केवी रीतें जा णीयें ? ते कहे छेः–(जिय राग दोस मोहेहिं के०) जीत्या छे राग द्वेष अने मोह जेणें एवा आप्त पुरुषोयें (नासियंता के०) नाषित कथित छे पण धूतारवाने अर्थे नथी कह्युं. जितरागदोषमोह एवा जे जिन, तेणें कह्युं छे. (ता के०) तेमाटे (धुवं के०) निश्चें (अछि के०) छे. जे श्रीवीतराग देवें कह्युं ते छतुंज छे, एमज जाणवुं. ए पांचमुं स्थानक कह्युं ॥ ६४ ॥

हवे छठुं स्थानक, ते मोक्ष साधवानो उपाय कहे छे.

॥ सम्मत्त नाण चरणा, संपुन्नो मोरक साहणोवाउ ॥ ता इह जत्तो जुत्तो, स सत्तिउ नाण तत्ताणं ॥ ६५ ॥ अर्थः–(सम्मत्त के०) स म्यक्त्व जे ओपशम, क्षयोपशम क्षायिकादिक आत्मानो शुभपरिणाम तथा (नाण के०) ज्ञान विशेष जे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, म नःपर्यवज्ञान अने केवलज्ञान तथा (चरणा के०) चारित्र जे सामायिक छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात ए त्रण वानां तेणें करी (संपुन्नो के०) संपूर्ण पूरे पूरो छे. (मोरकसाहणोवाउ के०) मोक्ष साधवानो उपाय (ता के०) ते कारण माटे (इह के०) ए उपायने विषे एटले मोक्षरूप कार्यनुं जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप उपा य छे तेने विषे (जत्तो के०) यत्न करवो ते (जुत्तो के०) युक्त छे (ससत्तिउ के०) स्वशक्तियकी पण, कोने ? तो के (नाणतत्ताणं के०) जेणे ज्ञाने करी त त्त्व जाण्युं छे, तेहने एटले जेणे श्रीजिनवचननां रहस्य जाण्यां छे, तेने ए उपायने विषे स्वशक्तियकी यत्न करवो युक्त छे,ए छठुं स्थानक कह्युं ॥६५॥

हवे ए छ स्थानकने विषे नरसुंदर राजानो संबंध कहीयें छैयें. एहीज भरतक्षेत्रने विषे कांची नामें नगरमां नरसुंदर नामें राजा राज्य करे छे ते राजा नास्तिक वादी छे. जीवादिक पदार्थ मानतो नथी, देवगुरुनो द्वेषी छे,तेने सुरसुंदरी नामें अग्रमहिषी छे, अने सुमति नामें प्रधान छे.

हवे चंद्रपुरनगरने विषे चंद्रसेन नामें सामंत छे, तेने मंत्रतंत्रादिकनो

जाण एवो एक योगी मित्र छे, ते चंद्रसेन सामंत नरसुंदर राजानी सेवा थकी उद्वेग पाम्यो थको योगीने कहेवा लाग्यो के तुं म्हारो मित्र छो माटें म्हारुं एक काम कर. योगीयें कह्युं शुं काम छे ? ते मने कहे. चंद्रसेनें कह्युं नरसुंदरराजानी चाकरीमां मने कांहिं पण सुख नथी. माटे ए राजाने मारी नाखीयें, तो हुं सुखसमाधिमां रहुं ! ते वात पहेला दुष्टात्मा योगीयें अंगी कार करी. पछी ते योगी कांचीनगरीयें आव्यो, अने मंत्रतंत्रादिक विद्यायें करी लोकोमांहे प्रसिद्धि पाम्यो. राजायें तेनी कलासंबंधी तारिफ सांजली तेडावीने पूछ्युं, तमें कया देशथकी आव्या छो ? योगीयें कह्युं आप योगी योना चक्र छो. एवुं सांजली हुं श्रीपर्वतथकी तमारुं दर्शन करवा आव्यो छुं.

राजायें पूछ्युं तमारी पासें कइ कइ विद्याउ छे ? तेवारें योगी बोल्यो हुं रात्रिने दिवस करी देखाडुं अने दिवसने रात्रि करी देखाडुं. धरतीने आका श करुं, आकाशने धरती करुं, समुद्रने एक चुलुकें आचमन करुं इत्यादि विद्याउ छे, माटे तह्मारे जे काम होय ते कहे, तो हुं करी आपुं. तेवारें योगीने प्रधाने कह्युं एटला महोटा आमंबर अमारे करावना नथी पण मह्मारी स्त्री प्रणयकलह थकी रीसाईने ग्रामांतरें गइ छे, तेने इहां वेगं आणी आप, तो ए सर्व तह्मारुं बोलवुं साचुं करी मानीयें. ते सांजलीने योगीयें मंमल मांम्युं, मंत्र साध्यो, आकर्षण मंत्रें करी लोटथी खरडेला हाथे रोटला करती एवी थ कीज मंत्रीश्वरनी स्त्री आणी. मंत्री हर्ष पाम्यो थको नाचवा लाग्यो, राजाने ते योगीनी उपर आस्ता आवी. तेवारें राजायें एकांतें तेडीने योगीने पूछ्युं हे स्वामी ! कालवंचना थाय के न थाय ! एटले आयु पूरण थये मरण प्राप्त थाय छे, ते न थाय, एवो कोइ उपाय छे, के नथी ? योगीयें कह्युं जे थकी कालने वंची घणुं जीवीयें मरीयें नहीं, एवो उपाय छे. पण जो तुं मह्मारी दीक्षा लइ मह्मारो चेलो था, तो ते उपाय चाले नहीं कां चाले नहीं. ते सांजली राजायें प्रधानने राज्य जलावी पोतें योगी पासे दीक्षा लीधी.

योगीयें कह्युं नासिकापकी बार आंगुल पवन बाहिर निकले अने दश आंगुलमांहे पेसे, तेथी जे विपरीत करे, ते मरणने वंचे. इत्यादिक कही योगीयें राजाने जूमिमांहे घाल्यो. पछी हिंसादिक पापमांहे बोल्यो, एम नि त्यप्रत्यें करावतां एकदा राजाने विषमविष आपीने योगी नाशी गयो, वि ष चड्या पछी राजा अचेतन थइ पड्यो. समस्त परिवार रोवा लाग्यो, प्र

पाम्यो पण तेनो जीव कया रस्ताथी निकली गयो ! एवुं कोइ छिद्र मंजुरा मां दीठुं नहीं, तेवारें में निर्धार कस्यो जे जीव नथी.

गुरुयें कह्युं तेनुं दृष्टांत कहुं छुं, ते सांभळ. कोइक शंखवादक महाबल वान् हतो,ते घणो वेगळो रही शंख वजाडे,तो पण सर्व कोइ जाणे जे ए अमारी पासेंज शंख वजाडे छे. एकदा राजा शरीरचिंतायें प्रवृत्त्यो छे, ते वारें वेगळो रही तेणें शंख वजाड्यो, तेथकी राजा क्षोभ पाम्यो, राजाने बंधकोष्ट थयो. तेथी बाधा निसरी नहीं. राजायें ते शंखवादकने बंधावी अणाव्यो, अने कह्युं के एने मारी नाखो. तेवारें तेणें विनति करी के स्वामि ! में दूर रही शंख वजाव्यो छे, तो पण तमें जाण्युं जे म्हारी पासें रहीने शंख वजाडे छे, तो एमां म्हारो श्यो वांक छे ? जो म्हारुं वचन न मानो, तो आप परीक्षा करो. राजायें कह्युं भलें हुं परीक्षा करुं छुं. एम कही राजायें ते शंखवादकने निश्छिद्र कुंभमां घाल्यो कुंभने घणो बूरी ली धो लेशमात्र छिद्र राख्युं नहीं, तिहां रही तेणें शंख फूंक्यो, ते राजा प्रमुख समस्तलोकें सांभल्यो, तो हवे ते शब्द कुंभमांहेथी कये मार्गे निकल्यो ? छिद्र तो कोइ देखातुं न हतुं,तथा लुहारें लोह घडयुं, ते लोहमांहे अग्नि कया मार्गे पेठो छिद्र तो हतुं नहीं, तेम जीव पण शरीरमांहे पेसतो निकळतो देखाय नहीं, पण बोलावीयें तेवारें हुंकारो करी उठे छे, ते जीव जाणजे.

वली राजा बोल्यो स्वामी ! म्हारी एक वात सांभलो. में एक चोरने प्रथम तोल्यो, पछी मारी नाख्यो, माखा नंतर फरी पण तोल्यो, परंतु जीव निकल्या पछी तेमां वजन कमती थयुं नहीं. जो जीव होय, तो जीव जतां रह्यो तेनो भार उंगो थवो जोइयें, तेमाटे जीव नथी. ए वात निःसंदेह छे.

गुरुयें कह्युं एक गोवालीयें एक दडो वायरे भरीने तेने तोल्यो पछी वली वायरो काढाढीने पण तोल्यो, तो पण सरखो उतरयो तो हवे वायरानो भार क्यां गयो ? ए दृष्टांतें जाणवुं, जे शरीरमांहे जीव पेसे तो शरीर भारी न थाय अने शरीरमांथी जीव निकले, तो हलवुं न थाय. जीव अरूपी द्रव्य छे, तेने चेतनादिक गुणें करी जाणीयें. इत्यादिक अनेक प्रकारनी युक्ति प्रतियुक्ति सांभलीने राजा प्रतिबोध पाम्यो थको गुरुप्रत्यें कहेवा लाग्यो के महाराज ! तमारे प्रसादें करी माहारुं बहु प्रकारें मोहतिमिर गयुं, तो पण म्हारो नास्तिकवाद कुलक्रमागत आव्यो छे, ते केम मूकाय ?

गुरुयें कह्युं विवेकरूप दीपक पामी अंधकारमांहे कोण पेसे? कोण रहे? सन्मार्ग पामी उन्मार्गे कोण जाय? ॥ यतः ॥ जइ केवि पुव्वपुरिसा, अंधलया अंधकूवए पडिया ॥ ताकिं सव्वरकणं, जडत्ति तउं व पडियव्वं ॥१॥ तद्यथा ॥ कोइक चार वाणीया व्यापारें धन उपार्जन करवा माटे चाल्या, अनुक्रमें चालतां चालतां लोहनी, रूपानी, सुवर्णनी अने रत्ननी खाण पामी, लोह नाखी रूपुं लीधुं, रूपुं नाखी सुवर्ण लीधुं, सुवर्ण नाखी रत्न लीधां. घरें आवी नवा घर कराव्यां, पाणिग्रहण कीधां, पुत्र पुत्री प्रमुख कुटुंबनी वृद्धि थइ. घणां धर्मकर्मनां कार्य करी इहलोकें परलोकें सुखी थयां, पण ते चारमांहे एक वाणीयो कदाग्रही हतो तेणें लोह लीधेलुं मूक्युं नहीं. तेने घणाय बीजा त्रण जणे समजाव्यो, तो पण लोहने मूकी रूप्य, सुवर्ण, रत्न लीधां नहीं. घणा योजनसुधी लोहनो जार उपाड्यो पण लोह नाख्युं नहीं. हव लइ रह्यो, ते वाणीयो पापनो प्राणीयो घरे आव्यो, दारिद्र जोगवतां कालने प्राप्त थयो, इह लोकें परलोकें दुःखी थयो. ए दृष्टांतें हे राजन्! तुं पण ते लोहवाणीयानी पेरें पूर्वजवें दुःखी थयो बो तेम आगले जवें दुःखी थाइश.

तेवारें राजायें पुढ्युं में पूर्वजवें शी रीतें दुःख जोगव्यां छे? तेवारें आचार्य राजाप्रत्यें पूर्वजव कहे छे. एहज जरतक्षेत्रे मवगाम नामें गाममां अर्जुन नामें कुलपुत्र रहे छे. तेने सुश्रावक शुजंकर एवे नामें मित्र हतो, एकदा ते गामें एक साधु पधार्या. तेवारें शुजंकर श्रावकें, अर्जुनने कह्युं चालो, साधुने वांदवा जइयें! धर्मश्रवण करीयें! तेने अर्जुनें कह्युं हे मित्र! में एमना आगमनुं रहस्य जाण्युंज छे, ए आगम सर्व लोकोने धूतवाने अर्थे धूर्त्तोयें करेलां छे, लोकने पासमां पाडवाने अर्थे तेनुं नाम सिद्धांत करी थाप्युं छे. एवां वचन बोलवाथी तेणें कुकर्म उपार्ज्युं अनुक्रमें ते अर्जुन मरण पामीने छाग थयो, तेज छागने अर्जुनने पुत्रें अर्जुनना श्राद्धने दिवसें मारीने ब्राह्मणोने आप्यो. तिहांथी मरीने रासज थयो, ते घणी ताडना तर्जना सहेतो जार वहन करे, ते गलीया रासजने कुंजारे घणो मार्यो ते थकी मरण पामीने गर्त्तासूकर थयो, अशुचि उकरडे लोटतो थको अशुचि जक्षण करतो थको रहे, तेने आहेडीना कूतरायें मारी जक्षण कर्यो, तिहांथी मरी उंट थयो. तिहां पण घणो जार वहन करवे करी तेनी पीठ सडी गइ. तेनी वेदनाथी मरण पामीने गोवर गामने विषे धना नामें वाणीयाने

घेर पुत्र थयो, ते जन्मथी मुंगो बहेरो थयो, तेथी तेनी उपर लोक हांसी करे थके ते मूर्खो क्रोधने वशथको कूवामां पडी मरण पाम्यो. तिहांथी मरी नंदगामने विषे ठाकोरने घेर दासपुत्र थयो, तेणे एकदा मदिरापान ने उन्मत्तपणे करी ठाकोरने गाल दीधी, ठाकोरें तेनी जीन कपावी तेथी महा पीडायें नूमियें पड्यो, रडवा लाग्यो. एवामां एक साधु चारित्रीयो ज्ञानवंत आव्यो, तेणें आवी कह्युं के हे नद्दे ! तुं शुं रडे ते ? तुं तहारुंज पूर्व कृत कर्मसंचार. तेणें अर्जुनना नवथकी मांमीने सघला नव कही संनला व्या, ते सांनलवाथी तेने जातिस्मरण ज्ञान उपनुं, तेथी पोतानां करेलां पा पने निंदतो साधुयें दीधेलो नमस्कारमंत्र तेने सांनलतो थको काल करीने तुं इहां राजकुमर थयो ठो. पूर्वनव अन्यासथी तुजने नास्तिक मत आव्यो. राजा पोताना पूर्वनव सांनली जातिस्मरणें करी पूर्वनव चरित्र देखी आ चार्यप्रत्यें कहेवा लाग्यो के हे स्वामी ! तमें कह्युं ते सर्व सत्य ठे, हवे मुज ने जीवादिक नवतत्त्वनी सद्दहणा आवी. जे तमें कह्युं, ते तेमज ठे. मह्हा रो एटलो काल निरर्थक गयो. हवे प्रसन्न थइ संसार समुद्रथी तारवा माटे मुजने दीक्षा द्यो, गुरु कहे. जहासुहं देवाणुप्पिया मा पडिबंध करेह.

हवे राजा परम संवेग पाम्यो थको पुत्रने राज्य आपी पोतें आचार्य पासें दीक्षा लेतो हवो. गुरुयें शीखामण दीधी ॥ यतः ॥ जयं चरे जयं चिठे, जयंमा से जयं सए ॥ जयं जुजंतो नासंतो,पावं कम्मं न बंधइ ॥ १ ॥ इत्यादिक गुरु शिक्षा पामीने निरतिचार चारित्र पालतो हवो. सकलसिद्धांत नणी प्रवचननो पारंगामी थयो. आचार्यें योग्य जाणी आचार्यपद दीधुं. अने क जीवने प्रतिबोधी पोतानी पाटे शिष्यने थापी पोतें जिनकल्प आदर्यो, " गामेएगराइयं, नगरे पंचराइयं " ए रीतें विहार करता हवा, ठेहले अव सरें पादपोपगमन अणसण करी सर्वार्थसिद्ध विमाने देवता थयो. तिहां स्वेछायें सुख नोगवी मनुष्यनव पामी चारित्र आराधी मोक्षें जाशे. ए समकेतनां ठ स्थानकने विषे नरसुंदर राजानुं चरित्र सांनली दृढ थवुं. ए समकेतना शडशठ बोल सांनली हृदयमां धारी निश्चल समकेत आद रवुं. जेम समकेत मोहनीय कर्मक्षय करी क्षायिकसमकेत आवे.

हवे सकलशास्त्रार्थनुं निगमन वाक्य कहे ठे.

॥ इयसत्तसट्ठिपयाइं, ञचिणिऊ विउल आगमारामा ॥ संगहिया इव म

ए, मंदमईणं सरणहेऊं ॥ ६६ ॥ अर्थः-(इयसत्तसट्ठिपयाइं के०) इति ते परिसमाप्तिने अर्थे ठे चार सद्दहणा प्रमुख बार द्वार तेना उत्तर शडशठ पद ते प्रत्यें (विउल के०) विपुल महोटो एवो जे (आगमारामा के०) आगम रूप आराम ते आराममांहेथी परमार्थें फूलनी परे (उच्चिणि के०) वीणी लइने (उ के०) वली (इह के०) ए समकेत सप्ततिकाना मा प्रकरणने विषे (मए के०) में (संगहिया के०) संग्रह कीधां एकठां कीधां. ते शेने अर्थे एकठां कीधां ? तो के (मंदमईणं के०) मंदमति एटले तुछ ठे मति जेनी तेवा नव्य जीवोने (सरणहेऊं के०) स्मरणहेतुने काजे एकठां कीधां. जेम माली महोटा आरामथकी फूल लेइ चंगेरी नरे, पढी देवगृहें अथवा घरे आवीने तेनी माला गुंथे ते श्रीजिनप्रतिमाना नोगमां आवे, तथा व्यवहारीया अने राजा प्रमुखने नोगमां आवे तेम विपुल एवा सिद्धांतरूप आरामथकी आ शडसठ बोलरूप पुष्प लइने ए समकेत सप्ततिका नामा प्रकरणरूप चंगेरीमांहे माला रूपें एकठा कीधां ठे, ते नव्यजीवोने कंठे करवाने अर्थें कीधा ठे. एटले नव्यजीवोने काम मां आववा माटे कीधा ठे, ए नाव ठे ॥ ६६ ॥

हवे एना परिज्ञानथकी शुं फल थाय ? ते कहे ठे.

॥ एसिं डुविह परिणा, दंसण सुद्धिं करेइ नवाणं ॥ सुद्धम्मि दंसण म्मि, करपल्लवसंठिउं मुक्खो ॥ ६७ ॥ अर्थः-(एसिं के०) ए समकेतना सडशठ नेदनी (डुविह के०) बे प्रकारनी (परिणा के०) परिज्ञा एटले परिज्ञान ते एक सामान्यथकी अने बीजी विशेषथकी ए बेहु परिज्ञा जे ठे, ते (दंसणसुद्धिंकरेइनवाणं के०) नव्यजीवने दर्शनशुद्धि एटले समकेतनी शुद्धि करे समकेत निर्मल करे. जेमाटें अनव्यजीवने तो समकेतज नथी, तो तेनी शुद्धि पण क्यांथकी होय ? जेम कोइ स्त्रीयें पुत्र प्रसव्योज नथी तो ते स्त्री, नामस्थापना पण कोनी करे ?

आगमना नाव बे प्रकारें ठे. एक आज्ञागम्यनाव अने बीजा युक्तिगम्यनाव तेमां जे निगोदादिकना विचार ते आज्ञागम्य नाव छे. अने बीजा विचार युक्तिगम्यनाव ठे. ते जेम ठे, तेम गीतार्थे वखाणवा अने सद्दहणा करनारें तेमज सद्दहवा ॥ यतः ॥ आणागिझो अछो, आणाए चेव सो कहियवो ॥ दिठंतिउं दिठंता, कहणविहराहणा इयरा ॥ १ ॥ श्री

बे, तिहां सुस्थित नामें शेठ परमसम्यग्दृष्टि वार व्रतधारी श्रावक रहे बे, तेने घेर एक वातागरो विनयादि गुणें करी संयुक्त कामकाज करवाने नि पुण, सुंदर एवे नामें बे, अने परिणामे पण सुंदर बे. ते एकदा पुण्ययोगें साधुनी संगति पामीने सिद्धांतनां रहस्य प्रत्यें सांनलतो हवो, तेणे गुरु नी पासेंथी व्रत लीधुं जे मद्दारे अष्ट प्रकारी पुजा कस्या विना तथा ठती जोगवाइयें साधुने वांद्याविना जमवुं नहीं. ते नियम दृढ श्रास्तायें पा ले बे. ते प्रकृतियें अल्पकषाय वालो देवगुरुने विषे नक्तिवंत हतो, तेथी अंतें पंचपरमेष्ठीनुं स्मरण करी समाधि मरण पामी तिलकशिला नगरीयें त्रि विक्रम नामें राजा तेनी सुमंगला राणीनी कुखने विषे पुत्रपणे आवी उ पनो. राणीयें पूर्णकलशनुं स्वप्न दीठुं, ते स्वप्न राजानी आगल कह्युं. राजा यें कह्युं तुमने उत्तम राज्य धुरंधर पुत्र थाशे, ते सांनली राणी हर्ष पामी.

अनुक्रमें गर्न वधते थके राणीने दोहोलो उपनो तेथी डुर्बल थवा ला गी. राजायें डुर्बलतानुं कारण पुढयुं तेवारें राणीयें कह्युं के हुं हाथणी उ पर बेसुं, अने तमें छत्रधार थाउ. एवी रीतें हुं गामने चोराशी चहुटे फ रुं तथा उद्याननी क्रीडा करुं, याचकने दान आपुं, दीनजननो उद्धार क रुं एवो मुजने दोहोलो उपनो ने, ते हवे हुं शी रीतें तमोने छत्रधारक क रीने दोहोलो पूर्ण करुं? राजायें ते दोहोलो पूर्ण कस्यो.

अनुक्रमें पुत्रजन्म थयो राजायें बंदीवान प्रमुख मूक्या, घणो महो त्सव कस्यो, वली ए पुत्र गर्नमां आवे थके एनी माता घरमांथी निकली उद्याने क्रीडा करवा लागी, तेमाटे एनुं निर्गतमुख एवुं नाम दीधुं. अनु क्रमें तेपुत्र वालनाव मूकी चंडमानी पेठें सर्वकलामां प्रवीण थयो.

एवामां वैशाली नगरीनो राजा वासव नामें बे, तेनी कामकीर्त्ति नामें पुत्री बे, ते निर्गतमुख कुमरना गुण सांनलीने तेनी उपर अनुरक्त थ यकी पोताना माता पिताने कहेवा लागी के हुं निर्गतमुख कुमरनी साथें मारुं पाणिग्रहण करीश. अन्य पुरुष सर्वे मद्दारे पिता भ्राता स्थानकें बे. तेमाटें मुजने तिहां स्वयंवरा मोकलो,ते पुत्रीनुं वचन सांनली माता पिता पण घणी लज्जासहित ते पुत्रीने तिहां मोकलतां हवां. ते पुत्रीयें पण आगलथकी सांवत्सरायण नामा ब्राह्मणने मोकल्यो, तेणे जइ त्रिविक्रम नृ पने आशीर्वाद देइने कह्युं के हे स्वामी! वैशालिका नगरीनो स्वामी वासव

नामें राजा तेनी कामकीर्त्ति नामें पुत्री छे, ते तह्यारा पुत्रना गुण सांजली अनुरक्त थइ थकी परणवा आवे छे, ते वात सांजली त्रिविक्रम राजा हर्ष पाम्यो. पछी केटले एक दिवसें कन्या पण आवी पिताना कहेवाथकी कुमरें पाणिग्रहण कर्युं बेहुने परस्परें चंद्रमा रोहिणीनी परें प्रीति थइ.

हवे रणसिंह नामें सीमाडीयो राजा छे ते त्रिविक्रमराजानी आज्ञा मानतो नथी घणो उन्मत्त थयो छे, तेनी उपर त्रिविक्रम राजा कटकलइ चडे छे, ते वात जाणी कुमरें आवी पिताने कह्युं के हुं पुत्र, सन्नाह पहेरवा योग्य छते तमें सन्नाह पहेरो, ते युक्त नहीं. माटे तमें वेग रहो. हुं रणसिंहनें वश करी आवीश. ते वचनामृत सांजली राजा हर्ष पामीने घेर रह्यो अने कुमरने सैन्यनी सार्थे मोकल्यो. कुमर तिहां जइ प्रजातनो सूर्य जेम अंधकारनो नाश करे,तेम वैरीरूप अंधकारनो नाश करी रणसिंह राजाने वश करी बांधी आणीने पिताने पगे लगाड्यो, जय पामी जयनिशान वजडाव्युं.

एकदा त्रिविक्रम राजायें पुत्रने राज्ययोग्य जाणी राज्य आपी पोतें गुरु समीपें दीक्षा लीधी. पाछल श्रीनिर्गतमुख राजा राज्य पाले छे, जेह्वो नामें तेह्वोज परिणामें पण प्रजापालक थयो. हवे ते राजाने युवराज मदन नामें छे तथा सुमति नामें प्रधान छे अने सुवचन नामें दूत छे, ते त्रणे जण अहंकार करवा लाग्या जे अमें छैयें, तो ए राजानुं राज्य चाले छे, अमारा पसायथी राजा सुखें बेसी रहे छे. अनुक्रमें राजा ते त्रणेनां गर्वित चित्त जाणी तेमनो गर्व उतारवाने अर्थे सेना सार्थे लइ पोतें देश जोवा निकल्यो,ते देशने जोतो जोतो सीमाडीया राजाउने वश करतो करतो अनुक्रमें पाछो पोताना देशनी गडासंधियें आव्यो.

तेवारें राजा, मदन युवराजने तथा सुमति प्रधान अने सुवचन दूतने कहेवा लाग्यो जे आपणे चारे जण मली पोत पोताना जाग्यनी परीक्षा करी जोइयें के कहेनां कहेवां जाग्य छे. एम कही बीजा मंत्रीने राज्य जलावी एकेकुं खड्ग हाथमां लइने चारे जण खाली हाथें निकल्या, ते चालता चालता कांची नगरीयें आवी थाका थका तलाव उपर बेठा. दातण कीधा पछी राजायें कह्युं आज जोजननी सामग्री कोण करावशे ? तेवारें सुवचन दूत बोल्यो तमें त्रणे जण इहां बेसो. जोजननी सामग्री आजे हुं करावीश. एम कही दूत नगरमांहे गयो. एक व्यवहारीयाने हाटें जइ बेठो. हवे ते दिवसें नगरमां

हे महोत्सव छे, परगामनां लोक घणा व्यापारने अर्थे आव्यां छे, हाट उपर ग्राहकोनी भीड छे, अने व्यवहारीयो हाट उपर एकलोज छे तिहां सुवचने तेने सहाय करी, तेथी ते व्यवहारीयानो व्यापार घणो थयो अने सारो लाभ थयो, व्यवहारीयो हर्ष पामी हाट बंध करी पोताने घेर जम वा जाय छे, तेवारें सुवचनने कहे छे, के हे महापुरुष! उठो म्हारे घेर ज मवा चालो. तेने सुवचनें कह्युं हुं एकलो नथी म्हारी साथें त्रण जण बीजा छे, ते विना हुं एकलो जमुं नहीं. तेने शेठें कह्युं तमें जाओ. ते त्रणे जणने म्हारे घेर तेडी लावी भोजन करावो, तेवारें सुवचन दूत आवी त्रणे जणने तेडी गयो तेमने व्यवहारीये भली सज्जाइयें भोजन कराव्यां, तेमने भोजन करावतां शेठने सवा दाम खरच थयो.

बीजे दिवसें रत्नपुर नगरने विषे गया. तिहां पण परिश्रांत थया थका तलावें जइ हाथ पग धोइ दातणपाणी करी बेठा, निर्गतमुख राजायें कह्युं हे युवराज! आज भोजन करवानो तहारो वारो छे, माटे भोजन कराव. ते सां भळी युवराज नगरमांहे आव्यो तेने रूपें करी मन्मथ जेहवो हतो माटे तिहां एक पुरुषद्वेषिणी मगधा नामें वेश्या छे, तेणे दीठो. तेथी ते कामातुर थइ. तेवारें चेटीनो अनुराग जाणी अक्कायें दासी मोकली, तेने तेडावी लीधो ते पण मगधा वेश्यानुं रूप देखी हर्ष पाम्यो. परस्परें द्यूतक्रीडा करवा ला ग्या, एम करतां भोजन वेला थइ, तेवारें वेश्यायें कह्युं स्वामी उठो भोज न करीयें? तेणें कह्युं म्हारा त्रण मित्र तलावें बेठा छे, तेमना विना हुं भोजन करुं नहीं. वेश्यायें कह्युं जाओ त्रणेने तेडी लावो. भोजन आपणे घेर करावो. ते सांभळी त्रणेने तेडी आव्यो. स्नानपूर्वक भलि सज्जाइयें भो जन कराव्यां. तेने भोजन करावतां पांचशो रौप्यक खरच लाग्यो.

त्रीजे दिवसें पंचपुर नामा नगरें गया तिहां पण तेमज परिश्रांत थकां तलावनी पालें पूर्वोक्त सर्व सज्जाइ करी बेठा. राजायें मंत्रीश्वरने कह्युं आ ज भोजन कराववाने तमारो वारो छे माटें तमे नगरमां जइ भोजन करावो. मंत्रीश्वर नगरमां आव्यो, अनुक्रमें नगर जोतो जोतो राज्यसभायें गयो, आदर मान महत्त्वसहित राजाने प्रणाम करी बेठो. एवामां तिहां एक झगडो आव्यो छे, ते आ प्रमाणें छे. के कोइ दूर ग्रामने विषे एक व्यवहा रीयो वसे छे, तेनी बे स्त्री छे तेमां लघुस्त्रीने पुत्र थयो, तेवारें व्यवहारीये

काल कीधो. लघु शोक्यनो पुत्रमहोटी शोक्यें पाल्यो, तेथी ते तेहनोज कहेवा णो परस्पर बेहुने मांहो मांहे प्रेम हतो, माटें लघु शोक्यें कांइ मनमां आ एवुं नहीं, अनुक्रमें इव्यने अर्थे वढवा लागी. एक बीजाथी जूदी थइ तेवा रें महोटी शोक्यें कह्युं पुत्र महारो छे, तहारे एनी साथें श्यो संबंध छे ? ल घु शोक्यें कह्युं ए पुत्र महारो छे गामना लोकोने कांइ पण समजण पडती नथी तेवारें ते बेहु स्त्री वढती वढती राज्यसनायें आवी, राजा आगल पोतपोतानां डुःख रोवा लागी. राजाने पण कांइ समजण पडी नहीं. तेवा रें सुमतिप्रधान जे प्राहुणो थइ आव्यो छे, तेणे कह्युं स्वामी मुफने हुकुम आपो, तो हुं ए विवादनो निवेडो करी आपुं. राजायें कह्युं घणुंज रूडुं. नले न्याय करी आपो ! राजानो आदेश पामी सुमति प्रधानें कह्युं तमें बेहु जणी मांहोमांहे समजी ल्यो. तो सारी वात छे. नहींतर इव्य अर्धो अर्ध वहेंची ल्यो, अने पुत्रना बे कटका करी एकेको कटको वहेंची ल्यो. ते सांन ली महोटीयें विचार्युं जे पुत्र मरी जाय तो महारे शुं छे, पण इव्य तो अ र्धु मने मले छे, जो पुत्र जीवतो रहीने एनो ठरे, तो इव्य बधुं पुत्रने मली जाय अने पुत्र तो महारो नथी, एनोज छे, एम चिंतवी तेणें हा पाडी. पण लघु स्त्रीयें विचार्युं जे महारो अंगजात पुत्र जीवतो हशे, तो महारे काम आवशे, पण पुत्र मूआ पछी हुं इव्यने शुं करुं ! पुत्रने जीवतो देखीश तो पण एम जाणीश जे महारो पुत्र छे. एवुं तत्त्व विचारी ते उतावली बोली जे एम हुं नहीं करीश. नलें ए पुत्र महारी वडी शोक्य लइ जाय, अने इव्य पण एनेज आपो. हुं महारा पुत्रने जीवतो देखीनेज संतोष पामीश, महा रे इव्य खपतुं नथी. महारुं एकलीनुं पेट नरवा माटें हुं लोकोनुं काम का ज करीश ! पण पुत्रने मारी नाखवानो न्याय क्यांय पण सांनल्यो नथी, एवी रीतें तेनुं लोही तप्युं देखी प्रधानें कह्युं पुत्रनी खरेखरी साची माता एज छे, माटें एने पुत्र तथा इव्य आपो अने महोटीने पुत्रनी उपर निःस्ने हीपणुं जोइ तेने खोटी जाणी काढी मूकी. एवी तेनी बुद्धिदेखी राजा खुशी थयो. अने नोजनादिकें करी चारे जणने संतोष्या, ते राजाने नोजन क रावतां चार हजार इव्यनो खरच थयो.

हवे चोथे दिवसें हस्तिनागपुरें गया, तिहां राजा पछेडी उंढी महोटा वृक्षनी नीचें निश्चिंत जइ सूतो, कंप करवा लाग्यो, ते जोइ त्रण जण हस

वा लाग्या के आजे राजा पोतानो वारो जाणीने सूइ रह्यो. हवे आजे आ पणे नोजन शी रीतें करशुं ? ते त्रण जण जेहवामां एवी वात करे ले, ते हवामां ते हस्तिनागपुरनो अपुत्रीयो राजा मरण पामेलो ले,तेवारें मंत्रीश्वर प्रमुखें पंचदिव्य कीधां ले,ते पासेंना नगरने विषे नमतां नमतां क्यांहि योग्यपुरुष न पाम्या,तेवारें नगरनी बाहिर निर्गतमुख राजा सूतो ले,निद्रा करे ले,तिहां ते पंचदिव्य आव्यां,राजा उपर अनिषेक कलश ढोल्यो,हाथीयें शुंढमां लइ तेने पोतानी उपर चडाव्यो ! अश्वें हेंषारव कर्यो. छत्र चामर विकस्वर थयां,त्रण जणने पूछ्युं एनुं नाम शुं ले ? तेणें कह्युं एनुं निर्गतमुख नाम ले,तेवारें समस्त लोक बोल्या आपणो निर्गतमुख राजा थयो,एम कही प्रणाम करता हुवा. राजा, पंचदिव्यनी सायें तथा त्रणमित्रनी सायें सिंहासनें जइ बेठो, तिहां जयश्री नामें राजपुत्री ले,तेनुं पाणिग्रहण कर्युं, ते दिवसें नोजन करावतां सवा लाख द्रव्य बेठुं. ए रीतें राजानुं नाग्य कर्युं.

हवे तिहां नवो राजा राजगादीयें बेठो तेने जोइ अन्यायी लोक आज्ञा न मानता हुवा. तेवारें राजायें प्रतिहारोने कह्युं जे अन्याय करे तेनुं निवारण करजो. ते सांनली प्रतिहार हसवा लाग्या, जे ए राजायकी राज्य ते केम चालशे? राजायें तेने हसता देखीने नींतीउपर चित्रेला चित्रधरने कह्युं के जे आज्ञा न माने, तेने सारी पेठें शिक्षा आपजो. एवुं सांनलतांज चित्रधरो उठीने पहेला हास्यकरनारा प्रतिहारो प्रत्यें ताडवा लाग्या, ते आश्चर्य देखी सर्व वेरी जन आवीने राजाने पगें लाग्या, जे माटे मूर्ख जनने जिहां सुधी ताडना न करीयें, तिहां सुधी पाधरा थाय नहीं. अनुक्रमें ते वात सीमाडीया राजायें सांनली तेथी तें पण सर्व आवी वश थया.

ए आश्चर्य जोइने युवराज, मंत्री, तथा दूत, ए त्रण जणनुं मान गली गयुं. अने तेउ जाणवा लाग्या जे ए राजानुं नाग्यज महोटुं ले,एने नाग्यें ज राज्य चाले ले. एमां आपणुं कांइ पराक्रम नथी.

एकदा बे पुरुष आवीने निर्गतमुख राजा प्रत्यें विनवता हुवा, के हे स्वामीन् ! श्रीपुरनगरने विषे नरकेशरी नामें राजा राज्य करे ले, ते समस्त राजाउने तृण समान गणे ले, तेहनी जयलक्ष्मी नामें पुत्री ले, ते महारूपवंत ले विधातायें घणा आदरसहित घडी ले, ते कुमरी एकदा सनामां राजाने उत्संगें बेठी हती तेने एक निमित्तियें दीठी, राजायें पूछ्युं, ए पु

थाखा ठे ते वात सांजली उद्यानपालकने घणुं प्रीतिदान आपी, चार थं तेउर सहित राजा वांदवा माटें गुरुनी पासें आव्यो. तिहां गुरुने वांदी शु कस्थानकें वेगे. आचार्यें धर्मदेशना देवा मांमी ॥ श्लोक ॥ उत्सर्गे परमे ष्ठिमंत्रपवनं देवार्चनं वंदनं, प्रत्याख्यानविधानमागमगिरामश्रांतमाकर्णनं ॥ कालेऽर्हद्गुरुसंविन्नक्रमशनं, न्याये न वित्तार्जनं, शीलावश्यकशीलनैरनुदि नं कार्यं श्रुनाः सेवनं ॥ १ ॥ एवुं देशनामृत पान करीने हर्षवंत थको रा जा गुरुने पूठतो हवो,के नगवन् ! में पूर्वनवें श्यां पुण्य कीधां ठे के जेयकी एवी राज्यसंपदा पाम्यो ? आचार्यें कह्युं तुं पूर्वनवें व्यवहारियाने घेर सुंदर नामें कर्मकर हतो, तिहां साधुने संयोगें धर्म पामीने देव जुहार्या विना तथा गुरुने वांद्या विना हुं जमुं नहीं एवो तें नियम लीधो. ते शुद्ध मनथी पाल्यो, ते पुण्यना योगें तिहांथकी काल करीने इहां एवी राज्य संपदा पाम्यो ठो. हवे इहांथी काल करी देवतानां सुख पामीश. सातमे नवें मोक्षसुख पा मीश. एवा आचार्यना मुखरूप कुंनयकी वचनामृत पान करीने राजा, संतोष पामी समकेत मूल बार व्रत गुरुमुखें उच्चरी वांदी पोताने घेर आव्यो.

पठी देवपूजा, गुरुपूजानां फल देखी विशेषयकी चैत्यनिर्माणादिक ध र्मकार्य करी श्रीजिनशासननो दीपक ययो. एवी रीतें राज्यसुख नोगवी सातमे नवें मोक्षे जाशे. ए श्रीदेवगुरु नक्तिने विषे सुंदरनी कथा सांनली ने हे नव्यो ! तमें देवगुरुनी नक्ति करजो ॥ इति ॥

हवे शास्त्रनुं तत्त्वनूत वाक्य कहे ठेः—

॥ इय नाविऊण तत्तं, गुरुआणाराहणे कुणह जत्तं ॥ जेण सिवसुक्ख वीयं, दंसणसुद्धी धुवं लहह ॥७०॥ अर्थः—(इय के०) ए पूर्वोक्त प्रका रें कह्युं जे (तत्तं के०) तत्त्व श्रीजिनधर्मनुं सारनूत सम्यक्त्व तेने (ना विऊण के०) नावें करी चिंतवीने तेनी वासना राखीने (गुरुआणाराह णे के०) श्रीगुरुनी आज्ञा आराधनने विषे (कुणहजत्तं के०) यत्नने क रो. हे नव्यो ! एहवुं संबोधनपद बाहिरयकी लेवुं. गुरु आज्ञा आराधनने विषे यत्न करो. एवुं कह्युं ते शा माटे ? तो के जेमाटे देवनुं आराधन जे करवुं, ते पण हमणां गुरुने आयत्त ठे, कारण के देवतत्त्व जे ठे, ते पण गुरुना कह्याथी जाणीयें ठेयें. एरीतें देवतत्त्व अने धर्मतत्त्व ए बे गुरुने आयत्त थयां, ए बेनुं सरूप जो गुरु समजावे,तो समजीयें,तेमाटे जेणें शु

द प्ररूपक सुविहित नट्टारक श्रीविजयदेवसूरि प्रमुखनी आज्ञानुं आराधन कीधुं,तेणें देवनी आज्ञानुं पण आराधन कीधुं,तेथी " गुरुआराहणेकुणइ जत्तं " ए पद कह्युं ॥ यतः ॥ महागरा आयरिया महेसि, समाहि कामे सुयसीलबुधिए ॥ संपाविउं कामेणुत्तराइं, आराहईतोसहधम्मकामी ॥ १ ॥

(जेण के०) जेणे गुरु आज्ञा आराधन यत्ने करी कीधुं तेणे (शिवसुखबी पं के०) शिवसुख जे मोक्ष सुख तेनुं बीज एटले कारणनूत एहवी (दंसण सुद्धी के०) समकेतदर्शननी शुद्धि जे निर्मलता ते प्रत्यें (धुवंलद्ध के०) निश्चे पामी. अने जेवारें जीवने समकेतशुद्धि आवी तेवारें ते जीवने अ वश्य मोक्षसुख आव्युं. केम के जे जीवने क्षायिक समकेत आव्युं ते जी व उत्कृष्टा चार नव, संसारने विषे करे ॥ यतः ॥ तइय चउत्थे तेमिउं, न यम्मि सिय़ंति दंसणेखीणे ॥ जं देवनिरय संखाउ चरम देहेसु ते हुंति ॥१॥ दर्शनशुद्धि पण तेवारेंज कहीयें, के जेवारें जीव क्षायिक समकेत पामे. इहां शिव एवुं पद आणवे करी ग्रंथकारें ग्रंथने विषे अंतने पावें मंगलाच रण कीधुं ॥ यतः ॥ मंगलादीनि मंगलमध्यानि मंगलावसाना निशास्त्राणि विकृशमुपादेयानि निःश्रेयससाधकानिनवंतीति ॥ ७० ॥

॥ इति श्रीतपागच्छालंकार सार नट्टारक श्रीहीरविजयसूरीश्वर पट्टालंका र हार सार नट्टारक श्री ५ श्रीविजयसेनसूरीश्वर पट्टप्रनाकर नट्टारक श्री ५ श्रीविजयदेवसूरीश्वर विजयमानराज्ये महोपाध्याय श्रीसकलचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीशांतिचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिनिः श्री सम्यक्त्वरत्नाविधानश्रीसुरतबंदरादिचतुःसंघस्याष्टम्यादिपर्वसु श्रीसम्यक्त्व सप्ततिका प्रकरणबालावबोधे सम्यक्त्वस्थान षट्स्वरूपनिरूपणोनामा द्वा दशोधिकारः समाप्तः ॥ १२ ॥

॥ प्रशस्तिश्लोकाः ॥

श्रीवीरपट्टांबुज नास्कराजः, श्रीमत्सुधर्मागणनृद्बनूव ॥ अद्यापि वाणी प्रसरीसरीति, यस्य प्रनोः पंक्तिवक्रवासा ॥ १ ॥ बनूव तत्पट्ट परंपरायां, सूरिर्जगच्चंद्र इति प्रसिद्धः ॥ लेने तपोगच्छ इति प्रसिद्धिं, यस्माद्गुणौघं प्रथि तावदातः ॥ २ ॥ परंपरायामपितस्य जातः, साधुक्रियामार्गविकासनास्वा न् ॥ आनंदपूर्वोविमलाख्यसूरि, र्जगज्जनानंदकरः प्रसिद्धः ॥ ३ ॥ तस्यापि

पट्टे विजयाप्रदानः,सूरिर्बभूव प्रबलप्रतापः ॥ राशिर्गुणानां किल यस्यवार्त्ता, राज्ञेः समानीकुरुते कवींद्रः ॥ ४ ॥ बभूव सूरिः किल तस्य पट्टे, श्रीहीरपूर्वो विजयोर्जितश्रीः ॥ लेभे प्रतिष्ठां किलभूयसीं यो,नरेंद्रलक्ष्मींद्रकृतामजस्रं ॥५॥ तस्यापि पट्टेऽजनि सूरिराजः, सेनोत्तरश्रीविजयोयशस्वी ॥ ततार जैनागम वारिराशि, नावः स्वबुद्ध्योत्तमनाम्यनाम्यः ॥ ६ ॥ विजयते किल तत्पदसे वया, सुजनसूरिपदं प्रणयी गुणैः ॥ विजयदेवगुरुर्गरिमांबुधि, स्तपगणे ग गने किमु चंद्रमाः ॥ ७ ॥ श्रीआनंदविमलगुरुशिष्याः, श्रीसहजकुशलनामा नः ॥ लुंपाकमतमपास्य,गजमल्लमिव निर्मलाजाताः ॥ ८ ॥ तेषां च शिष्य मुख्याद्वाचकवरसकलचंद्रनामानः ॥ चंद्राइव वचनसुधां, ववृषुर्यैर्विबुधव रपेषां ॥९॥ श्रीशांतिचंद्रावरवाचकेंद्रा, स्तेषां च शिष्या बहुशिष्यमुख्याः ॥ बभूवुरुद्दामगुणैरुपेताः, प्रभावकाः श्रीजिनशासनस्य ॥ १० ॥ श्रीमज्जंबुद्दी प,प्रज्ञप्तेर्वृत्तिविरचनाचतुराः ॥ येषां बुद्धिं सुरगुरु,रपीह ते विश्वगेयगुणयश सां ॥ ११ ॥ गीतार्थाः ॥ तेषां गुरूणां गुणसागराणां, प्रसादलेशं समवा प्य चक्रे ॥ अनेकशास्त्रार्थविचारसारः, परोपकृद्वाचकरत्नचंद्रः ॥१२॥ सम्य क्त्वसतत्यमलप्रबोधं, बालावबोधं पटुभिः सुबोधं ॥ सम्यक्त्वरत्नप्रवरप्रका श,नामानमेनं, समयानुसारात् ॥ १३ ॥ युग्मं ॥ रस मुनि रस शशिवर्षे, (१६७६) पौषे शुक्ले त्रयोदशीदिवसे ॥ सूरतबंदरमुख्ये,परमार्हतसंवरमणीये ॥ १४ ॥ इति रत्नचंद्रनामा चकार बालावबोधमतिसुगमम् ॥ सम्यक्त्वस ततिवर, प्रकरणतत्त्वार्थबोधकरं ॥ १५ ॥ सूर्याचंद्रमसौ यावत्, यावत्स त्वराधराः ॥ यावत्तपागणस्तावदिदं जयतु पुस्तकं ॥ १६ ॥ इति महोपा ध्याय श्रीशांतिचंद्रगणि शिष्योपाध्याय श्रीरत्नचंद्रगणिविरचित सम्यक्त्व स ततिबालावबोधग्रंथः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु शुभंभवतु ॥

इति श्री दर्शनसित्तरी ग्रंथ समाप्त तत्समाप्तौ च

जैनकथा रत्नकोशस्य तृतीय भाग समाप्त ॥